Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112826

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RT-0651

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

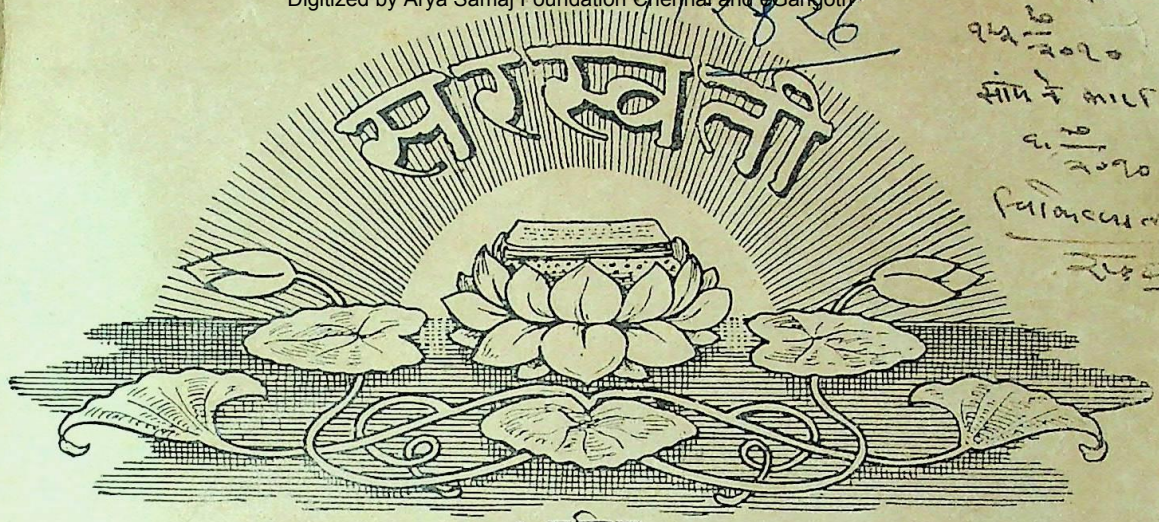

सचित्र
मासिक पत्रिका

वार्षिक मूल्य ६॥)
Yearly Subscription, Rs. 6-8

सम्पादक
देवीदत्त शुक्ल

प्रति संख्या ॥=)
As. 10 per copy.

भाग ३२, खण्ड १] जनवरी १९३१—पौष १९८७ [सं० १, पूर्ण-संख्या ३७३

112826

मूर्ति

(१)

मुझको भ्रुवों में नयनों में पलकों के बीच,
भान होता बिम्ब मोरमुकुट ललाम का।
कोओं में प्रकाश पीत पट सा प्रतीत होता,
तारों में विकाश श्यामतामरसदाम का॥
सुधामयी बंकता में बाँसुरी का बोध होता,
डोरों में है तेज गुंजमाल अभिराम का।
ज्यों ज्यों देखता हूँ मुख अपना 'उमेश' त्यों त्यों,
भासता मुझे है लोचनों में रूप श्याम का॥

(२)

जान पड़ता है प्रति रोम में ही कुंज मुझे,
वंशीवट दीखता ललाटचक्र के ही पास।
मेरी श्वास में ही सना सौरभ समीर शान्त,
मिलता मुझे है नाड़ियों में भानुजा का वास॥
मुझे इन्द्रियों में गोपियों का ज्ञान होता और
अनहद-नाद में ही होता है प्रतीत रास।
मेरे मन में ही बना मन्दिर गोपाल का है,
मेरे तन में ही सदा वृन्दावन होता भास॥

—उमेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर चन्द्रशेखर वेंकट रमन

कलकत्ता-विश्वविद्यालय के अध्यापक सर रमन ने इस बार भौतिक-शास्त्र में नोबेल-पुरस्कार प्राप्त करके भारत की गौरव-वृद्धि की है। इस प्रसिद्ध पुरस्कार के प्रवर्तक एलफ्रेड बनहार्ड नोबेल का जन्म सन् १८३३ में स्टाकहाल में हुआ था। उसने सर्व-संहारक डाइनामाइट नाम की बारूद का अन्वेषण करके उसके कारबार से २० लाख पौंड से भी अधिक धन एकत्र किया था। सन् १८९६ में ६३ वर्ष के वय में उसकी मृत्यु हुई थी। उसके "वसीयत" नामे के अनुसार उसकी जायदाद से जो धन मिला उसके पाँच भाग किये गये और हर भाग के व्याज का एक एक पुरस्कार देना निश्चित हुआ। प्रत्येक पुरस्कार एक लाख रुपये से कुछ अधिक होता है। यह पुरस्कार साहित्य, चिकित्सा, रसायन और भौतिक-शास्त्रों की उन्नति करने के सम्बन्ध में तथा उसे जो संसार में शान्ति, एकता और भ्रातृभाव पैदा करे, दिया जाता है। क़रीब क़रीब ये पुरस्कार प्रत्येक वर्ष दिये जाते हैं।

भौतिक-शास्त्र में १९०१ से १९२९ तक सब मिलाकर ३५ विद्वानों का इस पुरस्कार से सम्मान किया जा चुका है। ये विद्वान् ९ राष्ट्रों के हैं। केवल १९१६ में यह पुरस्कार किसी को नहीं दिया गया। छः समय यह पुरस्कार दो या दो से अधिक मनुष्यों के बीच बाँटा गया है। जर्मनी को अभी तक सबसे अधिक पुरस्कार मिले हैं। ११ जर्मनों ने इस पुरस्कार को पाया है। इँग्लेंड को ७ पुरस्कार मिले हैं। कुछ देश तो अभी तक इसे प्राप्त ही नहीं कर सके हैं। जैसे रूस और स्पेन। भारत भी बहुत दिनों तक इससे वंचित था। पहले-पहल सन् १९१३ में साहित्य का पुरस्कार हमारे पूज्य विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर को मिला था। इस बार भौतिक-शास्त्र में यह पुरस्कार प्रोफ़ेसर सर चन्द्रशेखर वेंकट रमन ने प्राप्त किया है।

रमन का जन्म सन् १८८८ की ७ वीं नवम्बर को दक्षिण-भारत में त्रिचिनापल्ली में हुआ था। इनके पिता चन्द्रशेखर ऐय्यर साधारण स्थिति के मनुष्य थे। वे एक पाठशाला में अध्यापक थे। रमन के जन्म के कुछ ही दिनों के बाद उनके पिता वालटेर के 'मेसर्स ए० वी० एम० कालेज' में प्रोफ़ेसर हो गये। वे भौतिक-शास्त्र और गणित के अध्यापक थे। उनकी केवल इन्हीं दो विषयों में नहीं, बरन और विषयों में भी अभिरुचि थी। उन्होंने गायन तथा ज्योतिष-शास्त्र का भी अध्ययन किया था। उनके पुत्र रमन में भी वे ही आसार देख पड़ते थे। डाक्टर रमन के ध्वनिविज्ञान के मार्के के आविष्कार और ख़ास कर व्यालिन (Violin) के समान संगीत-यन्त्रों के आविष्कारों का मुख्य कारण उनके पिता का व्यालिन पर अधिक प्रेम ही था।

रमन को छुटपन से ही विज्ञान से अनुराग था। वे बहुत तेज़ थे। प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करके वे सन् १९०१ में 'मद्रास-प्रेसीडेंसी कालेज' में बी० ए० की कक्षा में भरती हो गये। उस समय उनकी उम्र क़रीब १५ वर्ष की थी। इतने छोटे बालक को बी० ए० की कक्षा में देखकर उनके प्रोफ़ेसर को बड़ा आश्चर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। परन्तु वे मेधावी थे। बी० ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की और भौतिक-शास्त्र के लिए उन्हें 'अरनी-स्वर्ण-पदक' प्रदान किया गया। इसके पश्चात् वे एम० ए० की तैयारी करने लगे। एम० ए० के लिए भी उन्होंने अपना प्रिय विषय भौतिक-शास्त्र ही चुना। जिस समय वे प्रेसीडेंसी कालेज में पढ़ रहे थे 'ध्वनि' के सम्बन्ध में कुछ नई बातें खोजी थीं, जिन्हें जानकर उनके प्रोफ़ेसर जोन्स साहब बहुत प्रसन्न हुए थे। वे वास्तव में प्रतिभा-शाली थे। सोलह वर्ष की उम्र में ही उनका एक लेख लंदन की 'फ़िलासफ़िकल मेगज़ीन' में छपा था।

एम० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद प्रोफ़ेसर जोन्स ने रमन को भौतिक-शास्त्र के अध्ययन के लिए विदेश जाने की सलाह दी और उन्हें छात्रवृत्ति देने के लिए सरकार से सिफ़ारिश की। छात्रवृत्ति उन्हें मिल ही जाती, परन्तु उसके लिए आरोग्यता के सार्टीफ़िकेट की आवश्यकता थी। डाक्टर ने रमन के स्वास्थ्य की जाँच की और उन्हें विदेश-यात्रा के लिए अयोग्य बतलाया। इस कारण वे विदेश न जा सके।

अब यह प्रश्न उठा कि रमन क्या करें। विज्ञान के सिवा और किसी दूसरे विषय में रुचि थी ही नहीं। अध्यापक या वकील के कार्यों से उन्हें अनुराग ही नहीं था। अन्त में यह तय हुआ कि वे फ़ाइनेन्स की परीक्षा में बैठें और वह परीक्षा देने के लिए वे कलकत्ते आये। रमन को इस परीक्षा के लिए बड़े कष्ट उठाने पड़े, क्योंकि उन्हें वे विषय भी पढ़ने पड़े जिनसे उन्हें घृणा थी। उन्हें इतिहास, संस्कृत और अर्थ-शास्त्र का भी अध्ययन करना पड़ा। इस परीक्षा के आरम्भ होने के एक दिन पहले ही उन्हें यह समाचार मिला कि वे मदरास-विश्वविद्यालय में एम० ए० की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में सर्व-प्रथम उत्तीर्ण हुए हैं। इस सफलता से उनको और भी प्रोत्साहन मिला और वे फ़ाइनेन्स की परीक्षा में भी भारत में सर्वप्रथम आये। इस समय वे केवल १८ वर्ष के थे। फलतः भारत-सरकार के फ़ाइनेन्स-विभाग में उन्हें डिप्टी एकाउंटेन्ट जेनरल का पद कलकत्ते में दिया गया।

रमन कलकत्ते में तीन वर्ष रहे। वे अपने आफ़िस का कार्य भली भाँति करते थे, यद्यपि वे

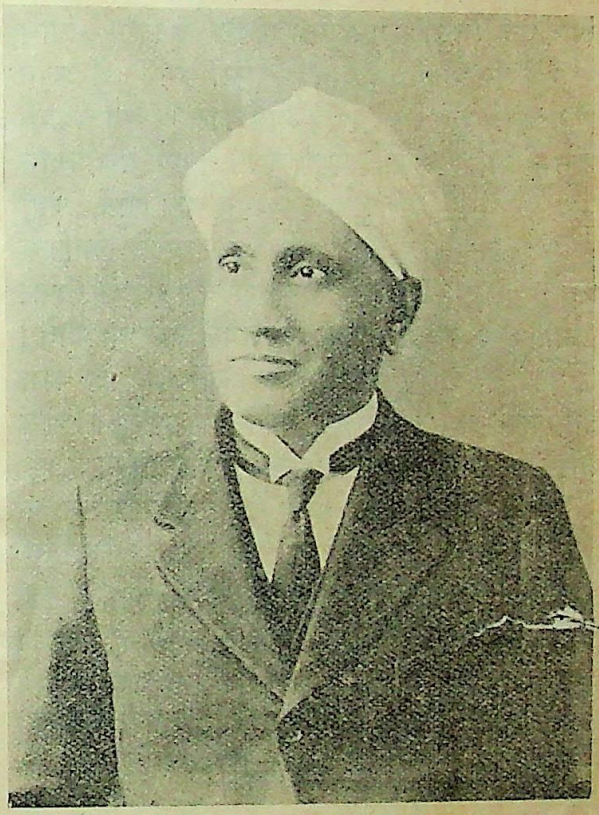

[सर चन्द्रशेखर वेंकट रमन]

अभी लड़के ही थे। परन्तु इससे उनकी आत्मा को शान्ति न थी, क्योंकि वे तो विज्ञान पर मर मिटे थे। एक दिन जब वे आफ़िस से अपने घर को लौट रहे थे, उन्हें एक साइनबोर्ड दिखाई दिया, जिसमें लिखा हुआ था 'दी इंडियन एसोसिएशन फ़ार दी कलटीवेशन आफ़ साइन्स' अर्थात् विज्ञान की उन्नति के लिए भारतीयों की मंडली। उस समय इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंडली की एक बैठक हो रही थी और इसमें सर आशुतोष मुकुर्जी भी थे। रमन इस एसोसिएशन के अवैतनिक सेक्रेटरी डाक्टर अमृतलाल सरकार से मिले और रमन ने उन्हें अपने लेख जो लंदन के 'फ़िलासफ़िकल मेगज़ीन' में निकले थे, दिखलाये। रमन की विज्ञान की ओर विशेष अभिरुचि देखकर तथा उनके लेखों से उनकी विद्या-बुद्धि का परिचय पाकर उन्हें उसी समय एक कमरा दे दिया गया। भारत के इन महान् वैज्ञानिक ने उस कमरे में अपने प्रयोग करने शुरू किये। वे प्रातःकाल अपनी प्रयोगशाला में आ जाते और वहाँ क़रीब ९ बजे तक प्रयोग किया करते। इसके बाद अपने घर जाते, वहाँ भोजन आदि करके दस बजे तक अपने आफ़िस पहुँचते। वहाँ से वे ठीक चार बजे चल देते और फिर अपनी प्रयोगशाला में क़रीब ५ बजे तक आ जाते। इस प्रकार वे क़रीब सोलह-सत्रह घंटे दिन में काम किया करते थे। अपने इस कठिन परिश्रम के द्वारा रमन महोदय ने भारत का मुख उज्ज्वल किया है।

सर आशुतोष मुकुर्जी का इस एसोसिएशन से घनिष्ठ संबन्ध था। आप उस समय कलकत्ता-विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर भी थे और बहुधा वहाँ आया करते थे। धीरे धीरे रमन से उनकी मित्रता हो गई। आप स्वयं बहुत बड़े विद्वान् थे। आप ने रमन को जल्दी ही पहचान लिया। रमन जो अन्वेषण वहाँ करते थे, एसोसिएशन के बुलेटीन में बराबर छपा करते थे।

तीन वर्ष के बाद रमन की कलकत्ते से रंगून को बदली हो गई। यह उन्हें बहुत खला, परन्तु वे पराधीन थे, क्या कर सकते थे। विज्ञान से कुछ समय के लिए उन्हें छुट्टी लेनी पड़ी। रंगून में वे अपना कार्य बड़ी ही कुशलता-पूर्वक करते थे। विज्ञान के पीछे तो वे दीवाने थे ही। एक दिन रंगून में उन्होंने सुना कि इनसीन-स्कूल की प्रयोगशाला में एक नवीन वैज्ञानिक यन्त्र आया है। उसे देखने के लिए रमन आधी रात को चल दिये और उसे देख कर फिर बड़े सवेरे ही अपने घर लौट आये। रमन बड़े विकट परिश्रमी हैं। इसके सिवा प्रत्येक काम को बहुत सफ़ाई और शीघ्रता से भी करते हैं। कभी कभी तो वे बहुत अधिक जल्दी करने लगते हैं। उनकी इसी अद्भुत शक्ति को देखकर हिन्दू-विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग विभाग के प्रिंसपल प्रोफ़ेसर किंग ने एक बार कहा था कि 'यह बड़े आश्चर्य की बात है कि प्रयोगशाला में रमन के हाथों से फ़्लास्क और टेस्टट्यूब टूटने से किस प्रकार बच जाते हैं।'

सन् १९१० के मार्च में रमन के पिता की मृत्यु हो गई। इस कारण वे छः महीने की छुट्टी लेकर मदरास गये। इस छुट्टी में भी उन्हें कल न पड़ती थी। वे प्रेसीडेंसी कालेज जाकर प्रयोगशाला में काम किया करते थे।

सन् १९११ में रमन की कलकत्ते को फिर बदली हो गई। यह बात जानकर उनको बड़ी प्रसन्नता हुई। वे अपनी प्रयोगशाला की याद कर फूले न समाते थे। उन्होंने कहा है कि 'मेरे लिए इस शहर को छोड़कर और दूसरा स्थान ठीक नहीं है। मैं पृथ्वी के कई देशों व शहरों में रह चुका हूँ। मैं योरप और अमरीका की कई प्रयोगशालाओं में काम कर चुका हूँ। परन्तु मुझे हमेशा यह अनुभव हुआ है कि कलकत्ता ही मेरे लिए उपयुक्त जगह है और 'दी इंडियन एसोसिएशन फ़ार दी कलटीवेशन आफ़ साईन्स' ही मेरा घर है।'

कलकत्ता-विश्वविद्यालय में साईन्स-कालेज खोलने के लिए सर तारकनाथ पालित और डाक्टर रासविहारी घोष ने उदारता-पूर्वक बहुत सा धन दिया था। सर तारकनाथ का आदर करने के लिए साईन्स-कालेज में भौतिक-शास्त्र के अध्यापक के पद का नाम 'पालित-प्रोफ़ेसरशिप' रक्खा गया। सर आशुतोष इस पद पर किसी योग्य पुरुष को रखना चाहते थे। पर उन्हें कोई वैसा व्यक्ति देख न पड़ता था। अन्त में रमन की ओर उनका ध्यान गया। रमन को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे पहले से भी जानते थे। सर आशुतोष किसी योग्य भौतिकशास्त्री की खोज में थे और रमन किसी प्रयोगशाला की खोज में थे। दोनों की इच्छा-पूर्ति हुई। रमन ने सरकार से दो साल की छुट्टी माँगी, परन्तु वह स्वीकार न की गई। इस पर उन्होंने इस्तीफ़ा दे दिया, यद्यपि उन्हें 'पालित प्रोफ़ेसरशिप' में केवल १०००) महीना मिलने को था। सन् १९१४ में केवल २५ वर्ष की उम्र में रमन ने 'पालित प्रोफ़ेसरशिप' का भार अपने ऊपर लिया।

रमन ने अपने परिश्रम तथा बुद्धि से अपने विभाग की कीर्त्ति चारों ओर फैला दी। दूर दूर से विद्यार्थी उनके पास भौतिक-शास्त्र में अन्वेषण करने के लिए आने लगे। केवल बंगाल के ही नहीं, सारे हिन्दुस्तान के नवयुवक उनकी प्रयोगशाला में जुटने लगे। आज जिस प्रकार सर प्रफुल्लचन्द्र राय और सर जगदीशचन्द्र बोस के शिष्य भारत के भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों तथा कालेजों में देख पड़ते हैं, उसी प्रकार डाक्टर रमन के भी शिष्य भारत में फैले हुए हैं। डाक्टर एस० के० बनर्जी, डाक्टर रामनाथन, डाक्टर बी० एन० बनर्जी, डाक्टर एन० के० सूर उन्हीं के शिष्य हैं और तीनों भारत-सरकार के 'अंतरिक्ष-विद्या-विभाग' में ऊँची जगहों पर नौकर हैं। फणीन्द्रनाथ घोष और एस० के० मित्रा, डाक्टर निहालकरण सेठी, डाक्टर आर० एन० घोष भी आपके शिष्य हैं और ये लोग भिन्न-भिन्न विद्यालयों में प्रोफ़ेसर हैं। १९२१ में रमन का कलकत्ता-विश्वविद्यालय की डी० एस० सी० की आनरेरी डिग्री से सम्मान किया गया था।

अभी तक केवल चार ही भारतीय 'रायल सोसाइटी' के 'फ़ेलो' चुने गये हैं। यह वैज्ञानिकों की सोसाइटी लंदन में है और वही व्यक्ति इसके फ़ेलो चुने जाते हैं जिन्होंने विज्ञान में कुछ मार्के का काम किया है। स्वर्गीय रामानुजम् सबसे पहले भारतीय हैं जो इस सोसाइटी के फ़ेलो बनाये गये थे। दूसरे हुए सर जगदीशचन्द्र बोस। तीसरे हैं डाक्टर चन्द्रशेखर वेंकट रमन। सन् १९२४ में वे रायल सोसाइटी के फ़ेलो चुने गये। और चौथे हैं प्रसिद्ध विज्ञानविद् डाक्टर मेघनाथ साहा।

रायल सोसाइटी के फ़ेलो होने के बाद रमन के पास पाश्चात्य देशों के विज्ञान-सम्बंधी एसोसिएशनों और रिसर्च इन्सटीट्यूटों से निमंत्रण आये। इनमें से दो मुख्य थे। एक तो 'विज्ञान की उन्नति के लिए ब्रिटिश एसोसिएशन' का जो केनेडा में है और दूसरा लंदन के 'केलविन इन्सटीट्यूट' की शताब्दी मनाने की मैनेजिंग कमेटी का। सबसे पहले वे रायल सोसइटी की मीटिंग में सम्मिलित होने के लिए लंदन गये। वहाँ वे डेवी-फ़रेडे प्रयोगशाला में काम करते थे।

इसके पश्चात् रमन 'ब्रिटिश-एसोसिएशन' की मीटिंग के लिए टोरोनटो (कनाडा) गये। वहाँ उनसे प्रकाश के 'आणविक परिक्षेपण' (molecular scattering of light) पर व्याख्यान करने को कहा गया। उन्होंने बड़ी ही स्पष्टता से इस विषय का व्याख्यान किया और अमरीका के जो बड़े बड़े वैज्ञानिक वहाँ मौजूद हुए थे, सबने रमन की बड़ी प्रशंसा की। जिस समय रमन उस विशाल भवन से जाने लगे, प्रोफ़ेसर मिलीकेन ने (जिन्हें नोबेल-पुरस्कार मिल चुका था) कहा—प्रोफ़ेसर रमन, मुझे आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई और मैं आपसे परिचित होना चाहता हूँ।' इसी समय रमन को उन्होंने पासाडेना में अपनी प्रयोगशाला में आने के लिए निमंत्रित किया। रमन ने इस निमंत्रण को स्वीकार किया। वहाँ पहुँचने के पहले ही रमन 'मिलीकेन इन्स्टीट्यूट' के 'रिसर्च एसोसिएट' बना दिये गये। यह सम्मान पहले लोराँ तथा आइनस्टाइन को दिया जा चुका था। इससे मालूम हो सकता है कि इन भारतीय वैज्ञानिक का सम्मान पाश्चात्य देशों में किस प्रकार का हुआ। पासाडेना में जाकर रमन ने तापगतिविज्ञान और प्रकाश का परिक्षेपण (thermodynamics and scattering of light) इन दो विषयों का व्याख्यान किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटिश एसोसिएशन की मीटिंग के साथ ही साथ रमन को गणित-शास्त्र की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भी शामिल होना था, क्योंकि वे उसके कलकत्ता-विश्वविद्यालय की ओर से प्रतिनिधि थे। वे इस कांग्रेस में गणित-भौतिक शास्त्र-विभाग के सभापति बनाये गये। इस कांग्रेस में रूस के प्रतिनिधि ने उनको रूस आने का निमंत्रण दिया और अपनी एकाडेमी में व्याख्यान देने के लिए भी प्रार्थना की।

इस कांग्रेस के जलसे के बाद रमन ने कुछ समय तक इधर-उधर की सैर की। परंतु इस सैर में भी वे प्रकृति को विज्ञान की दृष्टि से देखते थे। उन्होंने ग्लेशियर के बर्फ़ और पहाड़ी झीलों के पानी के रंगों का अध्ययन किया और उनका कारण बतलाया।

रमन 'फ्रेंकलिन इन्स्टीट्यूट' की शताब्दी के लिए फ़िलाडेलफ़िया भी गये थे। वे वाशिंगटन, शिकागो और आएओवा विश्वविद्यालयों में भी गये और वहाँ की प्रयोगशालाओं का निरीक्षण किया।

माऊन्ट विलसन प्रयोगशाला का १०० इंच का परावर्तक (reflector) देखकर रमन ने कहा कि जो कुछ मैंने 'माऊन्ट विलसन' में देखा है, केवल उसी से मेरी यह यात्रा सफल हो गई है। इसके बाद वे अपने मित्र प्रोफ़ेसर बेजकेनीज़ से जो अंतरिक्ष-विद्या में प्रवीण हैं, मिलने नार्वे गये। इस यात्रा में रमन ने कई प्रसिद्ध तथा दिग्गज वैज्ञानिकों से भेंट की। उनमें से बोर, स्वेउबर्ग, अरीनियस और नर्नस्ट के नाम उल्लेखनीय हैं। रमन दस महीने तक इस यात्रा में रहे।

कुछ ही महीनों के बाद रमन को रूस की विज्ञान की एकाडेमी की ओर से निमंत्रण आया और उनके वहाँ जाने पर उनका बहुत सम्मान हुआ।

डाक्टर रमन को खोज के काम से बहुत अनुराग है। उनकी इच्छा है कि भारत में भी आविष्कार का कार्य बढ़े। वे चाहते हैं कि हर एक विश्वविद्यालय में ख़ूब ज़ोरों से आविष्कार हों और इस प्रकार भारत भी विज्ञान में अपना अस्तित्व सिद्ध करे। रमन ने सन् १९२६ में बनारस के हिन्दू-विश्वविद्यालय के कानवोकेशन के अवसर पर भाषण करते हुए कहा था कि 'हम आज-कल वेदों और उपनिषदों के ज़माने में नहीं रहते हैं। हम एक नये युग में हैं। हम आविष्कार के ज़माने में रह रहे हैं, जिस समय नवीन विचारों की उत्पत्ति के लिए पुरुष कठिन परिश्रम कर रहे हैं। प्रकृति की माया को समझने के लिए मनुष्य अपनी सारी बुद्धि और तन, मन, धन लगा रहे हैं। पिछले सौ सालों में नवीन विषयों में तर्क-वितर्क हुए, उनकी उन्नति हुई और हर एक बातों से यही दीखता है कि अज्ञात विषयों में बहुत ही शीघ्रता से उन्नति हो रही है। हम भारत में एक कोने में खड़े रह कर केवल इस मनुष्य-शक्ति के तीव्र प्रवाह को देखा करें, यह नहीं हो सकता। इस उन्नति में अलग खड़े रहने का अर्थ है कि हम अपनी दुबलता और जीर्णता स्वीकार करते हैं और मृतक के समान हैं और अपना आर्थिक और राजनैतिक अधःपतन अपनी आँखों से देखें।'

रमन ने यह दिखला दिया है कि वे केवल दर्शक नहीं हैं, परन्तु उनमें वह शक्ति है जिसके द्वारा वे नये विचारों और नये विषयों का आविष्कार कर सकते हैं।

कलकत्ता में रमन ने अपने शुरू के प्रयोगों को और सुसम्बद्ध किया। वे वहाँ के 'फ़िज़ीकल रिव्यू' में छापे गये हैं। इंडियन एसोसिएशन फ़ार दी कलटीवेशन आफ़ साईन्स में जिसके वे बाद को सेक्रेटरी हो गये, वे 'गजिततार' के कम्पन पर प्रयोग करने लगे। उन्होंने यह सिद्ध किया कि यदि गजित स्थान मालूम हो जाय तो इस प्रकार के कम्पन को पहले से जान सकते हैं। यह उन्होंने बड़ी ही उत्तम विधि से प्रयोगों-द्वारा भी सिद्ध किया है। उनका वायोलिन के तार के कम्पन का सिद्धान्त प्रयोगों-द्वारा सिद्ध हो गया है। प्रयोगों से उनके भेड़ियानाद (wolf-note)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भी सिद्धान्त ठीक निकले, जिन्हें सब वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया। एक ख़ास स्वर पर वायोलिन की ध्वनि कम्पन गज के द्वारा ठीक नहीं कर सकते और उसमें से भेड़िया की सी गुर्राहट होने लगती है और इस कारण इसका नाम भेड़ियानाद रक्खा गया है। रमन ने सबसे पहले बतलाया कि वायोलिन की तुम्बी के लम्बे कम्पन के बाद ही कोई नाद न होने और थोड़े समय बाद नाद के फिर आरम्भ हो जाने के कारण यह भेड़ियानाद होता है।

रमन के प्रकाश-सम्बन्धी शुरू के अन्वेषण समुद्र के नीले रङ्ग पर थे। १९२१ में उन्होंने समुद्र के रङ्ग पर नवीन सिद्धान्त बतलाये, जो प्रकाश के आणविक परिक्षेपण (molecular scattering of light) पर अवलम्बित थे। उनका यह सिद्धान्त अब सब मानते हैं। आगे चलकर वे रासायनिक अणु की बनावट पर आविष्कार करने लगे। प्रयोगों-द्वारा उन्होंने देखा कि अणु की बनावट सब ओर एक सी नहीं है। जब प्रकाश की किरणें एक अणु के समूह से जो विद्युत् या चुम्बकीय क्षेत्र में है, प्रवाहित की जाती हैं तब समसंगति (symmetry) का अभाव दीख पड़ता है। अणु अपने ऋणाणु गुणों के कारण विद्युत् या चुम्बकीय क्षेत्र में टेढ़े हो जाते हैं और इस कारण प्रकाश की किरणों के प्रवाह में अन्तर हो जाता है। इन प्रयोगों के आधार पर उन्होंने कार्बनिक पदार्थों के रङ्ग के सिद्धान्त का बहुत ही अच्छा भौतिकीय विवरण दिया है।

रमन ने गैसों के चुम्बकीय गुणों का भी अध्ययन किया है। एक्स-रेज़ से भी उन्होंने काम किया है। एक्स-रेज़ को वस्तु-द्वारा प्रवाहित करने से और आवर्जित (refracted) किरणों की तसवीर लेने से द्रव और रवे के आणविक संयोग का पता चल सकता है।

पर रमन का सबसे मार्के का आविष्कार और जिसके कारण उन्हें नोबेल-पुरस्कार मिला है, २८ फ़रवरी १९२८ को हुआ था। यह आविष्कार सबसे पहले १६ मार्च १९२८ को 'नवीन विकिरण' (new radiation) नामक लेख के रूप में निकला था और वह लेख 'साऊथ इंडियन एसोसिएशन' (बंगलोर) में पढ़ा गया था।

बहुत दिनों तक वैज्ञानिकों को आकाश का नीला रङ्ग चक्कर में डाले हुए था। लार्ड रेले ने सर्वप्रथम इसका वैज्ञानिक विवरण दिया था कि प्रकाश का वायु-मंडल में छोटे छोटे कणों तथा वायु के अणुओं-द्वारा परिक्षेपण होता है और इसी परिक्षेपण में नीले रङ्ग का प्रकाश अधिक होने के कारण आकाश का रङ्ग नीला दीखता है। १९२१ में रमन ने प्रकाश के परिक्षेपण पर काम किया था। १९२३ में भी उन्होंने कुछ ऐसे प्रयोग किये जिनसे इस सिद्धान्त की सचाई प्रतीत होती थी। परन्तु रमन ने इसे केवल विशेष प्रकार की क्षीण चमक (feeble fluorescence) ही समझा। १९२७ में जब रमन काम्पटन एफ़ेक्ट (Compton Effect) के सिद्धान्त को निकालने में लगे हुए थे, उस समय उन्हें यह विचार हुआ कि उनके पहले के प्रयोगों में बहुत ही महत्त्व की बात हो सकती है। अतएव २८ फ़रवरी १९२८ को उन्होंने जो आविष्कार किया वह आज रमन-प्रभाव (Raman Effect) के नाम से प्रसिद्ध है।

रमन ने तीन हज़ार बत्ती के प्रकाश के बराबर पारद वाष्प लैम्प (mercury-vapour lamp) से जिससे केवल एक ही रङ्ग का प्रकाश निकलता है, कुछ बानजावीन (benzene) को प्रकाशित किया। इस प्रकाशावली से ९०° का कोण बनाते हुए परिक्षेपण-प्रकाश का अध्ययन किया गया। इस परिक्षेपण-प्रकाश की तसवीर में पारद लैम्प से प्राप्त प्रकाश का रङ्ग तो था ही, परन्तु उसमें और दूसरे रङ्ग भी थे। इससे ऐसा मालूम होता है कि बानजावीन अणुओं ने इन नये रङ्गों को जन्म दिया है।

प्रकाश के वर्तमान सिद्धान्तों में विकिरण (radiation) शक्ति के बंडलों-द्वारा प्रवाहित होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमन ने अपना यह आविष्कार इस प्रकार समझाया है—

यह शक्ति का बंडल जब अणु से भिड़ता है तब उसकी कुछ शक्ति अणु ग्रहण कर लेता है और बची हुई शक्ति 'दूसरे रङ्गों' के रूप में प्रदर्शित होती है। कभी कभी बहुत ही अद्भुत बात होती है। यदि शक्ति का बंडल उत्तेजित अणु से भिड़ता है तो यह बंडल जो क्वाण्टम (quantum) के नाम से प्रसिद्ध है, कुछ शक्ति खोने के बदले अणु की भी शक्ति ग्रहण कर लेता है और इस बढ़ी हुई शक्ति से आगे चला जाता है। यह बात क़रीब क़रीब सभी अणुओं में होती है और इससे अणु की भीतरी बनावट की खोज की जा सकती है।

इस प्रकार रमन-प्रभाव (Raman Effect) से आविष्कार के लिए नवीन पथ खुल गया है। इस विषय पर अभी तक पाँच सौ से अधिक मूल लेख लिखे जा चुके हैं। इस आविष्कार से रासायनिक तथा भौतिक शास्त्रों की कई छिपी हुई बातें खुलेंगी।

गत वर्ष भारत-सरकार ने डाक्टर रमन को विज्ञान की उन्नति के लिए 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया और इटली के विज्ञान-परिषद् ने 'रमन एफ़ेक्ट' के आविष्कार पर मट्यूसी (Matteucei) सुवर्ण-पदक प्रदान किया।

डाक्टर रमन दो बार इंडियन साइन्स कांग्रेस के भौतिक शास्त्र-विभाग के सभापति हो चुके हैं। सन् १९२२ में वे 'इंडियन साइन्स कांग्रेस' के सभापति हुए थे। इसकी बैठकें मदरास में हुई थीं। इस अवसर पर उन्होंने 'प्रकाश के विकिरण की समस्याओं' पर बहुत ही रोचक तथा पाण्डित्य-पूर्ण व्याख्यान किया था।

अभी कुछ ही दिन हुए, रमन को लंदन की रायल सोसायटी ने ह्यूगस-पदक प्रदान किया था।

कलकत्ते के 'दक्षिण-भारत-क्लब' ने रमन को 'सर' की उपाधि पाने के अवसर पर सत्कार किया था। उस समय उन्होंने कहा था कि 'इस अवसर पर आपने मेरे विज्ञान के कार्यों के सम्बन्ध में चर्चा की है। मैं वही बात दुहराना चाहता हूँ जो मैंने कुछ महीने पहले 'इंडियन साइन्स कांग्रेस' के सभापति की हैसियत से कही थी। मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं वैज्ञानिक जीवन अभी आरम्भ कर रहा हूँ। मेरा तो यही विचार है और मुझे विश्वास है कि जो वैज्ञानिक अपने कार्य के लिए मान तथा पुरस्कार पाने की इच्छा रखता है उसके दिन निकट आ गये हैं। वैज्ञानिकों को अपने कार्यों के लिए यह भावना न होनी चाहिए।

ये मार्मिक उद्गार रमन जैसे वास्तविक पण्डित के सर्वथा उपयुक्त हैं। भगवान् करे, रमन महोदय चिरंजीवी हों और अपने तरह तरह के आविष्कारों तथा योग्य शिष्यों से अपने भारत में भी विज्ञान के ज्ञान का प्रकाश पूर्ण रूप से फैलाने में समर्थ हों।

—हीरालाल दुबे

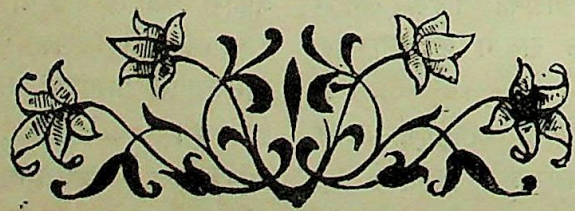

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की बलिवेदी पर

पहाड़ की उपत्यका पर छोटा सा नगर था। तीन सप्ताह से वह नगर शत्रुओं से घिरा था। अभी तक शत्रु नगर को अपने हाथ में तो नहीं कर पाये थे, परन्तु उसकी चारों ओर की सीमाओं पर उनका घेरा क्रमशः अधिक दृढ़ होता जा रहा था। रात को मशाल की रोशनी में शत्रुओं की सेना जब जगमगा उठती तब वह दृश्य देखकर नगरवासियों के हृदय में भय का सञ्चार किये बिना न रहता। शत्रुओं के बलवान् घोड़ों की हिनहिनाहट और सैनिकों का निश्चित भाव से घूमना-फिरना इनके हृदय को जला देता। छावनी का हँसी-ठट्ठा, आमोद-आह्लाद तथा तरह तरह के आनन्दमय कलरव इन्हें व्यथित किये डालते।

सफलता के आनन्द का अनुभव करने के लिए व्यग्र रहना मनुष्य-मात्र का स्वभाव है। यही कारण है कि शिकारी अपने शिकार को एकाएक पकड़ लेना नहीं पसन्द करता, उसे वह खेला खेलाकर मारता है। ठीक ऐसा ही व्यवहार इस नगर के निवासियों के प्रति उनके शत्रुओं का भी था। जिस नदी से नगरवासियों को जल मिलता था उसमें शत्रुओं ने मुर्दे पाट दिये। नगर के आस-पास जो उपवन लहलहा रहे थे जला दिये, सारी खेती रौंद डाली गई, नगर की सीमाओं पर के सारे वृक्ष काट डाले गये, सारा नगर उजाड़ सा हो उठा।

बाहर से नगरवासियों को किसी प्रकार की सहायता की आशा नहीं थी। नगर की सीमा के भीतर क़ैद रहते रहते वे क्रमशः अधीर हो रहे थे। उनके मुखमण्डल पर से हँसी की रेखा विदा हो चुकी थी। पुरुष नगर की गली गली में पहरा दे रहे थे और स्त्रियाँ रक्षा के लिए भगवान् से प्रार्थना कर रही थीं। लड़के-लड़कियाँ भी इधर-उधर घूम-घाम रही थीं। माता-पिता की ओर जब वे दृष्टि डालतीं तब उन्हें सहानुभूति का आभास तक न मिलता था। समीप ही बड़ी बड़ी पर्वतश्रेणियाँ गम्भीर भाव से खड़ी थीं, मस्तक पर चन्द्रमा का धुँधला प्रकाश था, आकाश पर अगणित तारे टिम-टिमा रहे थे, सारी प्रकृति मानो निस्तब्ध थी।

नगर में किसी घर में दीपक नहीं जलता था। घने कोहरे के आवरण से रात्रि का अन्धकार मानो और भी घना हो उठा था। उसी अन्धकार में काली पोशाक पहने हुए कोई स्त्री इधर-उधर घूम रही थी। रास्ते में उसे देखते ही लोग आपस में एक दूसरे से कहने लगे—क्या यह वही है? हाँ, वही तो मालूम पड़ती है।

पहरेवालों से मुलाकात होने पर वे उसे डाटने लगते। वे कहते, तुम फिर बाहर निकल आईं मुरला, ख़बरदार। बाहर क्षण भर के लिए भी कोई सुरक्षित नहीं है। ऐसे समय में कोई किसी के भी प्राण ले सकता है, खोजने पर किसी को उसका पता नहीं चलेगा।

मुरला किसी की बात का कोई उत्तर न देती, जिस तरह वह चुपचाप आती, उसी तरह चली जाती। रात्रि के अन्धकार में काली पोशाक पहन कर नगर के दुर्भाग्य की प्रतिमा-सी वह जान पड़ती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुरला उसी नगर की एक प्राचीन निवासिनी थी, वह एक-मात्र सन्तान की माता थी। उसकी चिन्ता का एक-मात्र लक्ष्य था उसका पुत्र और उसकी जन्म-भूमि। सोना सा दगदगाता हुआ उसका पुत्र उस समय उमङ्ग के मारे फूला न समाता, विजय के गर्व से वह मतवाला हो रहा था, वह था शत्रुओं के एक दल का नेता। उसी की निगरानी में शत्रु नगर को धराशायी करने पर तुले थे।

थोड़े ही दिन हुए, वही उसका पुत्र मुरला के हृदय का आनन्द था। वही था उसके हृदय की सारी आशाओं तथा अभिलाषाओं का स्वर्ण-सिंहासन। इस नगर के हर एक पत्थर के टुकड़ों और घर की दीवारों के साथ मुरला का अकाट्य सम्बन्ध था। नगर की वह प्राचीर उसके पूर्वजों की धरोहर थी, वही उसे बना कर छोड़ गये थे। उसके पिता-पितामह तथा अन्य कितने आत्मीयों ने जो आज संसार में नहीं हैं, वहाँ के वायु से स्वास ले लेकर जीवन-धारण किया था। कदाचित् उनका अन्तिम निश्वास आज भी उसी वायुमण्डल में बह रहा था, उनके शरीरों के अस्थि-पञ्जर भी यहाँ की मिट्टी में मिले थे। इस देश की कितनी कहानियाँ, कितनी गाथायें, देश-वासियों की कितनी आशा-आकांक्षायें उसके प्राणों से जुड़ी थीं। अपनी जन्म-भूमि के प्रति मुरला का बड़ा अनुराग था। वह सोचती कि मेरा पुत्र इस जन्मभूमि के कल्याण के ही लिए अवतीर्ण हुआ है। देश के उद्धार के ही लिए उसे पाल-पोस कर तैयार किया है, अपनी इस मनोवाञ्छा की पूर्ति के लिए मेरी ही सृष्ट की हुई वह मानो मङ्गलमय शक्ति है। वह दिन कितने गौरव का होगा जब देश की बलिवेदी पर मैं उसका उत्सर्ग करूँगी। आज उसकी वही मातृभूमि तो थी, किन्तु उसका वह पुत्र कहाँ था?

इसी चिन्ता से व्यग्र होकर मुरला गली गली की खाक छान रही थी। रात्रि के अन्धकार में उसकी काली मूर्ति यम के दूत की-सी भयङ्कर जान पड़ती थी। जो लोग उससे अपरिचित थे वे उसकी राह बचा कर चलते।

मुरला नगर से बाहर एक निर्जन स्थान पर गई। वहाँ उसने देखा कि एक स्त्री किसी पुरुष के शव के पास घुटनों के बल बैठकर भगवान् से प्रार्थना कर रही है। उसके पास जाकर मुरला ने पूछा—ये क्या तुम्हारे पति हैं? उसकी बात सुनते ही वह स्त्री उठ खड़ी हो गई। उसने कहा—जी नहीं, यह मेरा पुत्र है। मेरे पति की मृत्यु हुए आज तेरह दिन बीत गये।

कुछ देर तक दोनों चुपचाप खड़ी रहीं। अन्त में निस्तब्धता भङ्ग करते हुए उस स्त्री ने कहा—भगवान्, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो। तुम मेरा कृतज्ञता-पूर्ण धन्यवाद स्वीकार करो।

उस स्त्री की बात सुनकर मुरला चकित हो गई। उसने कहा—ऐं, यह क्या? क्या तुमने मृत्यु के ही हाथ में सौंपने के लिए पुत्र उत्पन्न किया था।

स्त्री ने शान्त भाव से कहा—उसकी मृत्यु के लिए चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि मृत्यु निरर्थक नहीं हुई। उसने एक महान् उद्देश से प्राणत्याग किया है। देश की बलिवेदी पर उसके जीवन का उत्सर्ग हुआ है। इधर कुछ दिनों से मेरा पुत्र विलासिता की ओर अग्रसर हो रहा था, आमोद-प्रमोद में ही वह विशेष रूप से आसक्त रहता था। उसकी यह प्रवृत्ति कुछ मात्रा तक उचित भी थी, क्योंकि मानव-जीवन की पूर्णता के लिए आमोद-प्रमोद भी विशेषरूप से आवश्यक है। परन्तु उसके कारण जब चञ्चलता बढ़ जाती है तब मनुष्य की स्थिर बुद्धि तथा विवेकशीलता में प्रायः शिथिलता आ जाती है। केवल इसी लिए मुझे आशङ्का होती थी कि कहीं मेरा लड़का भी कोई ऐसा काम न कर बैठे जिससे देश का अनिष्ट हो। देखो, मुरला का लड़का कैसी नीचता का व्यवहार कर रहा है? वह देशद्रोही कुलाङ्गार है! धिक्कार है उसके जीवन को उसकी माता की कोख को, जिसने ऐसे पुत्र को जन्म दिया।

मुरला एकाएक अन्धकार में विलीन होगई।

सवेरा होते ही मुरला नगर-रक्षक के समीप उपस्थित हुई। उसने कहा कि मेरा पुत्र देशद्रोही बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर आप लोगों से शत्रुता कर रहा है। या तो इस अपराध के कारण मेरी हत्या कर डालिए या मेरे लिए रास्ता खाली कर दीजिए, मैं पुत्र के पास चली जाऊँ।

नगर-रक्षक ने उत्तर दिया—तुम्हारा पुत्र तुम्हारे पास से चला गया है, किन्तु तुम्हारा देश तो है। आज तुम्हारा पुत्र जैसे हम लोगों का शत्रु है, वैसे तुम्हारा भी है।

नगर-रक्षक की इस बात से मुरला को सन्तोष नहीं हुआ। उसने कहा—परन्तु मैं उसकी माता हूँ। वह चाहे कितने ही अपराध करे, उसके लिए मैं ही अपराधिनी हूँ।

मुरला को शान्त करने के लिए नगर-रक्षक ने उसे बहुत समझाया। उसने कहा—तुम्हारे लड़के के अपराध के लिए तुम्हारी हत्या नहीं की जा सकती। हमारी यह दृढ़ धारणा है कि उसके इस पाप की प्रेरणा उसे तुमसे नहीं हुई। उसकी इस जघन्य प्रवृत्ति के लिए तुम्हें कितना दुख है, यह भी हमसे छिपा नहीं है। क्या तुम्हें मालूम है कि तुम्हारा लड़का अब तुम्हारी याद करने तक का भी क्लेश नहीं स्वीकार करता? शायद वह तुम्हें भूल गया है। ऐसी दशा में तुम्हारे लिए यदि किसी प्रकार के दण्ड की आवश्यकता थी तो यही क्या कम दण्ड है? वास्तव में पुत्र का माता को भुला देना उसके प्रति बड़ा कठोर दण्ड है, वह दण्ड मृत्यु से भी भयङ्कर है।

"हाँ, मृत्यु से भी भयङ्कर है।"

× × × ×

नगर का द्वार खुल गया। मुरला निकल कर बाहर गई। चहारदीवारी के बाहर उसी के देशवासी कितने ही वीर मृत्यु-शय्या पर सोये हुए थे। मुरला ने उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया। उनके रक्त से वहाँ की भूमि सींच गई थी। "मेरे ही पुत्र ने स्वजातीय बन्धुओं के रक्त से पृथ्वी को कलङ्कित किया है", यह बात मन में आते ही मुरला के नेत्रों के सामने अँधेरा छा गया। मार्ग में तरह तरह के अस्त्रों के जो भग्नावशेष पड़े थे उन्हें देखकर उसका मातृहृदय विद्रोही हो उठा, क्योंकि विनाश करने के लिए तो माता का हृदय कभी प्रोत्साहन दे नहीं सकता। आधा मार्ग समाप्त करने पर मुरला ने दृष्टि फेर कर एक बार स्वदेश की ओर ताका। दूसरी ओर से उसे देखते ही शत्रु दल के सैनिक वेग से उसकी ओर अग्रसर हुए। बातचीत करने पर जब उन्हें मुरला का पूर्ण परिचय मालूम हुआ तब बड़े आदर से लोग उसे उसके पुत्र अर्थात् अपने नेता के पास ले गये। वे लोग अपने नेता के वीर्य-पराक्रम तथा कर्म-कुशलता की उससे भूरि भूरि प्रशंसा करने लगे। पुत्र के गौरव की बात सुन कर मुरला के मातृहृदय का सारा क्षोभ क्षण भर के लिए तिरोहित हो गया।

सूबासिंह राजोचित वेश में सुसज्जित होकर शत्रुओं के शिविर में विराजमान था। उसकी कमर से मणियों और मोतियों से जड़ी हुई एक तलवार ल[illegible] रही थी। पुत्र की अनुपम मूर्ति [illegible] रह गई! क्या यह वही सूबासि[illegible] स्वप्न देख रही थी।

पुत्र को देखकर मुर[illegible] आश्वासन मिला। यह व[illegible] पर अवतीर्ण होने से पहले ही उस[illegible] कार प्राप्त किया था। फिर से देखकर मुरला क[illegible] वत्सलता का प्रबल होना ही स्वाभाविक था, लाख पाप करने पर भी उसके प्रति मातृहृदय की स्नेहधारा में ज़रा भी व्याघात नहीं पड़ा।

सूबासिंह माता के चरणों पर लोट गया। गद्-गद स्वर में उसने कहा—मा, तुम आई हो? आने से पहले तुम्हें अवश्य मेरे मनोभावों का पता चल गया होगा। अभी तक मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा में था, अब कल ही इस नगर को विजय कर लूँगा।

"किन्तु बेटा, यही नगर तो तुम्हारी जन्म-भूमि है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सारी पृथ्वी ही मेरी जन्मभूमि है। मैंने पृथ्वी पर जन्म-ग्रहण किया है संसार में कीर्ति स्थापित करने के लिए। आज यही नगर मेरे मार्ग का कण्टक है। पहले इस विजय का डंका बजाकर तब आगे बढ़ूँगा।"

"बेटा, यहाँ के एक एक पत्थर के टुकड़े से तुम्हारा सम्बन्ध है।"

"होगा। ईंट-पत्थर की ओर ध्यान देने का अब मुझे समय नहीं है। पत्थरों की चिन्ता तब करनी पड़ेगी, जब सारा नगर धराशायी करके नवीन दुर्ग, नवीन राजप्रासाद का निर्माण करूँगा। इससे पहले ईंट-पत्थर का विचार करने का समय नहीं है।"

"क्या देश के आदमियों से तुम्हारा कोई सम्बन्ध ही नहीं है?"

"हाँ, देश के आदमियों की हमें ज़रूरत है, वह भी मेरी कीर्ति-गाथा के लिए। देश में यदि मनुष्य अन्य न होंगे तो मेरी कीर्ति का ही कौन गान करेगा वहाँ के वायु से [illegible] सनेगा ही कौन?"

था। कदाचित् उनका अकीर्तिमान् तो वही होता है जो वायुमण्डल में वह रहा [illegible]कार करके संसार के भिन्न पञ्जर भी यहाँ की मिट्टी करता है। ध्वंस करना कितनी कहानियाँ, किन्तु नहीं!"

कितनी आशा-[illegible] आख़िर, तैमूर और चंगेज़ख़ाँ का अपने इतिहास के पृष्ठों पर से किसी ने हटा तो दिया नहीं। जिस तरह अकबर और शाहजहाँ का नाम सबको मालूम है, वैसे ही इन्हें भी सब जानते हैं।"

"परन्तु तैमूर और चंगेज़ख़ाँ ने अपने ही देश का ध्वंस नहीं किया है।"

माता-पुत्र में परस्पर इसी तरह की बातचीत हो रही थी। पुत्र की बातें सुनकर माता का उत्साह क्रमशः क्षीण हो रहा था, पुत्र के गौरव से उन्नत मस्तक नीचा हो गया था।

माता सृष्टि-स्वरूपिणी है, वह जननी है। प्रलय या ध्वंस की बात उसे सह्य नहीं है। ऐसी बातें उसके हृदय के अन्तस्तल तक में जाकर आघात पहुँचाती हैं। ऐसी दशा में जो हाथ संसार के मंगल-विधान में न उपयुक्त होकर प्रलय मचाने की ही ओर बढ़ रहे हों, माता की दृष्टि में वे सदा ही घृणा के पात्र रहेंगे।

परन्तु यौवन के मद से उन्मत्त रहने के कारण पुत्र को तो इस ओर ध्यान देने तक का भी अवसर नहीं मिलता। फिर सूबासिंह इस बात पर विचार ही करने को क्यों बैठता? वह तो अपने भावी जीवन के निर्माण की ही चिन्ता में व्यग्र था। उसे क्या पता कि माता का हृदय जहाँ सृष्टि-स्वरूपिणी जननी के रूप में अभिव्यक्त होता है, वहाँ उस स्वाभाविक क्षेत्र में बाधा पहुँचते ही वह कोमल हृदय कितना प्रलयङ्कर रूप धारण कर लेता है?

तम्बू के भीतर मुरला बैठ गई। उसका मस्तक झुका था। नेत्रों में ज्योति नहीं, हृदय में उत्साह भी नहीं था। तम्बू से झाँककर उसने देखा, समीप ही उसकी जन्मभूमि दिखाई पड़ रही थी। यह उसकी जन्मभूमि ही नहीं थी, यहीं उसका लालन-पालन हुआ, यौवन के प्रभात-काल में यहाँ के ही मलयानिल से आन्दोलित होकर उसके वसन्त का उदय हुआ और यहीं उसने अपनी प्रथम सन्तान सूबासिंह का प्रसव किया। यह वही सूबासिंह भी था।

अस्तंगामी सूर्य की क्षीण किरणें नगर की अट्टालिकाओं से लेकर साधारण घरों की दीवारों और चहारदीवारियों तक पर स्वर्ण की भाँति प्रतिफलित हो रही थीं। खिड़कियों और दरवाज़ों के शीशों पर वे किरणें उन्हें रक्त-रञ्जित सी कर रही थीं। उन्हें देखकर मानो यह विशाल नगर आहत होकर पड़ा है और उसके क्षत-स्थानों से शतधारा से रक्त प्रवाहित हो रहा है।

समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। कुछ ही क्षण बीतते बीतते सन्ध्या का अन्धकार घनीभूत हो गया। सारा नगर निर्जीव शरीर के समान पड़ा रह गया, क़बरिस्तान की बत्तियों के समान मस्तक पर एक एक करके तारे टिमटिमाने लगे। मुरला ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

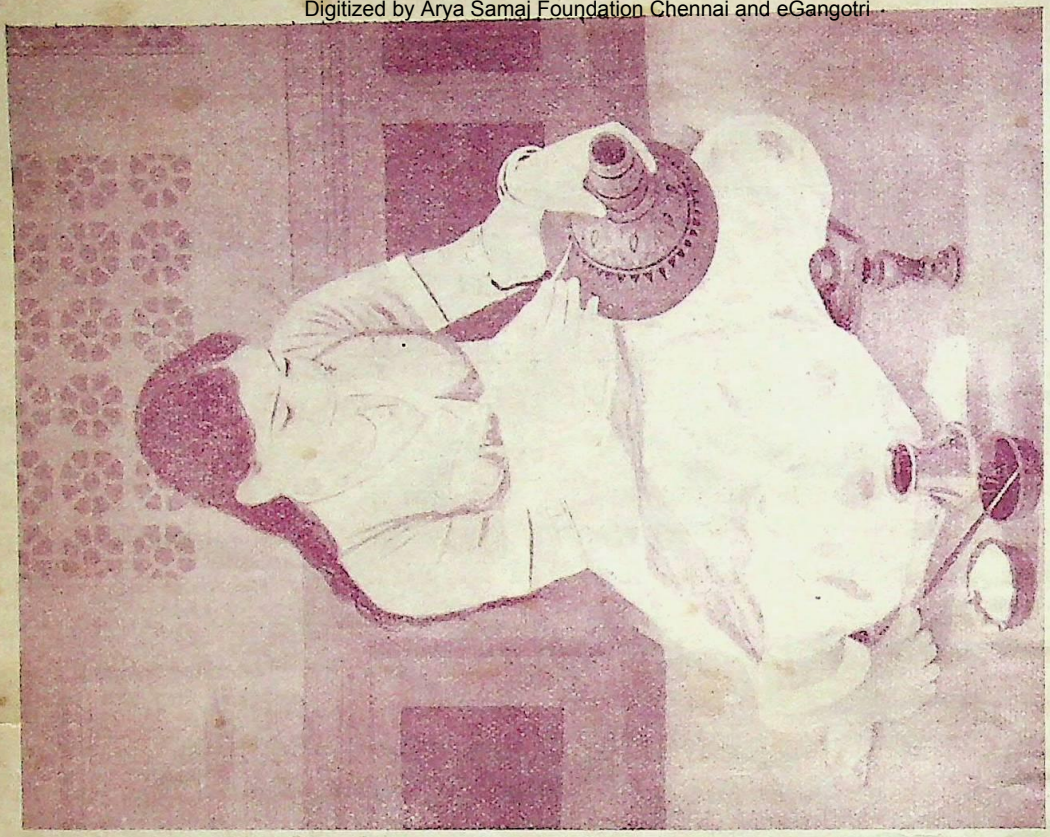

चित्र-लेखा

शेष-रागिनी

श्रीयुत एस० जी० ठाकुरसिंह की चित्रकारी
(चित्र-परिचय में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने हृदयरूपी नेत्र से देखा कि नगरवासियों को दीपक जलाने का साहस नहीं हो रहा है। अन्धकार में ही वे इधर-उधर घूम रहे हैं। उनकी गति शिथिल और दृष्टि अवनत है। नगर की जितनी वस्तुओं से वह परिचित थी वे सभी मानो निस्तब्ध होकर खड़ी थीं। खड़ी खड़ी मानो उसी की प्रतीक्षा कर रही थीं। यह परिचित नगर न जाने किसके आकर्षण से आकर्षित होकर आज विशेष रूप से उसके साथ आत्मीयता के बन्धन में जकड़ उठा था? आज मुरला के हृदय में मानो वत्सलता का नवीन अनुराग जागृत हो उठा। उसे ऐसा जान पड़ने लगा, मानो नगर के निवासी-मात्र उसकी सन्तानें हैं। एक ही दिन में वह मानो सबके लिए मातृस्थानीया हो गई थी।

पर्वत के शिखर पर से धीरे धीरे मेघ उतरे आ रहे थे। सूबासिंह बोल उठा—नियमित रूप से अन्धकार होते ही आज रात को नगर घेर लिया जाय।

मुरला बैठी थी। सूबासिंह उसकी गोद में मस्तक रक्खे लेटा था। पुत्र की बात सुनते ही उसके मुख पर हँसी की रेखा दिखाई दी। परन्तु यह हँसी तो वास्तव में हँसी नहीं थी, यह मानो उसके उमड़े हुए आँसू थे, जो रोक रखने के कारण विकृत होगये और अन्त में हँसी के रूप में निकल पड़े।

माता ने पुत्र के शरीर पर हाथ फेरते फेरते कहा—अब यह सब बातें छोड़ दो। इस शान्त एवं निस्तब्ध सन्ध्या के समय कोई और बात सोचो। ज़रा छुटपन की बातों पर तो ध्यान दो। उस समय यहाँ के लोगों के साथ तुम्हारा कितना प्रेम था? ये लोग तुमसे कितना स्नेह करते थे? इनका चिरकाल का सम्बन्ध तुम्हें याद नहीं है?

"अब किसी और विषय की ओर मेरा ध्यान नहीं जाता। मेरे मस्तिष्क में केवल मेरे भावी यश, प्रतिष्ठा तथा गौरव की चिन्ता चक्कर काट रही है।"

"एक काम अभी शेष है। अब तुम्हें विवाह करके गृहस्थी चलानी है।"

"नहीं मा, विवाह के पचड़े में तो किसी तरह भी नहीं पड़ सकता। मैंने जहाँ तक विचार किया है, पारिवारिक ज़ीवन की सङ्कीर्णता में मेरा चित्त किसी तरह न शान्त हो सकेगा।"

"यह क्यों? क्या तुम्हें सन्तान की अभिलाषा नहीं है?"

"सन्तान की क्या आवश्यकता है मा? सन्तान से मुझे कोई लाभ न होगा। क्योंकि मेरी ही तरह कोई आकर उनकी भी हत्या कर जायगा। उस समय कदाचित् उस हत्या का बदला लेने की भी शक्ति मुझमें न रहे। उस दशा में सन्तान दुख का ही कारण तो होगी?"

"देखो, आकाश की बिजली देखने में कितनी प्रभामय जान पड़ती है। परन्तु उसकी कोई सार्थकता तो मालूम नहीं पड़ती। सम्भव है, तुम्हारे जीवन में भी किसी दिन ऐश्वर्य की बिजली चमचमा उठे, तो भी तुम्हारा जीवन व्यर्थ ही समझा जायगा।"

"हाँ, ठीक कहती हो मा। मैं आकाश की बिजली हूँ।"

माता-पुत्र में यही बातचीत हो रही थी। कुछ देर के बाद सूबासिंह को नींद आ गई।

मुरला उठ कर खड़ी हो गई। वह बिलकुल तैयार होकर ही आई थी। अब उसे और सङ्कल्प-विकल्प की आवश्यकता न रही। मुरला ने जिस जाति में जन्म ग्रहण किया था उसकी दृष्टि में देशोद्धार का ही प्रयत्न करना परम धर्म था। वह जाति आवश्यकता पड़ने पर देश के नाम स्नेह-ममता आदि सभी का बलिदान कर सकती थी।

मुरला उठ खड़ी हुई। एक काले कपड़े से उसने सूबासिंह के सारे शरीर को आच्छादित कर दिया। फिर एक तेज़ छुरा उसकी छाती में भोंक दिया। सुबासिंह के शरीर में ज़रा सा कम्पन हुआ और तुरन्त ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

श्रीयुत एस० जी० ठाकुरसिंह की चित्रकारी (चित्र-परिचय में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूबासिंह के रक्षक निस्तब्ध खड़े थे। उन्हें सम्बोधित करके मुरला ने कहा—मैं इस नगर की एक निवासिनी हूँ। इस दृष्टि से जन्मभूमि के प्रति अपने कर्तव्य का यथाशक्ति पालन किया। साथ ही सूबासिंह की माता हूँ, अतएव पुत्र के ही पास मैं भी रहना चाहती हूँ। कोई दूसरी सन्तान उत्पन्न करने के योग्य तो अब मेरी अवस्था है नहीं, इससे देखती हूँ कि मेरा यह जीवन व्यर्थ ही हुआ, मेरे द्वारा देश का कोई काम न हुआ।

कहते कहते मुरला ने एक बार मातृभूमि की ओर ध्यान से देखा और फिर पुत्र के रक्त से रँगा हुआ छुरा अपनी छाती में भी भोंक लिया।*

—रामावतार शर्म्मा

*गोर्की की एक कहानी के आधार पर।

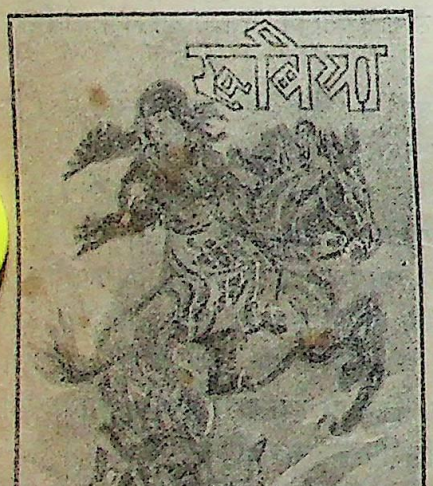

रूबिया

रूस की मशहूर ज़ारशाही का करुण दृश्य व विचित्र प्रेम देखने के लिए रूबिया उपन्यास पढ़िए। पुस्तक इतनी मज़ेदार और रोचक है कि बिना पूरी पढ़े छोड़ने को जी नहीं चाहता। चित्रों ने तो दुगुनी शोभा कर दी है।

मूल्य केवल १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्य की भावना

[इस लेख के लेखक डाक्टर त्रिपाठी इलाहाबाद-विश्वविद्यालय में इतिहास के अध्यापक हैं। 'भविष्य की भावना' नाम के अपने विचारपूर्ण लेख में आपने संसार की वर्तमान व्यापक क्रान्ति का थोड़े में परिचय दिया है और बताया है कि वह भारत में भी मौजूद है। आपका कहना है कि यहाँ का युवक-हृदय भी 'स्वर्ग और ज़न्नत के वैभव' का उपभोग करना चाहता है। इसकी सिद्धि के लिए विद्वान् लेखक ने युवकों की कुछ माँगों का विस्तार के साथ विवेचन किया है। आपका कहना है कि 'आज दलित, निर्धन, पुरुष, स्त्री यही नहीं, बालक और बालिकायें तक भिन्न भिन्न क्षेत्रों में स्वाधीनता और स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए दत्तचित्त हो रहे हैं।' इस लेख में इसी महत्त्वपूर्ण वर्तमान समस्या का दिग्दर्शन कराया गया है।]

भारत में पश्चिमी ढङ्ग की शिक्षा और पश्चिमी राजनैतिक आदर्शों के अस्तित्व में आ जाने से लोगों के विचारों में जिस शीघ्रता से परिवर्तन हो रहा है उसको देखकर लार्ड रीडिंग ऐसे महान् व्यक्ति तक हैरान हैं। हमारे देश के वयोवृद्ध लोगों को तो यह उलट-फेर अपूर्व, विलक्षण और अलौकिक-सा जान पड़ता है। किन्तु जिन लोगों ने संसार की आधुनिक प्रगति पर ध्यानपूर्वक विचार किया है और जो योरप-अमरीका की सामयिक परिस्थिति का कुछ गम्भीर ज्ञान रखते हैं उनको इन परिवर्तनों को देखकर उतना आश्चर्य नहीं होता। गत बीस-पचीस वर्षों से सभ्य संसार में जो तूफ़ान उठा है उसके झोंके वृद्ध भारत को भी हिला-हिलाकर जगा रहे हैं। उसका प्रभाव सबसे पहले युवकों पर पड़ रहा है। उनके ख़ून में जोश है, उनके हृदय-पटल पर नये विचारों के अङ्कित होने के लिए स्थान है, उनके मस्तिष्क में नये भावों और आदर्शों का स्वागत करने के लिए उचित स्थान है।

आधुनिक आन्दोलन के अनेक रूप हैं। राजनैतिक, सामाजिक, मानसिक और आत्मिक क्षेत्रों में नये रङ्ग और ढङ्ग दिखाई पड़ रहे हैं, किन्तु यदि गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो वे एक ही आत्मा के भिन्न भिन्न विकसित रूप हैं, एक ही परमैषणा की पूर्ति के साधन हैं। जीवन का कोई अंश ऐसा नहीं, कर्म और व्यवहार का कोई ऐसा अंग नहीं जिस पर नवीनता के पल्लव न लहलहाने लगे हों और जिसमें भविष्य का संकेत न हो। हम लोग प्राचीनता और नवीनता के संधि पर खड़े हैं। उधर निशा का शान्त अंचल और इधर उषा का मोहक दृगंचल लोगों के हृदय में विलक्षण चंचलता उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहा है। मोह और आशा की खींचातानी में व्यक्ति ही नहीं, बरन समाज भी फँसा हुआ है। भविष्य के भय से बहुत से लोगों की मति किन्तु-परन्तु के झूले में झूल रही है। युवक नव-युग का स्वागत करने के लिए लालायित हो रहे हैं, किन्तु पुराने अभी सोच-विचार में सटपटा रहे हैं। कालचक्र की क्या गति होगी और भविष्य का रूप क्या होगा आदि प्रश्न प्रायः हर एक के हृदय में उथल-पुथल मचा रहे हैं।

सबसे मुख्य प्रश्न यह है कि मनुष्य का एक दूसरे से कैसा सम्बन्ध होना चाहिए। मनुष्य में केवल पुरुष ही नहीं, बरन स्त्रियाँ भी शामिल हैं। इस प्रश्न के साथ ही यह भी सवाल उठता है कि संसार क्यों है और हमारा सृष्टि में क्या स्थान है। इन्हीं प्रश्नों ने अनेक रूप धारण कर लिये हैं और इन्हीं के सन्तोष-जनक उत्तर ढूँढ़ने और उन्हें कार्यरूप में परिणत करने में मनुष्य लगा हुआ है। यह समस्या संसार की सभ्यता का प्रेरक है। जितनी सभ्यताएँ उठीं और और गिरीं वे इन्हीं प्रश्नों के कारण। धार्मिक नेताओं ने, दार्शनिक तत्त्ववेत्ताओं और वैज्ञानिकों ने यथा-शक्ति इनके हल करने का प्रयत्न किया, जिससे मानव-समाज का बहुत कुछ उपकार हुआ और हो रहा है। किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि इन प्रश्नों का अन्तिम और सन्तोषजनक उत्तर हो चुका और अब मनुष्य को व्यर्थ उलझन में पड़ने की आवश्यकता ही नहीं रही।

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तरों का यदि वर्णन किया जाय तो संसार भर का इतिहास लिखना पड़ेगा, सब धर्मों, समाजों और संस्थाओं की आलोचना करनी पड़ेगी और वाद-विवाद के चक्कर में फँस जाना पड़ेगा। ऐसे कठिन और गहन विषय की उलझन में पड़ना इस लेख का आशय नहीं। यहाँ केवल यह विचार करना है कि नवीन आकांक्षायें क्या हैं, युवकों के हृदय में क्या है, उनके आदर्श और उनकी कार्य-शैली क्या है। उनकी इच्छाओं और अभिलाषाओं की पूर्ति कैसे होगी, भिन्न भिन्न सिद्धान्तों, मतों, संस्थाओं और समाजों से उनको कहाँ तक सहायता मिल सकती है, आदि प्रश्नों पर विचार करने के लिए इस समय लेखक, प्रकाशक और पाठकों को सम्भवतः अवकाश नहीं।

सामयिक विचार-धारा यह है कि संसार सुख-साधन का स्थान है। प्राकृतिक संसार के उस ओर कुछ हो या न हो, किन्तु ऐहिक संसार है और उसके अस्तित्व के विषय में सन्देह की गुंजाइश नहीं। अत-एव अज्ञात के ज्ञान प्राप्त करने का चाहे हो या न हो, किन्तु ज्ञात से पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न अवश्य होना चाहिए। सांसारिक ज्ञान के संचय और परिवर्द्धन में जी तोड़कर अथक प्रयत्न करना प्रत्यक्ष लाभ-दायक है, उसकी उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। माना कि मनुष्य सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ और एकदेशिक है, किन्तु उसके लिए रोना व्यर्थ है। उसके ज्ञान, शक्ति और व्यापकता की वृद्धि वहाँ तक अवश्य होनी चाहिए जहाँ तक वह प्राकृतिक नियमों से सम्भव है। मनुष्य के ज्ञान और शक्ति की चरम सीमा कहाँ है? इसका निश्चय दर्शनों-द्वारा नहीं हो सकता? यह तो अनु-भव और भविष्य ही बतलाएगा। किन्तु इतना तो स्पष्ट है कि मनुष्य की ज्ञान और शक्तियों की सीमायें अभी बहुत बहुत दूर हैं। अतएव सीमा-सम्बन्धी विवाद के दलदल में समय और शक्ति का अधिक नाश न करके उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ते ही चला जाना श्रेयस्कर है। रुकने का मौक़ा नहीं। इस चलायमान संसार में जो रुका वह गिरा। परिवर्तन-शील संसार का चक्र ज़ोर से चल रहा है। उसका अनुवर्तन करना आवश्यक है। पीछे फिर कर चाहे क्षण भर के लिए देख भले ही लो, किन्तु भविष्य से दृष्टि न मोड़ो और पैर बढ़ाये ही चलो। इसी में कल्याण है।

दूसरी धारणा यह है कि मनुष्य को अपने सुख और उन्नति के साधनों के इकट्ठे करने का नैसर्गिक अधिकार है। जब तक उसके कार्यक्रम से दूसरे की उन्नति और सुखसंचय के मार्ग में अड़चन नहीं पड़ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब तक उसको कार्य करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। व्यक्ति का सुख और उसकी उन्नति किन कामों के करने से है, समाज का सुख और उसकी उन्नति किन चीज़ों में है, उनका निर्णय व्यक्ति और समाज के ही हाथ में है। किसी दूसरे व्यक्ति या समाज को यह अधिकार नहीं कि वह उसके स्वतन्त्रता-पूर्वक निश्चय करने और काम करने में बाधा डाले, यद्यपि इस सिद्धान्त को कार्यरूप में परिणत करने में कभी कभी कठिनाइयाँ पड़ जाती हैं, किन्तु उनके कारण व्यक्ति अथवा समाज का अधिकार नहीं नष्ट हो सकता। उन कठिनाइयों को दूर करने का प्रयत्न करना प्रत्येक व्यक्ति और समाज का कर्तव्य है।

जो सम्बन्ध व्यक्ति का एक समाज के साथ है वही एक समाज का दूसरे के साथ है। या यों कहिए कि जो सम्बन्ध एक समाज का दूसरे समाज के साथ है वही सम्बन्ध एक व्यक्ति का एक समाज के साथ है। मानव-संसार में एकदेशीय समाज का प्रायः वही स्थान है जो समाज में व्यक्ति का। जो समाज व्यक्ति को यथोचित स्वतन्त्रता देने में असमर्थ है वह अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने में भी आख़िर में असमर्थ रहेगा। जो व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के अधिकारों पर आक्रमण करता है वह अन्ततः अपने अधिकारों पर किये गये आक्रमण को रोकने में असमर्थ होगा। यह सिद्धान्त बहुत दूर तक व्याप्त है और इतिहास से इसकी पुष्टि में अनेक प्रमाण दिये जा सकते हैं। सच बात तो यही जान पड़ती है कि समाज की रचना व्यक्ति के लिए है और इसी कारण व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपनी इष्ट-सिद्धि के लिए समाज की रक्षा करे। किन्तु जब समाज व्यक्ति के सुख और शक्ति के संचय में बाधा डालने लगता है तब उसका ह्रास शुरू हो जाता है। आधुनिक युवक और युवतियाँ अब इस सिद्धान्त को समझने लगी हैं और उनमें अपने नैसर्गिक अधिकारों और स्वत्वों की रक्षा करने की उत्कट इच्छा पैदा हो गई है।

F. 3.

सुख क्या वस्तु है? केवल दुःखों का न होना ही सुख नहीं कहा जा सकता। सुख अनुभव-ग्राह्य है, सुख का साधन इन्द्रियों-द्वारा होता है। ज्ञान और कर्मेन्द्रियों की अनुभूति को कसौटी पर सुख-दुःख की जाँच होती है। अतएव जो वस्तु इन्द्रियों—दशों इन्द्रियों—को सुख दे वही सुख है। बाक़ी सब कल्पना-मात्र है। इन्द्रिय-सम्बन्धी सुख को बुरा समझना प्राकृतिक नियमों पर धूल झोंकना है। उसकी ओर से मनुष्य को हटाने का प्रयत्न करना उलटी गंगा बहाना है। मेरे कहने का यह तात्पर्य नहीं कि इन्द्रिय-सम्बन्धी-दशों, हाँ, दशों-सुख की कोई सीमा नहीं। किन्तु इस सीमा का निर्णय स्वयं व्यक्ति ही कर सकता है। समाज का केवल इतना ही अधिकार है कि वह देखता रहा कि उस सुख के साधन में किसी दूसरे व्यक्ति के सुख-साधन में बाधा तो नहीं पड़ती। व्यक्ति अपनी इन्द्रियों और ज्ञान की शक्ति के अनुकूल ही सुख-साधन कर सकता है। उसके आगे वह चल ही नहीं सकता, प्राकृतिक नियम रोक देते हैं। इसके अतिरिक्त व्यक्ति अपना अहित नहीं सोचता। आत्म-रक्षा और शरीर-रक्षा की उसको स्वाभाविक चिन्ता है। जितनी उसको होगी उतनी शायद दूसरे को होना कठिन है।

उपर्युक्त भावनायें दिन दिन मज़बूती पकड़ती जा रही हैं। पहली संस्थाओं पर लोगों का विश्वास कम होने लगा है। वे कहते हैं कि अभी तक समाज-सङ्गठन के जितने प्रयत्न हुए हैं वे एकपक्षीय हैं, उनका आधार न्याय के ऊपर नहीं रहा है। समाज के अंग-विशेष के स्वार्थ-साधन के लिए उनका निर्माण हुआ। उनसे समाज के प्रत्येक अंग और व्यक्ति को वह लाभ नहीं हुआ जो होना चाहिए था। इसी लिए मनुष्य-समाज में इतनी विषमता, उँचाई-निचाई और अन्यायमूलक भेद विद्यमान है। स्त्रियाँ और निर्धन अपने नैसर्गिक अधिकार से वंचित रक्खे गये। पुरुषों ने स्त्रियों को, अमीरों ने ग़रीबों को, कुलीनों ने अकुलीनों को, बलशालियों ने निर्बलों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दबाये रखना अच्छा समझा। अब ऐसे न्याय-रहित समाज, संस्था और नियमों को छोड़कर हमें दूसरे मार्ग का अवलम्बन करना चाहिए। सम्भव है कि इस मार्ग में भी काँटे हों, खड्ड हों, किन्तु उनसे भय-भीत होकर सड़ना या अड़ना भीरुता और कायरता है। अब से ऐसे समाज की रचना होना चाहिए जो न्याय और स्वाधीनता की नीव पर हो। संसार को यथा-शक्ति सुखमय बनाना चाहिए, दुःखों के कारणों को यथासम्भव दूर करना चाहिए। सारांश यह कि स्वर्ग और जन्नत के वैभव को लाकर ऐहिक संसार में स्थापित करना चाहिए। इस आदर्श की प्राप्ति के लिए तन, मन, मान, धन सभी लगा देना ही सच्ची सेवा है। यही युवक-हृदय का लक्ष्य है। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक हृदय में वेदना होती रहेगी, सुख और सौन्दर्य का विधान फैलने न पावेगा। अतएव अब घोर विप्लव की आवश्यकता है।

आज समाज में जो खलबली मची है, जो क्रान्ति हो रही है, उसका वास्तविक रहस्य और कारण उप-र्युक्त सिद्धान्त और आदर्श है। आज दलित, निर्धन, पुरुष, स्त्री, यही नहीं, बालक और बालिकायें तक भिन्न भिन्न क्षेत्रों में स्वाधीनता और स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए दत्तचित्त हो रहे हैं। अभी तो केवल भविष्य की भूमिका बँध रही है। इसी से भूकम्प के लक्षण प्रतीत होने लगे।

इब्तदाये इश्क़ है रोता है क्या।
आगे आगे देखना होता है क्या।

यह परिवर्तन विधि के विधान में ही जान पड़ता है। चाहे कोई इसे नाश का लक्षण कहे, चाहे कोई कलियुग की महिमा, चाहे भ्रष्टाचार, दुश्चरित्रता, और मर्यादाहीनता आदि अपशब्द कहे, किन्तु अब तो विष्णु के चक्र के समान वह चल गया है। नवोत्थित कवि युगुलेश ने इस भाव को यों व्यंजित किया है—

मँझधार में नाव तो डारि चुके
अब सोच किये ते कहा लहनो है।
सिर वारि बतास के त्रास जिते
परिहैं सो सबै सुख सो सहनो है॥
जुगलेशजू ह्वै है प्रवाह जितै
तिहि के अनुकूल ह्वै लै बहनो है।
हिय होनो हताश नहीं हमको
पतवार दुऊ कर सों गहनो है॥

युवक-हृदय ज़रा भी व्यथित नहीं है। आज युवकों और युवतियों में आप जो आत्मत्याग, स्वावल-म्बन, धीरता, सहिष्णुता, और आदर्शप्रियता का अलौकिक दृश्य देख रहे हैं उसका कारण उपर्युक्त भावनाओं में निहित है। चाहे जान में और चाहे अनजान में सब उन्हीं प्रेरणाओं से प्रेरित हो रहे हैं। यह विप्लव पश्चिम और पूर्व में, प्रत्येक देश और समाज में अपना रंग दिखा रहा है। जहाँ देखिए, एक ही समस्या है। भारत में भी वही समस्या है जो चीन, टर्की और रूस में है। हाँ, आकार-प्रकार का भेद अवश्य है, पर गूढ़ रहस्य एक ही है।

शायद कोई यह पूछ बैठे कि यह तो सब है, किन्तु यह बतलाइए कि स्पष्टरूप में क्या क्या युवकों की माँगें हैं। इन माँगों का पूर्णरूपेण विवे-चन इस छोटे लेख में सम्भव नहीं है। हर एक माँग के ऊपर अनेक ग्रन्थों के रचने की आव-श्यकता है। यहाँ थोड़े में उनका उल्लेख किया गया है।

पहली माँग यह है कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार एक से हों। कार्य-विभाग (Division of labour) का अधिकार किसी व्यक्ति विशेष, जन-समुदाय अथवा समाज आदि का नहीं है। जितने काम हैं सभी अपनी तौर पर आवश्यक और उपयोगी हैं, अतएव किसी सेवा को ऊँची या नीची कहना उचित नहीं। हाँ, यदि आप चाहें तो मुख्य और गौण भेद अवश्य कर सकते हैं। किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे यह समझना कि मुख्य कामों के करनेवाले श्रेष्ठ और गौण काम के करनेवाले निकृष्ट हैं, सर्वथा भूल है। इस ऊँच-नीच के विचार को समूल नष्ट करने की आवश्यकता है। किसी पेशे या व्यवसाय के कारण कोई सामाजिक भेद न होना चाहिए। सारांश यह है कि जात-पाँत या श्रेणी, वर्ग आदि का सामाजिक भेद शीघ्र ही उठा देना चाहिए। व्यवसाय और साम्पत्तिक विभिन्नता का प्रभाव समाज के पारस्परिक व्यवहार पर न पड़ना चाहिए। इस सिद्धान्त के अनुकूल सामाजिक साम्य और एकता स्वयंसिद्ध है।

दूसरी माँग यह है कि समाज को चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति के साथ एक सा व्यवहार करे। जीवन में हर एक को एक सा अवसर और मौक़ा देना चाहिए। समाज का कर्तव्य है कि वह देखता रहे कि अनैसर्गिक और मनुष्यकृत विषमता समाज के अंदर घुसने न पावे। यदि कहीं ऐसे लक्षण हों तो समाज को तुरन्त हस्तक्षेप करके उन दोषों को हटा देना चाहिए। यदि इस कर्तव्य के पालन में समाज शिथिलता अथवा आनाकानी करे तो वह पथभ्रष्ट है और कर्तव्यविमुख होने के कारण आदर का पात्र नहीं। समाज संगठन से यही लाभ है कि वह अपने प्रत्येक वर्ग और व्यक्ति की रक्षा करे। समाज का संगठन और विधान यदि इस कर्तव्य के पालन में असमर्थ है तो उसको बदल देना ही सामयिक धर्म है।

चौथी माँग यह है कि स्त्री और पुरुष के अधिकारों में किसी प्रकार का भेद न होना चाहिए। उनके कर्तव्यों में यदि नैसर्गिक भेद है तो वह अमिट है किन्तु उसको बढ़ाना और उसके कारण उनके अधिकारों में काँट-छाँट करना सरासर अन्याय है। प्रत्येक स्त्री को जीवन-क्षेत्र में वही अवसर मिलना चाहिए जो पुरुष को मिलता है। वैयक्तिक, सामाजिक और मानुषिक अधिकारों में स्त्री और पुरुष के साथ एक सा व्यवहार होना चाहिए। जो नैतिक, व्यावहारिक और सामाजिक नियम पुरुषों पर लागू होते हैं वही स्त्रियों पर भी लागू होना चाहिए और जो पुरुष पर नहीं लागू होते हैं वे स्त्रियों पर भी लागू न होना चाहिए।

पाँचवीं माँग यह है कि देश, जाति, रंग, धर्म, आचार-विचार की विभिन्नता के कारण मानुषिक अधिकारों में किसी प्रकार का भेद-भाव न होना चाहिए। जीवन-क्षेत्र में नैसर्गिक बाधाओं के अलावा और कोई बाधा न आने पावे। जो नैतिक संगठन किसी जाति या देश के अभ्युदय अथवा स्वतंत्रता में अड़चन डाले वह माननीय कदापि न होना चाहिए।

मुख्यतः यही पाँच माँगें हैं जिन्होंने अनेक रूप धारण कर लिये हैं। जब तक इन माँगों की पूर्ति नहीं होती तब तक शान्ति और सुख की आशा करना व्यर्थ है। इन माँगों के संतोषजनक उत्तर से संसार में एक अपूर्व परिवर्तन हो जायगा। अनन्त के इतिहास में नये अध्याय का आरंभ हो जायगा और सुख और शांति का अभूतपूर्व आयोजन हो जायगा।

अब यह प्रश्न होता है कि भारत में इन सामयिक विचारों और आदर्शों का क्या प्रभाव पड़ेगा? क्या वह हितकर होगा या नहीं? पहली बात तो यह होगी कि इनके कारण जात-पाँत का भेदभाव शीघ्रता से क्षीण होकर अन्त में नष्ट हो जायगा। उसी प्रकार प्रान्तीयता अथवा संप्रदाय, विचार, धर्म आदि के कारण जो सामाजिक अड़चनें हैं वे भी न रहेंगी। यों तो रेल, प्रेस, समुद्र-यात्रा और सुधारकों के प्रयत्नों से धीरे धीरे परिवर्तन हो ही रहा था, किन्तु नवीन विचारों की धारा अब बड़े वेग से उठ रही है, जिससे आश्चर्यजनक शीघ्रता के साथ यथेष्ट क्रान्ति हो जायगी और सामाजिक साम्यता का राज्य स्थापित हो जायगा। यह सोचना कि भारत में वर्णादिक, धार्मिक और प्रान्तिक विभिन्नता इतनी गहरी पहुँच गई है कि उसका दूर होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असंभव है, सर्वथा भ्रममूलक है। जो ऐसा समझते हैं वे काल और समय की प्रगति को ठीक ठीक नहीं समझते हैं।

उपर्युक्त परिवर्तन एवं वैयक्तिक स्वतंत्रता की उत्कट अभिलाषा का प्रभाव यह होगा कि खान-पान और विवाह आदि में देश, प्रान्त, धर्म आदि का भेद जाता रहेगा। प्रत्येक पुरुष या स्त्री को इस बात को स्वतंत्रता होगी कि वह जिससे चाहे विवाह कर ले। विवाह आदि व्यक्ति के निजी कामों में गिने जायँगे और समाज उसमें हस्तक्षेप न करेगा। अन्तर्जातीय और अन्तर्धार्मिक विवाह-संबन्धों के स्थापित होने में संभव है कि कुछ अधिक समय लगे, किन्तु उसका आरंभ हो गया और बहुत से लोग अभी से मानने लगे हैं कि वैवाहिक स्वतन्त्रता पारिवारिक और वैयक्तिक जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है और समाज का उसमें हस्तक्षेप करना अनुचित है।

स्त्रियों को अपने अधिकारों और स्वत्वों का ज्ञान दिनदिन बढ़ रहा है। वे पुरुषों की समानता करने के लिए तैयार हो रही हैं और वह समय अब बहुत दूर नहीं कि वे उन सब क़ानूनों, प्रथाओं और रस्म-रवाजों को तोड़ देंगी जो उनमें और पुरुषों में अधिकार का भेद पैदा करनेवाले हैं। वे भी वैवाहिक और वैयक्तिक स्वतंत्रता लेकर ही कल करेंगी। पुरुषों के मुक़ाबिले में उनको अधिक कठिनाइयाँ उठानी पड़ेंगी, तरह तरह के अपवाद सुनने पड़ेंगे। सम्भव है कि कुछ समय तक अपनी स्वाधीनता-प्रियता के कारण पुराने समाज में वे तिरस्कृत रहें, किन्तु वे अपने साहस, दृढ़ता, त्याग और आदर्श-प्रियता से सब कष्टों को सहन करके अपने अधिकार प्राप्त कर लेंगी। पुरुषों को स्त्रियों का वैसा ही आदर और सम्मान करना पड़ेगा जैसा कि एक स्वतंत्र व्यक्ति दूसरे स्वतंत्र व्यक्ति का करता है। यदि किसी ओर से समानता के भाव में कमी पड़ी या अत्याचार हुआ तो एक दूसरे को अलाहदा होने से और अपने मार्ग पर जाने से वैवाहिक सम्बन्ध भी न रोक सकेगा।

स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार मिलना असंभव है जब तक कि वे वैसी शिक्षित और व्यवसाय योग्य न हो जायँ जैसे कि पुरुष हैं। बिना आर्थिक स्वतंत्रता, आर्थिक स्वावलंबन के वे न तो यथोचित अधिकार के पात्र ही बन सकेंगी और न अपने स्वत्वों और अधिकारों की रक्षा ही कर सकेंगी। वे पुरुष की वैसी ही अर्द्धांगिनी रहेंगी जैसे पुरुष उनके अर्द्धांगी होंगे। जीवन के आर्थिक मामलों में स्त्रियों के आ जाने से सामाजिक और आर्थिक उथल-पुथल मच जायगी। किन्तु अंत में सब ठीक हो जायगा। भारतीय स्त्रियों का त्याग और उनकी धर्मप्रियता और लोक-लज्जा का भाव उनको क्रान्तिकारी मार्ग में शीघ्रता से दौड़ने से रोकेगा। इस मंथर गति के कारण उनको अवसर मिल जायगा कि वे अन्य देशीय स्त्री-समाजों के अनुभवों से लाभ उठा सकें और उन आपत्तियों से बच जायँ जिनमें उनकी अन्य देशीय बहनें अनिवार्य कारणों से फँस गई थीं या फँस गई हैं। यह तो सदा होता है कि पीछे चलनेवाले आगे चलनेवालों के अनुभवों से लाभ उठाते हैं। किन्तु आगे चलनेवाले ही अधिक यश के भागी होते हैं। पूर्व-संचित अनुभवों से लाभ अवश्य उठाया जा सकता है, तो भी बहुत कुछ आपत्तियाँ सहन करनी ही पड़ेंगी, बहुत सी भूल-चूक होंगी ही। उनके डर से अब स्त्रियाँ अग्रसर होने से रुकनेवाली नहीं। पुरुषों को उदारतापूर्वक यह सब देखना पड़ेगा और अपने स्वार्थ और अत्याचार का प्रायश्चित्त करना पड़ेगा। परिवार और समाज में इस परिवर्तन से नई नई समस्यायें उपस्थित हो जायँगी, जिनको सुलझाने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। नई समस्याओं और उनको हल करने के नये उपायों के द्वारा ही तो सभ्यता का प्रवाह चलता है।

धनी और निर्धन का प्रश्न भी हल करना आवश्यक है। जनता अब इस बात के लिए तैयार नहीं है कि एक ओर कुछ मनुष्य लक्ष्मीपति होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐश-आराम करें, दूसरी ओर अधिक जन-समुदाय भोजन और वस्त्र के लिए तलफ़े। एक ओर तो धनी अपने बेटे-बेटियों को उच्चतम और महँगी से महँगी शिक्षा दें, दूसरी ओर अधिकांश जनता को अक्षरों तक का भी ज्ञान धनाभाव के कारण प्राप्त न हो सके। जो समाज इस विषम व्यवस्था का पोषण करेगा वह जनता के आदर का पात्र कभी नहीं हो सकता। जनता उसको उखाड़ डालने में कोई कसर न उठा रक्खेगी। यदि निर्धन और अशिक्षित भी जीवन-क्षेत्र में अवसर पाने के लिए बेचैन हो रहे हैं, यदि उनके साथ सहानुभूति न की गई और उनकी न्यायमूलक आवश्यकताओं की पूर्ति न की गई, तो वे जबर्दस्ती अपने अधिकार छीनने की कोशिश करेंगे। अन्त में उन्हीं की विजय होगी इसमें सन्देह नहीं, किन्तु इस छीनाझपटी में कुछ समय तक बड़ी भयङ्कर हानि होने की सम्भवना है। यदि इस दुर्गति से भारतीय समाज को बचाना है तो इस प्रश्न को शीघ्र से शीघ्र उठाना और हल करना चाहिए।

यद्यपि राजनैतिक परिस्थिति के कारण भारत में इस समय जातीयता की लहर ज़ोरों से चल रही है, तो भी जब भारतवासियों के जातीय अधिकार संसार की अन्य जातियाँ मान लेंगी तब जातीयता का अन्दोलन ठंडा पड़ जायगा, क्योंकि उस जातीयता को जिसका राग योरपवाले सोलहवीं सदी से उन्नीसवीं सदी तक अलापते आये हैं, भविष्य में स्थान नहीं है। सइ समय भारत के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पुराना सिद्धान्त नई व्याख्या के साथ योरप में जागृत हो उठा है। वही सिद्धान्त न्यायसंगत है, किन्तु उसको कार्य-रूप में परिणत करने के लिए नये विधानों, संगठनों और संस्थाओं की आवश्यकता है। इन प्रयत्नों में भारत को भी यथेष्ट भाग लेना पड़ेगा। अतएव जातीयता की संकीर्ण गली से भारत को शीघ्र ही निकल कर अन्तर्जातीयता के प्रशस्त मार्ग का अवलम्बन करना ही पड़ेगा। जो देश किन्हीं कारणों से जातीयता के सिद्धान्तों पर अड़े रहने का प्रयत्न करेंगे उनको शान्ति नहीं मिल सकती, उन पर चारों ओर से ऐसी चोटें पड़ेंगी कि उनको अन्त में सिर झुकाना ही पड़ेगा।

इस लेख के पाठक शायद यह कहें कि लेखक के विचार असंयत और दुष्प्राप्य आदर्श पर अवलम्बित हैं, ये विचार बड़े ही क्रान्तिकारी हैं, इनसे अनर्थ होने की ही सम्भावना है। सम्भव है कि कुछ लोग इनको पाश्चात्य शिक्षा का दुष्परिणाम समझें। यह भी सम्भव है कि कुछ लोग कहें कि ये विचार तो पुराने ही हैं, यहाँ तक कि ईसाई, बौद्ध, मुसलमान धर्मों में भी हैं। हिन्दू-धर्म में तो वे पुरातन काल से ही निहित थे। अस्तु, अपनी अपनी भावना के अनुकूल जिसको जो भावे वह समझे। मुझे केवल इतना निवेदन करना है कि लेखक ने सामयिक संसार के विचार-प्रवाह का दिग्दर्शन-मात्र कराने का यहाँ प्रयत्न किया है। हर एक विचार का इतिहास लिखना अथवा उन पर दार्शनिक विवेचना करना लेखक का आशय नहीं है। अपने अनुशीलन के अनुसार वह उपर्युक्त धारणाओं तक पहुँच सका है। किन्तु यदि सहानुभूति और पक्षपात त्याग कर संसार की सामयिक परिस्थिति पर गम्भीरता और विद्वत्तापूर्ण विचार किया जाय तो आशा है कि लेखक के विचार निर्मूल और निरर्थक न सिद्ध होंगे। यदि समय मिला तो समय समय पर उपर्युक्त विषयों पर भिन्न भिन्न दृष्टिकोणों से अधिकाधिक प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जायगा। विद्वान् सहृदय पाठकों को भी चाहिए कि वे इन विषयों पर तीव्र प्रकाश डाल कर इन समस्याओं के निरूपण और सुलझाने में योग दें।

—रामप्रसाद त्रिपाठी

112824
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूक्ति-सुमन

(१)

रसभरे भरपूर सभी रहें,
कल अलंकृति से कृति हो सजी।
तदपि है वह कोविद के लिए,
कुतुक ही तुक-हीन पदावली ॥

(२)

अरि सभी जग में उसके लिए,
निबल भी उसको बलवान हैं।
शुनक-सा अपमानित है वही,
कदल के दल के सम नम्र जो ॥

(३)

गहन का रहना सहना पड़े,
अलग या धड़ से सिर क्यों न हो,
मनुज जीवित हो यदि आप तो,
अधम की धमकी सुनिए नहीं ॥

(४)

तनक भी मन में न दया जिसे,
न पर का गुण-गान जिसे रुचा।
वह नरेश सुरेश बना करे,
असुर हो सुर हो सकता नहीं ॥

(५)

सुजन से खल क्यों मिल के रहे ?
गरल से न कभी निकली सुधा।
मिहिर क्यों तमसावृत हो कभी,
असित का सित का सहवास क्या ?

(६)

पुरुष हो यदि तो पुरुषार्थ को—
जगत में करके दिखलाइए।
पिशुन से अपमानित हो कभी,
गम नहीं मन ही मन कीजिए ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७)

चतुर हो धनवान बलिष्ठ हो,
पर-प्रतारण में दृढ़ दक्ष हो।
प्रकृति किन्तु छिपा सकते नहीं,
कपट के पट के परिधान से ॥

(८)

मधुर दाख चखे यदि काक तो,
वदन में उसके व्रण क्यों न हो ?
श्रवण में दुखदायक त्यों सदा,
अहित को हित-कोमल वाक्य भी ॥

(९)

विषय-लोलुप की सुख-वासना,
हृदय में बढ़ती जिस भाँति है।
न उस भाँति कहीं पर भी कभी,
अधन की धन की बढ़ती स्पृहा ॥

(१०)

अति असंभव है खल-संघ को,
स्ववश में रखना सच मानिए।
यह असंभव है कुछ भी नहीं,
चपल को पलकों पर रोकना ॥

—रामचरित उपाध्याय

यदि आप हिन्दू-संस्कृति का सच्चा स्वरूप जानना चाहते हैं तो आज ही हमारे यहाँ से प्रकाशित

सचित्र हिन्दी-महाभारत

की ग्राहक-श्रेणी में अपना नाम लिखा लीजिए। इससे आप तथा आपके स्त्री-बच्चों का मनोरञ्जन तो होगा ही साथ ही आपकी ज्ञान-वृद्धि भी होगी। सबसे बढ़कर लाभ यह होगा कि इसके अनुशीलन से आपके परिवार में सदाचार और सद्भावनाओं की वृद्धि होगी। हमारा महाभारत लाखों हाथों में पहुँच चुका है। तमाम भारत में दिनोंदिन इसका प्रचार बढ़ता जा रहा है। इसकी सरसता, सरलता और रोचकता ने हर एक को मोहित कर लिया है। यह एक संग्रहणीय चीज़ है। विशेष विवरण विज्ञापन में देखिए।

मैनेजर—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लन्दन और पेरिस

(क)

लन्दन के ट्रैफ़िक का नियम है—कीप टू दि लेफ़्ट (बायें रहो)। पेरिस में ट्रैफ़िक का नियम है—'कीप टू दि राइट' (दाहने रहो)। जो लोग लन्दन में बहुत दिनों तक रह कर कुछ दिनों के लिए पेरिस आते हैं वे सहज ही सड़क पार करने के समय थोड़ी सी असा-

शिशु (रेनल्ड्स की कृति)
[लन्दन-नैशनल गैलरी]

वधानी के कारण पेरिस के किसी समाधि-मन्दिर में सदा के लिए विश्राम कर सकते हैं। पेरिस और लन्दन का यह अन्तर किसी आगंतुक के लिए साधारण नहीं, इसमें मृत्यु का दूत छिपा बैठा है।

पेरिस एक सस्ता शहर है। लन्दन में जिस खाद्य के लिए दो पैसे देने पड़ते हैं, पेरिस में उसके लिए एक पैसा देना पड़ता है। पेरिस का खाद्य लन्दन के खाद्य से अधिक स्वादिष्ट और रुचिकर होता है। फ्रेंच लोग पाक-विद्या में भी अँगरेज़ों से अधिक पटु हैं।

जितना ख़र्च लन्दन में प्रतिदिन ट्राम से इधर उधर आने-जाने में होता है, उतना ही ख़र्च करके से आप पेरिस में मोटर पर घूम सकते हैं।

थियेटर में एक सुन्दर सीट का दाम लन्दन में सात शिलिंग से कम नहीं (सात शिलिंग = कोई ४ फ्रेंच फ्रांक); पेरिस में बीस फ्रांक ख़र्च करने से ही आपको लन्दन की अपेक्षा अच्छी जगह मिलेगी। भूलना न चाहिए कि पेरिस के नाटक लन्दन के नाटकों से कहीं बढ़ कर सुन्दर होते हैं। और स्मरण रहे कि मैं "भड़कीले पोशाक, नये सीन और सीनरी वाले नाटकों की बात नहीं लिख रहा हूँ—कला की बात लिख रहा हूँ।

लन्दन में एक अच्छे समाचार-पत्र का दाम दो पेंस होता है; पेरिस में एक अच्छे समाचार-पत्र का दाम आधा पेनी—लन्दन से चौथाई! लन्दन में एक साधारण उपन्यास का दाम साढ़े सात शिलिंग होता है, पेरिस में साधारण उपन्यास के लिए दो शिलिंग ही देने पड़ते हैं। लन्दन के समाचार-पत्रों में विज्ञापन ठूँस ठूँस कर भरे रहते हैं; पेरिस के समाचार-पत्रों में विज्ञापन कम रहते हैं—प्रथम पृष्ठ पर तो बिलकुल ही नहीं। पेरिस के समाचार-पत्र सुन्दर होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लन्दन की सभी संस्थायें रविवार को बंद रहती हैं; पेरिस की सभी संस्थायें ख़ास कर रविवार को खुली रहती हैं। दो-चार बंद होती भी हैं तो सोमवार को।

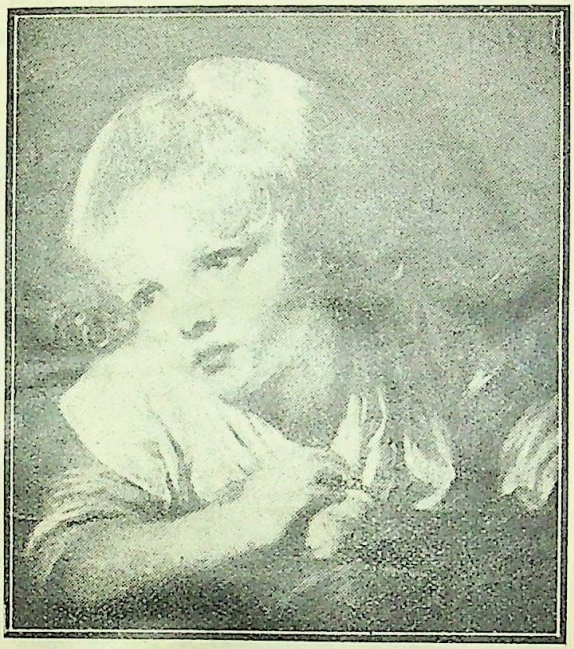

बालक

[लन्दन-चित्रशाला में फ्रेंच चित्र]

पेरिस में सब जगह कुछ न कुछ इनाम या घूँस देने की प्रथा है—पेरिस में ही नहीं, बर्लिन, वायना और सारे स्विट्ज़र्लैंड में भी। इस विषय में लन्दन बचा हुआ है। लन्दन में इनाम देना इन स्थानों की तरह आवश्यक नहीं।

लन्दन की शृंखला असाधारण है। यहाँ किसी वस्तु के लिए आपको निरर्थक कष्ट न होगा। थियेटर की बात लीजिए। लन्दन में टिकट ख़रीदने में कोई दो मिनिट लगते हैं। यदि भीड़ रही बहुत तो आप की बारी आने से तुरन्त टिकिट मिल जाता है। टिकिट मिलते ही कम्पनी की एक परिचारिका आपको आपकी जगह पर बिठला देती है। पेरिस के प्रायः सभी नाट्यशालाओं में दलाल रहते हैं, जिनका काम चार आने के टिकिट का दाम छः आने लेना है। यदि आप भाग्यशाली ठहरे, यदि आपको कम्पनी से ही टिकिट मिल गया तो—बस, यहीं विशृंखला का आरम्भ होता है। एक बार टिकिट हाथ में लिये मैंने एक मोटे सज्जन से पूछा—महोदय, किधर जाऊँ? उन्होंने कहा—सीढ़ी के ऊपर आपको दूसरा टिकिट मिलेगा। दूसरा टिकिट मिला! तीसरी बार के लिए टिकिट पर मुहर भी पड़ी! पर जगह? ठहरिए। चोबदार महोदय अपनी एक प्रेमिका से बातें कर रहे थे। बात के शेष होने पर उसने टिकिट देखकर कहा—साहब, और दो-चार लोगों को आने दीजिए। एक ही बार सबको जगह दिखा दूँगा। फिर लगे वे अपनी प्रेमिका की ओर ताकने। मुझे बड़ा

दो बहनें

[लन्दन-चित्रशाला]

क्रोध हुआ, पर फ्रेंच जाति के इस अंश का भी परिचय पाना आवश्यक था, इसी से मैं चुप रहा। जब उसने जगह दिखाई तब घूँस के लिए इस तरह हाथ पसारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानो क़र्ज़ का तकाज़ा कर रहा हो! हो सकता है कि यह चोबदार असाधारण हो, पर दूसरे थियेटरों में भी कम असुविधा नहीं होती है।

लन्दन में सब जगह पोस्ट आफ़िस हैं, जो स्पष्ट रूप से जान पड़ते हैं। अर्थात् रङ्ग से पुते मकान के ऊपर 'पोस्ट आफ़िस' लिखा रहता है; चिट्ठी डालने के लिए सामने लाल रँग का बाक्स भी रहता है। पेरिस में पहले तो सब जगह पोस्ट आफ़िस नहीं, जहाँ है वहाँ उसका पता लगाना साधारण मनुष्य का काम नहीं है। एक दूकान के भीतर तम्बाकू, तस्वीर, तमंचे, ताश आदि हज़ारों वस्तुओं के परे एक कोने में पोस्ट आफ़िस स्थित रहता है। और चिट्ठी डालने का बाक्स? कहीं कुछ भी नहीं लिखा रहता है। मेरे एक परिचित अँगरेज़ भाई ने तो कई चिट्ठियाँ फ़ायर-एलार्म के बाक्स में डाल दी थीं! उन्हें मालूम हुआ तब जब मैं उनके साथ एक लेटर-बाक्स की खोज में निकला। उन्होंने मुझे फ़ायर-एलार्म दिखाकर कहा, "बस और कहाँ जाते हो?" उस समय भी उनकी चिट्ठियाँ वहीं पड़ी थीं।

यदि आपने लेटर-बाक्स में पत्र डाला तो यह न समझिए कि वह ठीक पहुँच जायगा! मैंने तो यह देखा है कि पेरिस के बहुतेरे लोग 'ज़रूरी चिट्ठी' ही लिखा करते हैं। साधारण चिट्ठी की रीति उनमें कम है। लन्दन में टावर क्लाक प्रायः सभी मुख्य मुख्य स्थानों में हैं। ये खूब ठीक समय देते हैं! यहाँ तक कि मैं प्रायः इन्हीं से काम चला लेता था। और पेरिस में? किसी किसी जगह बीसों घड़ियाँ हैं, पर एक भी ठीक नहीं। विश्वास कीजिए, यहाँ के बहुत लोग अपने मन के भाव से ही समय निश्चित करते हैं। बहुत कम लोगों को मैंने घड़ी का व्यवहार करते देखा है। घड़ी प्रायः सबके पास रहती है—सुन्दर, बहुमूल्य घड़ी। पर वह प्रायः सभी समय बंद रहती है, और जब चलती है तब ग़लत।

मैं एक दिन एक पेंसियन (Pension प्राइवेट होटल) में चुपचाप बैठा था। ड्राइंग रूम में (सामने की घड़ी में) सात बज चुके थे। साढ़े सात बजे मेरे एक मित्र के आने की बात थी। दो मिनिट के बाद ही मेरे मित्र आये। मैंने कहा—तुम तो बहुत जल्दी आये? उसने घड़ी दिखा दी—साढ़े सात! मैंने ड्राइंग रूम की घड़ी दिखा दी—सात (सनातन

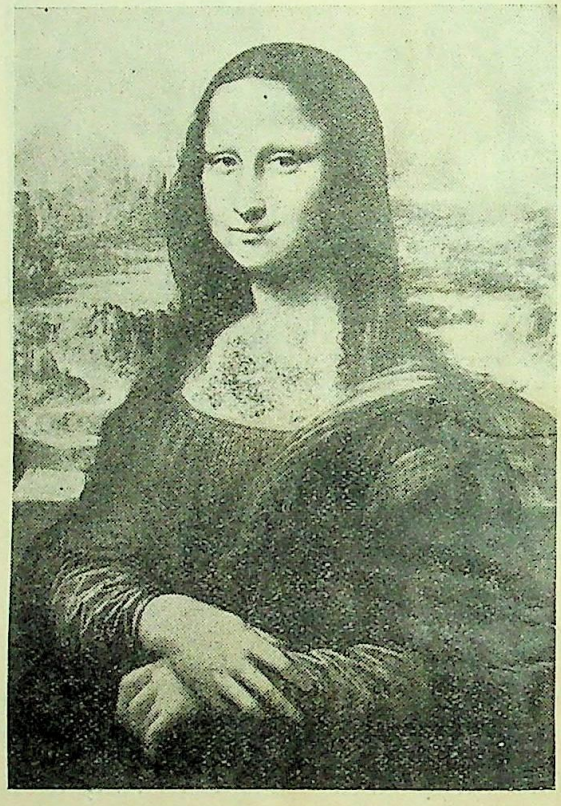

मोना लिसा—पेरिस, लूव्र
[संसार के प्रसिद्ध चित्रों में इसकी गणना है]

रूपेण!)। मेरे मित्र ने कहा—दो मिनिट के बाद मज़ा देखना। सचमुच मज़ा देखा। दो मिनिट के बाद एक-दम सात से साढ़े सात बजे—सुई उछल कर ऊपर से नीचे आ गई! मेरे मित्र ने कहा—अहा, तुम जानते नहीं। मेरे पेरिस में ये घड़ियाँ एलेक्ट्रिक के द्वारा चलाई जाती हैं। सो, मिनिट मिनिट न बदल कर समय—घण्टे—आध घंटे में ही बदला जाता है। मैंने कहा—भगवान् तुम्हारे ऐसे पेरिस से लोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की रक्षा करें! मेरे मित्र का चेहरा दमक उठा। पेरिस के गौरव से उसकी आँखें चमक उठीं। मेरे वाक्य से आहत उस फ़रासीसी युवक ने संयत, पर ज़ोरदार, शब्दों में मुझसे कहा—यहाँ के लोग समय के दास नहीं, प्रभु हैं। पेरिस काल के परे है। जो सनातन है उसका समय कैसा?

[माँ और बेटी—पेरिस, लूव्र]

[श्रीमती लुई वी० लेब्रून (१७५५-१८४२) बड़ी प्रसिद्ध चित्रकार रही हैं। इनका राज-दरबार में भी बड़ा मान था। यह चित्र इनका और इनकी पुत्री का है। फ्रांस के राष्ट्र-विप्लव के कुछ समय पहले इस चित्र की रचना हुई थी]

मैं चुप रहा। इसका उत्तर ही न था।

(ख)

चित्र-कला या भास्कर्य्य (sculpture) के विषय में मैं कुछ न लिखूँगा इनके सूक्ष्म नियमों से मैं परिचित नहीं। जो चित्र मुझे अच्छे लगे हैं, जो मूर्तियाँ मुझे सुन्दर जँची हैं, उनके सम्बन्ध में भी मैं विशेष कुछ न लिखूँगा। कला का उपभोग वैयक्तिक होता है और चित्र वा मूर्त्ति का मूल्य देखने से ही ज्ञात होता है। मेरे शब्दों में वह शक्ति नहीं कि लूव्र के किसी अनुपम चित्र की महत्ता को वे भली भाँति प्रकाशित कर सकें। अतएव निरर्थक शब्दों से मैं आपकी सुरुचि पर आघात न करूँगा। और अब 'कमनीय कामना,' 'भव्य भाव', 'दिव्य दीप्ति' आदि शब्दों में कौन-सा अर्थ रह गया है कि इनके प्रयोग से मैं कला की किसी सुन्दर रचना को गाली दूँ? फिर मदनमञ्जरी वटी वा किसी अलबेली पुस्तक के विज्ञापन की भाषा क्यों चुराऊँ? 'राधा की छबीली ओ रसीली छवि प्यारी है' के गान से 'मोना लिसा की' निन्दा क्या करूँ?

यहाँ मैं केवल उन कृतियों के नाम दे रहा हूँ जिनके दर्शन से मुझे हर्ष ही नहीं, आनन्द हुआ है। यदि इनके दर्शन से आपको हर्ष मिले तो श्रेय प्रकाशक को होगा—ब्लॉक और छपाई के मालिक वही हैं।

	चित्र	भास्कर्य्य
लन्दन—	१. आशा (टेट गैलरी)	(लन्दन) एक भी नहीं
,,	२. रेफ़ेल कृत मादोना (नैशनल गैलेरी)	
,,	३. एक प्राकृतिक दृश्य (नेस) (नैशनल गैलेरी)	
पेरिस—	१. मोना लिसा (पेरिस) (लूव्र)	१. वीनस (लूव्र)
	२. उषा (लूव्र)	२. एक नन्हीं बालिका (पेरिस म्यूज़ियम)
	३. त्रिमूर्ति (पेरिस म्यूज़ियम)	३. चिंता (रोदाँ म्यूज़ियम)
	४. एक प्राकृतिक दृश्य (लूव्र)	४. क्षुधा (पेरिस म्यूज़ियम)

× × × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लूव्र के भीतर दो बातें बड़े मज़े की हुईं। मेरे एक मित्र ख़ूब फ़्रेंच बोल रहे थे। उन्होंने एक स्त्री चित्रकार से बातें छेड़ दीं। स्त्री-चित्रकार ने उनसे पूछा—आपको इस हाल में कौन-सा चित्र पसन्द आया। मेरे मित्र ने कहा—लामूर ए साइक (L' amowe et Psyche)। स्त्री हँसने लगी। उसने कहा—महोदय, लामूर ए साइक नहीं—प्सीश्। फ़्रेंच में

[चिड़िया मर गई हाय! पेरिस, लूव्र]

साइक नहीं प्सीश कहा जाता है। भूल मेरे मित्र की ठीक हुई थी; यह उन्हें मालूम भी हो गया। पर वे हठी थे। उन्होंने बड़े शान से उत्तर दिया—मुझे कहने की आवश्यकता नहीं, मैं सब जानता हूँ। बात यह है कि ऐसे सुन्दर नाम को—ऐसे सुन्दर चित्र को मैं कहूँगा साइक ही, 'प्सीश' कहकर इसका आदर न बिगाड़ूँगा। स्त्री चुप रही; मैं हँसने लगा। आगे चल कर मेरे मित्र ने मुझसे कहा कि अब फ़्रेंच न बोलूँगा।

× × × ×

मोना लिसा को देखकर मैं लौट रहा था। राह में एक डच बालिका से भेंट हुई। मेरे मित्र ने उससे पूछा—तुमने लूव्र देख लिया❀? उसने उत्तर दिया—हाँ।

मेरे मित्र—तुम्हें सबसे अधिक कौन-सा चित्र पसन्द आया?

बालिका—मा और बेटी।

मेरे मित्र—मोना लिसा से भी बढ़ कर?

बालिका—मोना लिसा मुझे बिलकुल ही न जँची। उसकी हँसी निष्ठुर है। वह पुरुषों के सर्वस्व को छीन कर हँस रही है विजयगर्विणी नारी की तरह। पर क्या नारी का सच्चा गौरव पुरुषों को सभी दे देने में नहीं है? सच्ची प्राप्ति सभी खो देने ही में है। मोना लिसा यह न जानती थी।

मेरे मित्र उठे, वाल्टर पेटर के वाक्य सुनाने लगे, मैं आगे बढ़ चुका था।

(ग)

लन्दन में कई चित्रशालायें हैं, कला-भवन एक भी नहीं। पेरिस में कई कला-भवन हैं, चित्रशालाओं की बात ही क्या! जिस समय नेल्सन ने ट्राफ़ाल्गर का युद्ध जीता था, उस समय उसके मनोभाव क्या थे, यह अविदित है; पर नेपोलियन की विजय-भेरी जब जहाँ बजी थी, उसकी पहली चिन्ता लूव्र के लिए हुई थी। इसी से लूव्र आज संसार का श्रेष्ठ कला-भवन है—कल्पना-जगत् का अनमोल रत्न, कला-विदों की तीर्थयात्रा। यदि सौन्दर्य्य की उपासना या कला का आदर जातीय महत्ता की सच्ची परख है तो अँगरेज़ फ़्रेंचों से बहुत पीछे हैं। प्रभुता, व्यापारिक कौशल और शृङ्खलता में अँगरेज़ केवल फ़्रेंचों से ही नहीं, अन्यान्य जातियों से भी बढ़े-चढ़े हैं। प्रभुता फ़्रेंच जाति का गुण नहीं; फ़्रेंच लोग पराक्रमी

❀ यह बालिका हम लोगों के साथ एक ही पाँथिअँ में ठहरी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। प्रभुत्व की भित्ति दूसरों का दासत्व है; पराक्रम निरापेक्ष होता है।

लन्दन प्रभुता का उपासक है; पेरिस 'जीवन' का—प्राणमय चित् का। जिन गुणों के गौरव से लन्दन फूला नहीं समाता वह श्रद्धा का अभाव है। इससे विचार-स्वातन्त्र्य सिद्ध नहीं होता, विचाराभाव सिद्ध होता है। लन्दन क्रान्ति का डङ्का सदा पीटता रहता है, पर वास्तव में वह भ्रांति के गर्त्त में डूब रहा है। लन्दन के लिएस्टर स्क्वेयर नामक घने स्थान में सेंट मार्टिन नाम का एक गिरजा है। बाहर ही, इसकी एक दीवार पर, ख्रीष्ट की मूर्ति टँगी हुई है और उसके नीचे यह वाक्य लिखा हुआ है—'इन इट नथिंग टु यू, आल ई दैट पास वाइ। लन्दन इसका उत्तर स्पष्टरूप से देता है—'नो'। लन्दन के आचार, लन्दन के विचार इस नकारात्मक उत्तर के प्रमाण हैं।

पेरिस में नोत्रदाम के ऊपर पत्थर के शैतान की एक मूर्त्ति नेपोलियन के समाधि-मन्दिर की चूड़ा पर हँसती हुई बिठा दी गई है, मानो नेपोलियन की आत्मा उस चूड़ा पर आसीन होकर कह रही है—'दृश्यताम्!' शैतान की मूर्त्ति एक बार चारों ओर देख लेती है—पेरिस के ऐश्वर्य्य और हर्ष को वह हँसती है और उसके विकट अट्टहास से व्यङ्ग्यमय प्रश्न उठता है "ततः किम्?" न नेपोलियन की आत्मा इसका उत्तर देती है, न पेरिस ही देता है। पेरिस के ऐसे चुप रह जाने में एक गूढ़ अर्थ छिपा है।

विलासिता के अन्तराल में पेरिस की आत्मा संन्यास की माला जप रही है। भोग के समस्त उपादानों को छिन्न-भिन्न कर पेरिस के सूक्ष्म शरीर से जो ध्वनि निकलती है वह ध्वनि वैराग्य की है—बन्धनों से मुक्त नहीं, युक्त।

लन्दन में वैराग्य नहीं, भोग भी नहीं; केवल निर्जीव प्रचेष्टा—असीम पर अहेतुक साधन। इसी से लन्दन का रूप सुन्दर नहीं हो सकता। जीवन की शिथिलता में, चित् के अभाव में, स्थूलता आ जमती है—सौन्दर्य्य का विकास नहीं होता। जब सरस्वती की वेदी पर जङ्गी जहाज़ के अफ़सर आ डटते हैं तब दृश्य शोक का होता है। इस शोक की सीमा नहीं। कारण इससे ग्रस्त जीव इसे हर्ष की संज्ञा से जानते हैं। ऐसी कृत्रिमता में आनन्द का लेश नहीं रहता, न जीवन के चिह्न रहते हैं।

[नारी मूर्त्ति—पेरिस, लूव्र]

लन्दन विशाल है, महान् नहीं। पेरिस विशाल नहीं, महान् है। स्थूल के रूप से मैं चकित हो सकता, पर प्रसन्न होता हूँ सूक्ष्म के भाव से। मैं लन्दन को आश्चर्य्य की दृष्टि से देखता हूँ, पर ध्यान करता हूँ पेरिस का।

—कृपानाथ मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋण-शोध

भाग्य के फेर से रहमान को ग़ुलामी करनी पड़ी। वह बिलकुल ग़रीब रहा हो सो बात नहीं। उसके बाप ने इतनी जायदाद छोड़ी थी कि नौकरी न करने पर भी उसके दिन अच्छी तरह कट जाते। लेकिन जिस समय वह बिलकुल बच्चा था, उसके बाप की मृत्यु हो गई, इससे सारी जायदाद उसके बड़े भाई के हाथ लगी। भाई ने सब धन दो-चार दिन में ही उड़ा दिया, यहाँ तक कि स्थावर-सम्पत्ति तथा घर-द्वार सब कुछ गिरवी हो गया, इतने पर भी बड़े भाई की आँखें न खुलीं। जब घर से कुछ उम्मेद न रही तब चोरी-डाकेज़नी करके अपनी पाशविक कामना की पूर्ति करने लगा। चोरी करके भला वह कब तक बाहर रहता। अन्त में जेल की हवा खानी पड़ी। वहाँ से छूट आने पर वह कहाँ गया, किसी को पता नहीं। गाँववाले सब उससे छुटकारा पा गये। वे कहने लगे, भला किसी तरह इससे पिण्ड तो छूटा। लेकिन बेचारी मा की क्या हालत हुई सो मा ही जान सकती है। वह दिन-रात ज़मीन पर लोट कर रोया करती।

इस समय सारा भार अकेले रहमान पर था। वह अभी लड़का ही था, दोनों वक्त खाने को दो मुट्ठी अन्न की कौन कहे, उसे बैठने तक को एक बालिश्त जगह न थी। इसलिए उसे नौकरी तलाश करनी पड़ी। बहुत दौड़-धूप करने पर दूर के गाँव में एक नौकरी मिली। वह मा और बहन को घर में छोड़ कर जहाँ नौकरी मिली थी, वहाँ चला गया। चलने के समय उसकी मा उसका हाथ धर कर बोली—देखना बेटा, अपने भाई की बात भूल न जाना। मेरा बच्चा कहाँ है? कहते कहते उसके नेत्रों से टप टप आँसू गिर पड़े। रहमान मा को ढाढ़स देता हुआ बोला—मा, घबराओ नहीं। मैं भैया को लाकर तुम्हारे सामने हाज़िर करूँगा।

रहमान यह बात मा से कह कर चला तो आया, लेकिन भाई को खोजना उसके लिए सम्भव नहीं हुआ। वह दिन भर काम में जुटा रहता। भला वह कब उसे ढूँढ़े और कब उसकी ख़बर ले! रह रह कर बीच बीच में भाई के लिए मा के दुःखित होने की बात उसे याद पड़ती। इससे उसका चित्त व्याकुल हो जाता। लेकिन वह क्या करे? कोई उपाय ही न था। वह सोचता कि ऐसा दिन कभी आता कि इस नौकरी से छुटकारा मिल जाता तो भाई की खोज-ख़बर लेता, मा का शोक दूर कर सकता, नहीं तो इस जन्म में यह सम्भव नहीं।

रहमान का मालिक उसे दिल से चाहता था। बेचारा अच्छे घराने में पैदा होकर विपत्ति में पड़ कर नौकरी करने के लिए आया है, यह बात सोच कर उसके मालिक का दिल सहानुभूति से भर जाता। जिससे रहमान का भला हो इसके लिए वह विशेष प्रयत्न करता। छुट्टी के समय जो काम रहमान करता उसके लिए उसे अलग मज़दूरी देता। इसके अलावा दूसरे नौकरों से वह अधिक वेतन पाता। इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मा-बहन का खाना-पहनना चलाकर वह हर महीने कुछ बचा लिया करता था।

रहमान ने हिसाब लगा कर देखा कि एक हज़ार रुपया होने पर गिरवी घर और कुछ ज़मीन छुड़ाई जा सकती है। ऐसा होने पर नौकरी करने की ज़रूरत न होगी। ज़मीन की उपज से दिन अच्छी तरह कट जायँगे। ज़मीन, घर, भैया इन सबका यदि उद्धार कर लूँ तो इस जन्म की सारी साध पूरी हो जाय और चाहिए ही क्या?

वह दिन-रात इसी फ़िक्र में रहने लगा कि किस तरह एक हज़ार रुपये इकट्ठे हों। उसकी आमदनी अधिक न थी, इसलिए उसे बहुत दिन तक थोड़ा थोड़ा करके जमा करना पड़ा। कोई दूसरा आदमी होता तो ऐसा होना असम्भव समझकर हिम्मत छोड़ देता—वह कहता कि कहीं बूँद से समुद्र भरता है! लेकिन रहमान ने असीम धैर्य के साथ इस कठिन काम को पूरा करने का इरादा कर लिया था। ऐसा न करने से काम भी तो नहीं चल सकता था।

(२)

बहुत दिन तक इन्तज़ार करने पर आख़िर को वह दिन आया। इस महीने की तनख़्वाह मिल जाने पर उसका एक हज़ार पूरा हो जायगा। देखते देखते वह महीना भी पूरा हो गया। उसकी ख़ुशी का ठिकाना न रहा। आज उसके जीवन की सारी साध पूरी होने को है!

रहमान का संचित धन उसके मालिक के पास रहता था। ठीक हज़ार रुपया जिस दिन पूरा हुआ, उस दिन वह अपने मालिक से बिदा लेने के लिए गया। उसकी सारी बात सुनकर मालिक बहुत प्रसन्न हुआ। रहमान की ग़ुलामी के दिन पूरे हो जाने पर उसे ऐसा मालूम हुआ कि स्वयं उसके सिर से एक बड़ा बोझ उतर गया!

रहमान और धैर्य न धारण कर सका। इतने दिन तक धीरज धर कर उसका मन अब ज़रा भी धीरज नहीं धारण कर सकता था। वह अभी रुपये लेकर अपने गाँव को लौट जाना चाहता था। उसका मालिक बोला—अच्छा, तुम अभी जाओ। लेकिन इतना रुपया एक साथ न ले जाओ। रास्ता अच्छा नहीं है—चोर-डाकुओं का डर है। इस समय कुछ ले जाओ—फिर आकर कुछ कुछ ले जाओ।

लेकिन वह और इन्तज़ार नहीं कर सकता था। इतने दिन तक तो प्रतीक्षा करता आया है, और अब फिर प्रतीक्षा? रहमान बोला—माफ़ करें। कुछ डर नहीं। मैं बड़ी सावधानी से रुपये ले जाऊँगा। मालिक ने फिर उसे एक बार समझाने की चेष्टा की। रहमान ने कभी उसकी बात न टाली थी। वह जो कुछ कह रहा है, सब उसकी भलाई के लिए ही, यह बात भी वह समझता था, तो भी वह अपने मन की अधीरता को किसी तरह भी दबा नहीं सकता था।

रहमान का मालिक उसे रुपये-पैसे समझा कर देने लगा। उन्हें हाथ में लेते समय रहमान को ऐसा जान पड़ा, मानो वे उसके बहुत पुराने दोस्त हैं! सभी उसके दिल में घुसे बैठे हैं। उन्हें देखते ही वह पहचान गया है किस रुपये पर किस तरह का दाग़ है, कौन घिसा है, कौन पतला है, कौन मैला है, कौन चमकता है, आदि आदि! इतना ही नहीं वह यह भी पहचानता था कि कौन कौन रुपये उसने अपने स्वामी की कन्या के विवाह के उपलक्ष में पाये थे! बहुत दिनों पर किसी मित्र से भेंट होने से जैसा आनन्द होता है, वैसा ही आनन्द उन रुपयों को देखकर उसे हुआ।

उन रुपयों को बहुत होशियारी से बाँध कर रहमान ने उसी रात को प्रस्थान किया। दूसरे दिन प्रातःकाल तक ठहरना उसे सह्य नहीं हुआ। चलते समय उसके मालिक ने कहा—एक हथियार साथ में ले लो। कौन जाने कोई मुसीबत रास्ते में आ खड़ी हो? यह कहकर उसने उसकी कमर में एक तलवार बाँध दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहमान घर से बाहर हुआ। गाँव के बीच से जाते समय उसके परिचित गलियों और घरों आदि से उसका मन एक एक करके विदा माँगने लगा, वह मानो सबसे मन ही मन कह रहा था, भाई, चला !

आज उसका हृदय रो रहा था—केवल एक वेदना रह रह कर उसे सता रही थी। मा के पास जाकर क्या कहूँगा ? मा तो रुपये की उम्मेद में बैठी न होगी। मैं यह कह कर आया था कि भैया को ढूँढ़ लाऊँगा। वह उन्हीं की राह देखती होगी। उसने विचार किया, मा इतने दिनों से उनका इन्तज़ार कर रही है। और दो दिन कर लेगी। मैं देश में जाकर सब प्रबन्ध कर लूँगा।

गाँव पार करने पर एक बड़ा जंगल पड़ता था। उसी जंगल के बीच से होकर उसका रास्ता गया था। इसी रास्ते से होकर वह चलने लगा। रात बहुत बीत गई थी। चारों तरफ़ अँधेरा छाया हुआ था। कहीं रोशनी का नामोनिशान तक नहीं दिखाई पड़ता था, पेड़-पौधों से तो मानों अंधकार झरा पड़ता था ! रहमान का मन इतना उतावला हो रहा था कि किसी प्रकार की बाधा उसे निरुत्साहित नहीं कर पाती थी; वह उसी अंधकार में चला जा रहा था।

उस घने अंधकार में रहमान कब अपना रास्ता भूल गया, इसका उसे पता ही न चला। अन्त में जब पास के पेड़ों की डालियाँ आकर उसका रास्ता रोकने लगीं तब उसे होश हुआ। रास्ता पाने के लिए वह छटपटाने लगा, लेकिन किसी तरह उसे रास्ता न मिला। घूमते घूमते वह थक गया। अँधेरे में इधर-उधर भटकने से सब गोलमाल हो गया। किधर से वह आया है, किधर जायगा, यह भी ठीक तरह न जान सका। कभी तो उसे मानो रास्ता मिला सा जान पड़ता, फिर दूसरे ही क्षण जंगल में चला जाता, इस प्रकार वह घूम रहा था, कि 'खस' 'खस' की आवाज़ सुनकर वह चौंक पड़ा। अन्धकार में से होकर मूर्ति धारण करके न जाने कौन उसकी ओर बढ़ा आ रहा था। पास आने पर रहमान ने देखा कि वह एक जंगली शिकारी है।

उसे देख कर रहमान की जान में जान आई। उसने झट उससे पूछा—क्योंजी, मेरा रास्ता बतला सकते हो ?

शिकारी ने एक बार उसके सर्वाङ्ग पर एक तीक्ष्ण दृष्टि डाली। इसके बाद पूछा—जाओगे कहाँ ?

रहमान ने अपने गाँव का नाम बताया।

शिकारी ने उसे थोड़ी दूर तक साथ ले जाकर एक रास्ते पर आकर उससे कहा—यह सामने का रास्ता धर कर ठीक उत्तर की तरफ़ चले जाओ।

रहमान उसी रास्ते से होकर चलने लगा। बहुत थक जाने पर उसका शरीर अवसन्न हो रहा था, और नहीं चला जाता था। इतने में देखा कि सामने एक झोपड़ी है। वह धीरे धीरे उसी झोपड़ी की तरफ़ चला। झोपड़ी में एक स्त्री बैठी कपड़ा सी रही थी। इतनी रात बीत जाने पर भी सोने की उसे ज़रा भी फ़िक्र न थी। वह एकाग्रचित्त से अपना काम कर रही थी। उसके पास जाकर रहमान ने कहा—मैं थका-माँदा मुसाफ़िर हूँ। आज रात भर के लिए क्या यहाँ थोड़ी-सी जगह मिलेगी ?

वह स्त्री आश्चर्य के साथ रहमान की तरफ़ देखती रही। इसके बाद अधिक विस्मय-पूर्वक उसने पूछा—इतनी रात को इस रास्ते से होकर तुम कैसे आये ?

रहमान बोला—मैं वन में रास्ता भूल गया था। एक शिकारी ने मुझे यह रास्ता बताया है। यह कह कर वह बैठ गया। वह खड़ा न रह सका।

रमणी कुछ देर तक चुप रह कर सोचती रही, इधर-उधर करती रही। अन्त में चारों तरफ़ देख कर अवरुद्ध स्वर में बोली—जानते हो, तुम कहाँ आ गये हो।

रहमान ने अवाक् होकर रमणी के मुँह की ओर देखा। वह बोला—नहीं। यह कौन-सी जगह है ?

स्त्री बोली—यह डाकू का घर है। जिसने तुम्हें रास्ता बतलाया है वह डाकू है—उसी का घर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

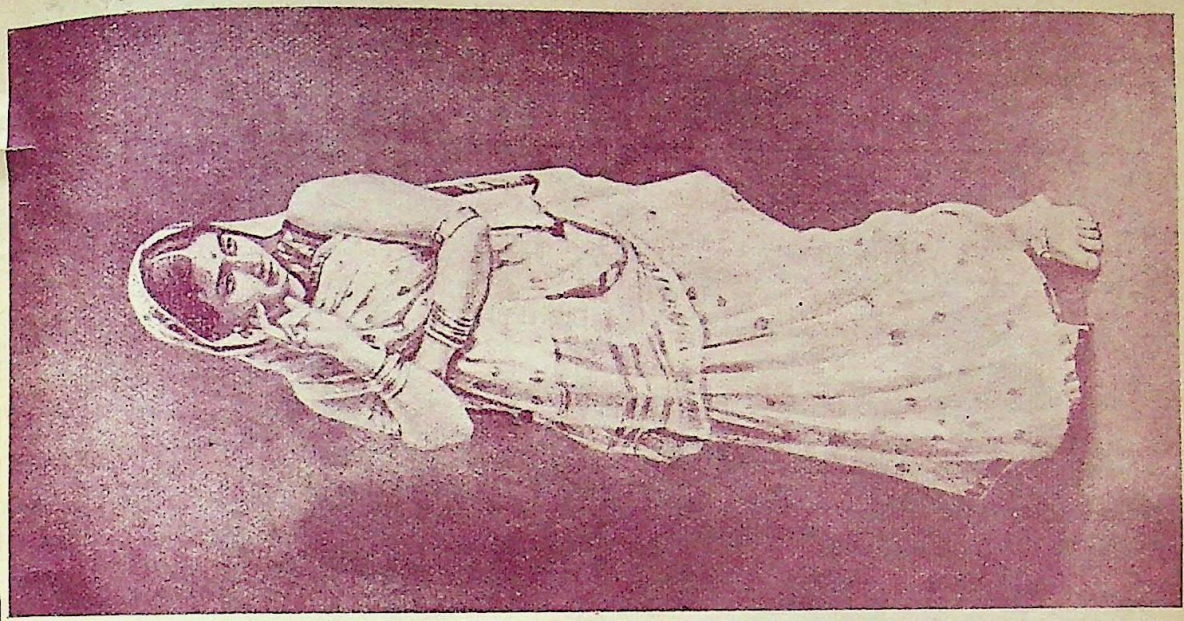

यौवन-काल का अवसान

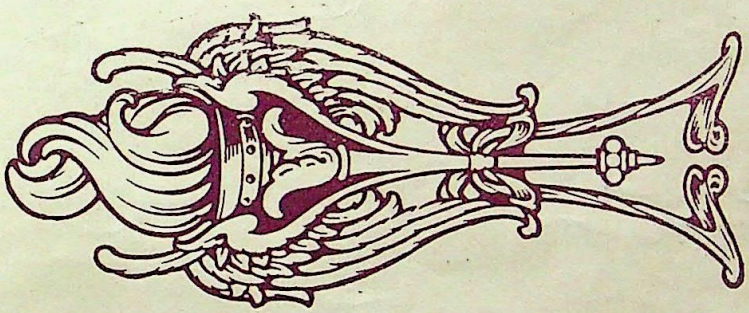

श्रीयुत एस० जी० ठाकुरसिंह की चित्रकारी

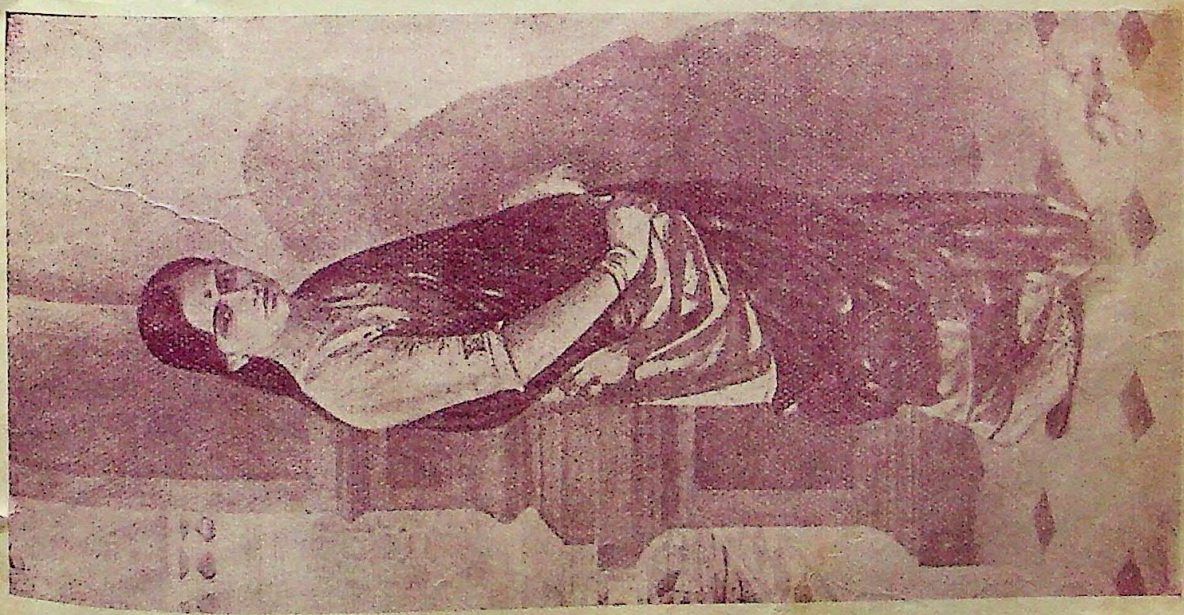

प्रतीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहमान घबरा कर बोल उठा—अब क्या उपाय है ?

स्त्री ने कहा—उपाय तो कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता, वह तुम्हारे पीछे पीछे आता होगा। अभी पहुँचेगा।

उस स्त्री के यह कहने बाद ही किसी के पैरों का शब्द सुनाई पड़ा। स्त्री ने घबराकर रहमान से कहा—उठो, उठो अधिक विलम्ब न करो। यह कह कर उसे ठेल कर एक अँधेरी जगह में बैठा आई।

शिकारी ने झोपड़े में प्रवेश कर उस स्त्री से पूछा—शिकार कहाँ है ?

स्त्री ने कुछ जवाब न दिया, विस्मय का भान कर उसकी ओर देखती भर रही। शिकारी ने फिर गर्ज कर कहा—शिकार कहाँ है ? मानो वह कुछ जानती नहीं, ऐसा भाव दिखाती हुई वह बोली—शिकार !

"हाँ, हाँ, शिकार !"

रमणी ने आश्चर्य के साथ कहा—कैसा शिकार ?

शिकारी अधीर होकर बोला—मैं बराबर उसे इसी रास्ते से आते हुए देखता आया हूँ। रास्ते में भी नहीं है, घर में भी नहीं है, तो क्या वह उड़ गया ?

स्त्री ने केवल यह कहा—क्या जानूँ ?

शिकारी तब क्रोध से पागल होकर चिल्ला कर कहने लगा—मैं जानता हूँ, यह सब तेरी ही कारसाज़ी है ! यह तेरा नया रोग नहीं है। बता वह कहाँ है ? उसे कहाँ छिपाया है ? यह कह कर उसने ज़ोर से उसे एक लात मारी। वह बेचारी ज़मीन पर गिर पड़ी, तो भी कुछ नहीं कहा।

स्त्री को निरुत्तर देखकर शिकारी का क्रोध क्रमशः बढ़ने लगा। मारते मारते उसने उसे अधमरा सा कर दिया। उस स्त्री ने इतने पर भी कुछ न कहा, पड़ी पड़ी केवल मार खाती रही।

उधर रहमान अस्थिर हो उठा। सोचा, अब और अधिक छिपाने से काम नहीं चल सकता। मेरे ही लिए इस अबला को मार खानी पड़ रही है ! वह झटपट दौड़ता हुआ आकर बोला—यह मैं हूँ ?

तब शिकारी उस स्त्री को छोड़ कर बाघ की तरह रहमान पर टूट पड़ा। रहमान उस समय भी इतना थका-माँदा था कि अच्छी तरह खड़ा न हो सकता था। इसी कारण उसने उसका सामना नहीं किया। डाकू ने उसका सारा धन सहज में ही लेकर उसे फटा वस्त्र पहना कर घर से बाहर कर दिया। रहमान ने कुछ मीन-मेख न की, इसलिए डाकू ने उसके प्राण लेने की आवश्यकता नहीं समझी।

बेचारा रहमान बिलकुल लाचारी और बेबसी की हालत में रास्ते पर आकर खड़ा हो गया। उसकी तलवार तक डाकू ने ले ली थी। जङ्गली जानवरों का डर था। रहमान ने कातर कंठ से डाकू को पुकार कर कहा। मेरा सब कुछ ले लिया है। उसे लिये रहो। केवल तलवार लौटा दो। नहीं तो बाघ-भालू मेरे प्राण ले लेंगे।

न जाने क्यों, डाकू को उस पर दया आ गई। तलवार हाथ में लेकर रहमान को देने के लिए निकाली। वह अंधकार में चमचमा उठी। यह देख कर डाकू बोल उठा—यह तो बिलकुल नई जान पड़ती है। अच्छा रहो, तुम्हें एक दूसरी तलवार देता हूँ। उसने घर में से एक पुरानी तलवार लाकर रहमान के हाथ में दे दी।

(३)

दूसरे दिन सवेरे रहमान उसी हालत में सूखा हुआ मुँह लेकर अपने मालिक के दरवाज़े के बाहर आकर खड़ा हुआ। शर्म के मारे वह घर के भीतर पैर न रख सका। रुपयों के चले जाने का तो उसे दुःख था ही, लेकिन मालिक की बात न मानने की वजह से उसकी ऐसी दशा हुई, यही सोचकर उसे मुँह दिखाने में लज्जा मालूम हो रही थी।

उसके मालिक ने जब सवेरे घर के बाहर निकल कर देखा कि फटे-पुराने वस्त्र पहने उदास मुँह, सिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचा किये रहमान खड़ा है तब वह आश्चर्य से अवाक् हो गया। उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो आँखों के सामने किसी जादूगर का जादू देख रहा है। जो रहमान रात में बिदा लेकर गया था, क्या यह वही है! उसकी हालत देखकर उसे बड़ा दुःख होने लगा। वह झटपट उसका हाथ पकड़ कर घर में ले गया। तब रहमान ने सारी बात खोलकर कही। वह सुनकर चुप हो रहा। ज़रा भी उसे डाँटा-फटकारा नहीं। रहमान पिछली रात को जिस तरह काम करते करते चला गया था, आज सवेरे ही फिर वही शुरू किया। बीच की रात की घटना मानो स्वप्न की तरह घटित हो गई।

डाकू ने जो पुरानी तलवार दी थी वह रहमान के कमरे की दीवार पर टँगी रहती। उसे देखते ही उसे उस रात की बात याद पड़ जाती। दिन भर काम-धाम करने पर जब वह सोने को आता तब रुपयों का शोक प्रत्येक रात्रि को नया हो उठता—निरुत्साह से उसका मन टूट जाता। अब कैसे गिरवी ज़मीन को छुड़ा सकूँगा? भैया को ढूँढ़ कर मा के आँसू कैसे पोछूँगा? उसकी सारी आशा निराशा में परिणत हो गई थी! रुपये इस जन्म भर के लिए चले गये, इस बात को भुलाने के लिए वह विशेष चेष्टा करता, लेकिन प्रत्येक रात्रि को वह तलवार उसके मन में उस घटना की सारी स्मृति को एक एक करके जगा देती—सभी बातों को मानो वह आँखों के सामने देख पाता। जिस समय डाकू के घर की स्त्री की बात याद पड़ती, उस समय उसके ऊपर एक आन्तरिक कृतज्ञता से उसका मन उच्छ्वसित हो उठता; मुझे बचाने के लिए उस बेचारी ने कितनी मार सही। वह मन ही मन सोचकर कहता, उसका वह ऋण जान पड़ता है कि इस ज़िन्दगी में न भर सकूँगा!

अन्त में यहाँ तक नौबत आई कि तलवार को आँख के सामने रखना रहमान के लिए असह्य हो उठा। पहले तो उसके दिमाग़ में यह बात न आई कि इसे रख कर क्या करूँ, बाद को यह निश्चय कियाकि पुरानी चीज़ों की दूकान पर जाकर बेच आऊँगा। गाँव से कुछ दूरी पर पुरानी चीज़ों की एक दूकान थी। एक दिन वह उस तलवार को लेकर वहाँ गया। दूकानदार बुड्ढा था, उसकी आँखों की ज्योति कम हो चली थी, वह तलवार को आँखों के ख़ूब पास ले जाकर उसके ऊपर धीरे धीरे निगाह दौड़ाने लगा। तलवार के बीच में निगाह पड़ते ही वह एकाएक चौंक कर बोल उठा—यह तो बहुमूल्य चीज़ दिखलाई पड़ती है!

रहमान चुप रहा। दूकानदार फिर बोला—इस पर बादशाह की मुहर है, इसकी क़ीमत ज़्यादा है।

रहमान ने पूछा—कितना?

"डेढ़ हज़ार।"

"डेढ़ हज़ार"! रहमान चौंक उठा। तब तो उसके सभी दुखों का अन्त ही हो जायगा।

डेढ़ हज़ार रुपये पाकर रहमान के मन में बहुत सी बातें उठने लगीं। वह मन ही मन कहता, दिन आने पर उस डाकू के घर की स्त्री का ऋण चुकाऊँगा। इस समय उसके मन में ऐसा होने लगा—यही तो वह समय आया है! हज़ार रुपये की मुझे ज़रूरत है। बाक़ी पाँच सौ रुपये देकर अनायास ही क़र्ज़ चुका दूँगा। इन पाँच सौ रुपयों से वह डाकू के यहाँ से सदा के लिए छुटकारा पा जायगी। वह निश्चय ही उसकी क्रीतदासी है। इस बात को वह जितना ही सोचने लगा, उतना ही रुपये दान करने की इच्छा प्रबल होने लगी। उसे ऐसा मालूम होने लगा कि ऐसा किये बिना वह ऋण-मुक्त न हो सकेगा।

(३)

अपने मालिक के यहाँ एक हज़ार रुपये अमानत के तौर पर रखकर वह बाहर हुआ। साथ में पाँच सौ रुपये ले लिये। उसकी यह इच्छा हुई कि इन रुपयों को उस स्त्री को देकर घर को जाऊँगा। उसके मन में ऐसा भासित होने लगा कि इस गाँव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं उसका भाई छिपकर रहता है। लज्जा से अपने गाँव को नहीं लौट रहा है। रहमान को ऐसा जान पड़ता था कि उसके जीवन में इस बार दुर्दिनों के बादलों के फट जाने पर सौभाग्य-सूर्य का उदय हो रहा है। केवल एक संशय था। यदि भैया को लेकर न जाऊँगा तो मा के पास जाकर क्या कहूँगा।

इस बार वह ऐसे वक्त घर से बाहर हुआ कि दिन रहते ही वन पार कर जाय। लेकिन जिस समय वह डाकू के घर पहुँचा, उस समय सूर्य अस्त हो रहा था, पेड़ों की डालियों से होकर सूर्य की सुनहली किरणें दमक रही थीं। लाल आकाश के तले से होकर पक्षी अपने घोंसलों को वापस आ रहे थे। सारा वन स्निग्ध प्रकाश और मधुर गुंजार से गूँज रहा था।

रहमान ने झोपड़े में घुस कर देखा, उसमें कोई नहीं है। उसने किसी को पुकारा नहीं। वह स्त्री को बहुत चुपके से रुपये देना चाहता था—कहीं ऐसा न हो कि डाकू देख ले और फिर रुपये छीन ले। रहमान प्रतीक्षा करने लगा। दिन का प्रकाश धीरे धीरे मिटता जाता था। छाया की तरह अंधकार झोपड़ी को ग्रसता जा रहा था। चिड़ियों का चहचहाना बन्द हो गया, चारों तरफ़ सन्नाटा छा जाने से वह स्थान न जाने कैसा मालूम होने लगा। रहमान खड़े खड़े सोच रहा था। सहसा उसने देखा कि घर में एक टिमटिमाता हुआ चिराग़ जल उठा। और इन्तज़ार करने से काम नहीं चल सकता, यह सोच कर बहुत चुपके से घर में पैर रखा। देखा कि एक पुरानी मैली शय्या पर डाकू स्थिर पड़ा हुआ है—सिरहाने चिराग़ जलाये वही स्त्री बैठी है। उसे देख कर रमणी चौंक कर उठ खड़ी हुई; रहमान झटपट रुपयों की थैली उसके हाथ में रखकर बोला—यह लो। उस रात मेरे लिए तुमने जो किया था उसका बदला मैं नहीं दे सकता।

रुपये देखकर स्त्री के चेहरे पर से उदासी की छाया मानो दूर हो गई; वह उच्छ्वसित होकर बोल उठी—आज तुमने हम लोगों को प्राण दान किया है। हम लोग भूख से मर रहे थे।

रुपये की बात सुनकर डाकू भी अपनी क्षीण देह लेकर उठ बैठा। रहमान चला जा रहा था; डाकू ने उसे इशारे से बुलाया। रहमान धीरे धीरे उसकी चारपाई के बग़ल में जाकर खड़ा हो गया।

डाकू का हृदय कृतज्ञता से भर उठा। एक तो रोगी था, दूसरे बिना खाये-पिये मर रहा था, कुछ ही देर पहले वह मृत्यु की छाया सामने देख रहा था। इस विजन वन में कहीं भी आशा का प्रकाश न था। ऐसी दशा में हठात् यह क्या! एक दिन वह जिसकी जान ले रहा था वही आज उसे जीवनदान देने आया है। रहमान के दोनों हाथ अपने हाथ में कस कर पकड़ लिये। उसके नेत्रों के कोनों में आँसू दिखाई पड़े। उसे इच्छा हो रही थी कि रहमान को छाती से लगा कर उसे ठंडा करूँ। किन्तु वह ऐसा न कर सका—अवसन्न होकर लेट गया।

रहमान अवाक् होकर डाकू का यह हृदयोच्छ्वास देख रहा था। उसका भी हृदय भर आया। वह धीरे धीरे डाकू की शय्या पर बैठ गया। डाकू ने फिर उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया, बहुत सी बातें उसके हृदय में उठीं, किन्तु एक बात भी वह न कह सका। वह सोच रहा था, जिसके लिए उसने विपत्ति को विपत्ति नहीं समझा, जिनकी प्राणरक्षा के लिए वह अपने प्राणों को मृत्यु के सामने रखकर लड़ा, उसके वे सब साथी उसकी बीमारी की हालत में उसका सर्वस्व लूटकर उसे मौत के मुँह में छोड़ कर चलते बने, और जिसको वह जान से मार डालनेवाला था वही आज उसे जीवनदान करने आया है। यह सोचते सोचते उसका हृदय हाय हाय करने लगा। वह रुद्ध श्वास छोड़कर क्षीण कंठ से बोला—मैं अभागा हूँ।

डाकू कुछ देर तक चुप रहा, मानो वह भीतर स कुछ बलसंग्रह कर लेने की चेष्टा कर रहा था। इसके बाद रहमान के मुँह की ओर देखकर धीरे धीरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहने लगा—मुझ जैसा पाखंडी संसार में और कोई न होगा—मैं नराधम हूँ। यह कहकर वह अपनी आत्मकहानी कहने लगा। रहमान चुप होकर सुनने लगा। घर में रात्रि का अंधकार क्रमशः बढ़ता चला जा रहा था। बाहर हवा बह रही थी, पेड़ के पत्ते हवा के झोंके से खड़खड़ा रहे थे। डाकू दीर्घ स्वास लेते हुए रुकते हुए गले से अपनी कहानी कह रहा था। रहमान एकाग्र मन से सुन रहा था। उसका हृदय पिघलता आ रहा था। डाकू जिस समय अपने छोटे भाई और मा की बात कह कर रो पड़ा, उस समय रहमान चौंक पड़ा। इसके बाद डाकू को छाती से लगाकर चिल्ला उठा, भैया, भैया।

डाकू ने विस्मित होकर एक बार रहमान के मुँह की ओर देखा। इसके बाद दोनों बाहुओं को व्याकुलता से उसकी ओर पसार कर उसे छाती से लगा लिया। घर की क्षीणदीप शिखा हठात् मानो उज्ज्वल हो उठी।❀

—गणेश पांडेय

❀ जापानी कहानी के आधार पर।

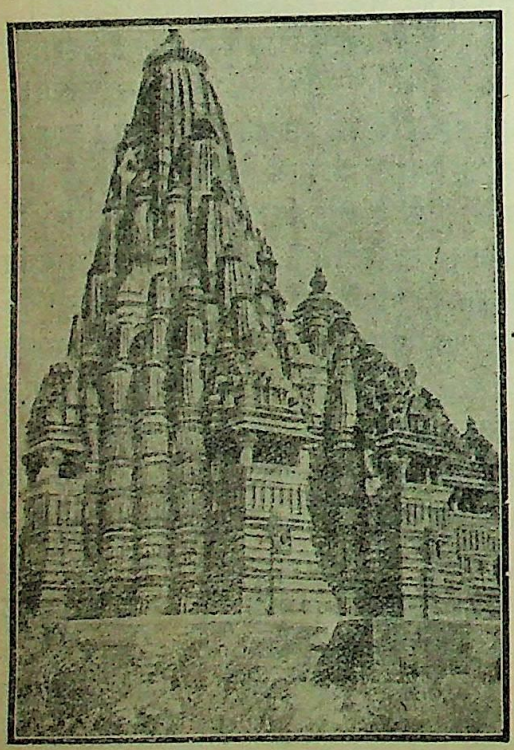

प्राचीन चिह्न

प्रत्येक जाति और प्रत्येक देश की प्राचीन सभ्यता को जानने के साधनों में प्राचीन इमारतें, प्राचीन स्थान और प्राचीन वस्तुएँ सबसे अधिक महत्त्व की समझी जाती हैं। इस पुस्तक के लेखों में पुराने नगरों, स्थानों और मन्दिरों आदि के संक्षिप्त विवरण देकर उनकी प्राचीन उन्नत अवस्था का उल्लेख किया गया है। नष्ट-भ्रष्ट वस्तुओं की रक्षा का एक-मात्र यही उपाय है कि पूरी तरह से उनका वर्णन पुस्तकों में हो, इसी विचार से यह उत्तम पुस्तक तैयार की गई है। पूरी किताब मनोरञ्जक और कौतूहल-वर्द्धक होने के सिवा अन्य दृष्टियों से भी ज्ञानप्रद अतएव जानने योग्य है। प्रत्येक इतिहास-प्रेमी को पूज्य द्विवेदीजी की यह पुस्तक अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य ॥।) बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय कला और कारीगरी का पुनरुज्जीवन

[इस लेख के लेखक श्रीयुत असितकुमार हालदार अपने विषय के विशेषज्ञ हैं। लखनऊ के सरकारी कला और कारीगरी के विद्यालय के आप प्रधान अध्यापक हैं। अपने इस सुन्दर लेख में 'कला' का महत्त्व सिद्ध करते हुए अन्त में आपने बतलाया है कि कला के पुनरुज्जीवन में देश का हित है। इसके लिए सूत्र-रूप में जिस योजना का आपने संकेत किया है वह ध्यान देने योग्य ही नहीं, व्यवहार्य है।]

बहुत से लोग कला और कारीगरी को एक ही वर्ग में रखना पसन्द न करेंगे। वे समझते हैं कि कला से तात्पर्य एक-मात्र चित्रण और शिल्पकला से है और कारीगरी तो केवल अभ्यस्त मज़दूरों का धंधा है। यह एक साधारण अनुभव की बात है कि जब कारीगरी के शिक्षण की आवश्यकता होती है तब एक अभ्यस्त कारीगर कलाविद् की अपेक्षा इस कार्य के लिए बहुत उपयुक्त समझा जाता है। फल यह हुआ है कि कारीगरी एक रूप से यंत्रवत् काम करने का नाम पड़ गया है और कारीगरी के काम केवल खिलौनों की दूकानें और अर्द्धशिक्षित सौंदर्य-भाव-विहीन लोगों के घरों को सुशोभित करने की वस्तुएँ बन गये हैं। खेद तो यह है कि यही वस्तुएँ देश से बाहर भारतीय कला-कृतियों के नमूने बनकर भी जाती हैं।

जान पड़ता है, हम ऐसा समझते हैं कि कारीगरी में मस्तिष्क की अपेक्षा हाथ की पटुता का अधिक कार्य है। लेकिन भारत, मिस्र और योरप की कला के इतिहास का साधारण ज्ञान भी हमें इस बात का पूरा विश्वास दिला देगा कि उन्हीं कलाविदों ने जिन्होंने आश्चर्यजनक चित्र खींचे हैं, जिन्होंने शिल्प के सुन्दरतम कार्य किये हैं, अपने कौशल को साधारण नित्य-प्रति के उपकरणों, वर्तनों, क़ालीनों, परदों और आभूषणों को सुन्दर बनाने में भी परिश्रम किया है।

कला चित्रण और रङ्ग-साज़ी तक परिमित नहीं है। कलाविद् एक बालिका की आकृति के चित्रण में उतनी ही निपुणता दिखाता है जितनी कि उसके आभूषणों के चित्रण में। आभूषणों के आकार-प्रकार का उसका ज्ञान किसी चतुर जौहरी के या निपुण कारीगर के ज्ञान से कम नहीं होता। कलाविद् की दृष्टि प्रत्येक सुन्दर वस्तु के ऊपर रहती है। कला-संबन्धी उद्योगों का पृथक् करना और एक दूसरे से उन्हें असंबद्ध दिखाना मूर्खता है। यथार्थ तो यह है कि वह व्यक्ति जो केवल कारीगरी करता है, सुन्दर वस्तुएँ उत्पन्न करने में असमर्थ है। यदि वह कलाविद् भी नहीं है तो वह केवल अपने पूर्वजों की बताई लकीर पर चल रहा है और उनकी कृतियों की नक़ल कर रहा है। यदि कारीगरी कला का अंग नहीं बन जाती तो उसका ह्रास और अधःपतन होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। अतएव कलाविद् को चित्रण और रङ्ग भरने में उतनी ही प्रसन्नता होती है जितनी कि हथौड़ी और छीनी चलाने में।

कला की चर्चा करते समय सुरुचि का प्रश्न पहले उठता है। यद्यपि कलाविद् का मुख्य कर्तव्य समाज में सुरुचि उत्पन्न करना नहीं है, तथापि उसके विशेष कर्तव्यों में एक बात यह भी है कि वह अपने कृत्यों से जनता में सुन्दर वस्तुओं की परख उत्पन्न करे। हमारा तात्पर्य ऐसी परख से नहीं है जो प्रत्येक वस्तु में उपयोगिता ढूँढ़ती रहती है और कला के भीतर उपदेश की खोज करती है। सदाचार की तुला में कला की तोल नहीं की जा सकती। कलाविद् जन-समूह में अपनी कृतियों-द्वारा विषयों के चुनाव और उनके निर्वाह-द्वारा जो सूक्ष्म भाव अन्य हृदयों में जागृत करता है उनके द्वारा प्रशस्त होता है। अपनी कृतियों-द्वारा वह प्राणियों के आनंद और दुःखों में भाग लेता है। प्रत्येक कलाविद् का अपना एक संसार होता है और उसी संसार की मात्रा से उसकी कृतियों की तोल होनी चाहिए। कलाविद् सूर्य की उपासना करता है, बिजली के दीपकों की नहीं, वह प्राकृतिक स्रोत का अन्वेषण करता है, संगमर्मर के झरने से अपनी प्यास नहीं बुझाता। कलाविद् का संसार हमारी स्थूल इंद्रियों से अनुभव में आनेवाला संसार नहीं है। अतएव साधारण सदाचार की तुला में कला की तोल करना अनुचित है।

इस संसार में मनुष्य के लिए किसी प्रकार जीवित रहना कठिन नहीं है, परंतु उसका जीवन सदा सौंदर्यमय जीवन नहीं होता। यहीं कलाविद् की सहायता की आवश्यकता होती है। हम चाहते हैं कि वह अपनी कृतियों से हमारे घरों की सुन्दरता बढ़ावे और हमारी नित्य की व्यावहारिक वस्तुओं को अधिक चारु और आकर्षक बनावे। यहाँ यह प्रश्न असंगत न होगा कि ऐसे कार्यों में कलाविद् का भाग कितना है? एक बार नमूना उपस्थित हो जाने के बाद क्या वही कार्य व्यावसायिक ढङ्ग से, वैज्ञानिक रीतियों का आश्रय लेकर अगणित संख्याओं में नहीं प्रस्तुत किया जा सकता। इसका उत्तर यही है कि कलाविद् का व्यक्तिगत स्पर्श (जो बड़ी मूल्यवान वस्तु है) इस प्रकार से खो जाता है।

कला-द्वारा मनुष्य अपनी सौंदर्य-बुद्धि को संतुष्ट कर सकता है; व्यवसाय-द्वारा प्रस्तुत वस्तु तो केवल उसके लोभ को तृप्त करती है। इसके अतिरिक्त कलाविद् व्यवसाय में भी अपनी कल्पना-द्वारा महान् परिवर्तन कर सकता है, मानो जादू से वह एक भयानक राक्षस को एक चंचल अप्सरा का रूप दे सकता है।

किसी जाति की सभ्यता का महत्त्व उसकी कला-संबन्धी साहित्यिक, धार्मिक और वैज्ञानिक कृतियों से ही जाना जाता है। इस प्रकार यूनान की पुरानी सभ्यता जो आधुनिक योरपीय सभ्यता के लिए प्रमाणस्वरूप मानी जाती है, अधिकांश में अपने कलाविदों की कृतियों-द्वारा ही इतनी सम्मानित है। और इन कलाविदों ने केवल शिल्पकला के ही बड़े बड़े उदाहरण नहीं उपस्थित किये, बरन नित्य के व्यवहार की छोटी छोटी वस्तुओं में, पात्रों, भांडों इत्यादि में अपनी कला दिखाई। इसी प्रकार भारतीय सभ्यता की उँचाई हमारे विशाल मंदिरों से वैसी ही प्रकट होती है, जैसी कि दीन के घरों में जलनेवाले पीतल के दीपकों से। यदि कला-संबन्धी परंपरा न होती तो आधुनिक योरप और आधुनिक भारत के निवासी वनों और गुफाओं में रहनेवाले जंगलियों से अभिन्न होते। विकास की गति सीधी नहीं है। कला के बाल्यकाल में हम यह पाते हैं कि कलाविद् विशाल मंदिरों और गिरजाघरों का निर्माण करते हैं और अपनी कल्पना के अनुसार केवल कला-बुद्धि से प्रेरित होकर उनकी दीवारों को चित्रों-द्वारा अलंकृत करते हैं। इसके अनंतर दूसरे काल में हम यह देखते हैं कि कलाविद् प्रकृति का अनुकरण-मात्र करते हैं, न उसकी व्याख्या करते हैं, न उसका समीक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस काल में उपयोगिता सौंदर्य की अपेक्षा ऊँचा स्थान पाती है। परंतु अब एक समय फिर लौटा है जब कलाविदों ने उपयोगिता और सौंदर्य को मिलाने का प्रयत्न किया है और कला-जगत् में पुनर्जागृति हो रही है।

कला की यह नवीन जागृति परंपरा पर अवलंबित है। परंपरा के आधार के बिना कला के सभी उदाहरण बिना जड़ के वृक्ष की भाँति होंगे। जहाँ विस्तार-मात्र है और गहराई नहीं है, वहाँ वास्तव में मृत्यु है। परंतु इस जागृति के निदर्शन को कालांतर से भिन्न रूप धारण करना उचित है। यदि हम कला के प्राचीन कृत्यों की नक़ल ही करें तो यह रचना न होकर केवल दुहराना कहलायेगा। परंपरा की अंध उपासता का बड़ा भयानक परिणाम होगा। सभ्यता की प्रगति के साथ रुचियों में भिन्नता आगई है। ज्ञान का क्षेत्र अधिक विस्तृत हो गया है। भौगोलिक सीमाओं का उल्लंघन हो चुका है। सारा संसार एक विस्तृत कुटुम्ब हो रहा है। अतएव हमें अपने विवेक और बुद्धि से काम लेते हुए आधुनिक विचारों का भी यथेष्ट ध्यान रखना चाहिए, जिसमें आनेवाले समय के लिए हम कुछ मूल्यवान् थाती छोड़ जायँ।

समीकरण और निग्रह कला के दो प्रधान अंग हैं। कला-संबन्धी परंपरा का अनुशीलन करते हुए कलाविदों को चाहिए कि पुराने समय की शैली और हेतु के अनुकरण-मात्र से बचें। उन्हें चाहिए कि नये हेतुओं को तलाश करें, अपने विचारों के व्यक्त करने के लिए नई शैली चलावें, जो नई होते हुए भी परंपरा के प्रतिकूल न हो। इस कमी के कारण कला की नई प्रगति में हमें ऐसा देखने में आता है कि पुराने हेतुओं और शैली को लोग केवल दुहरा रहे हैं। उदाहरणार्थ ले लीजिए मुरादाबाद और बनारस के पीतल के बर्तन, मिर्ज़ापुर और शाहजहाँपुर के क़ालीन, मुर्शिदाबाद और दिल्ली के हाथीदाँत के काम, और लखनऊ और कृष्णनगर की मिट्टी की मूर्तियाँ। नवीनता और भिन्नता की कमी का एक और बड़ा कारण परदेशी यात्रियों का भारतीय वस्तुओं के संग्रह करने का लोभ है। ये भारतीय वस्तुओं को कौतुक और यादगार के लिए ले जाते हैं। वे यह नहीं जानते कि ये वस्तुएँ नाममात्र के लिए भारतीय हैं।

आश्रयदाताओं की कमी और हमारे अमीरों के निरुत्साह के कारण ही धीरे धीरे हमारी उच्च कोटि की कला-कृतियाँ लुप्त हो गई हैं। अमीर लोग विदेशी रंगीन चित्र और उनकी नंगी परियों की छापें ख़रीद कर अपने घरों की दीवारों पर लटकावेंगे, अपने घरों और बाग़ीचों में संगमर्मर की विदेशी घृणित मूर्तियाँ और फ़ौव्वारे लगावेंगे। उनके ताज, कलँगियाँ, वस्त्र, और जवाहिर हमें नाटकों के प्रहसनों की स्मृति दिलाते हैं। पुराने समय में राजे-महाराजे प्रसिद्ध कलाविदों, गवैयों, कारीगरों और कवियों को आश्रय देना और अपनी सभाओं में रखना अपना कर्तव्य समझते थे और अपनी कृतियों के संबन्ध में आपस में एक दूसरे से गर्व किया करते थे। परंतु आज-कल यदि हमारी वस्तुओं में विदेशीपन की चमक न हो और यदि उसे विदेशी लोग प्रशंसा की दृष्टि से न देखें तो हमारे दरिद्र से दरिद्र लोग अपनी देशी वस्तुओं में कोई विशेषता नहीं देखते। मुर्शिदाबाद के रेशमी रूमाल जब लार्ड कार्माइकेल की जेब को सुशोभित करने लगे तब उन्हें 'कार्माइकेल रूमाल' नाम देकर हमारे देशी भाई भी पसंद करने लगे। जब तक रवीन्द्रनाथ ठाकुर को नोबेल-पुरस्कार नहीं मिला तब तक उनकी बँगला-पुस्तकें कलकत्ते के पुस्तक-विक्रेताओं की दूकानों पर कीड़ों का आहार बनती रहीं। आज-कल के वास्तविक कलाविद् किसी प्रकार अपने जीवन का निर्वाह कर लेते हैं, वह भी कुछ इने-गिने पारखियों को माँग पूरी करके। कला के सुन्दरतम नमूने अजायबघरों की शीशे की आलमारियों में बंद रह कर एक मृत जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सब होते हुए भी अभी थोड़े दिनों से कला के क्षेत्र में एक नई जागृति हुई है और यह ऐसी जागृति है जो टिकेगी। जिन लोगों में कुछ भी बुद्धि है वह अब कला की अवनत अवस्था पर दुःख प्रकट करते हैं और उसकी वृद्धि के मार्ग में जो जो अड़चनें हैं उन्हें दूर करने में सहायता देने के लिए उत्सुक हैं। हमें यह देखकर प्रसन्नता होती है कि हमारी स्त्रियों की रुचि विलायती कुर्तियों को छोड़कर देशी शालों की ओर हो रही है। हमारे पुरुष भी अब खुले कालर के कोटों का परित्याग करके सूती और रेशमी कुर्ते अधिक प्रसन्नता और चाव से पहनते हैं। सुन्दर देशी उपकरणों, वर्तनों, क़ालीनों और घर में व्यवहार में आनेवाली बीसों छोटी छोटी वस्तुओं के चुनने में हम अब अधिक विचारशील हो गये हैं। यह सब बातें खोई हुई कलाओं को पुनरुज्जीवित करने में बहुत सहायक होती हैं।

इस छोटे से निबंध के अंत में हम कुछ ऐसी बातें बताना चाहते हैं जिनसे देश की कला-कृतियों में हम उत्तमतर परिणाम प्राप्त कर सकें। प्रत्येक शिक्षा और सभ्यता के केन्द्र में कला-संघ स्थापित होने चाहिए। प्रदर्शनियों और व्याख्यानों का समुचित समय पर प्रबन्ध होना चाहिए। सहकारी सभाओं की भाँति कलाविदों और कारीगरों की समितियाँ प्रत्येक नगर में बननी चाहिए। प्रत्येक ग्राम में शिल्पियों के गण स्थापित होने चाहिए। कला के शिक्षालय, अजायबघर और संग्रहालय जगह जगह खुल जाने चाहिए और इन्हीं के साथ एक ऐसा विभाग होना चाहिए जिसमें कलाविद्, शिल्पकार और कारीगर अच्छे अच्छे कला के नमूनों को देख कर और उन्हें अध्ययन कर प्रेरणा और उत्साह-लाभ कर सकें।

यदि किसी के हृदय में भारत का सच्चा हित है तो उसे चाहिए कि वह अपनी सारी चिंता और शक्ति सच्चे कला-भाव को पुनरुज्जीवित करने में व्यय करे। अपने कलाविदों, दार्शनिकों, धर्मात्माओं और विद्वानों-द्वारा ही भारत संसार में ख्याति पा सकेगा और अन्य जातियों के बीच आदर का स्थान प्राप्त कर सकेगा।

—असितकुमार हालदार

मक्खियों की करतूतें

पुस्तक छोटी-सी है परन्तु बहुत उपयोगी है। मक्खियों के कारण कैसे कैसे भयानक रोग पैदा हो जाते हैं यह किसी से छिपा नहीं। इस पुस्तक में ख़ुलासा सब बातों का वर्णन किया गया है। ज़रा पढ़कर देखिए।

मूल्य केवल ।≈) छः आना।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान-मग्ना

(१)

छोड़ा एक बुन्द ज्यों ही विधि ने कमंडल से,
लगती कुमंडल को कम्प करती हुई।
गहन गंभीर की गुफा से श्वेत-सिंहिनी-सी,
विद्युत् की झर—झरना-सी—झरती हुई॥
धार सुरधुनि जो धरा पै धूम-धाम से तो,
हिमगत से होश हर के भी हरती हुई।
नभ-व्योम-मंडल के पार से हज़ार धार,
छूटी, हो अपार, हाहाकार करती हुई॥

(२)

धारा व्योम-मंडल प्रचंड फटने-सा लगा,
ऐसी जलधार थी हवाएँ एक लात में।
दिग्-दन्तियों के दिल दहल-दहल उठे,
गंगा के अनूप प्रलयङ्कर प्रपात में॥
पड़े हों घोर प्रलय-पयोद जैसे,
शिव महाराज के कशा की एक घात में।
शिव के गले से छूटी, इन्द्र ऐरावत गले,
ऐरावत लिपटा गले में पारिजात के॥

(३)

देखा वेग प्रबल-प्रचंड देव-निम्नगा का,
चारों मुख बाये कंज-योनि त्रसने लगे।
सकल सुरासुर सकंप नाक-नारक में,
होके निराधार से अधोधो धसने लगे॥
हृदय-पटल से छिपा के इन्दिरा को हरि,
[illegible] के समेत खसने लगे।
उधर भयंकर प्रवाह देख शीश पर,
ईश हँसने लगे फणीश कसने लगे॥

(४)

जाना जब छूटी गंगा विधि के कमंडल से,
अपना कमंडल धरा पै धरते हुए।
शैल-शैल-शिखर बिराने उत्सुकता से,
दीर्घता जटा की अटवी में भरते हुए।
फेंक गजराज का अजिन अति आतुर हो,
अमित अभीत भव-भीति हरने लगे।
एक टेढ़ी दृष्टि से विलोक व्योम-मंडल को,
लाल त्रोक शम्भु अट्टहास करने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सब होते हुए भी अभी थोड़े दिनों से कला के क्षेत्र में एक नई जागृति हुई है और वह ऐसी जागृति है जो टिकेगी। जिस लोगों में इस भी वृद्धि है वह अब कला की अपनाने [illegible] प्रकट करते हैं और उसकी वृद्धि के मार्ग में जो अड़चनें हैं उन्हें दूर करने में सहायता देने के लिए उत्सुक हैं। हमें यह देखकर प्रसन्नता होती है कि हमारी स्त्रियों की रुचि विलायती कुर्तियों को छोड़कर देशी शालों की ओर हो रही है। हमारे पुरुष भी अब सुले कालर के कोटों का परित्याग करके सूती और रेशमी कुर्ते अधिक प्रसन्नता और चाव से पहनते हैं। सुन्दर देशी उपकरणों, बर्तनों, कालीनों और घर में व्यवहार में आनेवाली बीसों छोटी छोटी वस्तुओं के चुनने में हम अब अधिक विचारशील हो गये हैं। यह सब बातें खोई हुई कलाओं के पुनरुज्जीवित करने में बहुत सहायक होती हैं।

इस छोटे से निबंध के अंत में हम [illegible] बताना चाहते हैं जिनसे देश की कला-कृतियों में हम उत्तमतर परिणाम प्राप्त कर सकें। प्रत्येक शिक्षा और सभ्यता के केन्द्र [illegible] स्थापित होने चाहिए। प्रदर्शनियों और व्या[illegible] का समय समय पर प्रबन्ध होना चाहिए। सहकारी सभाओं की भाँति कलाविदों और कारीगरों की समितियाँ प्रत्येक प्रान्त में बननी चाहिए। प्रत्येक ग्राम में शिल्पियों के गण स्थापित होने चाहिए। कला शिक्षालय, अजायबघर और संग्रहालय जगह जगह खुल जाने चाहिए और इन्हीं के साथ एक ऐसा विभाग होना चाहिए जिसमें कलाविद्, शिल्पकार और कारीगर अच्छे अच्छे कला के नमूनों को देखकर और उन्हें अध्ययन कर प्रेरणा और उत्साह-लाभ कर सकें।

यदि किसी के हृदय में भारत का सच्चा हित है तो उसे चाहिए कि वह अपनी सारी चिंता और शक्ति सच्चे कला-भाव को पुनरुज्जीवित करने में व्यय करे। अपने कलाविदों, दार्शनिकों, धर्मात्माओं और विद्वानों-द्वारा ही भारत संसार में ख्याति पा सकेगा और अन्य जातियों के बीच आदर का स्थान प्राप्त कर सकेगा।

—असितकुमार हालदार

मक्खियों की करतूतें

पुस्तक छोटी-सी है परन्तु बहुत उपयोगी है। मक्खियों के कारण कैसे कैसे भयानक रोग पैदा हो जाते हैं यह किसी से छिपा नहीं। इस पुस्तक में खुलासा सब बातों का वर्णन किया गया है। ज़रा पढ़कर देखिए।

मूल्य केवल ।=) छः आना।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगावतरण

(१)

छोड़ा एक बुन्द ज्यों ही विधि ने कमंडल से,
लमकी कुमंडल को कम्प करती हुई ।
गगन गँभीर की गुफा से श्वेत-सिंहिनी-सी,
विद्युत् की झर—झरना-सी—झरती हुई ॥
धाई सुरधुनि जो धरा पै धूम-धाम से तो,
हिम्मत से होश हर के भी हरती हुई ।
सप्त-व्योम-मंडल के पार से हज़ार धार,
छूटी, हो अपार, हाहाकार करती हुई ॥

(२)

सारा व्योम-मंडल प्रचंड फटने-सा लगा,
टूटी उनचास थीं हवाएँ एक लात में ।
दिग-दन्तियों के दिल दहल-दहल उठे,
गंगा के अनूप प्रलयङ्कर प्रपात में ॥
घुमड़ पड़े हों घोर प्रलय-पयोद जैसे,
इन्द्र महाराज के कशा की एक घात में ।
इन्द्र के गले से शची, इन्द्र ऐरावत गले,
ऐरावत लिपटा तने में पारिजात के ॥

(३)

देखा वेग प्रबल-प्रचंड देव-निम्नगा का,
चारों मुख बाये कंज-योनि त्रसने लगे ।
सकल सुरासुर सकंप नाक-नारक में,
होके निराधार से अधोधो धसने लगे ॥
हृदय-पटल से छिपा के इन्दिरा को हरि,
खसित फणीन्द्र के समेत खसने लगे ।
उधर भयंकर प्रवाह देख शीश पर,
ईश हँसने लगे फणीश कसने लगे ॥

(४)

जाना जब छूटी गंगा विधि के कमंडल से,
अपना कमंडल धरा पै धरते हुए ।
शैल-शैल-शिखर विराजे उग्ररूपता से,
दीर्घता जटा की अटवी में भरते हुए ।
फेंक गजराज का अजिन अति आतुर हो,
अमित अभीत भव-भीति हरने लगे ।
एक टेढ़ी दृष्टि से विलोक व्योम-मंडल को,
ताल ठोंक शम्भु अट्टहास करने लगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५)

सारी पृथिवी पै गिरी पूत करने के लिए,
पूत से पयोभव के प्रथित पताका-सी ।
अथवा नरों को नर-देवों की उपाधि देने,
आई अवनीतल पै विबुध-बलाका-सी ।

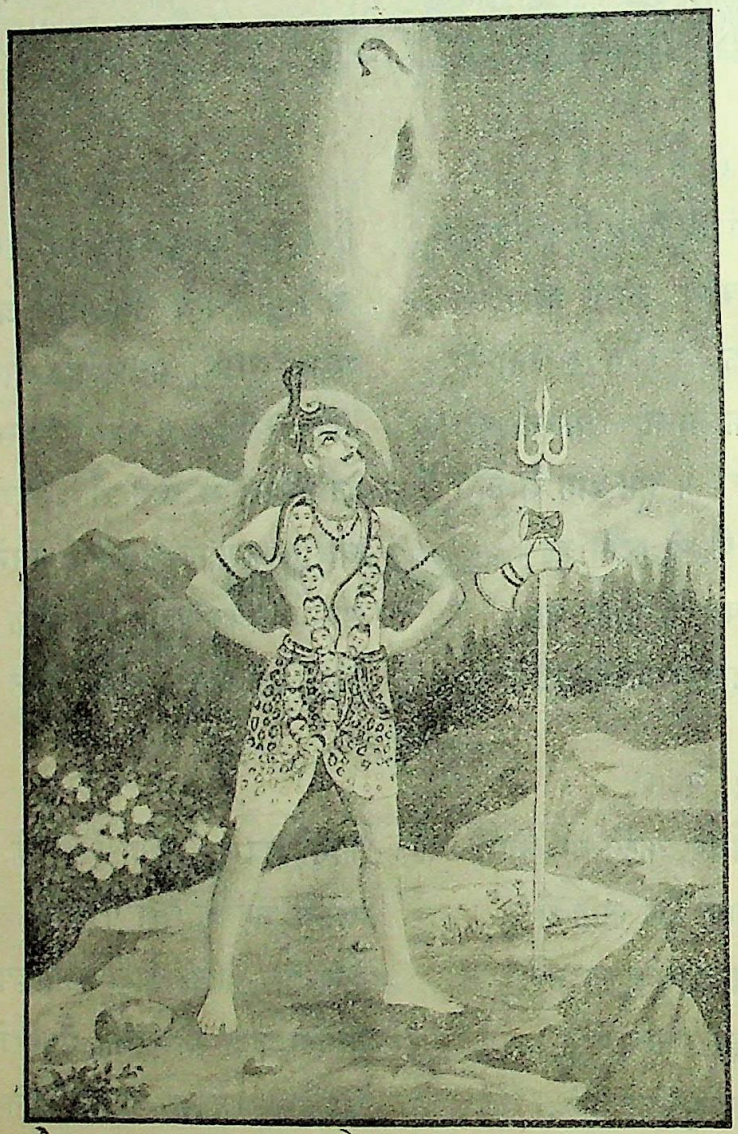

या कि पाप-पुञ्ज तम-तोम के विदारने को,
हो के निराधार बही पुञ्जीभूत एका सी ।
पूछो उस औढ़र यती से किस भाँति गिरी,
गंगा फूल-माला-सी कि वज्र की शलाका-सी ॥

—"अनूप"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी बीकानेर-यात्रा

राजपूताना मुझे बहुत ही प्रिय है। केवल इसी लिए नहीं कि वह वीरों का प्रान्त है, बल्कि वहाँ मेरे मित्रों की संख्या अधिक है और वहाँ की आबहवा भी मेरे स्वास्थ्य के बहुत अनुकूल पड़ती है। आज से लगभग बीस वर्ष पहले मैं संग्रहणी रोग से मृतप्राय होकर शेखावाटी (राजपूताने का पूर्वी भाग) में गया था और फ़तहपुर में लगभग चार-पाँच वर्षों तक रहकर बिलकुल नीरोग होकर लौटा था। वहाँ के परम उदार, देश और स्वजाति के प्रसिद्ध हितैषी सेठ रामवल्लभजी नेवटिया ने मुझ अपरिचित को मट्ठा पिला पिलाकर जिलाया था। उनका स्नेह मुझ पर उत्तरोत्तर अधिक होता गया और वे अन्त समय तक मुझ पर अपने कुटुम्बी जैसा प्रेम रखते रहे। गत जेठ महीने में उनका स्वर्गवास हो

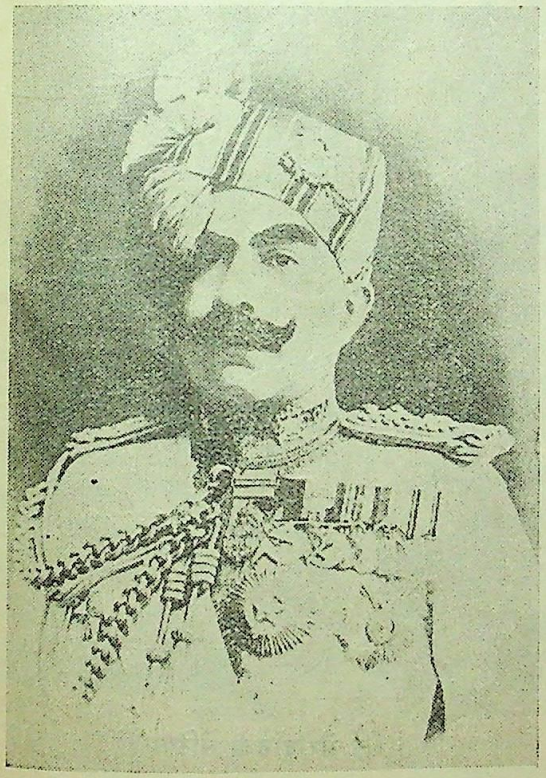

[हिज़ हाईनेस महाराज गंगासिंहजी]

[युवराज श्रीशार्दूलसिंहजी]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया था। उनके कुटुम्बियों से समवेदना प्रकट करने के लिए मैं गत जुलाई की १२ वीं तारीख़ को फ़तहपुर गया था। उन दिनों मेरा स्वास्थ्य बहुत ख़राब था और

[छोटे महाराजकुमार विजयसिंहजी]

मुझे कुछ समय तक एक स्थान पर रहकर विश्राम की आवश्यकता थी, इससे मैं वहाँ दो-ढाई महीने के लगभग ठहर गया। वहीं से मैंने १० सितम्बर को बीकानेर की यात्रा की थी।

फ़तहपुर से चूरू बारह कोस की दूरी पर बीकानेर-राज्य का एक प्रसिद्ध शहर है। चूरू तक फ़तहपुर से लारी जाती है। चूरू से रात को एक बजे के बाद बीकानेर की ट्रेन मिलती है। चूरू में ग्यारह बजे दिन में पहुँचा था। इससे घूम-फिरकर देखने का कुछ समय मिल गया था। वहाँ एक 'सुराणा-पुस्तकालय' है। उसमें बहुत-सी प्राचीन और नवीन पुस्तकें सुरक्षित हैं। उसके लाइब्रेरियन पंडित रामदेवजी बनारस-ज़िले के निवासी हैं। सुदूर मारवाड़-प्रान्त में अपने प्रान्त का व्यक्ति पाकर किसे हर्ष न होगा! पंडित रामदेवजी ने मुझे अच्छी तरह पुस्तकालय दिखलाया। उनके चचेरे भाई पंडित विश्वनाथजी भी वहीं एक स्कूल में अध्यापक हैं। उन्होंने भी मेरी बड़ी सेवा की।

[सेठ भैरोंदानजी सेठिया]

रात की ट्रेन से जाने के लिए मैं स्टेशन पर आया। स्टेशन पर काफ़ी भीड़ थी। वहाँ की मुख्य सवारी ऊँट है। इससे ऊँटों की एक बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या स्टेशन के बाहर मुसाफ़िरों की प्रतीक्षा में मौजूद थी।

मैंने इंटर क्लास का टिकट लिया था। उसमें भीड़ नहीं थी। बल्कि एक ही सज्जन और थे, जो

दूसरे दिन सवेरे नौ बजते बजते ट्रेन बीकानेर स्टेशन पर पहुँच गई। मैंने कल्पना कर रक्खी थी कि स्टेशन बहुत विशाल और भव्य होगा। पर उसकी इमारत साधारण-सी है।

[सेठ रामगोपालजी मोहता]

बीकानेर के वकील थे। सवेरे उनसे परिचय हुआ और बीकानेर की बहुत सी बातें जानने को मिलीं।

बीकानेर मैं पहले कभी नहीं गया था। इससे वहाँ के लिए मैं बिलकुल अजनबी था। स्टेशन से निकल कर मैं मोहता-धर्मशाला में जो स्टेशन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल पास है, जाने लगा। इतने में एक आदमी ने पीछे से पूछा—आप कहाँ से आये?

अपरिचितों को इस प्रकार उत्तर देने की मेरी आदत नहीं। मैंने उनसे पूछा—आप कौन हैं? उन्होंने कहा—मैं सी० आई० डी० का इन्स्पेक्टर हूँ। मैंने कहा—अभी तो मैंने रेलवे की सीमा भी पार नहीं की, आप अभी से पीछे लग गये। उन्होंने कहा—मेरे लिए कहीं रुकावट नहीं। मैंने कहा—यदि मैं अपना पता-ठिकाना आपको न बताऊँ तो? उन्होंने कहा—तो कोई हर्ज नहीं। मैं आपके पीछे लगा लगा घूमूँगा। डर के मारे आपको कोई अपने यहाँ बैठने भी न देगा।

मैंने उन्हें अपना नाम-पता और बीकानेर आने का उद्देश तथा ठहरने का स्थान बताकर पिण्ड छुड़ाया।

बीकानेर में पानी का बड़ा कष्ट है। पहले यह सुना करता था, पर अब भोगने की बारी आई। मोहताजी की धर्मशाला में एक कोठरी में जा ठहरा। साथ में फ़तहपुर से धौंकल नाम का एक नौकर ले गया था। उसने जाँच करके मुझे यह ख़बर दी कि धर्मशाला में तीन तरह का पानी मिलता है, पाइप का, कुंड का और चरस का। उसी से मालूम हुआ कि धर्मशाला में कुँए पर पानी खींचने का एंजिन भी लगा है, पर उसका पानी केवल पीने के लिए दिया जाता है। मारवाड़ में बरसात का पानी जमा रखने के लिए कुण्ड बनवाने की प्रथा अधिक है। जो लोग चमड़े का पानी नहीं पीना चाहते वे कुण्ड का पानी पिया करते हैं। मैंने कुण्ड का पानी नहाने के लिए मँगाया। उसमें कीड़े बिलबिला रहे थे। देखते ही जी भागने लगा। पर करता क्या? चमड़े के पानी के लिए परम्परा से चली आती हुई घृणा ने मुझे कुण्ड के पानी को इस्तेमाल में लाने के लिए मजबूर किया। मैंने उसी पानी से स्नान किया। धर्मशाले के जमादार ने रसोई के लिए बरतन तो दे दिये, पर रसोई की जगह मुझे पसंद नहीं आई। इससे दोपहर को एक 'बासे' में क्षुधा शान्त करनी पड़ी।

उन दिनों दोपहर में बीकानेर में काफ़ी धूप पड़ती थी। इससे दोपहर को मैं सोता ही रहा। लगभग तीन बजे मैं धर्मशाला से बाहर निकला। बीकानेर एक शहरपनाह के अन्दर बसा है। शहरपनाह के अन्दर कसे रहने के कारण पुराने शहर की बस्ती बहुत ही घनी है।

घूमते-घामते मैं कोट दरवाज़े के पास पहुँचा। इतने में एक व्यक्ति एक काग़ज़ के टुकड़े को जिस पर मेरा नाम लिखा था, मेरे सामने करके पूछने लगा—यह आपका नाम है? पहले तो मैंने समझा कि यह भी कोई सी० आई० डी० का आदमी है। फिर मैंने पूछा—तुमने कैसे जाना कि मेरा यह नाम है? उसने कहा—खद्दर पहने हुए देखकर मैंने समझा कि आपही होंगे। मैंने पूछा—तुम्हारा मतलब क्या है? उसने कहा—सेठ भैरोंदानजी सेठिया ने आपको अपने यहाँ ठहरने के लिए बुलाया है। मैं आपका सामान लेने आया हूँ।

सेठ भैरोंदानजी सेठिया से मेरा पहले का परिचय नहीं था। वे जैन-धर्मावलम्बी हैं। उनके आचार्य पूज्य श्रीजवाहरलालजी महाराज से मेरा पहले का परिचय था। वे उन्हीं के यहाँ 'चौमासा' कर रहे थे। उनको मालूम हो चुका था कि मैं बीकानेर में आया हूँ। उन्हीं की प्रेरणा से सेठियाजी ने मुझे अपने यहाँ ठहरने को बुलाया था।

मैं सेठियाजी के यहाँ पहुँचा। उन्होंने मेरे ठहरने का और भोजन आदि की व्यवस्था मेरे इच्छानुसार बहुत अच्छी कर दी। सेठियाजी बीकानेर के प्रमुख सेठों में हैं। राज में भी उनका अच्छा मान है। वे बड़े शिक्षा-प्रेमी, सतोगुणी और साधु प्रकृति के व्यक्ति हैं। जैन-धर्म के नियमों की पाबन्दी बड़ी सावधानी से करते हैं। उन्होंने बीकानेर और कलकत्ते में कुछ स्थावर सम्पत्ति दान कर रक्खी है, जिसकी वार्षिक आय बीस हज़ार रुपये के लगभग है। इस आय से बीकानेर में उनका एक कालेज, एक जैन-धर्म विद्यालय, एक कन्यापाठशाला, एक पुस्तकालय, एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

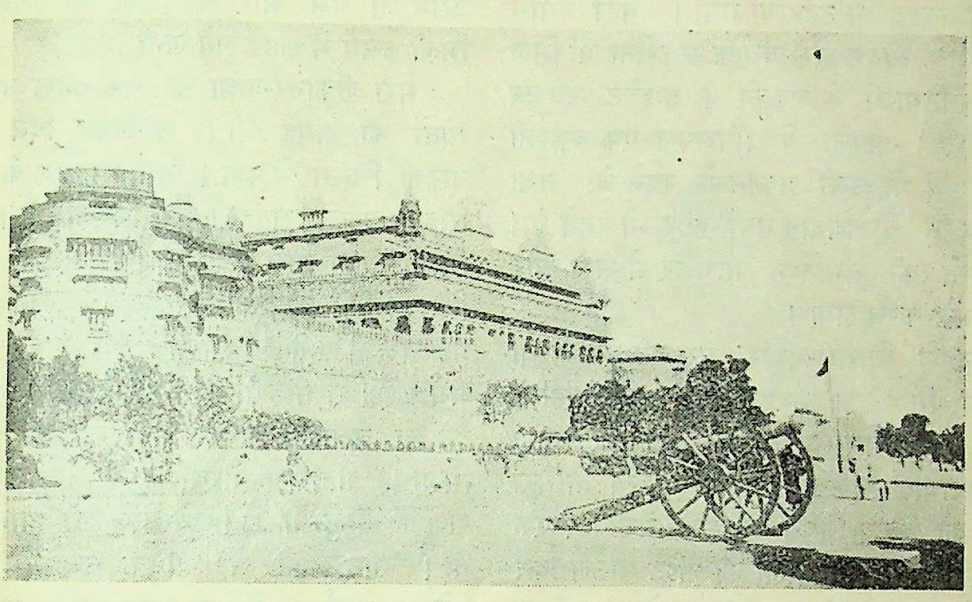

[क़िला]

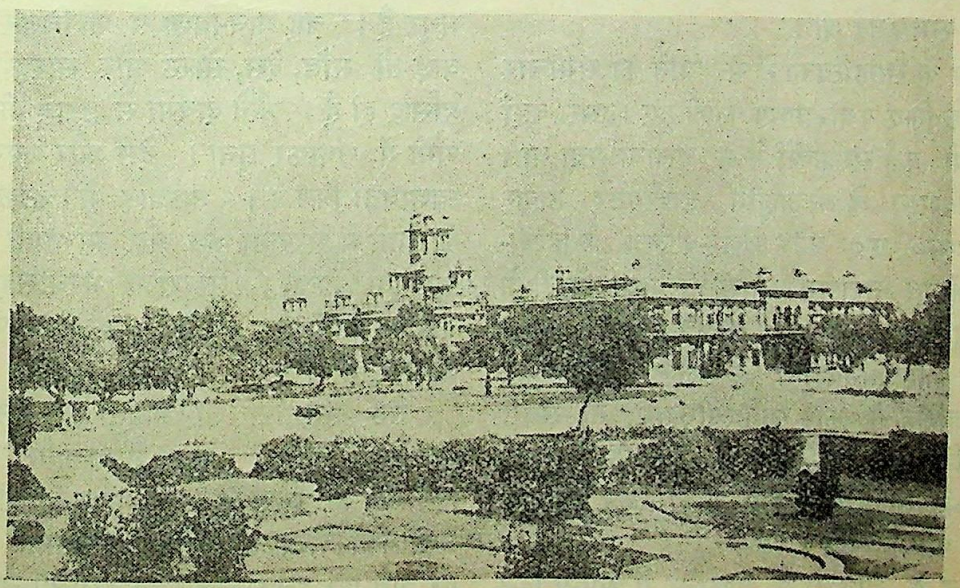

[कचहरी]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेस और एक छात्रावास चलता है। मैं सेठिया-कालेज की बिल्डिङ्ग में ठहराया गया। वहाँ प्रयाग के मेरे एक मित्र श्रीयुत शम्भूदयाल सकसेना भी मिल गये। वे सेठियाजी के लड़कों के प्राइवेट ट्यूटर होकर गये हैं। कालेज के प्रिंसिपल एक बङ्गाली सज्जन हैं। वे भी उसी मकान में रहते थे; तथा दो तीन संस्कृत के विद्वान् वहाँ और भी रहते थे। इन सुशिक्षितों की संगति में पहुँचकर मैं सुख और शान्ति अनुभव करने लगा।

बीकानेर में 'नागरी-भंडार' नाम की एक संस्था है। उसका निज का मकान है। कुछ साहित्य-प्रेमियों ने वहाँ ग्राम-साहित्य पर मेरा एक भाषण कराने का आयोजन किया। ग्राम-साहित्य तो मेरा आज-कल का मुख्य विषय ही है। मैंने वहाँ एक भाषण किया। बीकानेरवालों की दृष्टि में उस दिन की उपस्थिति अच्छी थी। बीकानेर में एक डूँगर-कालेज है। कालेज ने भी ग्राम-साहित्य पर एक भाषण देने के लिए मुझे निमंत्रित किया था और मैंने वहाँ भी भाषण किया था। कालेज के विद्यार्थियों पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ा होगा, ऐसी मेरी धारणा उस समय हुई थी।

बीकानेर के साहित्यिकों में मेरे आने का समाचार पहुँच जाने के लिए ये दो भाषण काफ़ी हुए। इससे वहाँ की और भी कई संस्थाओं में मैं बुलाया गया था।

शिक्षा-विभाग के तत्कालीन डाइरेक्टर ठाकुर रामसिंह एम० ए० और डूँगर-कालेज के हिन्दी-अध्यापक श्रीयुत नरोत्तम स्वामीजी तथा हिन्दी के अन्य साहित्यिक मित्रों से मिलकर मुझे अपूर्व हर्ष हुआ। शिक्षा-विभाग के एक पदाधिकारी ठाकुर चाँदसिंहजी का साहित्यानुराग तो सबसे बढ़ा-चढ़ा मिला। एक दिन मैं गढ़ के साहित्य-प्रेमियों से भी मिला और वहाँ दो-तीन घंटे साहित्य का अच्छा आनन्द रहा।

दो दिन के बाद ही मैं बीकानेर में अपना दिन आनन्द से काटने लगा। बाहर से बीकानेर चाहे कितना ही नीरस दिखलाई पड़ता था, पर भीत उसमें जो प्रेम और सहृदयता की धारा प्रवाहि मिली उसमें मैं लहरें लेने लगा।

मेरी बीकानेर-यात्रा का एक ख़ास उद्देश ग्राम गीतों का संग्रह था। तीन-चार दिन के बाद उसकी चिन्ता में पड़ा। वहाँ महाजन के राजा हरी सिंहजी अच्छे साहित्य-प्रेमी विख्यात हैं। मैं उन मिला। वे सचमुच बड़े सम्भ्रान्त पुरुष हैं। वे राज चित लक्षणों से युक्त दिखाई पड़े। उनके पास ए प्रज्ञाचक्षुजी रहते हैं। शास्त्री हैं और साहित्य के अच्छ मर्मज्ञ हैं। राजा हरीसिंहजी से गीत-संग्रह में सहाय देने का वचन लेकर मैं महाराज भैरवसिंहजी मिला। महाराज भैरवसिंहजी बीकानेर के मह राज के कुटुम्बी हैं। वे बड़े ही आनन्दी पुरु हैं। तीन घंटे से अधिक उन्होंने मुझे अप मनोहर वार्तालाप में ऐसा भुला रक्खा था कि मु पता ही न चला कि कितना वक्त बीत गया। गीत के शौक़ीन वे भी निकले। इससे मुझे तो मुँहमाँ मुराद मिल गई। उनके यहाँ 'दायमा' नाम की ए दासी है। वृद्धा होने पर भी उसका कंठ-स्वर बहुत ह मधुर है। वह गान-विद्या से परिचित-सी है। मा वाड़ तो माँड, देस, सोरठ और सारङ्ग राग के लि प्रसिद्ध ही है। मैंने दायमा से पुराने गीतों को चा रागों में गवाकर सुना। देस और सोरठ राग मु स्वभावतः प्रिय हैं। मारवाड़ में बैठकर इन रा के सुनने में सरसता कुछ और आ जाती है, यह मै अनुभव किया। महाराजा भैरवसिंहजी के पा बहुत से गीत लिखे हुए हैं। उनकी कापी भेजने वादा उन्होंने किया।

सेठ रामगोपालजी मोहता बीकानेर के ए सुप्रसिद्ध व्यक्ति हैं। इनसे मैं बीकानेर पहुँचने के दिन बाद ही मिल चुका था, और इनकी मोटर ले जहाँ कहीं जाना होता था, जाया-आया करता था पर अब तक इनका कुछ ज़िक्र इसलिए नहीं किया कि इनके विषय में मुझे कुछ अधिक कहना था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

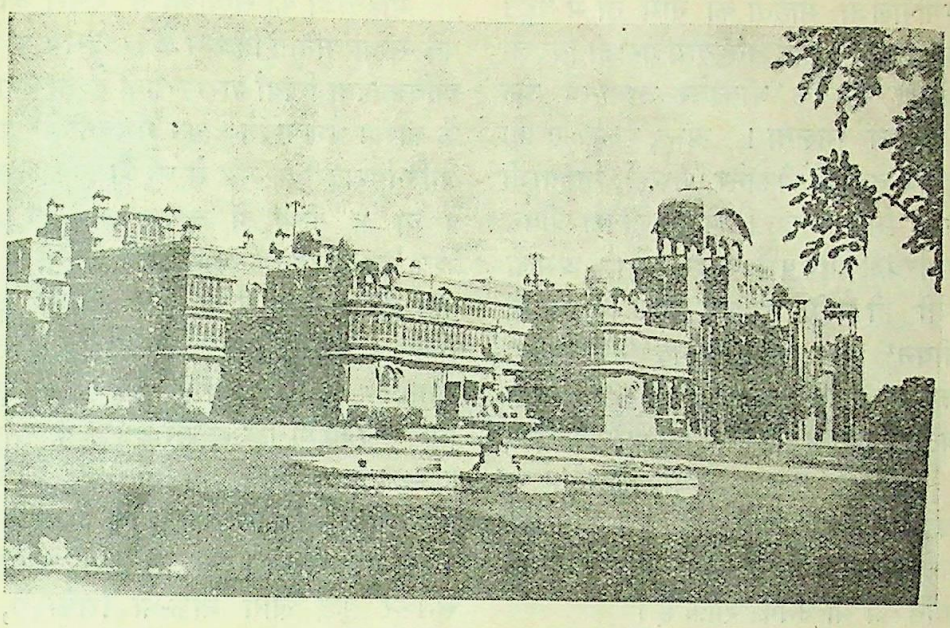

[लालगढ़ पैलेस]

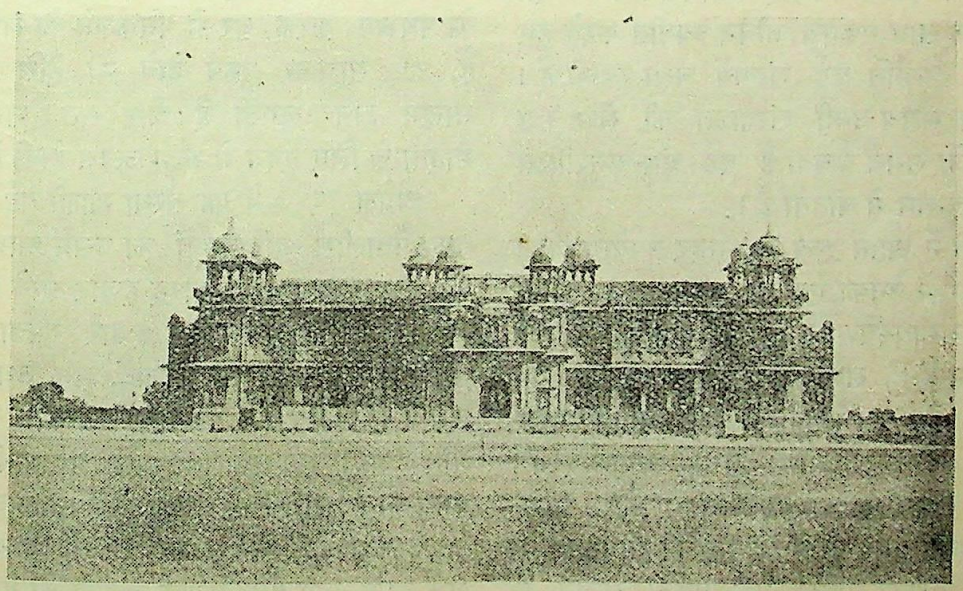

विजय-भवन
[छोटे महाराजकुमार का महल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठ रामगोपालजी मोहता का नाम तो मैं बहुत पहले से जानता था। सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला ने भी मुझे लिखा था कि बीकानेर जाना तो उक्त मोहताजी से अवश्य मिलना। अस्तु, मुलाक़ात हो जाने के बाद जब तक मैं बीकानेर में रहा, मोहताजी से प्रायः रोज़ ही मिलता रहा। मोहताजी का जीवन बहुत सादा, सात्त्विक और परोपकारमय है। वे अमली वेदान्त के प्रेमी ही नहीं, प्रचारक भी हैं। उन्होंने 'सात्त्विक जीवन' और 'दैवी सम्पद्' नाम की दो पुस्तकें लिखकर अपने विचारों को दूर दूर तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है। मैंने दोनों पुस्तकें देखी हैं। उनको पढ़ने से मालूम हुआ कि गीता पर मोहताजी का अच्छा अधिकार है। उन्होंने वेदान्त का अच्छा मनन किया है। विद्वान् साधु-सन्तों की संगति का भी उनको शौक़ है।

मोहताजी का गार्हस्थ्य जीवन एक प्रकार से नीरस-सा है। उनकी स्त्री का देहान्त हो चुका है। अवस्था अनुकूल होने पर भी आदर्शवादी होने के कारण उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। वे दो-तीन नौकरों के साथ एकान्त जीवन व्यतीत करते हुए मुझे मिले। उन्होंने कई संस्थायें चला रक्खी हैं। उनका अधिक समय उन्हीं संस्थाओं की सँभाल में जाता है। जो समय बचता है वह ग्रंथ-अनुशीलन और आत्म-चिन्तन में बीतता है।

मोहताजी ने अपने द्रव्य का सुन्दर उपयोग किया है। बीकानेर में उनका एक हाई स्कूल, एक छात्रावास, एक संगीत-विद्यालय, एक अनाथालय और वनिता-विश्राम है। सभी संस्थाओं में काफ़ी धन व्यय होता है और उनसे बीकानेर का लाभ भी अपरिमित है। मैंने उनकी प्रायः सभी संस्थायें देखीं। हाई स्कूल के हेडमास्टर बड़े ही उत्साही और सुशिक्षित हैं। छात्रावास में स्काउटिंग की भी शिक्षा दी जाती है। स्काउट-मास्टर एक पर्वती सज्जन हैं, जो योरप भी हो आये हैं। छात्रों को उन्होंने स्काउटिंग की बड़ी अच्छी शिक्षा दी है।

मोहताजी की संस्थाओं में सबसे अधिक आकर्षक संस्था वनिता-विश्राम है। इसमें वे विधवायें या अविवाहिता स्त्रियाँ शरण पाती हैं जो दुराचारी पुरुषों के कारण धर्म-पतित होकर गर्भवती हो जाती हैं और जाति-बिरादरी के भय से घर से निकाल दी जाती हैं। वे या तो तीर्थों में जाकर गर्भ गिरा आती हैं और वेश्या का जीवन व्यतीत करने लगती हैं या मुसलमान या ईसाई हो जाती हैं। सेठजी ने उक्त संस्था खोलकर इन पतित अबलाओं को और भी अधिक पतित हो जाने से बचा लिया है। मैंने इस संस्था का निरीक्षण किया। उस समय छः या सात स्त्रियाँ थीं, जिनकी आयु पन्द्रह वर्ष से लेकर तीस-पैंतीस वर्ष तक थी। दो-तीन की गोद में बच्चे थे। एक प्रसूति-गृह में थी। दूर से इस संस्था का उद्देश सुनकर कुछ लोग नाक-भौं सिकोड़ेंगे, पर प्रत्यक्ष देखकर ऐसी करुणा जागृत होती है कि शायद ही कोई विरोध करे। जितनी स्त्रियाँ मुझे वहाँ दिखाई पड़ीं, सभी के चेहरों पर पश्चात्ताप के भाव झलक रहे थे। चरित्रहीन पुरुषों ने इन बेचारी अबलाओं को पथभ्रष्ट करके घर से निकलने को लाचार किया है, यह सोचकर पुरुष होने की हैसियत से लज्जा मालूम होने लगती है और सेठ रामगोपालजी मोहता के लिए हृदय में श्रद्धा उत्पन्न होती है।

अप्रेल १९२७ में यह संस्था खोली गई और अब तक पैंतालीस दुखियाओं को उसमें आश्रय मिला। ३१ अगस्त १९३० तक बारह हज़ार रुपये के लगभग ख़र्च हुआ। लगभग नौ हज़ार रुपया मोहताजी ने दिया और बाक़ी मासिक चंदे, दान तथा अनाथालय में किये गये दर्ज़ी और बढ़ई के काम की आय से प्राप्त हुआ। अनाथालय और वनिता-विश्राम का आय-व्यय साथ साथ चलता है। अनाथालय में लड़के-लड़कियों की संख्या १५ थी। यह जानकर मुझे दुःख हुआ और प्रत्येक ब्राह्मण को होना चाहिए कि वनिता-विश्राम की स्त्रियों में ब्राह्मणियों ही की संख्या अधिक है और अनाथों में ब्राह्मण-बालकों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

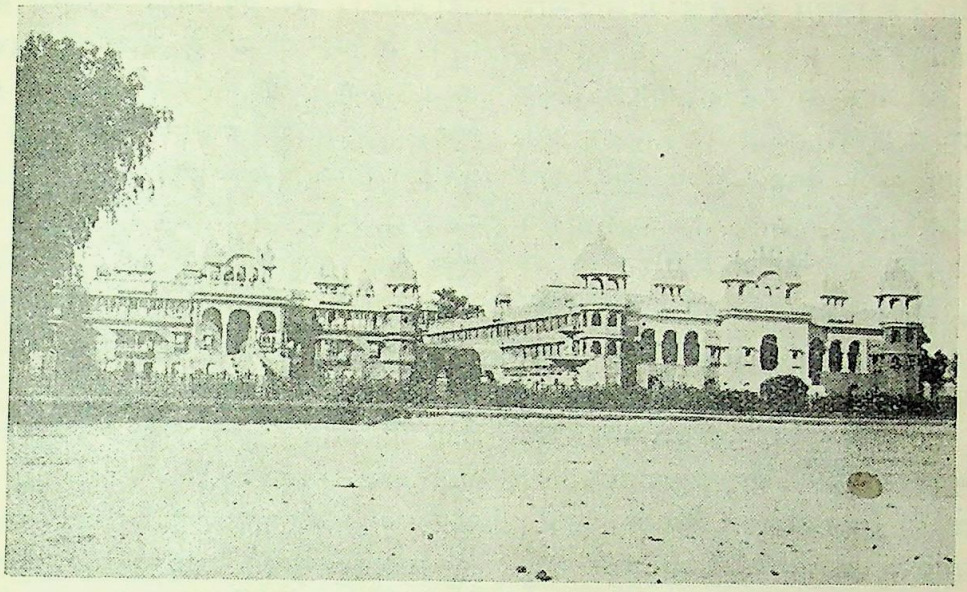

मन्दिर

[रतनबिहारीजी रसिकशिरोमणिजी]

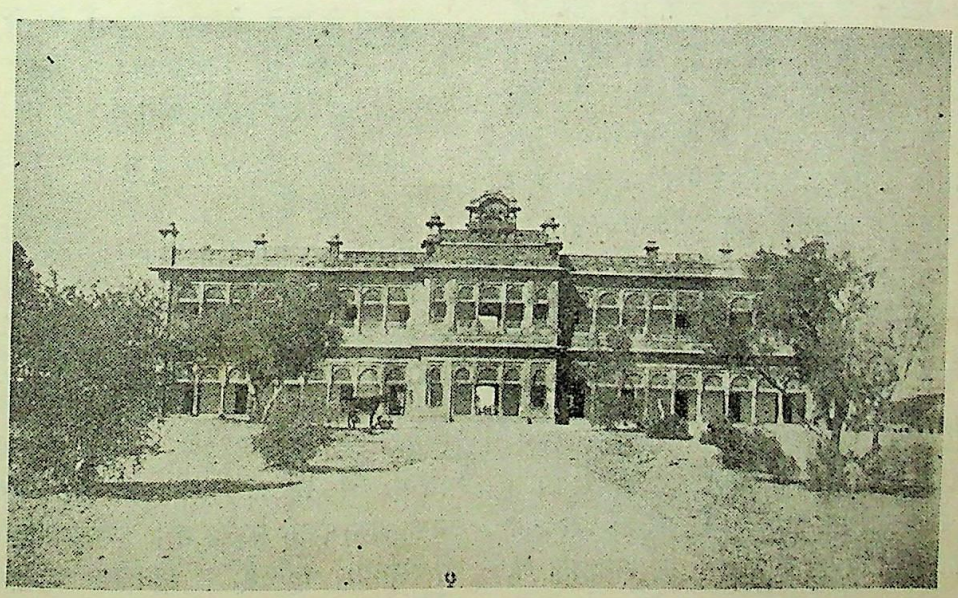

[नोबुल स्कूल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनाथालय के लड़कों को दर्जी और बढ़ई का काम भी सिखाया जाता है, जिनसे डेढ़ वर्षों में साढ़े चार सौ रुपये की आय हुई।

बीकानेर की यात्रा में सेठ रामगोपालजी जैसे कर्त्तव्यपरायण परोपकारी जीव से मिलकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। ग्राम-गीतों के लिए उनमें पहले से ही अनुराग था। उनके पास कुछ गीत थे भी। इससे गीतों के संग्रह के लिए उनको तैयार करने में मुझे बिलकुल माथापच्ची न करनी पड़ी।

एक दिन मैं सेठ रामकृष्णजी मोहता से मिला, जो उन दिनों बीमार होकर कलकत्ता छोड़कर बीकानेर रहने लगे थे। मैं उनकी बड़ी प्रशंसा सुना करता था। मिलने पर वे उससे भी अधिक प्रमाणित हुए। वे बड़े ही सरल, सहृदय और देशभक्त हैं। समाज और साहित्य की सेवा का उनमें बड़ा अनुराग है।

अब मैं एक बात की चर्चा और करनेवाला हूँ, जो राजपूताना से भिन्न प्रान्तवालों के लिए नई ही नहीं, कौतूहलजनक भी है। बीकानेर में जैन-धर्मावलम्बी ओसवाल वैश्यों की संख्या अधिक है। ये लोग कलकत्ते-बम्बई में बड़ा-बड़ा व्यापार करते हैं और बड़े ही धनी होते हैं। इनमें दो सम्प्रदाय हैं। एक के आचार्य श्रीकालूरामजी महाराज हैं, जो तेरह पंथ कहलाता है। दूसरे के आचार्य श्रीजवाहरलालजी महाराज हैं, जो बाइस पंथ कहलाता है। गत वर्ष फ़तहपुर (शेखावाटी) में श्रीजवाहरलालजी महाराज से मेरा साक्षात्कार हुआ था। उनका चरित बहुत ही पवित्र और तपस्या से पूर्ण है। वे अच्छे विद्वान्, निरभिमानी, उदार, सहृदय और निस्पृह हैं। चौमासे में वे किसी एक स्थान में ठहर कर 'चौमासा' करते हैं और जनता को अपने व्याख्यानामृत से तृप्त करके सन्मार्ग पर ले चलते हैं। उनके भाषण में सामयिकता रहती है और देश की प्रगति का भी उनको काफ़ी ज्ञान है। वे इतिहास से, सत्पुरुषों के जीवन-चरितों से उपकारी बातें लेकर अपने भक्तों को देने में कभी आलस्य और सङ्कोच नहीं करते। इस वर्ष उनका 'चौमासा' बीकानेर में था। मैं इस मौसम में खासकर उनका सत्संग करने के लिए ही बीकानेर गया था। मैं प्रायः प्रतिदिन उनके व्याख्यान में जाया करता था। कई बार उन्होंने श्रीमुख से मेरी चर्चा भी की। इससे उनके भक्तों का मैं प्रियपात्र हो गया और वे लोग मेरे साथ बड़ा प्रेम प्रदर्शन करने लगे। आचार्यजी के भाषणों का प्रभाव उनके सम्प्रदाय के स्त्री और पुरुष दोनों पर बहुत अच्छा पड़ रहा है। वे बड़े निर्भय वक्ता हैं, पर अप्रियवादी नहीं। उनका व्याख्यान सुनने के लिए बीकानेर के राजपदाधिकारी तथा अन्य मतमतान्तरों के खास-खास लोग भी आते थे। कौतूहलजनक बात दूसरे सम्प्रदाय की है, जिसके आचार्य श्रीकालूरामजी महाराज हैं। ये भी 'चौमासा' करते हैं। इनके भी भक्तों की संख्या अधिक है, आचार्य कालूरामजी की शिक्षा का कौतूहलजनक अंश यह है—

'किसी के गले में फाँसी लगी हुई हो तो उसे काट देना पाप है।'

'गायों के बाड़े में आग लगी हो तो उसे बुझा देना या दरवाज़ा खोलकर गायों को बाहर निकाल देना पाप है।'

'किसी दीन-दुःखी पर दया करना या दान देना पाप है।'

'कोई किसी निर्दोष बच्चे के पेट में छुरी भोंक रहा हो तो उसे बचाना पाप है।'

'कोई क्रोधावेश में गड्ढे में या कुएँ में गिरने जा रहा हो तो उसे बचाना पाप है।'

इत्यादि इसी प्रकार की कौतूहलजनक अनेक बातें हैं जो श्रोताओं को समझाई जाती हैं और उनका प्रभाव भी पड़ता है। इस सम्प्रदाय में धनियों की संख्या बहुत है, पर शिक्षितों की अत्यन्त कम, क्योंकि शिक्षा के लिए दान देना भी पाप है। हाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

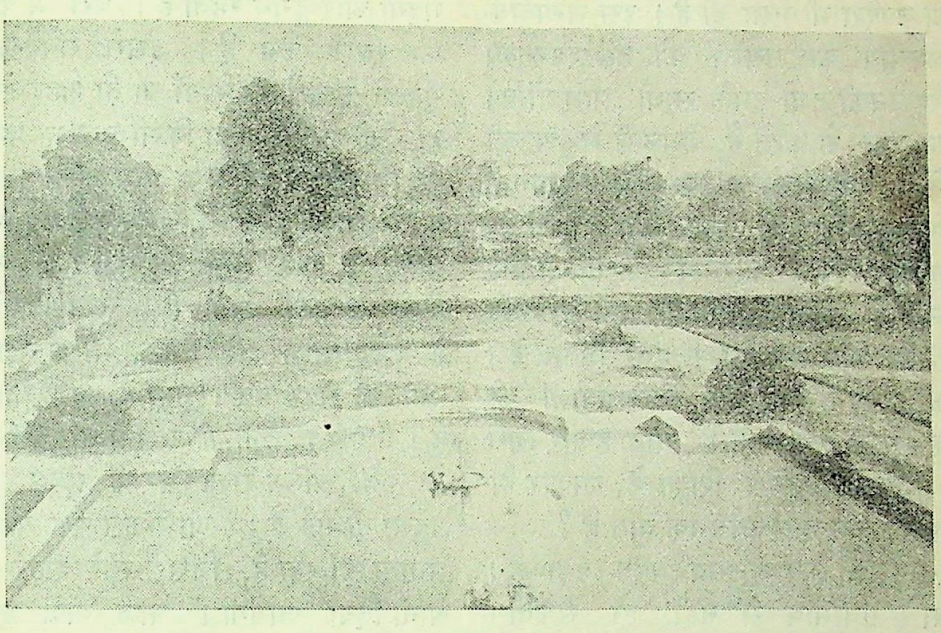

[पब्लिक पार्क]

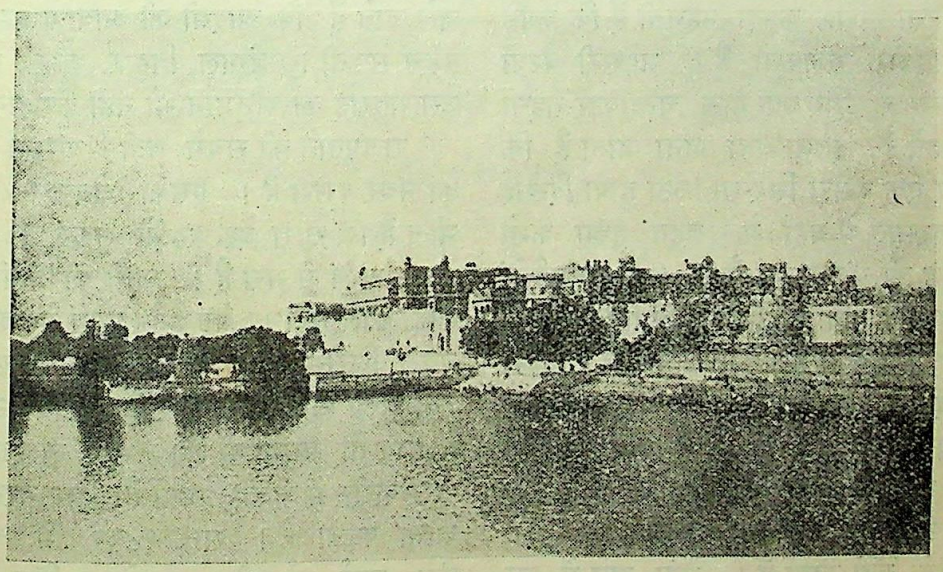

[सूरसागर तालाब और क़िला]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने, पीने, पहनने में ये लोग किफ़ायत नहीं करते। आचार्यजी का उपदेश भी ऐसा ही है। इस सम्प्रदाय-वाले भक्त आचार्य कालूरामजी को ही ईश्वरतुल्य मानते हैं और उनकी तथा उनके साथी साधुओं की सेवा तन, मन, धन से करते हैं, अच्छी से अच्छी चीज़ें खिलाते हैं; बढ़िया से बढ़िया वस्त्र पहनाते हैं और उत्तम से उत्तम स्थान में ठहराते हैं। स्त्रियों को रात के पहले और पिछले पहर में आचार्यजी का व्याख्यान सुनने की स्वतंत्रता रहती है। इस सम्प्रदाय के लोग खूब मौज और मज़े की ज़िंदगी बिताते हैं। सुनते हैं कि राजपूताने में इस संप्रदायवालों की संख्या साठ हज़ार के लगभग है। साठ हज़ार लोग बीसवीं सदी में ऐसी भयानक शिक्षा के शिकार हो रहे हैं, क्या यह कम आश्चर्यजनक बात है?

बीकानेर-सम्बन्धी मेरा अनुभव बहुत बड़ा है। सबकी चर्चा स्थानाभाव से नहीं हो सकती। इसलिए बीकानेर की कुछ ख़ास-ख़ास बातों ही का ज़िक्र करने के लिए मैं विवश होता हूँ।

बीकानेर की स्त्रियाँ प्रायः सुन्दरी होती हैं। उनमें बारीक़ कपड़े पहनने का बहुत रवाज है। कभी कभी तो वे इतना बारीक़ कपड़ा पहनती हैं कि कपड़े के बाहर सारा अंग झलकता है। महेसरी वैश्यों की स्त्रियों में सिर के ऊपर एक गोल चन्द्राकार गहना जिसे 'बोर' कहते हैं, इतना बड़ा पहना जाता है कि घूँघट के ऊपर एक दूसरा सिर-सा उठा हुआ दिखाई पड़ता है। बरसात में यहाँ मेले बहुत हुआ करते हैं, जिनमें झुंड की झुंड स्त्रियाँ पैदल और सवारियों पर गंदे से गंदे गीत गाती हुई, रंगबिरंग तितलियों की तरह सजी हुई, निकलती हैं। एक बार मैं ताँगे पर स्त्रियों से लदी हुई एक बैलगाड़ी के पास-पास जा रहा था। स्त्रियाँ गा रही थीं। मैंने ताँगेवाले से गीत का अर्थ पूछा तो उसने कहा कि गीत इतना गंदा है कि मैं आपको अर्थ नहीं बता सकता।

शहर बहुत गंदा रहता है। लोग रात में बर-तनों में पेशाब कर रखते हैं और सवेरे छत पर से सड़क पर या गली में उँडेल देते हैं। इससे काफ़ी गंदगी और दुर्गंध रहती है। घरों में पाख़ाने बनवाने का रवाज कम है। इससे सवेरे-शाम साधारण गृहस्थों के घरों की स्त्रियाँ या तो शहर के बाहर जाती हुई या गलियों में या किसी बाड़े में पाख़ाना फिरती हुई दिखाई पड़ती हैं। अब महाराज गंगासिंहजी के राजत्वकाल में बीकानेर की नई आबादी शहर-पनाह के बाहर बढ़ रही है। उसमें काफ़ी सफ़ाई रक्खी जाती है। सड़कें भी साफ़-सुथरी हैं और बाज़ार की रौनक़ भी अच्छी है। शहर-पनाह के अंदर पाइप नहीं है, पर बाहर पाइप भी है। और बिजली की रोशनी तो बीकानेर शहर ही में नहीं, बल्कि राज्य भर के मुख्य मुख्य नगरों में पहुँचा दी गई है। आज-कल एक बहुत बड़ा कुआँ बनाया जा रहा है, जिससे सारे शहर को पाइप का पानी दिया जायगा। बाज़ बाज़ कुएँ तो इतने गहरे होते हैं कि झाँकने पर उनका पानी अंधकार में एक तारे की तरह चमकता दिखाई पड़ता है। यहाँ पानी निकालनेवाले बैलों को वापस मोड़ने के लिए नगाड़ा बजाया जाता है। क्योंकि बैल इतनी दूर चले जाते हैं कि आदमी की आवाज़ वहाँ तक नहीं पहुँच सकती। बंगाल, बिहार और युक्तप्रांतवाले उस गहराई का अनुमान भी नहीं कर सकते।

राजपूताने की सबसे बड़ी रियासतों में बीकानेर का नंबर दूसरा है। इसका क्षेत्रफल २३,३११ वर्ग मील है। सारा देश २० से लेकर १०० फ़ुट ऊँचे रेत के टीलों से भरा है। पानी की कमी से राज में कोई जंगल नहीं। पेड़ और पौधों में जाँटी, कीकर, बबूल, सिरीस, नीम, बेर और फोग मुख्य हैं। आब-हवा सूखी और स्वास्थ्यकर है। डायबिटीज़ के रोगी के लिए तो अमृत ही है। भूख खुलकर लगती है और शरीर में फ़ुरती रहती है, पर गरमी में झुलस जाना पड़ता है। सन् १८९२ में चूरू में ४ इंच वर्षा हुई थी। इससे अधिक कभी नहीं हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीकानेर को राव जोधाजी के छठे लड़के महाराज बीकाजी ने सन् १४८८ में बसाया था। इन्हीं ने शहर बसाने के तीन वर्ष बाद एक क़िला बनवाया, जो अब तक है। पुराना शहर शहरपनाह के अंदर है, जिसकी दीवार ४॥ मील लंबी, छः फ़ुट मोटी और १५ से ३० फ़ुट ऊँची पत्थर की है। उसमें पाँच दरवाज़े हैं। बीकानेर राज्य की आबादी छः लाख के लगभग है। जाटों की संख्या अधिक है। मुख्य नगर बीकानेर, चूरू, रतनगढ़ और सरदार शहर हैं। १८८९ में बीकानेर में पहले-पहल म्युनिसिपैलिटी क़ायम हुई थी।

वर्तमान महाराज ने सतलज से एक नहर अपने राज्य में लाकर राज्य के एक हिस्से की पैदावार अच्छी बढ़ा ली है। इससे राजा और प्रजा दोनों को लाभ पहुँच रहा है।

बीकानेर से दक्षिण-पश्चिम के कोने पर, १९ मील की दूरी पर, गजनेर नाम का एक स्थान है, जिसे मारवाड़ में काश्मीर का टुकड़ा कह सकते हैं। वहाँ एक लम्बा-चौड़ा और गहरा तालाब है। तालाब के किनारे हरा-भरा और सुहावना जंगल है। एक किनारे बिलकुल पानी से लगा हुआ महल और बाग़

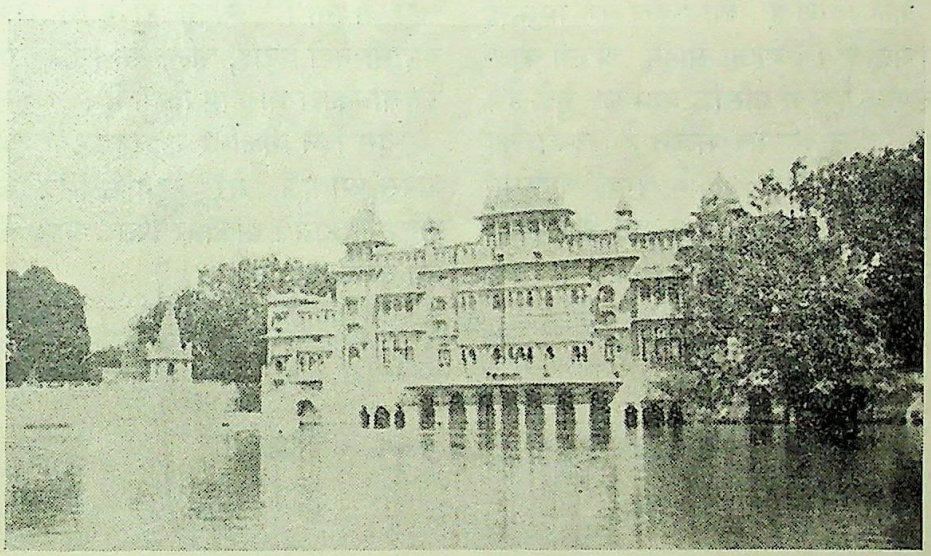

[गजनेर का महल]

बीकानेर में ऊन की उपज अच्छी होती है। वहाँ की ऊनी लोइयाँ, क़ालीन और कम्बल बहुत प्रसिद्ध हैं। बीकानेर की मिश्री और चूरन और गोलियाँ भी प्रसिद्ध हैं।

बीकानेर राज्य में ऊँट से हल चलता है। ऊँट दिन भर में तीन-चार बीघा जोत लेता है। हल ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि सभी वर्णों के लोग चला लेते हैं।

बीकानेर से २५ मील दूर कोलायत नाम का एक स्थान है, जहाँ पशुओं का बड़ा भारी मेला लगता है।

है। वर्तमान महाराज अधिकांश समय गजनेर में ही बिताते हैं। मैं भी गजनेर देखने गया था। वहाँ जाने पर मुझे काश्मीर की याद आई थी। मुझे वहाँ एक ही त्रुटि दिखाई पड़ी कि तालाब के उस पार के हरे-भरे जंगल में एक छोटी सी बारादरी क्यों न बनाई गई? जहाँ बैठकर जंगल का आनन्द लिया जा सकता। गजनेर के महल के सिवा बीकानेर में और भी कई इमारतें दर्शनीय हैं, जैसे लालगढ़, कचहरी, सूर-सागर-तालाब और क़िला, नोबुल स्कूल और रतन-विहारीजी का मन्दिर आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज गंगासिंहजी बड़े ही नीति-कुशल शासक हैं। राज्य के समस्त पदों पर देशी लोग ही रक्खे गये हैं। शायद रेलवे-विभाग में एक इंजिनियर अँगरेज़ है। राज्य की तरफ़ से एक डूँगर-कालेज और कई हाई स्कूल हैं। कालेज से जो लोग निकलते हैं वे राज्य में नियुक्त कर लिये जाते हैं। अपनी तीव्र बुद्धि और योग्यता से महाराज ने ब्रिटिश-साम्राज्य के अन्दर बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त किया है, जो भारतवर्ष के किसी देशी नरेश को नहीं प्राप्त है। राज्यशासन में सहायता देने के लिए उन्होंने अपने यहाँ कौंसिल खोल रक्खी है। आज-कल सर मनुभाई मेहता प्रधान मंत्री हैं। मेहता साहब अपनी कार्य-कुशलता के लिए बड़ौदा में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। वे बड़े अनुभवी और देशभक्त सज्जन हैं। उन्हीं की कन्या श्रीमती हंसा मेहता बी० ए० ने बम्बई के सत्याग्रह-आन्दोलन में प्राण फूँक दिया था, और जो आज-कल जेल में हैं। मैंने सुना था कि बीकानेर-राज्य में शिक्षा अनिवार्य कर दी जा वाली है।

युवराज की भी प्रशंसा मैंने सुनी है। वे न्यायनिष्ठ, सतर्क और प्रभावशाली हैं। उनक आकार भी भव्य और वीरता-व्यञ्जक है। दूस राजकुमार की भी शिक्षा-दीक्षा अच्छी हुई है। महाराज के साथ इँग्लेंड गये हुए हैं। लोग कहते कि महाराज की राजनैतिक योग्यता के सच्चे प्रति निधि यही दूसरे राजकुमार होंगे। महाराज गंग सिंहजी का समय बीकानेर के इतिहास में स्वर्ण-यु कहा जायगा। उन्होंने राज्य की आय ही तिगुन चौगुनी नहीं बढ़ाई, बल्कि सार्वभौम यश और उत्त उत्तराधिकारी भी प्राप्त किया है।

दस दिन बीकानेर में रहकर मैं चुरू होता हुआ वापस आया। मेरे बहुत से मित्र स्टेशन पर मु पहुँचाने आये। बीकानेर फिर आने का वादा कर मैंने उनसे विदा ली।

—रामनरेश त्रिपाठी

योरप का इतिहास

योरप के इतिहास का अध्ययन करने पर आप रोम, यूनान आदि के उत्थान-पतन, और इँग्लेंड, जर्म्मनी आदि देशों के उलट-फेर से चकित होंगे, साथ ही, क्रमशः योरप के सभी देशों में राजा की निरङ्कुशता का अन्त होते और प्रजा के सम्मिलित और सामूहिक स्वर की प्रभावशालिता देखकर आनन्दित भी होंगे। अतएव आज ही एक पत्र लिखकर प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता और हिन्दी के सुलेखक भाई परमानन्द एम० ए० द्वारा लिखित 'योरप का इतिहास' की एक प्रति मँगा लीजिए। पचासों चित्रों से युक्त एक प्रति का मूल्य केवल ४) चार रुपये हैं। विशेष विवरण विज्ञापन में देखिए।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

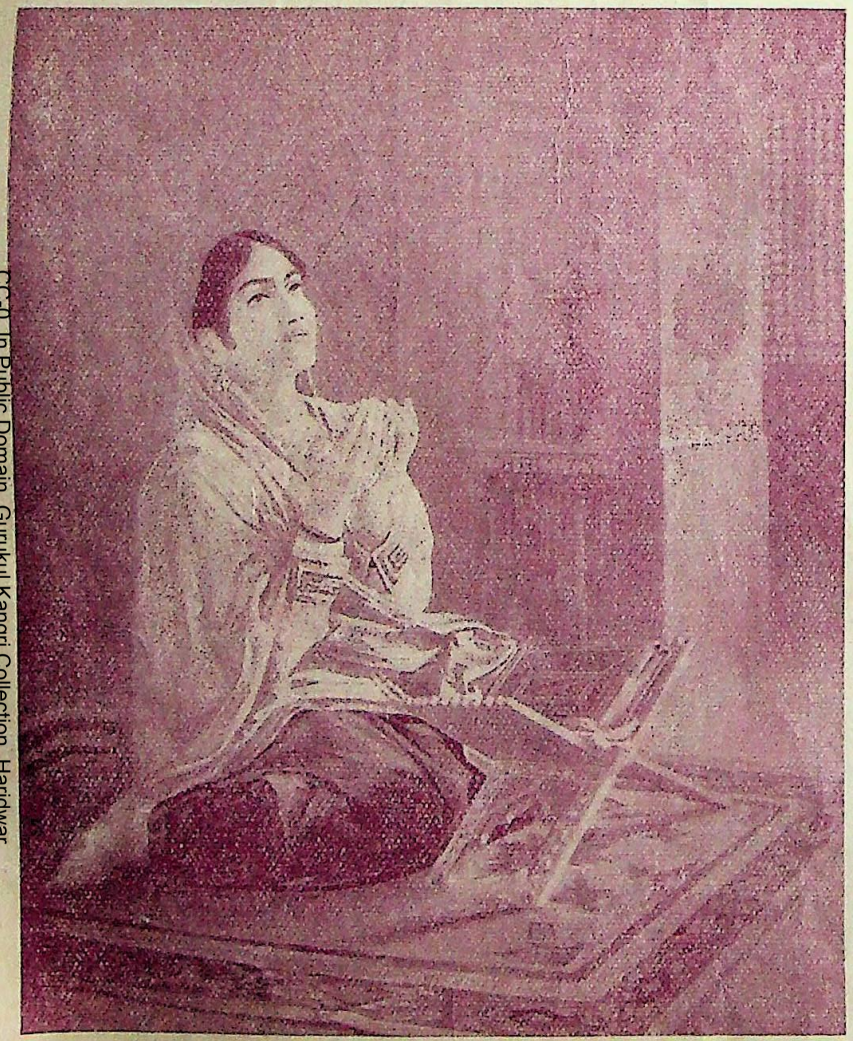

प्रार्थना-निरता

स्वप्न या प्रेम

श्रीयुत एस० जी० ठाकुरसिंह की चित्रकारी

(चित्र-परिचय में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न

(१)

उन दिनों मैं अपनी माँ के साथ समुद्र के किनारे एक छोटे से शहर में रहता था। मेरी अवस्था सत्रह वर्ष की थी और मेरी मा के पैंतीस वर्ष पूरे न हुए थे। बहुत कम उम्र में ही उनका ब्याह हो गया था। जब मेरे पिता की मृत्यु हुई, उस समय मैं केवल सात वर्ष का था। लेकिन मुझे अपने पिता की अच्छी तरह याद है। मेरी मा के बाल बहुत सुन्दर थे। उनका क़द साधारण था। मुँह उदास रहता था, तथापि चित्ताकर्षक था। उनकी आवाज़ बहुत धीमी और कुछ क्षीण-सी थी। अपनी युवावस्था में वे सौन्दर्य्य के लिए प्रसिद्ध थीं; और अन्त समय तक उनकी आकृति में एक विशेष आकर्षण बना रहा। वैसी सुन्दर और करुण आँखें मैंने आज तक कहीं नहीं देखीं, वैसे सुन्दर और मुलायम बाल, वैसे सुडौल हाथ भी आज तक मैंने नहीं देखे। मैं उनका बड़ा भक्त था और वे भी मुझे बहुत प्यार करती थीं।

लेकिन हम लोगों का जीवन बहुत प्रसन्न न था। ऐसा जान पड़ता था कि कोई गुप्त, असीम दुःख मेरी मा के जीवन-तरु की जड़ों को निरन्तर काट रहा है। इस दुःख का कारण केवल मेरे पिता की मृत्यु न थी। यह बात नहीं कि पिता की मृत्यु का मेरी माता को दुःख न न रहा हो। मा पिताजी को बहुत प्यार करती थीं, उनकी स्मृति की आराधना किया करती थीं। परन्तु यह दुःख दूसरा ही था। मैं समझ सकता था कि इसमें कुछ रहस्य है, लेकिन यह नहीं जानता था कि क्या रहस्य है। उन करुण आँखों में मुझे कभी परिवर्तन नहीं दिखाई दिया; उन बन्द होठों में भी सदा एक भाव दिखाई पड़ा। उनमें तीक्ष्णता नहीं थी—एक प्रकार की स्थिरता थी।

मैंने बताया है कि मेरी मा मुझे बहुत प्यार करती थीं लेकिन ऐसे भी अवसर होते थे जब वे मुझसे घृणा करती थीं, मुझे दूर रखना चाहती थीं, मेरी उपस्थिति उन्हें असह्य हो जाती थी। ऐसे अवसरों पर वे मेरा मुँह नहीं देख सकती थीं। बाद में उन्हें बहुत शोक होता, रोतीं, अपनी निन्दा करतीं और मुझे छाती से लगा पछताती रहतीं। मैं समझता था कि वे ऐसे व्यवहार ख़राब स्वास्थ्य और दुखमय अवस्था होने से करती हैं। कदाचित् ऐसे व्यवहार के अन्य कारण भी रहे हों। मेरे मन में, न जाने क्यों, कभी कभी दुष्ट वासनायें उठा करती थीं। लेकिन मुझे भली भाँति याद है कि ऐसी वासनाओं के और ऐसे व्यवहार के अवसर एक नहीं होते थे।

मेरी मा सदा काले वस्त्र पहने रहतीं, जैसे मातम कर रही हों। हम लोग किसी के आश्रित न थे; हमारी आर्थिक स्थिति साधारणतः अच्छी थी।

(२)

मेरी मा को प्रतिक्षण मेरा ख़याल रहता, उनका सारा जीवन मेरे जीवन से गुँथा हुआ था। ऐसेलाड़ में प्रायः लड़के बिगड़ जाते हैं। मैं अपनी मा का एकलौता भी था। लेकिन इस प्यार का मुझ पर कुछ बुरा असर न पड़ा। हाँ, मेरा स्वास्थ्य अवश्य नाज़ुक था। मैं अपनी मा को पड़ा था, मेरी सूरत उन्हीं से मिलती थी। मैं अपनी उमर के लड़कों से दूर ही रहता; लड़कों से क्या, किसी से भी मिलता जुलता न था। पढ़ने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे सबसे अधिक शौक़ था। इसके अतिरिक्त अकेले घूमने का भी शौक़ था। मैं स्वप्न बहुत देखा करता था। यह बताना सहज नहीं है कि मेरे स्वप्नों के विषय क्या होते। कभी ऐसा स्वप्न देखता कि एक आधे खुले हुए दरवाज़े के सामने खड़ा हूँ। आगे कोई रहस्यमय वस्तु है, परन्तु मैं नहीं कह सकता कि क्या है। मैं खड़ा होकर जैसे प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मारे डर के मेरे पैर सुन्न से हो रहे हैं। चौखट के भीतर मुझसे पैर नहीं रखते बनता है। मैं आश्चर्य्य में हूँ कि भीतर क्या है। खड़े खड़े मैं मूर्च्छित हो जाता हूँ। या निद्रा आ जाती है। यदि मुझमें कवित्व का कुछ संस्कार होता तो मैंने पद्य-रचना आरम्भ कर दी होती। यदि कुछ धार्मिक प्रेरणा होती तो किसी सत्संग में संमिलित हो जाता। लेकिन इस प्रकार के भाव मुझमें नहीं थे। मैं तो स्वप्न देखता रहा; और प्रतीक्षा करता रहा।

(३)

मैंने अभी कहा है कि कभी कभी स्वप्न देखते देखते मैं सो जाता था। यों भी मैं बहुत सोया करता था, और स्वप्नों का मेरे जीवन में बड़ा भाग था। मैं प्रायः नित्य ही रात्रि में स्वप्न देखता। मैं उन्हें भूलता न था। मैं उन्हें बहुत महत्त्व देता था। उनके अर्थ निकालने का प्रयत्न करता। उन्हें भविष्य-सूचक समझता। प्रत्येक स्वप्न का गुह्य आशय जानना चाहता। कुछ ऐसे स्वप्न भी थे जिन्हें मैंने एक से अधिक बार देखा। वे मुझे बड़े कुतूहलमय और आश्चर्य्यजनक प्रतीत हुए। विशेष कर एक स्वप्न ऐसा था जिसने मुझे बहुत विचलित किया। मैंने देखा कि एक पतली गली में से होकर मैं जा रहा हूँ। पुराने ढङ्ग का नगर है। गली के पत्थर समतल नहीं हैं। दोनों ओर पत्थर के कई मञ्ज़िलों के मकान बने हुए हैं। उनकी छतें आगे निकली हुई हैं। मैं अपने पिता को ढूँढ़ रहा हूँ। मेरे पिता मरे नहीं हैं। परन्तु किसी विशेष कारण-वश हम लोगों से छिप रहे हैं। और यहीं किसी मकान में हैं। मैंने एक नीचे, अँधेरे द्वार के भीतर प्रवेश किया है। एक आँगन पार किया है। इस आँगन में लकड़ी की कड़ियों का और तख़्तों का ढेर लगा हुआ है। अन्त में मैं एक छोटे कमरे में पहुँचा हूँ। इसमें दो खिड़कियाँ हैं। कमरे के बीच में मेरे पिता खड़े हैं। एक लम्बा चोग़ा पहने हैं और हुक्का पी रहे हैं। मेरे असली पिता से उनकी सूरत नहीं मिलती। वे लम्बे, दुबले आदमी हैं। उनले बाल काले हैं। उनकी नाक आगे की ओर कुछ टेढ़ी है। उनकी आँखों में क्रोध और तीक्ष्णता है। उनकी अवस्था लगभग चालीस बरस की है। मैंने उन्हें खोज लिया, इस बात पर वे बहुत अप्रसन्न मालूम पड़े। मैं भी इस मिलन से प्रसन्न नहीं हुआ। मैं भी घबड़ाया हुआ, लेकिन चुपचाप खड़ा रहा। वे मुझसे अलग हट गये। टहलते रहे और न जाने क्या मन ही मन बकते रहे। इसके बाद उन्हें और भी दूर हटते हुए देखा। बकना उनका बन्द न हुआ। रह रह कर पीठ घुमा कर मुझे देख लिया करते थे। कमरा कुछ बड़ा होता जान पड़ा और जैसे कुहरे में समा गया। मैं बहुत भयभीत हुआ। यह विचार कर कि मेरे पिता फिर खोये जाते हैं, मैं उनके पीछे दौड़ा। लेकिन मैं उन्हें देख न पाया। केवल उनकी आवाज़ सुनाई पड़ती थी। वे भालू की तरह गुर्राते थे। मारे भय के मेरा जी बैठ गया। इतने में मेरी आँखें खुल गईं। फिर तो मैं बड़ी देर तक सो न सका। दूसरे दिन मैं इसी स्वप्न पर विचार करता रहा, लेकिन इसका कुछ भी आशय समझ में न आया।

(४)

जून का महीना आ गया था। इन दिनों जिस नगर में मैं अपनी मा के साथ रहता था, वहाँ बड़ी चहल-पहल रहती थी। बन्दरगाह में कई जहाज़ नज़र आते थे, गलियों में बहुत सी नई सूरतें दिखाई पड़ती थीं। होटलों और चाय-घरों के सामने समुद्र के किनारे घूमने का, और तरह तरह की पोशाक और सफेद मोज़े पहने बैठे लोगों को शराब पीते हुए देखने का मुझे बड़ा शौक़ था।

एक दिन मैं एक चाय-घर के सामने से जा रहा था। मेरी दृष्टि एक ऐसे व्यक्ति के ऊपर पड़ी जिसने मुझे बहुत आकर्षित किया। वह लम्बा काला कोट पहने हुए था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके सिर पर एक चटाई की हैट थी। बिलकुल चुपचाप, सीने के सामने हाथ बाँधे हुए बैठा था। उसके काले घुँघराले बाल छितरा कर नाक के ऊपर आ गिरे थे। उसके पतले होठों में हुक्के की निगाली दबी हुई थी। वह आदमी मुझे परिचित-सा जान पड़ा। उसके रूखे और पीले चेहरे की प्रत्येक रेखा मेरी स्मृति में खचित सी जान पड़ी। मैं अचानक उसके सामने खड़ा हो गया और मन ही मन सोचने लगा कि 'यह कौन व्यक्ति है ? मैंने इसे कहाँ देखा है ?' कदाचित् मुझे अपनी ओर घूरते हुए समझ कर उसने अपनी तीक्ष्ण काली निगाहें मेरी ओर फेरीं। मेरे मुँह से एक धीमी चीख़ निकल पड़ी।

यह व्यक्ति तो मेरे स्वप्नोंवाला पिता था, वही जिसकी मैं खोज कर रहा था !

भ्रम की कोई आशंका नहीं थी। बिलकुल वही सूरत थी। कोट तक वही था—कम से कम उसी स्वप्न में देखे हुए चोग़े की याद दिलाता था।

मैंने सोचा, 'मैं सो तो नहीं रहा हूँ ?' नहीं ! दिन का समय था। मेरे चारों तरफ़ लोगों की भीड़ लगी थी। सूरज नीले आकाश में चमक रहा था। मेरे सामने कोई छायाचित्र नहीं था पर जीता-जागता मनुष्य।

मैं एक ख़ाली मेज़ के पास जाकर बैठ गया। एक प्याला शराब माँगी। एक अख़बार लिया। उस रहस्यमय व्यक्ति के पास ही बैठ गया।

(५)

अख़बार को मुँह के सामने खोलकर मैं उस अपरिचित व्यक्ति के मुँह को ग़ौर से देखता रहा। अपने स्थान से वह हिला-डुला नहीं। कभी कभी अपना सिर उठा लिया करता और फिर नीचे कर लेता। मैं उसकी ओर निरंतर देखता रहा। कभी मैं समझता कि यह मेरी कल्पना-मात्र है, वास्तव में दोनों शक्लों में कोई समानता नहीं है। इसी बीच में वह अपरिचित मनुष्य अपने स्थान पर ज़रा सा घूम गया। उसने अपना हाथ उठाया। फिर मेरे मन में वही भाव बड़े वेग से उठा। 'यह मेरे स्वप्न वाला पिता है, उसने देखा कि मैं उसे बड़े ध्यान से देख रहा हूँ। पहले तो उसे कुछ आश्चर्य-सा हुआ। बाद को यह बात उसे बुरी मालूम हुई। उठना ही चाहता था कि उसकी छड़ी जो मेज़ के सहारे खड़ी थी, गिर गई। मैंने झट उठकर उसे उठाकर उस अजनबी आदमी को दे दिया। मेरा हृदय उस समय धकधक कर रहा था।

उसके मुँह पर एक बनावटी मुसकराहट आई। उसने मुझे धन्यवाद दिया। उसका मुँह मेरे मुँह के निकट आया तब उसने अपनी भौंहें चढ़ा कर मुझे देखा। उसका मुँह खुल पड़ा। ऐसा जान पड़ता था, मानों उसे किसी बात की याद आ गई हो।

उसने रूखे, तेज़, और नाक के स्वर में कहा—'युवक तुम बड़े भद्र जान पड़ते हो। ऐसी नम्रता आज-कल असाधारण है। मैं तुम्हें बधाई देता हूँ। अवश्य तुमने बड़ी अच्छी शिक्षा पाई है।'

मुझे ठीक याद नहीं कि मैंने क्या उत्तर दिया, परन्तु हम दोनों में बातचीत होने लगी। मुझे इस बात का पता चला कि वह अपने ही देश का आदमी है, बहुत दिनों के बाद अमरीका से लौटा है और फिर थोड़े ही दिनों के बाद वहीं लौट जायगा। उसने अपने को अमीर बताया। उसका नाम मैं स्पष्ट न जान सका। मेरे स्वप्न-पिता की तरह वह भी प्रत्येक वाक्य के बाद कुछ मन ही मन गुनगुनाने लगता था। उसने मेरा वंश-नाम जानना चाहा। उसे सुनकर वह फिर चकित सा हुआ। पूछा, 'शहर में बहुत दिनों से रहते हो ? किसके साथ रहते हो ?' मैंने बताया कि 'मैं अपनी मा के साथ रहता हूँ।'

"और तुम्हारा पिता ?"

"मेरे पिता, बहुत दिन हुए मर गये।"

उसने मेरी मा के विवाह के पूर्व का नाम पूछा। सुनते ही एक भद्दी हँसी हँसा। बाद को उसने क्षमा माँगी। कहने लगा कि अमरीका वालों के भद्दे ढङ्ग सीख गया हूँ। इसके बाद उसने हमारा पता जानना चाहा। मैंने बता दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६)

बातचीत करने के पूर्व जैसा उत्तेजित मैं था वैसा त्तेजित अब मैं न रह गया। मैंने इस मुलाक़ात को तूहल की दृष्टि से देखा—इससे अधिक कुछ भी नहीं। जिस समय वह अपरिचित व्यक्ति मेरे विषय में पूछताछ र रहा था उस समय उसकी मुसकराहट मुझे कुटिल ान पड़ी। उसकी आँखें भी मुझे अच्छी न जान ड़ीं। मालूम होता कि उसकी दृष्टि मेरे शरीर में सुई ी तरह लग रही है। उसकी दृष्टि में कोई विचलित र देनेवाली बात थी। मुझे स्वप्न में इस प्रकार की ाँखों का अनुभव न हुआ था। उस अमीर की सूरत ड़ी विचित्र थी। चेहरा उतरा हुआ था, शरीर थका आ था लेकिन तो भी वह युवा जान पड़ता था। उस पपरिचित व्यक्ति के माथे पर एक घाव का बड़ा सा चिह्न ी था। यह चिह्न मेरे स्वप्न-पिता के माथे पर न था। ाब तक मैं उसके बहुत समीप नहीं गया था तब तक स चिह्न पर मेरा ध्यान भी नहीं गया था।

जैसे ही उस व्यक्ति को मैंने अपनी गली का नाम ौर घर का नम्बर बताया, वैसे ही पीछे से एक बहुत म्बा हबशी, जो सिर तक लबादा ओढ़े हुए था आया, ौर इस व्यक्ति की पीठ पर हाथ रखकर खड़ा हो गया। सने घूम कर देखा तब बड़ी ख़ुशी से उससे मिला। बोला, अहा! आख़िर तुम आही गये।' फिर मेरी ओर ज़रा-सा सिर झुका कर वह उस हबशी के साथ चाय-घर में चला या। मैं बाहर ही खड़ा रहा। मैं उसकी प्रतीक्षा रता रहा। उससे बातें करने का मुझे कोई शौक़ नहीं ा। सच पूछो तो मेरी समझ में ही न आता कि उससे या बातें करें। मैं केवल यह निश्चित करना चाहता ा कि उसे देखकर मेरे हृदय में जो भाव पहले-पहल उठे वे कहाँ तक ठीक हैं। लेकिन आधा घंटा बीता, एक टा बीता। वह बाहर नहीं निकला। मैंने ख़ुद चाय-र में जाकर एक-एक कमरा देखा। न कहीं उस व्यक्ति ा पता था और न उस हबशी का। वे अवश्य पीछे द्वार से कहीं चले गये थे।

मेरा सिर कुछ दुख रहा था। ठंडी हवा खाने की इच्छा से मैं समुद्र-तट पर घूमता हुआ एक पार्क में पहुँच गया। इसे लोग दो सौ वर्ष का पुराना बताते थे। शहर के ठीक बाहर था।

मैं क़रीब दो घंटे तक वहाँ घने वृक्षों के बीच घूमता फिरता रहा। इसके बाद घर लौटा।

(७)

ज्योंही मैं घर के दरवाज़े पर पहुँचा, मेरी मज़दूरिन बहुत घबराई हुई मेरे पास दौड़ी आई। वह बहुत उत्तेजित थी। मैं फ़ौरन समझ गया कि मेरी अनुपस्थिति में घर में कोई बुरी घटना हो गई है। मुझे पता चला कि मेरे आने से एक घंटा पूर्व, मेरी मा के सोने के कमरे में एक भयानक चीख़ सुनाई पड़ी। मज़दूरिन उसे सुनकर वहाँ दौड़ कर पहुँची तब मेरी मा को धरती पर पड़े हुए मूर्च्छित अवस्था में पाया। यह मूर्च्छा कुछ काल तक रही। मूर्च्छा तो दूर हो गई, लेकिन वे चारपाई से उठ नहीं सकती थीं। उनकी आश्चर्यजनक दशा थी। वे बहुत भयभीत थीं। अपने मुँह से एक शब्द भी नहीं बोली थीं। मज़दूरिन ने माली को भेजकर डाक्टर को बुलवाया था, लेकिन मेरी मा ने डाक्टर से भी कुछ न बतलाया। डाक्टर कुछ दवा देकर चला गया था। माली का कहना था कि चीख़ सुनने के कुछ क्षण बाद ही उसने एक अपरिचित व्यक्ति को बाग़ की झाड़ियों में से भागते हुए और सड़क के पास के फाटक से निकलते देखा। हमारा घर एकमंज़िला था और उसके चारों ओर एक अच्छा ख़ासा बाग़ था। माली उस अपरिचित व्यक्ति का मुँह भली भाँति न देख सका था। लेकिन वह कहता था कि यह व्यक्ति लम्बे क़द का था; चटाई की हैट लगाये हुए था और एक काला लबादा पहने हुए था। मैं उसी दम समझ गया कि इस पोशाक में कौन रहा होगा। माली उसे पकड़ नहीं सका। इसके अतिरिक्त वह उसी समय बुला लिया गया और डाक्टर को बुलाने के लिए भेज दिया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं अपनी मा के पास पहुँचा। वे अपनी चारपाई पर पड़ी हुई थीं। उनका रंग बिलकुल सफ़ेद हो रहा था। जिस तकिये पर उनका सिर था उसके रङ्ग से भी अधिक सफ़ेद हो रहा था। मुझे पहचान कर उन्होंने अपना हाथ बढ़ा दिया। उनके मुख पर एक क्षीण मुसकराहट भी जान पड़ी। मैं उनके पास बैठ गया और उनसे प्रश्न करने लगा। पहले तो वे प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में 'नहीं' नहीं' करती रहीं। अन्त में उन्होंने स्वीकार किया कि मैंने एक ऐसी भयावह वस्तु देखी जिसे देखकर मैं बहुत डर गई।'

मैंने पूछा—क्या कोई आया था ?

उन्होंने बड़ी शीघ्रता से उत्तर दिया—नहीं—कोई नहीं आया था। केवल मेरी कल्पना थी—केवल एक छायाकृति थी।

यह कहकर मा चुप हो गईं; हाथों से अपना मुँह ढक लिया। जो हाल मुझे माली ने बताया था और जो मेरी भेंट उस अपरिचित व्यक्ति से हुई थी उसका सारा हाल मैं अपनी मा से बताने को था। लेकिन न जाने क्यों ये बातें मेरे मुँह तक आकर रह गईं। तो भी मैंने उन से कहा कि 'छायाकृतियाँ साधारणतः दिन में नहीं दिखाई पड़ती हैं।'

मा ने धीमे स्वर में कहा—'चुप रहो। इस समय मुझे तङ्ग न करो। किसी समय तुम सब जान लोगे।'

यह कह कर वे फिर चुप हो गईं। उनके हाथ ठंडे थे। उनकी नाड़ी बड़े वेग से और विषम चल रही थी। मैं उन्हें दवा पिला कर कुछ अलग हट कर बैठ गया, जिसमें उन्हें नींद पड़ जाय। वे दिन भर उठी नहीं। चुपचाप अपने बिस्तर पर पड़ी रहीं। कभी कभी एक लम्बी साँस भर लेतीं और अपनी करुण और भयभीत आँखों से मुझे देख भर लेती थीं। घर में किसी की समझ में न आया कि बात क्या है।

(८)

रात्रि में मेरी मा को कुछ ज्वर हो आया। उन्होंने मुझे सोने के लिए अपने पास से भेज दिया। परन्तु मैं अपने कमरे में सोने नहीं गया। मैं बग़ल के एक कमरे में आराम-कुर्सी पर लेट गया। पन्द्रह पन्द्रह मिनट के बाद मैं दबे पाँव द्वार पर आकर कान लगा कर सुनता था। कमरे में शान्ति थी, परन्तु मेरी मा को उस रात नींद नहीं आई। जब मैं सबेरे कुछ जल्दी उठकर उनके पास गया तब उनका चेहरा कुछ बैठा हुआ मालूम हुआ। उनकी आँखों में अस्वाभाविक चमक थी। दिन में उनकी तबीयत कुछ अच्छी रही, लेकिन रात्रि में फिर ज्वर बढ़ गया। उस समय तक वे बिलकुल चुप थीं। लेकिन अब वे बड़ी तेज़ी से लेकिन टूटी आवाज़ से कुछ कहने लगीं। वे बक नहीं रही थीं। उनके शब्द अर्थ-रहित नहीं थे, परन्तु उनमें कोई ठीक क्रम नहीं था।

ठीक आधी रात के समय वे अचानक उठ कर, चौंक कर अपने बिस्तर पर बैठ गईं। मैं उन्हीं के पास बैठा हुआ था। वे बड़ी शीघ्रता से अपनी कथा कहने लगीं। पास रक्खे हुए ग्लास में से, बीच बीच में, वे दो एक घूँट पानी पी लेती थीं। वे मेरी ओर देख नहीं रही थीं। बीच बीच में वे रुक जातीं। बोलने में उन्हें बड़ा प्रयास करना पड़ता।

यह मेरे लिए बड़ी आश्चर्यजनक बात थी। मालूम पड़ता था कि जैसे वे स्वप्न में बोल रही हों या कोई दूसरा उनके मुँह से बोल रहा हो।

(९)

उन्होंने अपनी कथा इस प्रकार आरम्भ की—

"जो मैं कहती हूँ, सुनो। अब तुम नन्हे बालक नहीं हो। तुम्हें सब जान लेना चाहिए। मेरी एक संगिनी थी—वह बालिका थी। उसका विवाह एक ऐसे मनुष्य के साथ हुआ जिसे वह बहुत प्यार करती थी। वह अपने पति के साथ बहुत सुखी थी। विवाह के साल भर के भीतर की बात है। पति-पत्नी सैर-सपाटे के लिए कुछ सप्ताह के लिए राजधानी गये। वे लोग एक अच्छे होटल में ठहरे और नाटकों और जलसों में अकसर जाया करते थे। मेरी संगिनी बड़ी सुन्दरी थी। सभी उसकी ओर आकर्षित होते; युवकों का उस पर विशेष ध्यान रहता। लेकिन उनमें एक अफ़सर था। वह उसका निरन्तर पीछा किया करता था। जहाँ वह जाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहीं मेरी संगिनी को उसकी क्रूर काली काली आँखें दिखाई पड़तीं। किसी ने उस आदमी का मेरी संगिनी से परिचय नहीं कराया था। वह कुछ बोलता न था; केवल मेरी संगिनी को घूरा करता—बड़ी धृष्टता से, बड़े आश्चर्य-जनक ढंग से। उसकी उपस्थिति ने मेरी संगिनी का राजधानी में रहना अत्यन्त कष्ट-कर कर दिया था। उसने अपने पति से बार बार कहना आरम्भ किया कि 'यहाँ से अब चलो'। और दोनों ने यात्रा की तैयारियाँ भी कर ली थीं। एक दिन संध्या के समय उसका पति एक क्लब-घर में गया। जिस अफ़सर की चर्चा की गई है, उसी की पलटन के कुछ अफ़सरों ने उसे ताश खेलने के लिए निमंत्रण दिया था। पहली बार मेरी संगिनी घर पर अकेली रह गई। उसका पति बहुत रात गये तक न लौटा। मेरी संगिनी दासी को बिदा करके पलँग पर लेट रही, अकस्मात् उसे बड़ा डर लगा। उसका शरीर ठंडा पड़ गया और वह काँपने लगी। उसे ऐसा ख़याल हुआ, मानों दीवार के दूसरी ओर कोई आवाज़ हुई है—जैसे कोई कुत्ता अपने पंजे से कुछ खरोंच रहा है। वह दीवार को ध्यान लगाकर देखने लगी। कोने में एक लैम्प जल रहा था। कमरे में सब तरफ़ परदे टँगे थे। अचानक किसी चीज़ के हिलने की आहट हुई परदा खुला और ठीक दीवार की तरफ़ से एक काली लंबी आकृति आगे बढ़ती दिखाई दी। यह वही क्रूर आँखोंवाला भयानक आदमी था! उसने चीख़ना चाहा, लेकिन मारे डर के उसके मुँह से आवाज़ न निकल सकी। वह व्यक्ति मेरी संगिनी की ओर शिकारी जानवर की तरह झपटा। और उसके सिर पर कोई भारी सफ़ेद वस्त्र डाल दिया, जिससे बड़ी तेज़ गंध निकल रही थी। इसके बाद क्या हुआ, मुझे मालूम नहीं। मृत्यु का-सा हत्या का-सा अनुभव था। अंत में जब भयानक अंधकार दूर होने लगा, जब मुझे, जब मेरी संगिनी को होश हुआ तब उस कमरे में कोई नहीं था। फिर भी और बड़ी देर तक उसमें चीख़ने की शक्ति न थी। अंत में वह बड़े ज़ोर से चिल्लाई। फिर उसके सिर में चक्कर आने लगा और बातें अस्पष्ट मालूम देने लगीं। इसके बाद उसने अपने पति को पास खड़े हुए पाया। क्लब-घर से लौटने उसे रात के दो बज गये थे। वह डरा हुआ था, उस चेहरा सफ़ेद हो रहा था। वह अपनी पत्नी से प्रश्न क लगा, लेकिन मेरी संगिनी ने कुछ न बताया। इ बाद उसे फिर मूर्च्छा आ गई। मुझे याद पड़ता है जब वह अकेली कमरे में रह गई तब उसने दीवार उस विशेष स्थल की जाँच की जहाँ से कि वह पु निकला था। परदे के पीछे एक चोर दरवाज़ा मिल उसकी सगाईवाली अँगूठी हाथ से ग़ायब थी। अँगूठी एक नये नमूने की बनी हुई थी। इसमें स सोने के और सात चाँदी के सितारे इस प्रकार जड़े थे, कि एक सोने का हो फिर एक चाँदी का। अँगूठी उसके घराने की एक पुरानी वस्तु थी। उ पति ने उससे पूछा कि अँगूठी क्या हुई, लेकिन वह इ कुछ उत्तर न दे सकी।

उसके पति ने समझा कहीं गिर गई होगी। ढूँढ़ा लेकिन कहीं न मिली। उसे बड़ी घबराहट परेशानी हुई। उसने उसी दम यह निश्चय किया घर लौट चलना चाहिए और ज्योंही डाक्टर ने आज्ञा पति-पत्नी राजधानी से चल पड़े। लेकिन दैव-वश दिन वे चले उसी दिन रास्ते में उन्हें एक टिकटी मि इस टिकटी में एक आदमी की लाश थी जो किसी स रण झगड़े में मार डाला गया था, और यह आ वही रातवाला, क्रूर आँखोंवाला भयानक आदमी था।

इसके अनन्तर मेरी संगिनी चली गई और गाँव में रहने लगी। पहली बार उसे मातृत्व का उठाना पड़ा। बहुत सालों तक वह अपने पति के रहती रही। उसके पति को इस सम्बन्ध में कभी बात न मालूम हुई। सच पूछो तो वह बतला ही सकती थी? उसे आप ही कुछ न मालूम लेकिन उसकी पहले की सब प्रसन्नता जाती रही। लोगों के जीवन में विषाद की छाया आ उपस्थि गई और यह विषाद सदा बना रह गया। उनके कोई संतान न हुई, न इसके पहले न इसके बाद। वह पुत्र—यह कहते कहते मेरी माता का सारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांपने लगा और उन्होंने अपना मुँह अपने हाथों में छिपा लिया।

उसके बाद वे और भी अधिक ज़ोर से कहने लगीं—"लेकिन अब तुम्हीं बताओ कि इसमें मेरी संगिनी का क्या दोष था? उसने कौन-सा ऐसा काम किया था जिसमें अपने को अपराधी समझती? उसे दंड अवश्य मिला, लेकिन क्या उसे स्वयं परमात्मा के सम्मुख यह जता देने का अधिकार नहीं था कि यह दंड अनुचित दंड था? फिर क्या कारण है कि एक अपराधी की आत्मा की भाँति उसकी आत्मा पीड़ित है और इतने वर्षों के बाद भी पिछली बातें उसकी आँखों के सामने घूमा करती हैं। मैकबेथ* ने बैंको की हत्या की थी। यदि उस पर भूत सवार रहता था तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं। लेकिन!"

इसके बाद मेरी माता के मुँह से निकले हुए शब्दों में कोई क्रम नहीं था। न जाने क्या बकती जान पड़ती थीं। मैं कुछ समझ न सका। मुझे तनिक भी सन्देह न था कि वे सन्निपात की अवस्था में हैं।

(१०)

अपनी माता के मुँह से सुनी हुई इस कहानी ने मुझे जैसा विचलित कर दिया उसका अनुमान करना सहज है। मैं आरम्भ से ही यह समझ गया था कि मेरी मा अपनी ही कथा कह रही हैं। बीच में उनकी ज़बान से असली बात निकल भी गई, इससे सन्देह भी न रह गया। हाँ, तो यही हमारे पिता थे—वे पिता जिन्हें मैं स्वप्न में ढूँढ़ा करता था और जिन्हें अब मैंने जीता-जागता दिन के समय देखा। मेरी माता का यह अनुमान कि वह व्यक्ति मर गया है, ग़लत था। वह केवल घायल हुआ था। अब मेरी मा से फिर मिलने आया था और उनके चीख़ पड़ने से भय खाकर भाग गया था। मुझे तत्क्षण सब बातें स्पष्ट हो गईं। मेरी मा के हृदय में मेरे प्रति समय समय पर जो घृणा का भाव उठा करता था, उनके सदैव शोकित रहने का, उनके एकाकी जीवन का—इन सब बातों का भेद मुझे अब मालूम हुआ। मुझे याद पड़ता है कि मेरा सिर घूम रहा था, मानों उसे स्थिर रखने के लिए मैंने उसे दोनों हाथों से पकड़ लिया था। परन्तु एक विचार मेरे जी के भीतर पैठ गया। मैंने यह निश्चय किया कि चाहे जो हो मैं उस आदमी का पता अवश्य लगाऊँगा। क्यों? किसलिए? मैं स्वयं इसका स्पष्ट उत्तर नहीं दे सकता था। लेकिन उसका पता चलाना—यह प्रश्न मेरे लिए जीवन-मरण का प्रश्न बन गया। दूसरे दिन सबेरे मेरी मा कुछ शान्त थीं। ज्वर उतर गया था। उन्हें निद्रा आगई। उन्हें घर के नौकरों की रक्षा में छोड़ कर मैं अपनी खोज में निकल पड़ा।

(११)

सबसे पहले मैं उस चाय-घर में गया जहाँ उस अमीर से मेरी भेंट हुई थी, लेकिन चाय-घर में उसका कोई पता न चला। न तो वहाँ कोई उसे जानता था और न किसी को यही याद थी कि वह वहाँ आया था। वह कोई नित्य का ग्राहक न था। उस हबशी को अवश्य लोगों ने ध्यान से देखा था—उसकी आकृति ही ऐसी विचित्र थी! लेकिन वह था कौन और कहाँ ठहरा था, इसका किसी को पता न था। मैंने चाय-घर में अपना ठिकाना बतलाया, इसलिए कि उनमें से किसी का कोई पता चले। तो मुझे बतलाया जाय और स्वयं गलियों में और समुद्र के किनारे किनारे सारे बंदरगाह में चक्कर लगाना आरम्भ किया, शहर आम में सभी जगह देखा, लेकिन अमीर और उसके साथी का कोई पता न लग सका। अमीर का ठीक नाम मैं न जान सका था, इसलिए मैं पुलिस से भी मदद नहीं माँग सकता था। परन्तु मैंने पुलिस के कुछ अफ़सरों से निजी रूप से मदद माँगी। जहाँ तक ठीक हो सका मैंने दोनों व्यक्तियों की हुलिया उन्हें बताई। उन्हें पुरस्कार देने का वचन भी दिया, लेकिन ये लोग मुझे घूर-घूर कर देखते और ऐसा जान पड़ता कि मेरे पुरस्कार देनेवाली बात पर विश्वास न लाते। मैं इस प्रकार

*इस नाम के शेक्सपियर के नाटक की कथा का एक हवाला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूमता रहा। भोजन के समय घर पर पहुँचा तब बिलकुल थका हुआ था। मेरी मा सोकर उठ चुकी थीं, लेकिन उनके साधारण विषाद के साथ आज उनमें एक नई बात जान पड़ी, उनकी मानों स्वप्नवत् स्थिति हो। इससे मेरा हृदय टूक टूक हो गया, जैसे छुरी से किसी ने काट दिया हो। मैं शाम को उन्हीं के पास रहा। हम लोग आपस में शायद ही बोले हों। वे अकेली ताश खेल रही थीं। मैं ताश के पत्तों को चुप-चाप देख रहा था। पिछले दिन की घटना का अथवा जो कहानी मुझे सुनाई थी उसका कोई ज़िक्र उन्होंने नहीं किया। मानों हम लोगों में कोई गुप्त समझौता हो गया हो कि उन दुःखद बातों के विषय में हम लोग मुँह न खोलेंगे। वे अपने ही ऊपर क्रुद्ध जान पड़ती थीं और जो कुछ भी बात उनके मुँह से अनजान में निकल गई थी उस पर लज्जित मालूम पड़ती थीं। सम्भवतः, ज्वर और अर्ध-सन्निपात की अवस्था में कही बातें उन्हें स्मरण भी न रही हों। लेकिन यह उनकी इच्छा अवश्य थी कि मैं उन्हें न छेड़ूँ और मैंने किया भी ऐसा ही। मैंने कोई बात नहीं छेड़ी। इसे वे समझ गईं और कदाचित् इसी वजह से वे मेरी निगाह बचाती रहीं। मुझे रात-भर नींद न आई। बाहर भयानक तूफ़ान आया था; आँधी बड़े ज़ोर-शोर से हुल्लड़ मचा रही थी; खिड़की के शीशे जैसे बज रहे हों, हवा में जैसे किसी की दर्दभरी चीख़ गूँज रही हो, जैसे कोई चीज़ फट कर टुकड़े टुकड़े हो गई हो और हिलते हुए घरों के ऊपर से उड़ रही हो! सबेरा होते होते मुझे एक झपकी लग गई। मुझे अचानक ऐसा जान पड़ा कि कोई मेरे कमरे में आगया है; कोई मेरा नाम लेकर पुकार रहा है। उसका स्वर तीव्र तो नहीं है लेकिन दृढ़ है। मैंने अपना सिर उठाया कोई नहीं दिखाई पड़ा। लेकिन आश्चर्य की बात तो यह थी कि मुझे ज़रा भी डर नहीं लगा प्रत्युत मैं प्रसन्न था। अचानक मेरे मन में यह दृढ़ भावना जागृत हुई कि मैं अब अवश्य अपने उद्देश्य में सफल होऊँगा। जल्दी में अपने कपड़े पहने और घर से बाहर निकल गया।

(१२)

आँधी घट चली थी, लेकिन उसका कुछ निशान भी शेष था। बहुत सबेरा था, कोई गलियों दिखाई नहीं पड़ता था। जगह जगह पर टूटी हुई नियाँ, खपड़े, जँगले, पेड़ की टूटी शाखायें पड़ी हुई रात के वक्त समुद्र की दशा क्या रही होगी? तूफ़ान इन चिह्नों को देखकर मैं आश्चर्य कर रहा था। इच्छा हुई कि मैं समुद्र के किनारे चलूँ लेकिन मेरे मानों किसी अज्ञात और प्रबल प्रेरणा से दूसरी ओर रहे थे। दस मिनट भी न बीते होंगे कि मैं शहर की ऐसी जगह में पहुँचा जहाँ कि मैं पहले कभी न आया। मैं बहुत तेज़ नहीं चल रहा था लेकिन बिना रुकावट चला जा रहा था। प्रत्येक पग पर मेरे हृदय में अभूतपूर्व अनुभव हो रहा था। मैं समझ रहा था कोई अद्भुत असम्भव सी बात है; साथ ही साथ मन इसका भी निश्चय था कि यह अद्भुत असम्भव होकर ही रहेगी।

(१३)

अन्त में हुआ भी ऐसा ही। यह अद्भुत, असम बात होकर रही। अचानक मैंने अपने सामने, कदम पर, उसी हबशी को देखा जिसने चाय-घर में अमीर से बात की थी! जिस लबादे में मैंने उसे देखा था वही लबादा पहिने हुए था। जान प था, कि मानों धरती फाड़ कर वहाँ आगया हो। चक्कर खाती हुई पतली गली में, लम्बे डग भरता हु मेरी ओर पीठ किये हुए चला जा रहा था। उसके बा हो लेने के लिए मैं फ़ौरन लपका, लेकिन बिना पीछे कर देखे हुए ही उसने अपनी चाल दूनी कर दी। एक वह एक मकान के कोने से घूम गया। मैं भी उस तक उतनी ही तेज़ी से दौड़ा। कैसे आश्चर्य की थी! मेरे सामने एक लम्बी सँकरी, बिलकुल शून्य थी। सबेरे का कुहरा इस गली में भरा हुआ था, मेरी निगाह इसे भेद कर अन्त तक पहुँच रही थी इस गली के सभी घर देख सकता था। कहीं किसी आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुतला भी नहीं दिखाई देता था! लम्बे क़दवाला हबशी लबादा ओढ़े हुए न जाने कहाँ लोप हो गया था! जैसे अचानक वह दिखाई दिया था, वैसे ही अचानक वह ग़ायब भी हो गया! मैं चकित था। लेकिन केवल एक क्षण के लिए। मेरे मन में एक और ही भाव जागृत हो गया। इस गली से लम्बी और शून्य गली जो मेरी आँखों के सामने थी, मैं उससे परिचित था। यही तो मेरे स्वप्नोंवाली गली थी! मैं सचेत हुआ कँपकँपी लग रही थी। सवेरा बड़ा सुहावना था। मैं बिना किसी हिचक के वरन् विश्वास के साथ आगे बढ़ता गया!

मैं घूम-फिर कर देखने लगा। हाँ, यहीं तो, यहीं दाहने हाथ गली के कोने पर मेरे स्वप्नवाला घर था; यहीं वह पुराना फाटक था जिसके दोनों खंभों पर पत्थर में नक़्श बने हुए थे। हाँ, इतना ज़रूर था कि इसकी खिड़कियाँ गोल नहीं, बल्कि चौकोर थीं। लेकिन यह कोई विशेष महत्त्व की बात नहीं थी। मैंने फाटक पर खटखटाया—दो-तीन बार अधिकाधिक ज़ोर के साथ खटखटाया। दरवाज़ा बहुत धीरे से भारी आवाज़ करते हुए खुला। मेरे सामने एक कम उम्र की नौकरानी जिसके बाल बिखर रहे थे और जिसकी आँखों में नींद समाई थी आई। जान पड़ता था कि अभी अभी उठी हो।

मैंने पूछा—अमीर यहीं पर रहता है?

उसी क्षण मैंने पतले आँगन की ओर एक नज़र दौड़ाई। ठीक! सभी स्थिति वैसे ही थी। स्वप्न में देखे हुए तख़्ते, शहतीर, सभी वहीं थे।

नौकरानी ने उत्तर दिया—नहीं यहाँ कोई अमीर नहीं रहता है।

"नहीं? असंभव है!"

"वह यहाँ इस समय नहीं है। कल चला गया"

"कहाँ गया?"

"अमरीका।"

"अमरीका! लेकिन वह यहाँ लौटेगा?"

नौकरानी ने मुझे संदेह से देखा। बोली—हम यह सब नहीं जानते। संभव है, न आये।

"क्या यहाँ बहुत समय से रहता था?"

"नहीं, बहुत समय से नहीं। एक सप्ताह से। वह यहाँ अब नहीं है।"

"उसका पूरा नाम, उस अमीर का पूरा नाम क्या है?"

नौकरानी मुझे घूरकर देखने लगी। उसने कहा—तुम उसका नाम नहीं जानते?

हम केवल 'अमीर' जानते हैं।

नौकरानी ने देखा, मैं भीतर ही घुसता आता हूँ तब उसने पुकारा—अरे पिस्टो। देखो, यह कौन आदमी है। क्या-क्या पूछे ही जाता है।

घर से भद्दी आकृति का एक हट्टा-कट्टा मज़दूर निकला और अँगड़ाई लेता हुआ बोला—क्या है?

मेरी बातें चिढ़कर सुनी और नौकरानी का जवाब दुहराया।

मैंने पूछा—आख़िर यहाँ रहता कौन है?

"हमारा मालिक"

"वह कौन है?"

"बढ़ई है। इस गली में सब बढ़ई ही रहते हैं।"

"मैं उससे मिलना चाहता हूँ।"

"इस समय नहीं मिल सकते; वह सोरहा है।"

"घर के भीतर आ सकता हूँ?"

"नहीं, चले जाओ!"

"अच्छा, तो तुम्हारे मालिक से मैं फिर मिल सकता हूँ?"

"क्या काम है? मिल क्यों नहीं सकते? जब चाहो तब मिल सकते हो। यहीं अपना धन्धा करता है। लेकिन इस वक़्त चले जाओ। हे भगवान्! अभी सवेरा नहीं हुआ है! यह भी कोई मिलने का वक़्त है?"

मैंने फिर पूछा—अच्छा, तो वह हबशी कहाँ है?

मज़दूर ने आश्चर्य में आकर पहले मेरी ओर देखा फिर उस नौकरानी की ओर। अन्त में बोला—"कौन हबशी? सरकार इस समय जाओ। फिर आकर मालिक से जो चाहना पूछ लेना।'

मैं निकल कर गली में आगया। उसी दम मेरे पीछे उस भारी फाटक के ज़ोर से बन्द होने की आवाज़ आई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने वह गली और घर ध्यान में अच्छी तरह से रख लिया और चला गया। लेकिन घर की ओर नहीं गया। मैं उद्भ्रान्त सा हो रहा था। जो जो घटनायें हुई थीं, सभी बड़ी अद्भुत थीं, अनहोनी और फिर अन्त में कुछ भी नहीं। मैं समझता था, मुझे विश्वास हो रहा था कि मैं इस घर में वह कमरा अवश्य पाऊँगा। उसके बीच में मेरा पिता, अमीर, हुक्का पी रहा होगा। पता क्या चला कि घर का मालिक बढ़ई है। मैं जब चाहूँ उससे मिल सकता हूँ—और निःसंदेह मेज़-कुरसी ख़रीद सकता हूँ।

मेरा पिता अमरीका चला गया। अब मैं क्या कर सकता था? क्या मैं अपनी माता से सब कुछ कह दूँ अथवा उससे भेंट की स्मृति ही भुला दूँ। मैं इस बात से तनिक भी सन्तुष्ट न हुआ। ऐसी दैवी और आश्चर्य-मयी घटना का ऐसा साधारण अंत। मैं घर नहीं लौटना चाहता था। मैं शहर से बाहर की ओर बिना किसी उद्देश के चल पड़ा।

(१४)

मैं सिर नीचा किये हुए, बिना सोचे-विचारे चला जा रहा था। अपने ही ध्यान में डूबा हुआ था, बाहरी बातों का जैसे कुछ अनुभव ही न हो रहा हो। एक विराट्, गूँजती हुई, गर्जन करती हुई आवाज़ ने मेरा ध्यान भंग किया। मैंने अपना सिर उठाया। मुझसे पचास क़दम पर विशाल समुद्र लहरें मार रहा था और उफान ले रहा था। मैंने देखा कि मैं बालू पर चल रहा हूँ। रात के तूफ़ान के कारण जहाँ तक निगाह जाती थी समुद्र सफ़ेद फेन से ढँका हुआ था। और ऊँची लहरें, एक-एक करके, किनारे पर टकरा रही थीं। मैं और निकट गया। ज्वार के हट जाने पर पीली बालू पर जो पंक्ति बन गई थी उसी के किनारे किनारे चला। बालू पर समुद्री घास की एक लकीर-सी पड़ी हुई थी और टूटे समुद्री घोंघे, बिखरे हुए पड़े थे। समुद्री पक्षी अपने नुकीले पंख फैलाये हुए, चीख़ते हुए हवा में उठकर, भूरे बादलों में, बर्फ़-ऐसे श्वेत और चमकते दिखाई देते थे; फिर नीचे गिरकर एक लहर से दूसरी लहर पर उछल कर कल्लोल करते हुए, चाँदी की चमक की भाँति फेन में छिप जाते थे। मैंने देखा कि इनमें से कई, समतल समुद्री बालुका-तट पर स्थित एक ऊँची चट्टान के चारों ओर मँडरा रहे थे। इस चट्टान के एक ओर ख़ूब गुजान मोटी मोटी समुद्री घास उग रही थी। बालू की पीली सतह के ऊपर जहाँ घास का गुथा हुआ जाल-सा था, मुझे कोई काली वस्तु दिखाई दी, कोई लम्बी-सी टेढ़ी वस्तु, जो बहुत बड़ी नहीं थी। मैंने ध्यान से देखा चट्टान के किनारे कोई काली निर्जीव वस्तु पड़ी हुई थी ज्यों ज्यों मैं निकट आता गया, यह वस्तु अधिकाधिक स्पष्ट दिखाई पड़ने लगी।

मुझमें और चट्टान में केवल ३० क़दम की दूरी रह गई थी। अरे यह तो मनुष्य का आकार जान पड़ने लगा। यह तो शव था। कोई मनुष्य जो डूबकर मर गया है उसे समुद्र ने किनारे फेंक दिया। मैं ठीक चट्टान तक चला गया।

यह शव उस अमीर का, मेरे पिता का शव था मेरा शरीर मानों पत्थर का हो गया। मैं खड़ा रहा अब मुझे इस बात का अनुभव हुआ कि कोई अज्ञात शक्ति सवेरे से मुझे प्रेरित कर रही थी। मैं उस शक्ति के पूर्णतः वश में था। क्षण भर के लिए मेरी आत्मा शून्य हो गई। केवल समुद्र का अनन्त कल्लोल और अपने भाग्य का मौन भय!

(१५)

वह पीठ के बल, ज़रा-सा करवट लिये सिर के नीचे अपना बायाँ हाथ रक्खे पड़ा हुआ था। उसका दाहिना हाथ उसके दुमड़े हुए शरीर के नीचे दबा था। उसके ऊँचे जहाज़ी जूतों का अगला हिस्सा समुद्री कीचड़ में डूबा हुआ था। उसका छोटा नीला जैकट, समुद्र के फेने से गीला था, लेकिन अब भी उसके बटन बन्द थे और उसके शरीर पर चुस्त था। एक बड़ा लाल रूमाल उसके गले में बँधा हुआ था। उसका धूमिल चेहरा आकाश की ओर घूमा हुआ था, जान पड़ता था जैसे हँस रहा हो। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटे छोटे बन्द दाँत उसके उठे हुए ऊपरी होठ के भीतर से दिखाई पड़ रहे थे। उसकी आँखें आधी मुँदी हुई थीं और आँखों की धुँधली पुतलियाँ आँख के काले ढेलों के बीच कठिनाई से दिखाई पड़ती थीं। उसके लटीले बाल, जिन पर फेन के बुल्ले पड़े थे, धरती में बिखरे हुए थे, उसका चिकना माथा खुला हुआ था और उस पर घाव के निशान की सुर्खी झलक रही थी। उसकी लम्बी नाक उसके गड्ढेदार गालों के ऊपर एक सीधी सफ़ेद लकीर की तरह निकली हुई थी। पिछली रात के तूफ़ान ने बड़ा उत्पात किया था। अब वह अमरीका न देख सकेगा। वह मनुष्य जिसने मेरी माता के साथ बलात्कार किया था, जिसने मेरी माता के जीवन को नष्ट कर दिया था, वही, मेरा पिता, हाँ मेरा पिता—इसका मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है, इस समय असहाय मेरे चरणों के पास मिट्टी में लथरा हुआ पड़ा था। मैंने सफल प्रतीकार के भाव का अनुभव किया। दया, घृणा, भय, इन सबका अनुभव किया। जो कुछ बीती थी, जो कुछ अपने सामने देख रहा था—उसका दुहरा भय था। वे दुष्ट, पाप-पूर्ण विचार जिनका मैं वर्णन कर चुका हूँ; तथा क्रोध के आवेश जिनका कारण मैं नहीं समझ सकता था मुझमें उठ रहे थे। मेरा गला मानों उनसे घुट रहा था। मैंने विचार किया, कि "अहा! मेरे इस प्रकार के विचारों का यही कारण है!... ख़ून अपना असर इस तरह से दिखलाता है!" मैं लाश के पास खड़ा हुआ था, और अनिश्चित चित्त से उसे देख रहा था। क्या ये हत-जीव नेत्र हिलेंगे नहीं? क्या इन ठंडे होठों में स्फूर्ति न आवेगी? नहीं! वहाँ सब कुछ निर्जीव था; जिस स्थान पर लहरों ने शव को फेंक दिया था वहाँ की समुद्री घास भी निर्जीव जान पड़ती थी। समुद्री पक्षी भी वहाँ से उड़कर चले गये थे। सभी ओर सुनसान था। केवल वह और मैं और दूर पर गर्जन करता हुआ समुद्र! मैंने घूमकर देखा। कहीं कुछ नहीं—वही सन्नाटा, जहाँ तक दृष्टि जाती थी केवल सन्नाटा। फेन से ढँके हुए समुद्र-तट पर की रेत में, इस अभागे दुष्ट को इस प्रकार मछलियों और पक्षियों को खानेवाला।...निस्संदेह वही था। परन्तु इसके आगे वे नहीं कर गईं। मेरी मा बहुत दिनों तक बीमार रहीं। थी, कि आदी होने पर भी मेरी उनकी पहले की-सी घनि- यदि कोई सहायता तब तक जीवित रहीं मेरे सामने उन्हें यता पहुँच ही क्या सकता रहती थी। हाँ, एक प्रकार की तो मिल ही जाती कि उसे उ है जिसका कोई इलाज नहीं। दें। परन्तु इस समय मेरे मन भयों की स्मृति समय पा उत्पन्न हुआ। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि अलौकिक शक्तियों के पुरुष इस बात को जानता है कि मैं यहाँ पर उपस्थित न हूँ; और उसने स्वयं इस अन्तिम भेंट के लिए घटनाओं को रचा है। मुझे ऐसी धारणा हुई कि मैं उसके अस्फुट स्वर भी सुन रहा हूँ। मैं भागा। पीछे फिरकर देखा। मेरी निगाह किसी चमकती हुई वस्तु पर पड़ी। मैं रुक गया, लाश की हाथ की अँगुलियों में सोने की रेखा दिखाई दी। मैं जान गया कि यह मेरी मा की सगाईवाली अँगूठी है। मुझे अच्छी तरह याद पड़ता है कि मैं बड़ी कठिनाई से लौटा, शव के पास तक गया, झुका। मुझे ठंडी अँगुलियों के रोमांचकारी स्पर्श की अब तक स्मृति है। किस प्रकार मैंने अपनी साँस रोकी, आँखें आधी मूँद लीं और दाँत पीसकर कसी हुई अँगूठी को खींचा यह सब बातें मुझे याद हैं। अन्त में वह निकल आई। और मैं भाग रहा था; जितनी तेज़ी से भाग सकता था उतनी तेज़ी से भाग रहा था। कोई चीज़ मेरे पीछे उड़ती हुई आरही थी, पीछा कर रही थी और मानों मुझे पकड़ रही थी।

(१६)

जिस समय मैं घर पहुँचा हूँ उस समय मेरे समस्त भाव, मेरी समस्त वेदना कदाचित् मेरे मुख पर लिखी हुई थी। मुझे देखते ही मेरी माता चौंक उठीं और सीधे अपने कमरे में जाकर मेरी ओर इस प्रकार देखने लगीं मानों सभी बातें शीघ्रातिशीघ्र जानना चाहती हैं। मैंने अपने को सारा रहस्य समझाने में असफल होते देख कर वह अँगूठी चुप-चाप उनके सामने कर दी। भय से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने वह गली और घर ध्यान में अच्छी तरह आँखें रख लिया और चला गया। लेकिन घर की ओर धीमी गया। मैं उद्भ्रान्त सा हो रहा था। जो चीज़ें छीन ली, हुई थीं, सभी बड़ी अद्भुत थीं, अनगिनकर मूर्च्छित-सी अन्त में कुछ भी नहीं। मैं समझा हुआ था और अपनी हो रहा था कि मैं इस घर में मुझे घूर कर देखने लगीं। उसके बीच में मेरा पिता, थों के बीच में ले लिया और जहाँ पता क्या हुआ वहीं बिना हिले-डुले खड़े हुए मैंने धीमी आवाज़ से धीरे धीरे सारा हाल बिना कोई बात छिपाये हुए कह सुनाया। अपने स्वप्न का, उससे मुलाक़ात का, सब कुछ। उन्होंने मेरी कथा आदि से अन्त तक सुनी; मुँह से एक शब्द भी न बोलीं, हाँ लम्बी-लम्बी साँसें ले रही थीं। उनकी आँखों में एक चमक दिखाई दी फिर आँखें बैठ-सी गईं। इसके बाद उन्होंने अँगूठी अपने बीच की अँगुली में पहिन ली। ज़रा-सा मुझसे अलग हट-कर अपनी ओढ़नी और टोपी ढूँढ़ने लगीं। मैंने पूछा—"कहाँ जा रही हो? उन्होंने आश्चर्यभरे नेत्रों से मुझे देखा, उत्तर देना चाहा, लेकिन उनके मुँह से शब्द न निकल सके। कई बार उन्हें रोमांच-सा हुआ; अपने हाथों को उन्होंने मला, मानों उन्हें गर्म कर रही हों और अन्त में बोलीं—"आओ, चलो शीघ्र चलें।"

"कहाँ मा?"

"जहाँ वह पड़ा हुआ है। मैं देखना चाहती हूँ। मैं जानना चाहती हूँ अवश्य जानूँगी।"

मैंने उन्हें जाने से रोकने का बहुत प्रयत्न किया; लेकिन उन्हें न जाने क्या हो गया था उन्हें मना करना असंभव था। अन्त में हम लोग चल पड़े।

(१७)

अब मैं फिर बालू के फ़र्श पर चल रहा था; इस बार मैं अकेला नहीं था। मेरे हाथ के सहारे मेरी मा चल रही थीं। समुद्र में भाटा आया था जिससे वह और भी पीछे हट गया था। पहले की अपेक्षा इस वक़्त समुद्र शांत था; लेकिन तो भी उसकी आवाज़ में एक प्रकार का भयावनापन था। अन्त में वह एकाकी चट्टान भी दिखाई दी। समुद्री घास भी जैसी की तैसी थी। मैंने आँख गड़ा कर देखा। उस वस्तु की स्थिति जानने का प्रयत्न किया, लेकिन कुछ दिखाई दिया। हम लोग और निकट गये। मैंने चाल धीमी कर दी लेकन इस समय वह लाश कहाँ थी? केवल समुद्री घास की जड़ें बालू पर (जो कि अब सूख गया था) काली काली दिखाई दीं। हम लोग बिलकुल चट्टान के पास तक गये। कोई लाश दिखाई न दी। जहाँ लाश थी वहाँ केवल एक गड्ढा बन गया था। गड्ढे में हाथ पैर के निशान दिखाई पड़ रहे थे। आस-पास की घास कुचली हुई सी दिखाई दी। एक आदमी के पैर के निशान भी जान पड़े जो थोड़ी दूर चलकर एक बालू के ढेर में लोप होगये।

हम लोग—मेरी मा और मैं—एक दूसरे के मुँह की ओर देखते रहे और एक दूसरे के मुँह को देख कर डरे।

ऐसा तो हो नहीं सकता कि वह उठकर आप ही आप कहीं चला गया हो!

मेरी मा ने पूछा—"तुम्हें पूरा विश्वास है कि वह मरा हुआ था?"

मैं केवल सिर हिलाकर 'हाँ' का संकेत कर सका।

तीन घंटे भी नहीं बीते थे, मैंने अपनी आँखों से अमीर की लाश देखी थी।

जान पड़ता है, किसी ने उसे वहाँ पाकर उसे हटा दिया, मुझे इसे अवश्य खोज निकालना चाहिए कि किसने ऐसा किया, और लाश का क्या हुआ।

लेकिन इससे पहले मुझे अपनी मा की चिन्ता करनी थी।

(१८)

जिस समय मेरी माता उस घटना-स्थल पर जा रही थीं उन्हें ज्वर था। परन्तु अपने आपको किसी प्रकार उन्होंने वश में रक्खा। लाश को ग़ायब देखकर उन्हें बड़ा कड़ा आघात पहुँचा। उनकी बोलने की शक्ति जाती रही। मुझे डर लगा कि कहीं पागल न हो जायँ। जैसे तैसे बड़ी कठिनाई से मैंने उन्हें घर पहुँचाया। फिर बिछौने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर लिटाया, डाक्टर बुलवाया। जैसे ही ज़रा अच्छी होने लगीं उन्होंने मुझसे उस आदमी की खोज में जाने को कहा। मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया। परन्तु बहुत ढूँढ़ने पर भी मुझे उसका कुछ पता न लगा। मैं कई बार पुलिस में गया, कई गाँव देखे, आस-पास के पत्रों में कई विज्ञापन निकलवाये लेकिन नतीजा कुछ न हुआ। मुझे एक बार पता लगा कि पास के समुद्र के तटस्थ किसी गाँव में एक डूबे हुए आदमी की लाश मिली है। मैं फ़ौरन वहाँ गया, लेकिन जो कुछ मैंने सुना उससे वह अमीर की लाश न जान पड़ी। मैंने इस बात का पता चलाया कि किस जहाज़ से उसने अमीरका के लिए प्रस्थान किया था। पहले तो सभी निश्चय-रूप से बताते थे कि यह जहाज़ तूफ़ान में डूब गया था, परन्तु कुछ महीनों के बाद यह बात उड़ती हुई सुनाई दी कि वह न्यूयार्क में लंगर डाले देखा गया है। यह समझ में न आया कि क्या कार्यवाही की जाय; अन्त में मैंने उस हबशी को ढूँढ़ना आरम्भ किया। पत्रों में उसे बहुत सा इनाम देने के विज्ञापन छपवाये। एक लम्बा हबशी लबादा ओढ़े हुए, मेरे घर पर मेरी अनुपस्थिति में आया भी था। लेकिन नौकरानी से कुछ पूछ कर वह फ़ौरन चला गया और फिर न लौटा।

इस प्रकार मेरे—मेरे पिता लोप हो गये। मौन और अन्धकार में सदा के लिए विलीन हो गये। मेरी मा में और मुझमें इस विषय में फिर बातचीत न हुई। मुझे ध्यान आता है कि केवल एक दिन उन्होंने मुझसे कहा था कि तुमने इस स्वप्न का हाल मुझसे पहले क्यों नहीं बताया।...निस्संदेह वही था। परन्तु इसके आगे वे चुप हो गईं। मेरी मा बहुत दिनों तक बीमार रहीं। लेकिन अच्छी होने पर भी मेरी उनकी पहले की-सी घनिष्ठता न रही। जब तक जीवित रहीं मेरे सामने उन्हें एक प्रकार की घबड़ाहट रहती थी। हाँ, एक प्रकार की बेचैनी थी। यह ऐसा दुख है जिसका कोई इलाज नहीं। तीव्र से तीव्र शोक-जनक घटनाओं की स्मृति समय पा कर भूलने लगती है, परन्तु जब दो घनिष्ठ व्यक्तियों के बीच ऐसा भाव उपस्थित हो जाय तब उसका दूर होना असम्भव हो जाता है।

उसके बाद मैंने वह स्वप्न फिर कभी नहीं देखा। अब मैं अपने पिता की खोज में नहीं रहता हूँ। कभी कभी ऐसी कल्पना करने लगता था—और अब भी करने लगता हूँ—कि कहीं दूर से एक दर्दभरी आवाज़ आ रही है—वह आवाज़ जो कभी मौन नहीं होती, जान पड़ता है कि किसी ऊँची दीवार के पीछे से, जिसे पार कर सकने में मैं अशक्त हूँ, वह दुखभरी आवाज आरही है। उससे मेरे हृदय में वेदना उत्पन्न होती है। मैं आँखें बन्द करके रोता हूँ। यह कभी नहीं बता पाता कि यह आवाज़ है कैसी—कोई जीवित व्यक्ति कराह रहा है अथवा यह सागर की गहराई से कोई स्वर निकल रहा है। इसके बाद वह आवाज़ बदल कर ऐसी हो जाती है, मानों किसी कराहते जानवर की आवाज़ है।

मैं अपने हृदय में दुख और वेदना भरे हुए सो जाता हूँ।*

—रामचन्द्र टंडन

* ईवान टूर्जिनिव की एक रूसी कहानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष का वाणिज्य-व्यवसाय

[इस समय संसार के प्रायः सभी देश अर्थ-सङ्कट से पीड़ित है। भारत भी इस रोग से मुक्त नहीं है। अर्थ-सङ्कट के कारण यहाँ के किसान विशेष रूप से तबाह हो गये हैं। वाणिज्य-व्यवसाय भी जैसा चाहिए, वैसा उन्नत नहीं हो रहा है। इस लेख में उसका वास्तविक रूप प्रकट करते हुए अन्त में सरकार का ध्यान देश के वर्तमान आर्थिक सङ्कट की ओर खींचा गया है। इस लेख के लेखक श्रीयुत पथिक इस विषय के प्रसिद्ध लेखक हैं। आपका यह लेख भारत की वर्तमान अवस्था का स्पष्ट रूप पाठक के सामने उपस्थित कर देता है।]

स्वास्थ्य अच्छा रहने पर लोगों को औषध-विज्ञान की चिन्ता नहीं रहती, उसी प्रकार शांति के समय लोग अर्थ-विज्ञान की ओर दृष्टिपात करना भूल जाते हैं। जब रोग से शरीर जकड़ जाता है तब औषधि लेने की सूझती है, उसी प्रकार जब सार्वजनिक क्षेत्र में लोगों की अवस्था संकट-जनक हो जाती है तब वे अर्थ-विज्ञान की सहायता लेने दौड़ते हैं। दुख में ही भगवान् याद आते हैं। पिछले महायुद्ध के समय अनेक अर्थशास्त्र-वेत्ता भिन्न भिन्न प्रकार से संसार की आर्थिक अवस्था के सुलझाने में व्यस्त थे। वह उनके लिए मुसीबत की घड़ी थी, और उस समय उन्होंने जिन विवादग्रस्त विषयों पर जिस रूप में अपना विश्वास प्रकट किया था वह आगे चल कर सत्य नहीं निकला। महायुद्ध के बाद सन् १९३० में फिर आर्थिक संकट संसार में उपस्थित हुआ है। संसार की इस स्थिति का भारत पर भी प्रभाव पड़ा है। देश के कुछ सावधान व्यापारियों ने प्रमुख नेताओं के सहयोग-द्वारा भारत-सरकार का ध्यान इस संकट-काल की ओर पहले से ही आकर्षित किया था पर दुःख है कि सरकार का ध्यान इस ओर नहीं गया। इसके परिणाम-स्वरूप बाद को देश में राजनैतिक हलचल उत्पन्न हो गई। इस आन्दोलन से देश के राष्ट्रीय उद्योग-धंधों को सहारा मिला। १६ पेंस की विदेशी हुंडी की दर होने पर और लङ्काशायर पर २० प्रतिशत ज़कात के अभाव में भी इस देश के राष्ट्रीय उद्योग की रक्षा हुई है। उदाहरण के लिए वस्त्र-व्यवसाय को ही लीजिए। बम्बई और कलकत्ता विदेशी वस्त्र के आयात के प्रधान नगर हैं। इन दोनों शहरों में विदेशी वस्त्र के आयात के अङ्कों से यह बात भले प्रकार स्पष्ट हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बई में विदेशी वस्त्र का आयात (आन्दोलन के पूर्व)

	गज़	रुपये
आक्तूबर १९२९,	४,८१,३३,५२७	१,२७,३१,७४०
दिसम्बर १९२९,	३,८३,४४,२२५	९६,३२,९७६
जनवरी १९३०	४ करोड़ २० लाख	
फ़रवरी १९३०	३ करोड़ १० लाख	
मार्च १९३०	४ करोड़ ४ लाख	११७ लाख
अप्रेल १९३०	४ करोड़ १० लाख	१०४ लाख
मई १९३०	३ करोड़ २० लाख	८३ लाख

इन अङ्कों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विदेशी वस्त्र का आयात किसी प्रकार कम नहीं हुआ, जिससे बम्बई के राष्ट्रीय उद्योग-धन्धों की रक्षा होती। परन्तु राजनैतिक आन्दोलन से इस आयात पर कितना आघात हुआ, यह आगे के अंकों से प्रकट होगा।

बम्बई में विदेशी वस्त्र का आयात (आन्दोलन के समय)

	गज़	रुपये
जून	२ करोड़	५१ लाख
जुलाई	१ करोड़ २० लाख	३० लाख
अगस्त	१ करोड़	२७ लाख

बम्बई के समान कलकत्ता भी विदेशी वस्त्र-व्यवसाय के लिए प्रसिद्ध है।

कलकत्ते में विदेशी वस्त्र का आयात, (आन्दोलन के पूर्व)

	गज़	रुपये
आक्तूबर १९२९	५ करोड़ ६० लाख	१३५ लाख
नवम्बर १९२९	५ करोड़ ९० लाख	१४३ लाख
दिसम्बर १९२९	६ करोड़ ६० लाख	
जनवरी १९३०	१० करोड़ २० लाख	२३६ लाख
अप्रेल १९३०	८ करोड़	
मई १९३०	५ करोड़ ७० लाख	

कलकत्ते में विदेशी वस्त्र का आयात (आन्दोलन के समय)

	गज़	रुपये
जून	*	६२,४२,२९१
जुलाई	*	६३,४२,२९१
सितम्बर	२ करोड़ १० लाख	४२ लाख

मदरास में बम्बई व कलकत्ते की तरह विदेशी कपड़ा नहीं आता है। पर यहाँ भी आयात में महत्त्वपूर्ण कमी हुई है, जैसे—

	गज़	रुपये
दिसम्बर १९२९	७० लाख	२० लाख
जुलाई और अगस्त १९३०	५० लाख	१४ लाख

कराँची में जो कमी हुई वह यद्यपि बम्बई के मुक़ाबले में कुछ नहीं है, तथापि जिस शहर को विदेशी व्यापारियों ने अपने व्यवसाय का केन्द्र बनाना चाहा था, वहाँ भी उन्हें हताश होना पड़ा। जनवरी, फ़रवरी, मार्च और अप्रेल में आयात का औसत २ करोड़ ६० लाख गज़ व दाम में ७० लाख रुपये का रहा। और जुलाई व अगस्त में कपड़े का आयात १ करोड़ ४० लाख गज़ व १ करोड़ १० लाख गज़ व दाम में ३१ लाख व २५ लाख रुपये का रहा। पर इन सब शहरों में कपड़े का यह आयात उन आर्डरों का है जो जुलाई के पहले दिये गये थे। उसके बाद विदेशी वस्त्र के व्यवसाय की कैसी शोचनीय अवस्था हो गई, इसका अनुमान निम्न-लिखित अंकों से भली भाँति प्रकट होगा—

* (१ करोड़ ५० लाख गज़ इँग्लेंड से व ६० लाख गज़ जापान से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष में विदेशी कपड़े का आयात

१ सितम्बर १९२९

कोरा	१६५ लाख
सफ़ेद	११८ लाख
रंगीन	१५३ लाख

१ सितम्बर १९३०

कोरा	३३ लाख
सफ़ेद	३० लाख
रंगीन	५४ लाख

परन्तु इतने कपड़ा का भी स्टाक बंदरगाह के गोदामों, बैंकों के गोदामों व थोक व्यापारियों की दूकानों में पड़ा है। बहुत सा बन्दरगाहों में ही पड़ा है। बहिष्कार की प्रगति उत्तरोत्तर बढ़ रही है। अकेले कपड़े का बहिष्कार नहीं, अन्य सभी चीज़ों का भी बहिष्कार हो रहा है। जैसे सिगरेट का सितम्बर १९२९ में १३ लाख रुपये आयात था, उसका १९३० में इसी मास में २ लाख रुपये का हुआ। अँगरेज़ी माल के आयात में चारों ओर से कमी हुई है। जितनी आयात में कमी हुई, उतना ही क्षेत्र देशी उद्योग-धंधों को मिला।

यही नहीं, बम्बई के व्यवसायी एक नई योजना कार्य में परिणत कर रहे हैं। लङ्काशायर की तरह वे अपनी मिलों को एक संगठन के अन्दर मिलाने का उपक्रम कर रहे हैं। अपने कारख़ानों की क़ीमत जँचवाने के लिए उन्होंने मेनचेस्टर से दो विशेषज्ञ बुलाये हैं। ये विशेषज्ञ नवम्बर महीने से अपना कार्य कर रहे हैं। 'लङ्काशायर कार्पोरेशन' के समान बम्बई कायह नया सङ्गठन शक्तिशाली होगा। बम्बई की मिलों को इस संघ की स्थापना होने पर सरकार और इम्पीरियल बैंक किन शर्तों पर आर्थिक सहायता दे सकते हैं, इस पर विचार करने के लिए एक कमेटी क़ायम की गई थी। इस संघ को सहायता देने का कमेटी ने निर्णय किया है। यह प्रकट होता है कि १२ करोड़ रुपये तक की सहायता सरकार से इम्पीरियल बैंक के द्वारा इस संघ को प्राप्त होगी। ३४ मिलें इस संघ के अन्दर हैं। और उनके मूल्य का निर्धारण उक्त दो विशेषज्ञ करेंगे। कि शर्तों पर ये सब मिलें एक संघ के नियन्त्रण में आज यँगी, इसका भी निर्णय किया जायगा। और बम्बई के ८१ मिलों में से जितनी और मिलें इस संघ में आ चाहेंगी उनके लिए भी योजना में स्थान रक्खा जाय और उनके मूल्य का भी माप किया जायगा। मिस्र एनटिव्सल के निरीक्षण में यह सब कार्य होगा। मिल का अलग अलग सञ्चालन होने की अपेक्षा इस नये सं के द्वारा उनका चलना श्रेयस्कर होगा। बम्बई के मिल वालों की वैसे तो एक संस्था 'मिल ओनर्स एसोसियेश है। इस एसोसियेशन से सब मिलों का कार्य समान रू में चलता है। पर इस नई संस्था के द्वारा सब मिल का कार्य समान रूप में ही नहीं चलेगा, किन्तु वे एक जीव हो जायँगी। यदि मिलवालों ने स्वीकार कर लि तो लङ्काशायर कार्पोरेशन के समान यह संघ इस देश लिए महत्त्व-पूर्ण संस्था होगी। अमरीका में इस प्रक का ट्रस्ट न चला हो, किन्तु इस देश की वर्तमान अवस्था में इस प्रकार की संस्था अत्यन्त वांछनीय है। बम्ब के मिलवालों को इस समय ज़बर्दस्त सङ्गठन-द्वारा अप रक्षा करना है। बम्बई की मिलों में व्यावसायिक सङ्गठ होना अत्यन्त आवश्यक है।

परन्तु बम्बईवालों को मज़दूरों का प्रश्न हल करना और अपनी व्यवस्था का भी सुधार करना है। जिने के नये क़ानून के अनुसार बम्बई के मज़दूर आठ घ काम करने की माँग कर रहे हैं। इसके अला मिलवालों को इन मज़दूरों को भी योग्य बनाने की पू कोशिश करनी चाहिए। ग्राहकों की सुविधा ख़याल कर स्वदेशी की भावना से माल बेचना उसके लिए नये नये उपायों से कार्य करना, योग्य व्यवस्थ पकों की नियुक्ति करना, व्यवस्था में बेशुमार ख़र्च करना, और कच्चा माल व कलें सुभीते से सस्ते दामों ख़रीदना आदि त्रुटियों के दूर करने पर निश्चय ही संघ यशस्वी होगा। अगर ये त्रुटियाँ दूर न हुईं यह संघ भी बैठ जायगा। इस नये संघ से अ माल की उत्पत्ति सस्ते भाव में विदेशी मि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

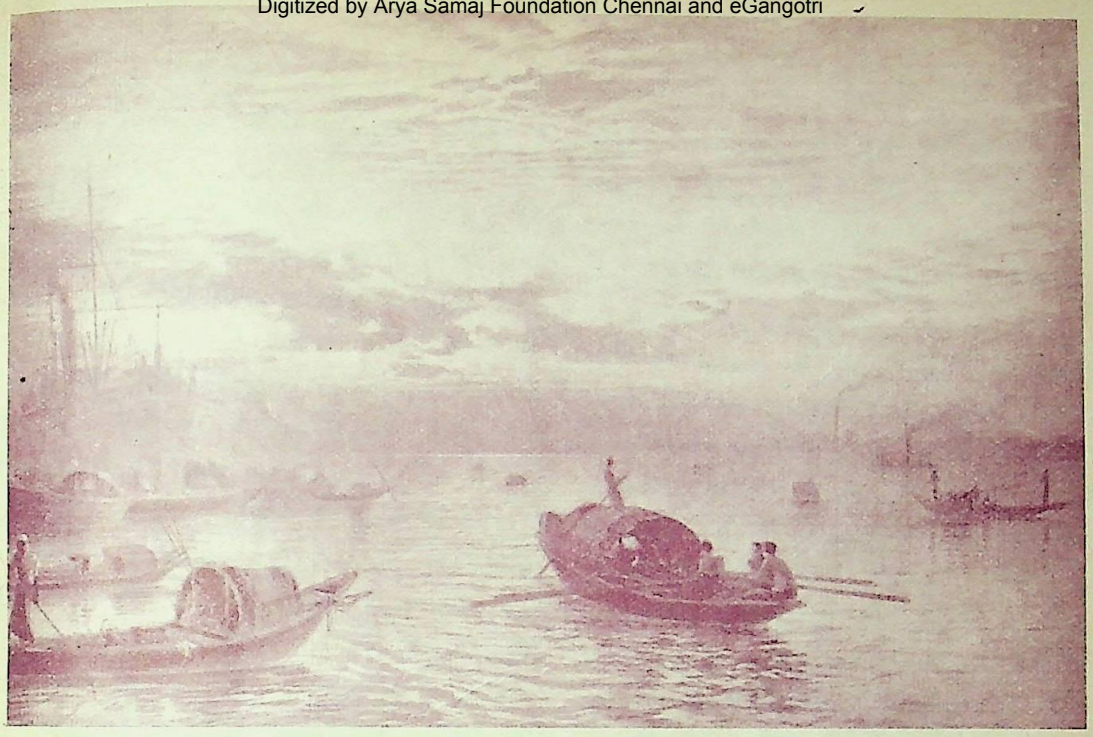

सूर्यास्त

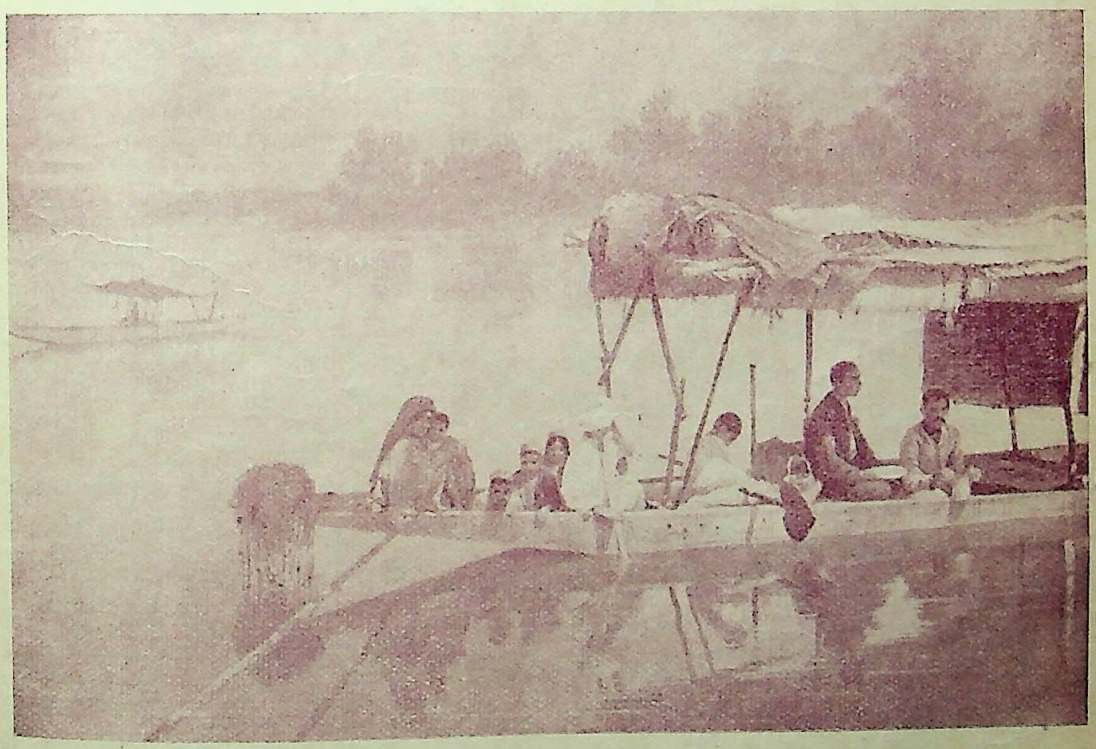

काश्मीर की झील

[श्रीयुत एस० जी० ठाकुरसिंह की चित्रकारी
(चित्र-परिचय में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मुक़ाबिले में हो, इसी लिए वह उद्योग किया जा रहा है।

जहाँ मिलों का यह प्रबन्ध हो रहा है, वहाँ रुई के व्यापार को भी सुधारने का उद्योग हो रहा है। रुई का व्यापार ईस्ट इंडिया काटन एसोसियेशन लिमिटेड के द्वारा होता है। इस व्यापार की जाँच के लिए बम्बई-सरकार ने एक कमेटी की नियुक्ति की है। यह प्रकट है कि गत कई वर्षों से इस देश में रुई का व्यापार गिरता चला जा रहा है। भविष्य में भी उसके सुधरने की आशा नहीं दिखाई देती। यह कमेटी किसान और व्यापारी दोनों की असुविधाओं को खोज निकालेगी। रुई की पैदावार और व्यापार में भारी आर्थिक जोखिम है। हर रोज़ के बाज़ार-भाव की चढ़ा-उतरी से रुई की फ़सल की रक्षा होना आवश्यक है। हेजिङ्ग-पद्धति-द्वारा रुई का सौदा होना उपयोगी है। इससे बाज़ार की जोखिम नहीं रहती, और व्यापार करने में जो कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं वे भी कम हो जाती हैं। इसके द्वारा सौदा होने से मुनाफ़ा क़ायम रहता है, नुक़सान सीमित रहता है, और रुई में जो क़र्ज़ के रूप में रुपया लगाया जाता है उसकी रक्षा होती है। इसलिए वादे के सौदे निश्चित और सख़्त नियमों से ज़िम्मेदार व्यापारी सङ्गठन के द्वारा होने चाहिए। ऐसे सङ्गठन-द्वारा रुई का बहुत बड़ा बाज़ार होगा और वह हमेशा चलेगा। पर उसकी रक्षा तेज़ी-मंदीवालों के प्रहारों से होनी चाहिए, क्योंकि सटोरिये अच्छे से अच्छे सङ्गठन को बरबाद कर देते हैं। यदि इन सब बातों का ध्यान रख कर रुई के बाज़ार का सुधार हो और क्लियरिंग हाउस का भी साथ में उपयुक्त प्रबन्ध हो तो भारतवर्ष का रुई का व्यापार सुधर सकता है। ईस्ट इंडिया काटन एसोसियेशन बहुत से अंगों में विभाजित है। यह शायद इस उद्देश से है कि सब लोगों के हितों का सामञ्जस्य हो जाय। रुई के दलालों की बेहद तादाद का भी इससे नियन्त्रण होता है। कारण, चलानीवाले, मिलवाले, और कमीशन एजन्टों के फ़र्मों आदि के रूप में बहुत से दलाल हैं। सिवरी बाज़ार में न तो सब दलाल जाते हैं और न वे वादे के सौदे इस बाज़ार के बाहर करते हैं। वहाँ तो सिर्फ़ तैयारी के सौदे होते हैं। सिवरी जैसे इतने बड़े बाज़ार का निर्माण दलालों की इस उपेक्षा से व्यर्थ हो रहा है। भिन्न भिन्न हितों और अधिकारों के कारण रुई के बाज़ार की दुर्दशा हुई है। बाज़ार से पेनल सिस्टम को हटा कर सब दलों को एक विधान में सङ्गठित करना बाज़ारवालों का कर्तव्य है। इसके अलावा रुई का दूसरा बाज़ार जो शहर में है वह नहीं रहना चाहिए। सरकारी सहायता से भी शहर में होनेवाले फाटके को बन्द कराके सिवरी के सङ्गठन को मज़बूत करना एसोसियेशन का कर्तव्य है।

बम्बई के कपड़े का धन्धा और रुई का व्यवसाय इस समय एक-दम बिगड़ी हालत में नहीं है। बम्बई में दो अढ़ाई लाख देशी कपड़े की गाँठों के बिक जाने से यह प्रकट होता है कि बहिष्कार-आन्दोलन से इस राष्ट्रीय धन्धे की रक्षा हुई है। सभी मिलों के माल की अच्छी खपत है। ताता का लोहे का सामान, दियासलाई, साबुन और सिगरेट आदि के देशी कारख़ानों को इस आन्दोलन से बल मिल गया है। यदि केवल बहिष्कार हो और उसके साथ स्वदेशी माल की पैदावार बढ़ाने का रचनात्मक कार्य न हो तो वह औद्योगिक क्रान्ति असफल होती है। पर देश इस समय भली भाँति सजग है और वह नये नये सङ्गठनों-द्वारा उपलब्ध साधनों से स्वदेशी माल की पैदावार बढ़ाने में लगा हुआ है। स्वदेशी माल की खपत और उसके नियन्त्रण आदि का कार्य स्वदेशी सभायें और स्वदेशी प्रदर्शिनियाँ भली भाँति कर रही हैं। इस सङ्गठन के ही प्रयत्न से विदेशी व्यापार में आशातीत कमी हुई है। भारतवर्ष के विभिन्न बन्दरगाहों की रिपोर्टों से जिन्हें कस्टम विभाग के कलक्टर तैयार करते हैं, पता चलता है कि बम्बई और कलकत्ता दोनों का आयात बेहद कम हो गया है। यह सफलता नहीं तो क्या है कि सितम्बर महीने में ३३९ लाख रुपये का विदेशी व्यापार रह गया जो गत वर्ष इसी माह में ६३६ लाख रुपये का था। बम्बई में भी जो आन्दोलन का प्रधान केन्द्र है, इतना ही व्यापार घटा है। पूजा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनों में लङ्काशायर के कपड़े की मुश्किल से इस वर्ष ५ प्रतिशत बिक्री हुई हो। बङ्गाल विदेशी वस्त्र का आयात घटाने में किसी से पीछे नहीं रहा। अप्रेल से अगस्त तक १०३५ लाख काटन टेक्सटाइल के आयात में कमी हुई, जिसमें बङ्गाल के हिस्से में ३४७ लाख अर्थात् ३४ प्रतिशत की कमी हुई। कपड़े के आयात में भी ३३२ लाख रुपये की। जब सारे भारतवर्ष में कमी हुई तब बङ्गाल में १५८ लाख अर्थात् ५० प्रतिशत की कमी हुई। इससे यह स्पष्ट है कि विदेशी व्यापारियों के सतत उद्योग करने पर भी बङ्गाल अन्य प्रान्तों के साथ ही विदेशी माल का आयात घटाने में रहा। सारे देश में सब प्रकार के विदेशी माल का आधा आयात रह गया है।

जहाँ स्वदेशी सभायें' उद्योग कर रही हैं, वहाँ मिल-वाले भी देशी कपड़े का प्रचार करने में लगे हुए हैं। एजन्टों को अधिक खपत बढ़ाने के लिए अतिरिक्त कमीशन और छूट आदि दे रहे हैं। इतना ही नहीं, जो विदेशी कपड़े के ऐसे दूकानदार हैं जिनकी पूँजी विदेशी कपड़े में लगी हुई होने से हाथ पर हाथ धरे बैठे हुए हैं उन्हें भी वे प्रोत्साहन दे रहे हैं। जिन व्यापारियों के कपड़े की गाँठों पर कांग्रेस ने मुहर लगा दी है और जिन्होंने यह प्रतिज्ञा की है कि वे आगे से विदेशी वस्त्र का व्यापार नहीं करेंगे उन्हें विदेशी माल की सिक्यूरिटी पर भारतीय मिलवाले देशी कपड़ा बेचने के लिए दे रहे हैं। इस उपाय से विदेशी कपड़े की दूकानें देशी कपड़े की दूकानें हो जायँगी। बम्बई के मिलवाले विदेशी कपड़े के स्टाक पर ७० प्रतिशत के मूल्य पर देशी कपड़े दे रहे हैं। इस प्रकार स्वदेशी वस्त्र-व्यवसाय की उन्नति की जा रही है।

परन्तु बम्बई के मिलवालों के लिए जापान की प्रतिद्वंद्विता बनी हुई है। यद्यपि बहिष्कार-द्वारा जापान का आयात बन्द किया जा सकता है, तो भी भारत-सरकार का भी नैतिक कर्तव्य है कि वह बम्बई के धन्धे की रक्षा के लिए जापान के नक़ली रेशम के माल पर ज़कात (जो अभी १५ प्रतिशत है) बढ़ा दे। दो वर्ष पूर्व जापान का नक़ली रेशम का कपड़ा पहले छः महीनों में क़रीब २० लाख गज़ आया था। १९२९ के आरम्भ के छः महीनों में १ करोड़ ६० लाख गज़ आया और १९३० के पहले छः महीनों में २ करोड़ ४० लाख गज़ आया। इन अंकों से पता चलता है कि इस नक़ली रेशम के कपड़े की भारतवर्ष में कितनी अधिक खपत बढ़ रही है। जापान के इस कपड़े के मुक़ाबले में बम्बई-वाले अपना कपड़ा नहीं बेच पाते, इसलिए वे उस पर ड्यूटी बढ़ाने के लिए सरकार से प्रार्थना कर रहे हैं। जापान के नक़ली रेशम के आयात से अब तक देश में करोड़ों पर बहुत सा कपड़ा तैयार होता रहा। पर इस कपड़े के आयात के बढ़ने से जुलाहों की जीविका पर आघात पहुँचता है। यदि मिलवालों की रक्षा सरकार न भी करे तो भी जुलाहों के धंधे का ख़याल करके सरकार को जापानी माल पर ड्यूटी बढ़ानी चाहिए। इस सम्बन्ध में जापानी व्यापारियों के तर्क व लंकाशायर के व्यापारियों के हितों की परवा नहीं करनी चाहिए। यदि इस देश के उद्योग-धंधों की उन्नति हुई है तो विदेशी व्यापारियों की चढ़ा-ऊपरी में .कानून का सहारा लेना कोई अनुचित नहीं है। देश की प्रमुख राजनैतिक संस्था तो विदेशी सूती कपड़े पर इतनी ड्यूटी चाहती है जिससे विदेशी वस्त्र का आना .कतई बन्द हो जाय, तो भी भारतीय व्यापारियों की माँग अत्यन्त अल्प है। वे तो यह चाहते हैं कि समस्त विदेशी वस्त्र पर २० प्रतिशत ड्यूटी बढ़ा दी जाय। जापानी रेशम के कपड़े पर भी २० प्रतिशत ड्यूटी बढ़ा दी जाय। यदि भारत-सरकार कपड़े के साथ लोहे के धंधे की रक्षा के लिए विदेशी लोहे के सामान, साबुन, दियासलाई व सिगरेट तथा शक्कर पर ड्यूटी बढ़ाकर भारतीयों की माँग पूरी करे तो देश का भारी असंतोष दूर हो जाय। इस देश की आर्थिक दशा सुधारने और राजशासन के लिए सरकार आमदनी बढ़ाने के लिए सभी आयात माल पर भारी ड्यूटी बढ़ाने की अत्यन्त आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में भारतवर्ष का हित पहले और अन्य सभी देशों का हित बाद में है।

परन्तु प्रश्न यह है कि देश के उद्योग-धन्धों की इस अवस्था का स्थायित्व कहाँ है। सरकार को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे पहले अपनी आर्थिक अवस्था सुलझानी है। उसे तो इस समय १८ पेंस की दर रखने की ज़िद का सबक़ मिल रहा है। अभी तक सरकार १८ पेंस की दर का महत्त्व ही बतलाती रही है। पर अब इधर वह ख़ामोश हो गई है। कारण इस दर ने घोर आर्थिक संकट उपस्थित कर दिया है। आज देश में भारतीय पैदावारों के दामों में कमी और विदेशी माल के अत्यधिक आयात में वृद्धि के कारण विनिमय दर को इस समय भी इसी रूप में बनाये रखने के लिए करन्सी और हुंडी आदि के नियन्त्रण में भारत-सरकार और भारत-मन्त्री ने तरह तरह के उपाय किये हैं। इस दर को ऊँची बनाये रखने के लिए सरकार ने चाँदी के भाव को बेहद गिराया, रक्षित कोष की चाँदी सस्ते से सस्ते भाव में बेची और बजट पास होने के समय से अब तक ऊँची दर में क़र्ज़ लिया। सरकार ने कई लाख रुपये चलन में से हटा लिये थे, नवम्बर महीने में और चार करोड़ रुपये चलन में से कम कर दिये। अप्रेल से वर्ष के अन्त तक कुल रिमिटेंस ४८,२८,४६१ रुपये होम ट्रेज़री के लिए हुआ। ट्रेज़री बिलों में रुपया जिन भावों में लोगों से लिया गया वह स्पष्ट है। पर तीन-चार करोड़ नया आने पर भी क्या होता है? क्योंकि प्रतिसप्ताह अड़तालीस लाख रुपये की व्यापारिक माँग घटती हुई देखी गई। शायद ही किसी देश का धन इस तरह बरबाद होता होगा। क़र्ज़ लेने के सम्बन्ध में यह विधान है कि वाइसराय की शासन-सभा की स्वीकृति से लिया जाय। पर नये क़र्ज़े के सम्बन्ध में वाइसराय से न पूछा गया और न शासन-सभा से। इस क़र्ज़ लेने में क़ायदा-क़ानून भी ताक में रख दिया गया। भारत का ख़ज़ाना ख़ाली देखकर भारत-मन्त्री ने अपने ख़र्च और रेलवे के कार्य के लिए इँग्लेंड में १६ करोड़ रुपये का नया क़र्ज़ ६ प्रतिशत की दर में लिया। इस नये क़र्ज़े ने ठंढे दिमाग़वाले भारतीय व्यापारियों को भी आश्चर्य में डाल दिया है। अब तक सरकार चार दफ़े में ५० करोड़ रुपया से अधिक क़र्ज़ ले चुकी है। इसके अलावा यहाँ के ट्रेज़री बिल बेचकर थोड़ी मुद्दत का क़र्ज़ लेने का काम तेज़ी से जारी है। इन क़र्ज़ों के लिए सरकार भारी से भारी ब्याज देने की प्रतिज्ञा कर रही है। इसके बाद इधर भारत-सरकार १४५ करोड़ रुपये का नया क़र्ज़ चार प्रतिशत के ब्याज की दर से लेती है और उधर हाथों हाथ १६ करोड़ रुपया का क़र्ज़ इँग्लेंड में भारतवर्ष के नाम से ६ प्रतिशत की दर में भारत-मन्त्री लेते हैं। सरकार को पूरी मालगुज़ारी न मिलने से और विदेशी व्यापार गिरने से ज़कात की आमदनी बेहद घटने से जो आमदनी में कमी हुई है उसकी पूर्ति के लिए सरकार को कई सौ करोड़ रुपया क़र्ज़ लेना पड़ा। सरकार ने स्पष्ट शब्दों में इस बात की भी घोषणा की कि यह क़र्ज़ उसे राजनैतिक आन्दोलन के कारण लेना पड़ रहा है, क्योंकि विदेशी पूँजी लगानेवाले भारती सिक्यूरिटियों को गिरी हालत में नहीं देखना चाहते। मगर सिक्यूरिटी का भाव तो मई में ९९ का था जो आज १०४ का है। इन दिनों में विनिमय की दर १६ पेंस भी क़ायम रखना सरकार के लिए मुश्किल पड़ा। वह इँग्लेंड के व्यापारियों को दो-अढ़ाई प्रतिशत अधिक ब्याज देकर क़ायम रक्खी गई। एक्सचेंज की इस अवस्था से भविष्य में भारतीय व्यवसाय और उद्योगधन्धों की उन्नति मारी जायगी। जब लोग इन क़र्ज़ों में रुपया लगा कर आसानी से अधिक ब्याज कमाते हैं तब वे किस प्रकार उद्योग-धन्धों में रुपया लगावेंगे। सरकार की यह नीति भारतीय उद्योग-धन्धों के हक़ में ठीक नहीं है। करन्सी विभाग के व्यवस्थापकों ने जिस सूझ से साप्ताहिक स्टर्लिंग टेंडर के देने का क्रम रक्खा है उससे भारतवर्ष पर और भी भारी क़र्ज़ लद रहा है। विदेशी एक्सचेंज बैंक भी इस आर्थिक दुरवस्था के कारण हैं। १९२५ में एक्सटर्नल केपिटल कमेटी ने यह साफ़ ज़ाहिर किया था कि विदेशी पूँजी पर नियंत्रण रखना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु भारत-सरकार से बिना पूछे भारत-मन्त्री और अर्थ-सदस्य इँग्लेंड में भारतवर्ष के नाम पर क़र्ज़ ले लेते हैं। अमेरिका जैसे स्वतन्त्र देश में विदेशी बैंकों पर नियंत्रण अमेरिकन क़ानूनों से होता है। विदेशी बैंक न तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिपाज़िट रख पाते हैं और न उन्हें देशी बैंकों के मुक़ाबले में व्यावसायिक सुविधायें रहती हैं। भारत में भारतीय बैंकों पर विदेशी बैंकों का प्रभुत्व है। ये विदेशी एक्सचेंज बैंक ही भारत की आर्थिक व्यवस्था की बागडोर अपने हाथ में रखते हैं। देश यह चाहता है कि इन बैंकों का नियंत्रण भारतीय क़ानूनों के अनुसार हो। १९२६ में भारतवर्ष में इन बैंकों में ७२ करोड़ रुपया डिपाज़िट में जमा हुए थे। उधर ज्वाइंट स्टाक बैंकों में सिर्फ़ ६३ करोड़ रुपये जमा हुए थे। इन विदेशी बैंकों में डिपाज़िट रक़म भारतवासियों की है। इसका पता लंदन के लायड्स बैंक के चेअरमैन के वक्तव्य से चलता है। उन्होंने कहा है कि हमारे बैंकों की जो शाखायें भारतवर्ष में हैं उनमें यहाँ के डिपाज़िट की रक़म का कोई भी हिस्सा भारतवर्ष के क़र्ज़ में नहीं लगता है।

ये विदेशी बैंक भारतवर्ष से बेहद सुविधायें और मुनाफ़ा उठाते हैं; किन्तु बदले में कुछ नहीं देते। उनमें कोई भी भारतवासी काम नहीं करने पाता। जापान भी विदेशी पूँजी क़र्ज़ लेता है; किन्तु वहाँ विदेशी अधिकार नहीं होता है। पर यहाँ तो विदेशी बोर्ड व डायरेक्टर भारतीयों का हित ताख पर रख देते हैं। भारतीय पूँजी की रक्षा और उन के व्यवसाय के हित के लिए इन बैंकों के नियंत्रण में भारतीयों का अधिकार होना चाहिए।

जहाँ इस आर्थिक संकट-काल में भारतीय व्यावसायिक बैंकों की अवस्था ख़राब रही; वहाँ इने-गिने औद्योगिक बैंक मरणासन्न अवस्था को पहुँच गये। स्वदेशी उद्योग-धन्धों की उन्नति के लिए देशी पूँजी से चलनेवाले औद्योगिक बैंक ही आधार होते हैं। पर आज देश में स्वदेशी का प्रचार बिना इन बैंकों के हो रहा है। स्वदेशी उद्योग-धन्धों की ठोस उन्नति के लिए इन बैंकों के खुलने की अत्यन्त आवश्यकता है। १२ प्रतिशत से २० प्रतिशत की दर में रुपया क़र्ज़ लेकर न तो कोई स्वदेशी धन्धा चल सकता है और न कच्चे माल की उत्पत्ति ही बढ़ाई जा सकती है। बंगाल में चाय के उद्योगवालों को जितनी थोड़ी दर में क़र्ज़ मिलता है, उतनी दर में क्या और भी किसी को कहीं क़र्ज़ मिलता है। इम्पीरियल बैंक आफ़ इंडिया अपने वर्तमान संगठन के रूप में उद्योग-धन्धों में रुपया लगाने की अधिक ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता, क्योंकि उसके नियंत्रण के सम्बन्ध में एक यह क़ानून है कि छः महीने से ज़्यादा के लिए वह क़र्ज़ नहीं दे सकता। यद्यपि उसे भारी पूँजी क़र्ज़ के साधनों से प्राप्त है, तथापि भारतीय स्वदेशी उद्योग-धन्धों की उन्नति के लिए अमेरिकन सिस्टम के अनुसार औद्योगिक बैंकों के खुलने की अत्यन्त आवश्यकता है। अमरीका में खेती और उद्योग-धन्धों के लिए अलग अलग फ़ेडरल फ़ार्म सिस्टम और फ़ेडरल रिज़र्व सिस्टम-द्वारा भिन्न भिन्न प्रकार के अलग अलग बैंक हैं। भारतवर्ष के सभी प्रान्तों में औद्योगिक बैंक खोले जायँ और उनकी शाखायें ज़िला, तहसील और मौज़ों में क़ायम हों। ये बैंक न केवल रुपया ही क़र्ज़ दें, बल्कि अपने नियंत्रण में लायसेंस-गोदाम भी रक्खें, जिनमें कच्चा और तैयार माल सुविधा से रक्खा जाय। बैंक कच्चा माल लोगों को सस्ते से सस्ते भाव में दें और तैयार माल अच्छे से अच्छे भाव में बेचने का प्रबन्ध करें। इन बैंकों के संचालन में कारख़ानेवालों का अधिकार होना चाहिए।

भारत-सरकार का स्टोर-डिपार्टमेंट व भारतीय रेलवे भारतवर्ष का बना हुआ माल ख़रीदने के लिए बाध्य हैं। अगर भारतीय चीज़ें विदेशी चीज़ों के समान और आवश्यकता की पूर्ति करती हैं और उनके दाम भी अधिक नहीं हैं तो सरकार उन भारतीय चीज़ों को मजबूर होकर ख़रीदती है। सरकारी रिपोर्ट से यह पता चलता है कि अब भारतीय कारख़ानों को अधिक आर्डर मिलने लगे हैं। यदि स्टोर-डिपार्टमेंट की सभी मांगों के कारख़ाने भारतवर्ष में खुल जायँ तो भारतीय औद्योगिक क्षेत्र का विस्तार बढ़ जायगा। इस स्टोर के संरक्षण से ही थोड़ा-बहुत भारतवर्ष का बना इंजीनियरिंग लोहे का सामान व अन्य सामान ख़रीदा जाने लगा है। सात-आठ करोड़ रुपये के माल की ख़रीद यद्यपि नगण्य है, तथापि देशी उद्योग तरक़्क़ी करें तो सारी रक़म बाहर जाने से बच सकती है। भारतीय कारख़ानेवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अपने माल का प्रचार ख़ूब करना चाहिए व माल की चलानी के पहले देश व विदेश के ख़रीददारों को माल की देख-भाल के लिए सब प्रकार की सुविधायें भी प्रदान करनी चाहिए। दक्षिण-अफ़्रीका की यूनियन-सरकार और पेलस्टाइन-सरकार से भारतीय कारख़ानों को आर्डरों का मिलना महत्त्वपूर्ण हुआ है। भारतीय रेलवे-बोर्ड भी विभिन्न वस्तुओं का आर्डर स्टोर-डिपार्टमेंट को देने लगा है। ४१ प्रतिशत आर्डर रेलवे से भारतीय माल के लिए स्टोर को मिलने लगे हैं। क़रीब दो करोड़ रुपये के आर्डर रेलवे से भारतीय वस्तुओं के लिए मिलते हैं। जो रेलवे कम्पनियाँ भारत-सरकार के नियंत्रण में नहीं हैं वे भी थोड़ा-बहुत व्यवसाय भारतीय वस्तुओं का करती हैं। सरकार का डाक और तार-विभाग भी अपनी अधिक माँग भारतीय सामान के लिए स्टोर-डिपार्टमेंट को देता है। पब्लिक एकाउन्ट कमेटी में जो प्रश्न भारतीय नेताओं ने शिमला में उठाया था उस ३ करोड़ ३० लाख रुपये की वार्षिक रोक तो राजनैतिक अधिकारों के प्राप्त होने पर होगी, किन्तु विदेशी माल की रोक के लिए उपर्युक्त सब उपायों से भारतीय उद्योग-धन्धों की उन्नति अवश्य करनी चाहिए।

इस वर्ष भी जो भारतीय प्रतिनिधि जिनेवा की अन्तर्राष्ट्रीय लेबर कान्फ़रेंस में गये थे उनमें श्रीयुत एस०सी० जोशी ने एशियाई मज़दूरों की हालत प्रकट करते हुए कहा कि इस संस्था में उनके संबंध में सिवा प्रस्ताव पास होने के वास्तविक कार्य कुछ भी नहीं हुआ। भारतीय मज़दूरों के सम्बन्ध में ज़बर्दस्ती काम न लेने के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव पास हुए, भारत-सरकार ने उस सम्बन्ध में दो संशोधन पेश किये थे। उन संशोधनों का कमेटी में घोर विरोध हुआ था और मज़दूरों के प्रतिनिधि श्रीयुत शिवराव ने तो बड़ा विरोध किया था। इससे कमेटी ने संशोधनों को उड़ा दिया। कान्फ़रेन्स में जब मूल प्रस्ताव ज्यों के त्यों पास हुए तब भारत-सरकार के प्रतिनिधियों ने यह कह कर मत नहीं दिया कि भारत-सरकार की स्वतन्त्रता के लिए उन संशोधनों का पास होना आवश्यक है। पर कान्फ़रेन्स ने उनके विरोध की कुछ परवा न कर अंतिम रूप में यह पास किया कि भारतवर्ष में अगले पाँच वर्ष के लिए न तो कोई व्यक्ति अपने घरू काम के लिए किसी से बेगार में काम ले सकेगा और न सार्वजनिक कार्यों के लिए ही। दूकानों में काम करनेवाले, आफ़िसों के कर्मचारी, पोस्ट, टेलिग्राफ़ व टेलिफ़ोन आदि के कर्मचारियों का वाशिंगटन-कनवेनशन में कोई ज़िक्र नहीं था; किन्तु इस बार जो कनवेनशन का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ उससे उनके लिए प्रतिदिन आठ घंटे या सप्ताह में चालीस घंटे का समय नियत किया गया। देशी रजवाड़ों में और ब्रिटिश भारत के गाँवों में ज़मींदार और सरकारी अफ़सरों के द्वारा बेगार में लोग पकड़े ही नहीं जाते हैं, बल्कि उनसे मुफ़्त में सामान भी मँगाया जाता है। इस पर भारत-सरकार का ध्यान जायगा, यह हमें प्रतीत नहीं होता। और जो मज़दूर ज़बर्दस्ती साहब लोगों के बाग़ों के लिए पकड़े जाते हैं उनकी भी इस क़ानून से रोक होनी चाहिए। देशी रजवाड़ों को भी इस क़ानून को मानना चाहिए। जिनेवा-परिषद् के अन्य देशों के सदस्य भारतीय सदस्यों का महत्त्व ख़ूब समझते हैं। भारत-सरकार को यह देखना चाहिए कि इस देश में श्रमजीवियों का आन्दोलन बढ़ता ही चला जाता है। भारतवर्ष कृषिप्रधान देश होने के कारण कृषक श्रमजीवियों की अवस्था इस आर्थिक संकटकाल में अत्यन्त चिंतनीय हो गई है। भारत-सरकार की उपेक्षा से किसानों की पैदावार के बेहद दाम घट जाने से व उनके सामने अन्य अन्य अड़चनें आजाने से आज उनकी अवस्था ऐसी करुणाजनक हो गई है कि उसे देखकर सारा विश्व आँसू बहायेगा और उनके धैर्य और कष्टसहन की प्रशंसा किये बिना नहीं रहेगा। सभी देशों की सरकारें आर्थिक संकट-काल में अपने देश की पैदावारों के भावों को कृत्रिम रूप से बढ़ाती हैं। आज संसार के सभी देश किसानों की गुज़र-बसर की सुविधा के लिए कृत्रिम साधनों से चीज़ों के दाम बढ़ा रहे हैं। पर भारत-सरकार आस्ट्रेलिया का सस्ता गेहूँ आने देकर भारतीय किसानों की ओर ध्यान नहीं दे रही है। यदि विदेशी गेहूँ पर भारी ड्यूटी लगाई जाती तो भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गेहूँ के दाम ऊँचे होते और उसके प्रभाव से अन्य वस्तुओं के भी दाम न घटते। पर भारत-सरकार यह लँगड़ा उदाहरण देती है कि यदि वह दाम चढ़ा देगी तो ख़रीददारों को अधिक दाम देने पड़ेंगे, इसलिए बाहर से आनेवाले माल पर ड्यूटी नहीं बढ़ाई जाती। भारतवर्ष में सबके लिए दरवाज़ा खुला है। ७३ प्रतिशत कृषक प्रजा के हित की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। सरकार का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह किसानों की जीविका-निर्वाह के लिए विदेशी पैदावार पर भारी से भारी ड्यूटी लगावे। विभिन्न पैदावारों पर ड्यूटी लगने से यहाँ के व्यापारी बाहर की सस्ती पैदावार नहीं मँगा पायेंगे। यह तर्क पेश करना कि भारतवर्ष अपनी खपत के लिए इतना अन्न व अन्य खाद्य पदार्थ उत्पन्न नहीं करता है, सरासर मिथ्या है। अंकों के आधार पर ही हम यह बतला सकते हैं कि भारतवर्ष कितना अधिक अनाज निर्यात करता है। पर २३ लाख टन के निर्यात से भारतवर्ष में भारतीय अनाज के दाम नहीं बढ़ सकते। २२,३१,८३,६४८ एकड़ ज़मीन में से २०,४७,९०,८०८ एकड़ ज़मीन में जो खेती होती है उससे सरकार ९० प्रतिशत किसानों की रक्षा करेगी, यदि वह बाहर से आनेवाले अनाज पर ड्यूटी बढ़ा देगी। आस्ट्रेलिया और कनाडा की तुलना भारत से नहीं की जा सकती। क्योंकि वहाँ के किसान बहुत सस्ते ख़र्च में अधिक से अधिक पैदावार करने में समर्थ हैं। पर जो आस्ट्रेलिया इतना सस्ता गेहूँ पैदा करने में समर्थ है, वहाँ भी विदेशी गेहूँ पर भारी ड्यूटी लगी हुई है। भारतीय रुई के दाम कितने घट गये हैं, इसका अ मान निम्नलिखित अंकों से होता है।

वर्ष	अमेरिकन मिडलिंग	भारतीय रु डमरा नं०
१९२४-२५	१००	८७
२५-२६	१००	८३
२६-२७	१००	८८
२७-२८	१००	८२
२८-२९	१००	७६
३० आक्टोबर	१००	७१

इन भावों से यह ख़तरा है कि कहीं भारतीय रुई पैदावार का सर्वनाश न हो जाय। जिस पाट की पै वार केवल भारतवर्ष में ही होती है उसे उत्पन्न करने किसान भी तबाह हो रहे हैं और उसका व्यवसाय क वाले भारतीय व्यापारी दश करोड़ से अधिक का घ दे चुके हैं। संयुक्त-प्रान्त और बम्बई में गन्ने की पै वार अत्यधिक होती है। इधर संसार में शक्क पैदावार खपत से अधिक बढ़ रही है। इसलिए भा तीय गन्ने की पैदावार, देशी गुड़ और देशी शक्क धंधे को पनपने देने के लिए सरकार का यह कर्त्तव्य कि वह विदेशी शक्कर को भारतीय शक्कर से सस्ते में न बिकने दे। भारत-सरकार से ये सब सिफ़ारिशें रूप से भारतीय हित-कामना की दृष्टि से हैं और दृष्टि से हैं कि इस संसार-व्यापी अर्थ-सङ्कट के समय का हित हो।

—जी० एस० पथिक

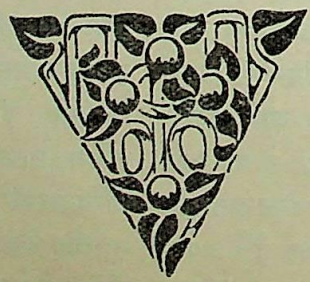

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवशेष

भारत के प्रथम मुग़ल-सम्राट् अकबर का प्यारा नगर आगरा आज मृत प्राय-सा हो रहा है। उसके ऊबड़-खाबड़ धूल से पूर्ण रास्तों तथा तंग गलियों में घूम कर देखिए स्पष्ट देख पड़ेगा कि किसी समय यह नगर भारत के उस विशाल समृद्ध साम्राज्य की राजधानी था, किन्तु ज्यों ज्यों उसका तत्कालीन नाम "अकबराबाद" भूलता गया, त्यों त्यों वह समृद्धि भी विलीन होती गई। इस नगर के क्षीण हृदय जुमा मस्जिद में अब भी शेष जीवन के कुछ चिह्न देख पड़ते हैं, किन्तु इसका बहुत कुछ श्रेय मुस्लिमकाल की उन मृतात्माओं को है जिनको अपने अञ्चल में समेट कर भी विकराल मृत्यु मानव-समाज के स्मृति-संसार से निर्वासित नहीं कर सकी—काल के क्रूर हाथों से उनका नश्वर शरीर नष्ट हो गया, सब कुछ लोप हो गया, किन्तु फिर भी स्मृति-लोक में उनका पूर्ण स्वरूप आज भी विद्यमान है।

मुग़ल-साम्राज्य भंग हो गया। उसका अन्त हुए शताब्दियाँ बीत गईं, किन्तु फिर भी उन दिनों की स्मृति आगरे के वायुमण्डल में रम रही है। ज़मीन से मीलों ऊँची हवा में आज भी ऐश्वर्य-विलास की मादक सुगन्ध, भग्नप्रेम या मृत आदर्श पर बहाये गये आँसुओं की तथा उच्छ्वासों और आहों का तप्त वायु फैला रहता है। भग्न मानव-प्रेम की वह समाधि, मुग़ल-साम्राज्य के आहत यौवन का वह स्मारक ताज, आज भी अपने आँसुओं से तथा अपनी उसासों से आगरे के वायुमण्डल को वाष्पमय कर रहा है। आज भी उन आँसुओं का सोता यमुना नदी में जाकर अदृष्ट रूप से मिलता है तथा आज भी ताज में दफ़नाये गये मुग़ल-साम्राज्य के तड़फते हुए युवा-हृदय की धुकधुकाहट से यमुना के वक्षःस्थल पर छोटी छोटी तरङ्गें उठती हैं और दूर दूर तक उसके निःश्वास की मरमर ध्वनि सुन पड़ती है। कठोर भाग्य के सम्मुख मानव-हृदय की विवशता को देखकर यमुना भी हताश हो जाती है, ताज के पास पहुँचते पहुँचते बल खा जाती है और ताज को छूकर तो उसका हृदय द्रवीभूत हो जाता है और आँसुओं का प्रवाह उमड़ पड़ता है, सीधा बह निकलता है।

आगरे का क़िला अपने गत यौवन पर, अपने विगत ऐश्वर्य पर इतरा इतरा कर रह जाता है। प्रातःकाल में बाल-सूर्य की आशामयी किरणें जब उस रक्तवर्ण क़िले पर गिरती हैं तब वह चौंक उठता है। उस स्वर्ण-प्रभात में वह भूल जाता है कि अब उसके उन गौरव-पूर्ण दिनों का अन्त हो गया, और पूर्ण तेज़ी के साथ चमक उठता है। किन्तु शीघ्र ही कुछ ही समय में उसका वह सुख-स्वप्न भंग हो जाता है, उसकी वह ज्योति, उसका वह सुखमय उल्लास और उदासी निराशापूर्ण सुनसान वातावरण में परिणत हो जाती है। उस आशापूर्ण हर्ष से दमकते हुए मुख पर पतन की स्मृति छाया फैलने लगती है और दिवस भर के उत्थान के बाद, सन्ध्या के समय अपने पतन को देखकर क्षुब्ध मरीचि-माली जब पश्चिम-दिशा के वृक्षों के झुरमुट में अपना मुख छिपाने को दौड़ पड़ते हैं और बिदा होने से पहले अश्रुपूर्ण नेत्रों से जब वे उस अमर करुण कहानी की ओर एक निराशापूर्ण दृष्टि डालते हैं तब तो वह पुराना क़िला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

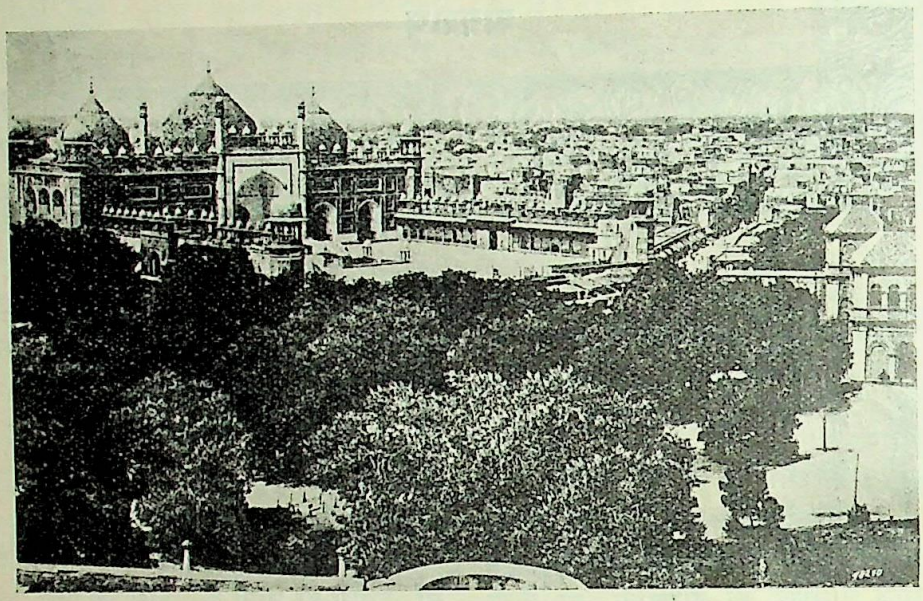

[आगरा नगर तथा जुमा मस्जिद का एक दृश्य]

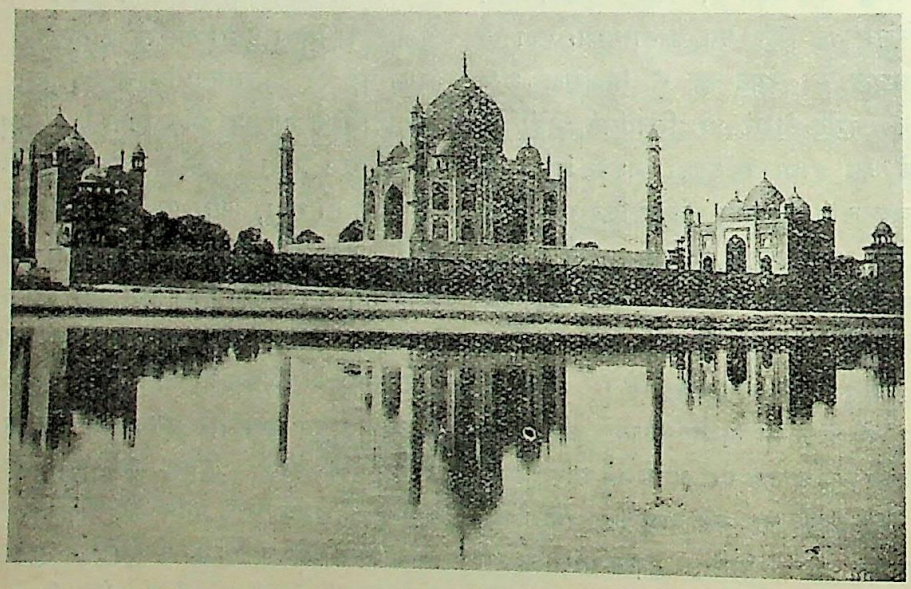

वह अमर करुण कहानी
[ताजमहल का एक दृश्य]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रो पड़ता है और अपने लाल लाल मुख पर जहाँ आज भी सौन्दर्य-पूर्ण विगत यौवन की झलक देख पड़ती है, अन्धकार का काला घूँघट खींच लेता है।

वर्तमान काल की दशा पर ज्यों ही आत्म-विस्मृति का पट गिरता है, अन्तःचक्षु खुल जाते हैं और पुनः पुरानी स्मृतियाँ जीवित-सी देख पड़ने लगती हैं। तब उस सुन्दर सुम्मन बुर्ज़ को पुनः उस दिन की याद आ जाती है जब उस करुणापूर्ण वातावरण में मृतशय्या पर पड़ा हुआ शाहजहाँ ताज को देख कर उच्छ्वासें भर रहा था, जहाँनआरा अपने सम्मुख निस्संग करुण जीवन के भीषण तम को आते देख कर रो रही थी और जब उनके साथियों के जिनके पत्थर-हृदय भी पिघल गये थे और वह शोयत बुर्ज़ भी रोने लगा था, आँसू ढुलक ढुलक कर इधर-उधर ओस की बूँदों के रूप में बिखरे पड़े थे।

और वह मोती मस्जिद, लाल लाल क़िले का वह सफ़ेद मोती, आह! आज वह खोखला हो गया। उसका ऊपरी आवरण, उसकी चमक-दमक वैसी ही है, किन्तु उसकी आभा अब विलीन हो गई। उसका वह रिक्त भीतरी भाग धूलि-धूसरित हो रहा है और एक-आध व्यक्ति के अतिरिक्त उस मस्जिद में परमपिता परमेश्वर का नाम लेनेवाला भी नहीं मिलता। प्रति दिन सूर्य पूर्व से पश्चिम को चला जाता है, सन्ध्या हो जाती है, सिहर सिहर कर वायु बहता है, किन्तु ये शोयत-प्रस्तर-खण्ड सुनसान अकेले ही खड़े खड़े अपने दिन गिना करते हैं। उस निर्जन स्थान में एक-आध व्यक्ति को देखकर ऐसा अनुमान होता है कि उन दिनों में यहाँ आनेवाले व्यक्तियों में से किसी की मृतात्मा अपनी पुरानी स्मृतियों के बन्धन में पड़कर खिंची चली आई है। प्रार्थना के समय 'मुअज़्ज़म' की आवाज़ सुन कर यही प्रतीत होता है कि शताब्दियों पहले गूँजने-वाली हलचल, चहल-पहल तथा शोर-ग़ुल की प्रति-ध्वनि आज भी उस सुन्दर परित्यक्त मस्जिद में गूँज रही है।

उस लाल लाल क़िले में मोती मस्जिद, ख़ास-महल आदि भव्य भवनों को देख कर यही प्रतीत होता है कि अपने प्रेमी की, अपने संरक्षक की मृत्यु से उदासीन होकर इस क़िले ने वैराग्य धारण कर लिया है और अपने अरुण शरीर पर शोयत भस्म रमा ली है।

आज भी क़िले के उस जहाँगिरी महल में जो विगत यौवन की लाली से अब भी रंजित है, प्रतिदिन अन्ध-कार-पूर्ण रात्रि में जब भूतकाल की यवनिका उठ जाती

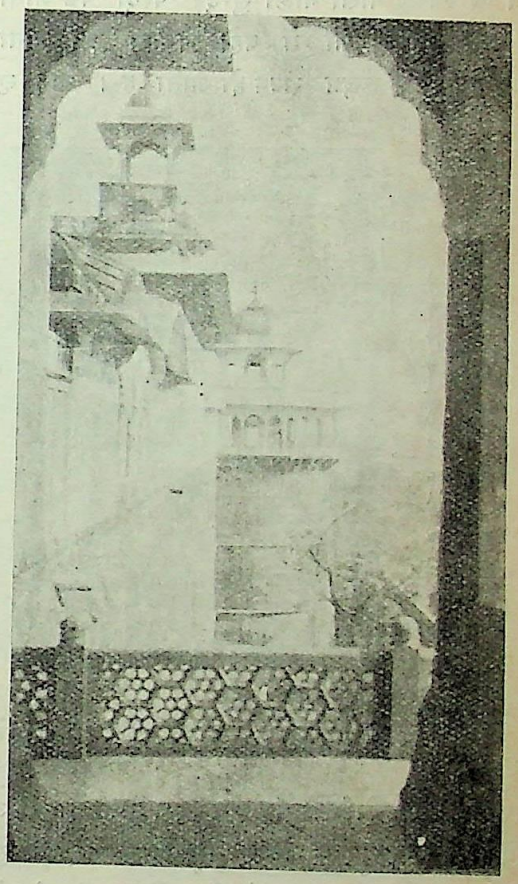

[आगरे का क़िला (१)]

है तब पुनः उन दिनों का नाट्य होता देख पड़ता है जब अनेकों की वासनायें अतृप्त रह जाती थीं और अनेकों की जीवन घटिकायें निराशा के ही अन्धकारमय वातावरण में विलीन हो जाती थीं। और जब प्रेम के उस बालु-कामय शान्ति-जल-विहीन ऊसर में पड़े पड़े अनेकों गरमी के मारे तड़फते थे। उस सुनसान परित्यक्त महल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात्रि के समय उल्लास-पूर्ण हास्य की प्रतिध्वनि तथा विषादमय करुण-क्रन्दन आज भी सुन पड़ता है। वे अशान्त आत्मायें आज भी उन वैभव-विहीन खँडहरों में घूमती हैं और सारी रात रो रो कर अपने आपार्थिव अश्रुओं से उन पत्थरों को लथपथ कर देती हैं। किन्तु जब पूर्व में अरुण की लाली दृष्टिगोचर होती है, आसमान पर स्वच्छ नीला नीला सुन्दर परदा पड़ जाता है, तब पुनः इन महलों में वही सन्नाटा छा जाता है, स्तब्धता का एकच्छत्र राज्य हो जाता है। उन मृतात्माओं की यदि कोई स्मृति शेष रह जाती है तो उनके वे बिखरे हुए अश्रुकण, किन्तु क्रूर काल उन्हें भी सुखा देना चाहता है। अगर यहाँ की शान्ति कभी भंग होती है तो केवल दर्शकों के पदक्रम तथा "गाइडों" या प्रदर्शकों की टूटी-फूटी भाषा से। रात और दिन में कितना भेद हो जाता है!

उस मृतप्राय क़िले का जो अब केवल कंकालावशेष रह गया है, हृदय आज बाहर निकल पड़ा सा प्रतीत होता है। तारिकामय आकाश में चँदवे के नीचे पड़ा है वह काले पत्थर का टूटा हुआ सिंहासन जिस पर किसी समय नरम गुदगुदे मख़मल का आवरण छाया हुआ था, जिसको सुशोभित करने के लिए भी प्रयत्न किये गये थे। आज उसी की यह दशा है वह पत्थर था किन्तु फिर भी उसमें जीवन था, वह काल था किन्तु उससे भी शक्ति और प्रेम का शुद्ध स्वच्छ सोता बहता था। अपने निर्माता के वंशजों का पतन देखकर, उनके स्थान पर छोटे छोटे नगण्य शासकों को शक्तिशाली होते देखकर जब इस क़िले ने वैराग्य धारण किया, अपने यौवन-पूर्ण रक्त गात्रों पर भगवाँ डाल लिया—भस्म रमा ली, तब तो वह छोटा-सा हृदय अपने आवरणों से बाहर निकल पड़ा—क्षुब्ध होकर रोने लगा। वह सुकोमल हृदय अन्त में विदीर्ण हो गया और उसमें से रक्त की दो बूंदें टपक पड़ीं। मुग़लों के पतन को देखकर पत्थर तक पिघल गये, परन्तु उनके वंशज ऐश्वर्य और विलास में पड़े पड़े सुख की नींद सो रहे थे। कितना करुणाजनक दृश्य था! उनके दीर्घ जीवन की आशा कौन कर सकता था?

और वह शीश-महल, मानव-काञ्चन-हृदय के टुकड़ों से सुशोभित वह स्थान कितना सुन्दर, भीषण तथा

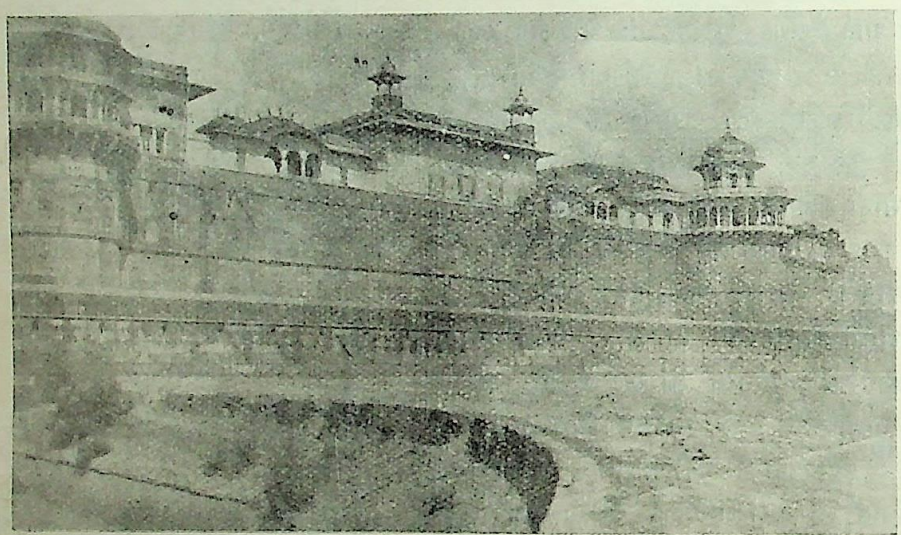

[आगरे का क़िला (२)]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्यमय है ? यौवन तथा ऐश्वर्य से मदोन्मत्त सम्राटों को अपने खेल के लिए मानव-हृदय से अधिक आकर्षक वस्तु और नहीं मिली। अपने विनोदार्थ उन्होंने अनेकों का हृदय चकनाचूर कर डाला। भोले भोले हृदयों के उन स्फटिक टुकड़ों से उन्होंने अपने विलास-भवन को सजाया। एक बार तो वह जगमगा उठा। परन्तु जब साम्राज्य के यौवन की रक्तिम ज्योति विलीन हो गई, उस शीश-महल में अन्धकार ही अन्धकार छा गया। मानव-जीवन पर कालिमामयी यवनिका डालनेवाली उस कराल मृत्यु का भयङ्कर तमसावृत पटल उस स्थान पर गिर पड़ा। दर्शकों के सम्यक् प्रकारेण देखने के लिए उस अन्धकार को मिटाने के हेतु गन्धक जला कर ज्योति की जाती है। दर्शक समझते हैं कि उन्हें सम्पूर्ण दृश्य देख पड़ा। परन्तु उस अन्धकार को कौन मिटा सकता है ? वह तो निरन्तर बढ़ता ही जाता है।

आगरे के क़िले के भीतर का मीनाबाज़ार जहाँ कला का ढकोसला रच कर अकबर अपनी इन्द्रिय-लोलुपता को शान्त करने के लिए अनेक पवित्रात्माओं को अपने जाल में फँसाता था, यौवन-मद को छिपाने के लिए उस बाज़ार ने भी अपने मुख पर श्वेत जालियों की नक़ाब डाल ली है। विलास में विलोड़ित रह कर भी इन कामुकों को खुले-मुँह आने का साहस न था। कला-प्रदर्शन की ओट में वासना का नङ्गनाच होता था, और आज भी उन प्रासादों में प्रतिबिम्बित होता है राजश्री का वह विकराल स्वरूप, उसका वह चमचमाता हुआ रक्तपिपासु छुरा और वहाँ आज भी सुन पड़ती है उस वीर पत्नी की वह रोषपूर्ण हुंकार जिसको सुनकर भारत-विजेता अकबर भी नतमस्तक होगया, पाँवों पड़ कर क्षमा-प्रार्थना करने लगा।

सुन्दरता में ताज का प्रतियोगी एतमाउद्दौला का मक़बरा भाग्य की चञ्चलता का मूर्त्तिमान स्वरूप है। राह राह में घूमनेवाले भिखारी का ऐसा मक़बरा भूखों मरते तथा भाग्य की मार से पीड़ित रंक की क़ब्र ऐसी होगी, यह कौन जानता था ? एक श्वेत समाधि भाग्य के कठोर थपेड़े खाये हुए व्यक्ति के सुखान्त जीवन की कहानी है। ऐसा जान पड़ता है, मानो श्वेत पत्थर के इस मक़बरे के स्वरूप में सौभाग्य घनीभूत हो गया है।

यौवनमद से उन्मत्त साम्राज्य में नूरजहाँ के उत्थान के साथ ही वासनाओं के भावी अन्धड़ के आगमन की सूचना देनेवाली तथा उस अन्धड़ में भी साम्राज्य के पथ को प्रदीप्त करनेवाली वह ज्योति मुग़ल-साम्राज्य की एक अद्भुत वस्तु है।

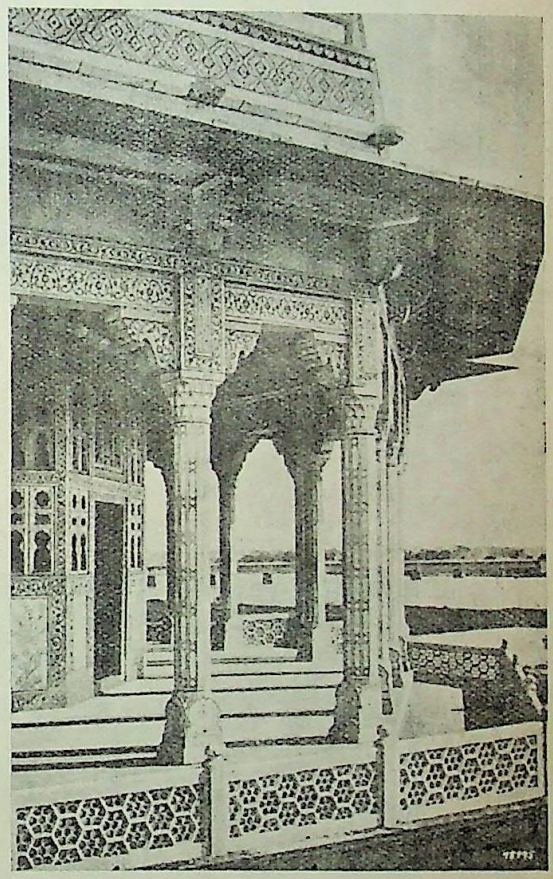

[वह सुन्दर सुम्मन बुर्ज]

और इस मृतप्राय नगरी से कोई ५ मील की दूरी पर स्थित है वह अस्थिविहीन पञ्जर। अपनी प्रियतमा नगरी की भविष्य में होनेवाली दुर्दशा की आशंका से अभिभूत होकर ही अकबर ने अपना अन्तिम निवास स्थान उस नगरी से कोसों दूर बनाने का आयोजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

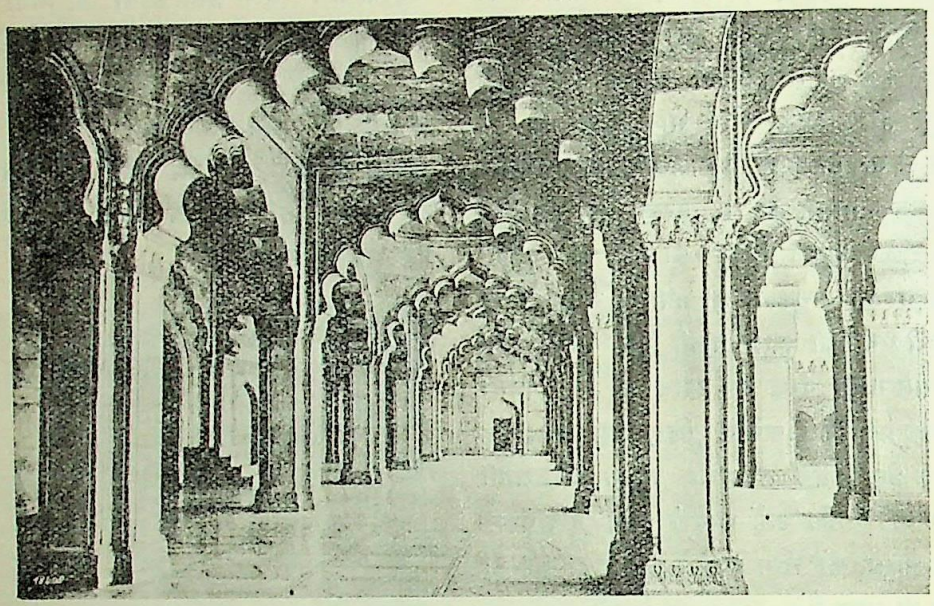

[मोती मस्जिद का रिक्त भीतरी भाग]

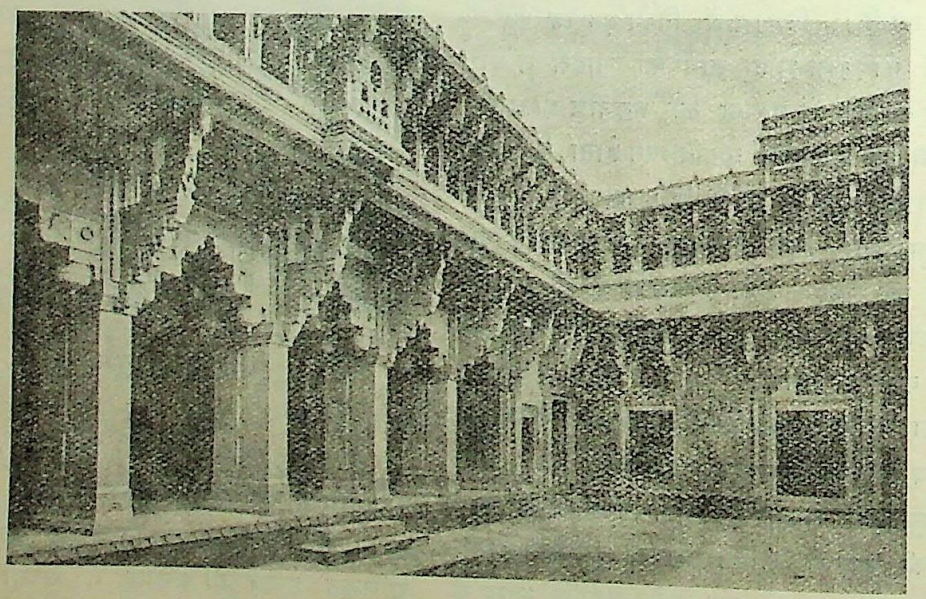

[जहाँगीरी महल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

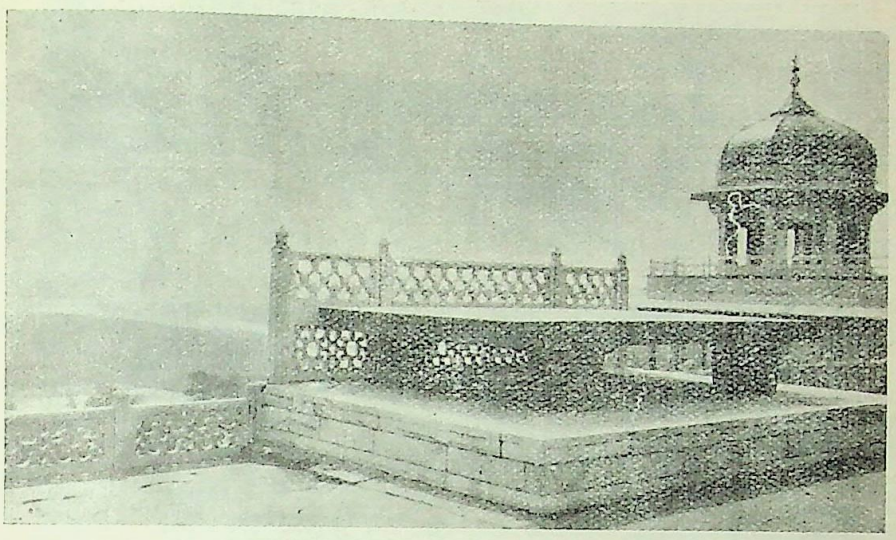

[टूटा हुआ काला सिंहासन]

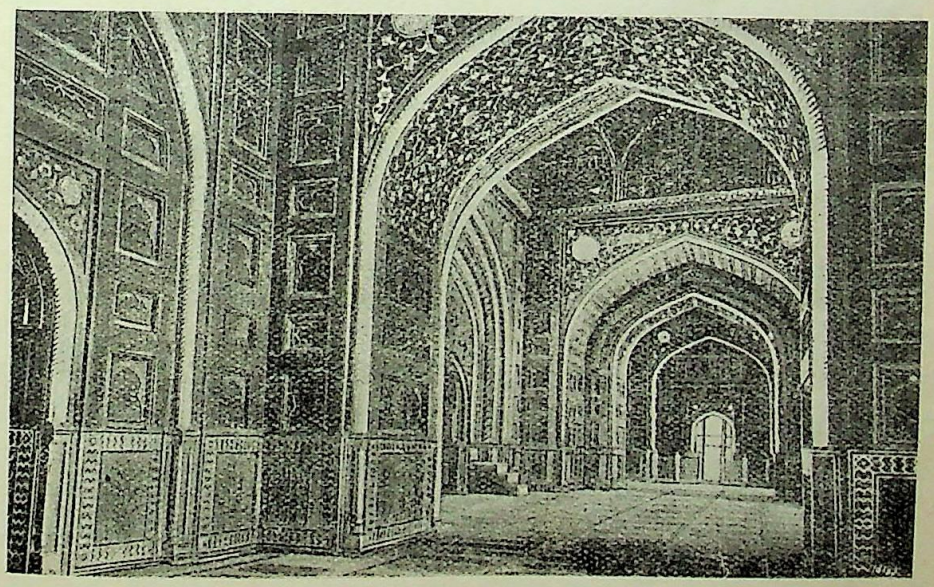

[शीश-महल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

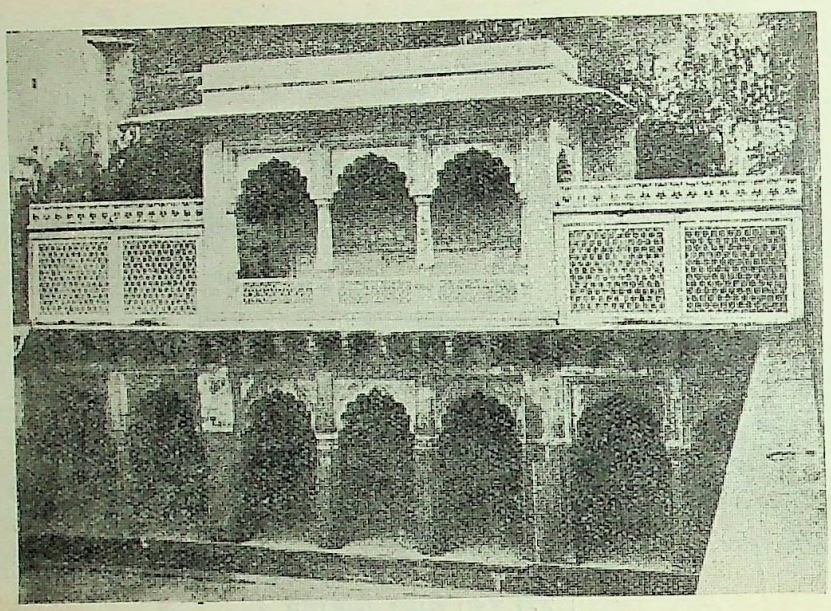

[भीतरी मीना बाज़ार]

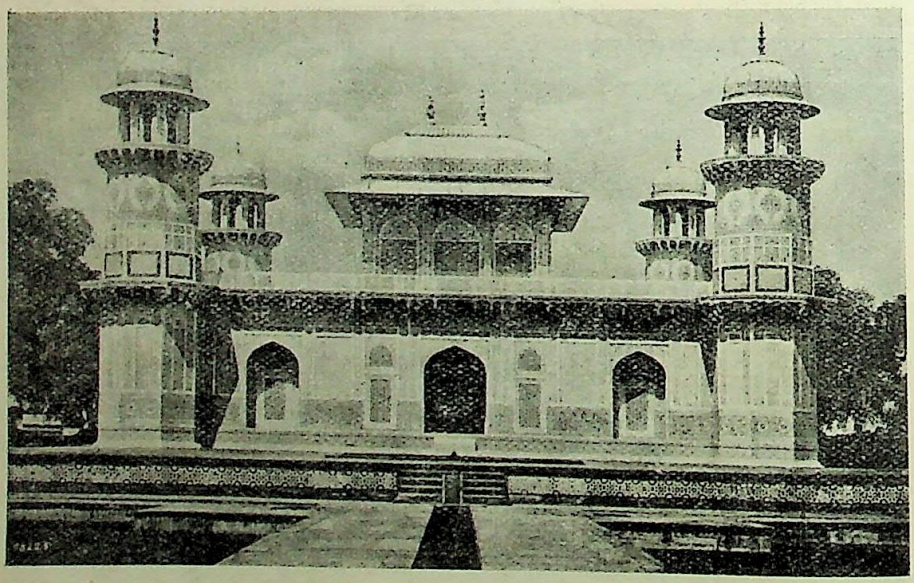

[एतमाउद्दौला का मक़बरा]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था। अकबर का सुकोमल हृदय शुष्क होकर भी अपनी कृतियों की दुर्दशा कभी देखना नहीं चाहता था।

अपने ढङ्ग की यह निराली समाधि एक अतीव सुन्दर वस्तु है। उस शान्त वातावरण में एक लम्बे-चौड़े बाग़ में यह समाधि बनी है। अकबर के समान ही यह भी दूर से एक साधारण सी वस्तु जान पड़ती है। किन्तु ज्यों ज्यों उसके पास जाते हैं, उस समाधि-भवन में पदार्पण करते हैं, त्यों त्यों उसकी महत्ता और विशेषता अधिकाधिक देख पड़ती है। अकबर के उस महान् अव्यावहारिक धर्म दीन-ए-इलाही का इस पृथ्वी पर एकमात्र स्मारक यही है और उसी धर्म के समान इस समाधि के निर्माण करने में अनेकानेक वास्तुकला के आदर्शों का सम्मिश्रण किया गया है।

किन्तु उस विशाल समाधि में भी अकबर का शव शान्ति से नहीं रह सका, विश्वप्रेम तथा मानव-भ्रातृत्व के प्रचारक अकबर के अन्तिम अवशेष भी विश्व में मिल जाना चाहते थे। विशालहृदय अकबर मर कर भी कठोर पत्थरों के उस संकुचित प्राकार में नहीं समा सका। अपने अप्राप्त आदर्शों की ही अग्नि में जलकर उसकी अस्थियाँ भस्मसात् हो गईं और वह भस्म वायुमण्डल में व्याप्त हो गई, विश्व के कोने-कोने में समा गई। अकबर की हड्डियाँ भस्मावशेष हो गईं, परन्तु अपने आदर्शों को न प्राप्त कर सकने से उसकी अशान्त ज्वाला आज भी न बुझी। वह टिमटिमाती हुई लौ आज भी अकबर की समाधि पर जल रही है और धार्मिक संकीर्णता के अन्धकार से पूर्ण विश्व के सदृश विशाल गुम्बज में उस महान् आदर्श की ओर संकेत करती है जिसको प्राप्त करने के लिए शताब्दियों पहले अकबर ने प्रयत्न किये थे।

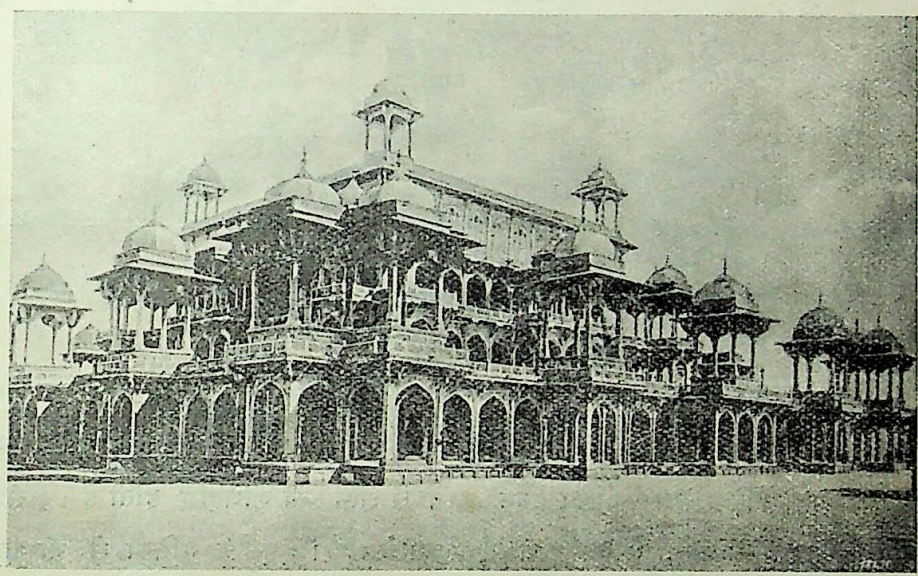

वह अस्थिविहीन पञ्जर
[अकबर का मक़बरा]

यों बिखरे पड़े हैं मुस्लिम-साम्राज्य के भग्नावशेष उस मृतप्राय नगरी में। जिन्होंने उस नगरी का निर्माण किया था उनका अन्त होगया और अब उनका नामलेवा भी कोई न रहा। सब कुछ नष्ट होगया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह गौरव, वह ऐश्वर्य, वह समृद्धि, वह समता, सब विलीन हो गई। मुस्लिम-साम्राज्य के उन महान् मुग़ल-सम्राटों की स्मृतियों के रह गये हैं वे अवशेष, यत्र-तत्र बिखरे हुए वैभव-विहीन वे खँडहर, उन सम्राटों के विलास के स्थान, ऐश्वर्य के आगार, उनके मनोभावों के स्मारक शताब्दियों से धूलधूसरित हो रहे हैं। पानी, सरदी और धूप की मार सह रहे हैं। उनका निर्माण करने उनके निर्माताओं के विलास और सुख की सामग्री ए करने में जो जो पाप तथा सहस्रों दरिद्रों के ह को कुचल कर जो जो अत्याचार किये गये थे, मानो उ का प्रायश्चित्त ये आगरे के भग्नावशेष कर रहे हैं।

—रघुवीरसिंह

कोशोत्सव-स्मारक-संग्रह

नाम से ही प्रकट है कि यह संग्रह-ग्रन्थ है। इसमें लब्धप्रतिष्ठ लेखकों के निबन्धों का संपादन प्रसिद्ध पुरातत्त्वज्ञ, राय बहादुर, महामहोपाध्याय पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्दजी ओझा ने किया है। लेख एक से एक बढ़िया हैं। उनका मनन करने से ज्ञान की अभिवृद्धि होती है। संग्रह के अन्त में तीन कविताएँ और आरम्भ में, संस्कृत पद्य में, शुभाशंसा है। इसकी भूमिका से भी बहुत सी काम की बातें मालूम होती हैं। यह संग्रह राय साहब बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० को, 'हिन्दी-शब्द-सागर' नामक बृहत्कोश की समाप्ति के उपलक्ष्य में, अर्पण किया गया था। अतएव उक्त बाबू साहब के, विभिन्न वयस् के, चार चित्रों के अतिरिक्त एक चित्र काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के भवन का भी दिया हुआ है। पुस्तक बढ़िया काग़ज़ पर छापी गई है। रायल साइज़ के सवा पाँच सौ से ऊपर पृष्ठ हैं। सुन्दर जिल्द है। मूल्य सिर्फ़ ५) पाँच रुपये।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

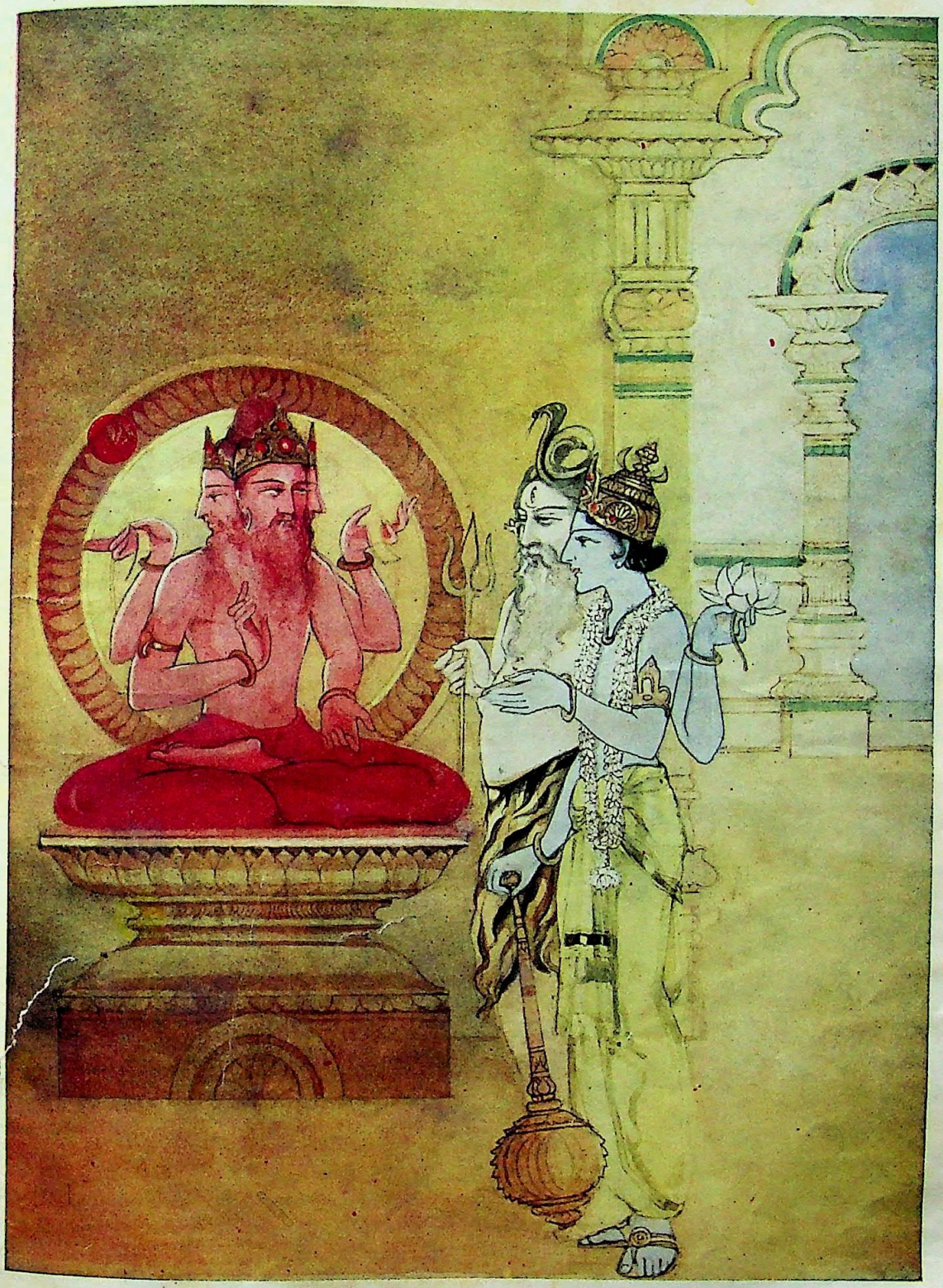

देवत्रय

इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चित्रकार—श्रीयुत उपेन्द्रचन्द्र घोष दस्तिदार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'और मेरे भी'

(१)

क्या करें ? बिना कुछ इतिहास सुने आपको कहानी में मज़ा नहीं आयेगा। इसलिए प्रस्तावना के रूप में कुछ कहते हैं—

दक्षिण अफ़्रीका में कई जातियाँ बसती हैं। अँगरेज़, बोअर, मलायी, भारतीय, हब्शी आदि। इनमें से मलायी और बोअर लोगों का सम्बन्ध हमारी कहानी से नहीं है।

भारतीय भी कई तरह के हैं। मुक्त भारतीय, व्यापारी भारतीय और गिरमिटिये भारतीय। दक्षिण-अफ़्रीका में बहुत-सी सोने की खानें हैं। उनमें काम करने के लिए जो ग़रीब भारतीय तीन या पाँच साल के एग्रीमेण्ट या गिरमिट पर जाते थे वे गिरमिटिया और मियाद ख़तम होने पर वहीं बस जानेवाले मुक्त भारतीय कहलाते हैं।

एक नई ख़च्चरी जाति और चल निकली है। हब्शिन युवतियों और गोरों के व्यभिचार-स्वरूप उत्पन्न हुए बालक-बालिकायें 'कलर्ड' कहलाते हैं।

बस, हमारी कहानी की इतनी प्रस्तावना काफ़ी होगी।

(२)

मनसुख गौड़ की स्त्री अभी अभी मरी है। खान में काम करते करते बेचारी तपेदिक़ का शिकार होगई।

बुढ़ापे के विच्छेद में कैसी कसक होती है, यह आप क्या जानें ? पचीस वर्ष साथ रही और पैंतालीस वर्ष की उम्र में ले-दे होगई ! अब यहाँ परदेश में मनसुख को एक बार तो सब तरफ़ अँधेरा ही अँधेरा दीखने लगा। पर फिर उस अँधेरे में बेटी ने टिमटिमाते हुए दीपक की तरह क्रमशः दीखने लायक़ प्रकाश कर दिया।

बेटी का पैदाइशी नाम बड़ा अजीब था—झरो ! मगर जब से परदेश आये हैं, उसके नाम का बहुत सुन्दर संस्करण कर दिया गया है—जसरानी।

स्त्री मरी, उस समय जसरानी सोलह वर्ष की थी। मनसुख का विचार एक वर्ष बाद, गिरमिट पूरी होने पर, देश जाकर बेटी ब्याहने का था। पर होना यह थोड़े ही था ?

हब्शिन मा से असहयोग करके 'कलर्ड' हम्बूल ने अपने नाम को ज़रा खींचकर 'हम्बेल' किया। अँगरेज़ी थोड़ी और सीखी, और कोट-पतलून पहन कर एक सब्ज़ी की दूकान का मालिक बन गया। उम्र उसकी तेईस वर्ष की थी, रङ्ग गोरा, और नक्श अच्छे। दिल का भी बुरा नहीं था। और एक लम्बे 'डैश' के बाद कहना यह है कि जसरानी से धीरे धीरे उसका प्रेम होगया !

(३)

"तो फिर ?"

"क्या ?"

"मेरी ज़िन्दगी बर्बाद करोगी ?"

"वाह ! कैसे ?"

"अब बार बार समझाऊँ ?"

"न ! ज़िन्दगी नष्ट कैसे होगी ?"

"तुम्हारे बिना मेरा जीवन क्या जीवन है ?"

"फिर क्या है ?"

"कुछ नहीं है ! क्यों जलाती हो !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या जलाती हूँ ?"

"उस दिन कहती थी—बल्कि एक उसी दिन क्यों, हमेशा ही कहती रही हो"।

"क्या ?"

"कि हमारा-तुम्हारा ब्याह हो चुका, मैं और किसी से ब्याह न करूँगी,—और आज ऐसी उखड़ी उखड़ी बातें।"

"न! कोई उखड़ी उखड़ी बातें नहीं।"

"फिर ?"

"ब्याह तो हमारा-तुम्हारा हो चुका, अब भी कहती हूँ!"

"और किसी से ब्याह न करोगी ?"

"वाह! और किसी से कैसे करूँगी ?"

"क्या तमाशा करती हो ?"

"क्या ?"

"ब्याह हमारा-तुम्हारा हो चुका है तब मेरे साथ चलती क्यों नहीं ?"

"कहाँ ?"

"जहाँ मैं ले चलूँ।"

"यह नहीं होगा। बाप के प्रति भी तो कुछ कर्तव्य है।"

"कब तक कर्तव्य है ?"

"जब तक वह जीवित है।"

"पर अगले साल तो वह अपने देश जा रहा है।"

"फिर क्या हुआ ?"

"तुम भी जाओगी ?"

"अवश्य।"

"और मैं ?"

"तुम! तुम यहीं रहना। मुझे चिट्ठी लिखा करना!"

"छिः! कैसी बच्चों की-सी बातें करती हो? अरे भई, ब्याह के बाद तो तुम मेरी हो!"

"छिः! तुम कैसी बातें करते हो? क्या ब्याह के बाद बेटी पर बाप का कुछ अधिकार नहीं रहता ?"

"रहता क्यों नहीं ?"

"फिर ?"

"यह तो ठीक है—पर देखो तो—उतनी दूर भारतवर्ष, से मैं तुम्हें कैसे लाऊँगा ?"

"मत लाना!"

"न लाऊँ ?"

"हाँ, वहीं छोड़े रखना! राज़ी-खुशी की चिट्ठी लिखते रहना!"

"न—हाँ, मगर देखो तो—यदि मैं तुम्हें जाने की आज्ञा न दूँ ?"

"मैं आज्ञा माँगती ही कब हूँ ? मेरा जो धर्म है वह करती हूँ।"

"तो तुम जाओगी ज़रूर!"

"ज़रूर! ज़रूर!!"

"और जो मैं दूसरा ब्याह कर लूँ ?"

"कर लो।"

"तो तुम भी दूसरा ब्याह कर लोगी ?"

"न, कभी नहीं; मेरे तो तुम पति हो चुके!"

मिनट-भर की निस्तब्धता, और फिर—

"तुम तो बड़ी अद्भुत हो!"

"और तुम 'बड़ी अद्भुत' के पति हो, जो अपना धर्म नहीं समझते!"

"तुम अपना धर्म समझती हो, जो पति के साथ विश्वास-घात कर रही हो!"

"विश्वास-घात! न, यह मत कहो। मैं जीवन में किसी पर-पुरुष को न देखूँगी। पर देखो तो बाप की सेवा करना तो मेरा धर्म है!"

"हूँ!!"

इस गहरी 'हूँ!' के बाद फिर थोड़ी देर को गम्भीर निस्तब्धता!

तब—

"अच्छा, अगर तुम्हारा बाप यहाँ से न जाय।"

"तो मैं भी न जाऊँगी।"

"फिर मेरे पास रहो।"

"न, बाप के जीते-जी नहीं।"

"अगर वह अपनी खुशी से तुम्हें आज्ञा दे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, तब रहूँगी।"

"अच्छी बात है!"

(४)

"जानती हो? क्या जवाब दिया?"

"बताओ।"

"रहने ही दो तो अच्छा है।"

"अच्छा।"

"सुनो, मेरे दोस्त मुखराम ने जाकर तुम्हारे बाप से कहा तब वह कहने लगा—'उस साले दोग़ले को मैं अपनी बेटी ब्याहूँ? राम! राम! कैसा प्रस्ताव लेकर तुम मेरे पास आये हो?'—कहकर उसने बेचारे मुखराम को ख़ूब ज़लील किया!"

"अच्छा!"

"हाँ, अब कहो, मेरा और तुम्हारा क्या धर्म है?"

"तुम्हारा धर्म यहाँ रहना, मेरा धर्म बाप के साथ देश जाना।"

"निश्चय है?"

"निश्चय।"

"तुम अपने बाप से यह नहीं कह सकती कि मैं भारत नहीं जाऊँगी। यहीं रहूँगी—और हम्बेल के साथ विवाह करूँगी।"

"न! मैं ऐसा करके बाप का दिल दुखाना नहीं चाहती!"

क्षण भर के लिए चुप!—और फिर—

"पिशाचिनी! मुझे धोखा देती है!"

"धोखा कैसे?"

"जब तुम यहीं बाप से यह नहीं कह सकती तो वहाँ कैसे कहोगी?"

"कहाँ? स्वदेश में?"

"हाँ!"

"ओह! उसका उपाय मैंने सोच लिया है।"

"क्या उपाय?"

"अफ़सोस! अभी तुमको बता नहीं सकती!"

"तू झूठी है! तू दग़ाबाज़ है! तू पिशाचिनी है।"

मूक आत्म-समर्पण और अव्यक्त वेदना का एक शीतल उच्छ्वास

"बोल!"

"क्या?"

"तू मेरे साथ रहेगी या नहीं?"

"नहीं।"

"जब तक बाप जीता है तभी तक नहीं न?"

"हाँ। (सहसा काँपकर)। पर देखो, इस जन्म में शायद ही मैं तुम्हारे पास रह सकूँ! क्योंकि भारत से यहाँ मेरे लिए आना और तुम्हारे लिए वहाँ जाना असम्भव होगा। अच्छा हो, तुम मुझे त्यक्ता बनाकर दूसरा ब्याह कर लो!"

पर हम्बेल उसकी पूरी बात सुनने को वहाँ नहीं ठहरा, और बड़बड़ाता चला गया।

(५)

मनसुख मर गया! मनसुख मर गया! खान में पत्थर सिर पर गिरने से मनसुख मर गया!

क्रिया-कर्म हो चुका है। बाप को मिट्टी देकर जसरानी घर आई है। अब तक न रोई है, न चिल्लाई है, न किसी से बोली है। केवल बार बार टकटकी लगाकर आकाश की ओर देखती या सहसा चौंक कर इधर-उधर ताकती रही है, मानो किसी को खोजती है।

पर घर में घुसते ही पानी ज़ोर करके आँखों में उछल आया है। नङ्गी खाट पर पड़कर खुरदुरे बानों से माथा रगड़ रगड़ कर ख़ून और पानी एक करने लगी है।

सहसा 'बहन! बहन!' कहता मुखराम अहीर घर में घुस आया।

ख़ूनम-ख़ून चेहरा उठाकर जसरानी ने मुखराम की तरफ़ देखा।

मुखराम के चेहरे पर रक्त का नाम नहीं है, आँखें लाल हो रही हैं, शरीर काँप रहा है, जैसे अनुताप की अग्नि ने उसका सब कुछ सोख लिया है। आकर उसके पैरों के पास बैठ गया और ज़मीन में माथा रगड़ कर बोला—बहन! मुझ पापी को क्षमा करो!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्षमा ! क्या हुआ ?"

"मैंने तुम्हारे बाप को मारा है।"

"तुमने ?"

"हाँ, मैंने।

"तुमने ? तुमने क्यों ?"

"मुझ पर लोभ सवार हो गया।"

"कैसा लोभ ?"

"हम्बेल ने पचास पौंड का लोभ दिया !"

"हूँ !"

जसरानी मूर्च्छित है ! कोई उसे न छेड़े, तभी ठीक है ! मुखराम भी छेड़ने का साहस न कर सका।

बहुत देर के बाद जसरानी ने एक लम्बी और गहरी साँस छोड़ कर कहा—जाओ भाई, परमात्मा तुम्हारा भला करे !

"बहन, मैंने बड़ा पाप किया, मुझे क्षमा करो !"

"जाओ, चले जाओ, परमात्मा तुम्हें क्षमा करे !"

"बहन !"

"क्या ?"

"तुम अकेली हो।"

"फिर ?"

"अगर उचित समझो तो।"

"तुम्हारे यहाँ ? असम्भव ! जाओ, इसी वक्त यहाँ से चले जाओ !

पापी मुखराम अब वहाँ कैसे ठहरता ?

(६)

हम्बेल आया है जसरानी से सम-वेदना प्रकट करने। रूमाल आँखों से लगाये हुए है।—जाने, उमड़ते हुए आँसू या उमड़ती हुई हँसी—किसको रोकने के लिए यह रूमाल लगा है !

"जसरानी !"

"कौन ? आओ !"

जसरानी भोला, गम्भीर, उदास चेहरा बनाकर, सतर्क होकर बैठ गई। न क्रोध, न सन्देह, न मलामत—कुछ उसकी आँखों में नहीं है !

"जसरानी, मुझे बड़ा रञ्ज हुआ, सुनते ही दौड़ा आया हूँ।"

बेचारे कच्चे दिलवाले हम्बेल का गला भर आता है।

जसरानी भी ऐसे समय के उपयुक्त रोते कण्ठ से कहती है—क्या किया जाय हम्बेल ? ईश्वर को यही मञ्जूर था। अफ़सोस करने से क्या होता है !

हम्बेल ने अपने जीवन-भर इसके जोड़ का आश्चर्य नहीं देखा है। कैसे रोती बिलखती प्रेमिका को धीरज बँधाऊँगा, अपने ऊपर ज़रा-सा भी सन्देह करने पर कैसे कैफ़ियत दूँगा, यह सब नक़शा बनाकर लाया था। ग़रीब की सारी मेहनत बेकार हुई !

और फिर सबके बाद और भी जो कुछ कहना चाहता था वह भी मुँह से निकलने को नहीं होता !

बहुतेरी कोशिश करता है। वह बात कहे, मगर कैसे कहे ? फूटे हुए फोड़े को तो मरहम लगाकर छूने का साहस करता, पर उसे बिना मरहम लगाये कैसे छुए ?

आख़िर बोला—तो मैं चलूँ ?

"अच्छा !"

"कोई काम ?"

"नहीं, कुछ नहीं !"

"कुछ रुपये-पैसे की ज़रूरत ?"

"नहीं, कुछ ज़रूरत नहीं !"

"ख़ैर, ज़रूरत हो तब माँग लेना; मेरे सिवा अब है और कौन ?"

"परमात्मा !"

"हैं ! क्या ? हाँ, परमात्मा तो है ही। अच्छा, चलता हूँ; शाम को आऊँगा !"

"अच्छा।"

(७)

शाम को।

"अरे ! यह क्या ?"

"क्या ?"

"घर का सामान क्या किया ?"

"दे दिया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किसे ?"

"ग़रीब हब्शियों को बाँट दिया !"

"वाह ! बाँट दिया ! क्यों ?"

"मैं अब इस घर में नहीं रहूँगी ।"

"ख़ैर, तुम्हारी ख़ुशी; नहीं रहना चाहती तो चलो तुम्हारा घर पड़ा है; मगर सामान क्यों बर्बाद कर दिया ?"

ज़ोर की अट्टहास-ध्वनि हुई, और जसरानी ने कहा—"ओहो ! तुम क्या मुझे अपने घर ले चलने का इरादा रखते हो ?"

"और क्या ? मेरा घर कहाँ ? अब तो तुम्हारा घर है। चलो ।"

"न ! मैं तो और जगह जा रही हूँ ?"

"कहाँ ?"

"जेल में !"

"जेल में ?"

"हाँ । तुम्हें मालूम है कि हर एक भारतीय को तीन पौंड सालाना कर देना पड़ता है ।"

"हाँ ।"

"और तुम्हें यह भी मालूम है कि इस कर के विरुद्ध हमारे नेता गांधीजी ने सत्याग्रह-युद्ध आरम्भ किया है ।"

"हाँ, फिर ?"

"उस सर्वत्यागी महापुरुष की स्त्री तक जेल में चली गई है और अनेक गण्य-मान्य स्त्रियाँ सर्वस्व त्याग कर जा रही हैं तब मैं बाहर क्यों रहूँ ?"

'अरे ! तो तुम जेल जाओगी ?"

"हाँ, जा रही हूँ; पहले गाँधीजी के पास, फिर जेल में !"

"अरे नहीं, चलो, घर चलो ।"

"घर ? घर नहीं, जेल !"

"वाह ! तुम मेरी स्त्री हो ! मैं तुम्हें ज़बर्दस्ती जेल जाने से रोकूँगा ।"

तब जसरानी तनकर खड़ी होगई, और आँख से आँख मिलाकर बोली—तुम ? तुम्हारी शक्ति इतनी है ?"

हम्बेल ने घिघिया कर मुँह फेर लिया ।

एक गठरी हाथ में उठाकर जसरानी चल दी ।

हम्बेल ने पुकारा—जसरानी, क्या जेल से छूट कर मेरे घर आओगी ?

"नहीं ! मेरी आशा छोड़ो ! दूसरा ब्याह करलो !" जसरानी की आवाज़ में जैसे आकाशवाणी हुई ।

(८)

इस चार महीने के समय में कैसे उलट-फेर हो गये हैं ! हम्बेल ने एक सुन्दर 'कलर्ड' युवती से ब्याह कर लिया है । मज़े में रहता है ।

और जसरानी ?

जसरानी जेल गई, छूट भी आई है ।

पर साथ ही इस चोले से भी छूटने की तैयारी कर आई है !

तपेदिक़ हो गया है । लोग कहते हैं, मा को हुआ, इसी से बेटी को भी हुआ ! पर कोई क्या जाने, उसके जीवन की जड़ में कौन-सा कीड़ा था ? अस्पताल में पड़ी है, मौत का इन्तज़ार है ! अब आई कि अब आई ! जेल के साथी-साथिनें सब मिलने आते हैं, और आँसू बहाते हुए चले जाते हैं । पर जसरानी की आँखों में आँसू क्या, नमी का भी नाम नहीं ! पता नहीं, वे आँसू किसके लिए सुरक्षित हैं ?

आया आख़िर वह, आया !

हम्बेल ही तो था, और साथ में एक गोरी, सुन्दर, सुकुमार युवती थी । हम्बेल का चेहरा लाश की तरह ज़र्द था । और वह युवती नाक पर रूमाल रक्खे एक एक क़दम चलती चली आ रही थी ।

दोनों रोगी के पलँग के पास पहुँचे । काँपते स्वर में हम्बेल ने पुकारा—"जसरानी !"

ओठ हिल कर रह गये, धँसी हुई आँखें हम्बेल के चेहरे पर जम गईं ।

"जसरानी !" हम्बेल ने बहते हुए आँसू न पोछकर कहा—"कैसी हो ?"

जसरानी फिर भी ओठ हिलाने के सिवा कुछ भी न कह सकी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जसरानी ! यह मेरी स्त्री है। तुम्हारे आदेशानुसार मैंने ब्याह कर लिया है !"

जसरानी स्थिर नेत्रों से युवती को ताकने लगी।

उन भयानक नेत्रों की ओर देखते ही 'कलर्ड' युवती काँप गई, और यह कहती हुई बाहर चली गई, 'तुम आओ, मैं बाहर हूँ।'

तब हम्बेल ने ज़मीन पर गिर कर जसरानी का हाथ पकड़ लिया, और उसे बार बार चूम कर कातर स्वर में कहने लगा—"मुझे क्षमा करो ! क्षमा करो !!"

फिर भी वह कुछ न बोली।

जसरानी के धँसे हुए नेत्रों को मिनट भर ताक कर हम्बेल ज़ोर से रो पड़ा, और उसकी छाती पर सिर रख कर बोला—"जसरानी, तुम्हारे पिता का घातक मैं ही हूँ।"

अब जसरानी के मुँह से निकला—"और मेरे भी !"

वे सुरक्षित आँसू तब ख़ूब उदारता-पूर्वक उपयोग में आये !

—ऋषभचरण

हुएनसांग का भ्रमण-वृत्तान्त

प्रस्तुत पुस्तक प्रसिद्ध चीनी यात्री हुएनसांग के भारत-भ्रमण का वृत्तान्त है, जो ईसा की सातवीं शताब्दी में भारतवर्ष आया था। पुस्तक में बड़ी सुन्दरता से भारत के मुख्य मुख्य स्थानों का वर्णन, वहाँ का रहन-सहन, भाषा आदि का वर्णन किया गया है। पुस्तक पढ़ने से भारतीय प्राचीन सभ्यता का उज्ज्वल चित्र-पट आँखों के सामने खिँच जाता है। भारत का हाल जानने की इच्छा रखनेवाले प्रत्येक प्रेमी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य केवल ४) चार रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवद्वीप

[भारत के प्राचीन विद्यापीठों में वङ्गदेश के 'नवद्वीप' की भी गणना की जाती है। यद्यपि यह विद्यापीठ अन्य प्राचीन पीठों के बहुत पीछे अस्तित्व में आया था, तथापि यह अपने ढङ्ग का एक ही हुआ। यहाँ इस विद्यापीठ का थोड़े में परिचय दिया गया है। इसके लेखक श्रीयुत सान्यालजी हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक हैं। आप बँगला-भाषी होकर भी हिन्दी के बड़े प्रेमी हैं। आपने वृद्धावस्था में हिन्दी की एम० ए० की परीक्षा पास की है। आप हिन्दी के पहले एम० ए० हैं।]

ऐतिहासिक विवरण

अति प्राचीन काल से 'गौड़' वा 'लक्षणावती' वङ्गदेश की राजधानी थी। यह नगर राजमहल से १२ कोस दक्षिण में गङ्गा-नदी के बायें तट पर आधुनिक मालदा-नगर के निकट अवस्थित था। 'कुलशास्त्र' में लिखा है कि राजा आदिशूर ने संवत ११२० में वङ्गदेश को बौद्धाधिकार से उद्धार किया था और गौड़-राज्य पर अधिकार करके हिन्दू-धर्म को पुनः प्रतिष्ठित किया था।

आदिशूर को एक यज्ञ करना था। किन्तु वङ्गदेश पर बौद्ध-धर्म का प्रभाव रहने के कारण वहाँ बहुत दिनों से क्रियाशील वेदज्ञ ब्राह्मणों का अभाव हो गया था। अतएव विवश होकर उन्हें दूर कान्यकुब्ज-देश से आचारवान् ब्राह्मणों को बुलवाना पड़ा था। वहाँ से श्रीहर्ष, भट्टनारायण, दक्ष, वेदगर्भ और छान्दड़ नाम के पाँच यज्ञ-निपुण ब्राह्मणों ने गौड़ में आकर आदिशूर का यज्ञ निष्पन्न किया था। इन पाँच ब्राह्मणों को उन्होंने बहुत आदर और सत्कार के साथ धन, रत्न और ग्राम आदि देकर गौड़-राज्य में प्रतिष्ठित किया था। वङ्गदेश में आज-कल जितने वारेन्द्र और राढ़ी ब्राह्मण पाये जाते हैं वे सब इन्हीं पाँच ब्राह्मणों तथा उनके पाँच भाइयों के वंशधर हैं। वङ्गदेश के आचारभ्रष्ट ब्राह्मण लोग 'सप्तशती' ब्राह्मण कहलाते हैं। पीछे से जो सब आचारवान् ब्राह्मण पश्चिम और दक्षिण से आकर वङ्गदेश में बसे हैं वे पाश्चात्य और दाक्षिणात्य वैदिक ब्राह्मण कहलाते हैं।

वङ्गदेश कुछ काल तक शूरवंशीय राजाओं के अधिकार में रहने के बाद बौद्ध-धर्मावलम्बी पालवंशीय राजाओं के अधीन हुआ था, किन्तु विक्रमीय अष्टम शताब्दी के प्रारम्भ में फिर हिन्दू-अधिकार में आया था।

भौगोलिक आधार पर गौड़-देश के पाँच भाग हैं—पूर्व में 'वङ्ग', पश्चिम में 'राढ़', इन दोनों के बीच में 'बागड़ी'', उत्तर में 'वरेन्द्र' और वरेन्द्र के पश्चिम में 'मिथिला'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेनवंशीय राजागण कब बंगाल में आये थे, इसका पता नहीं चलता। शिलालेखों और ताम्र-शासनों से विदित होता है कि वे कर्णाट-देशवासी चंद्रवंशीय क्षत्रिय राजा थे और गौड़देश में आकर राढ़-प्रान्त में बसे थे। इस वंश में सामन्तसेन नाम का एक राजा था, जिसने वृद्धावस्था में भागीरथी और जलाङ्गी नदियों के सङ्गम-स्थल पर एक उपनिवेश स्थापित किया था। उसी उपनिवेश के निकट प्रसिद्ध नवद्वीप-नगर अवस्थित है। 'नदिया' शब्द 'नवद्वीप' शब्द का प्राकृत रूप है।

सामन्तसेन के पुत्र का नाम हेमन्तसेन था, और हेमन्तसेन के पुत्र का नाम विजयसेन। मालूम होता है कि विजयसेन पहले 'राढ़'-प्रान्त के अंशविशेष के और पीछे से समग्र 'राढ़'-प्रान्त के अधिपति हुए थे। इसके अनन्तर वे 'वङ्ग'-प्रान्त को अपने अधिकार में लाये थे, और तब उन्होंने पाल-साम्राज्य के अवशिष्टांश को आक्रमण कर जीत लिया था। समग्र गौड़देश के हस्तगत हो जाने के बाद उन्होंने कामरूप तथा कलिङ्ग के अधिपतियों को पराजित किया था। विजयसेन ने मिथिला के कर्णाटकीय राजवंश के स्थापयिक नान्यदेव को पराजित कर अपने सामन्तों में परिणत किया था। उनका विवाह शूरवंश-दुहिता विलासदेवी के साथ हुआ था और विलासदेवी के गर्भोत्पन्न उनके पुत्र वल्लालसेन उनके स्वर्गारोहण के बाद विक्रम की बारहवीं शताब्दी के मध्य-भाग में गौड़-सिंहासनारूढ़ हुए थे।

कुल-शास्त्र-समूह की आलोचना से ज्ञात होता है कि वल्लालसेन ने बंगाली ब्राह्मण और कायस्थ समाजों में कौलिन्य प्रथा की सृष्टि के द्वारा ज्ञानी तथा सच्चरित्र व्यक्तियों का सम्मान बढ़ाया था। गौड़-नगर उनकी प्रधान राजधानी थी, परन्तु उन्होंने और दो प्रादेशिक राजधानियाँ स्थापित की थीं—'वागड़ी' में नवद्वीप और 'वङ्ग' (विक्रमपुर) में सुवर्णग्राम। जीवन का अधिकांश उन्होंने पुण्य-सलिला जाह्नवी-तीरस्थ नवद्वीप में ही अतिवाहित किया था। उस समय भागीरथी नवद्वीप के पश्चिम में बहती थीं; श्रीचैतन्य देव के समय में भी सुरधुनी माता की गति का परिवर्तन नहीं हुआ था। परन्तु अब भागीरथी नवद्वीप के पूर्व में प्रवाहित हैं। विख्यात स्मृति-ग्रन्थ "दानसागर" इन्हीं वल्लालसेन की लेखनी से प्रसूत हुआ है।

संवत् ११६६ में वल्लालसेन के पुत्र लक्ष्मणसेन ने गौड़-सिंहासन पर आरोहण किया था। उनकी माता का नाम रामदेवी था, जो चालुक्यवंश-दुहिता थीं। लक्ष्मणसेन प्रतापी राजा थे। उन्होंने वाराणसी और प्रयाग में जयस्तम्भ स्थापित किये थे, और कलिङ्ग तथा कामरूप विजय किया था। उनके राजत्व के शेष-भाग में मगध सेन-राज्य-भुक्त हुआ था। उन्होंने अपने नाम से एक संवत् चलाया था, जो 'लक्ष्मणाब्द' वा 'ल० सं०' नाम से अभी तक मिथिला में कहीं कहीं जारी है। विक्रम-संवत् ११७५ से इसकी गिनती होती है। लक्ष्मणसेन की राजमहिषी का नाम तान्द्रादेवी वा ताँड़ादेवी था। उनके गर्भ से तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे, जिनके नाम माधवसेन, केशवसेन और विश्वरूपसेन थे। लक्ष्मणसेनदेव के परलोक गमन के बाद ये क्रम से गौड़ेश्वर हुए थे, और लाक्ष्मणेय कहलाते थे।

लक्ष्मणसेनदेव का राजत्व-काल सेन-राज-वंश की चरम उन्नति का समय था। धोयी, जयदेव इत्यादि कवि उनकी राजसभा को अलंकृत करते थे। स्वयम् सत्कवि थे। उनके समय में गौड़ीय शिल्प उन्नति के उच्च सोपान पर आरोहण किया था।

लक्ष्मणसेन के तीन पुत्र किस क्रम से गौड़ाधिप हुए थे, यह नहीं कहा जा सकता। संवत् १२५५ में बख़्तियार ख़िलजी के द्वारा 'गौड़' और 'राढ़' प्रान्त में सेनराजाओं का अधिकार लुप्त हो जाना सहज घटना है। परन्तु जिस ढंग से मिन्-हाज्-उस्-सिराज ने गौड़-विजय का वर्णन किया है वह निरा हास्यजनक है। नवद्वीप सेनवंश की प्रधान राजधानी नहीं था। जब गौड़ेश्वर इस प्रान्तिक राजधानी में असतर्क अवस्था में टिके हुए थे, बख़्तियार ने इ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती

सङ्गीत-शिखा

[चित्रकार—श्रीयुत असितकुमार हल्दार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर का लुण्ठन-मात्र किया था। गौड़राज तैयार नहीं थे, इस कारण युद्ध करना उस समय उनके लिए असम्भव था। अतएव विवश होकर उन्हें अपनी दूसरी प्रान्तीय राजधानी सुवर्णग्राम को चला जाना पड़ा था। 'गौड़' तथा 'राढ़' प्रान्तों के मुसलमान-विजय के बाद लक्ष्मणसेन के वंशधरों ने वङ्ग-देश की स्वाधीनता अक्षुण्ण रक्खी थी, यह बात मिन्-हाज्-उस्-सिराज़ भी स्वीकार कर गये हैं। समग्र वङ्ग-देश मुसलमानों के अधिकार में आने में सौ वर्ष से भी अधिक समय लगा था।

तीन सौ वर्ष तक स्वाधीन पठान बादशाहों ने बंगाल का शासन किया था। इस काल के अन्त में विक्रम की सोलहवीं शताब्दी के शेष भाग में गौड़देश के पठान नरपति दिल्लीश्वर के द्वारा विजित हुए थे और समग्र वङ्ग-देश उनके अधिकार में आया था। तब से बंगाले के उत्तर-भाग की राजधानी गौड़, पूर्व भाग की राजधानी सुवर्णग्राम, और पश्चिम-भाग की राजधानी, नवद्वीप के बदले, हुगली के निकट-वर्त्ती, सरस्वती-तीरस्थ सप्तग्राम हुई। सरस्वती-नदी एक प्रकार से लुप्त हो जाने पर अब से दो सौ बरस पहले सप्तग्राम का ध्वंस हो गया था।

परन्तु इतनी दूर से वङ्ग-देश को दिल्ली की अधीनता में रखना कठिन था। अतएव स्थानीय शासक कभी कभी स्वाधीन होने की चेष्टा करते थे। उस समय वङ्ग-देश में बहुत से हिन्दू भू-स्वामी वा भुइँये हो गये थे। दिल्लीश्वर के अधीन रहते हुए भी वे राज्य-शासन के विषय में मुसलमानों से सम्पर्क नहीं रखते थे। अपने अपने अधिकार-क्षेत्र में वे स्वतन्त्रता से शासन-कार्य चलाते थे। मुसलमान शासक निर्दिष्ट समय पर उनसे राजस्व पाने से ही सन्तुष्ट रहते थे। कोई कोई भू-स्वामी दिल्ली की अधीनता अस्वीकार कर बैठते थे। उनमें से बारह भू-स्वामी वा भुइँये प्रधान थे। ये "बारह-भुइँये" कहलाते थे। उनकी सम्मिलित शक्ति से मुसलमान शासक डरते थे। विक्रम की सोलहवीं शताब्दी के अन्त में भुइँयों में सबसे प्रबल थे यशोहर (जेसोर) के राजा प्रतापादित्य। स्वाधीन होने की चेष्टा में उन्होंने बहुत बहादुरी दिखाई थी। उनका स्वाधीन होना असम्भव न था। पर परमात्मा की इच्छा दूसरी थी, नहीं तो भारतवर्ष की यह दुर्दशा क्यों होती? महाराज मानसिंह का धन-बल तथा जन-बल कहीं अधिक था। प्रतापादित्य उनसे हार गये, निहत तथा राज्यच्युत हुए और उनकी ज़मींदारी मुग़ल-बादशाह के क़ब्ज़े में हो गई। भवानन्द मजमुएदार नामक एक व्यक्ति ने मानसिंह की बड़ी सहायता की थी। मानसिंह के प्रसाद से 'बागड़ी' के पश्चिम का कुछ अंश उसके हाथ में आ गया। क्रमशः उसके वंशधर बागड़ी के समग्र पश्चिमार्ध के भूस्वामी हुए थे। विक्रम १९ वीं शताब्दी के शेष-भाग में नवद्वीप से चार कोस की दूरी पर कृष्णनगर में इस वंश के एक राजा ने अपना वास-भवन और ज़मींदारी का केन्द्र बनाया था। यह ज़मींदारी पहले से ही नदिया-राज्य कहलाती थी।

नदिया की विद्याचर्चा

(क) नवद्वीप में न्याय-दर्शन-शिक्षा का आरम्भ

नवद्वीप चिरदिनों से ज्ञान-गौरव से गौरवान्वित है। नवद्वीप का विवरण केवल ज्ञान-भक्ति ही का विवरण है। नवद्वीप की ज्ञानचर्चा को दो भागों में विभक्त कर, वहाँ न्यायानुशीलन की उत्पत्ति किस प्रकार हुई थी, अब हम उसका वर्णन करेंगे। यद्यपि नवद्वीप की इस सम्बन्ध की गौरव-गाथा का पूर्ण वर्णन इस लेख में नहीं हो सकेगा, तो भी उसके प्रारम्भिक-रूप से पाठकों को वङ्ग-देश के इस प्रसिद्ध पीठ के गौरव का थोड़ा-बहुत परिचय अवश्य मिल जायगा।

जब से वल्लालसेन ने नवद्वीप को अपना स्थायी वासस्थान बनाया था तब से नवद्वीप वङ्ग-देश की विद्याचर्चा का केन्द्र बना था। कहा जाता है कि इसके पहले एक योगी गङ्गा के 'चर' (रेतीली तटभूमि) पर एक झोपड़ी में थोड़े से छात्रों को पढ़ाया करते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके छात्रों में शङ्कर तर्कवागीश और न्यायाप्ति शिरोमणि प्रधान थे, जिन्होंने बहुत से ग्रन्थों की रचना की थी। परन्तु वल्लालसेन के समय में ही नवद्वीप में संस्कृत-शिक्षा की विशेष उन्नति होने लगी थी। उनके बाद लक्ष्मणसेन भी विद्योत्साही और स्वयम् संस्कृत के विद्वान् थे। उनके समय में हलायुध, पशुपति, धोयी इत्यादि पण्डितों का आविर्भाव हुआ था। कविश्रेष्ठ जयदेव और उमापतिधर उन्हीं की सभा के राजकवि थे।

हलायुध 'ब्राह्मण-सर्वस्व', 'स्मृति-सर्वस्व', 'मीमांसा-सर्वस्व', 'न्याय-सर्वस्व' इत्यादि ग्रन्थों के रचयिता थे। धोयी 'पवन-दूत' के प्रणेता थे। इस काव्य में ऐसा वर्णित है कि मलय-पर्वताधिपति गन्धर्व-राज की कन्या मलयावती ने महाराज लक्ष्मणसेन पर प्रेमासक्त होकर पवन को दूत बनाकर अपने प्राणनाथ के निकट भेजा था। पवनदेव भी दौत्य स्वीकार कर मलयाचल से चल कर भागीरथीतीर पर उपनीत हुए थे, और भागीरथी-तीरवर्त्ती नाना स्थानों का पर्यटन कर गौड़देशस्थ विजयपुर में पहुँचे थे। विजयपुर सम्भवतः नवद्वीप है। श्रीधरदास ने 'सदुक्तिकर्णामृत' नामक ग्रन्थ बनाया था।

जयदेव गोस्वामी भुवन-विश्रुत कवि हैं? वीर-भूमि-ज़िले के अन्तर्गत केन्द्रविल्व ग्राम उनका वास-स्थान था, परन्तु वे महाराज लक्ष्मणसेन के राज-सभासद् और राजकवि होने के कारण नवद्वीप में रहते थे। उनकी अमृतमयी लेखनी ने वङ्ग-देश में एक नूतन युग का आविर्भाव किया था। पहले उनको वैराग्य अवलम्बन करने की इच्छा थी, परन्तु उनकी अभिलाषा पूर्ण होने नहीं पाई। पुरी के जगन्नाथदेव के प्रत्यादेश से उनको पद्मावती नामक एक ब्राह्मण-कन्या का पाणिग्रहण करना पड़ा। जयदेव राधाकृष्ण के उपासक थे; और प्रेमविह्वल हृदय से समय समय पर जिन मधुर कान्त पदों की रचना करते थे वे अतुलनीय हैं। इन्हीं पदों का संग्रह 'गीत-गोविन्द' नाम से प्रसिद्ध है।

लक्ष्मणसेन के स्वर्गवास से लेकर श्रीचैतन्यदेव के आविर्भाव तक ३०० वर्ष का व्यवधान है। इस सुदीर्घ काल में वङ्ग-देश प्रायशः स्वाधीन पठान गौड़ेश्वरों के अधीन था। पठान-शासक गौड़-नगर में रहते थे और मौज उड़ाते थे। देश का यथार्थ शासन भुँइया या हिन्दू ज़मींदारों के हाथ में था। उनके आश्रय में रहकर ब्राह्मण लोगों को विद्याचर्चा की सुविधा मिली थी। स्वाधीन पठान गौड़ेश्वर भी विद्योत्साही थे और बहुतेरों ने संस्कृत-ग्रन्थों का गौड़ीय भाषा में अनुवाद कराया था। गौड़ीय भाषा का अर्थ है बँगला भाषा और गौड़देश का अर्थ वङ्ग-देश। इसी काल में विद्यापति और चण्डीदास का जन्म हुआ था। बङ्गाली लोगों का विश्वास था कि विद्यापति बङ्गाली कवि हैं। उस समय की बँगला-भाषा के साथ मैथिली-भाषा का बहुत सादृश्य था। विद्यापति और चण्डीदास ने अपनी सुललित प्रेममय पदावली की रचना के द्वारा वङ्ग-देश में प्रेमोन्माद उत्पन्न कर वैष्णव-साहित्य की नींव डाली थी। वीर-भूमि-ज़िले के नान्नुर-ग्राम में संवत् १४६० में चण्डीदास का जन्म हुआ था। विद्यापति मिथिला के विस्फी-ग्राम के रहनेवाले थे और चण्डीदास के समसामयिक थे।

मिथिला ही उस समय दर्शन, स्मृति, साहित्य इत्यादि सब विषयों में अग्रगामी था। इस स्थान में उतथ्य-पुत्र महामुनि गौतम अपने अद्वितीय प्रतिभाबल से जिस न्यायशास्त्र का सूत्रपात कर गये थे उसको उदयनाचार्य, महामहोपाध्याय गङ्गेश उपाध्याय और उनके पुत्र वर्द्धमान उपाध्याय ने बहुटीका और भाष्य के द्वारा समृद्ध तथा भूषित किया था।

प्राचीन काल से दूर दूर देश से छात्रगण न्याय-शास्त्र पढ़ने के निमित्त मिथिला में आते थे, क्योंकि न्यायशास्त्र और उससे सम्बन्ध रखनेवाले ग्रन्थ आदि और कहीं नहीं मिलते थे। मिथिला के पण्डितगण अति गोपन से और अति यत्न के साथ बहुश्रम से संगृहीत अपने ग्रन्थों की रक्षा करते थे। जब कोई छात्र पढ़ने के लिए मिथिला में आता था, अध्यापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके अभ्यास के लिए पोथियाँ तो दे देते थे, परन्तु पाठ के शेष हो जाने पर उनको लौटा लेते थे, और कदाचित् कहीं कोई छात्र किसी पोथी का कोई अंश गोपन करके ले न भागे, इसलिए सब छात्रों की विशेष रूप से तलाशी कर लेने पर वे मिथिला के बाहर जाने पाते थे। इस प्रकार मिथिला के अध्यापक बहुत यत्न के साथ न्यायशास्त्र में अपना प्राधान्य बनाये रखने को समर्थ हुए थे। अतएव न्याय-शास्त्र के छात्रों को मिथिला में गये बिना अन्य उपाय न था। खासकर उपाधि देने का अधिकार मैथिली अध्यापकों के सिवा अन्य किसी को न था।

जो छात्र मिथिला में उपाधि प्राप्त कर अपने देश को लौटते थे वे किसी धनवान् व्यक्ति के आश्रय में पाठ-शाला खोलकर अपने देश में शिक्षा देने का कार्य करते थे। किन्तु न्याय जैसे कठिन शास्त्र का अध्यापन उपयोगी ग्रन्थों के बिना असम्भव था। अतएव ग्रन्थों के अभाव से नवद्वीप में न्याय का आशानुरूप अनुशीलन नहीं होता था। परन्तु परमात्मा की कृपा से शीघ्र ही यह अभाव दूर हो गया। विक्रम की १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद में नवद्वीप में महेश्वर विशारद भट्टाचार्य्य नामक स्मृतिशास्त्र के एक पण्डित थे। वासुदेव नामक उनका एक पुत्र था। उस काल की रीति के अनुसार महेश्वर पण्डित ने वासुदेव को व्याकरण-काव्यादि की शिक्षा देकर स्मृतिशास्त्र पढ़ाया था। वासुदेव परम मेधावी तथा असाधारण धीशक्ति-सम्पन्न थे। स्मृतिशास्त्र में व्युत्पन्न होकर वे न्याय पढ़ने के लिए अतिशय व्यग्र हुए और २५ वर्ष की अवस्था में मिथिला गये। वहाँ पहुँचकर वे वहाँ की प्रधान चतुष्पाठी में प्रविष्ट हुए और शीघ्र ही बहुत उन्नति कर गये। उन्हें सर्वदा यह चिन्ता रहती थी कि किस प्रकार इस अमूल्य रत्न से अपनी मातृभूमि को अलंकृत करें। वहाँ से तो पुस्तकें ले जाना असम्भव था। परन्तु वे बड़े मेधावी थे। रात-दिन अक्लान्त परिश्रम करके उन्होंने समग्र न्याय-शास्त्र को, विशेषकर गङ्गेश उपाध्यायकृत चारों खण्ड चिन्तामणि को कण्ठस्थ कर लिया। अब उन्होंने कुसुमाञ्जलि कण्ठस्थ करने का सङ्कल्प किया। पर शीघ्र ही उनका उद्देश प्रकट होने के कारण श्लोक-भाग के अतिरिक्त उस ग्रन्थ का अन्य अंश कण्ठस्थ नहीं हो पाया। वे 'शलाका'-परीक्षा में सम्मान के साथ उत्तीर्ण हुए और 'सार्वभौम' उपाधि से भूषित होकर स्वदेश लौटने का उद्योग करने लगे। कदाचित् कोई पुस्तक साथ ले जा रहे हों, इसलिए उनकी गठरियों की तलाशी हुई। उस समय वासुदेव ने कहा था—'मेरे स्मृतिपट पर सब ग्रन्थ अङ्कित हैं, अतएव मुझे कोई ग्रन्थ ले जाना आवश्यक नहीं।' यह सुनकर मैथिली पण्डित ईर्ष्यान्वित हुए। जीवन पर अत्याचार न हो, इस आशङ्का से मिथिला से नवद्वीप न जाकर उन्होंने काशी की राह ली और वहाँ कुछ काल तक रहकर वेदान्त में व्युत्पन्न हुए। अन्त में विक्रमीय १६ वीं शताब्दी के आरम्भ में उन्होंने नवद्वीप में न्याय की चतुष्पाठी स्थापित की। लौटने पर उन्होंने कण्ठस्थ ग्रन्थों को लिपि-बद्ध कर लिया था। तब से नवद्वीप में यथारीति न्याय की चर्चा शुरू हुई और झुण्ड के झुण्ड छात्र आकर उनसे पाठ लेने लगे।

परन्तु वासुदेव सार्वभौम न्याय के थोड़े से ही ग्रन्थों में पाठ दे सकते थे, अतएव समग्र न्यायशास्त्र की शिक्षा के लिए बहुतों को पूर्ववत् मिथिला ही जाना पड़ता था। वासुदेव के छात्रों में "अनुमान-मणि-व्याख्या"-प्रणेता कनाद और रघुनाथ शिरोमणि प्रधान थे। रघुनाथ ने विक्रम की १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में जन्मग्रहण किया था। उनके पिता गोविन्द चक्रवर्ती सुपण्डित थे और 'दीपिकाप्रधान' नामक एक टीका भी लिखी थी। वे दरिद्र थे और थोड़ी आयु में परलोक को सिधार गये थे। रघुनाथ की दुःखिनी माता सीतादेवी अति कष्ट से शिशु पुत्र का पालन-पोषण करने लगीं और कुछ समय के बाद उन्होंने उस समय के विद्याराज्य के अधिपति वासुदेव सार्वभौम का आश्रय लाभ किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशु अवस्था से ही रघुनाथ ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का परिचय दिया था। कहते हैं कि माता की आज्ञा से वे टोल (चतुष्पाठी) के किसी छात्र के पास आग लेने गये थे। छात्र करछुल में भरके आग उनके हाथ में डालने को उद्यत हुआ कि उन्होंने झट आँगन से अञ्जली भर धूल लेकर हाथ पसार दिया। उस समय वासुदेवजी चतुष्पाठी में उपस्थित थे। पाँच बरस के बालक की यह प्रत्युत्पन्न मति देखकर वे विस्मित हुए और उनकी माता से कहकर बालक की शिक्षा का भार अपने हाथ में ले लिया। कहते हैं कि रघुनाथ वर्ण-शिक्षा के समय ही पूछने लगे कि 'क' पहले न कहकर 'ख' के पीछे कहने से क्या दोष होता है, और वर्ण-माला में दो 'न' दो 'व' और तीन 'स' का क्या प्रयोजन है? इसलिए वर्ण-माला सिखाने के समय ही वासुदेवजी को उन्हें समग्र व्याकरण सिखाना पड़ा था। रघुनाथ बहुत थोड़ी ही उमर में व्याकरण, कोष तथा काव्य समाप्त कर चुके थे, और कुछ दिन स्मृति-शास्त्र का पाठ लेकर उन्होंने न्यायशास्त्र पढ़ना शुरू कर दिया था। कुछ काल तक उनको न्याय पढ़ाने के बाद अतितीक्ष्ण बुद्धि रघुनाथ को सन्तुष्ट करना वासुदेव सार्वभौम के लिए कठिन हुआ। अतएव उन्होंने न्याय पढ़ने के लिए रघुनाथ को मिथिला भेजा। उनकी अवस्था तब बीस बरस की थी।

उस समय पक्षधर मिश्र मिथिला के सर्वश्रेष्ठ पण्डित थे। उनका असल नाम जयधर मिश्र तर्कालङ्कार था। वे हरि मिश्र के भतीजे और यज्ञपति उपाध्याय के छात्र थे। अपना ऐसा परिचय उन्होंने स्वयम् दिया है। मिथिला में पहुँचकर रघुनाथ पक्षधर मिश्र की चतुष्पाठी में प्रविष्ट हुए। रघुनाथ को नवद्वीप में ही चिन्तामणि इत्यादि ग्रन्थों की शिक्षा मिल चुकी थी। अतएव उन्हें निम्न श्रेणियों में अधिक काल नहीं रहना पड़ा। शीघ्र ही सर्वोच्च श्रेणी में पहुँच गये। उनको न्याय-शास्त्र में सम्यक् व्युत्पन्न होने में बहुत समय नहीं लगा। उस समय पक्षधर मिश्र 'सामान्य-लक्षणा' नामक ग्रन्थ लिख रहे थे। रघुनाथ ने पक्षधर मिश्र की युक्तियों में दोष पाये और गुरु को दिखा दिये। रघुनाथ की तीक्ष्ण-बुद्धि और असाधारण तर्क-शक्ति देखकर गुरु चमत्कृत हुए। मन ही मन उन्होंने उनकी प्रशंसा की। परन्तु मन में अपने भ्रम समझते हुए भी और परास्त होते हुए भी लज्जा तथा वृथा अभिमान से हठ करने लगे और सबके सामने अपने दोषों को स्वीकार करने में कुण्ठित हुए। प्रत्युत कटु वाक्यों से रघुनाथ का अपमान करने लग गये। रघुनाथ एक आँख के काने थे। इस पर उनको काना कहकर बहुत विद्रूप किया।[1]

इस प्रकार लाञ्छित होकर रघुनाथ अपने डेरे को लौटे और 'या तो अपने मत की स्थापना करूँगा नहीं तो आचार्य की हत्या करूँगा', यह सङ्कल्प कर एक तीक्ष्ण धार का शस्त्र हाथ में ले रात्रिकाल में गुरु भवन पर पहुँचे। उस दिन शारदीय पूर्णिमा की रजनी थी—पूर्ण शशी अमल धवल ज्योत्स्ना से दिङ्मण्डल को उद्भासित कर रहा था। पर रघुनाथ उस समय क्षिप्तप्राय थे—शोक, क्षोभ और अपमान की उत्तेजना से दारुण प्रतिहिंसा के वशवर्ती होकर पक्षधर को खोज रहे थे। देखा कि वे सस्त्रीक वे कथोपकथन में लगे हुए हैं। पक्षधर की गृहिणी विमल ज्योत्स्ना से प्रीतिप्रफुल्ल होकर पूछा—'प्रियतम जगत् में शरच्चन्द्र की ज्योत्स्ना की अपेक्षा क्या और कोई विमलतर वस्तु है?' पक्षधर उन्मना थे। सम्भव है कि उस समय वे रघुनाथ के दारुण अपमान की बात सोचकर आत्मग्लानि का अनुभव कर रहे हों। पत्नी के बार बार सम्बोधन से आत्मस्थ होकर

---

१ बक्षोजपानकृतकाणसंशये जाग्रति स्फुटे।
सामान्यलक्षणा कस्मादकस्मादवलुप्यते॥

× × ×

आखण्डलः सहस्राक्षो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः।
अन्ये द्विलोचनाः सर्वे को भवानेकलोचनः॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने उत्तर दिया—'क्या तुम कलङ्की चाँद की ज्योत्स्ना की प्रशंसा कर रही हो? मेरी पाठशाला में एक अकङ्कक चन्द्र विराजमान है, जिसकी बुद्धि शरच्चन्द्र की किरणों से भी निर्मलतर है।' रघुनाथ अन्तराल में खड़े खड़े सब सुन रहे थे। तब अपने को धिक्कार कर उन्होंने तलवार को दूर पर पटक दिया और सहसा गुरु के निकट उपस्थित होकर उनके चरणों पर आत्मसमर्पण किया। गुरुशिष्य तो परस्पर के हृदयों का परिचय पहले ही पा चुके थे। दोनों आलिङ्गनाबद्ध होकर बहुत देर तक रोये। दो महाप्राण एक हो गये। दूसरे दिन पक्षधर ने एक बड़ी भारी सभा करके सबके सामने अपना पराजय स्वीकार किया और सबकी सम्मति से रघुनाथ को नवद्वीप में रहकर उपाधि देने का अधिकार अर्पण किया। तब से मिथिला का गर्व खर्व हो गया और मिथिला की यशःश्री नवद्वीप की अङ्कशायिनी हुई। वह दिन नवद्वीप का एक स्मरणीय दिन था। किन्तु पक्षधर मिश्र का महत्त्व भी स्मरणयोग्य है।

इस प्रकार विक्रम की १६ वीं शताब्दी के मध्यभाग में रघुनाथ शिरोमणि ने नवद्वीप में आकर चतुष्पाठी स्थापित करने की इच्छा की। पर वे तो बहुत ही दरिद्र थे, चतुष्पाठी खोलने के लिए अर्थ उनके पास नहीं था। उस समय नवद्वीप में हरिघोष नाम के एक धनाढ्य गोप थे। उन्होंने दयार्द्र होकर चतुष्पाठी के लिए शिरोमणिजी को अपनी विस्तीर्ण गोशाला का दान कर दिया। इस गोशाला में ही रघुनाथ ने बहु यत्न और क्लेश से अर्जित विद्या-दान करने के लिए अपना अजेय टोल (चतुष्पाठी) स्थापित किया।

रघुनाथ शिरोमणि की ख्याति वङ्ग-देश में सर्वत्र पहले ही पहुँच गई थी। नवद्वीप में टोल खोलते ही असंख्य छात्रों से उनकी सुविस्तीर्ण चतुष्पाठी पूर्ण हो गई। समवेत छात्र-मण्डली का पाठाभ्यासकालीन कोलाहल बहुत दूर तक पहुँचता था, और लोग इसकी हँसी उड़ा कर कहते थे कि यह गोलमाल हरिघोष के गोआल (गोशाला) से आता है। इस कथन में छात्रों का गो-जाति में शुमार किये जाने का श्लेष भी पाया जाता है। अब भी बंगाली लोग किसी जगह भारी जनता के कारण विशृंखल तथा गोलमाल होने से कहते हैं, 'यह तो हरिघोष का गोआल है।'

रघुनाथकृत ग्रन्थों में 'चिन्तामणि-दीधिति' सर्वश्रेष्ठ है। वह 'नव्यन्याय' के नाम से भी ख्यात है। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'पदार्थ-खण्डन', 'आत्मतत्त्व-विवेक की टीका', और प्रसिद्ध वर्धमान उपाध्याय तथा उदयनाचार्य-कृत सब ग्रन्थों पर टीकायें लिखी हैं और 'नयवाद', 'प्रामाण्यवाद', 'नानार्थवाद', 'आख्यातवाद', क्षणभंगुरवाद' इत्यादि अनेक ग्रन्थों का सङ्कलन किया है। इन युक्तिपूर्ण न्याय-ग्रन्थों के अलावा उनका रचित 'मलिभुच-विवेक' (मलमास-तत्त्व) स्मृति-ग्रन्थ भी पाया जाता है।

इसी समय श्रीचैतन्यदेव भी अध्यापक-रूप में नवद्वीप में विराजमान थे। उनकी अलौकिक बुद्धि-शक्ति उज्ज्वल रूप से प्रतिभात् होकर असंख्य छात्रों की शिक्षा का सम्पादन कर रही थी। किन्तु शीघ्र ही वे पार्थिव ज्ञान को जीर्ण वस्त्र-खण्ड की नाईं परित्याग करके अपार्थिव सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए धर्मपथ के पथिक हुए। नवद्वीप का यही सुवर्ण-युग था। रघुनाथ और चैतन्यदेव से ही नवद्वीप की महिमा पूर्णरूप से विकसित हुई थी। उन दोनों की ज्ञान-गरिमा और अनन्य साधारण चरित्र-महिमा जन-साधारण में प्रचारित होने के बाद से ही द्राविड़, काञ्ची, तैलङ्ग, मिथिला, काशी इत्यादि स्थानों से छात्र और भक्तवृन्दों ने आकर नवद्वीप को एक तीर्थ में परिणत किया था। उसी समय से नवद्वीप सरस्वती की आवासभूमि और वैष्णवधर्म के पीठस्थान के समान पूजित होता आया है।

श्रीचैतन्यदेव और रघुनाथ शिरोमणि के समय में ही नवद्वीप गौरव के शिखर-देश पर उन्नीत हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। इसी समय में ही नव्य न्याय वा तर्कशास्त्र तथा गौड़ीय वैष्णव या भक्तिशास्त्र की नींव डाली गई थी। परवर्ती काल में एक ओर बहुतेरे धीशक्ति-सम्पन्न पण्डितों ने मौलिक पुस्तकों आदि की रचनाओं के द्वारा नव्य न्याय नामक एक अति विस्मयकर शास्त्र का गठन किया था और दूसरी ओर श्रीचैतन्यदेव के भक्त सहचरों तथा शिष्य-प्रशिष्यों ने गम्भीर भक्ति शास्त्र तथा मनोमुग्धकर पदावली-साहित्य की रचना के द्वारा वङ्ग-देश को भक्ति-रस में आकण्ठ निमग्न किया था।

—नलिनीमोहन सान्याल

प्राचीन आर्यवीरता

के विषय में देखिए प्रसिद्ध पत्र "प्रताप" की क्या सम्मति है:—

"पुस्तक नागरी-प्रचारिणी सभा की मनोरञ्जन-पुस्तकमाला की ४६ वीं पुस्तक है। इसमें राजपूताने के महाराना प्रतापसिंह, पृथ्वीराज चौहान, भीमसिंह, हम्मीरसिंह, चूड़ा, राजसिंह, दुर्गादास आदि १४ वीरों के चरित्र दिये गये हैं। वीरों का चरित्र-चित्रण अच्छे ढंग से किया गया है और उनकी वीरता एवं साहसपूर्ण कार्यों को पढ़कर हृदय में वीर-रस का संचार हो उठता है। लड़कों के अभिभावकों तथा माता-पिताओं को चाहिए कि वे उन्हें ऐसी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया करें।

२१० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन

एक मौज ने मुझे बनाया,
जीवन दे मुझको बिलगाया ।

हवा भरी कुछ शीश उठाया,
देखा दुनिया प्यारी पाया ।

फूला मैं नूतन उमंग में,
भूला मैं अपनी तंरग में ॥

फिरा देखता सुंदर माया,
सरसिज के संग समय बिताया ।

लहरों ने निज शीश चढ़ाया,
आ समीर ने गीत सुनाया ।

फिरा थिरकता उर्म्मि ताल पर,
आनँद लेता चाल चाल पर ॥

नभ से तारे तोड़ मँगाये,
रहा चाँद को हृदय लगाये ।

अपना ही इक लोक बनाये,
निज आकाश खः-गंग बहाये ।

रँग-रलियाँ करता मित्रों में,
भरता रहा रंग चित्रों में ॥

अकस्मात इक झोंका आया,
जिसने जीवन-दीप बुझाया ।

बस अनन्त में मुझे मिलाया,
अपनों ने मुझको अपनाया ।

सूझा तभी रहा मैं भूला,
मैं था केवल एक बबूला ।

—गुरुभक्तसिंह 'भक्त'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओड़छा

बुंदेलखंड का गौरव तथा उसका भाग्यशाली अजित चित्तौरगढ़

जी० आई० पी० रेलवे की जो शाखा झाँसी से मानिकपुर को जाती है उसका प्रथम स्टेशन ओड़छा है। इस स्टेशन से तीन मील दक्षिण की ओर पावन कलि-सुंदरी वेत्रवती के तट पर विंध्याटवी के गर्भ में विन्ध्य-शृंगों से परिवेष्टित प्राचीर के अन्तर्गत एक वीरप्रसूता, सरस्वती-उपासक पुण्यस्थली है जिस पर ओड़छा नामक प्राचीन नगर बसा है। यह नगर सांसारिक विभव और पराभव का माप-दंड है, बुंदेलकुल के उन्नत ललाट की पावनश्री है, महाराज रुद्रप्रताप की कीर्ति का विजय-स्तंभ है। यवनगणों के संकटमय चरणों के प्रवेशोपरान्त और अन्तिम हिन्दू-सम्राट् महाराज पृथ्वीराज और चन्देलकुल के अंतिम शासक महाराज प्रमर्दिदेव के समय में .गुलामवंशीय .कुतुबुद्दीन ऐबक के हाथ से हिन्दू-राजश्री के नष्ट होने पर आर्यकुल-गौरव की परमोज्ज्वल ज्योत्स्ना का विकास इसी पुण्यस्थली पर हुआ था। गढ़ कुंडार के अनार्याधीशों पर देवासुर-संग्राम में विजय प्राप्त कर और तत्कालीन यवन शासकों के शासन को विध्वंस कर आर्यकुल की मान-रक्षा के लिए वीर बुंदेलों ने इसी स्थान पर हिन्दू-साम्राज्य-स्थापन-रूपी महायज्ञ का समारोह किया था और विचलित हिन्दू-राजलक्ष्मी की महाराज रुद्रप्रताप ने मुसलमानों के हाथ से वैसे ही रक्षा की थी जैसे पूर्वकाल में सम्राट् स्कंदगुप्त ने हूणों के हाथ में पड़ी हुई भारतश्री को उबारा था। महाराज रुद्रप्रताप यदि मध्यकालीन भारत के स्कंदगुप्त माने जायँ तो यथार्थ ही होगा। वे परम धार्मिक महा[illegible] दिलीपवत् काकुत्स्थकुल के भूषण थे। दिलीप ने तो [illegible] कुलगुरु महर्षि वशिष्ठ की नंदिनी नामक सुरभी की [illegible] के लिए अपने शरीर को व्याघ्ररूपधारी शिवगण [illegible] भोजनार्थ अर्पण करने का प्रस्तावमात्र ही किया [illegible] परन्तु महाराज रुद्रप्रताप ने एक सिंह-द्वारा ग्रसित [illegible] की रक्षा के निमित्त अपने शरीर को सिंह का भोजन [illegible] बना दिया और गो-द्विज-प्रतिपालक होने का अक्षय [illegible] प्राप्त कर स्वर्गारोहण किया और इस प्रकार महान् दि[illegible] होने की प्रतिष्ठा प्राप्त की। ओड़छे का प्राकृतिक [illegible] बड़ा ही मनोरम है। नगर के चतुर्दिक् पर्वतों के [illegible] छोटे शृंग फैले हुए हैं। इन पर पलास, खैर, बरगद, [illegible] के वृक्ष उगे हुए खड़े हैं। इन्हीं के बीच बीच में [illegible] मंदिर, कहीं फूटे कोट, कहीं तिद्वारियां देख पड़ती [illegible] जंगली जन्तु भी बहुतायत से इन्हीं सघन वनों में रहते [illegible] पर्वतों के नीचे बड़े बड़े नाले और विकट खड्ड हैं, जो [illegible] बूटियों से भरे पड़े हैं। बँबई, दोनामरुआ, और वनतु[illegible] के असंख्य वृक्ष समभूमि पर उगे हुए हैं। वेत्रवती [illegible] निर्मल धारा प्रवेग से पर्वतों को विदीर्ण करती हुई [illegible] और ऊँची ऊँची पत्थरों की चट्टानों पर से समभूमि [illegible] स्वयं पथरीली है, गिरती है। इसके प्रपात का एक [illegible] बाघ-नाद्य दूर से कर्ण-कुहर में प्रवेश करता है। [illegible] कण उड़ उड़ कर मुक्तावलि की छवि दिखाते हैं और [illegible] किरणों के प्रकाश का सप्त रंगों में विश्लेषण कर [illegible] इन्द्रधनुष बनाते हैं। वेत्रवती के जलप्रपातों की [illegible] एक अभूतपूर्व शोभा छाई रहती है। नदी के [illegible] नाना रंगों के प्रस्थर-खंड पड़े रहते हैं, जिन पर [illegible] बहती हुई वेत्रवती के निर्मल जल की धारा नव[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चादर पर बहती हुई जल-धारा की छटा दिखाती है। नदी के उभय कूलों पर ऊँची ऊँची पथरीली भूमि है। इसी पर ओड़छे का नगर बसा था। जिसके खंडहर अद्यापि

ओड़छे के मध्य में पहुँचती है तब वह दो धारों में फट जाती है और मील भर के विस्तार का एक अंडाकृत टापू अपने बीच में बना कर फिर आगे दोनों धारायें मिल जाती हैं।

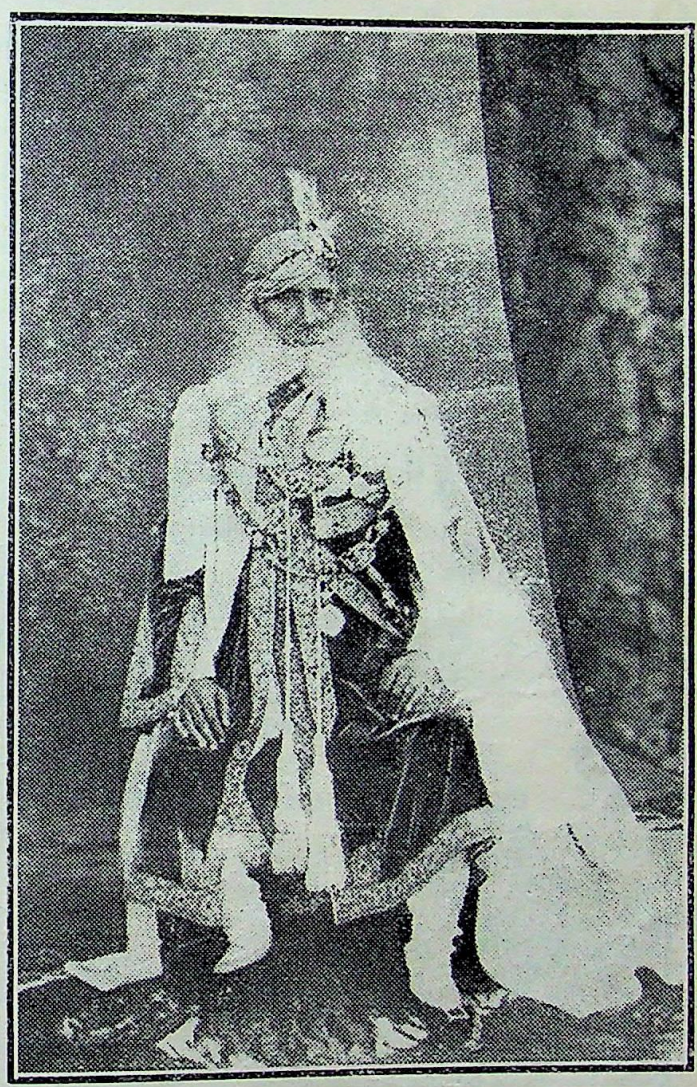

[स्वर्गीय महाराज महेन्द्र सवाई सर प्रतापसिंह साहब बहादुर]

मीलों तक विस्तृत हैं। नदी के तट पर घाटों, देवालयों, कूपों, बावड़ियों और यशस्वी स्वर्गीय ओड़छाधीशों के समाधि-मंदिरों की पङ्क्तियाँ फैली हुई हैं। जब वेत्रवती की धारा

इसी अंडाकृत टापू पर बुंदेलों का कीर्तिस्तंभ ओड़छागढ़ तथा राज्यमंदिर आदि बने हैं। नगर के चतुर्दिक पहाड़ी पत्थरों के भीमकाय टीले चुन चुन कर प्राचीर बनाई गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, जिसमें प्रवेश के लिए बहुत बड़े बड़े और ऊँचे ऊँचे द्वार छोड़ दिये गये थे। ये टीले चूने से जोड़े नहीं गये हैं, किन्तु एक दूसरे पर रख कर चुन दिये गये हैं। बुंदेल-

होकर रह गये हैं कि टाले नहीं टल सकते हैं प्राचीर देखने से स्वाभाविक पर्वतश्रेणीवत् प्रती होती है। संध्या-प्रातःकाल वन-वृक्षों पर पक्षियों की च

[महाराज महेन्द्र सवाई वीरसिंह देव बहादुर—ओड़छा]

खंड में ऐसे शिल्प को रखाधन कहते हैं। प्राचीर के दोनों ओर सघन वट आदि वृक्ष उग आये हैं, जिनकी जड़ों में फँसकर अब ये टीले अपने स्थानों पर ऐसे दृढ़

चहाहट अद्भुत आनंद का संचार करती है। प्राचीर वानरों व लंगूरों की उछलकूद उनकी प्राकृतिक स्व का निदर्शन कराती है। इस नितान्त ऊजड़ दृ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी हमें वह स्थान परम रम्य प्रतीत जान पड़ता है, मानो मनुष्यों के अभाव में स्वयं प्रकृति देवी वहाँ आगन्तुकों का सत्कार करती हो।

गुणग्राही महाराज रुद्रप्रताप के वहाँ राजधानी स्थापित करते ही नगर की श्रीवृद्धि होने लगी। हमने प्राचीन महाजनों व व्यवसायियों से ओड़छा के विभव के संबंध में यह जन-श्रुति सुन रक्खी है कि महाराज रुद्रप्रताप व मधुकर-शाह तथा महाराज वीरसिंहदेव के शासन-काल में ओड़छे

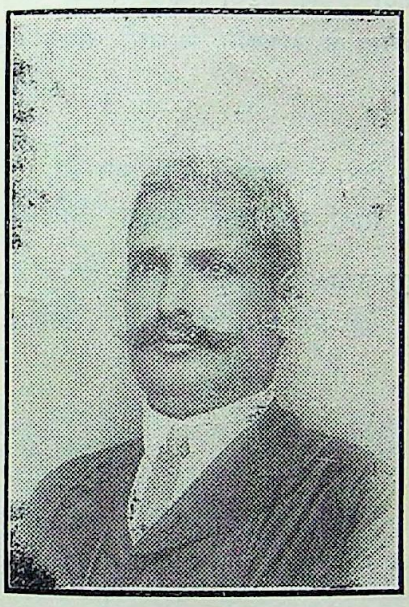

[राय बहादुर पण्डित श्यामविहारी मिश्र-दीवान, ओड़छा-राज्य]

के व्यवसायियों के तथा महाजनों के पास इतना प्रचुर धन था कि ओड़छे के महाजनों से दूर दूर तक की मंडियों के महाजन ऋण लिया करते थे और सौ रुपये पर केवल १ सुपारी मासिक ब्याज रूप में देते थे। इस जनश्रुति में कितना तथ्य तथा सचाई है यह तो ईश्वर ही जाने, पर इतना अवश्य कहना होगा कि ऐसी जन-श्रुतियाँ निराधार नहीं हुआ करतीं। कम से कम इससे यह तो जान ही पड़ता है कि वहाँ के व्यवसायियों के पास प्रचुर धन था, जिसके आधार पर अत्युक्ति-रूप में यह जन-श्रुति प्रचलित हुई। साथ ही इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि उस समय में उस मंडी का व्यापार निरापद था और वह बहुत बड़े व्यापार का केन्द्र थी और उन महाराजों की राज्यव्यवस्था बहुत ही सुशासित थी, क्योंकि बिना सुशासन के व्यापार और वणिक्-समाज की उन्नति नहीं हुआ करती है। जहाँ एक ओर लक्ष्मी का निवास था वहाँ उनके सुशासन में सरस्वती देवी भी लक्ष्मीजी से अपना सहजवैर बिसरा कर अपने उपासकों और सुसन्तानों को लेकर सकुटुंब ओड़छे में

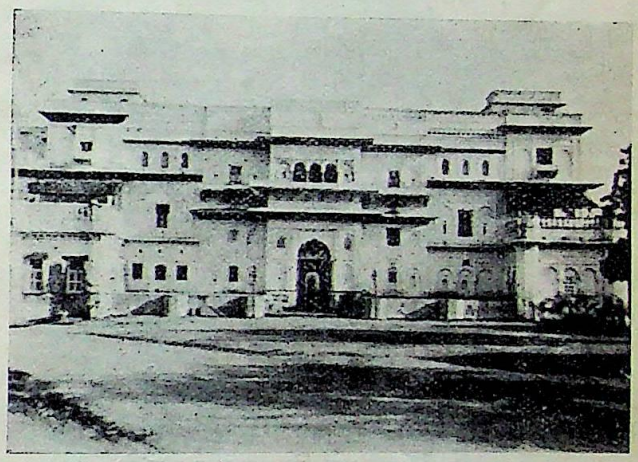

[गगमहल—टीकमगढ़]

आ विराजी थीं। भारतवर्ष में ऐसा कौन अभागी विद्वान् होगा जो पंडित राजकृष्णदत्त मिश्र, विद्यावारिधि श्री काशीनाथ मिश्र, काव्याधार कवीन्द्र केशवदासजी मिश्र, महाकवि बलभद्रजी और कल्याणदासजी के नाम और यश से अपरिचित हो। जिस वंश का विद्वत्त्व इस चरम सीमा को पहुँचा हुआ था उस वंश के चाकर तक देववाणी संस्कृत में संभाषण करते थे जैसा कि कवीन्द्र श्री केशव-दासजी ने अपने वंश के विद्वत्त्व-संबंध में स्वयं लिखा था। भाषा बोल न जानहीं जिनके कुल के दास। भाषा-कवि भो मंदमति तिहि कुल केशवदास—यह पाण्डित्य उनके वंश में बहुत प्राचीन काल से चला आता है। ११ शताब्दी में उनके पूर्वज दिल्लीश्वर महाराज पृथ्वीराज के दरबार में राजपंडित थे। नवीं शताब्दी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज कीर्तिवर्मा की सभा के राज्यपंडित होने की इसी वंश को प्रतिष्ठा प्राप्त थी।

(ओड़छे के सविस्तर वृत्तान्त के लिए देखो सरस्वती अगस्त व सितम्बर सन् १९०१)

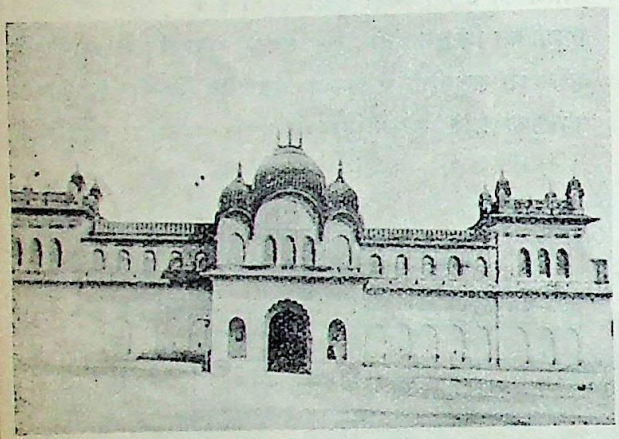

[वृन्दावन-बाग़ का फाटक—टीकमगढ़]

प्रबल ओड़छाधीश महाराज मधुकरशाह से अकबर ने मैत्री-सम्बन्ध जोड़ा था और वह उनका बड़ा मान करता था। यहाँ तक कि महाराज मधुकरशाह के पुत्र महाराज रामसिंह के सिर पर उसने स्वयं अपने हाथों से पगड़ी बाँधी थी। महाराज मधुकरशाह बड़े ही साहसी और निर्भीक थे। सुना जाता है कि एक बार अकबर ने अपने दरबार में यह आज्ञा प्रचारित की थी कि दरबार में कोई हिन्दू राजा चन्दन लगा कर या पूजा का प्रसाद स्वरूप फूलमाला धारण करके या शस्त्र लेकर न आवे। दरबार के सभी अन्यान्य राजाओं ने बादशाह की इस आज्ञा का पालन किया, परन्तु स्वधर्म और स्वजाति के अभिमानी महाराज मधुकरशाह ने इस आज्ञा को अपमानसूचक जाना और दूसरे दिन वे बहुत लम्बा-चौड़ा तिलक लगाकर और फूल-माला धारण करके तथा मियान से बाहर निकालकर नग्न शस्त्रों को लेकर दरबार में गये। इस समय उनके मुख-मंडल पर रौद्रता बरस रही थी और वे मूर्तिमान कालभैरव जान पड़ते थे। अकबर उनके इस रूप को देख सहम गया और उसने बात सँभालने के लिए अपनी सभा-चातुरी से काम लेकर कहा कि बस आज परीक्षा हो गई। मुझे देखना था कि मेरे यहाँ सब नागिनें ही नागिनें हैं या इनमें कोई मणिधर नाग भी है। आपको देखकर यह ज्ञात हो गया कि इन सब नागिनों के मध्य में महाराज आप ही एक मणिधर नाग हैं। भावी उपद्रव हँसी ही हँसी में टल गया। इस घटना के सम्बन्ध में महाराज मधुकरशाह के राजकवि ने उसी समय यह कवित्त सुनाया—

हुकुम दियो है बादशाह ने महीपन को,
मानो रावराजन प्रमाण लेखियत है।
चन्दन लगाओ कहूँ देव-पितृ वन्दन को,
देहौं सिर दाग जहाँ रेखा रेखियत है।

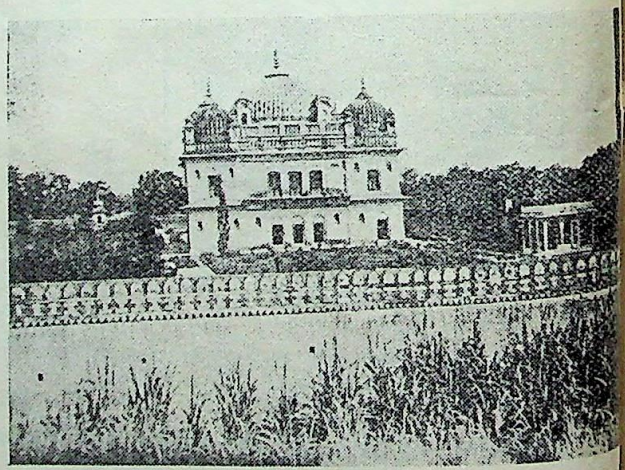

[वृन्दावन-बाग़ का भीतरी दृश्य—टीकमगढ़]

सूनो कर गये भाल छोड़ छोड़ कंठ-माल,
दूसरो दिनेश आज कौन पेखियत है।
सोहत अनूप मधुशाह अनियारो ज्यों,
नागिनिन बीच मनियारो देखियत है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज मधुकरशाह के द्वादशादित्यों के समान उनके द्वादश प्रतापी पुत्र थे। ओड़छा-राज-वंश न केवल वीरत्व के लिए प्रसिद्ध था, किन्तु वह हरिभक्ति, सरस्वती-उपासना और ललितकलाओं के संरक्षण के लिए भी उस समय समस्त भारतवर्ष में प्रख्यात था। बड़े बड़े गुणी और विद्वान् ओड़छा-दरबार के आश्रित थे। ब्रह्म-निष्ठ महात्मा सूरदासजी और नंददासजी के समान हरिभक्त और कविशिरोमणि परमभागवत् महात्मा श्रीहरिरामजी व्यास ओड़छा ही में निवास करते थे।

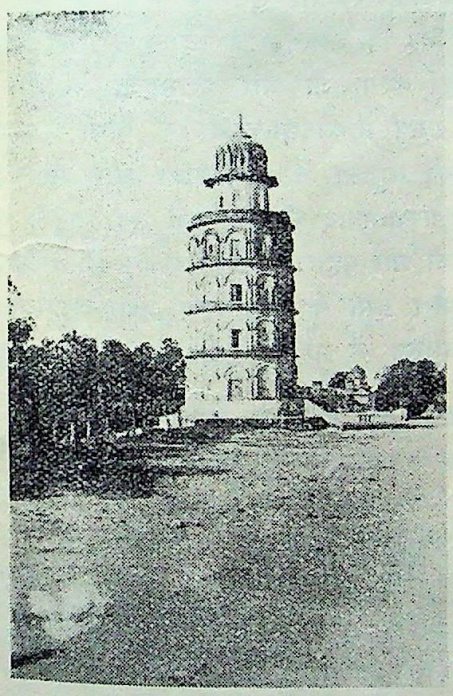

[हनुमान-चालीसा—टीकमगढ़]

पंडितप्रवर कृष्णदत्त मिश्र महाराज मधुकरशाह के दरबार के पुराण-कथा-वाचक थे। शीघ्रबोध के रचयिता पंडितवर काशिनाथ मिश्र ओड़छाधीशों के ही राज्याश्रित थे। गानशास्त्र-विशारदों का एक दूसरा समूह था, जो महाराज मधुकरशाह के पुत्र महाराज इन्द्रजीत के आश्रित था। इस समूह में संगीतशास्त्र-विशारद छः अप्सरायें थीं, जो न केवल गानवाद्य वा नाट्य-शास्त्रों की ही विशारद थीं, किन्तु स्वयं कवि और पंडिता भी थीं। इनके समान गायिकायें स्वयं अकबर के दरबार में भी न थीं। अकबर इनके गान सुनने के लिए लालायित रहता था। इस संबंध में बुन्देलखंड में बहुत सी आख्यायिकायें प्रसिद्ध हैं। इनके नाम प्रवीण राय (यह केशवदासजी की काव्य-साहित्य में शिष्या थी), नवरंग राय, विचित्रनयन, तानतरंग रंगराय, और रंगमूर्ति थे। कवि-प्रिया में आचार्य केशवदास ने इनका वर्णन किया है। इनमें से सबसे श्रेष्ठ प्रवीणराय थी—

राय प्रवीण प्रवीण अति नवरङ्ग राय सुवेष।
पुनि विचित्रनयना निपुनि लोचन ललित सुदेष॥

सोहत सागर राग की तान तरङ्ग तरङ्ग।
रङ्गराय रँग वलित गति, रंग मूरति अँग अँग॥

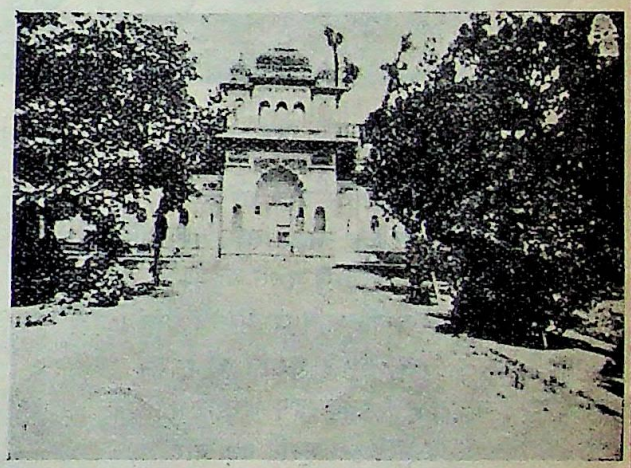

[रानी की बादरी का फाटक—टीकमगढ़ से ७ मील]

तंत्री तुम्बरु सारिका शुद्ध सुरन सों लीन।
देवसभा सी देखिए, राय प्रवीन प्रवीन॥

सत्या राय प्रवीणयुत सुरतरु सुरतरु गेह।
इंद्रजीत तासों बँध्यो, केशवदासहि देह॥

नरी किन्नरी आसुरी सुरीसहित शिरनाय।
नवरस नवधा भक्ति सों, राजत नवरँग राय॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाव भाव संभावना दोला, सम सुखदाय ।
पियमन देत झुलाय गति नवरँग नवरँग राय ॥
भैरवयुत, गौरी सँयुत, सुरतरंगनी लेखि ।
चन्द्रकला सी सोहिये नयनविचित्रा देखि ॥
नयन वयन रति सयन सम, नयनविचित्रा नाम ।
जयन शील, पति मैन सम, सदा करत विश्राम ॥

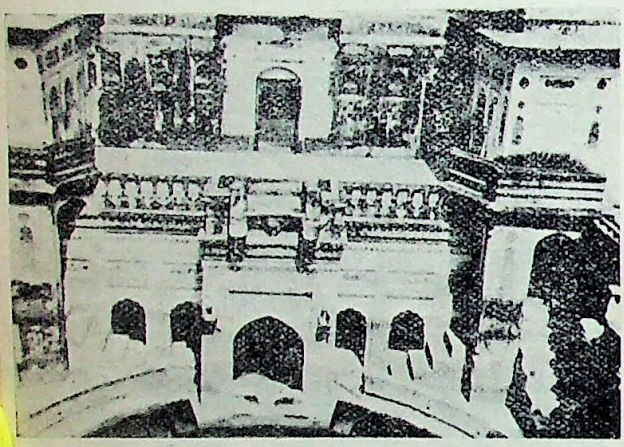

[रानी की बादरी का भीतरी दृश्य—टीकमगढ़ से ७ मील]

नागरि नागरिराग की, सागर ताज तरंग ।
पति पूरण शशि दरश दिन बाढ़त तान तरंग ॥
तानै तान तरंग की, तनु तनु वेधत प्रान ।
कला कुसुम शर शरन की, अति अयान तन आन ॥
रंग राय करि आँगुरी, सकल गुणनि की मूरि ।
लागत मूढ़ मृदंग मुख शब्द रहत भरपूरि ॥
रंग राय कर मुरज मुख रँग मूरति पद चारु ।
मनो पढ़्यौ है साथ ही, सब संगीत विचारु ॥
अंग जिते संगीत के गावो गुणी अनंत ।
रंग मूरत अँग अँग प्रति, राजत मूरतवंत ॥
नाचति गावति पढ़ति सब सबै बजावत बीन ।
तिन मैं करत कवित्त इक राय प्रवीन प्रवीन ॥
राय प्रवीन प्रवीन सों, परवीनन को सुःख ।
अपरवीन केशौ कहा—परवीनन मन दुःख ॥
रतनाकर लालित सदा, परमानंदहि लीन ।
अमल कमल कमनीय कर रमा कि राय प्रवीन ॥
राय प्रवीन कि शारदा, शुचि रुचि रंजित अंग ।
वीणापुस्तकधारिणी राग हंसयुत संग ॥
वृषभवाहिनी अंग उरु, वासुकि लसत प्रवीण ।
शिव सँग सोहै सर्वदा, शिवा कि राय प्रवीण ॥
सविता जू कविता दई ताकहँ परम प्रकाश ।
ताके काज कविप्रिया, कीन्ही केशवदास ॥

प्रवीण राय का स्मारक एक विस्तृत तड़ाग 'प्रवीणसागर' नामक आज भी बुंदेलखंड में शेष है। जहाँ एक ओर यह इंद्र का संगीत का अखाड़ा था, वहाँ दूसरी ओर सुधामय काव्य की अविरल धारा बह रही थी, जिसके उद्गम महा वि केशवदास, कल्याणजी और बलभद्रजी आदि थे। इस समय में ओड़छा-दरबार में विद्या के किसी अंग की न्यूनता न थी। काव्य और संगीत के साथ अध्यात्मवाद की भी चर्चा रहा करती थी, जिसकी ओर महाराज वीरसिंह देव की अभिरुचि थी और इसी के फलस्वरूप प्रबोध-चन्द्रोदय के आभासरूप में महाराज वीरसिंह देव के प्रीत्यर्थ

[कुण्डेश्वर का प्रथम दृश्य—टीकमगढ़ से ४ मील]

आचार्य ने विज्ञानगीता की रचना की थी, जो अध्यात्मवाद का एक परम गूढ़ ग्रन्थ है और जिससे आचार्य की दर्शन-शास्त्रों की विज्ञता का परिचय मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज मधुकरशाह के स्वर्गारोहणोपरांत ओड़छे के राज्यसिंहासन को महाराज वीरसिंह देव ने अलंकृत किया था। ये परमवीर साहसी, स्वधर्माभिमानी, निर्भीक और उदाराशय थे। यदि इन्हें अशरणशरण की

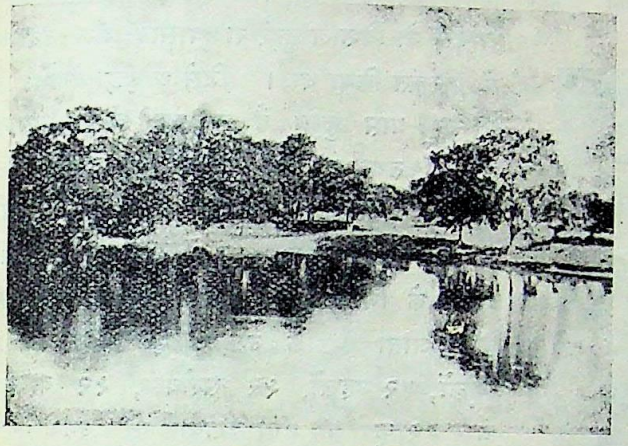

[कुण्डेश्वर का द्वितीय दृश्य—टीकमगढ़ से ४ मील]

उपाधि दी जावे तो अनुचित न होगा। जिस अकबर के आतङ्क से समस्त भारतवर्ष थर्राता था, जो अपने बल के गर्व से अलक्षेन्द्र को भी तुच्छ समझता था, उस प्रबल सम्राट् का महाराज वीरसिंह देव को अणुमात्र भय न था। अकबर के विरोधी को धरा-मण्डल में कहीं त्राणस्थान न था। उसीके बाग़ी पुत्र जहाँगीर को महाराज बीरसिंह देव ने क्षत्री-धर्म निबाहने को अपने अङ्क में शरण दी थी। वे शरणागतवत्सल अशरण को शरण न देने में अपने क्षत्रियत्व का क्षय समझते थे। कविवर रहीम के इस वाक्य पर वे निछावर थे—

रजपूती चाँवरभरी जो कदाच घट जाय।
कै रहीम मरबो भलौ कै स्वदेश तज जाय॥

इसी रजपूती के निर्वाहार्थ उन्होंने जहाँगीर को शरण दे उसे अपने अङ्क में रक्खा और वह भी छिपा-दबाकर नहीं, किन्तु अपने ही दुर्ग के द्वार पर अपने राज-मन्दिर के ही निकट शाहज़ादे के रहने के योग्य राजभवन में उसे शरण दी। वह स्थान जहाँगीर-मन्दिर के नाम से आज भी प्रख्यात है। साधारण दीनों को तो शरण देनेवाले बहुतेरे दीनबन्धु सुने गये हैं, परन्तु विषधरनाग की पूँछ उमेठ कर और कुपितसिंह की मूँछ मरोड़ कर उसके कोप-भाजन को अपना कृपाभाजन बनानेवाले ये बीर बुंदेले महाराज वीरसिंह देव ही थे। जिस अकबर के रोब को चित्तौराधीश प्रातःस्मरणीय महाराना प्रतापसिंह न सँभाल सके थे और जिसकी कोपाग्नि में अपने सर्व-विभव की आहुति देकर भी वे चित्तौर-गढ़ की रक्षा न कर सके थे, उसी प्रचण्ड सम्राट् की कोपाग्नि को महाराज रसिंह देव ने सहज स्वभाव से ही आमन्त्रित किया। अकबर चित्तौरगढ़ और मेवाड़-राज्य का ध्वंस करने में सहज में ही सफल हुआ, परन्तु वीर बुंदेलों और अजित ओड़छागढ़ का वह एक कंगूरा या शिखर तक न छू सका और न महाराज वीरसिंह देव का बाल तक बाँका कर सका, किन्तु यहाँ उसके सारे दर्प का दमन हो गया। कुटिल

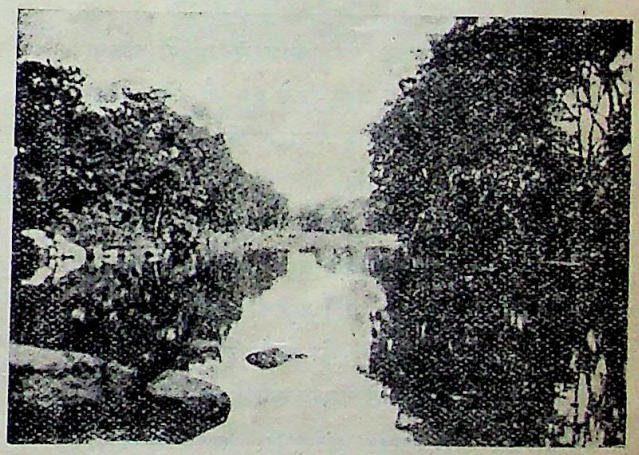

[कुण्डेश्वर का तृतीय दृश्य—टीकमगढ़ से ४ मील]

नीत्यवलम्बी अकबर की काकवाहन शनि की दृष्टि के समान दो महान् हिन्दू राज्यों पर क्रूर दृष्टि रहा करती थी—एक तो चित्तौर पर और दूसरी बुंदेलों के ओड़छागढ़ पर। पर यहाँ उसकी सारी चौकड़ी भूल गई। चौबेजी छब्बे बनने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को चले थे, पर गाँठी के दो और खोकर दुबे ही रह गये। चित्तौर का तो उसने सर्वस्व हरण किया ही था। पर बीरस्थली बुंदेलखण्ड में वह अहमदनगर-राज्य से प्राप्त अपना समस्त विभव और कोष वीरसिंह देव के हाथ खो बैठा और इतना ही नहीं हुआ, किन्तु जिस पुरुष की

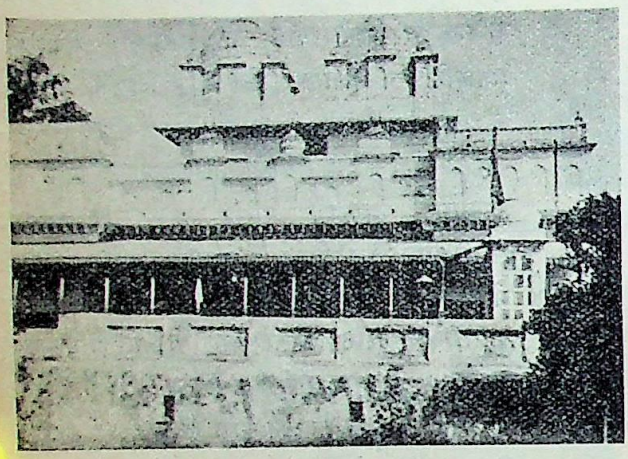

[जानकीबाग़ का राममन्दिर—टीकमगढ़]

विद्या और बुद्धि के बल पर आज संसार में अकबर अकबर कहाने की प्रतिष्ठा प्राप्त किये हुए है, जो अकबर के राज्यरूपी पोत का कर्णधार अबुलफ़ज़ल नामक उसका प्रधान मन्त्री था उसके प्राणों की भी वह दक्षिणा दे बैठा। आँनरी की घाटी बुंदेलखण्ड की 'थर्मापोली' थी और वीरशिरोमणि वीरसिंहदेव इस थर्मापोली पास का वीर लिनियेडास बुंदेला था। अकबर ने सदर्प चित्तौर-गढ़ के सिंहद्वार के कपाटों को वहाँ से उखाड़ लाकर अपनी चित्तौर की विजय के स्मारकरूप में आगरे के क़िले में लगाया था, परन्तु यहाँ बुंदेलवीर महाराज वीरसिंह देव ने अकबर की सेना और २१ सेर अन्नभक्षी भीमकाय अबुलफ़ज़ल पर विजय पाने के स्मारकरूप में उससे छीनी हुई दोनों तलवारों को लाकर अपने शस्त्रागार में रक्खा और इस प्रकार अपमानित होने पर भी अकबर वीर बुंदेला-नरेश सच्चे हिन्दूपति महाराज बीरसिंहदेव का कुछ न बिगाड़ सका। किन्तु फन कुचले हुए सर्प की भांति मैर ही लेता रहा और इसी सन्तप्त दशा में स्वर्ग-यात्रा कर गया। महाराज वीरसिंह देव ने अकबर की प्रतिद्वन्द्विता की होड़ सी बदी थी। जिस प्रकार अकबर ने फ़तेहपुरसीकरी को नाना भवनों व देवस्थानों और राजप्रासादों से अलंकृत किया था, उसी प्रकार महाराज वीरसिंह देव ने ओड़छे को विशाल दुर्ग, राजप्रासादों और देवालयों से अलंकृत किया था। जिसे ओड़छा देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वह वहाँ के राजप्रासादों, मन्दिरों तथा अन्यान्य स्थानों को देखकर मन्त्र-मुग्ध हो अवाक् रह जाता है। ऐसा जान पड़ता है कि महाराज को वास्तुकला से बड़ा ही प्रेम था। भवनों के निर्माण कराने का उन्हें व्यसन था। कहा जाता है कि उन्होंने एक मुहूर्त में ५२ क़िलों, ५२ महलों, ५२ सरोवरों, ५२ बावड़ियों और ५२ कूपों की नींव डलवाई थी। उनके बनवाये हुए स्थानों की जो कुछ सूची प्राप्त हो सकी वह निम्नलिखित है—

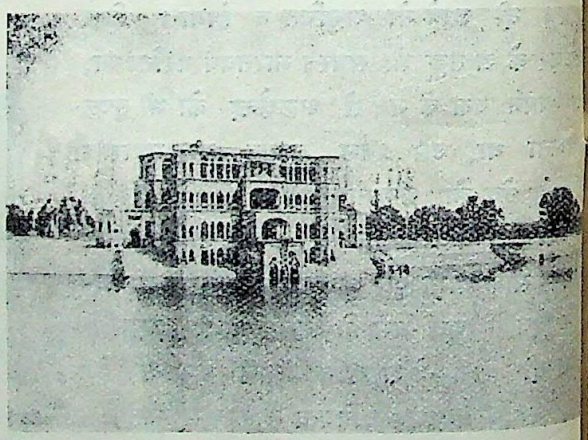

[सागर-सदन—टीकमगढ़]

१ चतुर्भुजजी का मन्दिर, ओड़छा
२ वेतवा-तट का शिवमन्दिर, ओड़छा
३ जहाँगीर महल, ओड़छा-दुर्ग
४ चेतिशक्ति, ओड़छा
५ ओड़छे दुर्ग का नौबत-ख़ाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ ओड़छे का प्राचीर
७ शिकारगाह, ओड़छा
८ हम्माम (दुर्ग में)
९ क़िले के सामने वेत्रवती का पुल
१० नगरा की बावड़ी
११ सिवाँच की बावड़ी
१२ मलटीसिल की बावड़ा
१३ झाँसी का दुर्ग
१४ करहटा का दुर्ग
१५ देवदुर्ग (दिवारा में)

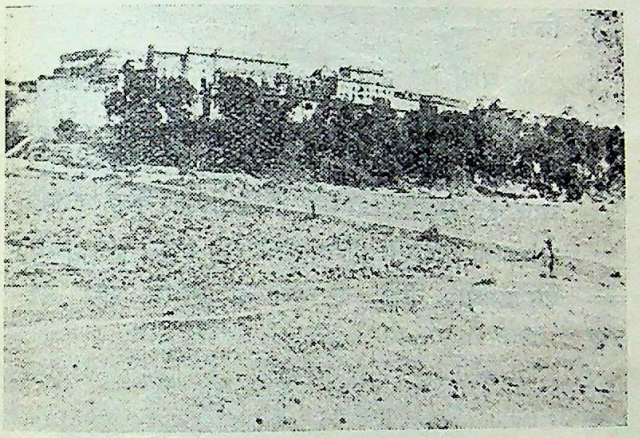

[क़िला—टीकमगढ़]

१६ जैतपुर दुर्ग (वेलाताल पर)
१७ धामौनी दुर्ग (सागर ज़िले में)
१८ कुंडासदुर्ग
१९ कुदरा दुर्ग
२० नवाहीपुर दुर्ग
२१ दतिया के पुराने महल
२२ विचौली के महल
२३ गढ़ कुंडार के महल
२४ वरुआ-सागर-ताल
२५ वीरसागर, ताल (पृथ्वीपुरा का) इसके प्रत्येक पत्थर पर महाराज का नाम अंकित है ।
२६ गदाही के महल

२७ धूमेश्वर महादेव का मन्दिर (सिन्धुतट पर पद्मावती में)
२८ सिंधु के घाट (पुवायाँ में)
२९ कोंच की गढ़ी
३० दतिया की बावड़ी
३१ कुदरा की सड़क की बावड़ी
३२ वारौनी के महल
३३ ओड़छा का राजमन्दिर
३४ तुङ्गना-घाट, ओड़छा
३५ वैद्यनाथ धाम में गणपतिमन्दिर

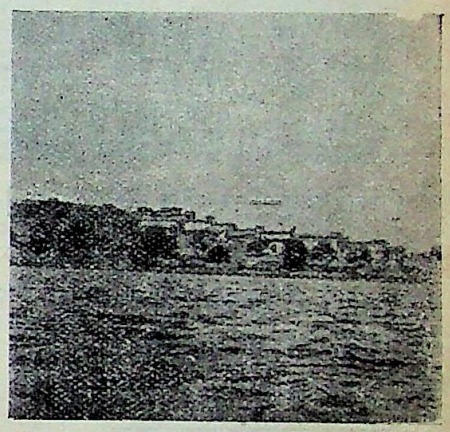

[भोलगढ़—टीकमगढ़ से २३ मील]

३६ काशी की हवेली
३७ विश्वेश्वरमन्दिर का कुछ भाग
३८ कर्णघण्टामंदिर, काशी
३९ केशवदेवजी का मंदिर (मथुरा में केशवदेवजी के कटरे में ३३ लाख रुपया व्यय करके बनवाया था, जिसे औरङ्गज़ेब ने तोड़ा ।)
४० वीधर में देवीजी का मंदिर
४१ मथुरा का विश्रामघाट ।
४२ गंज की हवेली
४३ कुंडेश्वर का मंदिर, टीकमगढ़
४४ तुङ्गनाघाट, ओड़छा
४५ शिवराजपुर के गंगाघाट व हवेली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४६ दिहली का चोपरा
४७ चंदन की बैहर, दतिया
४८ सिन्धुतट पर शिकारगाह
४९ बलदेवगढ़

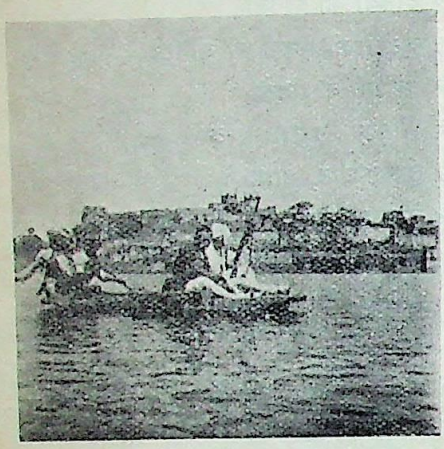

[बलदेवगढ़—२२ मील टीकमगढ़ से]

५० मोहनगढ़
५१ दिवारा का देवसागर-ताल
५२ बरुआसागर पर का दुर्ग
५३ पंडवन का पुल
५४ कुंडास का सिंहसागर-ताल
५५ धौलपुर के निकट चंबल का घाट
५६ थानेश्वर में स्थानेश्वर का मंदिर
५७ झाँसी-क़िले में विशाल कूप व गणपतिमंदिर तथा टीकमगढ़ दुर्ग
५८ तोरणें

इनके अतिरिक्त और शतशः महल, मंदिर तथा तड़ाग महाराज के बनवाये हुए बुंदेलखंड में उपस्थित हैं। ओड़छे भर में और समस्त टीकमगढ़ में महाराज वीरसिंह देव के बनवाये हुए स्थान जगह जगह पर मिलते हैं और उनका शिल्प ऐसा अनुपम है कि बड़े बड़े शिल्प-विद्या-विशारद उन्हें देखकर चकित रह जाते हैं। ओड़छे और टीकमगढ़ के बहुत से स्थानों के चित्र इस लेख में दिये गये हैं। पाठक उन्हें देखकर महाराज वीरसिंहदेव के शिल्पानुराग का थोड़ा-बहुत परिचय कर सकेंगे और यह भी देख सकेंगे कि कितना प्रभूत धन लगाकर इन स्थानों का निर्माण कराया गया होगा। महाराज वीरसिंह देव जसे रणवीर और वृत्तवीर थे, वैसे ही दानवीर थे। मथुराधाम में उन्होंने ८१ इक्यासी मन सोना यमुनातट पर विश्रामघाट पर तुलादानों में दान दिया था, जिस महादान की स्मारक-तुला आज भी मथुरा धाम में उनकी अटल कीर्ति के स्तम्भ के रूप में उपस्थित है। अशरण जहाँगीर के शरणदाता और अकबर के संतापदाता महाराज की भुजाओं के विक्रम के संबंध में कवीन्द्र केशवदास ने थोड़े शब्दों में बहुत ही अच्छा वर्णन किया है—

वीरसिंह नृप की भुजा यद्यपि केशव तूल।
एक शाह को शूल सम एक शाह को फूल॥

ओड़छे के प्राचीर के भीतर प्रवेश करते ही मेरे मनोभाव कुछ ऐसे हो जाते हैं जिन्हें व्यक्त करने के लिए मुझे शब्दों की दरिद्रता प्रतीत होती है। इच्छा यही होती है कि उन धर्मप्राण वीरों के रक्त से रंजित भूमि पर यदि

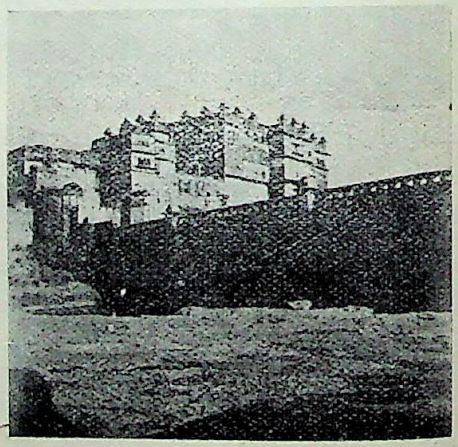

[राजमन्दिर—ओड़छा]

सामर्थ्य हो तो पैरों से न चल कर सिर के बल चलूँ, ध्यान रखते हुए कलेजा काँपने लगता है कि न जाने मेरा पैर किसी ऐसे रजकण पर न पड़ रहा हो जो किसी वीरप्रसूता सती माता का भस्मकण हो अथवा किसी स्वदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वजाति और स्वधर्मप्रिय वीर के रक्त से रंजित हो चुका है। क्योंकि अकबर के पश्चात् शान्ताडम्बरी शाहजहाँ ने बुन्देलकुल-कीर्ति और बुन्देलों

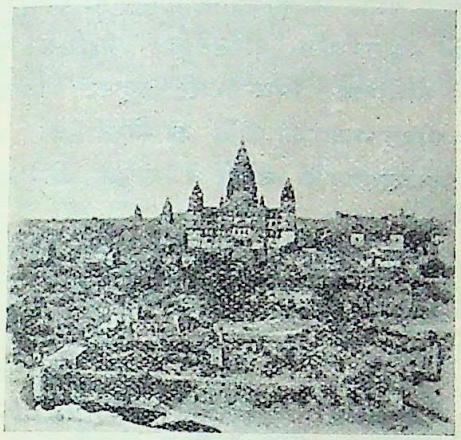

[चतुर्भुज रायजी का मन्दिर—ओड़छा]

के कीर्ति-स्तम्भों और देवालयों के नष्ट करने का बीड़ा उठाया था। जब उसके सेनापति बाक़ीख़ाँ, रणदूलहख़ाँ, शाहबाजख़ाँ, फ़तेहयाबख़ाँ आदि बड़ी बड़ी सेनायें लेकर

[हरदोल की कमान और अखाड़ा—ओड़छा]

ओड़छा और बुन्देलकुल-कीर्ति को ध्वंस करने आये थे, उस समय कुमार सारवाहन ने देश-रक्षा के हेतु इसी भूमि पर अपना रक्त बहवाया था। वीर चम्पतराय के सैनिकों ने देश व जाति की मान-रक्षा के लिए यहीं अपने प्राणोत्सर्ग किये थे। बन्धुवत्सल भीम बुन्देले ने अनुपम आत्मोसर्ग दिखाते हुए यहीं स्वयं विषान्न भोजन

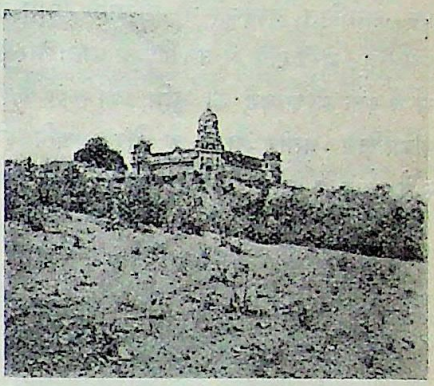

[लक्ष्मीजी का मन्दिर—ओड़छा]

कर चम्पतराय के प्राणों की रक्षा की थी। महात्मा प्राणनाथजी ने यहीं अपनी अलौकिक शक्ति दिखा रणदूलहख़ाँ के छक्के छुड़ाये थे। शाहजहाँ के इन सेनापतियों को परास्त व वध करके वीर बुन्देलों ने यहीं

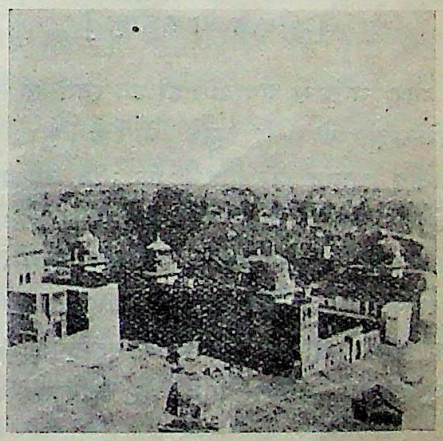

[फूल बाग़—ओड़छा]

रणचंडी को रक्तपान कराके तृप्त किया था। महात्मा हरीरामजी व्यास ने यहीं हरिभक्ति की सुधाधारा बहाई थी। आत्मसंयमी कुमार हरिदेवसिंहजी ने अपनी सत्यनिष्ठा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा देते हुए यहीं पर विषपान कर रघुनाथजी के मन्दिर में धर्म की दुन्दुभी बजाते हुए स्वर्ग-यात्रा की थी। चतुर्भुजजी के पवित्र मन्दिर की रक्षा करते हुए यहीं पर अगणित बुन्देलों ने नीरगति प्राप्त की थी। कहाँ तक कहूँ, मेरी दृष्टि में उन पवित्र प्रातःस्मरणीय वीरों के भस्म व रक्त से ओड़छे की भूमि का कण कण सिंचित और सम्मिलित प्रतीत होता है और यद्यपि विवश हो उस पर पैर रखना होता है तथापि हृदय, नेत्र और मस्तक

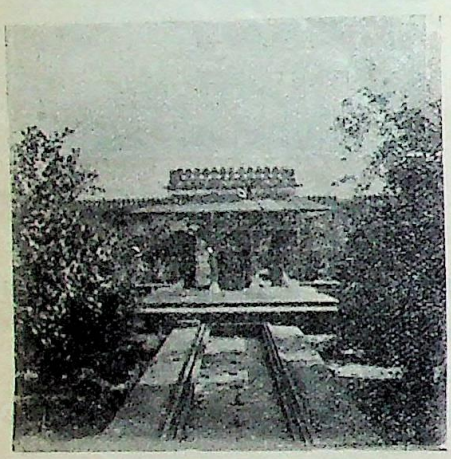

[हरदाल का अखाड़ा]

श्रद्धा और भक्ति से अनायास ही उन स्वर्गगत आत्माओं के अभिवन्दन के लिए झुक जाते हैं। मुझे यह जान कर अतीव आनंद हो रहा है कि तीन सौ वर्षोपरान्त ओड़छे के पवित्र सिंहासन पर मातृ-भाषा के प्रेमी और उपासक, उदारचरित महेन्द्र महाराज वीरसिंहजू देव पुनः आसीन हो रहे हैं। हम बुन्देलखण्डीय लोग ईश्वर से सद् हृदय से प्रार्थना करते हैं कि महेन्द्र महाराज वीर-सिंहजू देव का शासन ओड़छे के लिए मंगलमय हो। अपने पूर्वज महाराज वीरसिंह देव की ही भाँति वे प्रता और यशस्वी हों और उनके चिर शान्ति शासन-काल में उनके विद्या और कला के प्रेम संरक्षण के प्रभाव से ओड़छा-राज में पुनः कवीन्द्र के सरीखे महान् कवि, पण्डितप्रवर वीरमिश्र, कृष्ण मिश्र काशीनाथ मिश्र-सरीखे उद्भट विद्वान् प्र होकर ओड़छा-राज्य की कीर्ति का विस्तार करें। ओड़ नरेश बुन्देलखण्ड के नरेशों में सबसे शिरोमणि

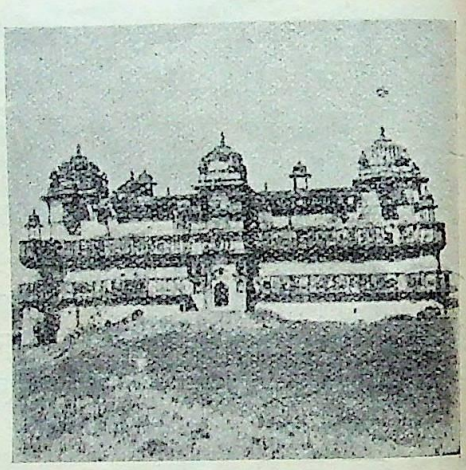

[जहाँगीरपुर—ओड़छा]

जाते हैं। बुन्देल-खण्ड के सब श्रीमानों के घरान उद्गम ओड़छा ही है। ओड़छाधीशों की उपाधि व सरामदराज हाय बुन्देलखण्ड हैं और उनका विरुद स्वस्तश्री सूर्यकुलावतंस, काशीश्वर ग्रह नि पंचम बुन्देलखण्ड मंडलाधीश्वर, तड़ितरंग लोह गढ़कुण्डार के धनी है। हम यहाँ महेन्द्र महाराज सिंहजू देव ओड़छाधीश को उनके मंगलमय राज्य-तिलक के उपलक्ष्य में हार्दिक बधाई देते हैं।

—कृष्णबलदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोग

उसने लड़कपन में किसी को प्यार किया था। किन्तु जिसे प्यार किया था उसके प्यार का वह मर्म न समझती थी। प्यार का मर्म तो प्यार करके ही जाना जाता है; और प्यार की ठोकरें खाकर ही प्यार करना आता है। फिर वह जो अभी ठोकरों के ख़याल से घबराती थी, उस प्यार करनेवाले को कैसे समझ पाती जो शताब्दियों से ठोकरों पर ठोकरें खाकर, मँजकर, जीवन के कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलकर उस मंज़िल तक पहुँचा था। उसकी आँखों में तो अभी उस जवान की सूरत बसी थी जिसमें बाँकपन था, जो हँस-हँस कर घुलघुल कर प्रेमालाप करना जानता था। फिर वह उस पागल प्रेमी को कैसे समझती जो नंगे सिर, नंगे पैर फिरा करता था, जो सामने आकर मुख से एक शब्द भी न निकाल पाता, हाँ, अपनी बड़ी-बड़ी तेज़ आँखों से कुछ कहता अवश्य था। उस प्रणय का वही अंत हुआ जो साधारणतया होता है। इस तरह एक बार फिर नैराश्य की चोट खाकर आनंदकुमार के तृष्णा-विकल मन ने उदासीनता की उस निर्जन कुटी में शरण ली जहाँ की नीरवता में ही उसे कुछ शांति प्राप्त होती थी।

बहुत दिन बीत गये। बालक युवक हुआ। साधना के उस कुटीर में आनंद को शांति तो यथेष्ट मात्रा में प्राप्त हुई, किन्तु तृष्णा की ज्वाला निरंतर धधकती रही। हाँ, आग पर राख की हलकी सी चादर अवश्य पड़ गई थी।

एक दिन वायु के एक झोंके ने चादर उलट दी।

शाम हो चली थी। इलाहाबाद-मुग़लसराय-पैसेंजर हवा से बातें करता चला जाता था। इंटर दर्जे के एक डिब्बे में आनंदकुमार जो एक समाचार-पत्र के विशेष प्रतिनिधि की हैसियत से प्रान्तीय राजनैतिक कान्फ़रेंस में शरीक होने के लिए बनारस जा रहा था, एक बेंच पर सामने अख़बारों का ढेर रक्खे हुए एक अँगरेज़ी पत्रिका के पन्ने उलट-पलट रहा था। जब अपने पास पढ़ने का मसाला आवश्यकता से अधिक होता है तब जल्दी किसी लेख में चित्त नहीं जमता। पत्रिका रोचक आख्यायिकाओं और लेखों से भरी थी, लेकिन आनंद तय न कर सका कि क्या पढ़े। वह उसे बंद करने ही जा रहा था कि एकाएक एक लेख के शीर्षक ने उसका ध्यान आकृष्ट किया। शीर्षक था—आनंद की खोज। आँखें हठात् लेख की पंक्तियों पर दौड़ने लगीं—"यह एक अजीब बात है कि इस बीसवीं सदी में भी, जब वैज्ञानिक आविष्कारों की कृपा से कदाचित् कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ मनोरंजन के यथेष्ट साधन विद्यमान न हों, संसार में ऐसे मनुष्यों का अभाव नहीं है जिनके अंधकारपूर्ण हृदयों में आनंद की किरणें प्रवेश नहीं कर पातीं। संपन्नता और साधनों के होते हुए भी उनका मनोरंजन नहीं होता। सिनेमा का अच्छा से अच्छा 'फ़िल्म', क्रिकेट, फ़ुटबाल और टेनिस का बढ़िया से बढ़िया खेल, विश्व-विख्यात सुन्दरियों का मनोमुग्धकारी नृत्य देखकर भी उन्हे आनंद नहीं प्राप्त होता! वे हाड़-मांस के चलते-फिरते पुतले हैं, जो जीवित हैं किन्तु जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सुख नहीं जानते ! ऐसे व्यक्तियों से हम एक बात कहना चाहते हैं। अपने जीवन में वे जिस अभाव का अनुभव करते हैं उसके कारणों को उन्हें कहीं बाहर नहीं, अपने ही अन्दर ढूँढ़ना चाहिए। उनकी हाड़-मांस की मशीनों में अवश्य ऐसे पुर्ज़े हैं जो ठीक तरह काम नहीं करते ! .....”। आनंद गहरे विचारों में डूब गया। पत्रिका को सीने पर रखकर, ऊपर से दोनों हाथ कसकर, वह खिड़की के बाहर देखने लगा। 'भक-भक' 'भक-भक' करती हुई गाड़ी वेग से चली जारही थी। हर चीज़ दौड़ती-भागती, चलती-फिरती नज़र आती थी। नूतन पल्लवों से सज्जित वृक्ष-समूह, जुते हुए खेत और हरे-भरे मैदान, जल से भरे हुए छोटे-बड़े पुखरे और ताल, कंधों पर हल रक्खे झूमते हुए बैलों को हाँकते हुए किसान, विराट् गगन में उड़ते हुए पक्षियों की पंक्तियाँ, रक्त-रंजित क्षितिज, प्रकृति की ये सभी विभूतियाँ, किसी अज्ञात प्रेरणा के वशीभूत होकर निश्चित मार्ग पर प्रसन्न-चित्त चल रही थीं। सर्वत्र आनंद की रेखायें प्रस्फुटित हो रही थीं। किन्तु उस सर्वव्यापी आनंद की छाया आनंद के हृदय में न थी ! जो सबके लिए था वह उसके लिए न था। उस लेख में जिन निरीह व्यक्तियों का उल्लेख था उनमें और आनंद में कितनी समानता थी ? हाँ, वह हाड़-मांस का पुतला था, जो जीवित था किन्तु जीवन का सुख न जानता था। अपने ख़र्च के लिए वह महीने में काफ़ी पैदा कर लेता और अवकाश मिलने पर मनोरंजन के साधनों से लाभ भी उठाता था, किन्तु उसे जिस आनंद की आकांक्षा थी वह कहीं प्राप्त न होता। तो क्या सचमुच उसके हाड़-मांस की मशीन में कोई ऐसा पुर्ज़ा है जो ठीक तरह काम नहीं करता ?

“महोदय !” विचार-शृंखला टूट गई। आनंद ने आँखें फेरकर देखा, लंबे क़द की एक युवती, खद्दर की सफ़ेद साड़ी पहने, सामने खड़ी हुई, उसकी ओर देख रही है। उसकी आँखों में झिझक या संकोच का नाम न था।

“ज़रा...आपका 'बाम्बे क्रानिकल' देख सकती हूँ ?”

“बाम्बे क्रानिकल.....ज़रूर.....ज़रूर देखिए—” सिकुड़कर बैठते हुए आनंद ने कहा।

अख़बारों के ढेर में से बाम्बे क्रानिकल लेकर खोलकर, वहीं खड़ी खड़ी वह उसे एक क्षण पढ़ती रही, फिर अपने बेंच की ओर चली गई।

आनंद के आश्चर्य का ठिकाना न था। भले घर की स्त्री भी इतनी निडर, इतनी निःसंकोच हो सकती है, यह उसे ज्ञात न था। जिन भारतीय महिलाओं को वह अभी तक पिंजड़े में बंद पक्षियों के समान समझता आता था, उन्हीं की एक प्रतिनिधि को क़ैद से निकल कर आज इस तरह स्वच्छंदता से घूमते-फिरते देखकर उसे आश्चर्य होना स्वाभाविक ही था। इधर-उधर बैठे हुए मुसाफ़िरों के बीच से होकर उस ओर जाती हुई उस विचित्र युवती की ओर आनंद कई क्षण चुपचाप देखता रहा, फिर बलपूर्वक दृष्टि हटाकर पत्रिका के पृष्ठों में आँखें गड़ा दीं।

आनंद की आँखें तो लेख की पंक्तियों में लगी थीं, किन्तु उसका मस्तिष्क उसी विचित्र युवती की बात सोच रहा था। क्या वह सुन्दर थी ? नहीं, सौंदर्य-शास्त्र का कोई विशेषज्ञ शायद उसे स्वरूपवती न कहता। आनंद भी उसे रूपवती न कह सकता, किन्तु उसे कुरूप कहना भी कठिन था। उसके गेहुँये रँग के शरीर की गठन में, चेहरे की बनावट में, छोटे-छोटे होंठों में, बड़ी-बड़ी आँखों में एक विचित्र आकर्षण था, जो आनंद के प्रताड़ित मन को बलपूर्वक अपनी ओर खींच रहा था। हाँ, उसमें आकर्षण था, वह आकर्षण जो आकाश में उस समय होता है जब सूर्यास्त के बाद विराट् शून्य के अंचल से निकलकर पहला तारा मंद मंद मुस्कराने लगता है ! भावों का—स्पष्ट, अस्पष्ट भावों का—ऐसा अद्भुत् सौंदर्य आनंद ने पहले किसी स्त्री में न देखा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ने की चेष्टा व्यर्थ सिद्ध होने के कारण आनंद ने पत्रिका के पृष्ठों से आँखें हटाकर उस ओर देखा जहाँ वह युवती सिर झुकाये हुए अख़बार पढ़ रही थी। सिहरकर, सिर उठाकर, युवती भी आनंद की ओर देखने लगी। दोनों की आँखें मिलीं। युवती की आँखें विजय-गव से हँस पड़ीं। झेंपकर आनन्द ने आँखें नीची कर लीं, और फिर पढ़ने की कोशिश करने लगा। युवती फिर समाचार-पत्र पढ़ने लगी।

फिर वही हाल हुआ। आनन्द की आँखें तो लेख की पंक्तियों पर धीरे धीरे अवश्य चलने लगीं, किन्तु मस्तिष्क के धुँधले परदे पर उसी अभिनय के चित्र फिरने लगे जिसका आज यहाँ इस प्रकार सूत्र-पात हुआ और जिसमें उसे अनायास ही भाग लेना पड़ा। ऊबकर, पत्रिका एक ओर रखकर, उसने अँगरेज़ी का एक लम्बा-चौड़ा, चमकता-दमकता' रँगा-चुँगा सचित्र साप्ताहिक उठा लिया।

साप्ताहिक के पन्नों से दृष्टि उठाकर आनन्द ने देखा, युवती उसकी ओर चली आ रही थी। आनन्द ने फिर कृत्रिमता की शरण ली। बलपूर्वक आँखें झुकाकर वह फिर हॉलीउड के उन 'एक्टरों और एक्टरेसों' के चित्र देखने लगा जिन्हें एक क्षण पहले देख रहा था। उसकी आँखें तो साप्ताहिक के पृष्ठों पर अवश्य झुकी हुई थीं, लेकिन उसने देखा कि युवती समीप आ गई है। विवश होकर, आनन्द को फिर दृष्टि ऊपर उठानी पड़ी।

"बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ," बाम्बे क्रानिकल को आनन्द की ओर बढ़ाकर, उसके चेहरे की ओर एक विचित्र भाव से देखती हुई, मुस्कराती हुई युवती ने कहा—

"धन्यवाद.....की तो.....कोई ज़रूरत थी।"

जहाँ आनन्द बैठा हुआ था वहाँ जो तीन-चार मुसाफ़िर बैठे थे वे पिछले स्टेशन पर उतर चुके थे। दोनों बेंच ख़ाली हो गये थे।

"आप कहाँ जा रही हैं? बैठिए।"

"मैं तो बनारस जा रही हूँ। और आप?" वह सामने बेंच पर बैठ गई।

"मैं भी बनारस ही जा रहा हूँ। आप वहाँ क्या कान्फ़रेंस में शरीक होने के लिए जा रही हैं?"

"जी हाँ। आप भी शायद इसी लिए जा रहे हैं?"

"जी हाँ। मुझे भी कान्फ़रेंस में शरीक होना है। आपका शुभ नाम?"

"श्यामादेवी। और आपका?"

"मुझे आनन्दकुमार कहते हैं।"

"आप क्या काम करते हैं, महोदय?"

"मैं एक समाचार-पत्र का संवाददाता हूँ। आप?"

"मैं एक स्कूल में अध्यापिका हूँ और कांग्रेस में भी थोड़ा-बहुत काम करती हूँ।"

दोनों चुप थे। साधारण शिष्टाचार के सभी प्रश्न ख़त्म हो गये। अब कोई प्रश्न न सूझता था।

युवती को साप्ताहिक पत्र की ओर देखती हुई देख-कर आनन्द ने उसे उसकी ओर बढ़ा दिया। प्रसन्न होकर, उत्सुकता से साप्ताहिक लेकर, वह उसे देखने लगी। आनन्द ने 'हिन्दू' उठा लिया।

एक घंटा बीत गया। बनारस आ पहुँचा।

"बनारस में आप कहाँ ठहरेंगे?" बन्द करके, साप्ताहिक को पत्रों के ढेर पर रखते हुए युवती ने पूछा।

"किसी होटल में ठहरने का विचार है। आप कहाँ ठहरेंगी?"

"यहाँ मेरी एक सखी रहती हैं, उन्हीं के पास ठहरूँगी।" होठों तक एक प्रार्थना आकर लौट गई।

"कान्फ़रेंस में तो आपसे भेंट होगी?"

"ज़रूर। मैं आपसे ज़रूर मिलूँगी।"

उठकर, आँखों की सम्पूर्ण शक्ति से एक क्षण आनन्द के मुख की ओर देख कर, हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर, नमस्कार करके, वह उस बेंच की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली गई जहाँ उसका असबाब रक्खा हुआ था। जवाब देकर, उठकर, आनन्द अख़बारों को बिस्तरे में लपेटने लगा।

अपना छोटा-सा 'ट्रंक' लिये हुए, युवती गाड़ी से उतर पड़ी, एक बार आनन्द की ओर देखा, फिर आगे बढ़ गई। असबाब उठाकर आनन्द भी उतर पड़ा।

आगे असबाब लिये कुली के पीछे चलते चलते, आनन्द ने मुड़कर देखा, वह असाधारण युवती एक अधेड़ स्त्री से लिपटी खड़ी थी।

(२)

स्वागतकारिणी कमेटी के अध्यक्ष और कान्फ़रेंस के सभापति के भाषणों के बाद जब पहले दिन की कार्यवाही समाप्त हो गई और भीड़ का रेला निकल गया तब आनन्द हाथ में "अटैचीकेस" लिये पंडाल से बाहर निकला। मन को मारे धीरे धीरे वह उस ओर चला जहाँ सवारियों का अड्डा था। आज वह दिखलाई क्यों नहीं दी? पंडाल में इधर-उधर आँखें दौड़ाकर उसने उसे कई बार खोजा था, लेकिन उसका कहीं पता न था। क्या वह नहीं आई? क्यों नहीं आई? जिस अस्पष्ट 'झिलमिल' आशा के बल पर आनन्द का कल्पना-संपन्न मन कल से एक बार फिर स्वप्नों की सृष्टि करने लगा था उस पर आज इस समय फिर आघात हुआ। वे रँगीले स्वप्न अपने नन्हें नन्हें जुगनू से पंख फैला फैलाकर उड़ उड़कर इधर-उधर भागने लगे। विषाद की धुँधली छाया उर-देश से निकल निकल कर उसके मुखमंडल पर फैलने लगी।

"आनन्द बाबू!" डूबते हुए को सहारा मिला। घंटों से आकाश में मँडलाते हुए कबूतर एकाएक छतरी पर उतर पड़े! सूखते हुए ताल में सहसा सैकड़ों मार्गों से जल भरने लगा! झाग उठने लगा, लहरें हिल-मिलकर नाचने लगीं। आनन्द के शरीर का कण-कण आन्दोलित हो उठा। एक दीर्घ-निःश्वास छोड़ कर खड़े होकर, मुड़कर, उसने देखा, वह उसकी ओर चली आ रही थी।

समीप आकर श्यामा ने हाथ जोड़ कर नमस्कार किया।

"मैं आपको बड़ी देर से खोज रहा था!"

आनन्द के स्वर में जो स्नेह-मृदु ताड़ना थी उसकी चोट खाकर, तिलमिला कर श्यामा ने कहा—मैं भी आपका इन्तज़ार कर रही थी।

"पंडाल में आप कहाँ बैठी थीं? मैंने तो आपको नहीं देख पाया।"

"लेकिन, मैंने आपको देख लिया था!" बदला हो गया!

"इस समय आप कहाँ जायँगे? मेरे साथ चलिए।"

आनन्द दुविधा में पड़ गया। "चल तो सकता हूँ, लेकिन अभी आज की रिपोर्ट भेजनी है।"

"हाँ यह तो सबसे पहले होना चाहिए।"

"आप मेरे साथ चल सकती हैं?"

"चलने को तो तैयार हूँ, लेकिन मेरी सखी मेरा इन्तज़ार करती होगी। और लोग भी आनेवाले हैं। उनके यहाँ चार बजे चाय की दावत है।"

"तब तो अभी चलना ठीक नहीं है। आपको वहाँ से कब तक फ़ुरसत होगी?"

"शायद छः बजे तक। आप कहाँ ठहरे हैं?"

"ग्रैंड होटल में। तो फिर मैं छः बजे आकर आपको बुला लूँगा। आपकी सखी का मकान कहाँ है?"

"यहीं पास ही है। आप क्यों कष्ट करें, मैं ख़ुद आ जाऊँगी।"

"आपको बुलाने जाने में मुझे कष्ट होगा, आपका ख़याल ग़लत है। ख़ैर आप कब आयेंगी?"

"साढ़े छः बजे तक आ जाऊँगी। अच्छा, अब आप जाइए। अभी आपको बहुत ज़रूरी काम करना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ज़रूर आयेंगी ?"

"ज़रूर आऊँगी। विश्वास कीजिए। अच्छा, नमस्कार।" श्यामा ने अपना हाथ आनंद की ओर बढ़ा दिया।

श्यामा का हाथ पकड़े उसके प्रफुल्ल मुखमंडल की ओर देखता हुआ आनंद एक क्षण मंत्र-मुग्ध सा खड़ा रहा; फिर हाथ छोड़ कर धीरे धीरे वह एक ताँगे की ओर बढ़ा। स्वप्नों की टूटी हुई माला फिर बँध गई। उसका हृदय विश्वास से भर गया।

तन्मयता की दशा में वहीं खड़ी खड़ी ताँगे की ओर बढ़ते हुए आनंद की ओर श्यामा एक क्षण देखती रही, फिर जी कड़ा करके वह एक ओर चली गई।

अपने मस्तिष्क से आनंद श्यामा को एक क्षण के लिए भी न दूर कर सका। होटल जाते समय, रिपोर्ट लिखते समय, तार-घर जाते और लौटकर आते समय, होटल लौट कर कपड़े बदलकर हाथ-मुँह धोकर चाय पीते समय वह बराबर उसके पास बनी रही—इस तरह बनी रही मानो वह सदा से उसके अस्तित्व का एक अत्यंत आवश्यक अंग रही हो।

नियत समय आ पहुँचा। आनंद बड़ी व्यग्रता से श्यामा की राह देखने लगा। वह कितने बार ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर आया-गया, इसका उसे स्वयं ज्ञान न था। प्रतीक्षा की पीड़ा का ऐसा अनुभव उसे पहले कभी न हुआ था। जिस आशा की नींव पर उसका विकल मन उसके भविष्य की सृष्टि कर रहा था वह संशय और दुविधा के चक्कर में पड़कर प्रतिक्षण क्षीण हुई जाती थी।

आख़िर वह आ पहुँची। होटल के ऊपरी बरामदे में पड़ी हुई आरामकुरसी से उठकर बढ़कर नमस्कार का जवाब देकर आनंद श्यामा के मुख की ओर शिकायतों से भरी हुई आँखों से देखने लगा। वह बहुत कुछ कहना चाहता था, किन्तु मुख से एक शब्द भी न निकल सका।

"मुझे देर हो गई। माफ़ कीजिएगा" विनय-पूर्ण आँखों से आनंद के मुख की ओर देखती हुई श्यामा ने कहा।

"आप आ गईं, यही क्या कम है! आइए, बैठिए।"

दोनों एक सोफ़े पर जा बैठे। एकटक आनंद के मुख को ओर देखकर श्यामा उसका मनोभाव समझने की चेष्टा करने लगी।

फ़र्श की ओर ताकती हुई आँखें ऊपर उठाकर श्यामा की आँखों से मिलाकर आनंद ने कहा—मैं तो समझ रहा था कि शायद आप न आयेंगी।

"यह कैसे मुमकिन था ? आप मुझे 'आप' न कहा कीजिए।"

"क्यों ?"

"यों ही। मुझे अच्छा नहीं लगता।"

दुविधा विश्वास में परिणत हो गई। उत्फुल्ल नेत्रों से श्यामा की ओर देखकर आनंद ने कहा—मुझे तुमसे यही आशा थी, श्यामा! आज तुमसे बहुत सी बातें पूछूँगा। बोलो, बताओगी ?

श्यामा एक क्षण चुपचाप सोचती रही, फिर—क्यों न बतलाऊँगी ? लेकिन आप क्या पूछेंगे ? और वे बातें जानकर आप क्या करेंगे ?

"किसी को जानने के लिए उसी के मुख से सुनने से बढ़कर और क्या हो सकता है ? इसी लिए तुमसे दो-चार बातें पूछना चाहता हूँ।"

"आप पूछना ही चाहते हैं, तो पूछिए। मुझे यों तो कोई आपत्ति नहीं है। हाँ, यह डर ज़रूर है कि कहीं आप मुझसे घृणा न करने लगें।" श्यामा ने सिर झुका लिया।

"तुम्हारा भय निर्मूल है, श्यामा। मैं इतना कच्चा नहीं हूँ। ज़िन्दगी ज़िन्दगी है। आदमी आदमी है। मा के पेट से निकलते ही कोई गुणों का पुतला नहीं बन जाता। बार बार ग़लतियों की ठोकरें खाकर ही आदमी ऊपर उठता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्यामा विचार-सागर में गोते लगाने लगी। जिस सुख-दुःखमय अतीत को संसार की आलोचनात्मक दृष्टि से सुरक्षित रखने में ही पहले सुभीता था, आज उसे इस सरल-हृदय देवतुल्य व्यक्ति के सामने खोल कर रख देने में ही कल्याण दिखाई देता था। डूबता हुआ मनुष्य एक बार जल-प्रवाह में बहती हुई लकड़ी का सहारा पाकर उसे छोड़ देने का कभी साहस नहीं कर सकता, चाहे वह उसे किनारे से कोसों दूर ही क्यों न बहा ले जाय! "बार बार ग़लतियों की ठोकरें खाकर ही आदमी ऊपर उठता है!" कितने ढंग से कितने बार वह यह कथन सुन चुकी थी, किन्तु इसके ज्योतिर्मय सत्य का ऐसा ज्ञान उसे कभी न हुआ था। हाँ, इस असाधारण व्यक्ति को सब कुछ बता देना चाहिए।

विचारों में तल्लीन श्यामा के मुख की ओर देखकर आनंद ने कहा—अब मैं तुमसे सिर्फ़ एक बात पूछना चाहता हूँ, श्यामा, बताओ, तुम कौन हो।

विचार-कुंज से निकलकर श्यामा बोली—यह तो मैं आपको पहले ही बता चुकी हूँ।

"जो कुछ अभी तक मैंने जान पाया है उससे मेरा कौतूहल शांत नहीं हुआ। मैं सब कुछ जानना चाहता हूँ। और इससे भी शायद तुम्हें इन-कार न होगा कि सब-कुछ जान लेने का मुझे हक़ भी है। जब मैंने तुम्हें पहले-पहल देखा था उसी वक़्त समझ गया था कि तुम कोई साधारण स्त्री नहीं हो। तुम्हारे जीवन में ऐसी घटनायें अवश्य हुई हैं जिनके कारण तुम वह बन गई हो जो इस समय हो। उन्हीं घटनाओं का इतिहास मैं तुम्हारे मुख से सुनना चाहता हूँ।"

एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर श्यामा ने कहा—आप सुनना ही चाहते हैं, तो मैं ज़रूर कहूँगी। लेकिन वह सब सुनकर आपको दुःख हो तो इसमें मेरा कोई दोष न होगा।

(३)

श्यामा एक क्षण निस्तब्ध बैठी रही फिर वह कहने लगी—अपने मा-बाप की मैं अकेली संतान थी। अभी मैं केवल १० वर्ष की थी जब मेरी माता एक सप्ताह की साधारण बीमारी के बाद एकाएक परलोक सिधार गईं। तब से मेरी देख-रेख का भार पिताजी पर पड़ा। मेरे पिता एक आफ़िस में क्लर्क थे। दफ़्तर से जो समय बचता वह पिताजी मेरे ही ऊपर लगाते थे। मेरी शिक्षा की ओर पिताजी का विशेष ध्यान था और मेरे ऊपर उनका स्नेह भी मा से किसी प्रकार कम न था। लेकिन आज इतने दिनों के अनुभव के बाद मेरा यह निश्चित विचार है कि माता से बढ़कर पुत्री को न कोई शिक्षा दे सकता है और न उन प्रलोभनों से रक्षा कर सकता है जो जीवन-पथ में पग पग पर सुनहरा जाल बिछाये रहते हैं। दिन को मैं पाठशाला में पढ़ने जाती और सुबह-शाम पिताजी मुझे स्वयं शिक्षा देते। इस तरह किताबी शिक्षा तो मुझे काफ़ी मिल गई, किन्तु घर की वह व्यावहारिक शिक्षा जिसके द्वारा ही स्त्री आदर्श गृहिणी बन सकती है, नाममात्र को भी न मिली। मैं बाग़ में लगे हुए उस पौधे के समान थी जिसकी देख-रेख करने के लिए कोई चतुर माली न हो।

इस तरह चार-पाँच वर्ष बीत गये। मैं बराबर पाठशाला जाती। एक दिन स्कूल से लौटकर गाड़ी से उतरकर जब मैं गली में घुसी तब मुझे ऐसा जान पड़ा, मानो कोई मेरी ओर देख रहा है। इच्छा हुई मुड़कर देखूँ, कौन है। उस समय अगर मैं उस इच्छा को रोक सकती तो शायद मेरा जीवन-इतिहास आज वह न होता जो है। लेकिन लड़कपन के उस विकट कौतूहल को मैं रोक न सकी। मैंने मुड़कर देखा, एक पक्के मकान के बरामदे में खड़ा हुआ एक युवक मेरी ओर देख रहा है। जल्दी जल्दी पैर बढ़ाकर मैं उस गली में मुड़ गई जिसमें मेरा वह सूना-सा घर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिन बड़ी देर तक मुझे उस लड़के का ख़याल बना रहा। जिस तरह उसने मुझे देखा था, पहले किसी ने न देखा था। दूसरे दिन पाठशाला से लौटकर गली में घुसते ही मैंने देखा, वह उसी तरह फिर खड़ा है। मेरे दिल में गुदगुदी पैदा हो गई। नशा-सा चढ़ गया। सिर नीचा किये मैं आगे बढ़ी। बरामदे के समीप आते ही मेरे सामने कोई चीज़ आकर गिरी। मैंने देखा, एक रंगीन लिफ़ाफ़ा है। गली में उस समय और कोई न था। साहस करके मैंने लिफ़ाफ़ा उठा लिया। जल्दी जल्दी घर आकर, अपने कमरे में घुसकर किताबों का बस्ता एक ओर पटक कर लिफ़ाफ़ा फाड़कर, पत्र पढ़ने लगी। टूटी-फूटी भाषा में लिखी हुई लड़कपन के पागलपन की वे बातें सुनाने से आपको क्या लाभ होगा? लड़कपन के बावलेपन का हाल आप स्वयं ख़ूब जानते हैं। वे सब बातें सोचकर आज मुझे हँसी आती है। लेकिन, उस समय उस पत्र को पढ़कर मेरी दशा उन्मादिनी की सी हो गई। मैं घण्टों उसे पढ़ती रही। फिर बड़ी रात तक बैठकर मैंने उसका उत्तर लिखा। उत्तर में क्या लिखा, उसे भी जाने दीजिए।

"दूसरे दिन पाठशाला जाते समय जब दाई के साथ मैं उस गली में निकली तब वह अपने घर के बरामदे में फिर खड़ा मिला। पत्र ज़मीन पर गिराकर मैं जल्दी जल्दी सड़क पर खड़ी हुई गाड़ी की ओर बढ़ गई। गाड़ी में बैठते समय मैंने देखा, पत्र उठाकर वह शीघ्रता से घर के भीतर चला गया। उस दिन पाठशाला के किसी काम में मेरा मन न लगा। किसी तरह छुट्टी का घण्टा बजा। आन्दोलित मन को किसी न किसी तरह सँभालती हुई मैं घर चली। गली के सामने पहुँच कर गाड़ी रुकी। उतरकर गली में प्रवेश करते हुए मैंने देखा, वह मेरा इन्तज़ार कर रहा है। निकट पहुँचकर, साहस करके मैंने उसके चेहरे की ओर दृष्टि डाली, वह मुस्करा रहा था। शर्म से मेरी आँखें नीचे झुक गईं। तब मेरी मानमर्यादा पर कुठाराघात करनेवाला मेरे उस पत्र का उत्तर पंख फैलाकर सामने आ गिरा। सुनती हूँ, पाप करनेवाले के सिर पर अक्सर विधाता का वज्र गिर पड़ता है। आज सोचती हूँ, पाप-विमोचक वह वज्र मेरे ऊपर उस समय क्यों न गिर पड़ा जब उस पत्र को उठाने के लिए मैं झुकी थी। दयानिधि भगवान् अगर मेरे ऊपर उस समय दया करते तो मेरे अभागे माथे पर कलंक का टीका क्यों लगता? ख़ैर, उस पत्र में जो विषम प्रस्ताव था उसकी बात सोचकर आज मेरा मन लज्जा और क्रोध से भर जाता है। उसी प्रस्ताव ने मेरा सर्वनाश किया। इतने दिनों तक इधर-उधर ठोकरें खाकर आज ये ज्ञान की बातें सूझ रही हैं, लेकिन उस दिन तो मेरी बुद्धि बिलकुल भ्रष्ट हो गई थी। उस दिन तो उस प्रस्ताव ने मुझे बावली बना दिया था। उसी लज्जाजनक प्रस्ताव को पूरा करने के लिए आधी रात के उस भयानक सन्नाटे में साँस खींचे हुए मैं दरवाज़े से लगी खड़ी थी। सहसा किसी ने दरवाज़े पर थपकी दी। एक क्षण सुनकर, सोचकर मैंने साँकल खोल दी। धीरे से दरवाज़ा खोलकर वह भीतर चला आया। उस समय मेरे अन्दर तूफ़ान उठा हुआ था। बस, आनन्द बाबू, आगे कहने की आवश्यकता नहीं।

"हम दोनों का गुप्त मिलन बहुत दिनों तक जारी रहा। उन दिनों मेरी दशा बिलकुल चोर की-सी हो गई थी। किसी से खुलकर, आँखें मिलाकर बातें करना मेरे लिए कठिन था। अन्त में इस प्रकार की बातों का जो नतीजा होता है वही हुआ। चोरी पकड़ गई। एक रात को जब वह बाहर निकल गया और मैं दरवाज़ा बन्द करने को बढ़ी तब मुझे ऐसा जान पड़ा मानों मेरे पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई हो! सामने पिताजी खड़े हुए थे! क्रोध की ऐसी भयानक मूर्ति मैंने पहले कभी न देखी थी। उस समय उनके मुख से बात न निकलती थी। मेरा हाथ पकड़कर वे मुझे अपने कमरे में खींच ले गये। कमरे के फ़र्श पर मैं गिर पड़ी। कुरसी पर बैठकर पिताजी अंगारे की तरह जलती हुई आँखों से मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने लगे। कितना अच्छा होता अगर क्रोध के उस विकट आवेश में वे मेरी हत्या कर डालते। थोड़ी देर तक वे मुझे उसी तरह देखते रहे, फिर उनकी बड़ी बड़ी आँखों से आँसू की झड़ी लग गई। आँचल में मुख छिपाकर मैं भी रोने लगी। मर्म-वेदना का वह आवेग जब कुछ कम हो गया तब पिताजी प्रश्न करने लगे। मैंने उनसे सब कुछ कह डाला। बड़ी रात तक वे मुझे उपदेश देते रहे।

"दूसरे दिन से मेरा स्कूल जाना बन्द हो गया। मेरी देख-रेख करने के लिए दिन भर घर में बूढ़ी नौकरानी रहने लगी; लेकिन मेरा जी उससे बात करने को न चाहता। पुस्तकों में भी मन न लगता। अपने दुष्कृत्य पर मुझे पश्चात्ताप तो अवश्य था, लेकिन कुमार्ग पर ले जानेवाले उस युवक की सूरत आँखों से न उतरती। हर घड़ी उसका ध्यान बना रहता, उसकी मीठी मीठी बातें कानों में गूँजा करतीं। एक दिन जब महरी किसी काम से बाहर गई हुई थी, घर में एक अधेड़ स्त्री ने प्रवेश किया। वह स्त्री मोहन का पत्र लेकर आई थी। पत्र में विरह-व्यथा की चुटकियाँ थीं, मीठा उलहना था, और थी मेरी दशा जानने की उत्कट उत्सुकता। पत्र पढ़कर मैंने तुरन्त उत्तर लिख डाला। कुछ छिपा न सकी, सारा हाल लिख दिया। मेरा उत्तर लेकर वह स्त्री चली गई। दूसरे दिन वह फिर उसका पत्र लेकर आई। उस पत्र को पढ़कर मैं काँप गई। आज एक दूसरा प्रस्ताव था, जो पहले से कहीं अधिक विकट था। उस प्रस्ताव में जो मुक्ति की आशा थी उसने मुझे पागल बना दिया।

"उसी दिन रात के अँधेरे में अपने गहने-कपड़े लेकर मैं घर से निकल पड़ी। फिर मोहन के साथ मैं लखनऊ जानेवाली गाड़ी में सवार हो गई। उस समय हम दोनों के आनन्द का ठिकाना न था। कान-पुर से लखनऊ दूर नहीं है। दो घंटे में गाड़ी लख-नऊ पहुँच गई। गाड़ी से उतर कर, हम लोग एक ताँगे पर सवार हुए और एक धर्मशाले में जा ठहरे। कई दिन हम उस धर्मशाले में ठहरे रहे, फिर एक छोटा-सा मकान भाड़े पर लेकर रहने लगे। उस मकान में रहते हुए कई मास बीत गये। मोहन प्रेम तो बहुत दिखाता था, लेकिन मेरे हृदय में उसके प्रति घृणा उत्पन्न हो गई। मुझे जान पड़ने लगा कि वह मुझे दिल से प्यार नहीं करता, उस उच्छृङ्खल जीवन से ऊब रहा है। तब मुझे घर की याद सताने लगी। पिताजी के पावन स्नेह में मुझे जो सुख प्राप्त था उसकी यहाँ छाया भी न थी। मैं उनके दर्शन के लिए तड़फ गली। लेकिन अपने हाथों से पैरों में कुल्हाड़ी मारकर पछताने से क्या होता है? हम दोनों अपने साथ जो कुछ लाये थे वह सब समाप्त हो गया। अब धन की आवश्यकता पड़ी। एक दिन मोहन काम की तलाश में सवेरे ही घर से निकला। उस सूने घर में पड़ी हुई दिन भर मैं उसकी प्रतीक्षा करती रही। शाम हो गई, लेकिन वह लौटकर न आया। रात के समय भी वह न लौटा। दूसरे दिन भी वह न आया। उस समय के अपने दुःख का वर्णन करना मेरे लिए असम्भव है। मेरे चारों ओर निराशा का अन्धकार था और मैं गर्भवती भी थी। तीसरे दिन मर्म-वेदना का भारी बोझ लिये हुए जब मैं गोमती के तट पर बैठी रो रही थी, एक सज्जन पुरुष ने दया करके मुझे सान्त्वना दी। मैंने उन्हें अपना सारा हाल कह सुनाया। वे मुझे अपने घर लिवा ले गये, फिर उन्हीं की सहायता से मुझे एक अनाथालय में आश्रय मिला। उसी अनाथा-लय में उचित समय पर मुझे एक पुत्र मिला। एक मास मुझे हँसा-रुलाकर वह अभागा भी मेरे निरीह जीवन से विदा हो गया। रो-धोकर जब मैं पूरी तरह स्वस्थ हो गई तब उन्हीं सज्जन ने मुझे एक पाठशाला में नौकरी दिला दी। तब से मैं उस अनाथालय में रहती हूँ और उसी पाठशाला में काम करती हूँ। आनन्द बाबू, यही है मेरे दुखी जीवन का इतिहास। आज उन गई-बीती बातों पर गौर करने पर ज्ञात होता है कि जो कुछ हुआ मेरे भले के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए हुआ। अगर वे घटनायें न होतीं तो आज मुझे संसार का वास्तविक ज्ञान न होता।"

(४)

इस तरह अपनी करुण कथा कहकर श्यामा आनन्द के मुख की ओर देखने लगी। आनन्द के मुख-मंडल पर भावों के आन्दोलन की छाया थी। वह कई क्षण मंत्र-मुग्ध-सा चुपचाप बैठा रहा, फिर उसने कहा—मोहन से फिर कभी भेंट नहीं हुई?

"नहीं। और न मैं चाहती हूँ कि कभी हो।"

"पिताजी का क्या हाल हुआ?"

एक दीर्घ-निःश्वास छोड़कर, रुँधे हुए कण्ठ से श्यामा बोली—एक बार कानपुर जाकर मैंने पूछ-ताछ की थी तब पता लगा था कि मेरे घर से भागने के थोड़े ही दिन बाद सब कुछ छोड़कर वे भी कहीं चले गये।

आनंद की आँखें डबडबा आईं। एक क्षण में अपने को सँभाल कर उसने कहा—श्यामा, तुम्हारी कहानी बड़ी दर्दनाक है। मुझे तो आश्चर्य होता है कि इतना सब सहकर कोई स्त्री वह कैसे बन सकती है जो तुम इस समय हो!

श्यामा के व्यग्र मन को संतोष प्राप्त हुआ। तो आनंद को उससे घृणा नहीं हुई!

"तुम्हारी तरह मैं भी संसार में अकेला हूँ श्यामा! और तुम्हारी ही तरह मैंने भी ठोकरें खाई हैं।"

आँखों में अपार करुणा भरकर आनंद के मुख की ओर देखती हुई श्यामा बोली—यह तो मुझे पहले ही जान पड़ा था।

"अकेले रहने में सुख भी कम नहीं, लेकिन।"

चुप होकर आनंद सोचने लगा कि क्या कहे, जो कुछ कहना चाहता है उसे कैसे कहे। उस आशा-निराशा की दशा में आन्दोलित मन को सँभाले हुई श्यामा भी निस्तब्ध बैठी थी। विद्युत्-प्रकाश में जगमगाते हुए होटल के बरामदे में लगी हुई घड़ी की अनवरत 'टिकटिक' नगर के क्षीण जन-कलरव से दिल मिलकर विचित्र समाँ बाँध रही थी।

"बनारस में कब तक ठहरोगी, श्यामा?"

"आप कब तक रहेंगे?"

"मैं तो कल कान्फ़रेंस ख़त्म होने के बाद प्रयाग चला जाऊँगा।"

"तो मैं भी कल ही चली जाऊँगी।"

"कहाँ जाओगी?"

ठंडी साँस खींचकर श्यामा ने कहा—जहाँ भाग्य में लिखा है!

श्यामा का हाथ अपने हाथों में लेकर, आँखों में अगाध विनय भरकर उसके मुख की ओर देखते हुए आनंद ने पूछा—मेरे साथ चलोगी, श्यामा?

सिर झुकाकर, कुछ निगलकर, श्यामा ने धीरे से उत्तर दिया—चलूँगी क्यों नहीं?

"लेकिन मैं तुम्हें वह सब तो न दे सकूँगा जो तुम्हें मिलना चाहिए?"

"मैं थोड़े ही में संतोष कर सकती हूँ। मुझे सब-कुछ न चाहिए।"

"फिर, तो—!" आनंद ने श्यामा को अपनी ओर खींच लिया। अतीत का दुःख वर्तमान के सुख में घुल-मिलकर आशा-सूर्य बनकर उन प्रताड़ित पथिकों के एकाकार निर्जन जीवन-पथ को आलोकित करने लगा!

—राजेश्वरप्रसादसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-मृत्यु को रोकने के लिए उद्योग

[अभ्युदय के प्रथम भूतपूर्व सम्पादक श्रीयुत सत्यानन्द जोशी हिन्दी के पुराने प्रेमियों में हैं यद्यपि आपका साहित्य-क्षेत्र से पहले का नाता बहुत दिनों से नहीं है, तथापि आपके हिन्दी-प्रेम में कमी नहीं हुई। यह उपयोगी लेख उसी प्रेम का फल है। इसमें देश की बाल-मृत्यु संख्या के अङ्क देकर तथा इस सम्बन्ध के इँग्लैंड के प्रयत्नों का उल्लेख कर आपने यहाँ के लोगों का ध्यान इस भयङ्कर अवस्था की ओर आकृष्ट किया है और यह बताया है कि शिशु-पालन की ओर ध्यान देने से इस सङ्कट से देश की रक्षा हो सकती है।]

सन् १९२९ में इस प्रान्त में १५,५७,७२६ बच्चे पैदा हुए और उनमें से २,६२,६४५ की साल भर के भीतर ही मृत्यु हो गई, अर्थात् एक वर्ष तक की अवस्था के बच्चों की मृत्यु-संख्या प्रतिसहस्र १६८.६ रही। यह तो प्रान्त भर की औसत संख्या है। कई स्थानों में संख्या इससे बहुत अधिक चिन्ता-जनक थी। उदाहरणार्थ लखनऊ-ज़िले की बाल-मृत्यु-संख्या २८८.९१ थी। इँग्लिस्तान की बाल-मृत्यु-संख्या प्रति सहस्र केवल ८० है। इससे इस बात का अनुमान किया जा सकता है कि यहाँ की मृत्यु-संख्या कितनी भयंकर है। किन्तु यह एक आशाजनक बात है कि इस प्रान्त में यह संख्या क्रमशः कम होती जा रही है जैसा कि निम्नलिखित अंकों से विदित होगा—

सन्	प्रतिसहस्र
१९०१-१९१०	२५५.०
(इन दस वर्षों की औसत वार्षिक मृत्यु-संख्या)	२३२.३
१९११-१९२० की औसत वार्षिक-संख्या	२४६.५
१९२१	१८३.८
१९२२	१६९.४
१९२३	१५१.७
१९२७	१५९.९
१९२८	१५९.९
१९२९	.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठक जानते हैं कि इधर कई वर्षों से सरकारी स्वास्थ्य-विभाग शिशु-पालन की ओर विशेष रूप से ध्यान दे रहा है। स्थान स्थान पर शिशु-पालन-समितियाँ स्थापित की गई हैं और शिक्षित दाइयों का प्रबन्ध किया जा रहा है। शिशु-रक्षा और पालन के के विषय में लोकमत जागृत हो रहा है और समाचार-पत्रों में तथा मासिक पत्रों में भी इस विषय की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया जा रहा है। इससे यही समझना चाहिए कि बाल-मृत्यु-संख्या में कमी इसी उद्योग के कारण हो रही है।

ऊपर लिखा जा चुका है कि इँग्लिस्तान में यहाँ की अपेक्षा बाल-मृत्यु-संख्या कितनी कम है। किन्तु एक समय था जब कि इँग्लिस्तान में भी बाल-मृत्यु-संख्या बहुत अधिक थी। वहाँ सन् १८५० और १९०० के बीच मृत्यु-संख्या प्रतिसहस्र १५० थी, यद्यपि इसी काल में वहाँ स्वास्थ्य, समाज तथा शिल्प और व्यवसाय-सम्बन्धी अनेक सुधार हो रहे थे। इन सुधारों से साधारण मृत्यु-संख्या तो बराबर घटती गई, किन्तु बाल-मृत्यु-संख्या में कुछ भी कमी नहीं हुई। कमी वर्तमान शताब्दी के आरम्भ से होने लगी और अभी तक बराबर होती जा रही है, यहाँ तक कि अब वहाँ बाल-मृत्यु-संख्या प्रतिसहस्र केवल ८० रह गई है।

विशेषज्ञों ने इस बात का अनुसन्धान किया कि इँग्लिस्तान में पिछली शताब्दी के अन्तिम पचास वर्षों में नाना प्रकार के स्वास्थ्य-सम्बन्धी तथा आर्थिक सुधार होने पर भी बाल-मृत्यु में कमी क्यों नहीं हुई। बहुत कुछ खोज करने पर उनको पता चला कि उन दिनों स्वास्थ्य-सम्बन्धी विषयों पर तो बहुत ध्यान दिया जाता था, किन्तु शिशु-पालन के विषय में नहीं। माताओं को शिशु-पालन के सम्बन्ध में कुछ भी शिक्षा नहीं दी जाती थी। जब यह विदित हो गया कि माताओं और दाइयों के अज्ञान ही के कारण अधिकतर बाल-मृत्यु हुआ करती है तो इनको शिशु-पालन-सम्बन्धी नियमों और उपायों की शिक्षा दी जाने लगी और बालकों के पीने के लिए शुद्ध दूध इत्यादि का प्रबन्ध होने लगा। बाल-मृत्यु के कारणों का निरन्तर अनुसन्धान होता रहा और उन कारणों को दूर करने का प्रबन्ध हुआ। शिशु-पालन-सम्बन्धी अनेक विचार और नियमों में पूर्णरूप से परिवर्तन हो गया। उदाहरणार्थ, पहले मातायें ताज़ी हवा को बच्चों के लिए हानिकारक समझती थीं और उन्हें बन्द कमरों में रखती थीं, किन्तु अब वे समझने लगीं कि ताज़ी हवा बच्चों के जीवन और स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है। बहुत सी ऐसी दवाओं का जो बच्चों को चुप रखने के लिए काम में लाई जाती थीं, प्रचार बन्द हो गया। परम्परागत मूढ़ विश्वास के स्थान पर ऐसे नियमों का पालन होने लगा जो स्वास्थ्य-सम्बन्धी विज्ञान के अनुकूल पाये गये।

आरम्भ में कार्यकर्ता थोड़े से डाक्टर लोग तथा समाज-सेवक थे और वे अपना काम चुपचाप करते थे। सर्वसाधारण को यह विदित ही नहीं हुआ कि कितना लाभदायक कार्य हो रहा है। अपने कार्य में सफलता देखकर कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ा और उन्होंने उस कार्य को सार्वजनिक रूप देना आवश्यक समझा और सन् १९१७ में एक "शिशु-सप्ताह" (Baby Week) मनाने का प्रबन्ध किया। इसके उपरान्त सभायें होने लगीं और एक राष्ट्रीय शिशु-मृत्यु-निवारक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्था (National Association for the Prevention of Infant Mortality) स्थापित की गई। इस संस्था के समय समय पर अधिवेशन होते रहे, जिनमें इस विषय के विशेषज्ञ लोग परस्पर विचार करते थे और लाखों पुस्तकों और पर्चों के द्वारा लोगों में शिशु की रक्षा और उनके पालन के नियमों का प्रचार करते थे। इस संस्था के उद्योग से समय समय पर राष्ट्रीय स्वास्थ्य-सम्बन्धी सभायें और शिशु-पालन-समितियाँ स्थापित होने लगीं। इसके उपरान्त माताओं में शिशु-पालन-सम्बन्धी ज्ञान और नियमों का प्रचार करने के लिए स्कूल स्थापित किये गये। पहली शिशु-पालन-समिति सन् १९०४ में स्थापित की गई थी, १९१४ में ४०० समितियाँ स्थापित हो गईं और उनकी संख्या अब कई सहस्र है। सन् १९१७-१८ में सहस्र शिशु-सप्ताह मनाये गये और ८०० प्रदर्शनियाँ हुईं। अन्त में एक विराट् राष्ट्रीय प्रदर्शनी हुई जिसमें २,५०,००० बच्चों की वैज्ञानिक रीति से परीक्षा हुई। कोई आश्चर्य नहीं यदि ऐसे विशाल उद्योग से इँग्लिस्तान में बाल-मृत्यु-संख्या पिछली शताब्दी की अपेक्षा आधी रह गई हो।

भारतवर्ष में जो शिशु-पालन-सम्बन्धी उद्योग स्वास्थ्य-विभाग और म्युनिसिपैलिटियों के द्वारा हो रहा है उसमें यदि लोग यथेष्ट रूप से सहायता करें तो यहाँ की बाल-मृत्यु-संख्या में और भी अधिक शीघ्रता के साथ कमी हो सकती है।

—सत्यानन्द जोशी

ध्रुपद-स्वर-लिपि

का प्रचार बड़े ज़ोरों से हो रहा है। हिन्दी-साहित्य में अपने ढँग का एक अनूठा और सबसे बढ़िया ग्रन्थ है। इसमें १७० से अधिक उच्च कोटि के प्राचीन राग तथा राग-मालाओं की बहुत ही सरल व्याख्या की गई है। तथा भारतीय सङ्गीत के नवसिखियों तथा उच्च श्रेणी के गायकों के लिए व्यावहारिक विधि बतलाई गई है। विवरण के लिए हमारा विज्ञापन देखिए।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रास-लीला

[चित्रकार—श्रीयुत असितकुमार हल्दार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप

अमृत है तू या है विष तू,
अब तक समझ न आया।
निष्ठुर रूप ! विश्व में तेरी,
है विचित्र ही माया।
अमृत-सा तू मीठा भी है—
एक घूँट पाने को।
कितने लालायित रहते हैं,
तुझ पर बिक जाने को।
और हलाहल-सा घातक भी,
तू ही बन जाता है।
जिसको पीकर हृदय विकल-सा,
होकर घबराता है।
मोहकता में तुझ-सा कोई,
नहीं विश्व में पाया।

तपसी विश्व-विजेता ने भी,
तुझको शीश नवाया।
आकर्षण जो तुझमें है वह,
वर्णन कौन करेगा ?
मादकता है प्रखर न उससे,
जग में कौन डरेगा ?
तत्त्वज्ञान विज्ञान आदि से,
परे तुझे पाते हैं।
नास्तिक तुझे देख विचलित-से,
मन में हो जाते हैं।
निष्ठुरता खिलवाड़ खेलना,
जब तुझको भाता है।
तब उत्सर्ग-भाव दुनिया का,
भय से कँप जाता है।

—देवीप्रसाद गुप्त 'कुसुमाकर'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर गंगाराम का कृषि-फ़ार्म

रायबहादुर गंगाराम पंजाब के एक बड़े समझदार इंजीनियर थे। बुद्धिमान् होने के अतिरिक्त उन्हें अपने काम में अनुभव भी बहुत था। सन् १९०२-०३ में उनके प्रार्थना करने पर पंजाब-सरकार ने उन्हें सामान्य मूल्य पर ज़िला लायलपुर में ऊँची ज़मीन का एक टुकड़ा दिया, जिसे अन्य पूँजीपति कभी ख़रीदने का नाम भी न लेते। वर्गफल में यह भूमि २५० हज़ार एकड़ है। नहरों के समतल के मुक़ाबले में यह ६ फ़ुट से लेकर ९ फ़ुट तक ऊँची है। साधारण रीति से नहर का पानी यहाँ नहीं जा सकता। इस भूमि-दान का उद्देश यह था कि स्टीम-पम्प के द्वारा पानी को ऊपर चढ़ा कर आब-पाशी की जाय। यह दिलचस्प तजरुबा उत्तरी भारत में अपनी क़िस्म का पहला ही था। इसमें सफलता होगी, इसकी उस समय लोगों को बहुत कम आशा थी।

लाहौर से रेल की एक शाखा शोरकोट को जाती है। बस इसी लाइन पर बुचियाना नाम का एक स्टेशन है। लाहौर से यह ५७ मील दूर है। बुचियाना से आगे गंगापुर २७ मील की दूरी पर है। गंगापुर कोई स्टेशन नहीं है, केवल फ़ार्म का नाम है।

ज़मीन मिलने के कुछ ही समय के पश्चात् इँग्लेंड से मशीनें मँगाई गईं। जल्दी ही उन्हें लगाना भी आरम्भ कर दिया गया। पम्प करने-वाली मशीन गेंज़बॉरो की मार्शल संज़ एण्ड कम्पनी से ली गई। इसमें १० नॉमिनल हार्स पॉवर का एक कॉनडेंसिंग एंजिन है, जिसका सिलेण्डर प्रति मिनट में १५५ बार घूमता है। बुआयलर इसका १५ नॉमिनल हार्स पॉवर का है। लकड़ी इस

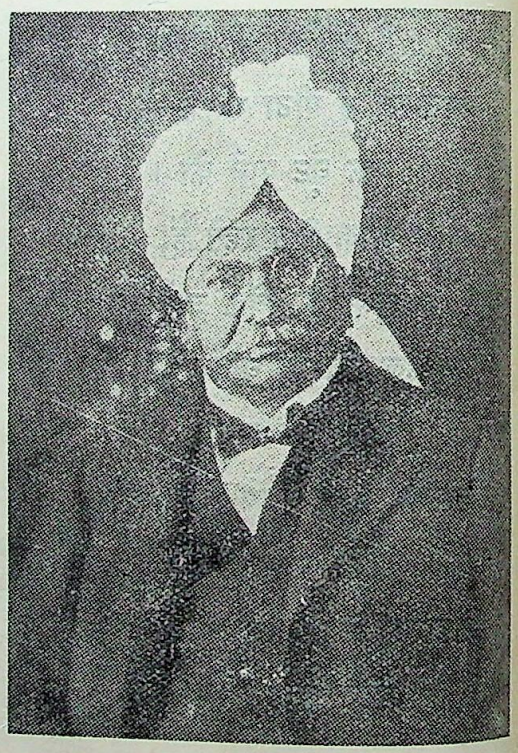

सर गङ्गाराम

हर तरह की जल सकती है। एंजिन सीधा फ़्लाइ-ह्वील से चलता है। शैफ़्ट के साथ पुलियाँ लगी हैं जो पेटेंट पम्पों को चलाती हैं। ये पम्प नहर के पानी को नीचे से उठा कर ऊपर ऊँचाई पर गिराते जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जून १९०३ में काम शुरू कर दिया गया। यद्यपि दिन गर्मी और वर्षा के थे, पास कोई पक्की सड़क न थी और निकट का रेलवे स्टेशन इतना दूर है कि वहाँ से सिर्फ़ बुआयलर लाने में डेढ़ हज़ार रुपया ख़र्च बैठा। फिर भी सब प्रबन्ध तीन महीने में समाप्त हो गया, और उस भूमि पर जहाँ किसी को

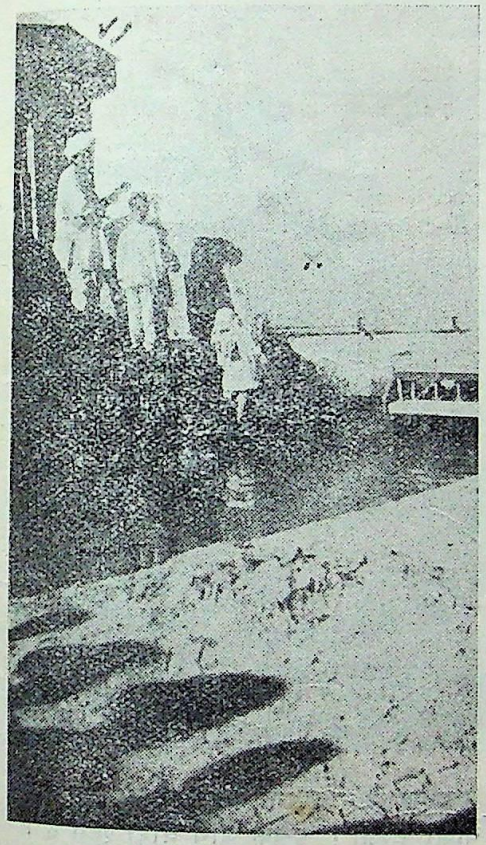

गङ्गाराम-पेटेंट ब्रिक कुआ।

[इस स्थान के अन्दर से पानी निकलता है। × हौज़, जहाँ पानी जमा रहता है। दाईं ओर ड्रिलिंग मशीन दिखाने के लिए रक्खी गई है। इसके द्वारा खेतों में बीज बिखेरे जाते हैं]

सपने में भी हरियाली नज़र न आ सकती थी, पहली रबी की फ़सल को देखकर आस-पास के सब लोग हैरान रह गये।

पानी 'अपर गोगेरा ब्रांच' नहर से लिया गया नीचे से ऊपर ८-१० फ़ुट की उँचाई पर पानी चढ़ाने के लिए एक कुआ बनाया गया। सारा पानी इस कुएँ में इकट्ठा होता है। यहाँ से आगे ज़मीन के विभिन्न भागों में पानी ले जाने के लिए छोटी छोटी नहरें और नालियाँ बनाई गई हैं। पानी कितना दरकार है, ज़मीन की उँचाई कितनी है, इन सब बातों को ध्यान में रखकर मशीन के द्वारा ऐसा इन्तिज़ाम किया गया कि पानी, धन और समय तीनों की यथासम्भव बचत हो और काम भी पूरा पूरा निकले। नालियों में पानी की इतनी मिक़दार को देखकर पहले तो नहर के महकमा ने आपत्ति की। परन्तु इसका रहस्य उनको तब मालूम हुआ जब उन्होंने देखा कि पानी पम्प करने के लिए एंजिन साल में सिर्फ़ २०० दिन काम करता है और हिसाब लगाने पर यह ज्ञात हुआ कि साधारण रीति से जल लेने की निस्बत इस प्रकार लेने से पानी की मिक़दार बहुत कम निकलती है। पानी से सिंचाई क़रीब ३ इंच की गहराई तक की गई। वास्तव में अच्छी फ़स्लें पैदा करने का गुर भी यही है कि भूमि को जल जितना कम हो सके, दिया जाय, परन्तु दिया जाय उचित समयों पर। इस ढँग को बर्तने पर पानी खेतों में खड़ा नहीं रहता। फलतः काम करनेवाले लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ने के बजाय ठीक बना रहता है।

इसके दो साल बाद राय गंगाराम को ज़मीन का एक और टुकड़ा इसलिए दिया गया कि उसमें बिजली-द्वारा पम्प किये गये पानी का प्रयोग करके दिखाया जाय। इस कार्य के लिए पहले एंजिन के क्रैंकशैफ़्ट के एक सिरे पर एक ४ फ़ुटी फुली लगा दी गई और उसके साथ डयनमो जोड़ दिया गया। इस प्रकार उत्पन्न हुई बिजली १५०० गज़ लम्बे ताँबे के तार-द्वारा मोटर में ले जाई गई। मोटर का संबंध आगे पम्प के साथ जोड़ दिया गया। फ़ार्म के सामान्य व्यय के अतिरिक्त बिजली-उत्पादन के इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम पर प्रायः ३० रुपया दैनिक ख़र्च आने लगा।

इधर एक तरफ़ जब आबपाशी का सिलसिला जारी था तब दूसरी तरफ़ इस भू-भाग के ठीक बीच में नमूने का एक गाँव बनाने का भी प्रबन्ध किया जाने लगा। गाँव के लिए पहले एक ख़ास डेज़ाइन तैयार किया गया। मकान खड़े करते समय घरों के लिए सफ़ाई, उचित रोशनी आदि का पूरा-पूरा ध्यान रक्खा गया। फ़ार्म पर काम करने-वालों के लिए पृथक्-पृथक् पंक्तियों में मकान बनाये गये। मकान बनाते समय विभिन्न दर्जों और जातों का ख़ास ख़याल रक्खा गया ताकि सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार उनके धर्म या जाति आदि में कोई विघ्न-बाधा न पड़े।

एक कोने में एक आरामदेह बँगला बनाया गया ताकि दौरे पर आया हुआ जो कोई सरकारी अफ़सर उधर आकर फ़ार्म को देखना चाहे उसे किसी प्रकार का कोई कष्ट न हो। दूसरे कोने पर इनडोर और आऊटडोर डिस्पेंसरी के लिए पृथक् मकान बनाया गया। इस डिस्पेंसरी से बाहर के ७०-८० रोगी और ७-८ वहाँ के रहनेवाले लाभ उठा सकते हैं। डिस्पेंसरी के साथ एक ऑपरेशन-रूम भी है।

गाँव के एक दूसरी तरफ़ पत्थर के गोदाम, जागीर का दफ़्तर और अफ़सरों तथा प्रबन्धकर्त्ता के क्वार्टर बने हैं। एक स्कूल और डाकख़ाना भी साथ ही हैं। गाँव के केन्द्र में दो सौ फ़ुट चौड़ा और इतना ही लम्बा एक चौक है। इसके चारों ओर दूकानें बनी हैं। दूकानदार इन्हीं में रहते हैं।

चौक के बीच में एक कुआ बना है, जिसकी गहराई १०५ फ़ुट है। इसमें राय गंगाराम की अपनी पेटेंट ईंटें लगी हैं। लोगों को शुद्ध जल प्रस्तुत करने के लिए कुएँ के निकट ही दो पक्की टंकियाँ लगी हैं। प्रति दिन दो-दो आदमियों के जोड़े इनको पानी से भरते हैं। नलों के द्वारा ही इनसे पानी लिया जाता है। कुएँ से कोई मनुष्य जल नहीं ले सकता, क्योंकि इस तरह उसके गन्दे हो जाने का भय रहता है। यहाँ यह बता देना अनुचित न होगा कि गाँव के इस आयोजन तथा सफ़ाई आदि के प्रबन्ध को सिविल तथा मेडिकल अफ़सरों

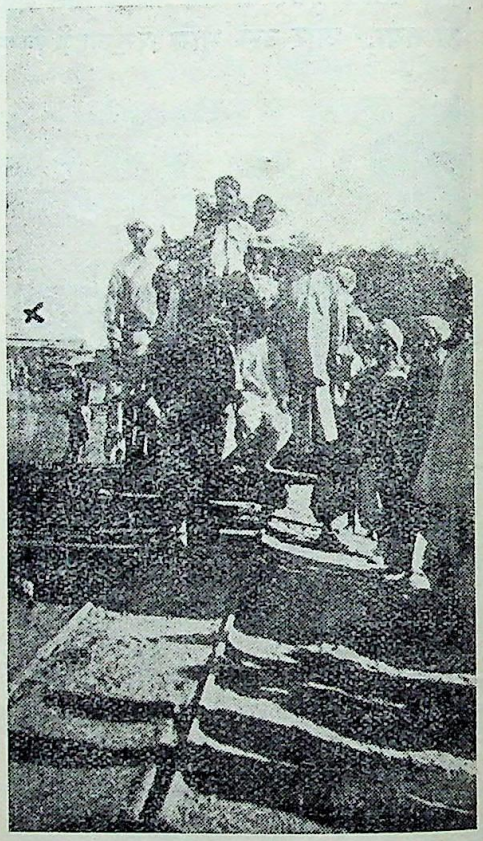

[गङ्गापुर से बुचियाना रेलवे स्टेशन तक जाने-वाली ट्राली। इसके आगे घोड़ा जुता है। यह माल भी ढोती है और आदमी भी। × दूकानें दीख पड़ती हैं। ऐसी दूकानें केन्द्र में के कुएँ के चारों ओर बनी हैं।]

ने बड़ा पसन्द किया है। इस सुव्यवस्था के लिए ही उन्होंने फ़ार्म को एक हज़ार रुपया इनाम दिया है।

मकान बनाने के पश्चात जागीर के सभी भागों तथा सड़कों पर वृक्ष लगाने का निश्चय किया गया। सड़कों पर इस कारण कि आने-जाने वालों को धूप से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचने के लिए छाया पर्य्याप्त हो। एक बार यह कार्य आरम्भ कर देने से अब हज़ारों वृक्ष फल-फूल रहे हैं। वास्तव में फ़ार्म के लिए यह एक बड़ा

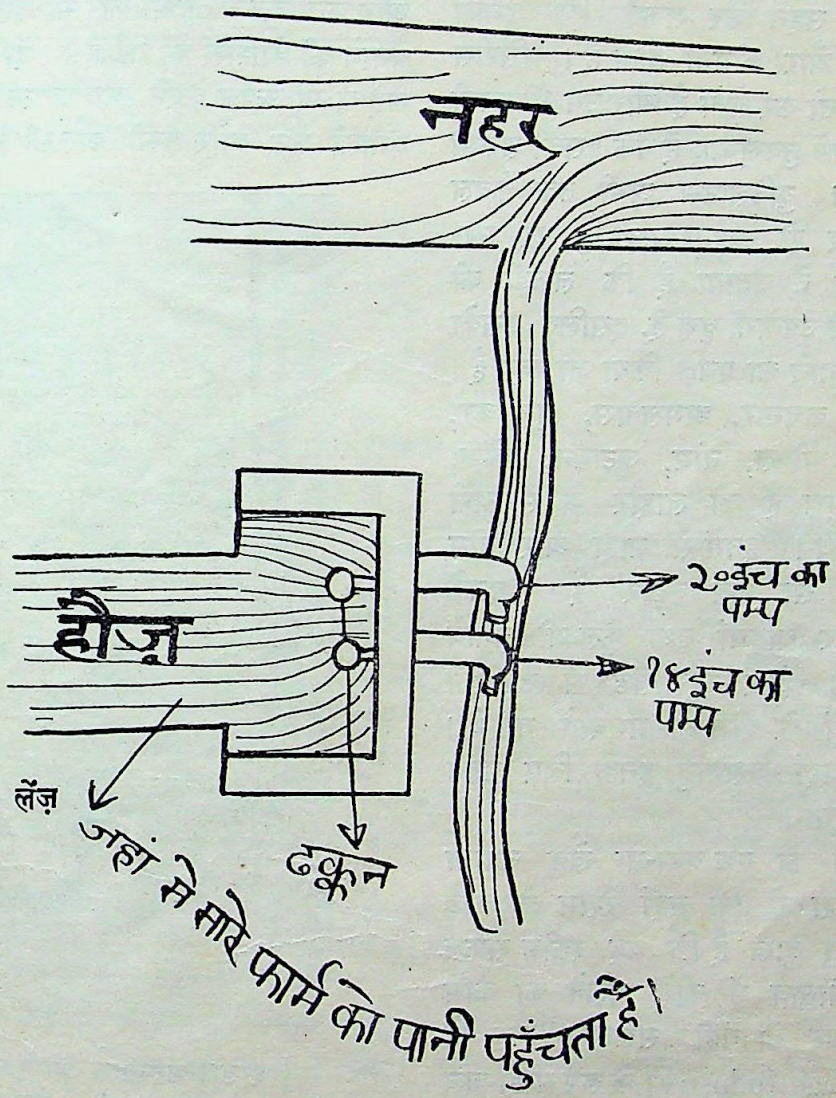

[वे दो पम्प जो स्टीम एंजिन-द्वारा नहर के पानी को नीचे से ऊपर ले जाते हैं। नीचे से ऊपर तक उँचाई क़रीब आठ फुट है। यह स्थान गङ्गापुर से लगभग १ मील है।]

उपयोगी धन है, जो प्रायः सभी कृषकों के लिए बहुत आवश्यक होता है। मनुष्य तथा पशुओं को छाया प्रदान करते हैं, काश्तकार को उपयोगी तथा जलाने के लिए लकड़ी देते हैं और वर्ष भर के लिए एक प्रकार से कम नहीं होने देते।

लकड़ी उगाने की सर्वोत्तम विधि तो यह है कि एक-दो एकड़ ज़मीन में बीज बिखेर दिये जायँ। दो-चार बरस में ये एक बड़ा ज़ख़ीरा बन जाते हैं। तब यहाँ से उखाड़ कर जिस वृक्ष को जहाँ चाहें लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लें। फ़ार्म में अधिकतर शीशम और कीकर लगाये गये हैं; यह भूमि अच्छी तरह से उगाती भी इन्हीं दो को है। कारण, अन्य वृक्षों की अपेक्षा ये दो ख़ुश्की को अधिक सहन कर सकते हैं। इनकी लकड़ी भी उपयोगी और क़ीमती होती है। सिरीस ख़ुश्की को बर्दाश्त तो कर लेता है और उग भी जल्दी पड़ता है, परन्तु इसमें नुक्स यह है कि इसकी लकड़ी क़ीमती नहीं होती। युक्लिप्टस अभी तक केवल ख़ूबसूरती के लिए ही उगाया गया है, पर सरकारी कृषि-विभाग ने बताया है कि लकड़ी की दृष्टि से यह बहुत ही उपयोगी वृक्ष है, इसलिए इसको अधिक संख्या में लगाने का प्रयत्न किया जा रहा है। बेल, सीमल, मौहा, कचनार, अमलतास, तून, कर, सरू, जामुन, बड़, पीपल, नीम, जुटागन, बहेड़ा, आँवला—ये कुछ वृक्ष हैं जो लाहौर के सरकारी बाग़ों से लिये गये थे। इनमें से मौहा और नीम को छोड़ कर शेष सब ख़ूब बढ़ रहे हैं। इनके अतिरिक्त कुछ सुन्दर झाड़ियाँ तथा फूल भी लगाये गये। आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलेंड से उपयोगी लकड़ी के कुछ वृक्षों के बीज भी मँगवाये गये थे। कहा जाता है कि यहाँ जलवायु इनके लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होगा।

फ़ार्म में शहतूत का एक बड़ा-सा खेत उगाया गया था, इस उद्देश से कि यहाँ रेशम के कीड़े पाले जायँ। परन्तु दुःख है कि यह स्कीम सफल नहीं हो सकी। वास्तव में कीड़े पालने का काम कोई एक मनुष्य कर भी नहीं सकता। यह तो घरेलू उद्योग (Cottage Industry) के रूप में ही चल सकता है। काश्मीर-राज्य में यह कार्य इसी ढङ्ग से चल रहा है। राज्य को इस उद्योग में सफलता भी हो रही है।

सब्ज़ी और भिन्न-भिन्न घासों के उगाने में दो बातों का ख़ास ख़याल रक्खा जाता है। एक तो विदेशी बीजों को यहाँ के जलवायु के अनुकूल बनाना, दूसरा, देशी बीजों का चुनाव। अमरीका की कई प्रकार की सफ़ेद तथा पीली मकई और आस तथा चीन की ख़ाकी कपास जलवायु के अनुकू बना ली गई है। आठ प्रकार के अँगरेज़ी, और कनाडियन गेहुओं को भी जल-वायु के अनुकू बनाने की कोशिश की गई है। दो प्रकार के जौ जई के भी उत्पन्न करने का प्रयत्न किया गया बंगाली जूट और रूसी अलसी के भी प्रयोग कि

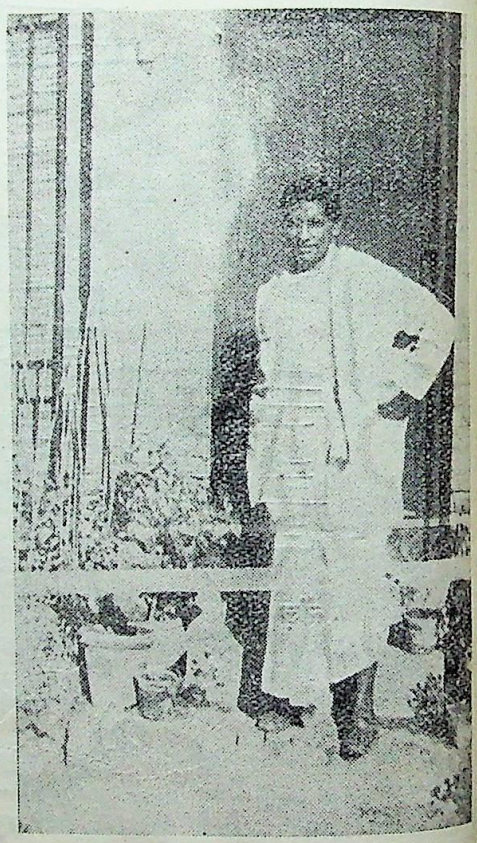

[इन्डोर-अस्पताल का एक भाग।]
[लेखक छुट्टी के वेश में]

गये, परन्तु अधिक सफलता न होने के कारण ख़याल छोड़ दिया गया!

सब्ज़ियाँ पैदा करना स्वयं कृषि की एक है। पर दुःख है कि आज तक ज़मींदार इस बड़ी लापरवाही करते रहे हैं। इँग्लेंड तथा कुछ देशों में हर दृष्टि से अध्ययन करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पूर्णता तक पहुँचा दी गई है। बड़े-बड़े अच्छे और परीक्षित बीज लंदन की जेम्ज़ कार्टर एंड कम्पनी और रेडिंग की सट्रन्ज़ से मिल जाते हैं। कई तरीक़ों से इन्होंने सब्ज़ी के भिन्न-भिन्न प्रकार के बीजों को बेहतर बनाने का प्रयत्न किया है। कार्टर कम्पनी से फ़ार्म ने मटर, चुकंदर, लोबिया, फूलगोभी, बन्दगोभी, गाजर, शलगम, खीरा, स्ट्राबेरी, प्याज़, लैटस, तरबूज़, मूली, स्पिनश और टमाटो मँगवाये दिया ताकि दूसरे वर्ष के लिए सिर्फ़ अच्छे बीज ही रह जायँ। इस प्रकार दूसरे बरस के बीजों से ही उपयोगी फल प्राप्त हो सकता है और फिर यह भी केवल दो-चार साल के लिए। इसके पश्चात् वह बीज ख़राब होना शुरू हो जाता है। इस काल में प्रति वर्ष ताज़ा बीज भी बोये जाते हैं ताकि वे उपरिलिखित विधि के अनुसार साथ-साथ जलवायु के अनुकूल बनते जायँ और इस प्रकार अच्छे बीज

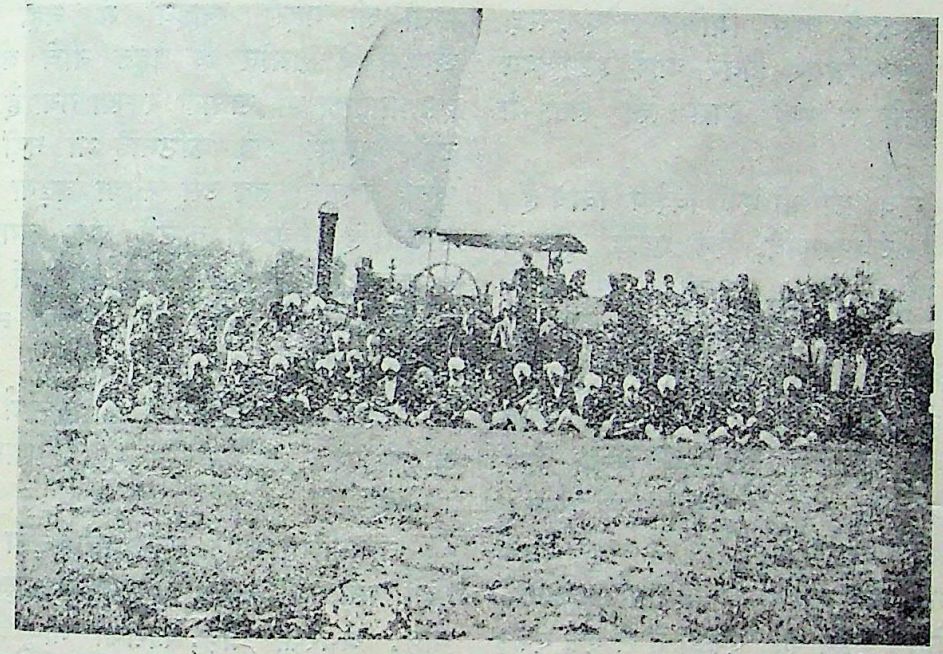

[सरकारी कृषि-कॉलेज, लायलपुर के कुछ विद्यार्थियों को स्टीम से काश्तकारी करके दिखाई जा रही है।]

ताकि इनके बीज जलवायु के अनुकूल बनाये जायँ, क्योंकि देशी बीज प्रायः बहुत ही मामूली और अश्रित होते हैं।

बीजों को जलवायु के अनुकूल बनाने के लिए यह तरीक़ा बर्ता गया है। ताज़े बीज को प्रथम वर्ष केवल इस आशय से बो दिया गया कि उस फ़सल से दूसरे वर्ष के लिए बीज बन जायँ। बीजों में से जो ख़राब या रोगग्रस्त हुए उनका त्याग कर कभी कम न होने पावें। हमारा देश मुख्यतः शाकभोजी है, इसलिए कृषि-विद्या के इस भाग की ओर हमारे कृषकों का विशेष रूप से ध्यान जाना चाहिए। सूखी सब्ज़ियों के लिए भी बाज़ार में पर्याप्त माँग है। इँग्लेंड में सूखी सब्ज़ियाँ बेचनेवाले एक फ़र्म का काम देखने के पश्चात् फ़ार्म पर भी सूर्य-द्वारा शलगम, गोभी, भिण्डी आदि सब्ज़ियाँ सुखाने के प्रयोग किये गये। इँग्लेंड में ये भाफ़ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा सुखाई जाती हैं, इसलिए उनको बड़ा सुभीता रहता है। सूर्य से सुखाने में दो नुक़्स हैं—या वे कम सूखती हैं या अधिक। इसी कारण उनमें से अधिक भाग ख़राब हो जाता है। हाँ, यदि यह काम भाफ से लिया जाय तो अवश्य ही सफलता और लाभ हो।

सब्ज़ियों के अतिरिक्त घास तथा क्लोवर भी लगाये गये, इसलिए कि ये भी जलवायु के अनुकूल बनाये जायँ। कार्टर से ये ४ प्रकार के मँगवा कर लगाये गये थे—स्थायी घास, मिश्रित क्लोवर, सदा हरा रहनेवाला डेवनशायर हीवर और इटालियन राई घास। इनमें से राई घास की खेती में सफलता हुई।

बीज के चुनाव की भी एक विशेष विधि है। है बड़ी सरल। उदाहरणार्थ, एक एकड़ भूमि में साधारण देशी गेहूँ बो दिये। उसकी सिंचाई आदि का बढ़ने के समय विशेष ध्यान रक्खा गया। जब बालें निकल आईं तब यह देखना कोई मुश्किल बात नहीं कि कौन-कौन-सी बाल ख़राब है। ख़राब बालोंवाले पौधों को समूल उखाड़ दिया, सिर्फ़ अच्छी बालों वालों को खड़ा रहने दिया। इस एकड़ में से निकले हुए बीज दूसरों की बनिस्बत बहुत अच्छे होंगे और अगले वर्ष कई एकड़ ज़मीन में बोने के लिए पर्य्याप्त होंगे। इन कई एकड़ों में से एक एकड़ ज़मीन फिर बीज के चुनाव के लिए पृथक् कर दी, शेष ज़मीन से उपलब्ध बीज ज़मींदारों को बोने के लिए दे दिये। इसी प्रकार प्रतिवर्ष दूसरी फ़सलों के लिए भी फ़ार्म पर बीज का चुनाव किया जाता है। यही कारण है कि लायलपुर में होनेवाली कृषि-नुमाइशों में फ़ार्म को कई बार इनाम दिये गये हैं। लाहौर में होनेवाली अंतिम औद्योगिक तथा कृषि-संबंधी नुमाइश में फ़ार्म को एक रजत-पदक प्रदान किया गया था।

फ़ार्म पर बारह एकड़ का एक सुन्दर बाग़ीचा भी लगा है। इस मतलब के लिए भूमि का सबसे उत्तम भाग चुना गया है। इस वर्गफल के अनेक टुकड़े कर दिये गये और हर एक एकड़ के चार भाग। इ एक भाग में एक प्रकार का ही फल लगाया गया है

ऊँची हवाओं से बाग़ीचे की रक्षा करना सब अधिक महत्त्व की बात है। इसलिए बाग़ी लगाने से पूर्व वर्गफल के चारों ओर ऐसे वृक्षों झाड़ लगा देना चाहिए जो जल्दी ही उग प फ़ार्म के बाग़ीचे के एक तरफ़ शहतूत लगाये हैं, दो तरफ़ केले की पंक्तियाँ और चौथी त जमोआ और जामुन की एक पंक्ति। फलदार पानी की गहरी खाइयों में नहीं लगाये और न वे ज़मीन के बहुत नीचे बोये गये इस बात का भी ख़याल रक्खा गया है कि वृक्ष उगें। इसमें कोई कठिनाई भी नहीं होती—पौधा बच्चा हो तब उसे सीधा बढ़ना सिखाया सकता है। कलमें काटने तथा लगाने और जमाने के साधारण तरीक़े भी प्रयोग में लाये गये बाग़ीचे में पौधे लगाने के लिए एक नर्सरी भी हुई है।

फल के चुनाव के संबंध में फ़ार्म में किये प्रयोगों से उपलब्ध हुए कुछ परिणाम यहाँ जाते हैं—

नींबू-परिवार तो ख़ूब ही बढ़ता है। माल देशी संगतरा, नागपुरी संगतरा, खट्टा नींबू, नींबू, अँगरेज़ी नीबू, काग़ज़ी नीबू और गल ये सब एक बड़ी संख्या में उगाये गये हैं। वर्ष रहनेवाली इस फ़सल को हवाओं से बचाना आव है ताकि इनका वातावरण कुछ गर्म और शान्त और ज़मीन सदा ही नमदार हो। परन्तु आ आबपाशी इसके लिए हानिकर होती है। ज़मीनों की सिंचाई नहर के जल से होती है, यह नींबू-परिवार प्रसन्न और स्वस्थ नहीं होता, क साल में कुछ समय तक नहरें बन्द रहती हैं। इस परिवार को पानी बिलकुल नहीं उपलब्ध और जब फिर नहरें चल पड़ती हैं तब इसको श्यकता से कहीं अधिक पानी दिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माल्टा और संगतरा को जब खट्टे नीबू से पेवन्द कर दिया जाता है तब ये ख़ूब ही फल देते हैं और इनकी आयु भी लम्बी हो जाती है। मीठे नींबू के साथ पेवन्द करने पर ख़ुशबूदार नारंगियाँ बन जाती हैं, परन्तु इस अवस्था में इनकी आयु घट जाती है। मोकरी के साथ इनको कभी न पेवन्द करना चाहिए। ऐसा करने से पौधा बढ़ तो बहुत थोड़े समय में जाता है, परन्तु आयु बहुत कम हो जाती है और फल का छिलका बहुत मोटा हो जाता है। पौधों के इधर-उधर उगी हुई गहरी जड़ोंवाली घास सदा उखाड़ते रहना चाहिए। ज़मीन को नरम रखने के लिए उसकी 'गोड़ाई' भी बाक़ायदा होनी चाहिए। इस फ़सल के हित के लिए फ़ार्म के इन टुकड़ों में कुछ सब्ज़ी और सेंजी भी उगा दी जाती है।

खट्टा नीबू, मीठा नीबू, गलगल और काग़ज़ी नींबू—सभी बीजों से ही उत्पन्न किये जाते हैं। खट्टा नीबू, मीठा नीबू और गलगल काट कर मिलाने से भली भाँति बढ़ते हैं। काग़ज़ी नीबू को तह जमाने के तरीक़े से उगाने पर उसका पौधा अच्छा बनता है और बीज की अपेक्षा फल जल्दी लगता है।

बाग़ीचे के पृथक्-पृथक् टुकड़ों में लोकाट, अनार, आड़ू, आलूचा, आलूबुख़ारा, नाशपाती, शहतूत, अंगूर, पपीता, फालसा, अंजीर, देशी सेव, केला, आम, बेर और खजूर के भी उत्पन्न करने का प्रयत्न किया गया है। संगतरा, नीबू, लोकाट और आम की अपेक्षा नाशपाती, आलूचा और अनार गरम हवा को ज़्यादा बर्दाश्त कर लेते हैं। अनार, पपीता, फालसा और खजूर बीज से उगते हैं; अंगूर, अंजीर, देशी सेव और आलूचा बीज और कतरन दोनों से। आड़ू, आलूबुख़ारा, नाशपाती और शहतूत 'छल्ला' तरीक़े से बढ़ते हैं। आम और बेर बीज से पैदा होते हैं; आम की पेवन्द भी लग जाती है। केले की छोटी शाखायें एक जगह से उखाड़ कर दूसरी जगह पर लगाई जा सकती हैं।

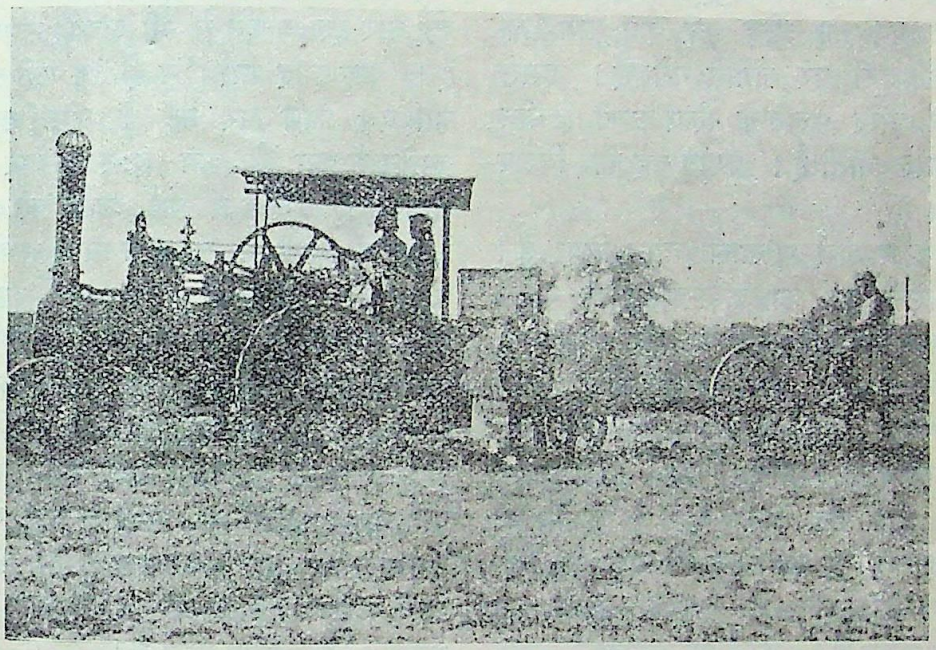

[सर गङ्गाराम फ़ार्म (गङ्गापुर) पर स्टीम से काश्तकारी की जा रही है, (बीच में सर गङ्गाराम के पुत्र रा० ब० सेवकराम एम० एल० सी० खड़े हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ार्म पर बादाम के भी कुछ पौधे लगाये गये हैं। ये 'छल्ला'-तरीक़े से उगाये गये हैं। फल इन्होंने अच्छे दिये हैं। स्वाद भी बहुत अच्छा था, लेकिन रंग इतना सफ़ेद न था जितना काबुली बादामों का होता है। आम की खेती के विषय में पर्याप्त धन और समय नष्ट करने के पश्चात् फ़ार्म इस परिणाम पर पहुँचा है कि यह फल लायलपुर के जलवायु के अनुकूल नहीं बैठता। आम और जामुन को छोड़ कर शेष सब वृक्ष १५-१५ फ़ुट की दूरी पर लगाये गये हैं। इससे पौधे को बढ़ने और फूलने के लिए काफ़ी ज़मीन और ख़ूराक मिल जाती है। परन्तु यह कोई विशेष नियम नहीं है।

खाद की ओर फ़ार्म ने ख़ास ध्यान दिया है। इस देश में सिर्फ़ घर का कूड़ा-कर्कट ही सबसे अच्छा खाद माना गया है। परन्तु यह सभी खेतों के लिए पूरा नहीं होता। फ़ार्म पर हरी खाद बनाना आरंभ किया गया। वह इस तरह। सन और नील दोनों एक जगह बो दिये गये। इनके पौधे अभी हरे ही थे कि ऊपर हल चला कर ये ज़मीन के अन्दर धँसा दिये गये। इस खाद की मदद से पैदा करने पर गेहूँ मिक़दार में १५ से लेकर २० फ़ी सैकड़ा बढ़ जाता है। फ़ार्म पर रहनेवाले ज़मींदारों को भी यही सादा ढङ्ग बर्तने के लिए कहा गया। इसके अतिरिक्त एक अन्य खाद भी बनाई गई। एक एकड़ ज़मीन में अरण्डी के पौधे लगा दिये; इनके पत्ते बहुत मोटे और घने होते हैं। इसमें से एक फ़सल काट लेने के पश्चात् खेत में हल चला कर पत्ते, तने आदि सबको ज़मीन के अन्दर घुसेड़ दिया और कुछ समय उन्हें वहीं सड़ने दिया। इस भूमि में बोई गई फ़सल बहुत ही अच्छी निकली।

हड्डियों की खाद भी बाग़ में प्रयुक्त की गई। इसमें सफलता भी बहुत हुई। बनाई यह इस प्रकार गई। पचास मन हड्डियाँ लेकर वे हाथ से कुटवाई गईं। तब इसमें से दो-दो सेर बाग़ के हर एक पौधे को दे दिया गया। इन पौधों के सामान्य स्वास्थ्य से मालूम हुआ कि इस ढंग से उनको ख़ूराक बाक़ायदा मिलती रहती है। हड्डियों को कूटने का काम यदि किसी मशीन से लिया जाय तो यह खाद खेती के हर एक पौधे को मिल सकती है। मटर, तरबूज़ और कुछ दूसरी सब्ज़ियों के बीज को रातभर गो-मूत्र में भिगोने के बाद बोने से संतोषप्रद परिणाम निकलते हैं। बोने से पूर्व ज़मीन में कई बार हल चलाने से भी अच्छी फ़सल पैदा होती है। जब खाद पर्याप्त न हो तब यही तरीक़ा बर्तना चाहिए। फ़ार्म पर गेहूँ के बीज डालने से पूर्व ज़मीन में कम से कम छः-सात बार हल चलाया जाता है। इँग्लेंड में कई प्रकार की बनावटी खादें प्रयुक्त की जाती हैं, परन्तु वे प्रायः सभी बहुत महँगी पड़ती हैं। नमूने के तौर पर वहाँ का एक टन बेराइट मँगवाया गया। यह बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ। इससे उपज ज़्यादा हुई और कीटाणु मर गये।

पशु-पालन का कार्य भी फ़ार्म पर किया गया है। इस प्रयोजन के लिए एक दर्जन अच्छी-अच्छी घोड़ियाँ मँगाई गईं। घोड़ों के लिए एक बड़ा भी अस्तबल भी खड़ा किया गया। गाँव की ज़रूरत पूरी करने के लिए यह आवश्यक भी था। बाद में वह सरकार को दे दिया गया है।

ज़मींदार के लिए मवेशी पालना तो साधारण काम है, परन्तु यदि अच्छे-अच्छे पशु पैदा किये जायँ तो इससे धन भी ख़ासा कमाया जा सकता है। ज़िला-बोर्ड ने फ़ार्म को एक हिसारी बैल प्रदान किया था। पशु-वृद्धि में इसने बड़ी सहायता की।

इँग्लेंड में गो-पालन का कार्य व्यापारिक दृष्टि से किया जाता है। वहाँ पर वह मनुष्य जो दूध के लिए गौएँ रखता है, सिर्फ़ बड़ी गौएँ ही रखता है बछड़े नहीं। किसी गौ का बछड़ा होने पर वह उसे पन्द्रह दिन के बाद बेच डालता है। एक अन्य मनुष्य केवल बछड़ों को पालता है। लेकिन जब वे एक-एक बरस के हो जाते हैं तब उन्हें बेच देता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा मनुष्य दो-दो बरस तक के बछड़ों को और चौथा तीन-तीन साल के बछड़ों को पालता है। इसी प्रकार यह क्रम आगे चलता जाता है। इनमें से हर एक मनुष्य अपने कार्य में विशेषज्ञ बन जाता है। इससे काम अच्छा होता है और पैसा भी काफ़ी हाथ लगता है।

वहाँ पर एक गौ साठ पौण्ड या तीस सेर तक दूध देती है। उस देश में इस बात का ख़ास ख़याल रक्खा जाता है कि कहीं गौ की एक नसल दूसरी से न मिल जाय। परन्तु यहाँ भारत में इससे बिलकुल उल्टा होता है। वहाँ की गौएँ यहाँ पर नहीं मँगवाई जा सकतीं, क्योंकि वे इतनी गर्मी बर्दाश्त नहीं कर सकतीं। यहाँ के एक धनवान् ने एक अँगरेज़ी बैल और कुछ गौएँ मँगवाई थीं, परन्तु वे बहुत दिन तक न जीवित रह सकीं। उस बैल और देश की गौ से उत्पन्न हुआ एक बछड़ा फ़ार्म में रक्खा गया है। देखने में यह बहुत सुन्दर है। उससे दूध देनेवाली गौओं के लिए कोशिश की जायगी। पटियाला की ओर की कुछ भैंसें भी फ़ार्म में हैं। क्योंकि हमारे घरों में घी की बड़ी ज़रूरत रहती है, इसलिए भैंसें तो हर एक फ़ार्म पर होनी चाहिए।

फ़ार्म पर प्रयुक्त किये जानेवाले हल आदि औज़ारों का कुछ उल्लेख भी शायद आवश्यक है। जब बेहतर हलों और औज़ारों की ओर प्रबन्धकर्ता का ध्यान गया तब मेस्टन, कैसर और काश्तकार-नाम के हल कानपुर से मँगाये गये, लेकिन जब एवेरी का बनाया हिन्दुस्तान-नाम का हल इस्तेमाल में लाया गया तब पहले तीनों का त्याग कर दिया गया। इस हल ने बड़ा संतोषप्रद काम किया है।

फ़सल काटने के लिए वाल्टर वुड का बनाया 'रीपर' सबसे पहले फ़ार्म पर ही प्रयुक्त किया गया। इसके साथ आप-से-आप काम करनेवाले रैक और इकट्ठा करने के लिए तख़्ते भी लगे हैं। परन्तु मशीन इसकी इतनी भारी है कि घोड़ों की जोड़ी ही इसे चला सकती है। बैलों की जोड़ी तो मशीन को अच्छी तरह से घसीट भी नहीं पाती। ऐसी दशा में गेहूँ भी ख़राब हो जाता है। इसके पश्चात् ग्लासगो की वालेज़ कम्पनी का 'रीपर' इस्तेमाल में लाया गया। इसका प्रयोग पंजाब में पहले-पहल सरकारी कृषि-विभाग के डिप्टी डायरेक्टर ने किया था। यह बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। बालों से अनाज निकालने के लिए भी फ़ार्म पर एक मशीन मँगाई गई। काम करनेवालों ने इसे बहुत पसन्द किया। लेकिन यह बात याद रखनी चाहिए कि पहले एक बार गेहूँ को देशी ढंग से निकालने के पश्चात् इस मशीन का प्रयोग किया गया था।

इनके अतिरिक्त फ़ार्म पर रिजर, कल्टवेटर, साईथ, हैरो, स्प्रे और बाग़वानी के अन्य औज़ारों का प्रयोग भी किया जाता है।

सन् १९१० में रायबहादुर गंगाराम इँग्लेंड गये। उनके साथ उनके सुपुत्र रायबहादुर लाला सेवकराम बैरिस्टर* भी गये। इसी यात्रा में लाला सेवकराम ने फ़्रांस, जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन के कई कृषि-फ़ार्मों को भी देखा। उन देशों में कई स्थानों पर भाफ से हल चलाया जाता है। इस प्रकार हल चलाना उनको बहुत पसन्द आया है। क्योंकि इस देश में भी अब मजूर मज़दूरी अधिक माँगने लगे हैं और ज़मीन के कई नये टुकड़े निकल आने से काश्तकार कम मिलते हैं, इसलिए इसमें सन्देह नहीं कि कुछ ही काल में भारतीयों को स्टीम से काश्त करनी पड़ेगी। योरप के अतिरिक्त अमरीका में भी स्टीम, बिजली या तेल की शक्ति से हल चलाया जाता है।

—धर्मवीर

*इस लेख के लिखने में लेखक को इन्हीं सज्जन से अनेक ज्ञातव्य बातें ज्ञात हुई हैं। तदर्थ इनको धन्यवाद। लेखक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ी बोली की कविता

[खड़ी बोली में हिन्दी-कविता का जो अभिनव रूप विकसित हुआ है तथा उसने लो के समक्ष जो नव जीवन का आदर्श उपस्थित किया है उसीके विश्लेषण का प्रयत्न इस लेख किया गया है। आशा है, कविता-प्रेमियों का श्रीयुत त्रिवेदीजी के इस सुन्दर लेख से विशेष से मनोरञ्जन होगा।]

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का लगाया हुआ वृक्ष ईश्वर की कृपा से बहु-शाखामय होकर फलने-फूलने लगा है। भारतेन्दु के पहले हिन्दी-भाषा में केवल रीति-ग्रन्थों की रचना होती थी, परन्तु आपने पुरानी परिपाटी का पालन करते हुए भी नये भावों की कविता की। आपने खड़ी बोली की कविता का इस युग में नया सूत्रपात किया। आपका दशरथ-विलाप 'कहाँ हो ऐ हमारे राम प्यारे" बहुत प्रसिद्ध हुआ। आपके अनेक अनुयायी हुए, जिनके द्वारा कविता के इतिहास में एक नये युग का आविर्भाव हुआ। परन्तु उस समय भी अनेक लोगों की यह धारणा थी कि खड़ी बोली में कविता हो ही नहीं सकती है। उनके विचार में कविता के लिए केवल व्रजभाषा ही उपयुक्त थी। परन्तु श्रीधर पाठक ने खड़ी बोली की कविता को नाना प्रकार के साँचों में ढाल कर यह दिखा दिया कि सब प्रकार की कविता खड़ी बोली में भी हो सकती है। पण्डित महावीर-प्रसाद द्विवेदी के 'सरस्वती'-सम्पादन-काल में खड़ी बोली की कविता का अधिक प्रचार हुआ। द्विवेदीजी ने संस्कृत वृत्तों को ग्रहण किया औ संस्कृतछन्दों-द्वारा खड़ी बोली को सुधारना चाह आप अपने प्रयत्न में अधिकांश सफल हुए, पर उस समय की कविता में यह दोष आ गया कि मधुर न हो सकी। रसिकों के कान मतिराम, त और पद्माकर आदि की पीयूष-वर्षा से भरे थे, अ उन्हें उस समय की कविता मधुर न लगी। ज साधारण में यह बात फैल गई कि खड़ी बोली कविता हो सकती है, पर मधुर नहीं।

कविवर पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय ने कर्ण-कटुता को सम्पूर्णतः हटा दिया। आपके 'प्रवास' में व्रजमाधुरी के साथ साथ व्रज-भाषा सी माधुरी भी है। आपने खड़ी बोली में महाका लिखकर खड़ी बोली की कविता के इतिहास में एक न युग उपस्थित कर दिया। उपाध्यायजी ने प्रवास में केवल तीन या चार प्रकार के छन्दों प्रयोग किया और उसके बाद आपका ध्यान चौ की ओर आकर्षित हुआ, जिनमें भी आपने अ प्रतिभा का पूर्ण परिचय दिया। उपाध्यायजी खड़ी बोली को भिन्न भिन्न रूपों से माँज कर कविता के लिए पूर्ण उपयोगी बना दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोली की कविता के उत्थान में भिन्न-भिन्न नई प्रणालियों के प्रवर्तक उपर्युक्त चार कवि हुए, जिनके द्वारा खड़ी बोली की कविता का प्रचार अधिक हुआ और वह कविता करने के उपयुक्त मानी जाने लगी।

अधिकांश लोग यह कहा करते हैं कि "हिन्दी की कविता जो कुछ होनी थी वह हो चुकी। अब कोई पुराने कवियों की बराबरी नहीं कर सकता।" हमारी समझ में नहीं आता कि उनका यह विचार कहाँ तक ठीक है। खड़ी बोली की कविता को पुरानी ब्रजभाषा की कविता से तुलना करना उचित नहीं। हम यह मानते हैं कि इस समय ब्रजभाषा की अधिकांश कविता अच्छी नहीं होती; इसका कारण यह है कि ब्रजभाषा का प्रचार उठ जाने से लोगों को अपने भावों को उसकी शृङ्खला में बद्ध करने में अनेक कठिनाइयाँ पड़ती हैं। परन्तु इससे यह न समझना चाहिए कि इस समय ब्रजभाषा की कविता कोई कर ही नहीं पाता। रत्नाकरजी तथा हरिऔधजी इस कथन के अपवाद हैं। रत्नाकरजी की कविता में बिहारी, मतिराम और तोष का स्वाद आता है, कहीं कहीं आपकी कविता पुराने कवियों से कहीं अधिक अच्छी है। आपके 'गजेन्द्र-मोक्ष' तथा 'चीरहरण' बड़े ही उत्तम हैं। किसी भी पुराने कवि की उत्तम कविता से सरसता में कम नहीं। हरिऔधजी का 'रसकलस' ग्रन्थ जो शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है, नायिका-भेद तथा रस-भेद के किसी भी पुराने कवि की कविता से बराबरी करेगा। कहने का तात्पर्य्य यह है कि यह धारणा सर्वथा भ्रमात्मक है कि अब कवियों में पहले की सी प्रतिभा ही नहीं।

वर्तमान समय में खड़ी बोली की कविता दो प्रकार की होती है। एक साधारण, दूसरी छायावादी। अभी तक खड़ी बोली की कविता अन्य छन्दों में हुई थी। कवित्त का प्रयोग नहीं के बराबर हुआ। सीतल ने केवल सवैयों को खड़ी बोली में संवत् १७८० के क़रीब लिखा। सीतल के सवैया ब्रजभाषा के सवैयों से अधिक मधुर हैं—

हम खूब तरह से जान गये,
जैसा आनन्द का कंद किया।
सब रूप शील गुन तेज पुंज,
तेरे ही तन में बंद किया॥
तव हुस्न प्रभा की झाँकी ले,
फिर विधि ने यह फरफंद किया।
चंपकदल सोनजुही नरगिस,
चामीकर चपला चंद किया॥

श्रीधर पाठक ने भी खड़ी बोली में सवैया लिखे, परन्तु कवित्त खड़ी बोली में नहीं लिखे गये। खड़ी बोली कवित्त के साँचे में न ढलने पाई। परन्तु हर्ष का विषय है कि ठाकुर गोपालशरणसिंहजी ने इस ओर ध्यान दिया। आपने खड़ी बोली में कवित्तों में रचना की जिनमें मधुरता तो मानों कूट कूट कर भर दी गई। देखिए कितना सुन्दर भाव है—

सुखमा उसी की अवलोक के सुधाकर में,
रूप-सुधा पीकर चकोर न अघाते हैं।
घन की घटा में नव निरख उसी की छटा,
मंजुल मयूर होते मोदमदमाते हैं॥
फूलों में उसी की शोभा देख के मलिन्द-वृन्द,
फूले न समाते 'गुन गुन' गुन गाते हैं।
दीपमान दीपक में देख वही छबि बाँकी,
प्रेम से प्रफुल्लित पतंग जल जाते हैं॥

अथवा एक दूसरा कवि कहता है—

कैसा शुचि सुन्दर है मेरा यह प्रेम-पंथ,
वे रहें निष्ठुर हम तन-मन वार दें।
जीवन में जलावें वे ताप से विरह की ही,
चाहें पदपद्मद्वारा दूर ही पँवार दें॥
केवल 'अजेय' मन एक लालसा है यह,
नीची दृष्टि से वे हमें प्रेम से निहार दें।
मैं एक बार कहूँ उन्हें मेरी प्राण तुम हो,
तो एक बार वे भी हमें प्यारे पुकार दें॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनसे यह प्रमाणित होता है कि खड़ी बोली विद्वानों के हाथ में पड़ते पड़ते अब मँज चुकी है और वह सभी प्रचलित छन्दों में प्रयोग करने के उपयुक्त है।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि खड़ी बोली में किन बाहरी शब्दों का समावेश होना उचित है। खड़ी बोली की कविता में 'सात समुन्दर पार' के भी शब्द आते हैं और उत्तुङ्ग हिमालय के उस पार के भी शब्दों का गर्व के साथ प्रयोग किया जाता है। परन्तु यदि कहीं व्रज-भाषा का एक भी शब्द आ जाता है तो 'सच्चे समालोचक' बिगड़ जाते हैं। मेरे कहने का तात्पर्य्य यह नहीं कि खड़ी बोली की कविता में व्रज-भाषा के शब्दों की भरमार हो, परन्तु जिस प्रकार उर्दू तथा अँगरेज़ी के शब्द प्रयोग किये जाते हैं उसी प्रकार यदि व्रज-भाषा के शब्दों का उचित प्रयोग हो तो कोई हानि नहीं। हम न जाने क्यों अपनी वस्तु को त्याग विदेशी चीज़ अपना रहे हैं। व्रजभाषा के इन शब्दों जैसे—नेक, विलोकि निरमोही, चहुँ दिशि.....आदि का यदि प्रयोग खड़ी बोली में हो तो क्या हानि होगी; व्रजभाषा तो उसी की सन्तान है जिसकी हिन्दी भी पुत्री है। परन्तु समालोचकों से कौन कहे? आशा है, विद्वान् लोग इस विषय पर ध्यान देंगे और खड़ी बोली की कविता को कुछ स्वतंत्रता देंगे।

अब हमें यह देखना है कि खड़ी बोली की वर्तमान समय की कविता अपने आदर्श पर कहाँ तक स्थिर है। मुसलमानी राज्य में विलास-प्रियता के कारण कविता अपने आदर्श से गिर चुकी थी। वह केवल विलासप्रिय मनुष्यों के मन बहलाने की सामग्री हो चुकी थी। उसमें हमें कोई लोकहित का आभास नहीं मिलता था। परन्तु वर्तमान युग में खड़ी बोली ने उच्च आदर्श को ग्रहण कर लिया है। मनुष्य का सृष्टि के साथ सम्बन्ध रहना नितान्त आवश्यक है। यदि मनुष्य का सृष्टि के साथ सम्बन्ध टूट जाय तो उस मनुष्य की मनुष्यता के लुप्त हो जाने का डर रहता है। कविता ही एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य के लिए सृष्टि से आलम्बन का विषय चुनती है और सदा इसका प्रयत्न किया करती है कि मनुष्य की दृष्टि प्रकृति से फिरने न पावे। सृष्टि का मनुष्य के साथ सामञ्जस्य कविता ही कराती है। खड़ी बोली की कविता इसी ढंग पर जमी है। अब वह प्रकृति का सूक्ष्म से सूक्ष्म निरीक्षण कर नाना प्रकार के भावों और विभावों को लाकर हृदय में भर देती है। पुराने कवियों ने प्रकृति को या तो नायक-नायिका की उद्दीपन-सामग्री की दृष्टि से देखा अथवा प्रकृति के वर्णन में वे उपदेशक बन गये। गोस्वामीजी भी हमारा लगाव प्रकृति के साथ न करा सके। "दामिनि दमक रही घन माही" में उन्हें पूर्ण असफलता मिली, क्योंकि वे पूरे उपदेशक हो गये। देखिए पण्डित रामचन्द्रजी शुक्ल 'आमन्त्रण' में प्रकृति का खड़ी बोली में कैसा सुन्दर वर्णन करते हैं।

दृग के प्रति रूप सरोज हमारे,
उन्हें जग ज्योति जगाती जहाँ।
जल बीच कदंब-करंबित कूल से,
दूर छटा छहराती जहाँ॥
घन अंजन वर्ण खड़े तृण जाल की,
झाँई पड़ी दरसाती जहाँ।
बिखरे बक के निखरे सित पंख,
बिलोक बकी बिक जाती जहाँ॥

× × ×

दल राशि उठी खरे आतप में,
हिल चंचल चौंध मचाती जहाँ।
उठ एक हरे रँग में हलकी,
गहरी लहरी पड़ जाती जहाँ॥
कल कर्बुरता नभ में प्रतिबिंबित,
खंजन के मन भाती जहाँ।
कविता वह हाथ उठाये हुए,
चलिए कविवृन्द बुलाती वहाँ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी खड़ी बोली की कविता ने मानव-जीवन का बड़ा उपकार किया।

शृंगार-रस की भी कविता खड़ी बोली में सुन्दर होने लगी है। खड़ी बोली में शुद्ध तथा सच्चे प्रेम का अपूर्व वर्णन हुआ है, जिसमें त्याग और पवित्रता की सुगंधि है न कि विलासिता और अश्लीलता की बू।

सुमित्रानन्दन जी लिखते हैं—

अनुपम इस सुन्दर छवि से,
मैं आज सजा लूँ निज मन।
अपलक अपार चितवन पर,
अर्पण कर दूँ निज यौवन॥
तुम मुझे भुला दो मन से,
मैं इसे भूल जाऊँगा।
पर वंचित मुझे न करना,
अपनी सेवा से पावन॥

अथवा—एक दूसरे कवि की एक नैराश्यमय प्रेम की कविता देखिए—

प्रेमभरी बातें और आनन्द की घातें सब,
झूठी रच डालीं या प्रमोद का बहाना था।
प्रेम सत्य निश्चल अनन्त है 'अजेय' सुनो,
ऐसा पाठ मुझको असत्य क्या पढ़ाना था॥
तुम्हारी मुसकान या कटाक्षों में सत्यता थी,
अथवा झूठे तीरों का केवल निशाना था।
समझ में न आता यह तुमने परीक्षा ली,
या मुझे कलपाने में तुम्हें कल पाना था॥

ये कवितायें कितनी सुन्दर हैं आप स्वयं विचार सकते हैं। कहने का तात्पर्य्य यह है कि खड़ी बोली में सुन्दर और सरस कविता होने लगी है।

खड़ी बोली की कविता इस समय देश का बड़ा उपकार कर रही है। जो काम तुलसी की रामायण ने किया, जो कार्य्य भूषण की कविता ने किया, वही काम इस समय खड़ी बोली कर रही है। विद्वानों का यह कथन है कि "जाने दो इससे हमसे क्या मतलब, चलो अपना काम देखो" यह एक भयंकर रोग है, जिससे अधिकांश मनुष्य ग्रसित रहते हैं। कविता इस रोग की दवा है और खड़ी बोली की कविता इसका सजीव उदाहरण है। भारतदुर्दशा के कवियों ने ऐसे सुन्दर चित्र खींचे कि जनता विह्वल हो उठी और उसे अपनी खोई हुई विभूति पाने की प्रबल लालसा उत्पन्न हुई। बाबू मैथिली-शरण, नाथूराम शंकर आदि ने इस क्षेत्र में बड़ा काम किया। इस सबका मतलब यह है कि अभी खड़ी बोली की कविता अपने उच्च आदर्श पर ही स्थिर है।

इस समय खड़ी बोली का 'कर्णकटु' दोष प्रायः मिट गया है, परन्तु धीरे धीरे इस मिठास में कड़ुआपन आने लगा है। लोग कोमलकान्तपदावली के फेर में पड़कर एक दूसरे पथ पर चले गये, जिसका नाम उन्होंने छायावाद रख लिया। रहस्यवाद तो हिन्दी-कविता में कबीर और जायसी की कविताओं में मिलता है। परन्तु यह छायावाद कहाँ से आया, इसका पता नहीं। इस छायावाद की कविता में शब्द-विन्यास तो बड़ा ही सुन्दर रहता है, परन्तु भावों में इतनी सूक्ष्म कल्पना है कि मनुष्य की बुद्धि वहाँ तक पहुँच ही नहीं पाती। इस छायावाद की कविता में सबसे बड़ा दोष यह है कि इसके भावों और विचारों में साम्य नहीं रहता। सारी कविता पढ़ जाने के बाद वह फुटकर पद्यों का संग्रह जान पड़ती है। इन छायावादी कवियों का यह कथन है कि उनकी कविता अनन्त से सम्बन्ध रखती है। कविता का सम्बन्ध केवल विश्वगोचर जगत् से है। कविता आनन्दप्रदायिनी है। और ब्रह्म स्वयं आनन्दमय है, अतः कविता का सम्बन्ध ब्रह्म की व्यक्त सत्ता से है, अव्यक्त सत्ता से नहीं। परन्तु छायावादी कवि अपनी कविता को शायद ब्रह्म की अव्यक्त सत्ता से मिलाते हैं और यही कारण है कि वह मनुष्य की बुद्धि के बाहर हो जाती है। यह प्रणाली अँगरेज़ी से बँगला में आई और बँगला से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर हिन्दी में प्रवेश कर गई। परन्तु अब तो अँगरेज़ी से उसकी ज्यों की त्यों छाया ली जाती है। इस छायावाद से जनता कितनी घबरा गई है, यह प्रकट है। इसी कारण कुछ लोग जयशंकरप्रसादजी तथा सुमित्रानन्दन पन्त को भी छायावादी कवि मान लेते हैं, यद्यपि इनकी कविता में उतना छायावाद नहीं।

आज-कल छायावाद की ओर अधिक कवि झुक पड़े हैं। उनके भावों तथा उनकी भाषा में भी छायावाद होने लगा है। यह अनर्थ यदि रोका जाय तो उत्तम होगा। एक नमूना देखिए। श्री महादेवी वर्माजी "स्वप्न" पर कविता लिखती हैं—

इन हीरक से तारों को,
कर चूर बनाया प्याला।
पीड़ा का सार पिलाकर,
प्राणों का आसव डाला॥

× × ×

बेसुध से प्राण हुए थे,
छूकर उन झनकारों को।
उड़ते थे अकुलाते थे,
चुम्बन करते तारों को॥

"हीरों के समान तारों को चूर कर उनका प्याला बनाया और उसमें अपनी पीड़ा तथा प्राण पीये गये" ज्ञात नहीं है कि इन तारों का प्याला क्यों बना? परन्तु दूसरे पद में प्राण उड़ उड़ कर तारों को चूमते हैं। पहले तारे चूर चूर हो गये, अब वे चूमे जाते हैं। भावसाम्य का कहीं पता नहीं, हाँ, शब्द अवश्य सुन्दर रक्खे गये हैं। इस कविता को पढ़ जाने पर 'स्वप्न' का कुछ भी पता न चला। यदि इसका नाम 'स्वप्न' के स्थान पर 'उड़ान' रख दिया जाता तो अच्छा होता। एक दूसरे स्थान पर आप लिखती हैं—

"झिल मिल तारों की पलकों में,
स्वप्निल मुसकानों को ढाल।
मधुर वेदनाओं से भर के,
मेघों का छायामय थाल"

तारों की पलकों में स्वप्निल मुसकान ढाल दी गई, इसका क्या अर्थ होगा तथा मेघों का छायामय थाल क्या होगा; शायद देवीजी ही बता सकें। यदि मेघ होंगे तो उसमें वेदनायें भरी जाने पर देख पड़ेंगी, इसका पता नहीं!

इसी प्रकार असंख्य छायावादी उदाहरण मिलते हैं, जिनमें न भाव है न हृदयग्राहकता, केवल कोरी कोमल शब्दों की उड़ान है। यदि यह बन्द न हुआ तो कुछ समय बाद अँगरेज़ लोग यह कहेंगे कि "आपकी खड़ी बोली की कविता हमारी कविता की कोरी नक़ल है। आप तो जंगली थे। हमने आपको कविता करना सिखाया।" वे कुछ शब्द ऐसे उदाहरण के लिए प्रस्तुत करेंगे जिनको छायावादी कवियों ने ज्यों के त्यों ले लिया है, जैसे—'Drowsy स्वप्निल Golden wing अरुण पंख, Prosaic life गद्यमय जीवन'।

अन्त में हम यह कह सकते हैं कि खड़ी बोली की कविता का इतिहास बड़ा ही मनोरंजक रह चुका है तथा इसका भविष्य बड़ा उज्ज्वल है। परन्तु यह हमारा कर्तव्य है कि हम उसे उच्च स्थान तथा ध्येय से गिरने न दें। खड़ी बोली की कविता से भारत को बड़ी आशा है। ऐसा न हो कि कवि इसी प्रकार के अनेक वादों में पड़ कर जनसाधारण की दृष्टि से गिर जाय। कविता में रहस्यवाद बुरा नहीं, परन्तु छायावाद अवश्य कुछ अंशों में बुरा है, जिसमें लेखक तथा पाठक दोनों का समय व्यर्थ में नष्ट होता है। छायावाद में एक गुण यह अवश्य होता है कि उसमें कोमल शब्दों की उड़ान में पड़कर भावों की बुराइयाँ अवश्य छिप जाती हैं। पर यह आवरण अच्छा नहीं। हमें पूर्ण आशा है कि सच्ची कविता का प्रवाह कोई भी 'वाद' नहीं रोक सकता।

—देवशंकर त्रिवेदी, बी० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

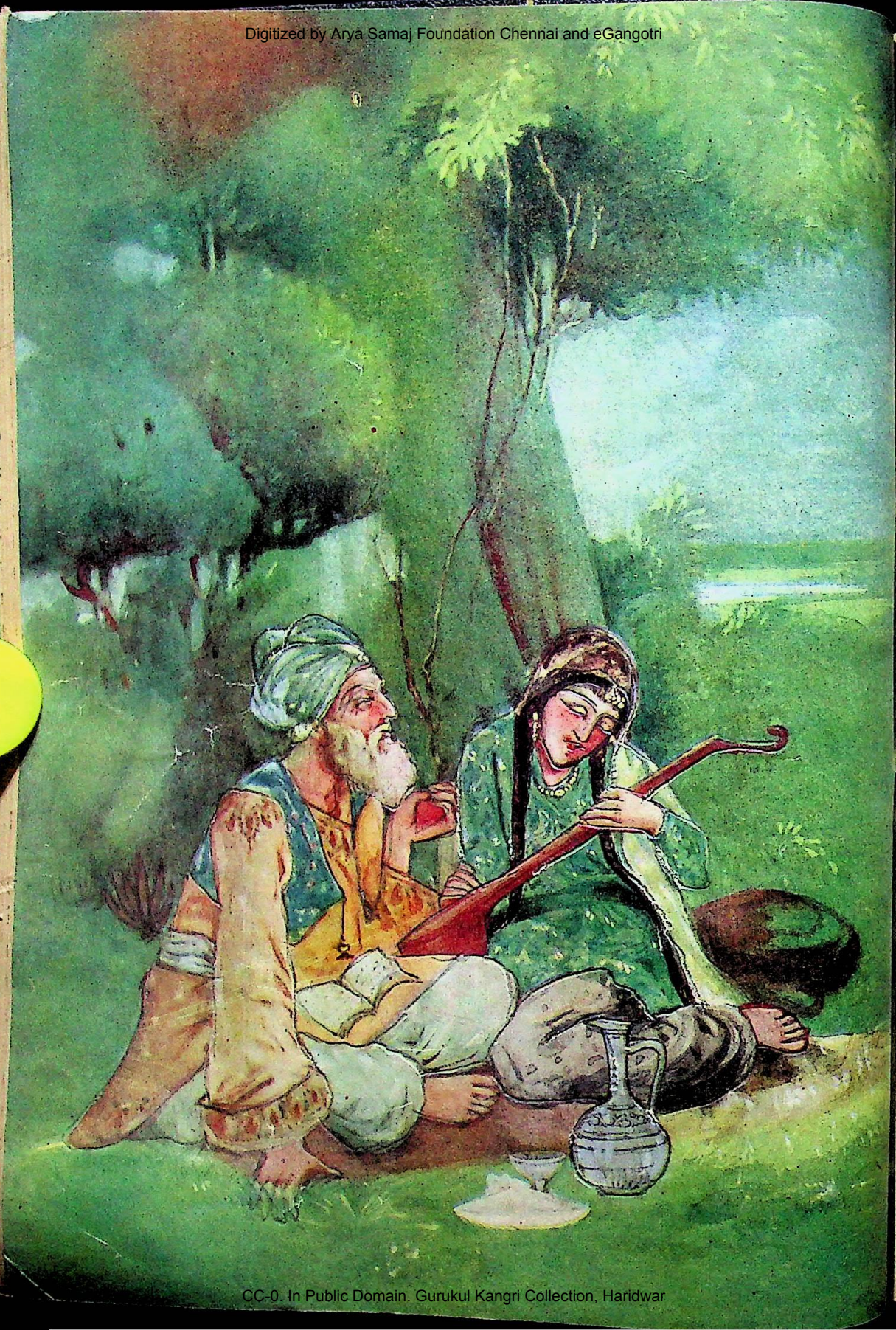

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमर ख़ैयाम

कलि ! तुमने ही तो छेड़ी थी
जीवन की वह अन्तिम तान ।
'आज आज भर प्रेम मत्त ही,
फिर तुम कहाँ, कहाँ अभिमान ?

काल-समुद्र अनादि गूँजता,
है कितना गंभीर विषाद ?
मृत्यु करालिनि नृत्य मग्न है
कहाँ रहेगी तेरी याद ?'

कण कण में जीवन के तुमने,
भर दी उसी प्रणय की चाह ।
समझा उसी समय यौवन में,
कितनी है वेदना अथाह !!

मधुर प्रात हो जीवन पथ की,
कामिनि खड़ी पात्र लेकर ।
तुम छलक छलक प्यालों को खाली,
किये चलो हे रसिक प्रवर ॥

किन्तु कहाँ तक सुरा, कहाँ तक,
कामिनि की मादक मुस्कान ?
प्राणों की यह बाज़ी कब तक,
यह अधरों का दान-प्रदान ?

कलियों का सौन्दर्य, उषा का
चिर-नवीन हँसता सा रूप ।
कवि ! क्या उससे भी सुन्दर है,
नारी का यह नश्वर रूप ?

गगनचुम्बि पर्वतमाला की,
झिल-मिल छवि का चंचल जाल ।
क्या उससे भी अधिक सत्य है,
माया-निर्मित चंचल बाल ?

इसकी सीमा साफ़ दीखती,
है वह भावों के इस पार ।
किन्तु आत्मा को जाना है,
भावों के असीम के पार ।

—श्रीरत्नचन्द्र छत्रपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ल्हासा कैसे पहुँचा ?

प्रथम खंड

प्रथम परिच्छेद

१९२६ में लदाख से लौटते हुए दलाई लामा के शासित ङरी-खोर्सुम् प्रदेश में कुछ दिनों तक रहा था, किन्तु उस समय और कारणों से अधिक समय तक तिब्बत में न रह सका। १९२७-२८ के सिंहल-प्रवास में तिब्बत जाने की आवश्यकता मुझे मालूम हुई। यह आवश्यकता भारतीय दार्शनिकों के ग्रन्थों के अनुवादों तथा भारतीय बौद्ध-धर्म की ऐतिहासिक सामग्री के संग्रह के कारण मालूम हुई थी। मैंने निश्चय कर लिया कि पाली के बौद्ध-ग्रन्थों का अध्ययन समाप्त कर तिब्बत अवश्य जाऊँगा।

१९२८ में मेरा कार्य समाप्त हो गया और पहली दिसम्बर की रात के मेल से मैं सिंहल से अपनी यात्रा के लिए रवाना हुआ। इसके कहने की आवश्यकता नहीं, कि तिब्बत में जाने का रास्ता और उपाय पहले ही से मैंने सोच रक्खा था। मैं यह अच्छी तरह जानता था कि भारत-सरकार मेरा ब्रिटिश सीमा पार करना असम्भव कर देगी। कलिम्पोङ् से सीधा ल्हासा का मार्ग तो मेरे लिए बहुत खतरनाक था, क्योंकि उधर अँगरेज़ ग्यांची तक अपनी निगाह रखते हैं। सरकार की पिछली कृपाओं को स्मरण कर मैं यह भी जानता था कि आज्ञापत्र के लिए कुछ भी लिखना फ़िज़ूल ही होगा, अतएव तिब्बत जाने के लिए अँगरेज़ी अधिकारि को धोखा देकर जाने का निश्चय किया। इसके लि

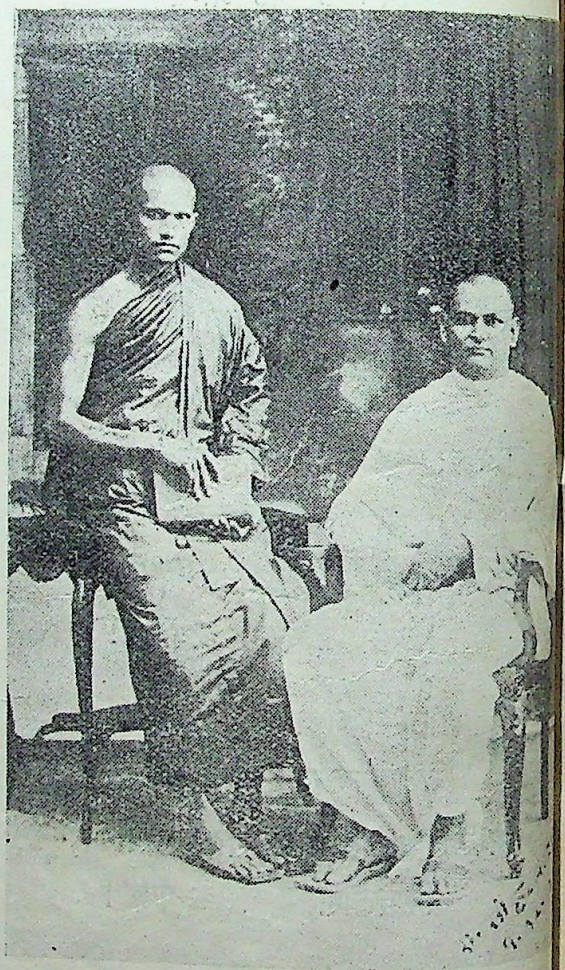

राहुल सांकृत्यायन
[अपने बौद्ध भिक्षु के वेष में]

मैंने नैपाल का रास्ता पसन्द दिया। नैपाल घुसना आसान नहीं है। वहाँ के लोग भी अंगरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजा को बहुत सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। और यही हालत भोटिया (तिब्बती) लोगों की है। इस प्रकार मैं तीन गवर्नमेंटों को धोखा देने में सफल होकर ही अपने लक्ष्य पर पहुँच सकता था। अस्तु।

यात्रा के सम्बन्ध में जानने के लिए श्रीयुत कावागूची, तथा मदाम् नील आदि की यात्रा-पुस्तकें पहले मैंने पढ़ी थीं। उनके पढ़ने से यह मुझे मालूम हो गया कि उनसे भोटिया लोगों के स्वभाव-बर्ताव के सिवा मार्ग-सम्बन्ध में कोई सहायता मुझे न मिलेगी। अन्त में भारतीय सरकार के सर्वे पुस्तक से थोड़ी भोटिया सीख ली थी। नक़शों से काठमांडू (नैपाल) से तिब्बत के जानेवाले रास्तों को मैंने लिख डाला। नक़शों तथा वैसी दूसरी सन्देह की चीज़ों को पास नहीं रखना चाहता था। सिंहल में ही मैंने ब्रिटिश सीमा पार कर नैपाल में घुसने का शिवरात्रि का समय उपयुक्त समझा था। मैं १९२३ में स्वयं इसी समय गया था, और चुपके से डेढ़ मास नैपाल में रहा भी था। मैंने देखा, अभी शिवरात्रि के तीन मास हैं। इसलिए इस समय को और किसी काम में लगाने का विचार किया। इसके लिए मैंने पश्चिमी तथा उत्तरी भारत के सभी बौद्ध ऐतिहासिक और धार्म्मिक स्थानों को देखना निश्चित किया।

कोलम्बो से चलकर सवेरे हमारी ट्रेन तलेमन्नार पहुँची। यहाँ स्टीमर है। भारत और सिंहल के बीच का समुद्र स्टीमर के लिए सिर्फ़ दो घंटे का रास्ता है। उसमें भी सिर्फ़ चंद मिनट ही ऐसे हैं जिनमें कोई तट न दिखाई देता हो। सिंहल से आनेवाली सभी चीज़ों की जाँच कस्टम अधिकारियों-द्वारा धनुष्कोडी में होती है। मैंने प्रायः पाँच मन पुस्तकें—जिनका अधिकांश त्रिपिटक और उनकी अट्ठकथायें थीं, जमा की थीं। खोलने और फिर अच्छी तरह न बन्द करने में पुस्तकों के ख़राब होने के डर से मैंने अपने सामने खोले जाने के लिए उन्हें साथ रक्खा था।

धनुष्कोडी में पुस्तकें दिखाकर मैंने उन्हें पटना रवाना किया। फिर वहाँ से रामेश्वर, मदुरा, श्रीरंगम्, पूना देखते हुए कार्ला पहुँचा। कार्ला की पहाड़ी में कटी गुफायें स्टेशन मलवाड़ी (G. I. P. R.) से प्रायः ढाई मील हैं। बराबर मोटर की सड़क है। सजीव चट्टानें काट कर ये गुफायें बनाई गई हैं।

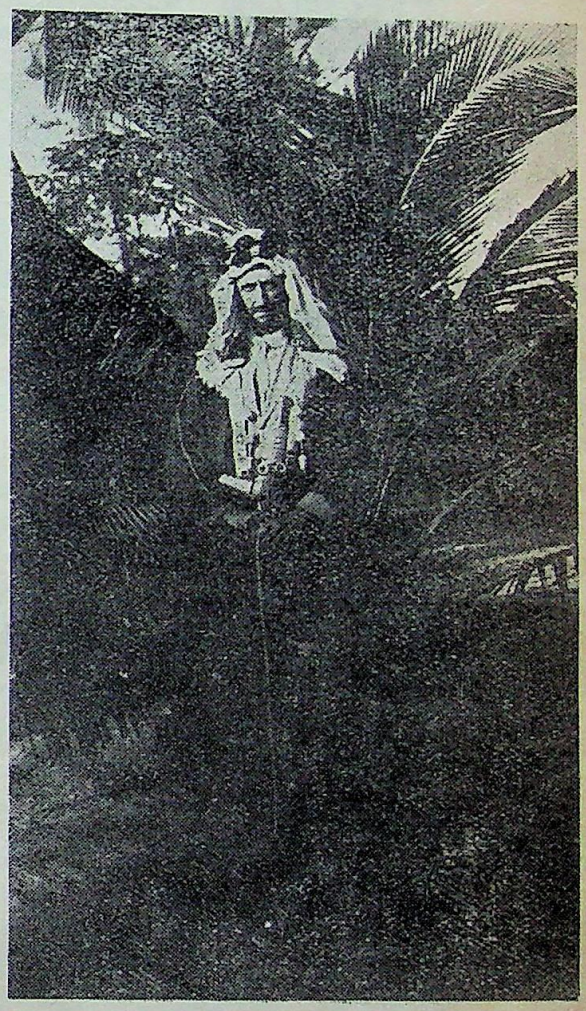

राहुल सांकृत्यायन
[अरब के वेष में]

चैत्यशाला विशाल और सुन्दर है, जिसके अन्त के छोर पर पत्थर काट कर एक बड़ा स्तूप बनाया गया है। शाला के विशाल स्तम्भों पर कहीं कहीं पर बनवानेवालों के नाम भी खुदे हैं। शाला के बग़ल में भिक्षुओं के रहने की छोटी-छोटी कोठरियाँ हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर सुन्दर जलाशय है। यह सब आधा मील से ऊपर की चढ़ाई पर है।

दिसम्बर को सिर्फ़ पांडव गुफा को देखने गया। यह शहर से प्रायः पाँच मील दूर है।

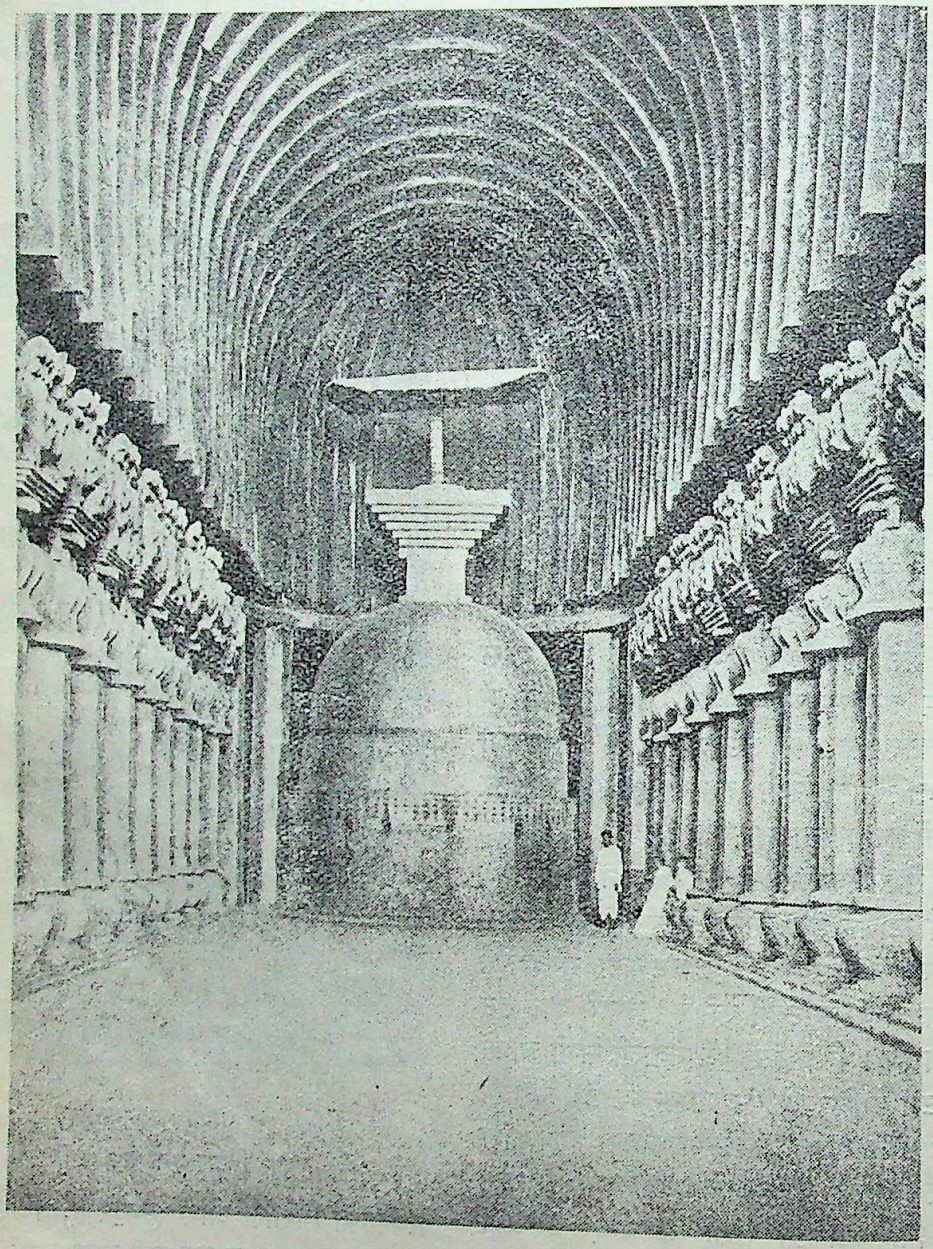

[कार्ली का गुहामन्दिर]

कार्ला से नासिक पहुँचा। नासिक के आस-पास बहुत सी लेबायें (गुहायें) हैं। सब को देखने का मुझे अवसर नहीं था। मैं १२ सड़क है, मोटर और टमटम भी सुलभ हैं। यहाँ कार्ली जितना चढ़ना नहीं पड़ता, बाईं ओर कितनी ही महायान देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। बड़ी चैत्यशाला के छोर में विशाल बुद्धप्रतिमा है। एक चैत्यशाला के चैत्य को खोदकर ब्राह्मणदेव शकराजकुमार उषवदात और उसकी कुटुम्बिनी के भी लेख हैं।

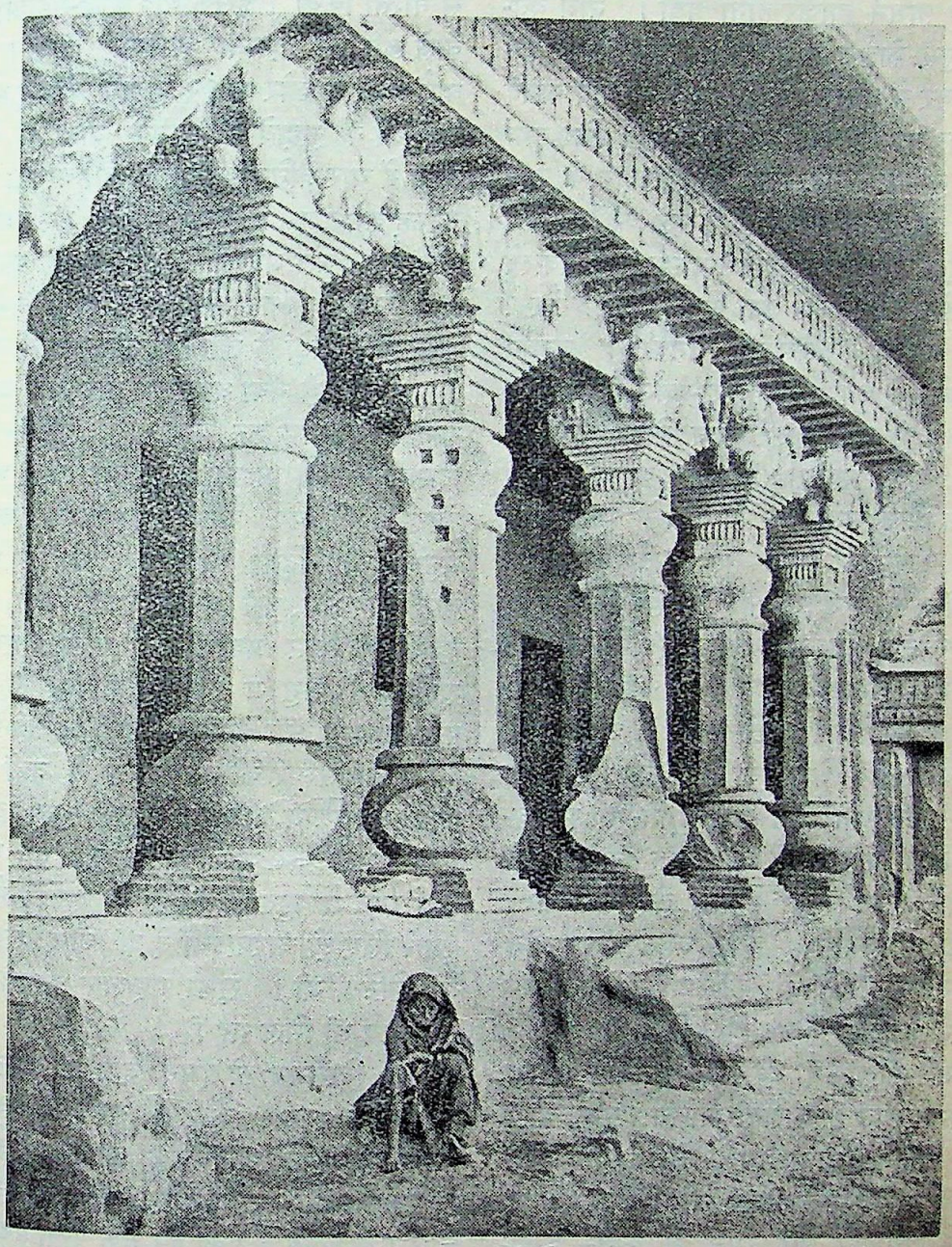

[नासिक का गुहा-मन्दिर]

को प्रतिमा भी बनाई गई है। लेखों में ब्राह्मण-भक्त

नासिक से मुझे एल्लोरा जाना था। मैं जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्त औरङ्गाबाद-स्टेशन पर उतरा, उस समय एक विचित्र अनुभव हुआ। प्लेटफ़ार्म के बाहर निकलते ही पुलिस के सामने हाज़िर होना पड़ा। नाम बतलाने में तो मुझे कोई उज्र न था। किन्तु जब अपमानजनक स्वर में पुलिस के सिपाही ने बाप आदि का नाम पूछा तब मैंने इनकार कर दिया। फिर क्या था, वहाँ से मुझे थाने में, फिर तहसीलदार के पास तक घसीट कर हैरान किया। इससे कहीं अच्छा होता, यदि हैदराबाद की नवाबी ने बाहर से आनेवालों के लिए पासपोर्ट का नियम बना दिया होता। ख़ैर! तहसीलदार साहब भलेमानस निकले। उन्होंने मद्रास के गवर्नर के आज के एल्लौरा-दर्शन का बहाना बताकर मुझे छुट्टी दी। दूसरे दिन मोटर बस पर चढ़कर प्रायः ९ बजे एल्लौरा (विरूल) पहुँचा। उसी बस पर एक और अमेरिकन भी एल्लौरा देखने आये थे। सड़क से गुफा जाते वक्त पता लगा कि वे भी मेरी ही तरह मस्त मौला हैं। सूथर महाशय 'ओहायो वेस्लेयन विश्वविद्यालय' (अमेरिका) के धर्मप्रचार-विभाग के अध्यक्ष हैं। वे अमेरिका से अंकोरवाट (कम्बोज, इण्डोचाइना) आदि की भारतीय भव्य प्राचीन विभूतियों को देखते हुए भारत आ पहुँचे थे। उन्होंने बहुत सहानुभूति-पूर्ण मानव-हृदय पाया है। एल्लौरा में कोई डाक बँगला नहीं है और न कोई दूकान। गुहा के पास ही पुलिस-चौकी है। सिपाही मुसलमान हैं और बहुत अच्छे लोग हैं। कह भर देने से यात्री की अपनी शक्ति भर सहायता करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

प्रथम हमने कैलाश-मन्दिर से ही देखना आरम्भ किया। एक विशाल शिवालय, आँगन, द्वार, कोठे, कमरे, हाथी, वाहन, नाना मूर्ति, चित्र आदि महा-पर्वतगात्र का पत्थर काट काटकर उसमें निकाले गये हैं। यह सब देख कर मेरे मित्र ने कहा—इसके सामने अंकोर वाट की गिनती नहीं की जा सकती। यह अतीत भारत की सम्पत्ति, दृढ़ मनोबल, हस्त-कौशल सभी का सजीव स्वरूप है।

कैलाश समाप्त कर कैलाश के ही चश्मे पर हम दोनों ने अपने मेहरबान सिपाही की दी हुई रोटियों से नाश्ता किया। इसके बाद बौद्ध-गुहाओं के हिस्से वाले छोर से देखना आरम्भ किया। कैलाश के बाईं ओर के छोर से १२ गुहायें बौद्ध-गुहायें हैं, फिर हिन्दुओं की गुहायें हैं, जिनके बीच में कैलाश है। अन्त में चार जैनियों की गुहायें हैं। वस्तुतः इनको गुहा न कह कर पहाड़ में उत्कीर्ण किये हुए महल समझना चाहिए। कल मद्रास के गवर्नर के आने से यहाँ ख़ूब सफ़ाई हो गई थी, इसलिए हमें चमगीदड़ों की बदबू और भिड़ों के खोतों से टकराना न पड़ा।

सूर्यास्त हो गया था। उस वक्त हम अन्तिम जैन गुहा को समाप्त कर पाये थे। लौटते वक्त हमारे दिमाग़ में कभी पहाड़ को काट कर अपनी श्रद्धा और कीर्ति को अटल करनेवाले उन सैकड़ों मनुष्यों की पीढ़ियों का ख़याल आरहा था। हिन्दू बौद्ध और जैन धर्म की विशाल कला, कृति तथा हृदयों को इस प्रकार एक पंक्ति, एक स्थान में शताब्दियों अनुपम सहिष्णुता दिखाते हुए फूलते फलते देखना क्या आश्चर्य-युक्त बात नहीं थी।

१४ दिसम्बर को हम दोनों ने वहीं पुलिस की चौकी में विश्राम किया। बस्ती कुछ दूर दूर है। यदि ये भलेमानस सिपाही न हों तो यात्रियों को यहाँ रहने में बहुत तकलीफ़ हो सकती है। उन्होंने हमारे लिए दो चारपाइयाँ दे दीं और शाम को गर्म गर्म रोटियाँ भी। सूथर महाशय भाग्यवान् थे, उन्हें गर्म चाय भी मिल गई।

१५ दिसम्बर को हमने वहाँ से दौलताबाद की ओर पैदल प्रयाण किया। रास्ते में (खुल्दाबाद में) हठधर्मी सम्राट् औरंगज़ेब की समाधि भी देखी, जिसके सामने पीर जैनुद्दीन की समाधि है। देवगिरि (दौलताबाद) का दूर तक फैला हुआ खण्डहर, ध्वंस, बीच में खड़ी अकेली पहाड़ी पर अनेक सरोवरों, दरवाज़ों, भूल-भुलइयों, पानी के चहबच्चों, मंदिरध्वंसों, मीनारों, तहख़ानों से युक्त विकट दुर्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज भी मनुष्य के चित्त में आश्चर्य पैदा किये बिना नहीं रहता। पानी का आराम तो पहाड़ी की चोटी होने लगता है। भला इनके स्वामी कैसे पराजित हो सकते थे ? लेकिन पराजित होना सत्य है।

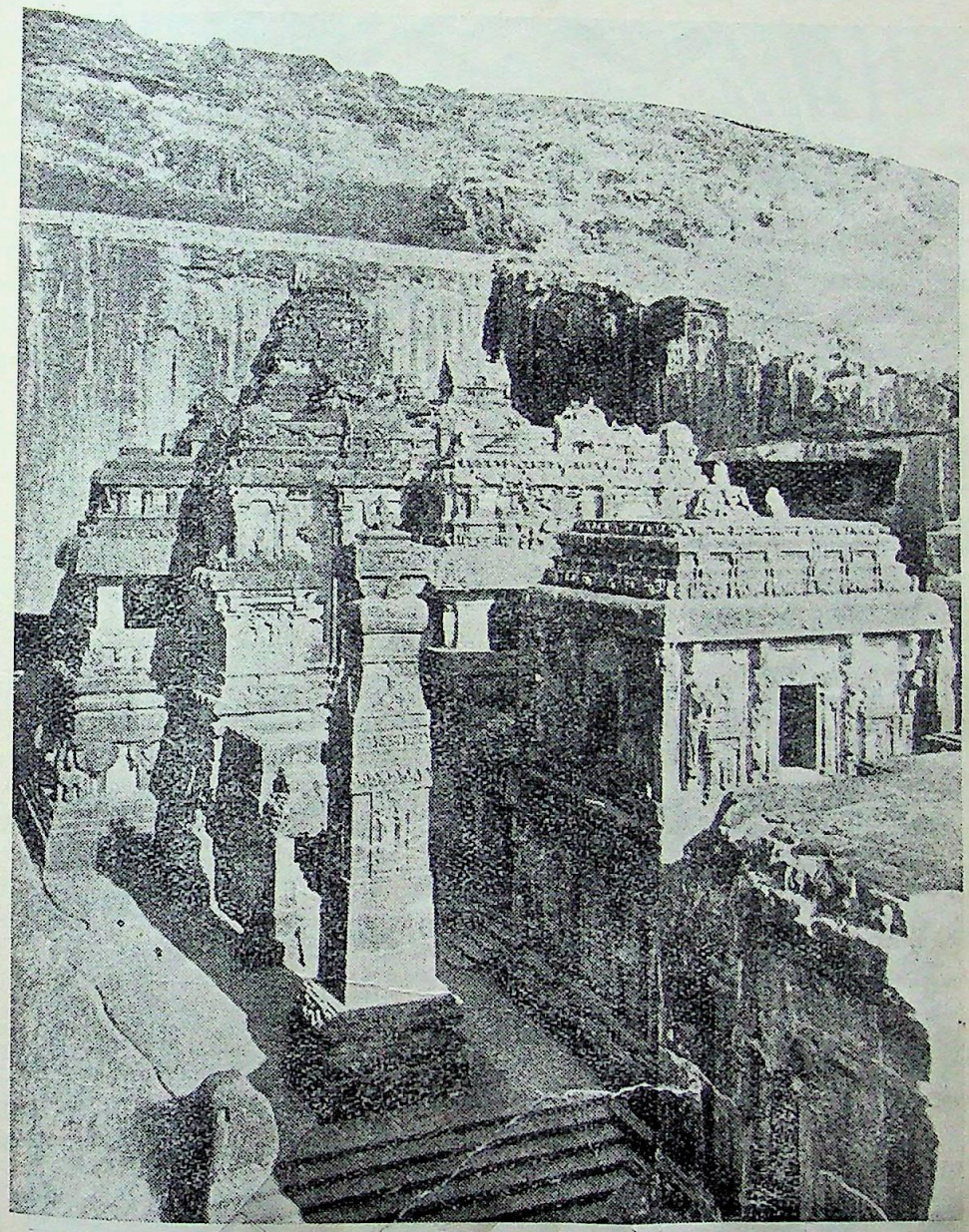

[एल्लौरा का कैलाश-मन्दिर]

के पास तक है। इन्हीं देवगिरिवासियों की ही विभूति और श्रद्धा की सजीव मूर्ति हैं उक्त कैलाश और उसके पास की गुहायें। दे[illegible] ही दिल बाग़ी

तीसरे पहर हम लोग औरङ्गाबाद आये। सूथर महाशय ने पहले ही से डाक-बँगले में इन्तिज़ाम कर लिया था, इसलिए मेरे लिए भी आसानी हुई। दूसरे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन हमें अजन्ता के लिए चल देना था, इसलिए मैं भी अपना सामान परिचित गृहस्थ के यहाँ से उठा लाया। ने बसों का ठेका दे रक्खा है, जिससे एक आदमी मनमानी कर सकता है। इस मनमानी

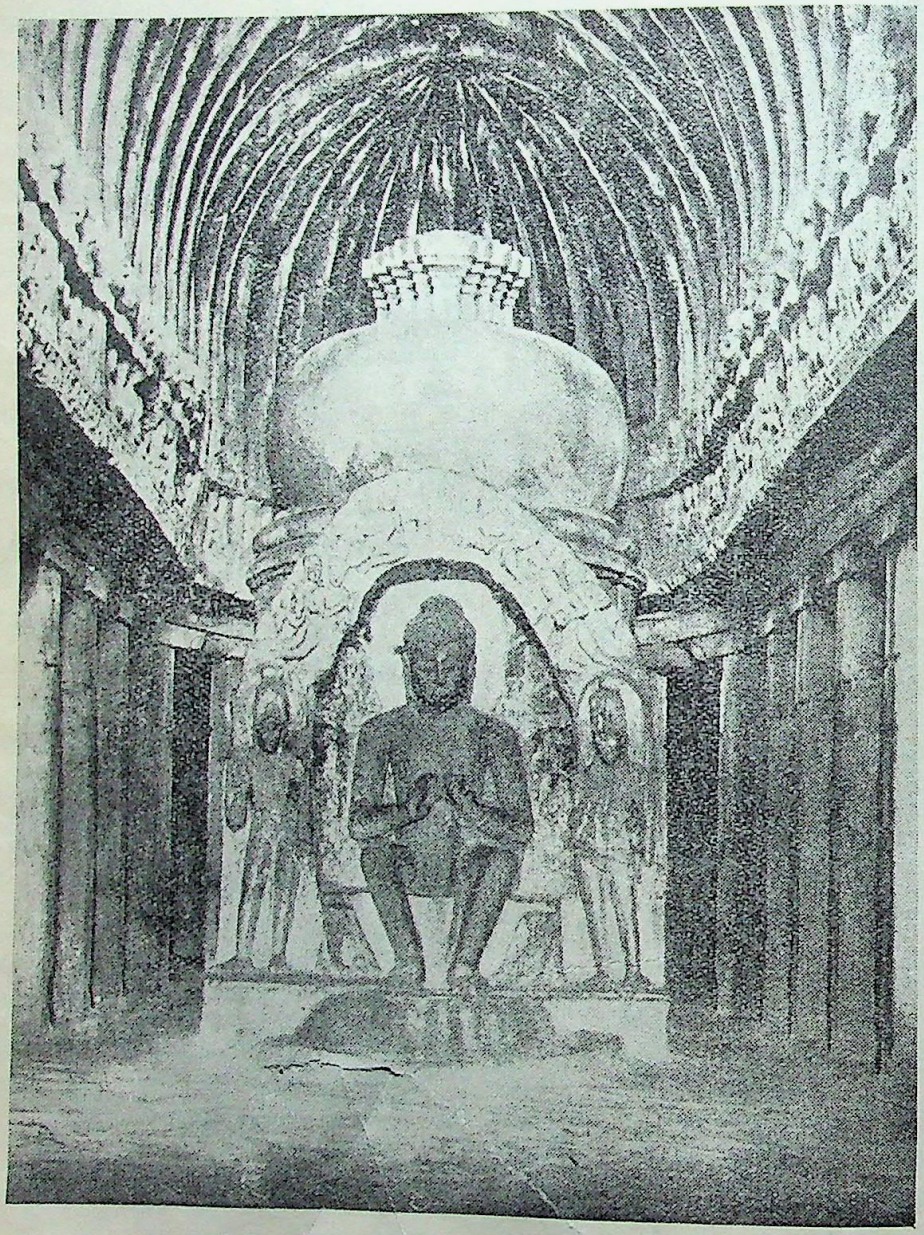

[एल्लौरा का बुद्ध-गुहा-मन्दिर]

द्वितीय परिच्छेद

सनने में आया था कि सवेरे ही फर्दापुर को बस जाती है, लेकिन वह नौ बजे चली। निज़ाम सरकार यात्री को पैसा अधिक देना और कष्ट उठाना पड़ता है। किसी तरह हम लोग एक बजे फर्दापुर के डाक-बंगले पर पहुँचे। गवर्नर साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले गये थे। निज़ाम-सरकार के अफ़सर लोग खेमे वग़ैरह बँधवा रहे थे। भोजन के बाद हम अजन्ता देखने चले। डाक-बँगले से यह प्रायः तीन मील है। बहुत दिनों से अजन्ता के दर्शन की साध थी। आज पूरी हुई। यहाँ भी गवर्नर के लिए ख़ास कर सफ़ाई हुई थी। हमने घूम घूम कर नाना समयों की बनी नाना गुहायें, सुन्दर चित्र, प्रतिमायें, शालायें, स्थान की एकान्तता, जल की समीपता, हरियाली से ढँके पहाड़ों की सुन्दरता को अतृप्त हो देखा। अभी पूरी तौर देख भी न पाये थे कि "बन्द होने का समय आ रहा है" कहा जाने लगा। किसी प्रकार अन्तिम गुहाओं को भी जल्दी जल्दी समाप्त किया।

रास्ते में लौटते वक़्त सूथर महाशय ने इन कृतियों की चर्चा के साथ वर्तमान भारत की भी कुछ चर्चा छेड़ दी। उन्होंने वर्तमान भारत के विचार और जातीय वैमनस्य की भी बात कही। मैंने कहा—विचार तो वही हैं जो एक उठती हुई जाति के लिए होने चाहिए। और यह भी निस्सन्देह है कि बाधाओं के होते हुए भी ये विचार आगे बढ़ने से रोके नहीं जा सकते। वैमनस्य हमारी बड़ी भारी निर्बलता है। जातीयता और मज़हब एक चीज़ नहीं है और न वह एक दूसरे से बदलने लायक़ चीज़ हैं। दोनों का एक दूसरे पर असर पड़ता है और वह अनुचित भी नहीं है। तो भी जब कोई मज़हब जाति के अतीत से आते हुए प्रवाह को—उसकी संस्कृति को—हटाकर स्वयं स्थान लेना चाहता है तब यह उसकी बड़ी ज़बर्दस्त धृष्टता है और यह अस्वाभाविक भी है। हिन्दुस्तान में इस्लाम ने यह ग़लती की और कितने ही ईसाई भी कर रहे हैं। सूथर महाशय ने कहा—इसे हम लोग हर्गिज़ नहीं पसन्द करते। मैंने कहा—अब छुआछूत पहले सी कहाँ है? जो है वह भी कितने दिनों की मेहमान है? क्या हिन्दुस्तानी नाम, हिन्दुस्तानी वेष, हिन्दुस्तानी

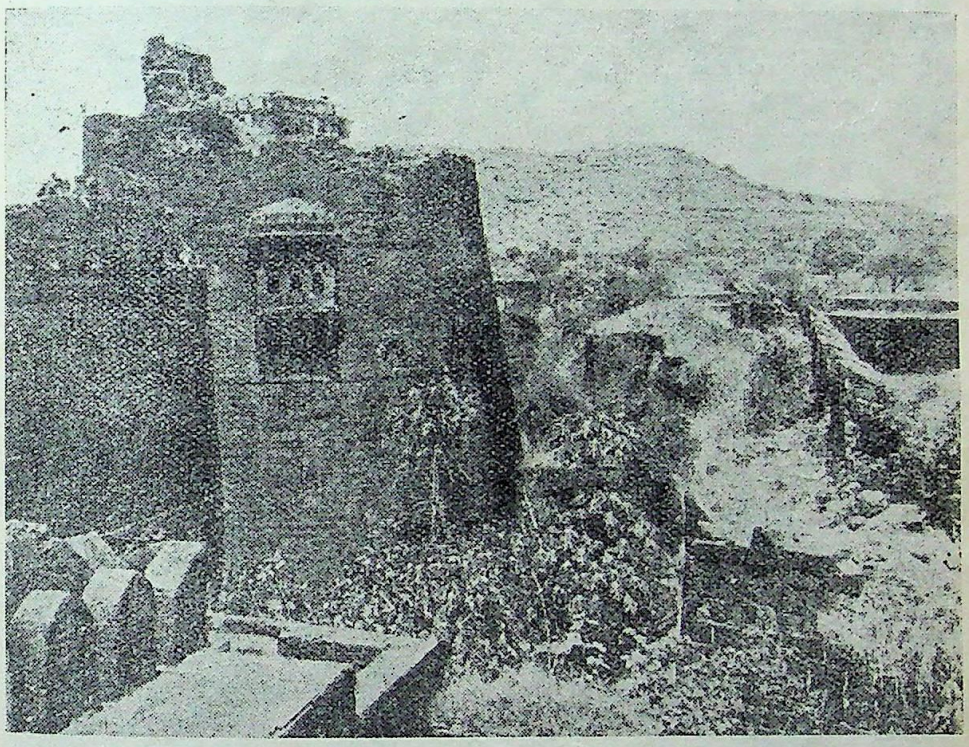

[दौलताबाद का दुर्ग]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति और हिन्दुस्तानी भाषा को रखते हुए कोई की बाँट ? मैं यह मानता हूँ कि अधिकांश अं

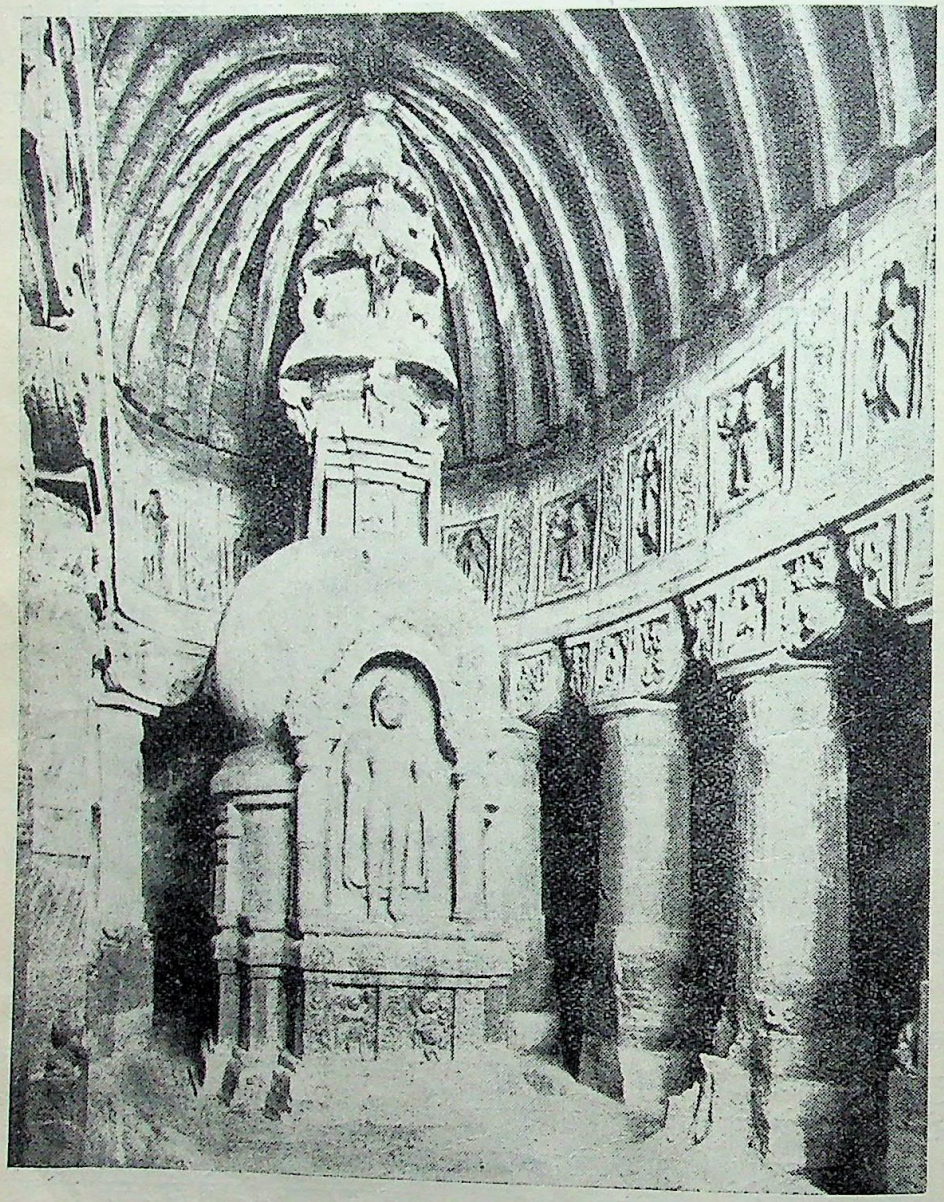

[अजन्ता का बौद्ध गुहा-मन्दिर]

सच्चा ईसाई नहीं बन सकता ? फिर क्यों इस प्रकार रिकन पादरी इसको पसन्द नहीं करते। उन्हों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा—मैं अपनी इस यात्रा में भारत में अपने मिशन-वालों से मिलते वक्त. इसकी अवश्य चर्चा करूँगा। समय दूर नहीं है, जब ये ग़लतियाँ दुरुस्त कर दी जायँगी। भारत का भविष्य उज्ज्वल है।

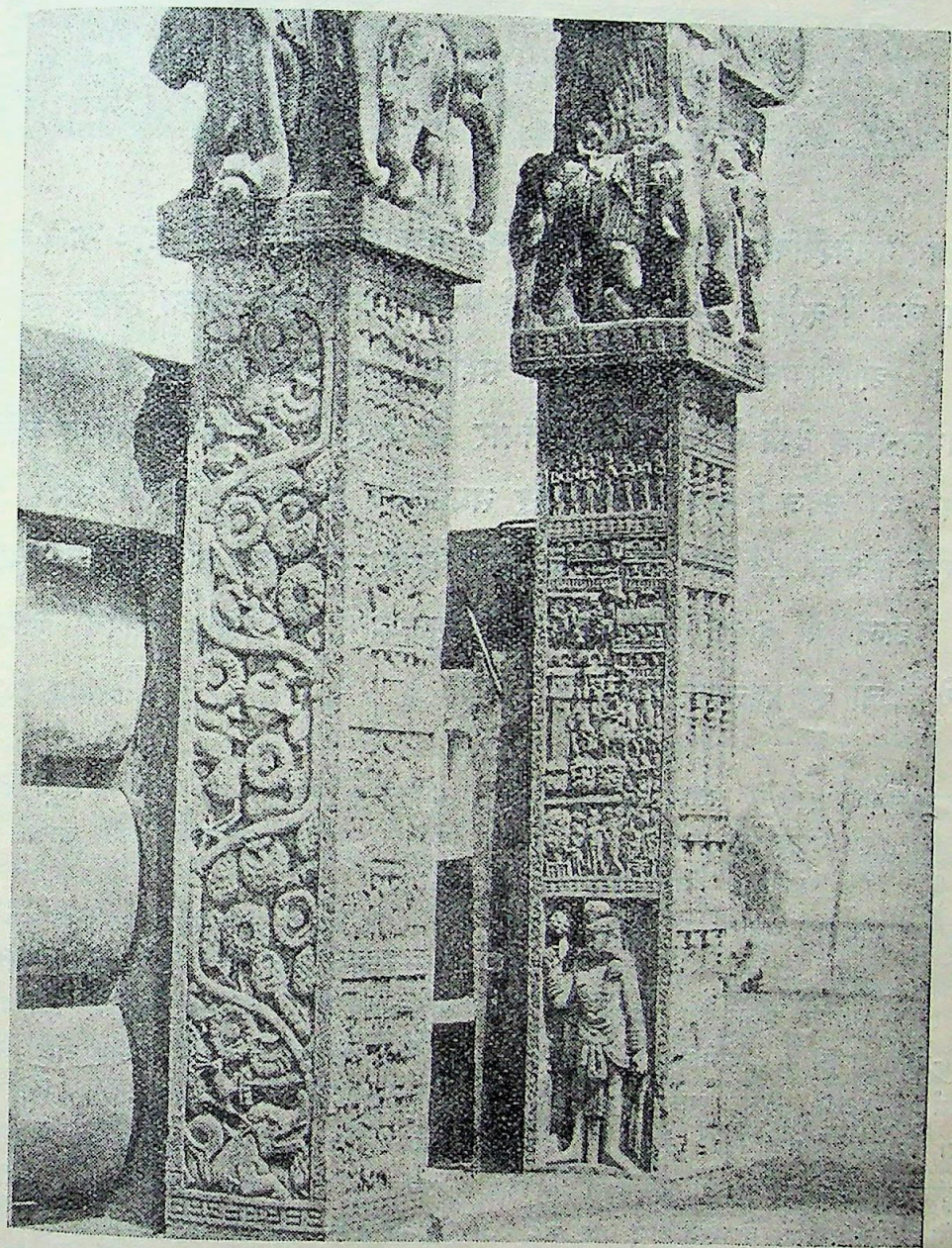

[साँची-स्तूप के पूर्व-द्वार के स्तम्भ]

मैंने कहा कि इसी तरह यदि भारतीय मुसलमान भी चाहते तो कभी यह फूट न होती। लेकिन

[क्रमशः

—राहुल सांकृत्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार का आर्थिक ह्रास

[प्रयाग-विश्वविद्यालय के अर्थ-शास्त्र के अध्यापक श्रीयुत जी० डी० कर्विल एम० ए० ने अपने इस लेख में वर्तमान युग की बढ़ती हुई संसार-व्यापी दरिद्रता की विशद रूप से आलोचना की है। आपके मतानुसार मशीनों की सहायता से संसार की उपज इतनी अधिक बढ़ गई है कि भिन्न-भिन्न देशों में जितनी चीज़ें तैयार की जाती हैं उन सबकी खपत नहीं हो पाती, साथ ही सोने की उपज में कमी होने और समान-रूप से समस्त देशों में उसका बँटवारा न होने के कारण सिक्कों की कमी हो रही है, इसके कारण भी चीज़ों की बिक्री पर ख़ासा धक्का पहुँचा है। अन्त में चलकर परिस्थिति को सुलझाने के लिए आपने कुछ उपाय भी निर्दिष्ट किये हैं, जो बड़े महत्त्व के हैं।]

वर्तमान युग में संसार को एक बहुत ही भयङ्कर दरिद्रता से ठोकर लेना पड़ रहा है। जिस किसी देश की आर्थिक अवस्था पर विचार कीजिए, सर्वत्र अन्धकार ही अन्धकार दृष्टि-गोचर होता है। फ्रांस की दशा अलबत्ता थोड़ी-बहुत अच्छी है। अमेरिका के संयुक्त-राज्य, ग्रेटब्रिटेन, जर्मनी, इटली, रूस, आस्ट्रेलिया, कनाडा, जापान तथा भारत आदि सभी देशों की आर्थिक परिस्थिति बहुत ही असन्तोषजनक हो रही है। आर्थिक उत्कर्ष के जितने साधन थे वे सब बन्द हो गये हैं। कृषि तो व्यावहारिक दृष्टि से मृतप्राय-सी हो चुकी है। सारे उद्योग-धन्धे रुक गये हैं और व्यापार को चाहे वह देशी हो या अन्तर्देशीय, बड़ा करारा धक्का पहुँचा है। बेकारों की संख्या तो इतनी बढ़ गई है कि उसे देखकर भविष्य के सम्बन्ध में बड़ी आशङ्का होती है। इस बेकारी की ही बदौलत आज लाखों घर तबाह हो रहे हैं।

यह बेकारी की दरिद्रता आज दो वर्ष से फैलती रही है और फैलते फैलते अब जाकर अपनी चरम सीमा पहुँच गई है। वर्तमान समय में इसका प्रकोप कि अधिक हो गया है, यह बात ठीक ठीक समझाने के यहाँ हम भिन्न भिन्न व्यापार-प्रधान देशों में उत्पन्न वाली वस्तुओं की एक तालिका प्रकाशित कर रहे हैं। तालिका में यह बात प्रदर्शित करने की चेष्टा की है कि १९२४ ईसवी में जिस मात्रा में माल की होती थी उसकी अपेक्षा आज-कल उसमें प्रतिशत कितनी कमी हुई है। इस तालिका के बाद देशों के बेकारों का भी विवरण प्रकाशित गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्दर्शीय उपज की तालिका

१९२४ = १००

	संयुक्त-राज्य अमेरिका	कनाडा	फ्रांस	जर्मनी	ग्रेट ब्रिटेन
	फ़ेडरल रिज़र्व बोर्ड	मंथली रिव्यू आफ़ बिज़ीनेस स्टेटिस्टिक्स	स्टेटिस्टिक जेनेरिले	इंस्टीट्यूट फ़र कंजंक्चर फ़ोर्सचंग	लंदन एंड कम्ब्रिज इकानमिक सर्वे
१९२९ जून त्रैमासिक औसत	१३०·२	१६८·३	१२८·१	१५८·०	१११·०
१९२९ जुलाई	१३०·५	१६५·२	१२७·०	१५१·७	... ...
१९३० मार्च त्रैमासिक औसत	१०९·८	१४८·८	१३१·९	१३६·२	१०९·६
१९३० जून त्रैमासिक औसत	१०८·४	१५०·३	१३२·२	१३१·५	१००·९
१९३० जुलाई	१००·०	१३८·५	१२९·३	१२२·५	... ...
१९३० सितम्बर त्रैमासिक औ०	... ...	... ...	... ...	... ...	८९·८

इस तालिका से स्पष्ट है कि संयुक्त-राज्य (अमेरिका), जर्मनी और कनाडा आदि की औद्योगिक क्रियाशीलता अपनी चरम सीमा को १९२९ के मध्य-भाग में पहुँची थी। उसके बाद से वह गिरने लगी है। इँग्लेंड में यह क्रियाशीलता सर्वोच्च सीमा को १९२९ के अन्त तक पहुँच पाई थी और तभी से वहाँ भी यह उत्तरोत्तर गिरती आ रही है। परन्तु आस-पास के देशों में इतने तीव्र वेग से ह्रास होने पर भी फ्रांस की उपज बढ़ती ही जा रही है।

भिन्न भिन्न देशों में बेकारों की संख्या क़रीब क़रीब इस प्रकार है—ग्रेट-ब्रिटेन—२०,००,०००; संयुक्तराज्य (अमेरिका) ६०,००,०००; जर्मनी—२६,००,०००; पोलेंड १,२०,०००, से ३,६०,००० तक; रूस ३०,००,०००; और फ्रांस—९१३।

(२)

सारे संसार में इस प्रकार भयङ्कर दरिद्रता के फैल जाने के क्या कारण हैं ?

हर एक युग में समय समय पर दरिद्रता का प्रकोप होता आया है। परन्तु औद्योगिक क्रान्ति के बाद से इस दरिद्रता का आविर्भाव अधिक जल्दी जल्दी होने लगा है और इसका प्रभाव भी पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक और क्लेशकर होता है। अतएव यदि गम्भीरता-पूर्वक विचार किया जाय तो वर्तमान युग की औद्योगिक पद्धति में ही कुछ ऐसे दोष दृष्टिगोचर होंगे जो इस दरिद्रता के मुख्य कारण हैं। इस पद्धति का आविर्भाव अठारहवीं सदी के मध्य-भाग में हुआ है और यह पूँजीवादी पद्धति कहलाती है। इस पद्धति में दो ऐसे दोष हैं जिनके कारण दरिद्रता का आविर्भाव विशेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप से होता है। उनमें से एक तो यह है कि यह पद्धति ऐसे सिद्धान्त पर अवलम्बित है जो मशीनों की सहायता से अधिक मात्रा में माल तैयार करने का पक्षपाती है। परन्तु माल का अधिक मात्रा में तैयार होना, वह माल किसी तरह का भी हो कच्चे माल की ही उपज पर निर्भर है। यदि कच्चा माल न रह जाय तो माल का तैयार होना भी बन्द हो जायगा। दूसरी बात यह है कि यदि खपत अधिक न हुई तो माल अधिकता से तैयार भी नहीं किया जा सकता। खपत के लिए बड़े बड़े बाज़ारों का खुला रहना आवश्यक है। ये बाज़ार समस्त भूमण्डल में फैले हुए हैं।

ये दोनों ही बातें समय और दूरी के अनुसार लागू होती हैं। समय के अन्तर का तात्पर्य है उन समयों के अन्तर से जब कच्चा माल अधिक मात्रा में पैदा होता है और जब कारख़ानों में तैयार होकर माल बिक्री के लिए बाज़ार में भेजा जाता है। इसी तरह दूरी का तात्पर्य है उन स्थानों की दूरी से, जहाँ माल तैयार होता है और जहाँ बिकने के लिए जाता है। यह अन्तर माल तैयार करनेवालों को अपने माल—कच्चा या तैयार माल—की माँग का हिसाब लगाते समय बड़े झमेले में डाल देता है, जिसके कारण वे खपत का ठीक ठीक अन्दाज़ा नहीं लगा पाते। इससे वे आवश्यकता से कहीं अधिक माल तैयार कर लेते हैं। तब चीज़ों का भाव गिर जाता है। परिणाम यह होता है कि जिस दर से वे चीज़ें बेचनी पड़ती हैं उससे किसी तरह का लाभ नहीं हो पाता। तब माल इकट्ठा होने लगता है और उसकी तैयारी या तो कुछ समय के लिए बन्द कर दी जाती है या कम कर दी जाती है। इससे बहुत से मज़दूर बेकार हो जाते हैं। या यों कहिए कि दरिद्रता आजाती है। अधिक उपज के साथ ही साथ यदि रुपये की आमद भी कम होती जाय और माल की खपत भी घटती जाय तब तो सचमुच यह दरिद्रता बहुत ही भयङ्कर हो जाय। क्योंकि इस प्रकार माल की आमद और खपत की असङ्गति बहुत ही ज़ोरदार हो जाती है।

औद्योगिक क्रान्ति के बाद से जितनी बार दरिद्रता का प्रकोप हुआ है उनमें से अधिकांश बार माल की अत्यधिक उपज के ही कारण हुआ है। वर्तमान समय की दरिद्रता तो पहले की अपेक्षा कहीं अधिक अनुचित उपज के कारण हुई है। परन्तु उपज और खपत में ऐसी अव्यवस्था किस प्रकार हुई? इस अव्यवस्था के तीन कारण हैं और तीनों ही इसके लिए समान रूप से उत्तरदायी हैं। वे कारण हैं—(१) माल की अधिक उपज (२) व्यापार और उद्योग-धन्धों को बढ़ाने के प्रधान साधन अर्थात् मुद्रा के उपकरण की न्यूनता (३) और माल की खपत में कमी। आइए अब इन तीनों के सम्बन्ध में एक एक करके विचार करें।

(१) अधिक उपज—यह तो निश्चितरूप से स्वीकृत हो चुका है कि वर्तमान युग में संसार में माल आवश्यकता से अधिक उत्पन्न हुआ है। जून १९३० ईसवी में लीग आफ नेशंस के अर्थ-विभाग ने एक मेमोरंडम प्रकाशित किया है। उसके अनुसार संसार में खाद्य-पदार्थों और कच्चे माल की उपज में १९१३ से लेकर १९२९ ईसवी तक २५ प्रति सैकड़ा की वृद्धि हुई है। उसमें से १६ प्रति सैकड़ा की वृद्धि खाद्य-पदार्थों में हुई है और ४० प्रति सैकड़ा की वृद्धि हुई है कच्चे माल में। १९२६ ईसवी में संसार की उपज के सम्बन्ध में एक विवरण तैयार किया गया था। उसी के अनुसार एक विवरण १९२८ ईसवी में भी तैयार किया गया। इस बार उपज में पहले की अपेक्षा ८ प्रति सैकड़ा की वृद्धि हुई। उसमें से खाद्य-पदार्थों की वृद्धि का हिसाब तो वही रहा और कच्चे माल की वृद्धि ९ प्रति सैकड़ा की हुई। औद्योगिक उपज के सम्बन्ध में विचार करने पर ज्ञात हुआ है कि अमेरिका के संयुक्त राज्यों में ५४ प्रति सैकड़ा, फ्रांस में ३० प्रति सैकड़ा, जर्मनी में २२ प्रति सैकड़ा, पोलेंड में ३८ प्रति सैकड़ा, स्वीडन में २७ प्रति सैकड़ा, स्विट्ज़रलेंड में ११ प्रति सैकड़ा, ग्रेट-ब्रिटेन में १२ प्रति सैकड़ा और रूस में १४० प्रति सैकड़ा की वृद्धि हुई है।

उपर्युक्त आँकड़ों से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि संसार की उपज में आवश्यकता से कहीं अधिक वृद्धि हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। संसार वृद्धि की ओर युद्ध के बाद से ही अग्रसर हो रहा था, और इस वृद्धि के बहुत से कारण भी आते गये जिनसे प्रभावित होकर यह प्रगति उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई।

जब युद्ध समाप्त हुआ था, संसार में माल की उपज बहुत ही घट गई थी, इससे लोगों को बड़ा क्लेश था। योरप में पहले जितना माल तैयार होता था, वह युद्ध के दिनों में वास्तव में बन्द सा होगया था, क्योंकि उसके सारे साधन और शक्तियाँ उक्त राजनैतिक डावाँडोल को सँभालने के लिए आवश्यक सामग्रियाँ संग्रहीत करने में ही लगी थीं, इससे चीज़ों का भाव बहुत बढ़ गया था और माल अधिक मात्रा में तैयार करने की बड़ी आवश्यकता थी। दूसरी बात यह थी कि युद्ध में लगे रहने के कारण इँग्लेंड, जर्मनी आदि देश अपने अपने बाज़ार बहुत कुछ खो चुके थे। वे बाज़ार अमेरिका आदि दूसरे देशों के हाथ में जा चुके थे। अतएव उन देशों का अपने खोये हुए बाज़ार फिर क़ब्ज़े में करने के लिए लालायित होना स्वाभाविक था। साथ ही जिसकी मुट्ठी में जो बाज़ार आ चुका था उसे वह किसी तरह निकलने भी नहीं देता था। ऐसी दशा में परस्पर एक दूसरे के साथ उपज में प्रतियोगिता करना आवश्यक था। तीसरी बात यह है कि वर्तमान युग में कृषि-प्रधान देशों ने उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन देने का निश्चय कर लिया है और इस दिशा में वे उत्साह से काम भी कर रहे हैं। कारण यह है कि युद्ध-काल में उन्हें प्रायः अपनी देशी चीज़ों के ही बल पर निर्वाह करना पड़ा है, और उन लोगों ने कुछ उद्योग-धन्धों की नींव भी डाल ली है, अतएव वे अब उसे नष्ट नहीं करना चाहते। बल्कि दूसरों को भी प्रोत्साहित करना चाहते हैं। अन्तिम बात यह है कि रूस को भी लाखों की संख्या के अपने प्रजाजनों की अपने बोल्शेविक शासन में भोजन-वस्त्र की समस्या हल करनी थी। साथ ही अपने आर्थिक पुनरुज्जीवन के लिए उसे पूँजी भी इकट्ठी करनी थी। उपज बढ़ाये बिना यह सम्भव नहीं था।

इन परिस्थितियों ने मिलकर चारों ओर उत्पादक क्रियाशीलता पर बड़े ज़ोर का नशा सा पैदा कर दिया और हर एक देश उपज बढ़ाने के पीछे मानो पागल हो गया। कृषि-सम्बन्धी अर्थात् खाद्य पदार्थ और कच्चे माल की उपज बढ़ाने में कृषकों को गत दस वर्ष के अच्छे मौसिम और फ़सल से बहुत ही सहायता मिल गई। गेहूँ, चीनी, रुई, रबर और सन-सुतली आदि बहुत ही अधिक मात्रा में उत्पन्न हो गये। रही बात औद्योगिक उपज की, सो कृत्रिम उपायों से उसमें भी बहुत कुछ प्रोत्साहन दिया गया। जो देश अपने उद्योग-धन्धों को उन्नत बनाना चाहते थे उन्होंने माल की दर बढ़ा दी थी और उस पर कड़े कड़े प्रतिबन्ध भी लगा दिये थे। साथ ही उस दर को युक्तिसङ्गत रूप भी दे दिया था। परन्तु युद्ध के बाद से जिस उद्योग का श्रीगणेश हुआ था और कृषि तथा उद्योग-धन्धों की उन्नति के लिए जो स्कीम बनाई गई थी उसके द्वारा उन्नतिशील देशों की प्रगति १९२५ ईसवी तक अर्थात् इन पाँच वर्षों में बहुत ही बढ़ गई। यही स्कीम आक्टोबर सन् १९२५ ईसवी में रूस में भी प्रचलित हुई थी। आस्ट्रेलिया, कनाडा तथा मध्य-योरप के राज्यों ने ऊँची दर का आश्रय लिया था। मध्य-योरप के राज्य पहले आर्थिक दृष्टि से आस्ट्रिया हंगरी के साम्राज्य में मिलकर एकाकार थे, किन्तु अब ये भिन्न भिन्न राज्यों के समूह भर रह गये हैं। अपने यहाँ यदि वे किसी प्रकार माल तैयार करते हैं तो कर का बन्धन होने के कारण उन्हें महँगा पड़ता है। परन्तु वही चीज़ यदि वे अपने पड़ोस के किसी दूसरे देश से जिसके उद्योग-धन्धे चालू हैं, ख़रीद लेते हैं तो सस्ते में रहते हैं। उन्नत पद्धतियों तथा मशीनों का उपयोग करके अधिक मात्रा में माल तैयार करने के सिद्धान्त पर उद्योग-धन्धों का पुनः संगठन विशेष-रूप से अमेरिका के संयुक्त राज्यों में हुआ है और बहुत-सी चीज़ें तैयार करने में इँग्लेंड तथा जर्मनी ने भी इस नीति का अवलम्बन किया है। संगठन का यह नवीन ढंग अधिक लाभप्रद और व्यापक समझा गया था। इस प्रबन्ध के कारण उपज में आशातीत वृद्धि हुई। रूस सरकार ने भी जो अपनी 'पाँच वर्ष की स्कीम' बनाई थी, उसमें उपज को सर्वोच्च सीमा तक बढ़ाने का विधान था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस में उपज की वृद्धि कितनी अधिकता से हो रही है, इसका विवरण हम पीछे दे आये हैं। इससे स्पष्ट है कि यह स्कीम सफल हो रही है। रूस में जो माल तैयार किया जा रहा है उसके कारण योरप के कुछ बाज़ार मद्दे हो रहे हैं, साथ ही कुछ देश भयभीत भी हो रहे हैं। एक लेखक का मत है कि रूस का माल कई देशों में पहुँच रहा है, साथ ही उपज और मज़दूरी की दर पर भी रूस की सरकार का ही आधिपत्य हो रहा है। सम्भव है कि साम्यवादी-सरकार अन्य देशों के मज़दूरों को सस्ती दर पर ही अपने यहाँ बुला ले।

(२) मुद्रा के उपकरण में न्यूनता—संसार की उपज अधिक बढ़ जाने पर उसके विनिमय के लिए मुद्रा की आवश्यकता बढ़ गई। परन्तु उसे बनाने के लिए आवश्यकतानुसार सुवर्ण नहीं उपलब्ध होता। इसका कुछ कारण तो यह है कि संसार में सोने की उपज कम हो गई है। परन्तु भिन्न-भिन्न देशों में सोने का विभाग अनुचितरूप से होता है या यों कहिए कि यह कुछ ही देशों में केन्द्रित हो जाता है, ज़्यादातर इसी लिए सोने का अभाव-सा प्रतीत होता है। यही कारण है कि उपज के साथ ही साथ मुद्रा की वृद्धि नहीं हो सकी। १९१२ ईसवी में दो करोड़ तीस लाख औंस सोना खान से निकाला गया था, जिसका मूल्य ४६,७०,००,०००० डालर था। परन्तु सन् १९२९ में केवल दो ही करोड़ औंस निकाला जा सका जिसका मूल्य ४०,७०,००,०००० डालर है। कुछ देश बहुत सा सोना अपने कोश में भर लेते हैं और उसमें हाथ तक नहीं लगाते। वह भी इतनी मात्रा में भर रखते हैं, जो अन्य देशों की अपेक्षा कहीं अधिक होता है, साथ ही उनकी उचित आवश्यकता से भी कहीं अधिक होता है। इस प्रकार का ही विभाग अनुचित विभाग है। इसका अर्थ यह है कि ऐसे देशों में बहुत सा सोना जो वास्तव में उनकी उचित आवश्यकता से अधिक है, व्यर्थ में पड़ा रहता है, न तो वह मुद्रा बनाने के काम आता है और न लेन-देन में ही उससे सहायता मिलती है। संयुक्त-राज्य, फ़्रांस और आरजंटाइन आदि में १९२९ ईसवी के अन्त तक रक्षित क्रमशः ८,०२,००,००,०००; ३,३६,००,००,००० और ९१,००,००,००० पौंड हो गया था, जो वहाँ की जनसंख्या के अनुसार एक आदमी के पीछे क्रमशः ६·६ पौंड, ८·० पौंड और ८·३ पौंड के हिसाब से पड़ता है। ग्रेट-ब्रिटेन और जर्मनी में क्रमशः १४६०००,००,०० और ११२ पौंड सोना जो प्रति आदमी के पीछे क्रमशः ३·२ पौंड और १·७ पौंड के हिसाब से पड़ता है। इस विषय की आलोचना करते हुए मुद्रा-शास्त्र के विशेषज्ञ श्रीयुत सर हेनरी स्टाम्प ने लिखा है—उपर्युक्त विवरण से प्रकट है कि ग्रेट-ब्रिटेन में उसकी जनसंख्या के अनुसार हर आदमी के पीछे ३·३ पौंड रक्षित सुवर्ण पड़ता है और संयुक्त राज्य में ६·७ पौंड तथा फ़्रांस में ६·१ पौंड १९२८ ईसवी में था और ८·० प्रतिपौंड १९२९ में ...संयुक्त-राज्य (अमेरिका) की जनसंख्या के अनुसार उसका रक्षित सुवर्ण मोटे तौर से ग्रेट-ब्रिटेन की अपेक्षा प्रतिसैकड़ा अधिक है। ठीक इसी तरह फ़्रांस का रक्षित सुवर्ण ग्रेट-ब्रिटेन की अपेक्षा सन् १९२८ ईसवी में ८५ प्रतिसैकड़ा और सन् १९२९ ईसवी में १४० प्रतिसैकड़ा अधिक है। आरजंटाइन में सुरक्षित सोने का औसत लगभग ९·४ है.....जो उसकी उचित आवश्यकता से कहीं अधिक है। अतएव यह सब सोना संयुक्त अमेरिका, अरजंटाइन और सन् १९२८ ईसवी के आरम्भ में फ़्रांस में अधिकता से सुरक्षित रक्खा जा रहा है। यह मुद्रा बनाने के काम नहीं आरहा है, क्योंकि ये देश इस सुरक्षित सोने को लेन-देन की सुविधा के लिए मुद्रा की अधिकता से निर्माण करके लेन-देन में उपयोग करने की आज्ञा नहीं देते। यही सोना यदि दूसरे देशों में जिनकी लेन-देन की पद्धति उनके समान ही उच्च अवस्था में पहुँच जाय तो इसके द्वारा लेन-देन और व्यापार की सुविधा बढ़ जाय।

कुछ देश विशेषतः अमेरिका और फ़्रांस जो इस मात्रा में सोना जमा कर रखते हैं उसके कारण दूसरों को काफ़ी सोना नहीं मिल सकता जिससे उपज के अनुसार वे मुद्रा भी अधिकता से बना सकें। इस प्रकार सोने की बहुत ज़्यादा कमी हो गई है। सर हेनरी के हिसाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

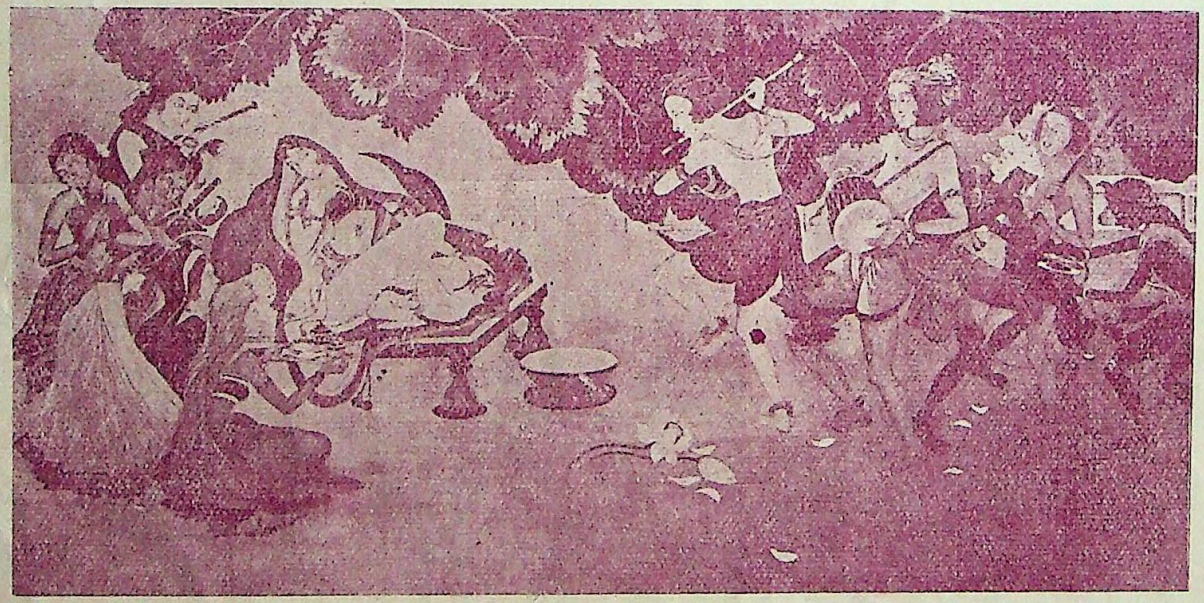

कृष्ण-लीला

[चित्रकार—श्रीयुत असितकुमार हल्दार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कमी आवश्यकता से शत प्रतिसैकड़ा से भी अधिक है। उनका कथन है कि सन् १९२९ ईसवी में मुद्रा बनाने के लिए जो नया सोना उपलब्ध हुआ था वह सब तो संयुक्त-राज्य (अमेरिका) और फ्रांस दाब ही बैठे, साथ ही कुछ दूसरे देशों के, जहाँ सोने के सिक्कों का चलन है रक्षित सोने में से भी १,४०,००,००० पौंड तक का सोना घटा देने का प्रबन्ध कर लिया। इस प्रकार इन दोनों देशों ने मिल कर ११,००,००,००० पौंड का सोना निष्फल कर दिया। इस कारण संसार के वे देश, जहाँ सोने के सिक्कों का चलन है मुद्रा की वृद्धि से वञ्चित रह गये। परन्तु उपज बढ़ जाने के कारण उसके विनिमय के लिए मुद्रा की उन्हें बहुत ही आवश्यकता थी।

इसी तरह के विचार स्वीडन के प्रोफ़ेसर गस्ताव कैसेल ने भी निम्नलिखित शब्दों में प्रकट किये हैं। आपका मत है—यह बात विशेषरूप से ध्यान देने की है कि फ्रांस के बैंक ने नियमित रूप से सोने का ख़ासा ढेर प्राप्त कर लिया है, जिसकी उसे कोई विशेष आवश्यकता नहीं थी। इस बात पर ज़रा भी विचार नहीं किया गया कि इतना अधिक सोना केवल फ्रांस में ही भर रखने से संसार के अन्य देशों के हिस्से में बहुत कमी पड़ेगी और संसार की आर्थिक अवस्था पर इसका बड़ा गहरा प्रभाव पड़ेगा।

(३) खपत की कमी—माल की उपज बहुत बढ़ जाने और उसके विनिमय के लिए सोने की कमी होने के कारण चीज़ों का भाव बहुत गिर गया है। यह भाव १९२५ ईसवी से गिरता चला आ रहा है, परन्तु १९२९ ईसवी में बहुत ही गिर गया। इसके कारण चारों ओर हाहाकार मच रहा है। लंदन में थोक बिक्री का जो भाव सन् १९१३ ईसवी में था उसके अनुसार १९२४ ईसवी में १६६·२, १९२५ में १६०·०, १९२६ में १४९·४, १९२७ में १४३·७, १९२८ में १४०·९, १९२९ में १३२·८, और गत सितम्बर में १०५·२ था। चीज़ों का भाव इस तरह गिर जाना ही उत्पन्न की हुई सम्पत्ति की खपत में कमी होने का मुख्य कारण है। संसार की आबादी में कृषकों की ही अधिकता है और उन्हीं पर इस सस्ती का प्रभाव भी अधिक पड़ा है, क्योंकि कल-कारख़ानों और कारीगरी से बनी हुई चीज़ों की अपेक्षा खेती से उत्पन्न हुई चीज़ों का भाव अधिक गिर गया है। इसलिए पैसे के तंगी के कारण वे लोग या तो चीज़ों का ख़रीदना बिलकुल बंद करते जा रहे हैं या बहुत कम करते जा रहे हैं। परन्तु उन लोगों की ख़रीद में कमी का व्यापारियों या उद्योग-धंधेवालों की आय पर बुरा प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। इसलिए इन चीज़ों की बिक्री घट जाना भी स्वाभाविक है। कुछ देशों में राजनैतिक तथा आर्थिक गड़बड़ का होना खपत की कमी का दूसरा कारण है। सन् १९२९ ईसवी में स्टाक और एक्सचेंज की दर में जो क्षणिक सिद्धान्त स्थिर किये हैं उनके कारण हज़ारों आदमी बिगड़ गये। जिन लोगों को घाटा हुआ उन्होंने बाध्य होकर ऐश-आराम की चीज़ें ख़रीदनी कम कर दीं। वे लोग ऐसी ही चीज़ें ख़रीदने लगे जिनके बिना निर्वाह होना सम्भव नहीं था। ब्रेज़िल में राजनैतिक क्रान्ति मची थी, और चीन तथा भारत में क्रमशः गृह-युद्ध और सत्याग्रह-आन्दोलन चल रहा है। इन तीनों ही आन्दोलनों का प्रभाव संसार की आधी जन-संख्या पर पड़ रहा है। ब्रेज़िल तथा चीन नई चीज़ें ख़रीदने का विचार ही नहीं कर सकते और भारत ने अपनी इच्छा से ही कुछ दिनों के लिए यह ख़रीद सर्वथा बंद कर दी है। इस प्रकार पहले उद्योग-धन्धों को युक्ति-संगत मार्ग पर लाकर मशीनों के द्वारा उन्नत ढङ्ग से उपज बढ़ाने का जो प्रयत्न किया गया था उसी का यह प्रभाव है कि आज कितने ही मज़दूर बेकार हो गये हैं। उनसे अब यह आशा नहीं की जा सकती कि वे अपनी बचत का थोड़ा बहुत पैसा भी अनावश्यक चीज़ों के ख़रीदने में व्यय करेंगे।

संसार की इस बढ़ती हुई दरिद्रता का पहला कारण तो माल की अधिक उपज है, दूसरा कारण सोने की न्यूनता है और तीसरा कारण खपत की कमी है। इन तीनों कारणों ने ही मिल कर संसार की उपज और खपत में एक बहुत ही भयङ्कर असामञ्जस्य पैदा कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाम बहुत ही गिर गया है, बाज़ारों में माल भरा पड़ा है, बहुत से कल-कारख़ाने बंद हो गये हैं, व्यापार गिर गया है, और दिन दिन गिरता ही जा रहा है। लाखों आदमी बेकार हैं। तो क्या तब तक संसार को हाथ पर हाथ रख कर बैठा रहना चाहिए और इस दरिद्रता को शीघ्रातिशीघ्र दूर करने का प्रयत्न न करना चाहिए? अवश्य करना चाहिए। परन्तु इसके लिए ऐसे उपाय का अवलम्बन न करना चाहिए जिससे संसार की प्रगति में बाधा पड़ने की सम्भावना हो। अमरीका और कनाडा में प्रगति को रोकने के लिए विशेषरूप से प्रयत्न किये गये हैं, किन्तु उनका परिणाम उलटा ही हुआ है। इन देशों के बाज़ारों में गेहूँ अधिक मात्रा में नहीं आने पाता था। कनाडा में गेहूँ की बिक्री ही रोक दी गई थी और अमरीका में एक फ़ेडरल फ़ार्म बोर्ड बनाया गया था, जिसने गेहूँ की बहुत ज़्यादा ख़रीद की थी। इन देशों का विचार था कि भाव चढ़ने पर सारा स्टाक बेच दिया जायगा। परन्तु अन्त में दोनों ही अपने अपने प्रयत्न में असफल रहे। कारण यह था कि बिक्री न होने के कारण गेहूँ की खेती कम करने का जो विचार लोगों के हृदय में उत्पन्न हो रहा था वह जाता रहा। इस तरह का कोई भी प्रयत्न जिस किसी भी देश में किया जायगा वह असफल हुए बिना न रहेगा।

दरिद्रता को दूर करने के लिए तो ऐसे उपायों का अवलम्बन करना आवश्यक है जिनके द्वारा उपज और खपत का अन्तर कम हो जाय। निम्नलिखित उपायों का अवलम्बन करने पर ही कुछ मात्रा में परिस्थिति में सुधार होने की आशा पाई जाती है।

(३)

संसार भर में जो भयङ्कर दरिद्रता फैली हुई है, उसके कारणों की विवेचना हम ऊपर कर चुके हैं। उन पर विचार करने पर परिस्थिति को सुधारने का उपाय भी अनायास ही ज्ञात हो सकता है। जब ये सब कारण दूर कर दिये जायँ अर्थात् उपज कम कर दी जाय, साथ ही सोने का अभाव न होने दिया जाय और खपत बढ़ाई जाय तो परिस्थिति सुधर जायगी, क्योंकि इन तीनों कारणों से ही उपज और खपत में बहुत असंगति हो गई है, जिससे यह सब गड़बड़ मचा है। या सब मामले यदि प्रकृति के भरोसे पर छोड़ दिये जा तो भी कुछ दिन में स्वयं ठीक रास्ते पर आ जायँ दरिद्रता के समृद्धि के रूप में परिणत होने की भी स्वाभाविक शक्ति होती है। जिस आशातीत सस्ती कारण चारों ओर इतना हाहाकार मचा है उसी की बदलत किसी दिन सारा मामला अपने आप तय हो जायगा इसके कारण उपज धीरे-धीरे कम होने लगी और अ चल कर बहुत ही कम हो जायगी। तब खपत भी धीरे अवश्य बढ़ जायगी। इस प्रकार उपज और ख की असंगति का जो इतनी बढ़ गई है, क्रमशः अ हो जायगा। परन्तु यह निश्चय नहीं कहा जा सक कि इस असंगति के दूर होने में अभी कितना स लगेगा। कुछ लोगों का विचार है कि चीज़ों का भ हद से ज़्यादा घट गया है और अब वह जायगा। उनके विचारों के अनुसार यह दरिद्रता १९ तक दूर हो सकेगी।

भिन्न भिन्न देशों के किसान और कल-कारख़ानों मालिक मिल कर आपस में कुछ शर्तें तय कर लें जि अनुसार खेती कुछ कम कर दी जाय, जिससे खाद्य पद और कच्चे माल की भी उपज कम हो जाय, साथ ही मश के द्वारा जो माल अधिकता से तैयार होता है उसका नियन्त्रण किया जाय। जो सोना कुछ ही देशों ढेर का ढेर इकट्ठा हो रहा है और दूसरे देश उसके योग से वञ्चित रह जाते हैं वह भी मुद्रा बनाने लेन-देन के लिए स्वतन्त्र कर दिया जाय। अन्तर्रा लेन-देन के लिए अभी हाल में जो बैंक स्थापित हुआ उसका संसार के भिन्न-भिन्न देशों में उचित रूप से का बँटवारा करने के लिए एजंसी के रूप में उपयोग कि जा सकता है। यह संस्था उचित मार्ग पर चलती जान पड़ती है। जिन जिन आशाओं पर यह संगठित की गई है वे कार्यरूप में परिणत होंगी, इ हमें पूर्ण विश्वास है। साथ ही कम से कम भार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनैतिक परिस्थिति जो इतनी गड़बड़ हो गई है वह किसी सन्तोषजनक मीमांसा के द्वारा सुलझा दी जाय।

संसार यदि चीन के गृह-युद्ध का भी किसी प्रकार अन्त कर सके तो वह चीन के लिए कल्याणकर तो होगा ही, साथ ही संसार का भी उससे लाभ होगा। भारत और चीन की जन-संख्या मिल कर संसार की जन-संख्या के आधे भाग से अधिक है। और यदि इन दोनों देशों में शान्ति स्थापित हो जाय तब इन दोनों ही देशों में संसार के भिन्न-भिन्न देशों की बनी हुई चीज़ों की माँग बढ़ने लगे।

—जी० डी० कार्वेल

वाल्मीकि

हिन्दुओं का विश्वास है कि रामनाम का जप करने और राम का गुणगान करने से मनुष्य अनेक जन्म के पापों से छुटकारा पा जाता है। वाल्मीकि इस बात के सबसे बड़े उदाहरण हैं। जीवन के प्रारम्भिक काल में डाका डालना तथा निरपराध प्राणियों की हत्या करना ही इनका मुख्य काम था, परन्तु आगे चल कर ये ही रामनाम के प्रभाव से एक बड़े भारी ऋषि हो गये और जनसाधारण में रामनाम का प्रचार करने के लिए रामायण नामक महाकाव्य की रचना की, जो संसार के साहित्य में अक्षय एवं अमूल्य रत्न है। इन्हीं महात्मा की जीवनी का घर घर प्रचार करने के लिए यह पुस्तक बड़ी ही सरल और रोचक भाषा में प्रकाशित की गई है। मूल्य ।)

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की राष्ट्रीय तरंग और गोलमेज़-सभा

पूर्व पीठ

महात्मा गांधी के सिद्धान्त ने सभ्य संसार को चकित कर दिया है। भारतवासियों की धारणा है कि गौतम-बुद्ध के बाद इस देश में ऐसा कोई महापुरुष नहीं हुआ जिसके सन्देश से करोड़ों स्त्री-पुरुषों के दिल हिल जायँ और

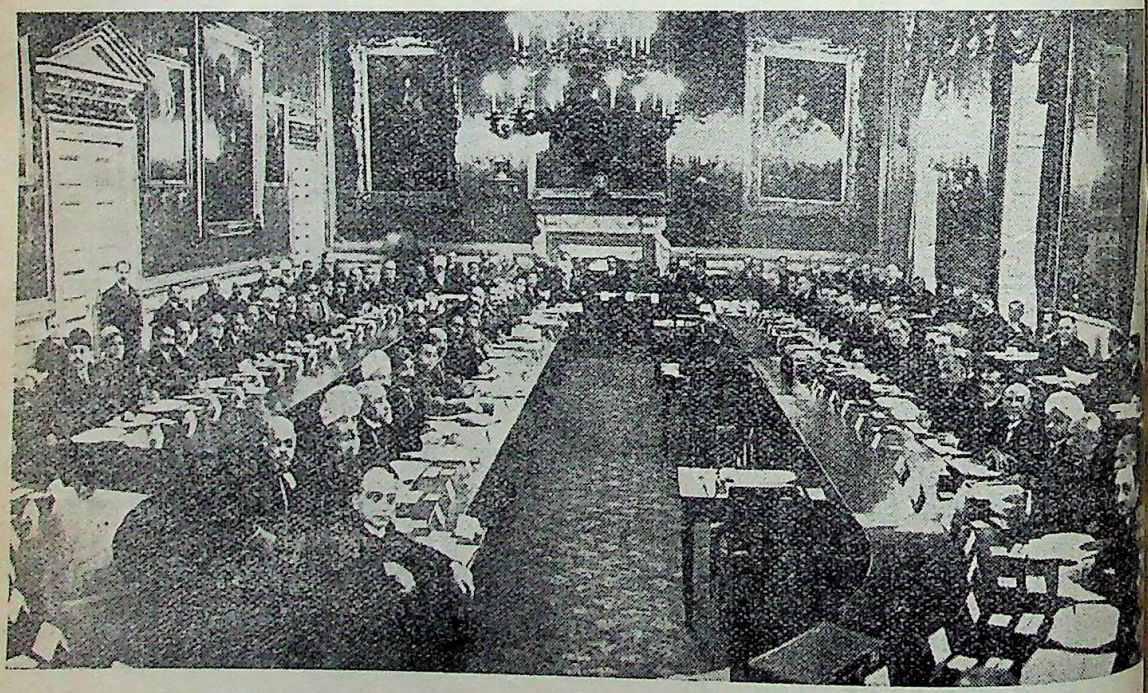

[राउंड टेबल कान्फ़रेंस की पहली बैठक का एक दृश्य]

जिसकी आदर्श-पुष्टि के लिए सहस्रों सम्मानित व्यक्ति—स्त्री-पुरुष—अदम्य निर्भीकता के साथ कारावास की कठिन यातना सहने के लिए तैयार हो जायँ। पाश्चात्य संसार को महात्मा गांधी ने ईसामसीह का स्मरण कराया है। ईसाई-धर्म के अनुयायियों ने इस बात को प्रत्यक्ष देख लिया कि किस प्रकार आदर्शसेवी अपने आदर्श की पूर्ति के लिए लाठी-प्रहार होने पर भी चूँ तक नहीं करते और प्रत्युत्तर में अस्त्र-शस्त्र तो क्या अपने मुख से कटु शब्द निकालना भी पाप समझते हैं। इस प्रकार महात्मा गांधी ने हमारे राष्ट्रीय जीवन में नई स्फूर्ति का संचार किया है और पाश्चात्य राष्ट्रवादियों के सम्मुख एक नया आदर्श उपस्थित किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ तक प्रभाव पड़ा है कि मिस्र-देश के मुसलमान भी इसी का अवलम्बन करके अपने राष्ट्रीय लक्ष्य पर पहुँचने की आशा रखते हैं। महात्मा गाँधी का बल आत्मिक बल है। उनकी शक्ति आत्मिक शक्ति है। उनका दृढ़ विश्वास है कि इसी के द्वारा अन्याय, अत्याचार और हिंसावृत्ति का नाश हो सकता है। प्राचीन काल में हमारे पूर्वज इसी तपस्या-द्वारा इन्द्रासन तक को हिला देते थे और इसी को धर्म-संस्थापन का परमोत्कृष्ट साधन समझते थे। जहाँ जहाँ धर्म पर कुठाराघात हुआ, वहाँ ऋषियों ने इस महान् शक्ति का उपयोग किया। कालान्तर में हिन्दूजाति अपने आदर्शों को भूल गई और सांसारिक सुख की मृगतृष्णा ने उसे यहाँ तक भुलाया कि आध्यात्मिक बल का केवल नाम ही नाम याद रह गया। आज हज़ारों वर्ष बाद महात्मा गाँधी ने फिर उस सिद्धान्त को हमारे सामने रक्खा और बतलाया कि इस अनुपम बल से मनुष्य सामाजिक एवं राजनैतिक बन्धनों से मुक्त हो सकता है। जो लोग महात्मा गाँधी के सिद्धान्त से सहमत नहीं थे और उसे अव्यावहारिक कहते थे वे भी उसे कार्यरूप में परिणत होने पर उसका प्रभाव देखकर दाँतों के नीचे अँगुली दबाये रह गये। यही महात्मा गाँधी का विशेषत्व है। यही उनकी अपूर्व प्रतिभा का अनुपम उदाहरण है। इसी ने आज सभ्य संसार का ध्यान भारत के इस क्षीण, धनहीन, साधु, राष्ट्रवादी की ओर आकृष्ट किया है। इसी कारण योरप के बड़े बड़े विद्वान् महात्मा को भारतीय आत्मा कह कर पुकारते हैं।

असहयोग आन्दोलन

योरपीय महासमर में भारत ने अपनी राजभक्ति का ज्वलंत परिचय दिया था। राजा-रईस, अमीर-ग़रीब सबने धन दिया, प्राण दिये, और सम्राट् की सेवा और साम्राज्य की प्रतिष्ठा के लिए कुछ भी बाक़ी न रक्खा। भारत-सचिव मिस्टर मान्टेग्यू ने पार्लियामेन्ट में शासन-सुधार की योजना पेश की, जिसका नाम पीछे से मान्टेग्यू-चैम्सफ़ोर्ड-रिफ़ार्म हुआ। कांग्रेस ने इसका विरोध किया, परन्तु देश के अनेक सज्जनों ने इसका स्वागत किया और उसके सुपरिणाम की प्रतीक्षा में उसके दोषों को भुला दिया। इसी समय यह भी तय हुआ कि १० वर्ष बाद पार्लियामेंट-द्वारा नियुक्त एक कमीशन इस बात की जाँच करेगा कि भारत ने स्वराज्य की सीढ़ी पर चढ़ने में कितनी उन्नति की है। इधर भारत में रौलट ऐक्ट का घोर विरोध हुआ और महात्मा गाँधी को असहयोग-आन्दोलन आरम्भ करना पड़ा। सन् १९२० ईसवी में स्वर्गीय लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में कांग्रेस ने महात्माजी का कार्य-क्रम स्वीकार किया। देश में चारों तरफ़ आग दहकने लगी। विद्यार्थी स्कूल छोड़ने, वकील वकालत छोड़ने लगे। विदेशी वस्त्र का बहिष्कार हुआ और सरकार के सम्मुख एक विकट समस्या उपस्थित हुई। सादगी की उपासना होने लगी। फ़ेशन बनानेवालों के चेहरों पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। किसी शिक्षित मंडली अथवा सार्वजनिक सभा में उनका जाना कठिन हो गया। स्त्रियों का हृदय भी देश की करुणाजनक दशा देख द्रवीभूत हुआ। पर्दे को छोड़ कर वे भी राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिए उत्सुक हुईं। महात्माजी ने अछूत जातियों के प्रश्न को अपने राष्ट्रीय कार्य-क्रम का मुख्य अंग बनाया और उसे स्वराज्य-प्राप्ति के साधनों में ऊँचा स्थान दिया। सारे देश में एक अजीब हलचल मच गई। राष्ट्रीय दलों के मतभेद ने विराट् रूप धारण किया। कांग्रेस के लक्ष्य को बदलने की चर्चा होने लगी। उपनिवेशीय स्वराज्य के स्थान में स्वाधीनता की माँग पर वाद-विवाद होने लगा। अनेक कांग्रेस के कार्य-कर्त्ता जेल गये और सरकार ने आन्दोलन को उसके बाह्य रूप में दबा लिया। इसके कई कारण थे। प्रथम, असहयोग एक नई चीज़ थी। जनता ने अभी उसके तारतम्य को भली भाँति ग्रहण नहीं किया था। दूसरे, देश में काफ़ी प्रतिष्ठित मत उसके विरुद्ध था। असहयोग-आन्दोलन-द्वारा अँगरेज़ जैसी शक्तिशाली जाति से स्वराज्य पाना असम्भव-सा प्रतीत होता था। तीसरे, आन्दोलन वस्तुतः रौलट ऐक्ट को रद करने और स्वराज्य-प्राप्ति के लिए था। दोनों लक्ष्य ऐसे थे जिन्हें जन-साधारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[मिस्टर रामसे मैक्डानल्ड]

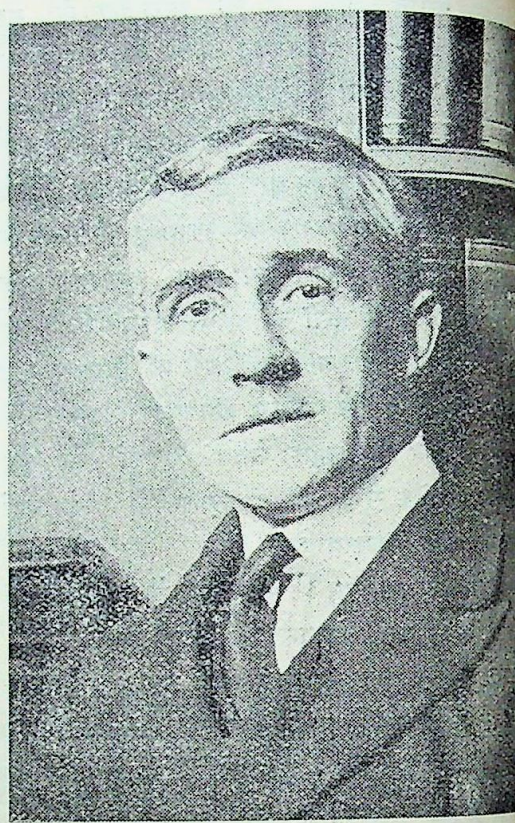

[भारत-मन्त्री मिस्टर वेजवुड बेन]

पूर्णतया समझने में असमर्थ थे। चौथे, आन्दोलन अधिकतर नगरों में था। नगरों में भी स्त्रियों की संख्या अधिक न थी। ग्रामीण जनता इससे दूर ही रही। कांग्रेस के कार्य-क्रम में कोई बात ऐसी न थी जिसका कृषि-जीवियों पर शीघ्र प्रभाव पड़ता हो। पाँचवें, शताब्दियों की अकर्मण्यता और स्वप्नावस्था को दूर करने के लिए पाँच-सात वर्ष काफ़ी न थे। बहुत से लोग समझते थे कि देश में अराजकता फैल जाने से धनी और सम्पत्तिवान् पुरुषों को बड़ी हानि पहुँचेगी। सातवें, एक कारण और भी था। आदर्शों का पारस्परिक संघर्ष होने पर अन्तिम निर्णय होने में समय लगता है। यहाँ एक राष्ट्रीय लक्ष्य की दूसरे के साथ मुठभेड़ हो रही थी। सब एक एक कर कसौटी पर कसे जा रहे थे। इतने अल्प समय में किसी भी एक आदर्श का विस्तृत क्षेत्र के लिए निर्दिष्ट होना कठिन क्या असम्भव ही था। महात्माजी जेल गये और छूट भी गये। असहयोग का दमन हुआ। परन्तु जो भाव आन्दोलन ने पैदा कर दिये थे उनकी इतिश्री नहीं हुई। कांग्रेस के महारथियों ने यह कहकर सन्तोष किया कि स्वतन्त्रता का युद्ध एक युग से दूसरे तक चलता है। परेशान होने पर भी विजय अवश्यम्भावी है।

सायमन कमीशन और कांग्रेस

१० वर्ष की राजनैतिक शिक्षा जनता के लिए श्रेयस्कर सिद्ध हुई। कांग्रेस का स्वाधीनतावादी दल ज़ोर पकड़ने लगा। उधर पार्लियामेंट के भेजे हुए कमीशन का देश में निरादर हुआ। गण्य-मान्य नेताओं ने कमीशन के साथ अपनी सम्मति प्रकट करने से इनकार कर दिया। कांग्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के स्वयंसेवकों ने मार भी खाई, परन्तु सरकार की नीति का विरोध करने से वे न रुके। लिबरलपार्टी (उदारदल) ने भी सर तेजबहादुर सप्रू की अध्यक्षता में कमीशन को बेकार सिद्ध करने का बीड़ा उठाया और भारत-सचिव की नीति की तीव्र आलोचना करते हुए इंडिया आफ़िस को भारत की राष्ट्रीय आकांक्षाओं का क़ब्रस्तान बताया। कमीशन का कहीं भी स्वागत नहीं हुआ। ऐसी स्थिति में कमीशन की रिपोर्ट का अनौदार्य सुगमता से समझ में आ सकता है। गवर्नमेंट ने चाहा कि भारत की राजनैतिक समस्या को सुलझाने में प्रत्येक दल से सहायता मिले। परन्तु यह इच्छा पूर्ण न हुई। उधर इँग्लेंड में भारतीय राष्ट्र-निर्माण पर विचार करने के लिए गोलमेज़-सभा की बातचीत होने लगी। श्रमजीवी मंत्रिमंडल होने के कारण भारत का कल्याण चाहनेवालों की आशालता फिर से लहलहाने लगी। मिस्टर रामसे मेकडानल्ड प्रधान मंत्री अपनी पुस्तकों में लिख चुके थे कि 'यदि भारत स्वाधीन होना चाहे तो उसे कौन रोक सकता है। यह उसका जन्मसिद्ध अधिकार है।' गोलमेज़-महासभा के होने का सर्वसम्मति से निश्चय हो गया। लार्ड अरविन ने मंत्रिमंडल से अनुरोध किया कि अब टाल-मटोल से काम नहीं चलेगा, बरन परिस्थिति दिन पर दिन बिगड़ती ही चली जायगी। दिसम्बर सन् १९२९ की कांग्रेस ने पंडित जवाहरलाल की अध्यक्षता में भारत के राष्ट्रीय लक्ष्य में परिवर्तन नहीं किया, बरन राष्ट्र-पथ ही बदल दिया।

पंडित जवाहरलाल के भाषण को यदि क्रान्तिकारी कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। कांग्रेस के अधिवेशनों में जितने सभापति के पद से भाषण हुए हैं उन सबमें यह छोटा और अपने ढंग का निराला था। इसकी शैली और आशय अन्य भाषणों से सर्वथा भिन्न थे। स्वाधीनता, निर्भीकता, समानता और साम्यवाद—ये ही उसके मूलमंत्र थे। दादाभाई, फीरोज़शाह, गोखले प्रभृति महानुभावों को जो ब्रिटिश-साम्राज्य की स्थापना को दैवी कृपा समझते थे, कभी स्वप्न में भी यह ख़याल न हुआ होगा कि किसी दिन कांग्रेस का सभापति स्वाधीनता की दुहाई देगा और पूँजीपत्याधिपत्य की घोर निन्दा करेगा। युवक सभापति ने मार्मिक शब्दों में नई क्रान्ति का सन्देश सुनाया। उन्होंने साम्राज्यवाद की तीव्र आलोचना की। सामाजिक असमानता को भारत के अधःपतन का मुख्य कारण बताया। उपनिवेशीय स्वराज्य का राग अलापनवालों को ब्रिटिश-कूटनीति के चरकों का स्मरण कराया, और ब्रिटिश-साम्राज्य से अलग होने ही को स्वाधीनता का प्रथम साधन बतलाया। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता ने साम्राज्य के भार को बहुत काल तक सहन किया है। परन्तु अब उसकी पीठ झुक गई है और हिम्मत टूट गई है। जब तक इँग्लेंड के पूँजीपति भारत को अपने स्वार्थ के लिए खोखला करते रहेंगे तब तक भारतीय जनता साम्राज्य से दूर रहने में ही अपना कल्याण समझेगी। करोड़ों स्त्री-पुरुष, जिनका हित किसी भी सभ्य राष्ट्र का ध्येय होना चाहिए, नैराश्य-ग्रसित हो मूक हो रहे हैं। उनके पक्ष का समर्थन करनेवाले भी इने-गिने ही हैं। अब राष्ट्र-विधान का समय नहीं है। काम करने की ज़रूरत है। देशी नरेशों की विलास-प्रियता, अपव्ययता इस युग में नहीं चल सकती। सभापति ने उनकी देश-भक्ति पर अफ़सोस ज़ाहिर किया। कृषकों की दुर्दशा का वर्णन करते हुए आपने कहा कि योरप में भी बड़ी बड़ी ज़मींदारियों की कमी हो रही है, फिर कोई कारण नहीं देख पड़ता कि भविष्य में राजनैतिक संयोजन में क्यों उन्हें स्थान मिलना चाहिए। रईस, अमीरों के दिन गये। अब भावी जगत् में राजसत्ता श्रमजीवी और कृषकों के हाथ में रहेगी। भारतीय ऋण की भी तीव्र आलोचना हुई। स्वाधीनता के लक्ष्य की पूर्ति के लिए कार्यक्रम भी वैसा ही बताया गया। जन-साधारण-द्वारा शान्तिमय आन्दोलन, लेजिस्लेटिव कौंसिलों का बहिष्कार, अँगरेज़ी वस्त्र का बहिष्कार और सरकारी कानून भंग करना—ये ही उसके मुख्य अंग बताये गये। सभापति ने अपना भाषण समाप्त करते हुए कहा—

"हम इस समय विदेशी शासन के विरुद्ध खुल्लम-खुल्ला षड्यन्त्र रच रहे हैं और मैं इसमें शामिल होने के लिए आपको हृदय से निमंत्रण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता हूँ। इसका पुरस्कार जेल की यातना और शायद मृत्यु भी होगी। परन्तु आपको इस बात से संतोष होगा कि आपने अपने देश के प्रति कर्तव्य का पालन किया और मनुष्य-जाति को परतन्त्रता के बन्धन से मुक्त करने में यथाशक्ति योग दिया।"

सत्याग्रह-आन्दोलन

कांग्रेस का कार्य ज़ोर-शोर से शुरू हो गया और जब सरकार की ओर से कोई वादा न हुआ तब क़ानून तोड़ने की तैयारी हुई। महात्मा गान्धी ने सबसे पहले नमक पर सुसंगठित रूप से प्रहार किया। गाँव गाँव में नमक बनने लगा

[महाराजा अलवर तथा राउंडटेबिल कान्फ़रेंस के अन्य प्रतिनिधि]

स्वाधीनता का प्रस्ताव बहुमत से स्वीकृत हुआ। महामना मालवीयजी ने उसका विरोध किया और कुछ समय के लिए इस प्रश्न को स्थगित करने की सलाह दी। परन्तु प्रतिनिधि कब माननेवाले थे।

उसका बाज़ार में बिकना भी शुरू हो गया। सरकारी अफ़सर और अनेक प्रतिष्ठित सज्जनों ने इसे केवल मज़ाक समझा। उनका ख़याल था कि यह सब पानी का बबूला है, अल्प काल में ही अपने आप शान्त हो जायगा। परन्तु यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। प्रोफ़ेसर रशब्रुक विलियम्स ने अपने एक व्याख्यान में, जो उन्होंने ईस्ट इंडिया एसोसियेशन के सामने दिया था, कहा था कि नमक के क़ानून पर प्रहार करना मिस्टर गाँधी की अलौकिक बुद्धि का नमूना था। अमरीका में इसका बड़ा प्रभाव पड़ा। बड़े बड़े प्रतिष्ठित पत्रों के सम्पादकों ने लिखा कि जिस प्रकार अमरीका ने चाय द्वारा अपनी स्वाधीनता प्राप्त की थी, उसी प्रकार भारत नमक-द्वारा अपने लक्ष्य पर पहुँचेगा। पहले तो सरकार चुप रही। परन्तु जब आन्दोलन ज़ोर से बढ़ने लगा तब अकर्मण्यता असह्य प्रतीत होने लगी। महात्मा गाँधी, पंडित मोतीलाल वाइसराय से दिल्ली में मिले, परन्तु कोई समझौता न हो सका। वाइसराय महोदय उपनिवेशीय स्वराज्य का भी वादा न कर सके और न यह कह सके कि भारत-सरकार इस माँग का समर्थन करेगी, चाहे ब्रिटिश-मंत्रिमंडल की कुछ भी राय हो। महात्मा के कार्यक्रम का एक भी अंश गोपनीय नहीं था। उन्होंने अपने सारे कार्ड मेज़ पर डाल दिये और कुछ भी छिपा कर न रक्खा। उन्होंने बड़े लाट को अपना वह पत्र दिया जो इतिहास में सदैव अमर रहेगा। इसका सारांश यह था कि भारत आज़ादी और सुख चाहता है और यदि इँग्लेंड उसके साथ बराबरी का बर्ताव करे तो वह समझौते के लिए तैयार है। इस पत्र में महात्माजी ने सरकार की नीति की तीव्र आलोचना की और बताया कि इसी कारण भारत इस गिरी हुई दशा को पहुँच गया है। इसके संक्षिप्त उत्तर में लाट महोदय ने केवल यही कहा कि खेद है कि आपको ग़ैर क़ानूनी पथ पर चलने में भारत का कल्याण दिखाई पड़ता है। महात्मा तो पहले ही संकल्प कर चुके थे। उन्होंने सैकड़ों आदमियों के साथ धरसाना की ओर प्रस्थान किया। सरकार ने कई महीने तक शान्ति से काम लिया, परन्तु अन्त में कांग्रेस के जोश ने उसकी क्षमता का अन्त कर दिया। महात्माजी गिरफ़्तार हो गये और यरवदा-जेल में बन्द कर दिये गये। वे ही इस 'धर्मयुद्ध' के प्राण थे। परन्तु उनके जाने से शिथिल होने की अपेक्षा आन्दोलन सौगुना बढ़ गया और देश का कोई भाग ऐसा न रहा जहाँ हलचल न मची हो। अनेक गण्य-मान्य नेता श्री तैयबजी, देवी सरोजिनी प्रभृति जेल चले गये और बम्बई में इस राष्ट्रीय आन्दोलन ने उग्र रूप धारण किया। सरकार ने अब दमन नीति से काम लिया। पण्डित जवाहरलाल ने भी नमक का क़ानून तोड़ने के अपराध में सज़ा पाई। इसके बाद कांग्रेस की कार्यकारिणी कमिटी ग़ैर क़ानूनी ठहराई गई और पण्डित मोतीलाल जी भी क़ैद हुए। भिन्न भिन्न प्रान्तों से योग्य एवं अनुभवी पुरुष कार्यकारिणी कमिटी में नाम लिखाने की इच्छा करने लगे। दिल्ली में डाक्टर अन्सारी, महामना मालवीयजी, प्रेसीडेंट पटेल आदि सज्जन गिरफ़्तार किये गये और उन्हें ६-६ मास की सज़ा दी गई। प्रेसीडेंट पटेल का जेल जाना आश्चर्यजनक नहीं था। परन्तु महामना मालवीय के जेल जाते ही जनता चौंक पड़ी। लोगों को स्वप्न में भी ख़याल न था कि यह शान्ति का उपासक, स्वतन्त्रता का पुजारी, कांग्रेस का प्रवरवीर, राजा-महाराजों, सेठ-साहूकारों का सम्मानित मित्र, दीन-धनहीनों का सहायक, सनातनधर्म का स्तम्भ, अँगरेज़-जाति का हितैषी ७० वर्ष की अवस्था में केवल कमिटी में बैठने के कारण ही जेल भेज दिया जायगा। समय की बलिहारी है। गली-गली, कूँचे-कूँचे, गाँव-गाँव, झोंपड़े-झोंपड़े में स्त्री-पुरुष यही कहने लगे अरे मालवीयजी भी जेल गये। देखें अब क्या होता है।

समझौते का प्रयत्न

इसके कुछ ही समय पहले वाइसराय ने अपने भाषण में कहा था कि भारत को अपना प्रबन्ध आप करने का अधिकार मिलेगा सिवाय उन मामलों के जिनमें वह अभी ज़िम्मेदारी का भार नहीं उठा सकता। इस भाषण की श्री श्रीनिवास शास्त्री, सप्रू आदि उदार-दल के नेताओं ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की और इसके आधार पर समझौते की चर्चा की। श्री जयकर और डाक्टर सप्रू जेल में महात्मा गाँधी, नेहरू पिता-पुत्र से मिले और बातचीत की। कांग्रेस के अन्य नेता भी बुलाये गये जो इस बहस में शामिल हुए। समझौते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पूर्ण विवरण समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो चुका है, इसलिए उसका सविस्तर वर्णन करने की यहाँ आवश्यकता नहीं। ऐसा प्रतीत होता है अन्तिम उत्तर देने में पंडित जवाहरलाल का विशेष हाथ रहा। दो बातें मार्के की कही गईं। एक तो यह कि भारी राष्ट्र-विधान में भारत को यदि उसकी इच्छा हो तो साम्राज्य से अलग होने का अधिकार रहे, दूसरे यह कि भारत के सरकारी ऋण की एक निष्पक्ष पञ्चायत-द्वारा जाँच हो। गोलमेज़-सभा उपनिवेशीय स्वराज्य को अपना वर्तमान लक्ष्य बना-

हुई घूमने लगीं। वानर-सेना रोमाञ्चकारी राष्ट्रीय गीत गाने और सरकार के लिए बुरे बुरे शब्दों का प्रयोग करने लगी। प्रभात-फेरियाँ बन गईं, जिन्होंने 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' और 'इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद' की ध्वनि से आकाश को गुंजा दिया। सामाजिक स्थिति ने विचित्र पलटा खाया। ऐसा मालूम होने लगा कि एक नये युग का जन्म हुआ। वोल्टेअर, रूसो, लेनिन, ट्रौस्की के झनझनाते हुए शब्द कानों में सुनाई देने लगे। मित्र, पड़ोसी, सम्बन्धी सैकड़ों की संख्या

[सर अकबर हैदरी तथा हैदराबाद राज्य के दूसरे प्रतिनिधि]

कर राष्ट्र-विधान करे और भारत-सरकार की ओर से इसकी पुष्टि की जाय। इसका उत्तर नहीं के अतिरिक्त और क्या मिल सकता था? शान्तिप्रिय मनुष्यों की आशाओं पर पानी फिर गया। डाक्टर सप्रू और श्री जयकर अपने प्रयत्न के लिए देश और सरकार का धन्यवाद पाते हुए घर लौटे। जेल में समझौते की बातचीत, बाहर विराट् क़ानून-भङ्ग और दमन! सहस्रों स्त्री-पुरुष जेल जाने लगे। विदेशी वस्त्र का बहिष्कार ज़ोरशोर से होने लगा। स्त्रियाँ मुहल्ले मुहल्ले स्वदेशी का डङ्का बजाती

में जेल को कृष्ण-मन्दिर समझ उसकी यात्रा की तैयारी करने लगे। भय लोगों के हृदय से निकल गया। स्त्री-बालक तक पुलिस के डंडों और गोलियों की बौछार की पागलों की तरह उपेक्षा करने लगे। बड़ी बड़ी मोटी तनख़्वाहवाले भी सिर हिला कर कहने लगे हम यह नहीं जानते थे कि आन्दोलन ऐसा ज़ोर पकड़ जायगा।

यह सब होते हुए भी सरकार अपने पथ से विचलित न हुई। लन्दन में गोलमेज़-सभा की तैयारी होने लगी। पहले बड़ा मतभेद रहा। साइमन-कमीशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की रिपोर्ट भी निकल गई और रद भी हो गई। लाखों रुपयों का नाहक़ ख़ून हुआ। लाट महोदय ने भी कह दिया कि लंदन-सभा राष्ट्रीय प्रश्नों पर स्वतन्त्र रूप से विचार करेगी। सर जान साइमन हाथ मलते रह गये। उनकी एक न चली। भारत-सरकार ने इधर सभा का निमन्त्रण दे दिया। बड़े बड़े राजा, रईस, वकील, डाक्टर विलायत जाने की तैयारी करने लगे। बहुतों के लिए तो बिल्ली के भागों छींका टूटावाली कहावत चरितार्थ हुई। भला महात्मा गांधी, मालवीयजी, पंडित मोतीलाल, पटेल, जवाहरलाल, सरोजिनी देवी आदि के सामने इन्हें अपना जौहर दिखाने का कहाँ अवसर मिलता। जनता ने सभा में जानेवालों का विरोध किया, परन्तु उनकी देश-भक्ति का प्राबल्य अदम्य सिद्ध हुआ। निमन्त्रित सज्जनों में कई योग्य, देशसेवी, स्वतन्त्रतावादी भी गये, जिनसे भारत के हित की आशा करना केवल कल्पनामात्र ही नहीं है।

गोलमेज़-सभा

पहली नवम्बर को जब इस सभा की घोषणा हुई थी तब पार्लियामेंट में टोरी दल के नेता मिस्टर बाल्डविन ने अपने महत्त्व-पूर्ण भाषण में भारत की प्राचीन सभ्यता की हृदय से प्रशंसा की और कहा कि मुझे आशा है कि पूर्वी और पश्चिमी सभ्यतायें मिलकर मानव-जाति के कल्याण का कारण बनेंगी। उन्होंने स्वीकार किया कि भारत का राष्ट्रीय ध्येय सर्वथा उचित है और इँग्लेंड का कर्त्तव्य है कि भारत की समस्याओं पर सहानुभूति, न्याय और विवेक के साथ विचार करे। मिस्टर मेकडानल्ड के विचार वैसे नहीं थे जैसे उनकी पुस्तकों में प्रकट किये गये हैं। परन्तु उन्होंने भी सहानुभूति प्रकट की। गत १२ नवम्बर को हाऊस आफ् लार्ड्स की रायल गैलरी (सम्राट् के बैठने का कमरा) में सम्राट् ने स्वयं सभा का उद्घाटन किया। देशी राजा, उनके मन्त्री, ब्रिटिश-भारत के प्रतिनिधि, ब्रिटिश-दलों के प्रतिनिधि, भारत-सरकार के बड़े बड़े अफ़सर सभा में उपस्थित थे। सम्राट् ने अपने भाषण में कहा कि सभा के सम्मुख बड़े महत्त्व-पूर्ण प्रश्नों पर विचार होगा और इस बात पर ज़ोर दिया कि मुझे सबसे अधिक चिन्ता अपनी भारतीय प्रजा के सुख की है। उन्होंने यह भी कहा कि मेरी इच्छा है कि हिन्दू, मुसलमान, अछूत, पारसी, ईसाई, स्त्री, पुरुष, श्रमजीवी, शहर, देहात के रहनेवाले कृषक, ज़मींदार, बलवान् तथा बलहीन, धनी तथा धनहीन, प्रत्येक श्रेणी और धर्म्म के मनुष्यों के सुख और सुविधा का आप लोग अपने वाद-विवाद में पूरा ख़याल रक्खेंगे। स्वराज्य इन्हीं के भिन्न भिन्न अधिकारों और पारस्परिक कर्त्तव्यों के सम्मिश्रण का नाम है।

सम्राट् के चले जाने पर मिस्टर मेकडानल्ड सर्व-सम्मति से सभा के प्रधान चुने गये। इसके बाद श्रीयुत शास्त्री, सर तेजबहादुर सप्रू, श्रीयुत जयकर ने भारत की माँग का सारगर्भित शब्दों में वर्णन किया। श्रीयुत जयकर ने तरुण भारत के हृदय के उद्गार का भी कुछ पता ब्रिटिश-राजनीतिज्ञों को दिया और कहा कि उपनिवेशीय स्वराज्य से कम पर किसी को सन्तोष न होगा। देशी नरेशों ने ब्रिटिश-भारत के प्रतिनिधियों की माँग का अनुमोदन किया, जिससे सबको प्रसन्नता हुई। लार्ड पील ने अनुदारदल की तरफ़ से कहा कि वाइसराय ने कभी उपनिवेशीय स्वराज्य (Dominion Status) देने का वादा नहीं किया है और न ऐसा करना सम्भव ही प्रतीत होता है। मिस्टर रामसे मेकडानल्ड साम्राज्य के प्रसिद्ध वक्ताओं में से हैं। वाक्पटुता में बहुत कम लोग उनकी बराबरी कर सकते हैं। उन्होंने ब्रिटिश-वादों का ज़िक्र किया और कहा कि गवर्नमेंट कभी उन्हें नहीं भूल सकती। उन्होंने बतलाया कि देशी नरेशों की सहानुभूति ने सारी परिस्थिति को बिलकुल बदल दिया है। राष्ट्रविधान के प्रश्न व्यावहारिक प्रश्न हैं। इसलिए उनके सुल-झाने में उदारता, सहिष्णुता से काम लेना चाहिए और इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि कान्स्टीट्यूशंस (राष्ट्र-विधान) किसी की आज्ञा से नहीं बनते। वे क्रमशः व्यावहारिक रूप में प्रविष्ट होते हैं। ऐसा ही सब उपनिवेशों में हुआ है। श्रीयुत शास्त्री ने अपने भाषण में यह भी कहा कि असहयोगी जो जेल की यातनायें भोग रहे हैं, हमारे मित्र और सम्बन्धी हैं। हमारा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका ख़ून एक है। यदि आज हम राजनैतिक मत-भेद के कारण अलग हैं तो इसका आशय यह नहीं है कि वे मूर्ख, असभ्य, निकम्मे अथवा इँग्लेंड के शत्रु हैं। अन्य वक्ताओं ने भी शास्त्री, सप्रू के विचारों का अनुमोदन किया और हिन्दू-मुसलमानों के ऐक्य पर ज़ोर दिया। श्रीयुत चिन्तामणि ने वर्तमान शासन-प्रणाली की तीव्र आलोचना की और कहा कि जो शासन महात्मा गाँधी और पण्डित मदनमोहन मालवीय जैसे महापुरुषों को जेल में डाल सकता है उससे अधिक निन्द्य और क्या हो सकता है। लार्ड सैन्की के सभापतित्व में संघ-तन्त्र-शासन (Federal Constitution) पर विचार करने के लिए कमेटी बनी। इसी प्रकार हिन्दू-मुसलिम प्रश्न को तय करने के लिए भी प्रयत्न किया गया। इन विषयों पर अभी बड़ा मत-भेद है। श्रीयुत शिवस्वामि अय्यर ने सङ्घ-तन्त्र के दोषों का सारगर्भित लेखों में हाल में ही विस्तृत वर्णन किया है और कहा है कि ऐसे राष्ट्र-विधान से भारत का हित होना सम्भव नहीं। इसके साथ ही केन्द्रिक शासन को ज़िम्मेदार बनाने का भी प्रश्न उपस्थित है। हिन्दू-मुसलिम प्रश्न पर अभी तक विचार हो रहा है। अभी इन मामलों पर बहुत-सा वाद-विवाद होगा। निश्चितरूप से नहीं कहा जा सकता कि अन्तिम निर्णय क्या होगा। परन्तु एक बात हृदय को खटकती है। किसी प्रतिनिधि ने राजनैतिक क़ैदियों के छोड़ने की चर्चा तक नहीं की। जिस समय आयर्लेंड के समझौते की बात-चीत हो रही थी, पहली शर्त उस देश के प्रतिनिधियों की यही थी कि दोनों तरफ़ शान्ति से काम लिया जाय और राजनैतिक क़ैदी मुक्त कर दिये जायँ। यह भी नहीं जान पड़ता कि डोमीनियन स्टेट्स (Dominion Status) का क्या हुआ। क्या प्रेमपूर्ण आतिथ्य ने उसे बिलकुल भुला ही दिया?

गोलमेज़-सभा की सफलता के मार्ग में प्रधानतः तीन-चार अड़चनें हैं। एक तो देशी राज्य, दूसरे वे अँगरेज़ जो सदा से भारत का विरोध करते आये हैं (diehards), तीसरे हिन्दू-मुसलिम प्रश्न। देशी नरेशों ने सभा के आरम्भ ही से हमारी राष्ट्रीय सभाओं के साथ सहानुभूति प्रकट की है। सङ्घ-तन्त्र (Federal Constitution) के पक्ष में अपनी सहमति भी प्रकट की है, जिस पर अभी तक विचार हो रहा है। अँगरेज़ विरोधियों का दल तो सदा रहेगा। उनमें अधिकांश ऐसे हैं जो भारत में रह चुके हैं और जिनका उद्देश यही है कि किसी न किसी प्रकार देशी राजों को भड़का कर, हिन्दू-मुसलमानों में फूट डाल कर अथवा अँगरेज़ जनता को

[माननीय श्रीनिवास शास्त्री]

बहका कर भारत में स्वेच्छाचार का ही शासन क़ायम रहे। परन्तु हमें आशा है कि मिस्टर रामसे मेकडानल्ड की विचारशीलता इस समय उन्हें धोखा न देगी। वे भारत की स्थिति से परिचित हैं और जानते हैं कि इस समय केवल सान्त्वना से ही शान्ति स्थापित हो सकती है। तीसरी अड़चन बड़ी ज़बर्दस्त है। परन्तु उसका हल होना दुःसाध्य नहीं है। डाक्टर मुंजे की माँग-व्यवस्था (Mem

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

randum) से जो अभी प्रकाशित हुई है, पता लगता है कि वह श्रीयुत जिन्ना की १४ बातों का प्रत्युत्तर-मात्र ही है। हिन्दुओं को इस बात के स्वीकार करने में ज़रा भी दिक्कत नहीं कि अल्पसंख्यकों के प्रति उदारता का व्यवहार होना चाहिए और उनके स्वत्वों की विशेषतः रक्षा करना आवश्यक है। परन्तु साथ ही इसके मुसलमानों को भी अपनी माँग को उचित सीमा का उल्लंघन न करने देना चाहिए। यदि किसी प्रकार यह प्रश्न न हल हो सके तो हमारी राय में इसे राष्ट्र-सङ्घ (League of Nations) के सम्मुख रखना बिलकुल ठीक होगा। हिन्दुओं की सचाई निष्पक्षता और व्यावहारिक स्पष्टता का यह पर्याप्त प्रमाण होगा।

कांग्रेस ने गोलमेज़-सभा का बहिष्कार किया है। कुछ लोगों का अनुमान है कि ऐसा करने में उसने बड़ी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है। इसमें सन्देह नहीं कि भारत अब १९वीं शताब्दी के आदर्शों से बहुत आगे निकल गया है। यथार्थ में यह युग ही क्रान्ति का युग है। राष्ट्रीय विप्लव विश्वव्यापी हो रहा है। जर्मनी, रूस, तुर्की, चीन, आस्ट्रिया के साम्राज्य कहाँ हैं? अँगरेज़ी बस्तियाँ उपनिवेश हो गईं और अब साम्राज्य उनके साथ मित्रवत् व्यवहार करने पर बाध्य हुआ है। इस क्रान्ति को रोकने के तीन उपाय हैं—(१) बलपूर्वक शासन, (२) भारत का त्याग, (३) स्वराज्य। पहला अब असम्भव है। दमन-नीति काम नहीं दे सकती। कौन गवर्नमेंट ऐसी है जो आज १९३० में निहत्थे, असहाय, स्त्रियों और बच्चों को गोली से भून डालेगी? अँगरेज़ी सरकार के लिए ऐसा करना और भी कठिन है। यह आन्दोलन केवल शिक्षित-समाज में ही नहीं है। व्यापारिक समाज में इसका बड़ा ज़ोर-शोर है। शिक्षित-समुदाय ने यह अवश्य दिखला दिया है कि वह जनता का पथ-प्रदर्शक है। उसे जिधर चाहे उधर ले जा सकता है। महात्मा गांधी, मालवीयजी, पंडित मोतीलाल, जवाहरलाल, राष्ट्रीय जागन-मंडल के उज्ज्वल तारे हैं। उन्हीं पर लाखों-करोड़ों मनुष्यों की आशायें निर्भर हैं। उनके संकेत-मात्र से सहस्रों स्त्री-पुरुष माध्यमिक काल के ईसाई-धार्मिकों की तरह कड़ी से कड़ी यातना भोगने के लिए तैयार हो जाते हैं। भारत का त्याग भी अद्भुत है। इँग्लेंड और भारत का सम्पर्क इतिहास में एक विचित्र घटना है। अनेक राष्ट्रवादियों की धारणा है कि इँग्लेंड से भारत को केवल हानि ही हानि हुई है। ऐसा कहना उतना ही सत्य से दूर है जितना यह कहना कि इँग्लेंड ने सदैव अपनी नीति में भारतीय हित को प्राधान्य दिया है। जनता की दीनता, निरंकुश शासन, स्वतन्त्रता का अभाव, राष्ट्रीय आदर्शों की अवहेलना, रईसों अमीरों का सम्मान-विशेष, दीनों का तिरस्कार—ये तो अधिकांश आधुनिक राष्ट्रों में जिधर आँख डालिए उधर ही देखने में आते हैं। यदि जनता ऐसी शासन-व्यवस्था चाहती है जिसमें दीनों, धनहीनों, श्रमजीवियों और कृषकों को भी सुविधा हो तो क्या आश्चर्य है? औदार्य ही सफलता की कुंजी है। भारतीय संस्थायें जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं और शीघ्र उपचार न होने से उनकी दशा दिन पर दिन बिगड़ती चली जायगी। असन्तोष की वृद्धि होगी और साम्राज्य की सफलता एवं उपयोगिता पर भारत क्या, योरप के भी निष्पक्ष राष्ट्रवादी सन्देह करने लगेंगे।

यह नहीं कहा जा सकता कि इस क्रान्ति का क्या परिणाम होगा। क्रान्ति-मात्र में यही दोष है कि कोई नहीं कह सकता कि उसका अन्तिम स्वरूप क्या होगा। लोगों का कहना है कि भारत में इसके तीन रूप हो सकते हैं। एक तो यह कि देश में सर्वत्र अराजकता फैल जाय, सामाजिक सूत्र टूट जाय, राजा-प्रजा का सम्बन्ध ही न रहे, जिसकी लाठी उसकी भैंसवाली कहावत चरितार्थ होने लगे। वही दशा फिर हो जाय जो मुग़ल-साम्राज्य के छिन्न-भिन्न होने पर १८ वीं शताब्दी में हो गई थी। दूसरे, यदि स्वराज्य मिल भी जाय तो हिन्दू-मुसलमानों में परस्पर युद्ध होगा। एक दूसरे का गला काटेगा, जिसके फल-स्वरूप देश में शान्तिमय शासन कठिन हो जायगा और जो संस्थायें मौजूद हैं, अस्त-व्यस्त हो जायँगी। तीसरे, यह कि कालान्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वर्तमान आन्दोलन शिथिल पड़ जायगा। भारत विचित्र देश है। जनता को राजनैतिक मामलों में काफ़ी रुचि नहीं। दमन-नीति से हिम्मत टूट जायगी और लोग अपने राष्ट्रीय धर्म को तिलांजलि दे देंगे।

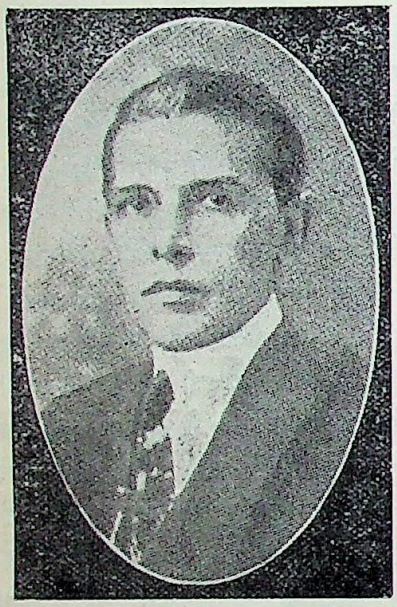

[मिस्टर एम० ए० जिन्ना]

इन धारणाओं में सत्य का अंश कहाँ तक है, इसका निर्णय करने की ज़रूरत नहीं। न तो सरकार ही इतनी अशक्त है कि देश में अराजकता फैलने की शंका की जाय, न कांग्रेस-आन्दोलन में अभी तक ऐसे लक्षण दिखाई पड़े हैं जिनसे यह अनुमान किया जाय कि धन-प्राण की रक्षा दुःसाध्य हो जायगी।

क्या यह सब आन्दोलन जो हिमालय से कुमारी अन्तरीप तक और आसाम से कराची तक फैला हुआ है, पानी के बबूले की तरह बैठ जायगा? यह आन्दोलन न तो साम्प्रदायिक युद्ध है, न सामाजिक संग्राम। यह भारतीय जनता के हृदय का उद्गार है। उसके हृदय की चोट का प्रत्यक्ष स्वरूप है। सूक्ष्म दृष्टि से देखने से जान पड़ता है कि यह दीन भारत के स्वाभिमान और आत्मिक विरोध का प्रकटीकरण है। न इसमें दिखावट है, न ढकोसला और न छोटे-बड़े का भेद। बड़े बड़े कोट्यधीश व्यापारियों की स्त्रियाँ और बेटियाँ कपड़ा, शराब, चरस, गाँजे की दूकानों पर धरना देती हैं और सब जेल चली जाती हैं। बम्बई, अहमदाबाद के व्यापारी मण्डल ने लाखों रुपये के नफ़े को लात मार दी है। बालक, बालिका, स्त्री-पुरुष, सभी राष्ट्रीय गायन-भाषण सुनते हैं परन्तु हिंसात्मक भावों को अपने हृदय में स्थान नहीं देते। कविवर रवीन्द्रनाथ ने हाल ही में माडर्नरिव्यू में लिखा है कि आज मेरे देशभाई अपने महान् नेता महात्मा गाँधी के नेतृत्व में आधुनिक सैनिक राष्ट्रों के समान स्वतन्त्रता संग्राम में हिंसापूर्ण उपायों से काम नहीं ले रहे हैं बल्कि उन्होंने अपने अहिंसात्मक आन्दोलन की नींव आत्मत्याग पर रक्खी है। आध्यात्मिक शक्ति को अपना प्रधान अस्त्र मानकर उन्होंने उस आदिम मनोवृत्ति से अपने को ऊँचा सिद्ध कर दिया जो निर्लज्जता के साथ लूट-मार करती है और जिस

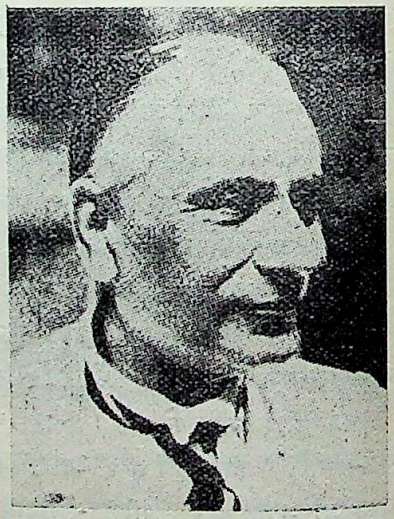

[सर तेजबहादुर सप्रू]

अनुसरण आज भी अधिकांश राष्ट्र करते हैं। घर घर से विदेशी वस्त्र का बहिष्कार हो गया। जिन्हें राजनीति विषयों में ज़रा भी रुचि न थी वे भी समाचार-पत्रों को झपट झपट कर पढ़ने लगे और स्वतन्त्रता के गीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँव गाँव में आज़ादी का मन्त्र सुनाई पड़ता लगे। घर घर में बच्चे गाते हैं—

क्या हुआ गर मर गये अपने वतन के वास्ते।
बुलबुलें कुरबान होती हैं चमन के वास्ते॥

को देखकर लोगों को गौतम बुद्ध और प्राचीन काल के ऋषियों का स्मरण हो आया।

इस आत्मिक आन्दोलन का अन्त उदारनीति से हो सकता है। केवल दमन से नहीं। भारत की इच्छा

[(१) सर मुहम्मद शफ़ी की पत्नी, (२) सर मुहम्मद शफ़ी, (३) बेगम शाहनिवाज़]

बड़े बड़े शहरों से लेकर उजाड़ बीहड़ों के झोंपड़ों तक महात्मा गाँधी के नाम की पूजा होने लगी। ईश्वर ने क्या जादू का खेल दिखा दिया। गाँधी के तपस्या-आदर्श पूर्ण करना इँग्लेंड के लिए कौन कठिन कार्य है? साम्राज्य के लिए भारत ने धन दिया, प्राण दिये, सब कुछ अर्पण कर दिया। आज भी करोड़ों भारतीय सरकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदद कर रहे हैं और देश में शान्ति रखने का भरसक प्रयत्न

[मिस्टर एम० आर० जयकर]

कर रहे हैं। देशद्रोही कहलाने पर भी इस बात की

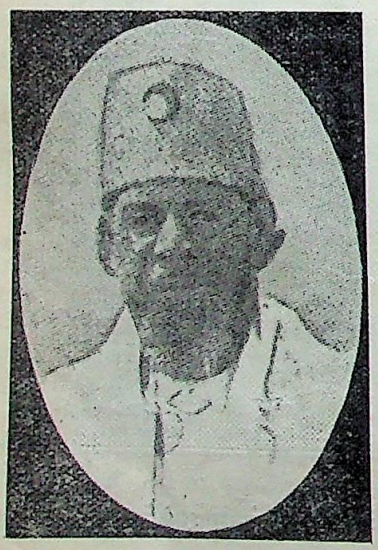

[मौलाना मुहम्मदअली]

चेष्टा कर रहे हैं कि किसी प्रकार यह वैमनस्य दूर हो और इँग्लेंड-भारत का सम्पर्क दोनों के कल्याण का कारण हो।

इँग्लेंड स्वतन्त्रता का उपासक है। ब्रिटिश-पार्लिमेंट पार्लियामेंटों की जननी है। उसके इतिहास में अनेक उदाहरण ऐसे हैं जिनसे उसकी महत्ता प्रकट होती है। इँग्लेंड ने योरप के स्वतन्त्रतावादियों की सहा

[डा० बी० एस० मुञ्जे]

मदद की है। नेपोलियन के पतन के बाद योरप मैटरनिक के घोर विरोध करने पर भी इँग्लेंड ने राज्यों की आन्तरिक नीति में हस्तक्षेप करना अनुचित समझा। महाकवि बाइरन ने ग्रीस की स्वाधीनता लिए युद्ध में प्राण दिये। पामर्स्टन, ग्लैडस्टन आदि मन्त्रियों ने स्वतन्त्रता का पक्ष लिया और क्रान्तिकारियों के प्रति सहानुभूति प्रकट की। मेट्सिनी, गैरीबाल्डी जैसे देश-प्रेमियों का इँग्लेंड ने हृदय से स्वागत किया और उन्हें सम्मानित किया। क्रौपाटकिन जैसे अराजकतावादी को भी इँग्लेंड की स्वतन्त्र भूमि में शरण मिली। क्या वही इँग्लेंड आज उन भारतीयों के साथ जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पियर, मिल्टन, और शैली की भाषा बोलते हैं, सहानुभूति न प्रकट करेगा।

अमरीकन युद्ध के समय इँग्लेंड के सुप्रसिद्ध वक्ता बर्क ने अपने देश-वासियों से कहा था कि हृदयों को ऊँचा उठाओ। एक महान् साम्राज्य और छोटे दिमाग़ साथ साथ नहीं चल सकते। ब्रिटिश-राजनीतिज्ञों को इसी नीति का अनुसरण करना चाहिए। योरप का इतिहास भारतीय आकांक्षाओं का समर्थन करता है। दिन पर दिन जनता का सरकार पर विश्वास घट रहा है। इस उथल-पुथल में इँग्लेंड ने जो भारत का उपकार किया है उसके भुलाये जाने की भी आशंका है। इँग्लेंड की संस्कृति का परित्याग अथवा निरादर हो तो भी कौन आश्चर्य है? ऐसी क्रान्ति कितनी अनिष्टकारी होगी, पाठक स्वयं समझ सकते हैं।

आशा है गोलमेज़-सभा इस गूढ़ प्रश्न पर गम्भीर विचार करेगी और ऐसा राष्ट्र-विधान तैयार करेगी जिससे इँग्लेंड-भारत दोनों का हित हो।

—ईश्वरीप्रसाद

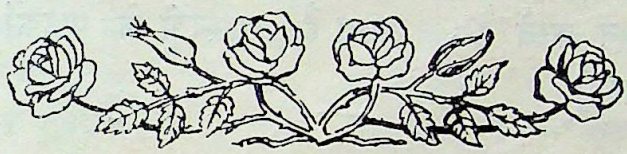

शीघ्र प्रकाशित होगी ! आर्डर अभी से भेजिए !!

मध्यकालीन भारत

यह इतिहास-ग्रन्थ बड़ी खोज के साथ लिखा गया है। इसमें मध्यकालीन भारत के इतिहास का प्रामाणिक विवरण विस्तार के साथ किया गया है।

इसके लेखक सीतामऊ के राजकुमार,

श्रीरघुवीरसिंहजी बी० ए०, एल-एल० बी० हैं।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वन्द्व

[श्रीमती सरोजकुमारी बँगला की प्रसिद्ध लेखिका हैं। बँगला में कई उत्तम उपन्यास लिख कर उन्होंने यह कीर्ति अर्जन की है। उनमें द्वन्द्व नाम का उनका एक उपन्यास बहुत ही सुन्दर है। इसमें उन्होंने मनोविज्ञान का अच्छा विश्लेषण किया है। इस अङ्क से हम उसका प्रकाशन करते हैं। आशा है, सरस्वती के पाठकों का यह उपन्यास भी विशेष मनोरञ्जन करेगा।]

शरद् ऋतु का सुन्दर प्रभात था। आकाश निर्मेघ था। बालसूर्य की सुनहरी किरणें बग़ीचे के घास-पौधों पर पड़ पड़ कर चमचमा रही थीं। ठंडी ठंडी हवा चल रही थी। हरसिंगार के पुष्पों की सुगन्धि से वह सवासित थी। खिड़की के बाहर आम की डाली पर बैठ कर एक छोटी-सी चिड़िया गा रही थी।

अपनी बैठक में बैठी हुई मिसेज़ राय कोई आवश्यक पत्र लिखने में व्यस्त थीं। कमरे के बाहर चपरासी मेम साहब की आज्ञा की प्रतीक्षा में चुपचाप खड़ा था। चारों ओर सन्नाटा था। बँगले के पास केवल दर्ज़ी की एक मशीन समान रूप से खरखराती हुई वहाँ की निस्तब्धता भंग कर रही थी। मिसेज़ राय के मस्तक पर बिजली का पंखा निःशब्द भाव से चलता हुआ मेज़ पर के काग़ज़-पत्र बिखरा रहा था। उसने उनके अञ्चल का वस्त्र उड़ा कर हटा दिया था और बिखरे हुए बालों को आँखों तथा मुँह पर उड़ा उड़ाकर उनके साथ अठखेलियाँ कर रहा था। "आह, पंखे ने तो नाक में दम कर दिया!" यह बात मृदुस्वर से मन ही मन कह मिसेज़ राय बिखरे हुए काग़ज़ों को सँभालने लगीं।

घर के बाहर आम की डाली पर बैठी हुई चिड़िया उस समय भी गा रही थी। उसकी दृष्टि स्वच्छ तथा निर्मेघ आकाश पर लगी थी, मानो किसी सुदूर देश की एक पुकार उसके कानों में गूँज रही थी। उस पुकार में ही वह मानो किसी असीम में विलीन होकर उड़ जाना चाहती थी।

कुछ क्षण तक मिसेज़ राय खिड़की के मार्ग में टकटकी लगा कर चिड़िया की ओर ताकती रहीं। उस समय उनका हृदय शून्य था। उनका गर्व से उद्धत मुख आज न जाने किस चिन्ता से मुरझा गया था, नेत्रों की दृष्टि विषादमय थी। आज से तीन मास पहले का एक सुखमय चित्र उनके अन्तःकरण में उदित हो होकर उन्हें शोकाकुल कर रहा था।

थोड़ी देर के बाद गाना समाप्त करके चिड़िया उड़ गई। मिसेज़ राय ने भी एक लम्बी साँस लेकर कार्य की ओर अपना ध्यान आकर्षित किया।

एकाएक वहाँ की निस्तब्ध गम्भीरता को भंग करती हुई कमरे के बाहर हँसी की एक मधुर ध्वनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनाई पड़ी। पैरों की आहट से चकित होकर मिसेज़ राय टेबिल पर से मस्तक उठा कर देखने लगीं। क्षण ही भर में उनकी कनिष्ठ पुत्री लीला आँधी की सी अबाध गति से दौड़ती हुई कमरे में आकर खड़ी होगई।

उसकी ओर दृष्टि जाते ही रोष और विरक्ति के भाव से मिसेज़ राय का मुँह लाल हो गया।

लीला ढाका की साड़ी पहने थी। उस पर जगह जगह कीचड़ में सने हुए कुत्ते के पैरों के दाग़ थे। इतनी देर तक धूप में दौड़ते दौड़ते उसका मुँह लाल हो गया था। घने और काले बालों की राशि वेणी से खुल कर आँख, मुँह तथा पीठ पर फूल रही थी, वह भी पसीने से तर थी। एक छोटा सा कुत्ता उसके कन्धे पर से मुँह बढ़ा कर सुप्रसन्न दृष्टि से ताक रहा था।

कमरे में पैर रखते ही लीला हाँफते हाँफते माता के पास जाकर खड़ी होगई थी। ओह! आज मैदान में ऐसी दौड़ पड़ी थी मा! यदि तुम एक बार देखती। इतने बड़े धान के खेत के पूरे दस चक्कर लगाये। ओह, दम घुट गया।

मिसेज़ राय ने झल्ला कर कहा—यह तो तुम्हारा चेहरा ही देखने से भली भाँति मालूम हो जाता है। परन्तु तुम्हारी यह चाल-ढाल देखकर मुझसे कुछ कहा ही नहीं जाता लीला! ज़रा देखो तो कि तुम्हारे पैर की और दरी की क्या दशा हो रही है?

माता की यह विरक्तिमय बात सुन कर लीला ने अपनी गोद से टेरियर को ज़रा सा बग़ल कर दिया और झुक कर देखा तो बरामदे से लेकर कमरे की दरी भर में कीचड़ से सने हुए जूतों के दाग़ ही दाग़ पड़े थे।

परन्तु अपराधी ने इससे किसी प्रकार की लज्जा या ग्लानि का अनुभव नहीं किया, बल्कि उसकी चञ्चल आँखें कौतुक और दुष्टता से परिपूर्ण हो उठीं। माता को और भी चिढ़ाकर एक तुलनामूलक समालोचना सुनाने की इच्छा से उसने खूब प्रसन्न-भाव से कहा—परन्तु वीणा कभी ऐसी गन्दगी नहीं कर सकती, क्यों मा?

मिसेज़ राय के विचार से वीणा सौंदर्य और शील की आदर्श थी। वे सदा ही कोई न कोई बहाना खोज कर दुर्विनीत लीला को वीणा के आदर्श का अनुसरण करने की शिक्षा दिया करतीं। लीला की बात सुन कर उन्होंने अत्यन्त गम्भीर भाव से रुखाई के साथ कहा—अवश्य नहीं कर सकती! मेरे दिमाग़ में भी ऐसी बात नहीं आती कि वह कभी इस तरह कोई नादानी का काम कर सकेगी। तुममें और उसमें कितना अन्तर है, यह बात तुम अपने आप समझ सकी हो, इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। सवेरे सवेरे इस तरह सारे शरीर में कीचड़ लपेट कर कहाँ से आ रही हो? क्या किसी भी काल में तुम्हें ज़रा सा ज्ञान न होगा?

मिसेज़ राय ने बिस्कुट खाकर थोड़े से वहीं टेबिल पर छोड़ दिये थे। लीला ने उनमें से कई बिस्कुट उठा लिये और उन्हें कुत्ते के मुँह में डाल कर सुप्रसन्न भाव से कहने लगी—सवेरे उठते ही जिमी को लेकर मैं मैदान में घूमने गई थी। धान के खेत से होकर ख़रगोश भगा जा रहा था। उसे देखते ही मेरा टेरियर उसके पीछे दौड़ पड़ा। साथ ही साथ मैं भी दौड़ने लगी। इसी से तो आज इतनी देर हो गई है! ओह! इतनी भूख लगी है मुझे!

मिसेज़ राय क्षण भर स्थिर भाव से कन्या की अस्त-व्यस्त मूर्ति देखती रहीं। उनकी नाक-भौं चढ़ आई और अत्यन्त ही विषाद तथा रोष की रेखा मुखमण्डल पर झलकने लगी। वे इस बात के लिए कोई भी अच्छा उपाय नहीं निर्दिष्ट कर पाती थीं कि लीला की गँवारू और उजड्ड प्रकृति वर्तमान सभ्यता तथा सौजन्य की सीमा में लाकर किस प्रकार नियन्त्रित की जाय। यह लड़की तो दिन दिन एक विषम समस्या होती जा रही है। इस अद्भुत और गन्दी हालत में यदि कोई [illegible] आदमी इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ा। मिसेज़ राय के मस्तक पर पसीने की बूँदें लकने लगीं।

परन्तु लीला के सम्बन्ध में उसकी माता के हृदय जो दुश्चिन्ता और असन्तोष के भाव बढ़ रहे थे नकी अवहेलना करके वह अपने प्यारे कुत्ते का लार करने लगी।

ज़रा देर के बाद मिसेज़ राय ने कहा—दो दिन ार बीत जायँ तो तुम पूरी बीस वर्ष की हो जाओगी, ाब भी तुम्हें साधारण-सी बुद्धि नहीं आई! मेरा ारा जीवन तुमने बिलकुल अशान्तिमय बना डाला। टना के जज की लड़की सारे शरीर में कीचड़ और ल लपेट कर कुत्ते के पीछे पीछे दौड़ रही है! लोग देखेंगे ो क्या कहेंगे? यह बात जब मन में आती है तब ारा शरीर सूख जाता है। मैदान में किसी जान-हचान के आदमी से तो तुम्हारी भेंट नहीं हुई?

"नहीं, केवल किरण से मुलाक़ात हुई थी। वह ी मेरे साथ-साथ खेल में भाग ले रहा था।"

"किरण?" आश्चर्य की अधिकता से मिसेज़ ाय की आवाज़ बन्द हो गई।

माता का भाव देखते ही उपेक्षा के साथ मुँह उठा कर लीला ने कहा—हाँ किरण। वसन्तपुर का ज़मींदार किरण चौधरी। वह तो रोज़ सुबह-शाम घर पर आता है। उसे पहचानती नहीं हो?

क्रोध के मारे गर्ज कर मिसेज़ राय ने कहा—ख़ूब पहचानती हूँ। तुमसे उसका परिचय पूछने की मुझे आवश्यकता नहीं है। तुम्हारी निर्लज्जता और ढिठाई दिन दिन इतनी बढ़ी जा रही है कि मुझसे कुछ कहा ही नहीं जाता। सबसे अधिक लज्जा और क्लेश की बात मेरे लिए इस कारण है कि तुम मेरी ही कन्या हो।

लीला ने आश्चर्य में आकर कहा—क्यों? क्या किया है मैंने?

अत्यन्त उत्तेजित होकर मिसेज़ राय ने कहा—इससे बढ़कर और क्या करोगी? ज़रा सा अपने "आन-समाज के शिष्टम दम क ज्ञान नहीं, लज्जा का तो तुममें लेश भी नहीं है! क्या यही सब सीखने के लिए इतने रुपये ख़र्च करके तुम्हें लंदन में रक्खा था? तुम्हारी ही तरह वीणा भी तो इतने दिन तक लंदन में रह आई है। इतनी लिखी-पढ़ी है, इसे तो कभी मुझे एक बात भी नहीं कहनी पड़ती। और तुम? ज़रा सा सामाजिक 'एटिकेट' तक तुम्हारे दिमाग़ में नहीं आता। किरण चौधरी एक बाहरी आदमी है। उससे अपना कोई सम्बन्ध नहीं। उसके साथ तुम्हारा कितने दिन का परिचय है, जो उन्नीस-बीस वर्ष की लड़की होकर उसका नाम लेकर पुकारती हो और उसे भी अपने साथ घनिष्ठ व्यवहार करने का अधिकार देती हो? ऐसा करने में क्या तुम्हें ज़रा भी लज्जा नहीं आती? समाज के लोग यह सब बेहयापन देखकर क्या कहेंगे, ज़रा बताओ तो सही।

लीला इतनी देर तक माता की फटकार ध्यान लगाकर सुन रही थी। अन्त में अभियोग का कारण समझकर बहुत ही लापरवाही के साथ कहा—ओह, यह बात है! जिसके लिए इतना बड़बड़ा रही हो! वास्तव में एक ज़रा सी बात को इतना बढ़ा कर किस तरह तुम लोग उसकी चर्चा कर सकती हो, यह देख कर अवाक् रह जाती हूँ। तुम्हें रुष्ट होते देखकर मुझे हँसी आती है मा! सच कहती हूँ तुमसे।

अपनी इस प्रचण्ड वक्तृता के उत्तर का उत्तर इतने थोड़े शब्दों में लीला से पाकर मिसेज़ राय आग के समान जल उठीं। यह लड़की तो इतनी उद्दण्ड और छोटी प्रकृति की है कि इतनी बड़ी बड़ी समस्याओं के सम्बन्ध में गम्भीरता का अनुभव करना जानती ही नहीं। परन्तु मुँहज़ले आदमी तो भीतर की यह सब बात जानते नहीं, व्यर्थ में उन्हीं को दोषी ठहराते हैं। कहते हैं कि अगर किसी तरह की हाँक-दाब या शिक्षा होती तो लड़की का यह हाल होता? घर के बाहर लीला के सबन्ध में कैसी कैसी बातें उठती हैं?

प्रकट रूप से अपनी लाल-लाल आँखें लीला की ओर फेर कर उन्होंने कहा—तुम्हारे लिए यह सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल-प्रपात

[चित्रकार—श्रीयुत असितकुमार हल्दार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—भारत का महत्त्व

भारत अँगरेज़ी-साम्राज्य का मुकुट-भूषण है। वह उसके अस्तित्व के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है। भारत के हाथ में आ जाने से ही 'ब्रिटेन' 'ग्रेट-ब्रिटेन' हुआ है। एक-मात्र भारत की ही बदौलत आज उसका साम्राज्य अपूर्वता का रूप धारण कर गया है। इस बात को संसार के ही नहीं, स्वयं ग्रेट-ब्रिटेन के भी राजनीतिज्ञों ने अनेक बार स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है।

वास्तव में अँगरेज़ी साम्राज्य का अस्तित्व भारत की ही सहायता पर निर्भर है। पूर्वी देशों में उसका जो व्यापार फैला हुआ है उसके वितरण का भी आश्रय-स्थल भारत ही है। उसके जंगी बेड़े को समुद्री मार्ग के लिए भी भारत बड़े भारी बचाव का काम देता है। सेना के लिए अगणित वीर योद्धा भारत ही प्रदान करता है। साम्राज्य की रक्षा के लिए भारतीय सेनायें समय समय पर चीन, दक्षिण-अफ्रीका आदि के युद्धों में लड़ी हैं। पिछले महायुद्ध में उसने दस लाख से भी अधिक सैनिक दिये थे, जिसका दशमांश युद्ध में काम भी आया।

भारत ग्रेट-ब्रिटेन की प्रधान मण्डी है। भारत में जो विदेशी माल आता है उसका दो-तिहाई ग्रेट-ब्रिटेन से ही आता है। अँगरेज़ी साम्राज्य में जितना गेहूँ पैदा होता है उसमें भारत का हिस्सा ५१ फ़ी सदी है। ७३ फ़ी सदी चाय और प्रायः सबकी सब रुई भारत में ही उत्पन्न होती है। भारत की खानों, रेलवे, नहरों, कारख़ानों आदि में ग्रेट-ब्रिटेन की अपार पूँजी लगी हुई है। सम्भवतः वह ३५ करोड़ पौंड की पूँजी का प्रतिवर्ष ब्याज देता है।

भारत अपनी वर्तमान दयनीय अवस्था में भी वसुन्धरा है। आज भी वह अपने इस गुण में संसार के अत्यधिक समुन्नत देशों से मुक़ाबिला करता है। इस सम्बन्ध में युनाइटेड स्टेट्स की 'कामर्स-रिपोर्ट्स' नामक सरकारी पत्रिका में एक महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ है। उस लेख से भारत का गौरव भले प्रकार सिद्ध हो जाता है। उसमें लिखा गया है कि समग्र मानव-जाति का पञ्चमांश भारत में ही निवास करता है। संसार भर की वार्षिक उपज में ५ फ़ी सदी भारत का हिस्सा है उसके आयात और निर्यात के अंकों से यही प्रकट होता है कि उसका विदेशी व्यापार के बिना भी काम चल सकता है। बाहर से भारत में कोई १ अरब डालर का माल आता है और इससे कुछ ही अधिक मूल्य का अपना माल वह बाहर भेजता है।

परन्तु भारत की समृद्धि का आधार उसकी कृषि है ७५ फ़ी सदी से भी अधिक यहाँ के लोग कृषि के द्वारा ही अपना निर्वाह करते हैं। भारत में ८ करोड़ एकड़ भूमि में चावल, ४॥ करोड़ एकड़ भूमि में ज्वार-बाजरा, ३ करोड़ एकड़ में गेहूँ, २ करोड़ १० लाख एकड़ में रुई और १ करोड़ ८० लाख एकड़ में तेलहन बोया जाता है इनके सिवा जूट, ईख, चाय तथा अन्याय धान्यों, मसालों और तम्बाकू की भी अधिक विस्तृत दायरे में खेती होती है। रुई पैदा करने में भारत का संसार में दूसरा नंबर है उसकी रुई की पैदावार का औसत ६० लाख गाँठें पड़ती है। प्रत्येक गाँठ का वज़न ४०० पौंड होता है। यद्यपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए भारत को बाहर से कोई ५ करोड़ डालर की शकर मँगानी पड़ती है, तो भी अधिक शकर पैदा करनेवाले देशों में उसकी गणना की जाती है।

भारत में १८ करोड़ मवेशी और ७ करोड़ भेड़-बकरियाँ हैं। ५० करोड़ डालर का दूध आदि इनसे प्राप्त होता है। इनके मलमूत्र से जो खाद प्राप्त होती है उसका भी मूल्य ३० करोड़ डालर आँका गया है। हड्डियों की खाद भी प्रतिवर्ष ७० लाख डालर की आय प्रदान करती है। ६ करोड़ रुपये की आय प्रतिवर्ष चमड़े के व्यवसाय से होती है।

जंगलों की लकड़ी से भी ४ करोड़ ५० लाख की आय प्रतिवर्ष होती है। इसके सिवा उनसे साल में २० करोड़ रुपये की लाख भी प्राप्त होती है। इसके सिवा बर, टरपेंटाइन, चन्दन आदि से भी १४ करोड़ डालर की प्रतिवर्ष आय होती है। जंगलों का क्षेत्रफल दस करोड़ एकड़ होगा।

खनिज पदार्थों से भी भारत परिपूर्ण है। यहाँ अच्छी श्रेणी का कच्चा लोहा पाया जाता है। २० लाख टन लोहा, २ करोड़ २० लाख टन कोयला, ३० करोड़ गैलन मिट्टी का तेल प्रतिवर्ष प्राप्त होता है। चाँदी और सोना भी ५ करोड़ मूल्य का निकलता है। इनके सिवा शीश, टीन, राँगा, अबरख, नमक, शोरा, मंगानीज़ ऐसी चीज़ें भी काफ़ी परिमाण में प्राप्त होती हैं।

यद्यपि भारत विशेष रूप से कृषिप्रधान देश है, तो भी संसार के ७ प्रधान औद्योगिक देशों में उसकी भी गणना होती है। भारत में रुई के तीन सौ पुतलीघर हैं। जूट की भी ७० मिलें हैं। रेलवे लाइनों में भारत यूनाइटेड स्टेट्स के बाद है। यहाँ के लोहे के कारख़ाने अमरीका की बनी हुई उत्तम मशीनों से चलते हैं। साल भर में ये ५ लाख टन ईस्पात तैयार करते हैं। परन्तु अभी अनेक उद्योग-धन्धे उसे चाहिए हैं। उदाहरण के लिए ३ करोड़ ५ लाख टन चावल, ३ करोड़ टन गेहूँ, ४ लाख टन तेलहन, ६ लाख गाँठ रुई और ३५ करोड़ पौंड चाय जैसी मुख्य मुख्य वस्तुओं के कारख़ाने अभी उसे खोलने हैं। भारत की यह अपार समृद्धि उसके महत्त्व को भले प्रकार सिद्ध करती है। और उसका यही महत्त्व ब्रिटिश साम्राज्य को गौरव प्रदान करता है।

२—शान्ति या युद्ध !

योरपीय महायुद्ध को समाप्त हुए बारह वर्ष बीत गये। इन बारह वर्षों में इस संसार के प्रमुख राष्ट्रों का इस बात की ओर विशेष रूप से ध्यान रहा है कि संसार में चिरकाल के लिए शान्ति स्थापित हो जाय। इसके लिए आपस में उन्होंने समझौता करके इस बात की प्रतिज्ञा की है कि भविष्य में किसी झगड़े के लिए तलवार न निकाली जायगी, किन्तु सारे झगड़े पंचायत के द्वारा ही तय हुआ करेंगे। इसी तरह जंगी जहाज़ों, स्थल-सेनाओं की संख्यायें भी परिमित कर देने के लिए आपस में बात-चीत चल रही है। निस्सन्देह यह सब अच्छा है। परन्तु जहाँ शान्ति की यह व्यवस्था हो रही है, वहाँ युद्ध की भी तैयारी हो रही है। योरप के प्रायः सभी राष्ट्र शान्ति की ऐसी घोषणा करते हुए अपनी सैनिक तैयारी में ज़रा भी शिथिलता नहीं आने देना चाहते। इस बात का पता उनके वार्षिक बजटों के अङ्कों को देखने से लग जाता है। इस समय योरप के निम्नलिखित राष्ट्र अपनी आय का प्रतिशत इस प्रकार सैनिक तैयारी में ख़र्च करते हैं—

बेल्जियम ७·८१, अल्बेनिया ३६·६, बल्गेरिया १६·७, डेन्मार्क १२·६, इस्थोनिया २३·१, फ़िनलेंड १३·६, फ़्रांस २८·९, इटली २३·४, पोलेंड ३८·७, जूगोस्लेविया २१·३, तुर्की ४०·५ यही नहीं, युनाइटेड स्टेट्स, ग्रेट-ब्रिटेन, फ़्रांस आदि प्रधान राष्ट्रों का सैनिक व्यय ही नहीं बढ़ा हुआ है, किन्तु वे अपने युद्धोपकरणों के प्रकारों को भी अधिकाधिक परिष्कृत करते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए हवाई जहाज़ों को लीजिए। महायुद्ध छिड़ने के पहले सेना-विभाग में इनको कोई स्थान नहीं प्राप्त था। परन्तु युद्ध-काल में इनकी उपयोगिता सिद्ध हुई और आज ये सेना के एक विशिष्ट अंग हो गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति की बात-चीत में सबसे अधिक प्रगल्भ युनाइटेड स्टेट्स का सैनिक व्यय बढ़ कर १३,३६,५९,४०० पौंड हो गया है और ग्रेट-ब्रिटेन का ११, २०, ००, ००० पौंड। इसी प्रकार फ्रांस का भी सैनिक व्यय पहले की अपेक्षा तिगुना अधिक हो गया है। शान्ति शान्ति का अहर्निश उद्घोष करनेवाले संसार के प्रधान राष्ट्रों की सैनिक तैयारी का ऐसा ही हाल है।

यह सब क्या प्रकट करता है? शान्ति या युद्ध। वास्तव में शान्ति की उद्घोषणा की आड़ में चुपके चुपके सभी राष्ट्र भविष्य के महायुद्ध की तैयारी में संलिप्त हैं। युद्ध-देवता का उपासक योरप शान्ति की बात कैसे सोच सकता है?

३—एशिया के मुसलमानी राज्य

एक एक करके सभी मुसलमानी राजघरानों का प्रताप-सूर्य अस्त हो गया। तुर्की, ईरान और अफ़ग़ानिस्तान के पुराने राजघराने अब अपने अपने राज्य के अधिकारी नहीं रहे। इस समय इन राज्यों का शासन-सूत्र वहाँ के प्रधान सेनापतियों के हाथों में है। यह एक आश्चर्य की ही बात है। तुर्की के ग़ाज़ी कमालपाशा ख़लीफ़ा की सेना में सेनापति रहे हैं। गत योरपीय महायुद्ध के समय गैली-पोली और सीरिया के युद्धों में इन्होंने अपने जौहर दिखाये थे। इसी प्रकार ईरान के रज़ाशाह पहलवी भी ईरान के प्रधान सेनापति हो गये थे। अफ़ग़ानिस्तान के नादिरशाह भी नामी सेनापति ही थे। परन्तु कालचक्र के प्रभाव से ये तीनों महापुरुष इस समय अपने अपने देश में राजपद पर आसीन हैं और अपने सुशासन से देश में सुख और शान्ति की व्यवस्था करके उसको समुन्नत करने के कार्य में लगे हुए हैं।

वे आज नव जीवन का अनुभव करने लगे हैं। राष्ट्रीय भावना प्रधान व्यक्तियों के शासक-पद पर आसीन होने से ऐसा होना सर्वथा स्वाभाविक भी है। और इस उन्नति के युग में एशिया के ये तीनों एक दूसरे के पड़ोसी राष्ट्र कुछ ही दिनों में जापान की तरह वैभव और बलशाली हो जायँगे। भगवान् करे ऐसा ही हो।

तुर्की और ईरान तो एक प्रकार से व्यवस्था में आ गये हैं। इन देशों के निवासियों को अपने नये शासकों के स्वार्थत्याग और सद्भावना का ज्ञान हो गया है, अतएव उनका शासन-कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। परन्तु अफ़ग़ानिस्तान के रङ्ग-ढङ्ग अच्छे नहीं दिखाई देते।

यद्यपि नादिरशाह ने कुछ ही दिनों के भीतर धीरे-धीरे सारे अफ़ग़ानिस्तान पर अपनी प्रतिपत्ति क़ायम कर ली है। बच्चये सक्का के फ़िर्क़े के लोग भी ठंडे पड़ गये हैं, देश के पूर्वी और दक्षिणी भाग के फ़िर्क़ों के वे लोग भी शान्त हो गये हैं जिन्होंने अमानुल्ला का बड़ा विरोध किया था। तो भी उत्तरी और दक्षिणी भाग के निवासियों ने नादिरशाह की अधीनता अभी नहीं स्वीकार की है। परन्तु नादिरशाह ने मुल्लाओं को अधिकार प्रदान करके धार्मिक मुसलमानों को सन्तुष्ट कर दिया है। सेना का पूरा भार अपने भाई शाह महमूदख़ाँ पर डाल कर इसका नये सिरे से सङ्गठन कर रहे हैं। दूसरे भाई मुहम्मद हाशिमख़ाँ को प्रधान मन्त्री बना दिया है। प्रधान मन्त्री एक मन्त्रिमण्डल की सहायता से शासन-सूत्र का परिचालन करता है। इस मन्त्रिमण्डल में अधिकतर वही लोग हैं जो अमानुल्ला के समय में मन्त्री रहे हैं। यह सब कुछ हो रहा है, तो भी कहीं न कहीं विद्रोह उठ ही खड़ा होता है। अभी हाल में बदख़शां के इब्राहीम नाम के एक वीर उजबेक ने विद्रोह कर दिया था। परन्तु नादिरशाह वीर सेनापति ही नहीं हैं, कुशल राजनीतिज्ञ भी हैं। प्रारम्भ में तुर्की और ईरान में भी तो ऐसे विद्रोह हुए थे और अभी तक हो रहे हैं। परन्तु सुव्यवस्था तथा सतर्कता की बदौलत उपद्रव करनेवालों का भले प्रकार दमन किया जा सकता है। आशा है, नादिरशाह भी यथासमय अफ़ग़ानिस्तान में शान्ति और व्यवस्था स्थापित करने में सफलमनोरथ होंगे। और तब इनका भी देश तुर्की और ईरान की तरह समुन्नति की ओर अग्रसर होगा।

४—किसान और अन्न का सस्ता होना

इन प्रान्तों के किसानों का इस समय बड़ी विचित्र परिस्थिति से सामना है। पिछले कई वर्षों के आंशिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकाली अवस्था के बाद जब इस वर्ष खेती की अच्छी उपज हुई और उनके बुरे दिनों के फिरने के लक्षण दिखाई दिये तब एकाएक बाज़ार में ग़ल्ले का भाव गिर गया, और वह इतना गिर गया कि यदि किसान अपना सारा ग़ल्ला बेंच देते हैं तो भी वे अपनी भूमि का लगान पूरा का पूरा भुगताने में असमर्थ हैं। यद्यपि उनके पास अन्न हो गया है, पर उसके सस्ते होने से वे बेचारे उससे लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। ऐसी दशा में सरकार का ध्यान उनकी इस दयनीय अवस्था की ओर जाना चाहिए और उसे अपनी मालगुज़ारी कम करके तथा लगान वसूली मुलतवी करके उनकी सहायता करनी चाहिए।

कहा जाता है कि यह सस्ती आस्ट्रेलिया के गेहूँ के कारण हुई है। आस्ट्रेलिया के गेहूँ के बाज़ार में अधिक परिमाण में होने के कारण तथा यहाँ भी उसकी अधिक उपज हो जाने से गेहूँ सस्ता हो गया। और गेहूँ के सस्ते हो जाने पर अन्य धान्यों का भी सस्ता हो जाना लाज़िमी हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि यहाँ के किसान हाथ पर हाथ रक्खे बैठे हैं और उनकी साल भर की मेहनत की कमाई कौड़ी मोल बिक रही है। मुनाफ़े की कौन कहे, उसके बेंचने से उनकी मजूरी तक नहीं आती है। फलतः यहाँ के किसान बड़े सङ्कट में पड़ गये हैं। ऐसी दशा में सरकार को उनकी रक्षा करने के लिए आगे आना चाहिए। उसे विदेशी ग़ल्ले पर इस प्रकार चुंगी लगाना चाहिए कि उसकी बिक्री यहाँ के ग़ल्ले के भाव को न गिरा पावे। इस सम्बन्ध में सरकार की मुक्तद्वार वाणिज्य-नीति इस देश के लिए उपयोगी नहीं जान पड़ती है। यदि आज यहाँ आस्ट्रेलिया का गेहूँ न आता रहा होता तो बेचारे किसान ऐसी अच्छी उपज के साल में इस दुरवस्था को न पहुँच जाते, बरन उनके घरों में घी के चिराग़ जले होते। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। सब कुछ होते हुए भी आज वे अपना लगान भुगतान करने में असमर्थ हैं। यही नहीं, उन्होंने और उन्हीं की तरह भूस्वामियों ने भी इस दुरवस्था की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया है। आशा है, पिछले समय जब पानी नहीं बरसा था और सूखा पड़ गया था तब सरकार लगान छोड़ तथा मुलतवी कर किसानों की कृतज्ञताभाजन बनी थी, उसी तरह इस मौक़े पर भी वह अपनी उदारता का परिचय देगी। उसका कर्तव्य भी यही है।

५—भारतीय शिक्षा-व्यवस्था

सभ्य योरप के समुन्नत ग्रेट-ब्रिटेन से भारत का घनिष्ठ सम्बन्ध है। ऐसी दशा में उसे योरप की संस्कृत सभ्यता से विशेषरूप से लाभान्वित होना चाहिए था। परन्तु लाभान्वित होना तो दूर रहा, वह तो पूरी तौर से घाटे में ही रहा। जहाँ योरप के छोटे छोटे साधारण स्थिति के देश योरप की वर्तमान सभ्यता के प्रभाव स्वरूप विशेष रूप से समुन्नत हुए हैं, वहाँ भारत अपने पिछले योरपीय सम्बन्ध के डेढ़ सौ वर्ष से भी अधिक काल में बराबर गिरता ही गया। जीवन के उपयोगी आदर्शों को कार्य में परिणत कर योरप समृद्धिपूर्ण और शक्तिमान हुआ है। परन्तु भारत ने योरप से इस सम्बन्ध में कुछ भी उपदेश नहीं ग्रहण किया। यही कारण है कि जहाँ योरप में १०० में ७० व्यक्ति शिक्षित हैं, वहाँ भारत में ८ प्रतिशत ही साक्षर मिलेंगे। और समुचित शिक्षा का देश में प्रचार न होने से भारतीय अर्वाचीन समुन्नति के साधनों का उपयोग करने का ज्ञान नहीं रखते हैं। मैसूर के भूतपूर्व प्रसिद्ध दीवान सर विश्वेश्वरैया ने अन्नमलई-विश्वविद्यालय में भाषण करते हुए इस विषय में बहुत साफ़ साफ़ कहा है। विश्वविद्यालयों की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली को देश-काल के अनुपयुक्त बतलाते हुए आप कहते हैं—

'प्रत्येक विश्वविद्यालय को निस्सन्देह कुछ विद्या दिग्गज तैयार करना चाहिए, परन्तु उसका मुख्य लक्ष्य यही होना चाहिए कि जो नवयुवक और नवयुवतियाँ विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं उन सबको जीविका अर्जन करने तथा देश की आय तथा उपज बढ़ाने के योग्य बनाये। शिक्षा के कार्य में ख़र्च करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे पास इतना अधिक रुपया नहीं है कि अपने राष्ट्रीय जीवन के इस चिन्ताजनक समय में हम उसे अनावश्यक बातों पर व्यय करें। साहित्यिक शिक्षा पर भूत-काल में समय, शक्ति और धन बहुत-सा बरबाद किया जा चुका है, जो या तो घाटेवाला सिद्ध हुआ है या बाज़ार-भाव में कम रहा है। यह त्रुटि इस विश्व-विद्यालय जैसे नये केन्द्र में दूर की जा सकती है। यहाँ के अधिकारियों को आर्थिक तथा औद्योगिक विषयों की शिक्षा को महत्त्व देना चाहिए।'

सर विश्वेश्वरैया का कहना है कि भारत पाश्चात्य देशों की तरह न तो नये नये आविष्कार कर सका है, न नये नये धन्धे ही चला सका है। उसको ऐसी शिक्षा ही नहीं दी गई है कि वह योरपीय देशों की भांति स्वतन्त्र रूप से मोटर-गाड़ियाँ बना सकता, वायुयान और रेडियो से लाभ उठा सकता। योरपीय देशों की अपेक्षा उसके हाथ में अधिक साधनों के होते हुए भी वह अभी तक अज्ञ ही बना हुआ है। और उसका यह अज्ञान तब तक दूर नहीं हो सकता जब तक उसके लिए समुचित शिक्षा का प्रबन्ध नहीं किया जाता।

सर विश्वेश्वरैया महोदय के ये विचार जितने स्पष्ट हैं, उससे कहीं अधिक सत्य हैं।

६—हिन्दू और मुसलमान

भारत की भलाई के लिए हिन्दुओं और मुसलमानों में मेल होना परमावश्यक है। परन्तु मुसलमानों का एक दल हिन्दुओं से सदा चौंकता रहता है। उसका एक कारण है। वास्तव में वह दल हिन्दुओं की उन्नति का अर्थ हिन्दू-राज्य लगाता है, क्योंकि उसकी समझ में स्वराज्य हो जाने पर मुसलमानों को हिन्दू-बहुमत के सामने सिर झुकाना पड़ेगा। एक तरफ़ उसका यह मनोभाव है, दूसरी तरफ़ वह स्वराज्य की अनिवार्य्य आवश्यकता का भी अनुभव कर रहा है। इसलिए कुछ शर्तों के साथ वह राष्ट्रवादी हिन्दुओं से मेल करने के लिए उत्सुक है।

मुसलमानों के प्रमुख नेताओं ने दिल्ली की अपनी प्रसिद्ध सभा में कुछ प्रस्ताव पास किये थे। इन प्रस्तावों द्वारा उन्होंने अपनी वे शर्तें प्रकट की थीं जिनमें निम्नलिखित मुख्य चार शर्तें थीं—

१—सिन्ध एक पृथक् प्रान्त बना दिया जाय।

२—सीमा-प्रान्त और बिलोचिस्तान को दूसरे प्रान्तों के समान अधिकार दिये जायँ।

३—पंजाब और बङ्गाल में चुनाव जातियों की संख्या के अनुसार हो।

४—केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा में मुसलमानों के एक तिहाई मेम्बर हों।

कांग्रेस के आदेशानुसार स्वराज्य की माँग के सम्बन्ध में जो नेहरू-विधान तैयार किया गया था उसमें इन माँगों पर विचार किया गया और उसमें यह सिफ़ारिश की गई कि दूसरी माँग से किसी जाति का विरोध नहीं है, इसलिए वह ज्यों की त्यों स्वीकार कर ली जाय। पहली और तीसरी माँगों के सम्बन्ध में बड़े वाद-विवाद के पश्चात् यह निश्चय हुआ कि सिन्ध अलग प्रान्त बना दिया जाय और पंजाब और बङ्गाल को छोड़-कर लघुसंख्यक मुस्लिमों के लिए और सीमा-प्रान्त तथा बिलोचिस्तान में लघुसंख्यक अ-मुसलिमों के लिए केन्द्रीय और प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाओं में दस साल के लिए उनकी संख्या के अनुसार जगहें सुरक्षित की जायँ। इस प्रकार मुसलमानों की चार माँगों में से तीन पर समझौता हो गया। इसी समय सर आग़ा ख़ाँ ने एक पाँचवीं माँग यह पेश कर दी कि प्रान्तीय सरकारों को अपने सब मामलों के तय करने के लिए अन्तिम निर्णय का अधिकार रहे। नेहरू-रिपोर्ट में यह सिफ़ारिश की गई थी कि यह अधिकार केन्द्रीय सरकार के हाथ में रहना चाहिए। ये माँगें कलकत्ते के सर्वदल-सम्मेलन में पेश हुईं, परन्तु अनुचित ठहराई जाकर अस्वीकृत कर दी गईं।

इससे मुसलमानों का वह दल जो इन माँगों के पेश करने में सबसे आगे था, नेहरू-रिपोर्ट के विरुद्ध होगया और उसने सायमन-कमीशन से सहयोग करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का निश्चय किया। पर मुसलमानों का बहुमत कमीशन से सहयोग न करके देश के विभिन्न दलों के ही साथ रहना चाहता था। इससे मुस्लिम लीग और ख़िलाफ़त कान्फ़रेंस में दो दल हो गये। पहला दल राष्ट्रीय मुसलमानों का था और बहुमत इसी का था। इसलिए ये संस्थायें इसी के हाथ में रहीं। दूसरा दल अराष्ट्रीय मुसलमानों का था। वह सायमन-कमीशन से सहयोग करने के लिए तैयार था। उसने नई मुस्लिम लीग की स्थापना कर डाली। सर मुहम्मद शफ़ी इस दल के नेता हुए और इसने कमीशन का साथ दिया। परन्तु इस दल का देश के मुसलमानों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं है।

यह हाल देखकर श्रीमती सरोजिनी नायडू, महात्मा गांधी, पंडित मोतीलाल नेहरू ने मेल-मिलाप की बड़ी कोशिश की, परन्तु वे नहीं सफल हुए। इधर जब राउंडटेबल कान्फ़रेंस का अवसर आया तब डाक्टर सप्रू जैसे उदार दल के नेताओं ने भी मुसलमानों से समझौता करने का प्रयत्न किया, पर वे भी सफलमनोरथ न हुए। और इस समय लन्दन में भी मुसलमान श्रीयुत जिन्ना की माँगों पर ही दृढ़ हैं। यहाँ तक कि स्वयं प्रधान मन्त्री मिस्टर राम्से मेक्डानल्ड तक हिन्दू-मुसलमानों में समझौता नहीं करा सके। असल बात तो यह है कि कुछ मुसलमान-नेता 'स्वराज्य' के ही पक्ष में नहीं हैं तथा कुछ ऐसे नेता हैं जो यह समझते हैं कि भारतवर्ष बिना इस्लामी झण्डे के नीचे आये स्वाधीन नहीं हो सकता। ऐसे नेताओं के रहते मुसलमानों में राष्ट्रीयता का भाव कैसे प्रधानता ग्रहण कर सकता है? भारत की हिन्दू-मुसलमानों की इस समस्या के हल होने पर ही उसकी भावी सुख-शान्ति निर्भर है, यह जानते रहकर भी क्या हिन्दू ही इतने ऊँचे उठ सकते हैं कि अपने हक़ों पर लात मारकर मुसलमानों के दुराग्रह के आगे सिर झुका दें? सो करने को हिन्दू कभी तैयार नहीं हुए और न निकट भविष्य में उनके तैयार हो जाने की आशा है। इसी से कहा जाता है कि हिन्दू-मुसलमानों का प्रश्न भारतीय राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है।

७—समालोचना के सम्बन्ध में

समालोचना के अनेक तर्ज़ हैं। लोग अपने संस्कारों के अनुसार, अपने विवेक के अनुसार उनका उपयोग करते हैं। कोई आलोचक संहार करता है तो कोई रचना भी करता है, परन्तु एक ऐसा भी होता है जो न तो संहार करता है और न रचना करता है, वह केवल गाली-गलौज करता है। परन्तु सबसे भयङ्कर आलोचक वह होता है जो आड़ से चोट करता है। ऐसे आलोचकों से हमें भी अनेक बार पाला पड़ा है। कितनी ही बार ऐसों की वारों की उपेक्षा की है और कितने ही वारों का उत्तर भी दिया है। जिनकी बात की वक़त है, जिनमें मौलिक भावों की क्षमता है और जो वास्तव में ज्ञाता हैं उनकी उपेक्षा भी तो नहीं की जा सकती। ऐसे अवसर पर अपनी स्थिति को स्पष्ट कर देना आवश्यक हो जाता है। परन्तु अधिकतर उपर्युक्त ढङ्ग के आलोचकों को उत्तर देना ही श्रेयस्कर होता है। गाली-गलौज करने तथा छिपकर वार करने में जिसे मज़ा मिलता हो वह उसका ख़ुशी से उपभोग करे। हम तो उस मार्ग को दूर से सहस्र बार नमस्कार करते हैं। और यह सब यहाँ लिखा भी नहीं, यदि प्रसङ्ग न आ जाता। अभी हाल में श्रीयुत उदित मिश्रजी ने भारत में एक लेख छपाया है। उसमें आपने हिन्दी के 'धुक्कड़' लेखकों से कुछ निवेदन किया है। आप लिखते हैं—

'हम हिन्दीवालों के लिए बड़े दुःख की बात है कि हम लोगों में परस्पर स्नेह कम है। अपनी अपनी योग्यता और अपनी अपनी उपज को गोद में लेकर सो जाने में आनन्द मानते हैं। दूसरे की क्या अवस्था है—उसकी क्या योग्यता है, उसका कैसा स्वभाव है—इन बातों को जानने का कष्ट नहीं उठाते। किसी एक से ग़लती हो गई तो चार और दूसरे लट्ठ लेकर तय्यार हो जाते हैं और जब तक विचारे की नाक में दम नहीं कर देते नहीं मानते। किसी की तिनके ऐसी ग़लती को पहाड़ बनाना तो हमारे लिए साधारण बात है। 'सुधा' के लिए 'माधुरी' को और 'माधुरी' की बातें 'सरस्वती' को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं लगतीं। यदि कोई 'भारत-मित्र' में लेख लिखता है तो उसको 'स्वतन्त्र' की भाषा की शिकायत है, साथ ही स्वतन्त्र को 'विश्वमित्र' की टिप्पणी रूखी-सूखी प्रतीत होती है। इन पत्रों से जिनका जिनका सम्बन्ध है—उन सबसे परस्पर स्नेह नहीं टूटा तो फिर बात ही क्या रही। समझ में नहीं आता कि यह क्या मामिला है। हम लोगों के इस स्वभाव के कारण बड़ा अनर्थ हो रहा है। हमारी बैठक का समय एक दूसरे के बनाने ही में जाता है। सबसे बढ़कर आश्चर्य तो यह है कि सभी प्रेम-स्नेह की महिमा सर्व साधारण से अधिक जानते हैं। होना यह चाहिए कि हिन्दी लेखकों में परस्पर भ्रातृभाव का सम्बन्ध हो। क्योंकि सभी एक ही अखाड़े के लड़ंत हैं। एक दूसरे की खोट निकालने का नाम यदि साहित्य की उन्नति है तो इसको दूर ही से प्रणाम करना चाहिए।'

हाँ, सचमुच दूर ही से प्रणाम करना चाहिए। परन्तु आपका यह प्रेम का आलाप कौन सुनेगा? यहाँ मिश्रजी से हमारा एक निवेदन है। वह यह कि आपका यह लिखना कि 'माधुरी' की बातें 'सरस्वती' को अच्छी नहीं लगतीं, यदि 'यथार्थ' लिखा गया है तो वह अयथार्थ है। माधुरी तो एक श्रेष्ठ पत्रिका है, किसी साधारण स्थिति के भी पत्र की उपयोगिता को सरस्वती स्वीकार करती है तब अच्छा लगने, न अच्छा लगने की बात कहाँ!

८—अपूर्व बालक

विधाता की सृष्टि के नियमों को समझना बड़ा ही कठिन है। समय समय पर उसमें ऐसे चमत्कार देखने में आते हैं कि देखनेवालों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। गत २६ आक्टोबर को ऐसा ही एक चमत्कार देखने का हमें भी अवसर मिला। उसी का विवरण हम सरस्वती के पाठकों के सामने उपस्थित करते हैं।

श्रीयुत मेहता मगनराजजी के पुत्र भैरूंराजजी जोधपुर रेलवे के ऑडिट ऑफ़िस में कार्य करते हैं। इनके तीन पुत्रों में सबसे छोटे पुत्र का नाम रत्नराज है। इसका जन्म २५ दिसम्बर १९२४ को हुआ था। यह बालक क़रीब पौने छः वर्ष का होने पर भी अँगरेज़ी में अच्छी तरह से बात करता है। २६ आक्टोबर को यहाँ के राजकीय पुस्तकालय के लाइब्रेरियन श्रीयुत पुरुषोत्तमजी पुरी की कृपा से हमें इस बालक से बातचीत करने का अवसर मिला। उस समय अन्य अनेक सज्जन भी पुस्तकालय में उपस्थित थे। अँगरेज़ी में बातचीत होने के बाद उक्त

[श्री चिरंजीवी रत्नराज]

बालक को महात्मा गाँधी की अँगरेज़ी में की आत्मकथा का एक पैरा पढ़ने को दिया गया, जिसे उसने सबके सामने पढ़ कर सुना दिया। इसी प्रकार उक्त जीवन-चरित की कुछ पंक्तियाँ बोलने पर उसने काग़ज़ पर लिख दीं। इस डिकटेशन में लिखवाये गये अँगरेज़ी भाषा के बड़े बड़े शब्दों में से एक दो को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ सबको उसने शुद्ध रूप से लिख दिया था। इसके बाद उसने इलस्ट्रेटड लंडन न्यूज़ की जो उस रोज़ नया ही आया था, कुछ पंक्तियाँ स्वयं ही पढ़ कर सुनाईं। यह बालक हिन्दी भी ठीक तौर से पढ़ लेता है। मेहता भैरूंराजजी का कथन है कि यह कभी कभी उनके नाम अँगरेज़ी में पत्र भी लिख रखता है और उसमें अपने भावों को अच्छी तरह व्यक्त कर लेता है। उन्हीं से यह भी ज्ञात हुआ कि १५ नवम्बर १९२७ के रोज़ वे अपनी जैन-धर्म-सम्बन्धी उपासना कर रहे थे। उस समय उनके हाथ में हिन्दी की एक पुस्तक थी। रत्नराज ने उसको लेना चाहा। इस पर उन्होंने समझा कि वह नाहक ही पुस्तक को ख़राब कर देगा, इससे देने से इनकार कर दिया। परन्तु जब उसने बहुत आग्रह किया तब पुस्तक बन्द करके उसके हाथ में दे दी। बालक ने उसको लेकर वही पृष्ठ ढूँढ़ लिया जिसे वे उस समय पढ़ रहे थे। इसके बाद उन्होंने उसको एक पृष्ठ का 'शीर्षक' दिखला कर फिर पुस्तक बन्द कर दी और इसे उस स्थल को निकालने को कहा। रत्नराज ने थोड़ी ही देर में वह 'शीर्षक' ढूँढ़ कर निकाल दिया।

महता भैरूराजजी की ही ज़बानी यह भी ज्ञात हुआ कि उक्त बालक का बड़ा भाई पढ़ना शुरू करते समय जब 'पिकचररीडिंग' करने लगा तब वह भी पास बैठ कर देखा करता था और जब उसने कुछ होश सँभाला तब प्रत्येक वस्तु का अँगरेज़ी नाम पूछने लगा और इस तरह उसने अपना शब्द-भाण्डार तैयार कर लिया है।

ईश्वर इस प्रतिभाशाली बालक को चिरायु करे, यही हमारी आन्तरिक कामना है।

—विश्वेश्वरनाथ रेउ

९—स्वर्गीय बाबू नन्दलाल शील

११ नवम्बर १९३० को बाबू नन्दलाल शील का इलाहाबाद (मुट्ठीगंज) में देहान्त हो गया। युक्त प्रदेश में जो बंगाली-परिवार १८५७ के ग़दर से पहले आकर बसे थे उनमें बाबू साहब के पिता बाबू त्रैलोक्यनाथ शील भी एक थे। वे लगभग १८५० के बंगाल से काशी और काशी से आगरा आये। उन दिनों आगरा में गवर्नर-जनरल का दफ़्तर था। वहाँ किसी काम पर नौकर हो गये। १८५७ में जब सिपाहियों ने ग़दर मचाया, उस समय वे इटावा में थे। इटावा से संन्यासी के वेश में भाग कर हरद्वार चले गये। जब उनको संवाद मिला कि इटावा में अँगरेज़ी अमलदारी होगई और शान्ति विराजने लगी है तब लौट आये। उन्होंने इलाहाबाद के मुट्ठीगंज के घोष-परिवार में विवाह किया। वे इटावा की कलक्टरी में नौकर हो गये। सन् १८७९ में अँगरेज़ी नौकरी से पेनशन लेकर वे हैदराबाद चले गये और निज़ाम-सरकार की नौकरी कर ली। बाबू नन्दलाल और उनके भाई-बहनों का जन्म इटावा में ही हुआ था। १८८७ में त्रैलोक्य बाबू का स्वर्गवास हो गया। उस समय १७ वर्ष की अवस्था में नन्दलाल बाबू हैदराबाद के अँगरेज़ी के फ़िनेन्शियल सेक्रेटरी आफ़िस में ६० रुपये मासिक पर नौकर हो गये। इसी दफ़्तर में १४ वर्ष के उपरान्त वे ९००) पर फ़र्स्ट असिस्टेन्ट सेक्रेटरी मुक़र्रर हुए और कुछ दिनों के बाद १५००) पर पूरे फ़िनेंशियल सेक्रेटरी हो गये। वे कुछ दिनों तक अकाउन्टेंट जनरल भी रहे। १९०४ से वे हैदराबाद में दिवानी के तोशाख़ाने के सुपरिन्टेंडेंट हो गये। उसके लिए उनको ३००) अलग मिलते थे। १९१३ में नन्दलाल बाबू ने हैदराबाद से पेनशन ले ली। इसके बाद वे मदरास में जाकर रहने लगे। गत वर्ष की जनवरी में वे अपने बड़े भाई अध्यापक अमृतलाल शील एम० ए० के पुत्र हैदराबाद-इंजीनियरिंग स्कूल के अध्यापक श्रीयुत विनयभूषण शील के विवाह में इलाहाबाद आये। वे मदरास फिर जाना ही चाहते थे कि हृदरोग से पीड़ित हो गये और ११ नवम्बर को परलोक को सिधार गये।

नन्दलाल बाबू ने इटावा में मदरसे में पढ़ते समय फ़ारसी पढ़ी थी। हैदराबाद जाने के बाद उन्होंने फ़ारसी और अरबी में भी इतनी योग्यता प्राप्त करली कि वहाँ के अरबी-फ़ारसी के विद्वान् उनका विद्वान् के रूप में आदर करने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद में उन्होंने अनेक लोकोपयोगी काम किये हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

(१) गवर्मेंट आफ़ इंडिया ने एक अँगरेज़ ओहदेदार को हैदराबाद की आर्थिक अवस्था का सुधार करने के लिए भेजा था। नन्दलाल बाबू पहले उसके मुहर्रिर हुए, फिर पर्सनल असिस्टेंट हो गये। उस समय अँगरेज़ी ढङ्ग पर वहां का बजट बनने लगा। हिसाब के दफ़्तर में अँगरेज़ी ढङ्ग से उन्नति की गई।

(२) हिसाब रखने के क़ायदे 'अँगरेज़ी सिविल-सर्विस रेगुलेशन' के ढङ्ग के बनाये गये और उन क़ायदों के अनुसार राज्य के सब दफ़्तरों में काम होने लगा।

(३) हैदराबाद की आर्थिक अवस्था बहुत ख़राब थी। ज़रूरत पड़ने पर बाज़ार में दो रुपये सैकड़ा सूद पर क़र्ज़ लिया जाता था। सुधार के बाद सरकार का क़र्ज़ सब अदा हो गया और सूद का भाव आठ आना हो गया।

(४) सरकार ने बीस लाख रुपये का प्रामिसरी नोट छः रुपये सैकड़े सूद पर चलाया। हिन्दुस्तान में देशी रियासत का पहला यही प्रामिसरी नोट था।

(५) राज्य में नाना प्रकार के सिक्के चलते थे। अब मिल्ड एज (milled edge) के रुपये बनने लगे। अठन्नी, चवन्नी, दुअन्नी, एकन्नी भी चलाई गई

(६) ५,१०,५०,१००० रुपये के करंसी नोट चलाये गये।

(७) फ़िनेंशियल सेक्रेटरी हो जाने पर बाबू साहब ने दूसरे विभागों में भी उन्नति की। डाकख़ानों में नये ढङ्ग के टिकट बनाये गये। मनीआर्डर, वैलूपेबल, इनश्योर (बीमा), सेविंग बैंक इत्यादि जैसा अँगरेज़ी में है, वैसा हैदराबाद में भी चलाया गया।

(८) चिकित्सा-विभाग में यूनानी मदरसे की पढ़ाई में शरीर-विज्ञान, चीरना-फाड़ना इत्यादि अँगरेज़ी ढङ्ग पर चलाया गया। हर बड़े नगर में ऐलोपेथिक (मर्दाना-ज़नाना) दवाख़ाने के साथ यूनानी हकीम भी इलाज करते हैं। अँगरेज़ी ढङ्ग पर हैदराबाद शहर में नाना प्रकार की यूनानी दवाइयाँ तैयार की जाती हैं और वहाँ से दवाख़ानों को भेजी जाती हैं।

(९) हैदराबाद शहर के हर मुहल्ले में प्रायमरी स्कूल, तहसीलों और बड़े नगरों में मिडिल स्कूल [जिनमें अब बहुतेरे इन्टरमीडियेट कालेज बन गये हैं] खोले गये।

[स्वर्गीय बाबू नन्दलाल शील]

(१०) हैदराबाद में एक मरतबा धर्म्म-शिक्षा पर हिन्दू-मुसलमानों में मत-भेद हुआ था। कुछ मौलबियों और कुछ पण्डितों की सभा स्थापित हुई, परन्तु उसका कोई उपयुक्त सभापति नहीं मिलता था। पीछे नन्दलाल बाबू उस पर नियत हुए, क्योंकि हिन्दू-मुसलमान दोनों धर्म्म-शास्त्र उनके पढ़े थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०—श्रीयुत राजकुमार रघुवीरसिंह

श्रीयुत राजकुमार रघुवीरसिंह हिन्दी के प्रेमी ही, होते हुए भी आप हिन्दी से नाक-भौंह नहीं सिकोड़ते किन्तु उसमें प्रेम के साथ उच्च कोटि के लेख लिखते

नहीं उसके सुलेखक भी हैं। अँगरेज़ी के पूर्ण विद्वान् पुस्तकें लिखते हैं। यदि आपकी ही तरह अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेशों के भी राजकुमार हिन्दी के प्रति अनुरागशील हो जायँ तो फिर हिन्दी के दिन फिर जायँ।

श्रीयुत रघुवीरसिंहजी मध्य-भारत में सीतामऊ-राज्य के उत्तराधिकारी हैं। आपके पिता श्रीमान् रामसिंहजी एक बड़े ही सुयोग्य और विद्वान् शासक हैं। आपने राजकुमार साहब को राजकीय कालेजों में शिक्षा न दिला कर पब्लिक स्कूलों और कालेजों में पढ़ाया है। इस वर्ष राजकुमार रघुवीरसिंह ने एल-एल० बी० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की है। आप पहले राजकुमार ग्रेजुएट हैं। सरस्वती के इस अंक में अन्यत्र आपका एक कवित्व-मय लेख प्रकाशित हुआ है। आपने 'मध्य-कालीन भारत' नामक एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक ग्रन्थ भी प्रणयन किया है। आप कहानी लेखन-कला तथा हिन्दी के प्रसिद्ध प्रसिद्ध कहानी-लेखकों की कृतियों की समालोचना पर एक विशद ग्रन्थ लिख रहे हैं। मातृ-भाषा को आपसे बड़ी बड़ी आशायें हैं। भगवान् आपको चिरायु करें।

११—भूल-सुधार

मैं ल्हासा कैसे पहुँचा शीर्षक लेख में पहले और दूसरे पृष्ठ पर जो चित्र छपे हैं उनके नाम ग़लत छप गये हैं। पहले चित्र में राहुलजी कुर्सी पर बैठे हैं। और दूसरा चित्र उनके अमरीकन मित्र मिस्टर सूथर का है।

—सम्पादक

१२—चित्र-परिचय

१—रंगीन चित्र

कुरुक्षेत्र में—महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन ने खड़े हो कर देखा कि दोनों ओर की सेनाओं में मेरे सम्बन्धी तथा आत्मीय युद्ध में भाग लेने के लिए खड़े हैं और राज्य के लोभ से इन्हीं पर मुझे अस्त्र चलाने होंगे तब उन्होंने मोह-वश अपने अस्त्र कृष्णजी के सामने रख दिये और युद्ध करने की अनिच्छा प्रकट की। कृष्णजी ने उस समय उन्हें कर्तव्यनिष्ठ होने का उपदेश किया था और संसार की असारता तथा जीवन की अनित्यता आदि का सविस्तर वर्णन करके उनका मोह दूर किया था। यह चित्र इसी घटना के आधार पर चित्रित किया गया है। अर्जुन मोहान्ध होकर रथ पर बैठे हैं और श्रीकृष्णजी उन्हें उप-देश दे रहे हैं।

देवत्रय—महाभारत-युद्ध में द्रोणाचार्य के बाद जब कौरवों ने कर्ण को सेनापति बनाया तब उन्होंने अर्जुन का वध करने की प्रतिज्ञा की। इस प्रतिज्ञा की बात जान-कर कृष्ण अधीर हुए और वे शङ्कर को अपने साथ लेकर ब्रह्मा के पास ब्रह्मलोक गये और उनसे अर्जुन की मृत्यु के सम्बन्ध में पूछ-ताछ की। ब्रह्मा ने उनको आश्वासन दिया। इस चित्र में इसी सम्मिलन का चित्रण किया गया है।

उमर ख़ैयाम—इस अङ्क के १४५ पृष्ठ पर उमर ख़ैयाम का एक चित्र प्रकाशित हुआ है। इसके निर्माता श्रीयुत उपेन्द्रचन्द्र घोष दस्तिदार ने उमर की जिस रुबाई के आधार पर इसका चित्रण किया है उसका भाव इस प्रकार है—प्रियतमे, अपना मौन भङ्ग करके मेरे समीप तुम मधुर एवं कोमल स्वर का गुञ्जन करो। यह मदिरा का प्याला और निर्जन वन ही हमारा स्वर्ग है।

२—सादे चित्र

१—श्रीयुत एस० जी० ठाकुरसिंह ने कलापूर्ण चित्र अङ्कित करने में ख़ासी ख्याति प्राप्त की है। आप पंजाब के एक नामी चित्रकार हैं। आपके चित्रों के ३ अल्बम प्रकाशित हुए हैं। प्रत्येक का मूल्य २) है वे इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद से मिलते हैं। सरस्वती के इस अङ्क में आपके आठ चित्र दिये गये हैं। ये एक रंग में छापे गये हैं। चित्र इस प्रकार हैं—

शेषरागिनी—इस चित्र में एक हिन्दू ललना की शृङ्गार-क्रिया का चित्रण किया गया है। भारतीय महिलाओं की शृङ्गार-प्रक्रिया का कितना सुन्दर और स्वाभाविक चित्रण किया गया है।

चित्रलेखा—हिन्दू-सभ्यता का चित्रकला से अटूट सम्बन्ध है। हिन्दू घरों की महिलायें तक अपने प्रतिदिन के व्यवहार में इस कला का अभ्यास आज भी करती रहती हैं। इस चित्र में चित्रकला में निरत एक महिला का चित्रण किया गया है। उसके मुखमंडल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर तन्मयता की जो छाप है उससे बिलकुल स्पष्ट है कि इस कला से इसे कितना प्रेम है। चित्रकार ने जिस कोमलता से अपनी कूँची चलाई है उसके कारण चित्र बहुत ही नेत्ररञ्जक और मनोहर हो गया है।

प्रतीक्षा—इस चित्र में एक नायिका का चित्रण है। वह अपने प्रेमी के आगमन की व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रही है।

यौवन काल का अवसान—प्रौढ़ा नायिका का चित्रण इसमें किया गया है।

प्रार्थना-निरता—इस चित्र में प्रार्थना-निरता एक मुसलमान महिला का चित्रण किया गया है। धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करने पर उसके हृदय में एक ऐसी तन्मयता का आविर्भाव हुआ है कि वह एकाएक अपने को भूल सी गई। चित्रकार को उसके मुख-मण्डल पर मनोवैज्ञानिक परिवर्तन का चित्रण करने में आश्चर्य-जनक सफलता हुई है।

स्वप्न या प्रेम—इस चित्र में प्रगाढ़ निद्रा से तुरन्त की उठी हुई एक नायिका का चित्रण किया गया है। उसका चित्त इस समय भी स्वप्न-लोक में विचरण कर रहा है और नेत्रों पर निद्राजनित आलस्य की रेखा विराजमान है। किसी सुखमय स्वप्न की स्मृति के कारण नायिका का सारा शरीर पुलकित हो रहा है।

सूर्यास्त—इस चित्र में अस्तंगत सूर्य का चित्रण किया गया है। सूर्य अपना समस्त तेज तथा किरणजाल लेकर मानो सुदूर पृथ्वी में प्रवेश करने जा रहे हैं। इनकी आभा कितनी कोमल तथा आकर्षक चित्रित की गई है।

काश्मीर की झील—काश्मीर का वर्णन भू-मण्डल के स्वर्ग के रूप में किया गया है। इस स्वर्ग में चित्त को सबसे अधिक शान्ति और आनन्द मिलता है नौका में बैठकर झील में विहार करने में। काश्मीर की झीलों के आस-पास का प्राकृतिक दृश्य बहुत ही सुहावना है और वे स्फटिक के समान स्वच्छ जल से सदा परिपूर्ण रहती हैं। इस चित्र में वहाँ की एक झील का अनुपम दृश्य दिखलाया गया है।

२—श्रीयुत असितकुमार हल्दार नामी चित्रकार हैं। आप चित्रकला में निपुण ही नहीं हैं, किन्तु इस कला के आप एक प्रामाणिक विद्वान् भी हैं। यहाँ आपकी कला के चार नमूने दिये गये हैं, जो इस प्रकार हैं—

सङ्गीत-शिखा—यह चित्र रवीन्द्र बाबू के एक गीत के आधार पर चित्रित किया गया है। गीत का भाव है कि मेरे हृदय में तुमने जिस स्वर की अग्नि लगा दी वह सर्वत्र विस्तृत हो रही है। चित्र में भगवती वीणा-पाणि अपनी वीणा लिये हुए विराजमान हैं और वीणा के मधुर झङ्कार से स्वर की अग्नि-शिखायें निकल निकल कर चारों ओर फैल रही हैं।

रास-लीला—कृष्ण के भक्तों में रास-लीला का बहुत महत्त्व प्राप्त है। श्रीमद्भागवत में उसकी बड़ी महिमा है। फलतः चित्रकारी में भी उसको ऊँचा स्थान दिया गया और अनेक चित्रकारों ने रास-लीला का चित्रण करके अपनी चित्रकारी को पुनीत किया है। इस चित्र की भी रचना इसी कामना से हुई है और चित्रकार महोदय अपने प्रयत्न में सफलमनोरथ हुए हैं।

कृष्णलीला—यह चित्र राधा और कृष्ण की प्रणय-लीला के आधार पर अङ्कित किया गया है। राधा ने कृष्ण के प्रेम की अनेक प्रकार से परीक्षा ली थी। अन्त में राधा प्रेम-साम्राज्य की रानी बन बैठीं। गोपिकाओं ने एकत्र होकर चेरियों का रूप धारण कर रक्खा था। वे सब अपनी रानी के शृङ्गार आदि से जैसे ही निबट हुईं वैसे ही गोप-बालकों के साथ अपनी वंशी बजाते नाचते हुए कृष्ण आ पहुँचे और इन्हें रानी के पद पर अभिषिक्त करके अभिषेक का उत्सव मनाने लगे।

जल-प्रपात—यह बड़ा भावपूर्ण चित्र है। पुराने क़िले की दीवार पर खड़ा हुआ एक बन्दी कुमार जल-प्रपात की ओर ध्यानमग्न होकर देख रहा है। इस दृश्य से वह अपने मन में इस बात का अनुभव कर रहा है कि इस प्रपात की भाँति इस विश्व में कुछ आता-जाता रहता है। किसी की स्थिर अवस्था नहीं है। अतएव उसकी विचार-धारा असीम की ओर उन्मुख हो गई है और वह अपने को क़ैदी नहीं समझ रहा है।

Printed and Published by K. Mittra at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गल्प-गुच्छ

गौरमोहन

चार भाग, मू० ३॥।)

छोटी छोटी कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ क्या हैं मनुष्य के अन्तर्जगत् के रहस्यागार हैं। एक एक कहानी एक एक भाव का सजीव चित्र है।

दो भाग प्रत्येक २)

यह प्रसिद्ध उपन्यास 'गोरा' का हिन्दी अनुवाद है। जिन्होंने रवि बाबू के उपन्यास पढ़े हैं वे जानते हैं कि यही उनका सर्वोत्तम उपन्यास है।

श्रीयुत रवीन्द्रनाथ को कौन नहीं जानता। उनके मुख का निकला हुआ एक एक शब्द कितना रहस्य-पूर्ण होता है यह कहने की आवश्यकता नहीं। उन्हीं की ग्रन्थावली की

ये चार सर्वोत्तम पुस्तकें

हैं। इन्हें मँगाना न भूलिए।

नीचे की पुस्तक का मूल्य १॥)

विचित्र सामाजिक कथानक है, इसकी एक एक घटना चक्कर में डालनेवाली है। पुस्तक शुरू करके हाथ से नहीं छूटती। नाम ही देखिए

नीचे की पुस्तक का मूल्य २)

छोटी छोटी गल्पों का संग्रह है। प्रत्येक गल्प विचित्रता से भरी हुई है और मनुष्य-जीवन पर विचित्र असर डालती है।

आश्चर्य-घटना

विचित्र प्रबन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया संस्करण प्रकाशित हो गया

रामचरितमानस

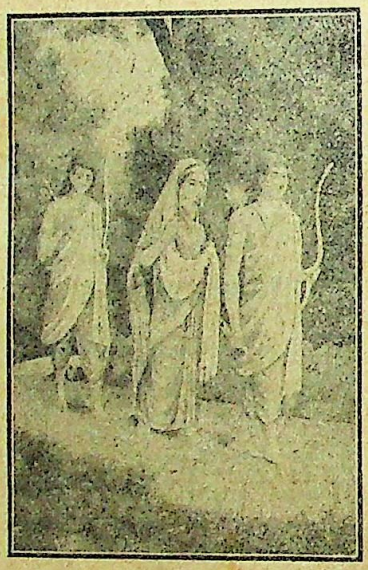

जहँ जहँ रामचरन चलि जाहीं
तेहि समान अमरावति नाहीं

इ०

तुलसीदास

द्वा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(मासिक)

हिन्दी महाभारत—

के विषय में समाचार-पत्र क्या कहते हैं ?

भारत का सुप्रसिद्ध दैनिक इँग्लिश पत्र 'लीडर' लिखता है—

प्रयाग का इंडियन प्रेस महाभारत का एक सुन्दर और सचित्र संस्करण हिन्दी में मासिक रूप से इसलिए निकाल रहा है कि साधारण स्थिति के पाठकों को भी इसे मोल लेने में कठिनाई न हो। × × × जो अङ्क अभी तक प्रकाशित हुए हैं वे इंडियन प्रेस की मुद्रण-सौन्दर्य-सम्बन्धी कीर्ति के सर्वथा अनुरूप हैं। अनुवादक ने उत्कृष्टता के साथ सरलता का भी अधिक ध्यान रक्खा है। पुस्तक में चित्रों का बाहुल्य है।

कानपुर का प्रसिद्ध साप्ताहिक हिन्दीपत्र 'प्रताप' लिखता है—

इलाहाबाद के इंडियन प्रेस ने हिन्दी में एक नये काम का सूत्रपात किया है। उसने हिन्दुओं के प्रसिद्ध ग्रन्थ महाभारत का हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित करना प्रारम्भ किया है। अनुवाद बहुत सरल है। लड़के-लड़कियाँ तक समझ सकते हैं। जो लोग पूरे ग्रन्थ के स्थायी ग्राहक होंगे उन्हें प्रत्येक अङ्क १) में ही मिलेगा। काम बहुत अच्छा है। हम इंडियन प्रेस को उसके लिए बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि हिन्दी-संसार उससे पूर्ण लाभ उठावेगा।

भारत के सुप्रसिद्ध समाचार-पत्रों की ऐसी सैकड़ों सम्मतियाँ हैं। यदि देखना चाहें तो सम्मति-पुस्तक मँगा लीजिए।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये तो बस "बाल-सखा" लेंगे

साल भर का २॥) रुपये

एक प्रति का ।-)

हिन्दी में इनके लिए यही सबसे बढ़िया, सुन्दर और सस्ता पत्र है।

आप अपने बच्चों के हाथ में

बाल-सखा

दे दीजिए

फिर वे आपसे कुछ न माँगेंगे। इसमें ऐसी ऐसी कहानियाँ, कवितायें और लेख रहते हैं कि बालक बड़े चाव से पढ़ते हैं। तसवीरों का तो कुछ कहना ही नहीं है। हँसानेवाले चुटकुले ऐसे रहते हैं कि बालक पढ़ते ही लोट-पोट हो जाते हैं। जो शिक्षा आप सैकड़ों मास्टर रखकर बच्चों को नहीं दे सकते, वह उन्हें केवल बाल-सखा से मिल सकती है। हर्ष का विषय है कि अब इसका उर्दू-संस्करण भी प्रकाशित होने लगा है।

मैनेजर 'बाल-सखा', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तक ! नई पुस्तक !! नई पुस्तक !!!

महात्मा टाल्स्टाय की रचनाओं ने रूस के साहित्य में युगान्तर उत्पन्न कर दिया है। उनका एक एक शब्द हृदय पर जादू का सा प्रभाव डालता है।

इसी लिए आपसे हमारा अनुरोध है कि

टाल्स्टाय की कहानियाँ

अर्थात्

(महात्मा टाल्स्टाय की दस कहाँनियों का हिन्दी अनुवाद)

हमारे यहाँ से मँगाकर एक बार अवश्य पढ़िए।

पुस्तक की विशेषता लेखक के नाम से ही प्रसिद्ध है। समाज तथा राजनीति की गूढ़ से गूढ़ समस्याओं पर सीधी और सरल भाषा के द्वारा प्रकाश डालने में महात्मा टाल्स्टाय सिद्धहस्त थे। संसार में कौन ऐसा साहित्यिक होगा जो उनकी रचनाओं पर मुग्ध न हो। ऐसे प्रगल्भ लेखक की रचनाओं का हिन्दी में रसास्वादन करना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर मँगवा लीजिए। अनुवाद की भाषा सरल, सरस तथा रोचक है। मूल्य १॥)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के लिए तीन खेल

बड़ी मज़ेदार भाषा में सावित्रीजी का चरित्र लिखा गया है। कई एक सुन्दर चित्र हैं। मूल्य ।) चार आने

卐

जैसा नाम है ठीक वैसा ही गुण है। इसे पढ़ने में बच्चों को बड़ा आनन्द आता है। मू० ।) चार आने

卐

इस पुस्तक की सचित्र विचित्र कहानियाँ पढ़कर अचरज पैदा होता है। मू० ।) चार आने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के लिए तीन रत्न

कई चित्र देकर धर्मराज युधिष्ठिर की धर्मगाथा रोचक भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।=) छः आने

इसमें भक्त प्रह्लाद की सचित्र जीवनी बड़ी रोचक और सरल भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।) चार आने

इस पुस्तक में प्रसिद्ध दक्षपुत्री सती के चरित्र का सचित्र रोचक वर्णन है। मूल्य ।-) पाँच आने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन संन्यासी

इसे पढ़ कर आप अचम्भे में पड़ जायँगे।
नागरिक और ग्राम्य-जीवन का सुन्दर चित्र, सामाजिक और धार्मिक समस्याओं पर उत्तम विचार, जासूसीपूर्ण विचित्र घटनायें, आपको इसी पुस्तक में मिलेंगी।

सजिल्द और सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल ३॥)

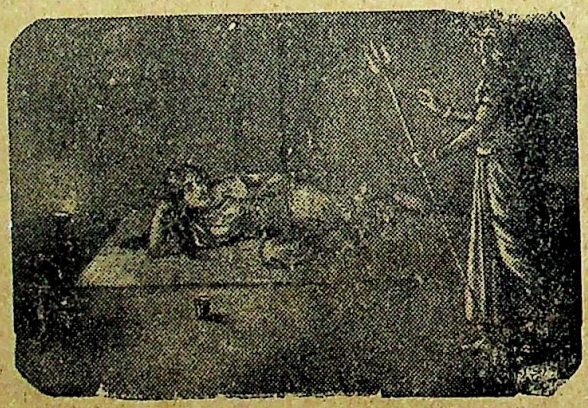

प्रत्येक चित्र, विचित्र रहस्य प्रकट करता है।

लीलावती ने आँख खोल कर देखा—
लाल साड़ी पहने काले रङ्ग की एक स्त्री सामने खड़ी है। उसके हाथ में त्रिशूल मन्द मन्द हिल रहा है जिसका अगला हिस्सा लोहू से लिप्त है।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्व पुस्तकें ! अपूर्व पुस्तकें !!

हिन्दी-साहित्य में नई पुस्तकें

मौलाना हाली और उनका काव्य

परलोक-गत शम्स-उल-उलमा मौलाना अल-ताफ़ हुसेन हाली उर्दू के मशहूर कवि हो गये हैं। आप महाकवि ग़ालिब के शिष्य थे। उर्दू-साहित्य में आपकी ख़ासी धाक थी। आपने उर्दू-कविता की धारा में एक-दम परिवर्तन कर दिया था। मुस्लिम जाति की जागृति में आपकी उर्दू-कविता का विशेष स्थान है। आपकी कविता उच्च कोटि की होती थी। उसमें ओज है, तेज है, माधुर्य है और मुर्दार लोगों के लिए वह हण्टर का काम देती है। उन्हीं विख्यात कविवर की जीवनी पण्डित ज्वालादत्त शर्मा ने लिखी है। साथ में उनकी चुनी हुई कविताओं का अच्छा संग्रह भी दिया गया है। कविता के नमूने अनेक ग्रन्थों से एकत्रित किये गये हैं। पद्यों का अर्थ सरल हिन्दी में दे दिया गया है। पुस्तक के अन्त में कठिन शब्दों का अर्थ जानने के लिए कोष भी दे दिया गया है। सामयिक पत्रों ने मुक्त-कण्ठ से इस संग्रह की सराहना की है। पृष्ठ-संख्या पौने दो सौ से ऊपर। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १) एक रुपये।

मानव-जीवन का विधान

असल में यह पुस्तक संस्कृत में थी जिसका कि चीनी भाषा में अनुवाद हुआ और वहाँ से अँगरेज़ी में भाषान्तरित होकर अब हिन्दी में इसने दर्शन दिये हैं। पुस्तक की उत्तमता का पता आप सिर्फ़ इस बात से पा सकते हैं कि सन् १८१२ ईसवी तक विलायत में इसके पचास संस्करण हो चुके थे।

पुस्तक कोई ४७ प्रकरणों में समाप्त है जिनमें कि विचार, विनय, उपयोग, स्पर्धा, दूरदर्शिता, धैर्य, संतोष, आशा, भय, क्रोध, कामना, पति, पिता, पुत्र, भाई, राजा-प्रजा, स्वामी और भृत्य, उपकारशीलता, दान, कृतज्ञता, मानवशरीर, इन्द्रियों का उपयोग, वृथा गर्व, विपत्ति, विवेक, लोभ, समृद्धि और विपत्ति, दुःख और मृत्यु आदि के सम्बन्ध में मूल्यवान् उपदेश हैं। पुस्तक सभी के काम की है। आकार छोटा, पृष्ठ-संख्या ढाई सौ से ऊपर। मूल्य सिर्फ़ ॥) बारह आने

गुलिस्ताँ

यह फ़ारसी-साहित्य का उत्कृष्ट लोकप्रिय ग्रन्थ है। इसमें लेखक ने राजनैतिक और सामाजिक विषयों पर भी प्रकाश डाला है; कहीं कहीं पर साधारण शिक्षाओं को बड़ा मनोहर रूप दे दिया है। सारी पुस्तक कहानियों के रूप में लिखी गई है जिससे पुस्तक को समाप्त किये बिना उसे छोड़ने को जी नहीं चाहता।

इसमें आपको मुस्लिम-सभ्यता की परिपक्वावस्था का चित्र मिलेगा। इसलिए यदि एक ही ग्रन्थ के द्वारा आप मुस्लिम-साहित्य से परिचय प्राप्त करना चाहते हैं तो आपसे अनुरोध है कि इसको अवश्य पढ़िए।

अनुवाद के विषय में इतना कहना ही बस होगा कि फ़ारसी के विद्वान् और प्रयाग-विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर बाबू बेणीप्रसाद एम० ए० ने इसका हिन्दी-रूपान्तर किया है। भूमिका में शेख शादी के जीवन-चरित्र और काव्य का विस्तृत वर्णन दिया गया है। मूल में यथेष्ट पादटिप्पणियाँ भी लगाई गई हैं, जिससे पुस्तक के असली अभिप्राय को समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर। मूल्य केवल २) दो रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नदीप

अद्भुत करुणा और विनोद का आगार

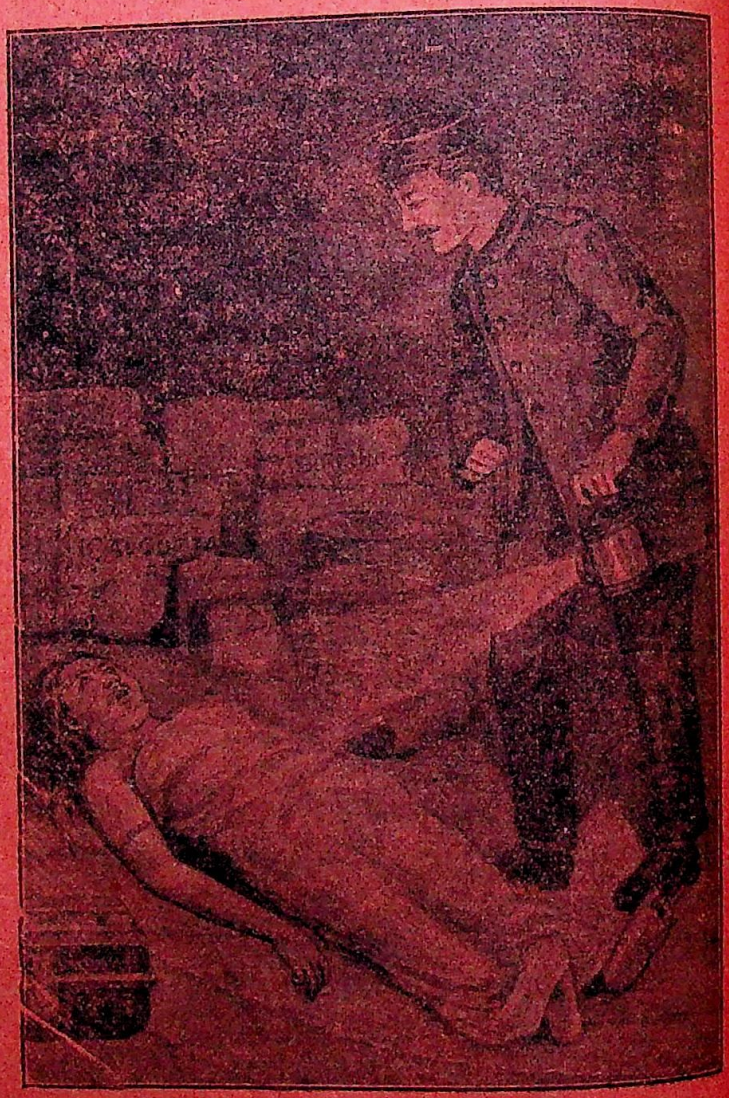

यह शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास बँगला के प्रसिद्ध लेखक प्रभात बाबू की रचना है। इस उपन्यास में पाठकों की कल्पना को विशेष रूप से उत्तेजना मिलती है। इसको प्रारम्भ कर कोई बिना समाप्त किये नहीं छोड़ सकता। पढ़ते पढ़ते कभी आप विस्मय से अभिभूत होंगे, कभी करुणा से द्रवित होंगे, और कभी भक्तिभाव से पुलकित हो जायँगे। पढ़ने में इतना मन उलझ जायगा कि खाने-पीने की भी सुध न रहेगी। उपन्यास पढ़ने का यदि आपको शौक है तो इसे मँगाकर अवश्य पढ़िए। इसकी भाषा सरल, सरस और साधारण बोल-चाल की है। लिखने का ढङ्ग बहुत ही रोचक है। इस पुस्तक में एक से एक सुन्दर कई चित्र भी हैं। सुन्दर जिल्द से विभूषित पुस्तक का मूल्य केवल २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी

की लिखी पुस्तकें

चरित-चर्च्या

यह आचार्य द्विवेदीजी की कृति है। इसमें जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सफलता-पूर्वक कार्य करनेवाले बारह महापुरुषों की जीवनियों का संग्रह है। पुस्तक उपयोगी और शिक्षाप्रद है। मूल्य ॥।=) चौदह आने है।

कुमारसम्भव

यदि आप संस्कृत पढ़े बिना ही जगत्प्रसिद्ध कालिदास की लेखनी का रसास्वादन करना चाहते हैं, और काव्य का आनन्द लूटना चाहते हैं तो इसे अवश्य मँगाइए। मूल्य केवल १)

किरातार्जुनीय

महाकवि भारवि का यह वही काव्य है जिसकी धूम संस्कृत-साहित्य में सैकड़ों वर्षों से मची हुई है। इसमें राजनीति, धर्मनीति आदि कूट कूट कर भरी पड़ी है। पुस्तक ऐसी मनोरञ्जक है कि एक बार शुरू करने से बिना ख़तम किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य २)

कुमारसम्भवसार

कालिदास के "कुमारसम्भव" काव्य का यह मनोहर सार है। प्रत्येक हिन्दी-कविता-प्रेमी को यह मनोहारिणी कविता अवश्य पढ़नी चाहिए। कविता सरस और प्रभाव-शालिनी है। मूल्य ।)

शिक्षा

बाल-बच्चेदार मनुष्यों को हर्बर्ट स्पेन्सर-लिखित शिक्षा-सम्बन्धिनी मीमांसा अवश्य पढ़नी चाहिए। जो इस समय विद्यार्थि-दशा में हैं वे भी एक दिन पिता के पद पर आरूढ़ होंगे। अतएव उन्हें भी इस पुस्तक से लाभ उठाने का यत्न करना चाहिए। आरम्भ में विस्तृत भूमिका, हर्बर्ट स्पेन्सर का जीवन-चरित और पुस्तक का संक्षिप्त सारांश भी है। मूल्य ३॥)

आलोचनाञ्जलि

इस पुस्तक में गवेषणापूर्ण आलोचनात्मक १२ लेख लिखे गये हैं। जिनमें संस्कृत-साहित्य के कई प्राचीन और प्रतिष्ठित ग्रन्थों का परिचय दिया गया है।

पुस्तक की भाषा और वर्णन-शैली कैसी होगी इसके लिए द्विवेदीजी का नाम जान लेना ही पर्याप्त है। हम इतना कह सकते हैं कि पुस्तक एक बार प्रारम्भ करके शायद आप बिना पूरी पढ़े न छोड़ेंगे। मूल्य केवल १)

जल-चिकित्सा

जर्मनी के विख्यात जल-चिकित्सक लुई कुने के सिद्धान्तानुसार जल से ही सब रोगों की चिकित्सा करने का इसमें वर्णन किया गया है। मूल्य ।-)

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति

इस पुस्तक को पढ़ने से मालूम होगा कि हिन्दी भाषा की उत्पत्ति कहाँ से है। पुस्तक बड़ी छान-बीन करके लिखी गई है। हिन्दी भाषा की उत्पत्ति का विवेचन तो इसमें हुई है, इसके अतिरिक्त और भी कितनी ही भारतीय भाषाओं का विचार किया गया है। मूल्य ।=)

कालिदास की निरङ्कुशता

सरस्वती पत्रिका के बारहवें भाग में "कालिदास की निरङ्कुशता" शीर्षक एक लेख-माला प्रकाशित हुई थी। अनेक हिन्दी-प्रेमियों के आग्रह करने पर वही लेख-माला पुस्तक-रूप में प्रकाशित की गई है। आशा है, सभी हिन्दी-प्रेमी इसे मँगाकर पढ़ेंगे। मूल्य ।=)

विक्रमाङ्कदेव-चरित-चर्चा

विल्हण कवि-प्रणीत 'विक्रमाङ्कदेव-चरित' काव्य की यह आलोचना है। इसमें विक्रमाङ्कदेव का जीवनचरित भी है और विल्हण कवि की कविता के कुछ नमूने भी हैं। इसके सिवा इसमें विल्हण कवि का संक्षिप्त जीवनचरित भी है। मूल्य ।=)

नाट्य-शास्त्र

इसमें नाटक-सम्बन्धी सभी बातों का वर्णन है। हिन्दी-प्रेमियों को और ख़ास कर उन लोगों को, जो नाटक-मण्डलियाँ स्थापित करके अच्छे अच्छे नाटकों द्वारा देश में सुरुचि का बीज बो रहे हैं, यह पुस्तक अवश्य लेनी चाहिए। मूल्य ।)

मिलने का पता— [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेकानेक एकरंगे और बहुरंगे चित्रों से विभूषित सचित्र पुस्तकें

१९ चित्रों सहित

हिन्दी-महाभारत

५०० से अधिक पृष्ठ

महाभारत सर्वमान्य ग्रन्थ है। हिन्दू-मात्र उसे वेदों के समान पूज्य दृष्टि से देखते हैं और उसकी गिनती पाँचवें वेद में करते हैं। यह ग्रन्थ ज्ञान-रत्नों का अक्षय भाण्डार है। कोई बात ऐसी नहीं जो महाभारत में न हो; कोई तत्त्व ऐसा नहीं जिसका निरूपण महाभारत में न हो, कोई शास्त्रीय विषय ऐसा नहीं जिसका विवेचन महाभारत में न हो। महाभारत को हिन्दू-समाज का जीवात्मा कहना चाहिए। इसी से महाभारत के अठारहों पर्वों का सम्पूर्ण कथाभाग बड़ी ही सरल, सरस और सुन्दर भाषा में हमने छपाया है। इसकी क्या प्रशंसा की जाय, इसका अधिक प्रचार ही इसकी उत्तमता का प्रमाण है। हम दावे के साथ कह सकते हैं, कि अब तक इतना अच्छा सजीला, सस्ता, मनमोहक और सीधी सरल भाषा में महाभारत का पूरा उपाख्यान हिन्दी में नहीं छपा। हिन्दी के प्रायः सभी पत्रों ने मुक्तकण्ठ से इसकी प्रशंसा की है। इसमें ऐसे ऐसे सुन्दर हृदय-ग्राही और भावपूर्ण बहुरंगे चित्र लगाये गये हैं, कि 'महाभारत' का ज़माना 'बायस्कोप' की भाँति आँखों के सामने नाचने लगता है। दाम सुन्दर जिल्द सहित ४)

४६ चित्रों सहित

कविता-कलाप

कविताओं का संग्रह

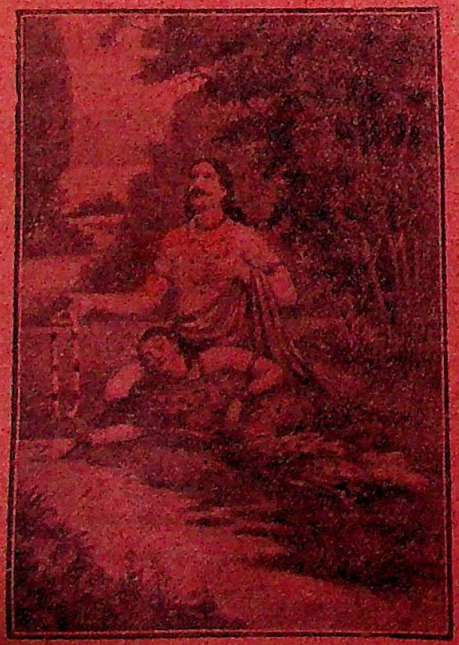

कविता भी एक प्रकार का चित्र है। चित्र देखने से नेत्र तृप्त होते हैं, कविता पढ़ने या सुनने से कान। यही समझ कर तथा कितने ही चित्र-कला-प्रेमी और कविता-लोलुप सज्जनों के आग्रह से यह सचित्र कविताओं का संग्रह पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया है। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि स्वर्गीय राय देवीप्रसाद (पूर्ण) बी० ए०, बी-एल०, पण्डित नाथूराम 'शङ्कर' शर्मा, पण्डित कामताप्रसाद गुरु, बाबू मैथिलीशरण गुप्त और पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की ओजस्विनी लेखनी से लिखी गई ४६ प्रकार की सचित्र कविताओं का यह अपूर्व संग्रह प्रत्येक हिन्दी-भाषा-भाषी को मँगा कर पढ़ना चाहिए। अधिकांश कविताएँ बोल-चाल की भाषा में हैं। इसमें कई चित्र रङ्गीन भी हैं। ऐसी उत्तम सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहू-बेटियों को उपहार देने योग्य पुस्तकें

स्त्रियों के कोमल हृदय पर सती तथा पतिव्रता नारियों के जीवन-चरित पढ़ने से जो प्रभाव पड़ सकता है, वह अन्य पुस्तकों से नहीं। यदि आप चाहते हैं कि हमारी स्त्रियाँ वीर मातायें बनें एवं सुचरित्रा तथा सुशीला बनें और गृहस्थी सोने की हो जाय तो नीचे लिखी भारतीय विदुषियों के चरित्र उन के हाथों में अवश्य दीजिए।

पतिव्रता

सती, सुनीति, गान्धारी, सावित्री, दमयन्ती और शकुन्तला—इन छः पतिव्रताओं के चरित का इसमें सङ्ग्रह है। इसकी भाषा बहुत ही सीधी सादी है। वर्णन-शैली भी बहुत अच्छी है। हमारे देश की प्रत्येक हिन्दी पढ़ी-लिखी स्त्री को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १), सुन्दर संस्करण १॥)

पतिव्रता गान्धारी

प्रातःस्मरणीया पति-परायणा सती गान्धारी का यह उज्ज्वल चरित्र बड़ी मनोहर तथा सरल भाषा में नये ढँग से लिखा गया है। भारतीय स्त्रियाँ इस पुस्तक से पातिव्रत्य, धर्मपरायणता, अति थि-सेवा, क्षमा, सार्वजनिक प्रेम, धैर्य, शील, शान्ति और सुख इत्यादि के सम्बन्ध में बहुत कुछ सीख सकती हैं। मूल्य ॥=)

भारतीय विदुषी

इस पुस्तक में प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक की भारती, उर्वशी, लीलावती, आत्रेयी, मन्दालसा, देवहूति, गार्गी, मैत्रेयी, मीराबाई, जेबुन्निसा, गुलबदन बेगम, लक्ष्मीबाई आदि आदि कोई ४० देवियों के संक्षिप्त जीवन-चरित लिखे गये हैं। इसमें स्त्री-शिक्षा-सम्बन्धी अनेक उपयोगी बातें ऐसी हैं जिनके पढ़ने से पढ़नेवालियों के हृदय में विद्यानुराग की लालसा प्रबल हो जाती है। मूल्य ॥)

रामायण का सार

सीतान्चरित

शिक्षा का भाण्डार

यह जगन्माता, त्रिभुवन सुन्दरी सती सीता का चरित हिन्दू बालक-बालिकाओं और गृह-लक्ष्मियों के पढ़ने योग्य सर्वोत्तम ग्रन्थ-रत्न और हिन्दी-साहित्य का सुलक्षित भण्डार है। इसके पढ़ने से एक ही साथ इतिहास, पुराण, काव्य, नाटक,

उपन्यास और नीति-शास्त्र का आनन्द मिलता है। यह राज-नीति, धर्मनीति, समाज, जाति और गार्हस्थ्य नीति की कुंजी है। इसके पढ़ने से घर-घर में सुख-शान्ति का निवास होता है। पृष्ठ-संख्या २३४, सजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥।) सुन्दर संस्करण २।)

मिलने पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-शिक्षा-विषयक उपन्यास और कहानियाँ

आज-कल स्त्री-शिक्षालयों से अल्प-शिक्षा प्राप्त कर निकलते ही बालिकाएँ हीन उपन्यासों और भ्रष्ट साहित्य के फेर में पड़ जाती हैं जिससे उनकी मानसिक उन्नति होना तो दूर रहा, उल्टा समय और धन, दोनों का अपव्यय होता है और प्रायः लोग स्त्री-शिक्षा के विरोधी बन जाते हैं। यदि आप अपनी बहू, बेटियों, बहनों और देवियों को यथार्थ में गृहलक्ष्मी तथा अपने घर को सोने की गृहस्थी बनाना चाहते हैं, तो नीचे लिखे उपदेशप्रद उपन्यास मँगा कर पढ़ने के लिए उनके हाथ में निःसङ्कोच दीजिए :—

षोडशी

बाबू प्रभातकुमार मुखोपाध्याय की लिखी हुई उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद सोलह कहानियों का इसमें सङ्ग्रह है। कहानियाँ एक से एक बढ़ कर भावपूर्ण, हृदय-ग्राही और रोचक हैं। हिन्दी में एक-दम नई चीज़ है। पढ़ने पर ही मज़ा आता है। मूल्य १।)

सीता-वनवास

इसमें श्रीसीताजी के पवित्र चरित्र और अपूर्व त्याग तथा श्रीरामचन्द्रजी द्वारा गर्भवती सीताजी के परित्यक्त किये जाने की कथा विस्तार-पूर्वक बड़ी ही रोचक और करुण-रस-पूर्ण भाषा में लिखी गई है। इसे पढ़-सुन कर आँखों में आँसू बहने लगते हैं और पाषाण-हृदय भी मोम की तरह मुलायम हो जाता है। मूल्य ॥=)

सुशीला-चरित

सुशीला का चरित स्त्रियों को बहुत कुछ शिक्षा दे सकता है। प्रत्येक पढ़ी लिखी स्त्री को सुशीला-चरित्र पढ़ना चाहिए। इसके पढ़ने से अपने आप उन्नति करने की उन्हें इच्छा होगी। मनोरंजक इतना है कि बिना पढ़े छोड़ने का जी नहीं चाहता। मूल्य १।)

तारा

लेखक ने इसे बँगला के "शैशव सहचरी" नामक उपन्यास के अनुकरण पर लिखा है। यह सामाजिक उपन्यास बहुत ही चित्ताकर्षक और मनोरञ्जक है। घटनाओं की विचित्रता पढ़ते ही बनती है। छपाई सफ़ाई उत्तम। मूल्य १)

पार्वती और यशोदा

इसमें दो प्रकार के स्त्री-स्वभावों का ऐसा बढ़िया चित्र अङ्कित किया गया है कि समझते ही बनता है। इसके पढ़ने से स्त्रियों का स्वभाव बहुत कुछ सुधर सकता है। स्त्रियों के लिए ऐसे उपन्यासों की बड़ी आवश्यकता है। हर एक स्त्री को यह उपन्यास अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य ॥=)

सौभाग्यवती

पढ़ी लिखी स्त्रियों को एक बार यह पुस्तक अवश्य पढ़ना चाहिए। सौभाग्यवती सचमुच सौभाग्यवती ही है। इसके पढ़ने से स्त्रियाँ बहुत कुछ उपदेश ग्रहण कर सकती हैं। मूल्य ।)

लक्ष्मी

यह उपन्यास सामाजिक है। फलतः इसमें समाज के भले-बुरे सभी चित्र अङ्कित हैं। लक्ष्मी का चरित्र उच्च श्रेणी का है। वह बहुत अधिक सताई गई,—बदनाम की गई—किन्तु उसने अपने धर्म को नहीं छोड़ा। जिन्होंने उसके साथ बुरा व्यवहार किया उनकी भी उसने भलाई की। उधर विलासराय को देखिए जिसने किसी का भी, अपनी जान में, भला नहीं होने दिया। दूसरे का घर उजाड़ करके अपना ख़ज़ाना भरा और दूसरों की बहू-बेटियों को सदा कुदृष्टि से देखा। बड़े घर के लाड़ले लड़के, मुँह-लगे नौकर, चापलूस साथी और देवशङ्कर जैसा सच्चा मित्र—क्या करता है, यह इस पुस्तक में देख कर कहीं तो पाठक को विस्मित होना पड़ता है और कहीं खिन्न भी। यह उपन्यास बहुत बढ़िया है और अभी ही छपकर तैयार हुआ है। मूल्य सिर्फ़ ॥=) दस आने।

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श महापुरुषों के जीवन-चरित्र

स्वदेश-प्रेम को जाग्रत तथा उन्नत करने के लिए प्रसिद्ध पुरुषों का चरित अवश्य पढ़ना चाहिए और विचार करना चाहिए कि किन कारणों से इन पुरुषों ने इतना नाम पाया। नामी आदमियों का चरित पढ़ने से मनोरंजन भी होता है, इतिहास-ज्ञान भी बढ़ता है और उन बातों का अनुकरण करने की इच्छा भी होती है। अस्तु। निम्नलिखित जीवन-चरितों को मँगाकर अवलोकन कीजिए:—

विद्यासागर

प्रातःस्मरणीय पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के अनेक गुणों और कार्यावली का इसमें विस्तृत, वर्णन है। इसकी जोड़ का जीवन-चरित, इस समय, भारत की किसी भी भाषा में नहीं पाया जाता। यदि आप अपनी सन्तान को कर्मवीर, निडर, देशभक्त और जाति-सेवक बनाना चाहते हैं, तो इस पुस्तक की अपेक्षा बढ़िया साधन आप को न मिलेगा। मूल्य केवल ३), सुन्दर संस्करण ३॥)

महादेव गोविन्द रानडे

न्यायमूर्ति रानडे प्रसिद्ध देशभक्त और समाज-सुधारक हो गये हैं। सरकारी नौकर होने पर भी वे सदा किसी न किसी रूप में देश-सेवा किया करते थे। राजा और प्रजा सभी के यहाँ उनका मान था। देश और समाज की उन्नति के लिए कटिबद्ध, अनेक सज्जन उनको गुरु का आसन देते हैं। पृष्ठ-संख्या पाने चार सौ से ऊपर। मूल्य केवल १॥)

अकबर

प्रसिद्ध मुग़ल-सम्राट् अकबर का यह सविस्तर जीवन-वृत्तान्त है। इसके पढ़ने से आपको बादशाह अकबर से सम्बन्ध रखनेवाली बहुतेरी नई-नई बातें मालूम होंगी। बादशाह ने बहुत छोटी उम्र में ही राज्य सँभाल कर बड़े विचित्र काम किये थे और हिन्दू-मुसलमानों के भेदभाव से बच कर शासन किया था। मूल्य केवल १)

गारफील्ड ॥।)

भारतवर्ष के धुरन्धर कवि ।=)

वीरकेसरी नेपोलियन बोनापार्ट

इस पुस्तक में फ्रांस के प्रसिद्ध वीर सम्राट् नेपोलियन के जीवन की प्रायः समस्त छोटी बड़ी घटनाओं का समावेश हो गया है। नेपोलियन की शिक्षा, सरकारी नौकरी में प्रवेश, सम्राट की गद्दी तक पहुँचना, यूरोप के भिन्न भिन्न नरेशों के साथ सन्धि-विग्रह, प्रजा-पालन-चातुरी, कार्य-दक्षता, उसके पश्चात् फ्रांस की दशा आदि का वर्णन इस ग्रन्थ में है। हिन्दी में नेपोलियन का ऐसा विस्तृत जीवन-चरित अब तक नहीं था। पृष्ठ-संख्या ६५० से ऊपर। मूल्य २॥), सुन्दर संस्करण ३॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीजिए ! तैयार हो गया !! जल्दी मँगाइए !!!

हिन्दी-साहित्य में एक अनूठा रत्न

वेदान्त का सार **ज्ञानेश्वरी** ज्ञान का भण्डार

अर्थात्

श्रीमद्भगवद्गीता का भावात्मक अनुवाद

लेखक

मराठी-साहित्य के दिग्गज विद्वान् और प्रमुख सन्त श्रीज्ञानेश्वर महाराज

जिसके लिए हिन्दी-संसार बहुत दिनों से तरस रहा था, वही चमत्कार-पूर्ण ग्रंथ छप कर तैयार हो गया। कौन ऐसा अभागा हिन्दू होगा जिसके घर में श्रीमद्भगवद्गीता का पवित्र ग्रन्थ न हो। यह हिन्दू धर्म के विज्ञानमय तत्त्व को पूर्णरूप से समझानेवाला, ज्ञान-गरिमा को बढ़ानेवाला, भवसागर की भयपूर्ण तरङ्गों से बचानेवाला, अजर-अमर और अनमोल ग्रन्थ है। मुर्दों की नसों में संजीवनी भर कर जिलानेवाला इसी के उपदेशों से आज तक हिन्दू धर्म का आधार बना हुआ है। यों तो श्रीमद्भगवद्गीता की अनेक संस्कृत और भाषा-टीकायें प्रसिद्ध हैं, तो भी हमारे यहाँ से जो यह टीका प्रकाशित हुई है वह अन्य टीकाओं की अपेक्षा साहित्य की दृष्टि से अनुपम तथा सिद्धान्त की दृष्टि से अनोखी, उत्कृष्ट और विशेष महत्त्व की है। इसमें गीता के प्रत्येक श्लोक का भाव देकर, शांकर मतानुसार शुद्धाद्वैत मानते हुए, भक्ति तथा ज्ञान का अत्यन्त सरस, प्रेम-युक्त और हृदयङ्गम निरूपण किया गया है। मूल पुस्तक मराठी छन्दों में है। तुलसी, चैतन्य, नानक की तरह महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर महाराज नामक एक बड़े भारी सिद्ध और अनुभवी योगी हुए हैं। इन्होंने शङ्कराचार्य के मतानुसार भगवद्गीता का मर्म समझाने के लिए ज्ञानेश्वरी नाम की विशद टीका की है। उसी का अनुवाद हिन्दी की सरस, सुन्दर और प्राञ्जल भाषा में बड़ी ही सावधानी से किया गया है। विषय गहन और बातें बारीक हैं, पर लेखनशैली इतनी मनोमुग्धकर, हृदय में चुभनेवाली और सरल है कि सर्वसाधारण बिना कष्ट के समझ सकते हैं। पुस्तक साम्प्रदायिक झगड़ों से रहित है। छपाई शुद्ध और स्वच्छ, काग़ज़ बढ़िया, सुन्दर और मज़बूत जिल्द, पृष्ठ-संख्या ७२०। प्रत्येक गीता-प्रेमी को एक बार इस टीका का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। इसे पढ़ लेने से फिर किसी अन्य टीका के पढ़ने की ज़रूरत नहीं रहती। मूल्य केवल ४)

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुग का प्रवाह किधर है ?

इसका सभी एक ही उत्तर देंगे—

कि नये काव्य, नई कला और नई कल्पना-शक्ति के अद्भुत चमत्कार में।

क्या कोई भी यह मानने से इनकार कर सकता है कि हिन्दी-संसार में श्रीयुत सुदर्शनजी ने नवयुग के प्रवाह को नहीं बढ़ाया है। कौन यह मानने को तैयार है कि उनकी कहानियों ने मानव-भावों के चित्रण करने में जादू का-सा काम नहीं किया। हाँ ज़रूरत है एक बार उनकी ललित कृतियों के पढ़ने की।

सुदर्शनसुधा

इस पुस्तक की मनोरंजक, भावपूर्ण कहानियाँ पढ़कर आँखें खुल जाती हैं। एक एक कहानी की अद्भुत प्रतिभा, मोहिनी शक्ति, उच्च भाव, उज्ज्वल विचार देख कर दङ्ग रह जाना पड़ता है। मूल्य केवल २) दो रुपये।

तीर्थयात्रा

दुनिया को दिखलानेवाली बहुत-सी कहानियाँ हैं। पर यदि दिल को और घर को देखना है तो इस पुस्तक की कहानियाँ पढ़िए। मनोरंजन के साथ साथ मानव-जीवन का पाठ सीखिए। मूल्य २) दो रुपये।

रुस्तम-सोहराब

यह एक संसार-प्रसिद्ध पिता-पुत्र की अद्भुत वीरता की सच्ची घटना है जो बालकों के लायक़ बड़ी सरल और रोचक भाषा में लिखी गई है। पुस्तक पढ़ने लायक़ है। मूल्य ॥=) आने।

फूलवती

एक भाव-पूर्ण कहानी है। बालकों के लिए तो शायद ही कोई ऐसी रोचक, शिक्षाप्रद एवं सरस कहानी अब तक लिखी गई हो। सचित्र पुस्तक का मूल्य ॥=) दस आने।

आनरेरी मजिस्ट्रेट

बहुत ही विनोदपूर्ण रङ्गमञ्च पर खेलने लायक़ लाजवाब नया प्रहसन है। एक प्रति का मूल्य केवल ॥=) दस आने।

परिवर्त्तन

में है योरप की विलास-प्रिय युवतियों का माया-जाल और भारतीय पवित्र दाम्पत्य-जीवन का सुमधुर, त्यागमय, अद्भुत प्रभाव। मूल्य ॥) आठ आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने देश को समृद्ध तथा वैभवशाली बनाने के लिए संसार के भिन्न-भिन्न देशों की सामाजिक, राजनैतिक तथा व्यापारिक स्थिति तथा उनकी प्राकृतिक दशा का अध्ययन करने की बड़ी आवश्यकता है।

भू-प्रदक्षिणा

के द्वारा आप इन सब बातों की जानकारी घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं। इसके मूल-लेखक श्रीयुत चन्द्रशेखर सेन बैरिस्टर ने कई वर्ष के कठिन परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की है। उन्होंने जो कुछ लिखा है, स्वयं उसका अनुभव किया है, और जिस स्थान या वस्तु का वर्णन किया है, उसे अपनी आँखों से देखकर किया है, यही कारण है कि पुस्तक इतनी उपयोगी और महत्त्वपूर्ण बन सकी है।

यदि देश-विदेश की बातें पढ़कर व्यवहार-कुशलता और चतुरता प्राप्त करनी हो तो इस अमूल्य पुस्तक को मँगाकर अवश्य पढ़िए और थोड़े व्यय में अपूर्व मनोरञ्जन तथा साथ ही साथ ज्ञान-सञ्चय भी कीजिए।

पृष्ठ-संख्या ७८०, चित्र-संख्या ३७, मनोरम जिल्द, मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

मैनेजर—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्रुपद-स्वर-लिपि

अपने ढङ्ग का एक अनुपम और अनूठा ग्रन्थ है।
हिन्दी में सङ्गीत-सम्बन्धी एक भी
ऐसा ग्रन्थ नहीं है जो इससे
टक्कर ले सके।

इसके प्रणेता—

काशी-निवासी श्रीयुत हरिनारायण मुकुर्जी
(रसूलबख़्श घराने के अन्तिम प्रतिनिधि)

सङ्गीत के एक प्रसिद्ध तथा धुरन्धर विद्वान् हैं।
विशेषतः ध्रुपद में तो आप अपना
सानी नहीं रखते।

ध्रुपद-स्वर-लिपि—साधारण नौसिखियों के लिए तो उपयोगी है ही, साथ ही इसके द्वारा व्यवसायी गवैयों तथा संगीत-सम्बन्धी पुस्तकों के प्रणेताओं को भी यथेष्ट सहायता मिलती है।

मूल्य साधारण संस्करण का ६) रुपये
और राजसंस्करण का १२) रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरप के इतिहास का अध्ययन करना विशेष आवश्यक इसलिए है कि—

भारत के प्रायः अधिकांश नेता यहाँ प्रजासत्तात्मक शासन-प्रणाली स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं, किन्तु भारतीय समाज की वर्त्तमान प्रकृति का पालन-पोषण ऐसे वातावरण में हुआ है जो एकाधिपत्य-प्रधान शासन-पद्धति के अधिक अनुकूल है। ऐसी अवस्था में हमें उन उपायों का अवलम्बन बड़ी तत्परता के साथ अङ्गीकार करना पड़ेगा, जो इस देश के जन-समूह में नूतन जागृति का सञ्चार कर सकें। हमें ऐसा यत्न करना चाहिए कि भारतवर्ष का प्रत्येक व्यक्ति इस बात को अच्छी तरह समझ जाय कि शासक-गण ईश्वर-द्वारा निर्दिष्ट नहीं किये जाते, बल्कि अनेक व्यक्तियों की सामूहिक सम्मति शासकों को अधिकार प्रदान करती है, और वही उनसे अधिकार छीन भी सकती है। इस प्रकार का मनोभाव उत्पन्न करने का एक प्रधान साधन है ऐसे देशों के इतिहास का प्रचार जिनमें प्रजा-सत्तात्मक शासन-प्रणाली का क्रमशः विकास हुआ है। कहने की आवश्यकता नहीं कि योरप के अधिकांश देशों के इतिहास में हमें एकाधिपत्य के पतन और जनसत्ता के उत्थान की कथा अङ्कित मिलती है। ऐसी दशा में योरप के इतिहास के पठन-पाठन से भारतीय जन-समूह के विचारों में वाञ्छनीय क्रान्ति होने की आशा है।

प्रसिद्ध इतिहास-वेत्ता और हिन्दी के सुलेखक भाई परमानन्द
एम० ए० द्वारा लिखित—

योरप का इतिहास

हिन्दी-भाषी जनता के लिए बहुत ही उपयोगी है। सारी पुस्तक बहुत ही प्राञ्जल तथा ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है। भारत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा सामयिक पत्रों ने इस ग्रन्थ की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। ऐसा उपयोगी ग्रन्थ मँगा कर अपना तथा मित्रों एवं कुटुम्बियों के विचार परिमार्जित कर मातृभूमि की सेवा के योग्य बनिए। **लगभग ७०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ४) चार रुपये।**

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौर्य-साम्राज्य का इतिहास

भारतवर्ष के इतिहास में **मौर्य-साम्राज्य** का विशेष महत्त्व है। इसके संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के सम्बन्ध में स्मिथ साहब ने लिखा है कि भारत के प्रथम सम्राट् (चन्द्रगुप्त मौर्य) ने उस वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त किया था जिसके लिए ब्रिटिश उत्तराधिकारी व्यर्थ में आहें भरते हैं और जिसको सोलहवीं और सत्तरहवीं सदी के मुग़ल-सम्राटों ने भी कभी पूर्णता के साथ नहीं प्राप्त किया।

ऐसे महत्त्वपूर्ण युग का क्रमबद्ध तथा प्रामाणिक इतिहास हिन्दी में क्या अँगरेज़ी में भी अभी तक प्राप्य नहीं था। हर्ष का विषय है कि गुरुकुल काँगड़ी के स्नातक तथा इतिहास के प्रोफ़ेसर **श्रीयुत सत्यकेतु विद्यालङ्कार** ने इस कमी को पूरा कर दिया है।

यह पुस्तक संस्कृत, पाली, प्राकृत, अँगरेज़ी आदि भाषाओं के कितने ही प्रामाणिक तथा महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थों का मन्थन करके लिखी गई है। भारतीय पुरातत्त्व-विभाग से छाँट कर इसमें कई प्रामाणिक तथा नयनाभिराम चित्र भी प्रकाशित किये गये हैं।

इसकी मौलिकता तथा प्रामाणिकता पर मुग्ध होकर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने लेखक को अपने गोरखपुर के अधिवेशन में १२,०००) रुपये का मंगलाप्रसाद-पारितोषिक प्रदान किया है।

सचित्र पुस्तक का मूल्य ५)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तक ! नई पुस्तक !!

राधाकृष्ण-ग्रन्थावली

पहला खण्ड

इसमें भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के फुफेरे भाई स्वर्गवासी बाबू राधाकृष्णदास की कविताओं, लेखों, जीवनचरितों और नाटकों का संग्रह है। यह सब सामग्री अब तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकादि में बिखरी हुई थी। इसमें बहुत सा ऐसा भी मसाला है जो अब अप्राप्य हो रहा था किन्तु जिसकी आवश्यकता थी। इसे एकत्र करके उक्त बाबू साहब के सुहृद् राय साहब बाबू श्यामसुन्दर-दासजी बी० ए० ने यह रूप प्रदान किया है। हिन्दी के अभ्युदय-काल के इन प्रमुख लेखक की रचनाओं को अपनाकर सर्वसाधारण को इनका समादर करना चाहिए। पुस्तक डिमाई साईज़ के सवा आठ सौ पृष्ठों में बहुत अच्छे काग़ज़ पर छापी गई है। अच्छी जिल्द बँधी हुई है। फिर भी मूल्य सिर्फ़ ३) तीन रुपये।

संक्षिप्त बिहारी

लेखक श्रीयुत रमाशङ्करप्रसाद एम० ए०, एल-एल० बी०

इस बिहारी-टीका में एक यही बहुत बड़ी विशेषता है कि विवाहित, अविवाहित विद्यार्थी, स्त्री, पुरुष सभी इसे बिना किसी हिचकिचाहट के पढ़ सकते हैं। अर्थ भी इतना सरल, स्पष्ट और मधुर भाषा में लिखा गया है कि किसी से पूछना नहीं पड़ता और बड़ा आनन्द आता है। जो पाठक अश्लीलता के संकोच से अब तक बिहारी के दोहों को नहीं पढ़ते थे उन्हें यह पुस्तक मँगाकर अवश्य प्रसिद्ध कवि की कृति का रसास्वादन करना चाहिए। पुस्तक बड़े अच्छे ढङ्ग से अर्थ-विस्तार के साथ लिखी गई है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीति की गम्भीर एवं गूढ़ातिगूढ़ समस्याओं को सुलझाने तथा राज्य के स्वरूप एवं उसकी सुव्यवस्था का ज्ञान प्राप्त करने का सबसे अच्छा साधन है इस विषय के उत्तमोत्तम और प्रामाणिक ग्रन्थों का अध्ययन करना।

राज्य-विज्ञान

इस पुस्तक में राज्य-सम्बन्धी विषयों की विवेचना बहुत ही उपयोगी, सरल और सामयिक ढङ्ग से की गई है। राज्य की भिन्न भिन्न समस्यायें, उसके प्रति नागरिकों के कर्तव्य तथा उसकी सुव्यवस्था और शासन-प्रणाली आदि की इसमें विद्वत्तापूर्ण विवेचना की गई है। यह पुस्तक प्रत्येक भारतीय के पढ़ने के योग्य है। ४१३ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २)

कौटिलीय अर्थशास्त्र-मीमांसा

अर्थशास्त्र के विश्वविख्यात पण्डित तथा कुशल राजनैतिक चाणक्य के द्वारा रचित "अर्थशास्त्र" के एक अंश—राज्यशासन-व्यवस्था—की इसमें सरल रूप से आलोचनात्मक विवेचना की गई है। इस विषय के कई उपयोगी लेख भी परिशिष्ट रूप से इस ग्रन्थ के साथ जोड़ दिये गये हैं। आधुनिक कूटनीति, राजनीति तथा शासन-व्यवस्था की प्रत्येक महत्त्वपूर्ण बातें इसमें दी गई हैं। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

मौलिकता

लेखक गोपाल दामोदर तामसकर, एम० ए० एल० टी०।

लोगों में मौलिकता के विषय में बहुत काल से वादविवाद चला आ रहा है और इस विषय में अब तक बड़ा मतभेद बना है। इस पुस्तक में लेखक ने तीन बहुत उपयोगी लेख लिखे हैं जो सभी के विशेषकर जो मौलिक मौलिक चिल्लाते हैं उनके पढ़ने लायक़ हैं। १—मौलिकता का अर्थ, २—मौलिकता का अभाव और उसे दूर करने के उपाय, ३—मौलिकता का महत्त्व। हर-एक को पुस्तक पढ़नी चाहिए। मूल्य केवल ।) चार आने।

राजा दिलीप-नाटक

यह एक पौराणिक नाटक है। इसमें रघुवंश में वर्णित राजा दिलीप की सन्तति-सम्बन्धी कथा, उनकी भावनाओं और कार्यों को नाटक-रूप में बड़े सुन्दर ढङ्ग से लिखा गया है। गो-माता-सम्बन्धी भावनायें देखते ही बनती हैं। ऐसे नाटकों से जिनसे कि हिन्दी-साहित्य की वृद्धि के साथ-साथ धार्मिक भावों को उत्तेजना मिले, कुरुचि-पूर्ण वासनायें सुरुचि में बदल जावें, हैं ही नहीं। प्रत्येक नाटक-मंडली को एक बार इसे अपनी स्टेज पर खेलना चाहिए। मूल्य सचित्र पुस्तक का केवल १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो) [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस और भावपूर्ण कवितायें

वीणा

यह श्रीयुत सुमित्रानन्दन पन्त की उत्तमोत्तम कविताओं का संग्रह है। पन्तजी की रचनायें हिन्दी में अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं; अतएव इनका परिचय देना व्यर्थ है। यदि आप अनूठी और भावपूर्ण कविताओं का रसास्वादन करना चाहते हैं, तो आज ही एक पत्र लिख कर मँगा लीजिए। मूल्य १)

माधवी

इसमें श्रीयुत ठाकुर गोपालशरण-सिंह की बोल-चाल की भाषा में लिखी हुई लगभग साढ़े तीन सौ कविताओं का संग्रह है। प्रत्येक छन्द में कवित्व है और वह अपने निरालेपन की छाप रखता है। पुस्तक की उत्तमता के लिए ठाकुरसाहब का नाम ही यथेष्ट है। मूल्य १॥)

गङ्गावतरण

[सचित्र काव्य]

इस काव्य में १३ सर्ग हैं। व्रजभाषा के लब्धप्रतिष्ठ सुकवि बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर", बी० ए० ने बड़े विचित्र हृदयग्राही ५६६ छन्दों में, धराधाम पर पतितपावनी श्रीगङ्गाजी के लाये जाने के कथानक का मनोहर वर्णन बड़े अच्छे ढङ्ग से किया है। "पावनि-सरजू-तीर अवध-पुरि" के राजा सगर से कथानक का आरम्भ करके उनके साठ हज़ार पुत्र उत्पन्न होने और फिर राजा के अश्वमेध की दीक्षा लेकर यज्ञ के घोड़े को छोड़ने का वर्णन है। सारी पुस्तक काव्य के उत्तमोत्तम गुणों से अलंकृत है। सचित्र, सजिल्द ।॥) आने। राज-संस्करण १)।

बुद्ध-चरित्र

यह अँगरेज़ी के प्रसिद्ध कवि सर एडविन आर्नल्ड के "लाइट आफ़ एशिया" के आधार पर स्वतन्त्र ललित काव्य है। प्रायः शब्द भी वही रखे गये हैं जो बौद्ध-शास्त्रों में व्यवहृत होते हैं। कविता बहुत ही मनोहर, मधुर और सरस है जिसे पढ़ते ही चित्त प्रसन्न हो जाता है। भूमिका में व्रज और अवधी भाषा पर बड़ी मार्मिकता से विचार किया गया है, जिसकी बड़े बड़े विद्वानों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। दो रङ्गीन और चार सादे चित्र भी दिये गये हैं जिनमें दो सहस्र वर्ष पहले के दृश्य दिखलाये गये हैं। मूल्य केवल २॥) ढाई रुपया।

ग्रन्थि

श्रीयुत सुमित्रानन्दन पन्त

जिन सज्जनों को पन्तजी की सरस तथा भावपूर्ण रचनाओं का रसास्वादन करने का अवसर मिला है, वे उनकी अद्भुत कल्पना-शक्ति तथा अलौकिक प्रतिभा पर मुग्ध हैं। उनकी उत्तम कृतियों में ग्रन्थि का अपना स्थान है। मूल्य ।॥) बारह आने है।

सरस-सुमन

श्रीयुत ठाकुर गुरुभक्तसिंह

बी० ए०, एल-एल० बी०

पवन, भानु, चपला, जुगनू आदि पर यदि अनूठी मनोहारिणी कवितायें पढ़नी हैं तो सरस-सुमन मँगाकर पढ़िए। तबीयत ख़ुश हो जायगी। मूल्य ॥)

मैनेजर, (जनरल्स) लीडर प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग की

कुछ बढ़िया पुस्तकें

बालक-बालिकाओं के लिए सबसे अच्छी पुस्तकें

बाल-भारत दो भाग...	१।)
बाल-रामायण सातों कांड	॥=)
बाल-मनुस्मृति	।=)
बाल-नीति-माला	॥=)
बाल-भागवत (दो भाग)	१।=)
बालगीता	॥।)
बालोपदेश	।=)
बाल-आख्योपन्यास सचित्र चार भाग ...	२॥)
बाल-पञ्चतन्त्र	॥=)
बाल-हितोपदेश	॥।)
बाल-विष्णुपुराण	।=)
बाल-स्वास्थ्य-रक्षा	॥=)
बाल-गीतावली	॥=)
बाल-निबन्धमाला	॥=)
बाल-स्मृति-माला	॥=)
बाल-पुराण	॥=)
बाल-भोज-प्रबन्ध	॥=)
बाल-कालिदास	।=)
बाल-शिक्षा	≡)
बाल-दुर्गा (सचित्र)	॥=)
बाल-रघुवंश (सचित्र)	॥)
बाल-कविता-माला (सचित्र)	।=)
बाल-शिक्षा	॥)
बाल-रवीन्द्रनाथ (सचित्र)	॥)
लालखिलौना (सचित्र)	॥=)
हास्य-कौतुक	।=)
ईसप की कहानियाँ (सचित्र)	२)
राबिन्सनक्रूसो ,, ...	१॥)
पारस्योपन्यास सुन्दर चित्रों (सहित) ...	१॥)
हिन्दी-शेक्सपियर (छः भागों में)	३॥।)
वनकुसुम (रोचक छः कहानियाँ) ...	।=)
शेखचिल्ली की कहानियाँ	॥=)
फ़व्वारा २० बढ़िया (सचित्र कहानियाँ) ...	१)
सोने का झरना (मनोरञ्जक कहानियाँ) ...	॥।)
पोत की माला (बालकों को उपहार देने योग्य)	॥।)
अद्भुत कथा ११ (सचित्र कहानियाँ) ...	॥।)
कादम्बरी (संस्कृत उपन्यास का सर्वोत्तम हिन्दी-सारानुवाद)	॥)
अनोखी कहानियाँ (सुन्दर और सचित्र) ...	।)
मज़ेदार ख़ज़ाना ,, ,, ...	।=)
गोबर-गणेश ,, ,, ,, ...	॥=)
फूलवती ,, ,, ,, ...	॥=)
रुस्तम और सोहराब (सचित्र)	॥=)
पृथ्वी की परिक्रमा (सचित्र)	।=)
पकौड़ीवाली (सचित्र)	।=)
गुदड़ी के लाल (सचित्र)	।=)
राजकहानी (सचित्र)	।=)
टाल्स्टाय की कहानियाँ	१॥)

नवयुवकों के लिए उत्तमोत्तम नैतिक पुस्तकें

चरित्रगठन (एक-एक उपदेश लाख लाख रुपये का)	१)
कर्तव्य-शिक्षा अर्थात् महात्मा चेस्टरफ़ील्ड का पुत्रोपदेश	१।)
सदुपदेश-संग्रह (सब देशों के ऋषि, महात्माओं के बनाये हुए ग्रन्थों से संगृहीत २४१ उपदेश)	।=)
उपदेश-कुसुम (शिक्षादायक पुस्तक) ...	≡)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलिस्तां (फ़ारसी के प्रसिद्ध ग्रन्थ का हिन्दी में गद्यात्मक अनुवाद) ... ... २)

मनुष्य-विचार (इसके उपदेशों के अनुसार चलने से जीवन सुख-शान्तिमय बन सकता है) ... ... ।)

मेरे देश की कथा ... ... ॥=)

कर्मयोग (स्वा० विवेकानन्द के कर्मयोग-सम्बन्धी व्याख्यान) ... ... ॥)

जापान का हाल ... ... ॥)

मिस्र और हब्श का हाल .... ।=)

सुखमार्ग (पढ़ने से सुख का मार्ग दिखाई देने लगता है) ... ... ।=)

मानव-जीवन का विधान (अनमोल उपदेश) ॥)

मन की अद्भुत शक्ति ... ... ।=)

नीति-रत्न-माला (नीति के श्लोकों का अर्थ-सहित संग्रह) ... ... ॥=)

आरोग्यविधान (तन्दुरुस्त रहने के सरल उपाय) ।-)

दुखी भारत (सचित्र) ... ... ४)

जीवन-चरित्र

१—कुछ आदर्श महापुरुषों के जीवन-चरित्र

विद्यासागर (१५ चित्रों के साथ ५८६ पृष्ठों में मनोहर जिल्द सहित) ... ... ३)

महादेव गोविन्द रानडे ... ... १॥)

गारफ़ील्ड (अमेरिका के प्रेसीडेंट जेम्स एवरम गारफ़ील्ड का चरित्र) ... ... ॥)

वीरकेसरी नेपोलियन बोनापार्ट ... ... २॥)

अकबर (प्रसिद्ध मुग़ल-सम्राट् का सविस्तर जीवन-वृत्तान्त) ... ... १)

चमत्कारी बालक (२१ बालकों के विचित्र चरित्रों का संग्रह) ... ... ।=)

प्रह्लाद (चार सुन्दर चित्रों तथा तिरंगे कवर-सहित) ... ... ।)

युधिष्ठिर (कई चित्रों तथा तिरंगे कवर-सहित) ।=)

हिन्दी-कोविद-रत्नमाला (सचित्र) दो भाग ३॥।)

श्रीगौराङ्ग-जीवनी ... ... ≡)

भारतवर्ष के धुरन्धर कवि ... ... ।=)

भारतीय साधक (सचित्र) ... ... ॥।)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ... ... ॥।)

भक्त-चरितावली (सचित्र) ... ... २॥)

विदेशी विद्वान् ... ... १)

चरितचर्या ... ... ॥।=)

२—कुछ प्रसिद्ध विदुषियों के जीवन-चरित्र

सीता-चरित्र (सचित्र) और सजिल्द ... १॥।)

पतिव्रता गांधारी (मनोहर तथा सरल भाषा में) ॥=)

आदर्शमहिला (पौने तीन सौ पेज, १३ बढ़िया चित्र, सुन्दर जिल्द) ... ... २)

भारतीय विदुषी (४० प्राचीन विदुषी देवियों के चरित्र) ... ... ॥)

पतिव्रता (पतिव्रताओं के चरित्र) ... १)

श्रीविष्णुप्रियाचरित्र (गौरांग महाप्रभु की धर्मपत्नी की जीवनी) ... ... ≡)

दमयन्ती (चार सुन्दर चित्र और तिरङ्गा कवर) ।)

सावित्री ,, ,, ,, ... ।)

सती ,, ,, ,, ... ।-)

३—बहू-बेटियों और स्त्रियों के लिए

सीता-वनवास (सीताजी के परित्यक्त किये जाने की कथा) ... ... ॥=)

सुशीला-चरित्र (स्त्री-समाज के सुधार की शिक्षा देनेवाली) ... ... ।)

तारा (बहुत ही चित्ताकर्षक मनोरञ्जक) ... ।)

मझली दीदी (वात्सल्य तथा करुणा का सच्चा चित्र) ... ... ॥।)

अरक्षणीया (मर्मस्पर्शी कथा) ... ... ।)

सुधा (स्त्री-शिक्षा और सामाजिक सुधारों पर प्रकाश सचित्र) ... ... ।)

शीला देवी (सचित्र, और सजिल्द) ... २)

शिशुपालन (सचित्र) ... ... ।)

बाल-दुर्गा देवी दुर्गा की वीरताओं का (सचित्र वर्णन) ... ... ॥)

पार्वती और यशोदा (इसके पढ़ने से स्त्रियों का स्वभाव बहुत कुछ सुधर सकता है) ।)

सौभाग्यवती (इसे पढ़ कर स्त्रियाँ बहुत कुछ उपदेश ग्रहण कर सकती हैं) ... ।)

लक्ष्मी (उच्च श्रेणी का चरित्र) ... ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युगलांगुलीय (इसमें दिखाया गया है कि विवाहिता स्त्री को सतीत्वरक्षा के लिए किन-किन आपदाओं का सामना करना पड़ता है) ।-)

स्वर्णलता (गृहस्थाश्रम का सच्चा बन्धु) ... ... १॥।)

रोचक और अनूठे उपन्यास, क़िस्से-कहानी, नाटक, उपाख्यान आदि

१—डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर के उपन्यासों का अनुवाद

गौर-मोहन (पृष्ठ-संख्या ८०० से ऊपर) ... ४)

राजर्षि (पढ़ने से बुरी वासना दूर होती है) ... १।)

विचित्र-वधू-रहस्य (एक से एक बढ़कर घटनायें हैं) ... ... १)

मुकुट (भाई-भाई में अनबन होने का परिणाम) ... ... ।)

आश्चर्य-घटना (विचित्र कथानक) ... ... १॥)

डाकघर (मज़ेदार और सरस कहानी) ... ।-)

गल्प-गुच्छ (छोटी-छोटी कहानियों का संग्रह,... चार भाग) ... ... ३॥।)

हास्य-कौतुक (हँसने-हँसाने का मसाला) ... ।=)

व्यंग्य-कौतुक (हास्य-प्रहसन-व्यंग्य) ... ॥)

२—स्व० बाबू रमेशचन्द्र दत्त के उपन्यासों का हिन्दी-अनुवाद

महाराष्ट्र-जीवन-प्रभात ... ... १॥)

राजपूत-जीवन-संध्या (राजपूतों की घटती कला का सुन्दर फ़ोटो) ... ... १॥)

समाज (रोचक और शिक्षादायक) ... १)

माधवी-कङ्कण (पवित्र भावपूर्ण) ... १)

३—प्रभात बाबू के उपन्यास और कहानियों का हिन्दी-अनुवाद

रत्नदीप (कई चित्र और सुन्दर जिल्द) ... २)

षोडशी (उत्तमोत्तम १६ कहानियाँ) ... १।)

पत्र-पुष्प (एक से एक बढ़कर कहानियाँ) ... १॥)

देशी और विलायती (पूर्व और पश्चिम का सम्मिलन) ... ... २॥)

नवीन संन्यासी (नागरिक और ग्राम्यजीवन दोनों का चित्रण)... ... ... ३॥)

नवकथा (समाज के विभिन्न अङ्गों का चित्र) १॥।)

पञ्च-पल्लव (भारत की धार्मिक साहित्यिक और सामाजिक दशा का चित्र) ... १॥)

त्रिधारा (नैतिक और पारिवारिक दशा का चित्र) १)

मणिमाला (मानव-प्रकृति का सचित्र परिचय) २॥)

अनाथ बालक (करुणरस का सजीव चित्र) १)

नूतन चरित्र (विचित्र उपन्यास) ... ... १॥)

तरल-तरङ्ग (एक बढ़िया उपन्यास वा दो नाटक) ॥।)

टाम काका की कुटिया (ऐतिहासिक सच्ची घटनायें ... ... २॥)

४—शरद्-ग्रन्थावली के उत्तमोत्तम उपन्यास

बड़ी दीदी (पढ़ने से हृदय भर आता है।) १)

मझली दीदी ... ... ॥।)

परिणीता (खेल-खेल में विवाह) ... १)

पण्डितजी (ग्रामसुधार की उत्तम योजना) १॥

नव विधान (शरद्बाबू का मनोहर सामाजिक उपन्यास)... ... ... १)

अरक्षणीया ... ... १)

देहाती समाज ... ... २)

लेनदेन ... ... २॥)

श्रीकान्त छप रहा है ... ...

स्वामी ,, ,, ...

५—अन्यान्य लेखकों की उत्तमोत्तम कृतियाँ

सुदर्शन-सुधा (शिक्षादायक कहानियों का मनोहर संग्रह) ... ... २)

परिवर्तन ... ... ॥)

रूबिया ... ... १॥)

तीर्थ-यात्रा ... ... २)

शकुन्तला (सचित्र नाटक) ... ... १)

सत्यहरिश्चन्द्र (प्रसिद्ध ,,) ... ... ॥)

मिस अमेरिकन (सचित्र प्रहसन) ... ... ॥=)

मैकबेथ (जादू टोने का प्रभाव) ... ... १)

आनरेरी मजिस्ट्रेट (सचित्र प्रहसन) ... ॥=)

आरबेल्ल नाटकावली (सचित्र) ... ... ३॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधु और वेश्या (उर्दू, सचित्र) ... ।।।)
टटोलूराम टलास्त्री (सचित्र) ... ... ।।।)
श्यामा (उर्दू उपन्यास) ... ... १।।)
आख्यायिका-सप्तक ... ... ।।=)
राजा दिलीप-नाटक (सचित्र) ... ... १।।)
मोहनमाला ... ... ।=

काव्य, साहित्य, समालोचना

रामचरितमानस (सटीक और सचित्र) ... ८)
रामचरितमानस (सटीक और सजिल्द) ... ६)
रामचरितमानस (मूल और सचित्र) ... २।।)
संक्षिप्त रामचरितमानस (सचित्र) ... १)
अयोध्याकाण्ड (मूल) ... ... ।।।)
अयोध्याकाण्ड (सटीक) ... ... २)
अरण्यकाण्ड (मूल) ... ... ।-)
सुन्दरकाण्ड (मूल) ... ... ।-)
मानससूक्तावली ... ... १)
विनयपत्रिका (सटीक और सचित्र) ... ३)
कादम्बरी (संस्कृत) ... ... ।।।)
हितोपदेश (संस्कृत) ... ... ।।)
संक्षिप्त सूरसागर (सजिल्द) ... २।।)
विद्यापति ठाकुर की पद्यावली ... २)
कविता-कलाप (सचित्र और सटीक) ... ३)
कुमारसम्भवसार ... ... ।)
हिन्दी-मेघदूत (खड़ी बोली में हिन्दी-अनुवाद) ।।)
मेघदूत (लक्ष्मणसिंह) ... ... ।।=)
चारण (पद्यात्मक कहानी) ... ।)
दयानन्द-दिग्विजय (महाकाव्य) ... ४)
हिन्दी-महाभारत (मूल आख्यान) ... ४)
श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (सचित्र और सजिल्द दो भागों में) ... १०)
रघुवंश सचित्र ... ३)
कुमारसम्भव ... १)
किरातार्जुनीय ... २)
मेघदूत (द्विवेदी) ... ।-)
हिन्दी-भाषा की उत्पत्ति ... ।=)
मौलिकता ... ... ।)
कालिदास की निरंकुशता ... ।=)
विक्रमाङ्कदेव-चरित-चर्चा ... ।=)
नाट्य-शास्त्र ... ।)
विनोद-वैचित्र्य ... ।)
संक्षिप्त पद्मावत (अनेक ज्ञातव्य बातों सहित ३८ पृष्ठों में सुलिखित भूमिका-सहित) ... १।।)
पल्लव (खड़ी बोली की मनोहारिणी कविताओं का सचित्र बढ़िया संग्रह) ... २)
सुबह-वतन (नस-नस में बिजली दौड़ा देनेवाली जातीय कविताओं का संग्रह) हिन्दी या उर्दू में प्रत्येक का मूल्य ... २)
गद्य-कुसुमावली (बाबू श्यामसुन्दरदास के साहित्यिक लेखों का संग्रह) ... २)
उज्ज्वल तारे ... १)
गङ्गावतरण (सचित्र काव्य) ... ... ।।।),१)
प्राचीन साहित्य (रवीन्द्र बाबू) ... ।।।)
पद्य-समुच्चय ... ।।=)
माधवी (ले० श्रीगोपालशरणसिंह) ... १।।)
वीणा ... १)
संक्षिप्त बिहारी ... १।।)
आलोचनाञ्जलि ... १)
कोविद-कीर्तन ... १)
मक्खियों की करतूत ... ।=)
ध्रुपद-स्वर-लिपि ... ६),१२)
सरस-सुमन ... ।)
स्वप्न-वासवदत्ता

इतिहास, अर्थशास्त्र और गणित

आधुनिक इंगलैंड ... २)
गढ़-राज-वंशावली ... ।)
अल-बे-रूनी का भारत (तीन भाग) ... ६।)
मध्य-प्रदेश और बरार का इतिहास ... १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर	१॥)	ऋद्धि	१॥।)
इत्सिंग की भारत-यात्रा	२॥।)	अर्थशास्त्र-प्रवेशिका	।=)
यूरोप का इतिहास (सचित्र)	४)	मानसिक आकर्षण-द्वारा व्यापारिक सफलता	।)
फ्रांस का इतिहास	३)	हिन्दुस्तानी मापविद्या	॥)
मौर्य-साम्राज्य का इतिहास (सचित्र)	५)	लकड़ी के दाम निकालने की जन्त्री	१॥)
ह्वेनसांग का भारत-भ्रमण	४)	अरिथम्यटिक शिक्षा-प्रणाली	॥।)
कौटिलीय अर्थशास्त्र-मीमांसा अर्थात् कौटिल्य की राज्य-शासन-व्यवस्था	१॥)	**उर्दू**	
राज्य-विज्ञान	२)	पयामे रूह	३)
प्राचीन चिह्न	॥।)	डाली का जोग	१)
		निशाते रूह	२)

अध्यात्म, दर्शन, विज्ञान, वेदान्त, आरोग्य और चिकित्सा-ग्रन्थ

कर्मवाद और जन्मान्तरवाद	२।)	विचित्र प्रबन्ध (रवीन्द्र बाबू)	२)
गीता में ईश्वर-वाद	१॥।)	ज्ञानेश्वरी (सटीक गीता)	४)
हर्बर्ट स्पेन्सर की ज्ञेय-मीमांसा	।-)	क्षयरोग	॥=)
प्रकृति	१।)	शरीर और शरीर-रक्षा (सचित्र)	॥)
ग्रह-नक्षत्र (सचित्र)	२)	जल-चिकित्सा (सचित्र)	।-)
प्राकृतिकी (विज्ञान-विषयक बढ़िया-बढ़िया निबन्ध)	२॥)	मानुषी अङ्ग तथा स्वास्थ्य	॥।)
प्रकृति की नीति	॥।)	आध्यात्मिकी	१)
वैज्ञानिकी (जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध रखने-वाली वैज्ञानिक बातें)	१॥)	व्यायाम-शिक्षा	॥।)
		संक्षिप्त कर्मयोग	॥।)

अलङ्कार, कोष, निबन्ध और व्याकरण

हिन्दी-अँगरेज़ी डिक्सनरी	६)	मानस-दर्पण	॥)
मानस-प्रबोध	१)		

विविध विषय

लन्दन-पेरिस की सैर (सचित्र)	२)	शिक्षा	३॥)
भू-प्रदक्षिण (सचित्र)	५)	संगीत-सुदर्शन	१।)
गोपालन (प्रत्येक घर में रखने लायक़ सचित्र पुस्तक)	॥।)	मौलाना हाली और उनका काव्य	१)
		महाकवि अकबर	१)
		उपासना	॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा-द्वारा प्रकाशित कुछ महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ

कर्त्तव्य (विद्वान् स्माइल्स की प्रसिद्ध पुस्तक के आधार पर)	१।)
ऐतिहासिक कहानियाँ (इतिहास की बड़ी-बड़ी सोलह घटनायें कहानियों के ढङ्ग पर)	१।)
ललित-शिक्षावली (छोटी-छोटी पढ़ने योग्य कहानियाँ)	।)
आदर्श-जीवन (उत्तम संस्कार उत्पन्न करने की उपयोगी पुस्तक)	१।)
जीवन के आनन्द (किस प्रकार मनुष्य सुखी रह सकता है, यही इसमें बताया गया है)	१।)
कर्त्तव्य-शास्त्र (किस समय और कौन सा काम कर्त्तव्यस्वरूप है बतलाने की पुस्तक)	१।)
आत्मोद्धार (वाशिङ्गटन की प्रसिद्ध पुस्तक का अनुवाद)	१।)
पुरुषार्थ	१।)
गुरु गोविन्दसिंह	१।)
राणा जङ्गबहादुर (शिक्षाप्रद और विलक्षण घटनाओं से भरी जीवनी)	१।)
भीष्म-पितामह	१।)
बुद्धदेव (उपदेश तथा जीवनी)	१।)
नेपोलियन बोनापार्ट	१।)
रणजीतसिंह	१।)
बोपदेव ...	=)
शेख़ मुहम्मद बाबा ...	-)
कविवर बिहारीलाल ...	=)
आर्यचरितामृत ...	-)
न्यायी नौशेरवाँ ...	॥=)
अहिल्याबाई (सुप्रसिद्ध धर्मपरायणा महारानी की शिक्षाप्रद जीवनी) ...	१।)
भक्त-नामावली	॥≡)
भगवद्गीता ...	।-)
वैशेषिक दर्शन ...	।=)
न्याय-प्रकाश ...	।।।)
आयुर्वेद-निदान-समीक्षा ...	=)
ज्योतिर्विनोद ...	१।)
विश्व-प्रपंच (दो भाग) ...	२॥)
ज्ञानयोग (दो खंड) ...	५)
पाश्चात्य-दर्शन ...	२॥)
आदर्श-हिन्दू (उपन्यास वा तीर्थ-पर्यटन दोनों तीन भागों में)	३।।।)
लालचीन (स्वतंत्र ऐतिहासिक उपन्यास)	१।)
वीरमणि ,, ,, ...	१।)
करुणा (मनोरञ्जक ऐतिहासिक उपन्यास)...	३॥)
शशांक ,, ,,	३)
रानी केतकी की कहानी	।)
अखरावट	≡)
अनन्य-ग्रन्थावली	≡)
भूषण-ग्रन्थावली	१।)
जायसी-ग्रन्थावली	३)
दीनदयाल-ग्रन्थावली	१)
इन्द्रावती	।।।)
चित्रावली	२)
परमालरासो	२)
बीसलदेवरासो	।।।)
राजविलास	१)
छत्रप्रकाश	।।।)
सुजान-चरित	२)
दादूदयाल की बानी	।।)
,, के शब्द	।।)
खुसरो की हिन्दी-कविता	।।)

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिम्मत-बहादुर-विरदावली	॥)
प्रेमसागर	२)
तुलसी-ग्रन्थावली (तीन खंड) ६), प्रत्येक	२॥)
कवितावली	॥=)
गीतावली	१)
दोहावली	।-)
सुन्दरसागर	१।)
रामचन्द्रिका	१।)
सूरसुधा	१।)
संक्षिप्त रामस्वयंवर	१।)
शिखर-वंशोत्पत्ति	।।।)
राज्य-प्रबन्ध-शिक्षा	।।।)
कबीर-ग्रन्थावली	३)
सिन्ध देश का इतिहास	।)
यूनान का इतिहास	।।।)
भारतवर्ष-शासन-पद्धति	॥)
सिक्खों का उत्थान और पतन	१।)
हिन्दोस्तान (दो भाग)	२॥)
शासन-पद्धति	१।)
जर्मनी का विकास (दो भाग) ...	२॥)
मुसलमानी राज्य का इतिहास (दो भाग)	२॥)
शाही दृश्य	१।)
फाहियान का यात्रा-वर्णन	१॥)
सुङ्गयुन का यात्रा-वर्णन	१)
सुलेमान सौदागर	१।)
अशोक की धर्म-लिपियाँ	३)
हुमायूँ-नामा	१॥)
प्राचीन मुद्रा	३॥)
मृता नैणसी की ख्याति	३॥)
अकबरी-दरबार	२॥)
रुस्मीर-हठ	॥)

मौर्य-कालीन भारत का इतिहास ...	२)
हिन्दू-राज्य-तन्त्र	३॥)
प्राचीन आर्य-वीरता	१।)
रोम का इतिहास	१।)
हिन्दी-व्याकरण (६ भाग) प्रतिभाग ...	।।।)
संक्षिप्त हिन्दी-व्याकरण	।।।=)
मध्य-हिन्दी-व्याकरण	॥)
प्रथम हिन्दी-व्याकरण	।)
आर्षप्राकृत व्याकरण	।)
हिन्दी-लेक्चर	-)
कालबोध	≡)
लेखक और नागरी लेखक	-)
निगमन और आगमन	-)
भारतीय प्राचीन लिपिमाला	२५)
अन्योक्ति-कल्पद्रुम	।=)
होरेशिअस	≡)
प्रवेशिका पद्यावली	।।।)
हिन्दी क्या है ?	-)
भाषा	≡)॥
प्रबोध-चन्द्रिका	।=)
हरिश्चन्द्र काव्य	≡)
भारतवर्ष में पश्चिमीय शिक्षा (हिन्दी) ...	।=)
,, ,, (उर्दू)	।=)
हिन्दी की हस्तलिखित पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण ३) सजिल्द	३॥)
भौतिक-विज्ञान	१।)
कबीर-वचनावली	१।)
तर्कशास्त्र तीन भाग	३॥)
मुद्राशास्त्र	२॥)
बाकीदास-ग्रन्थावली (प्रथम भाग) ...	॥)
बालशिक्षा	॥)

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तके ! नई पुस्तकें !!

क्या आप गृहस्थी के सारे सुखों का अनुभव करते हुए भी अपने चित्त को ईश्वर की आराधना में एकाग्र करना चाहते हैं ?

यदि हों तो इसके लिए

उपासना

से बढ़ कर और कोई भी पुस्तक आपको न मिलेगी। इस पुस्तक में एक तत्त्व-दर्शी महात्मा द्वारा मनन किये हुए भावमय स्तोत्रों का संग्रह किया गया है। जिन महात्मा की पवित्र लेखनी के द्वारा इस पुस्तक की रचना हुई है वे संस्कृत के एक प्रगाढ़ एवं स्वाध्यायशील विद्वान् ही नहीं हैं, बल्कि परम निष्ठावान् ब्राह्मण तथा उच्च कोटि के साधक भी हैं। बँगला में तो आपकी साधना-सम्बन्धी पुस्तकें निराश-प्राणियों के हृदय में भी नव आशा का सञ्चार कर रही हैं। आपकी रचना में वह शक्ति है। कि इसका मनन करने से ईश्वर के प्रति पाठक का चित्त अपने आप ही आकर्षित होने लगता है। प्रत्येक स्तोत्र के नीचे सरल हिन्दी में अर्थ भी दिया गया है। मूल्य ॥) आठ आना।

मोहनमाला

लेखक श्रीयुत नलिनीमोहन सान्याल, भाषातत्त्वरत्न, एम० ए०,

इस छोटी सी पुस्तक में सान्याल महोदय-द्वारा लिखित तीन कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ ऐतिहासिक हैं। इन कहानियों की उत्तमता के सम्बन्ध में—

राय साहब बाबू श्यामसुन्दरदास ने लिखा है—

कहानियाँ ऐसे मनोहर ढङ्ग से कही गई हैं कि पुरानी तथा प्रसिद्ध घटनायें होने पर भी उनमें नवीनता आ गई है और उन्हें आदि से अन्त तक पढ़े बिना मन नहीं मानता। मूल्य ।≈)

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य का इतिहास

यह सूर्यकुमारी-पुस्तकमाला का १२ वाँ पुष्प है। इसका विषय नाम से ही प्रकट है। पुस्तक को आदिकाल, पूर्वमध्यकाल, उत्तरमध्य-काल और आधुनिक काल--इन चार भागों में विभक्त करके इतिहास का निरूपण किया गया है। इसमें कवियों तथा लेखकों का परिचय और उनकी कृतियों के चुने हुए कुछ उदाहरण तो हैं ही, किन्तु लेखक ने विशेष महत्त्व दिया है समय की प्रवृत्ति का पता लगाकर विचारधारा के विकास को व्यक्त करने में। यह संग्रह-ग्रन्थ नहीं, इतिहास है और अपने ढङ्ग का बिलकुल पहला ग्रन्थ है। इसके लेखक हैं काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय के हिन्दी-व्याख्याता पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, जिन्हें इस विषय का ख़ासा ज्ञान है। पृष्ठ-संख्या ६८४+६०+१६। सजिल्द पुस्तक का मूल्य सिर्फ़ ४॥) चार रुपये आठ आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू संस्कृति का सच्चा स्वरूप

महाभारत

है, जो आज भी हमें जीवित रक्खे हुए है। महाभारत में क्या है? इसका एक ही उत्तर है—महाभारत में सब कुछ है। लौकिक और पारलौकिक के सम्बन्ध में आप जो जानना चाहते हैं, सब महाभारत में मिलेगा।

हाँ, ऐसा महाभारत पढ़िए जिससे सरलता से सब समझ में आ जाय। जिसे बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी पढ़ सकें और समझ सकें।

इंडियन प्रेस का महाभारत आज लाखों हाथों में पहुँच चुका है। तमाम भारत में दिनों दिन इसका प्रचार बढ़ता जा रहा है। इसकी सरसता, सरलता और रोचकता ने हर एक को मोहित कर लिया है। चित्रों ने कमाल पैदा कर दिया है। आज तक कहीं से ऐसा महाभारत प्रकाशित नहीं हुआ। एक संग्रहणीय चीज़ है। लगभग तीन चौथाई भाग प्रकाशित हो चुका है। प्राप्त होने का तरीक़ा बहुत सुगम है। पत्र-व्यवहार कीजिए। एक प्रति नमूने के तौर पर मँगाइए।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती

फ़रवरी

१९३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामिनिया ऑईल (रजिस्टर्ड)

यानी बालों का जीवन

ईश्वर ने मनुष्यों को जो बाल दिये हैं, वे कुछ बेकार नहीं हैं। उनकी देख-भाल करने की आवश्यकता है, बालों की देख-भाल करने के लिए बहुत से लोग तेल इस्तेमाल करते हैं। परन्तु उनका ख़्याल है कि वह तेल फ़ायदा पहुँचाने की ताक़त रखता है या नहीं, उलटा बजाय फ़ायदा के नुक़सान पहुँचने का अन्देशा है। बल्कि बाल गिरने लगते हैं।

कामिनिया ऑईल (रजिस्टर्ड)

बालों की जड़ को पोषण देकर बाल उगाने में मदद देनेवाला अमूल्य वनस्पतियुक्त तत्त्व से तैयार किया गया अत्यन्त उमदा व दिलखुश तेल है! बाल और दिमाग़ के लिए इससे मुफ़ीद दूसरा तेल तलाश करने पर भी आपको न मिलेगा। लाखों आदमी हमेशा इस्तेमाल करते हैं। आप भी आज ही इस्तेमाल कर आज़माइश कर लेवें।

मूल्य प्रति शीशी १) रु० डाकख़र्च ।=) अलग
तीन शीशी २॥=) डाकख़र्च ।॥) अलग

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

पूर्वीय देशों का एक सुप्रसिद्ध सुगन्धित तोहफ़ा

जिन सज्जनों ने इसका व्यवहार किया है, उन्होंने मुक्तकंठ से इसकी प्रशंसा की है कि यदि बाज़ार में कोई अच्छा इत्र है तो यही है। इसमें स्पिरिट नहीं रहता। चन्द बूँद अपने रूमाल पर छिड़क लीजिये, फिर इसकी आकर्षक सुगन्ध आपका पीछा न छोड़ेगी। इसमें ताजे फूलों की मीठी ख़ुशबू वहक वहक रहती है।

इस सुन्दर मनोमोहक सुगन्ध की एक बार एक शीशी मँगवा कर आप परीक्षा करें और फिर तो आप इसे हमेशा अपने पास रक्खेंगे।

मूल्य ½ औंस प्रति शी० २) रु०, ¼ औंस प्रति शी० १।) रु०, १ ड्राम प्रति शीशी ।॥) आ०, ½ ड्राम प्रति शी० ॥) आ०

ओटो दिलबहार कार्ड ॥=) आने दर्जन, डाकव्यय अलग।

चेहरे को सुन्दर और मुलायम बनाने के लिए

कामिनिया स्नो (रजिस्टर्ड)

एक अफ़लातून उमदा चीज़ है, चेहरे पर थोड़ा थोड़ा लगाने से निर्जीव जैसे चमड़े का रङ्ग-रूप अत्यन्त चमकदार होता है। मूल्य प्रति पॉट ।॥) आना। डाकव्यय अलग।

दी एंग्लो इन्डियन ड्रग एन्ड केमिकल कम्पनी

२८५ जुमा मसजिद मार्केट, बम्बई नं० २।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर जिल्द !

बढ़िया कागज़ !!

लीलावती का स्वप्न

कात्यायनी दत्त त्रिवेदी

बढ़िया छपाई !!!

मूल्य ।।।)

यह पुस्तक वंगभाषा के सुविख्यात धुरंधर लेखक श्रीयुत मनोमोहन राय बी० ए०, बी० एल० की "लीलारस्वप्न" का हिन्दीरूपान्तर है। रूपान्तरकार हैं हिन्दी के यशस्वी लेखक पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी। सरल और ज़ोरदार भाषा इस रूपान्तर की विशेषता है। इस उपन्यास के प्रधान पात्र हैं, भगवान् भास्कराचार्य्य और प्रधान पात्री हैं विदुषी लीलावती। चरित्र-चित्रण करने में उपन्यासकार का कौशल अवर्णनीय है। पुस्तक हाथ में लेकर बिना समाप्त किये छोड़ने की इच्छा नहीं होती। आसानी से समझ में आनेवाली भाषा होने के कारण पुस्तक आबाल-वृद्ध-वनिता सभी के पढ़ने योग्य है।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

वाल्मीकि

हिन्दुओं का विश्वास है कि रामनाम का जप करने और राम का गुणगान करने से मनुष्य अनेक जन्म के पापों से छुटकारा पा जाता है। वाल्मीकि इस बात के सबसे बड़े उदाहरण हैं। जीवन के प्रारम्भिक काल में डाका डालना तथा निरपराध प्राणियों की हत्या करना ही इनका मुख्य काम था, परन्तु आगे चल कर ये ही रामनाम के प्रभाव से एक बड़े भारी ऋषि हो गये और जनसाधारण में रामनाम का प्रचार करने के लिए रामायण नामक महाकाव्य की रचना की, जो संसार के साहित्य में अक्षय एवं अमूल्य रत्न है। इन्हीं महात्मा की जीवनी का घर घर प्रचार करने के लिए यह पुस्तक बड़ी ही सरल और रोचक भाषा में प्रकाशित की गई है। मूल्य ।।)

मैनेजर (बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

(१) खोज (कविता)—[श्रीयुत श्यामनारायण पाण्डेय २०१
(२) एक संस्कृतज्ञ मुसलमान—[श्रीयुत ज्वालादत्त शर्मा २०२
(३) खूँटी बाबू का अपराध—[श्रीयुत श्रीनाथसिंह २०५
(४) हिन्दू-शब्द—[श्रीयुत भाई परमानन्द ... २०९
(५) सूक्ति-सुमन (कविता)—[श्रीयुत रामचरित उपाध्याय २१३
(६) ब्रेज़िल के बोरोबोरो लोग—[श्रीयुत शिवनारायणलाल २१५
(७) सुख की खोज—[श्रीयुत कालीचरण चटर्जी २२०
(८) रूस की अग्नि-परीक्षा—[श्रीयुत मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, बी० ए० ... ... २२४
(९) ज्योत्स्नामयी (कविता)—[श्रीयुत प्रफुल्लचन्द्र ओझा २२१
(१०) दादूपन्थी और उनका महाविद्यालय—[श्रीयुत हनूमान शर्मा २३०
(११) अत्याचार का परिणाम—[श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव, एम० ए० ... ... २३[illegible]
(१२) भारत का भविष्य—[श्रीयुत रामप्रसाद पाण्डेय, एम० ए० ... ... २३[illegible]
(१३) निराशा (कविता)—[श्रीयुत देवशंकर त्रिवेदी, बी० ए० ... ... २३[illegible]
(१४) मैं ल्हासा कैसे पहुँचा ?—[श्रीयुत राहुल सांकृत्यायन ... ... २३[illegible]
(१५) फ़िलस्तीन—[श्रीयुत परिपूर्णानन्द वर्मा ... २३[illegible]
(१६) अखिल-एशिया-शिक्षा-सम्मेलन—[श्रीयुत जानकीशरण वर्मा, बी० ए० और नरसिंहराम शुक्ल ... ... २३[illegible]
(१७) उन्माद (कविता)—[श्रीयुत रामगोपाल २३[illegible]
(१८) द्वन्द्व—[श्रीयुत ठाकुरदत्त मिश्र ... २३[illegible]
(१९) विचार-विमर्श—[श्रीयुत किशोरीदास वाजपेयी, साहित्य-शास्त्री ... ... २३[illegible]

नई पुस्तक ! नई पुस्तक !!

स्वप्न-वासवदत्ता

(महाकवि भासरचित संस्कृत-नाटक का अनुवाद)

अनुवादक, श्रीयुत सत्यजीवन वर्मा, एम० ए०

भास संस्कृत के बहुत प्राचीन तथा नामी कवियों में हैं। उनकी रचनाओं की छाप कालिदास जैसे सर्वश्रेष्ठ कवि तक की रचनाओं में पाई जाती है। फिर भला ऐसे महाकवि की रचना की उत्तमता में सन्देह का स्थान ही कहाँ है। अनुवाद भी बहुत ही रोचक, सरल और प्रामाणिक है। मूल्य केवल ॥=) दस आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२०) चारु चयन २८९
(१) उस पार (कविता)—[श्रीयुत मंगल-प्रसाद विश्वकर्मा २८९
(२) कामिनी या बाघिन—[श्रीयुत राज-किशोर तिवारी 'कान्त' २८९
(३) भारतीय छायाचित्र—[श्रीयुत कृष्ण-चन्द्र भुअल 'दुखित' २९१
(४) लाक्षागृह—[श्रीयुत शालग्राम श्रीवास्तव २९२
(५) कुसुम—[श्रीयुत चन्द्र २९४
(६) मैक्डानल्ड यूनिवर्सिटी-हिन्दू बोर्डिंग-हाउस प्रयाग की स्वदेशी प्रदर्शनी [श्रीयुत बिहारीलाल खन्ना, बी० ए० २९६
(७) सौंदर्य (कविता)—श्रीयुत कुँअर हिम्मतसिंह, 'साहित्यरञ्जन' ... ३०१
(२१) विज्ञान की करामात—[श्रीयुत नाथूराम शुक्ल ३०२
(२२) मातृ-मण्डल—[श्रीयुत गङ्गाप्रसाद वर्मा ३०६
(२३) पुस्तक-परिचय ३१०
(२४) अपनी बात ३१३

हिन्दी-प्रेमियों के लिए विशेष सुविधा

हमारे यहाँ की सभी विषयों की समस्त पुस्तकें आपको नीचे लिखे स्थानों से हमारे यहाँ के नियमों के अनुसार ही मिल सकेंगी।

१—हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग-हाउस, चौक, बनारस।
२—इंडियन प्रेस, लि०, ब्रांच, जबलपुर।
३—सिटी बुक हाउस, कानपुर।
४—इंडियन पब्लिशिंग-हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।
५—बिहार पब्लिशिंग-हाउस, चौहट्टा, पटना।
६—आगरा पब्लिशिंग-हाउस, आगरा।
७—पं० चरणदास, पंजाब प्रिंटिंग वर्क्स, गनपत रोड, लाहौर।
८—इंडियन प्रेस, लि०, १५९/१ए, बहू बाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता।

निवेदक—इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, संयुक्तप्रांत, प्रयाग

प्रकाशित ग्रन्थ

(१) मध्यकालीन भारत की सामाजिक अवस्था—लेखक, मिस्टर अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली, एम्० ए०, एल्-एल्० एम्०। सुन्दर छपाई, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की जिल्द, रायल साइज़ के १०० पृष्ठ, उर्दू या हिन्दी संस्करण, मूल्य १।)

(२) मध्यकालीन भारतीय संस्कृति—लेखक, राय बहादुर महामहोपाध्याय पं० गौरीशंकर हीराचंद ओझा। सुन्दर छपाई, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की जिल्द, रायल साइज़ के २३० पृष्ठ तथा २४ हाफ़टोन चित्र, मूल्य ३)

(३) कवि-रहस्य—लेखक, डा० गंगानाथ झा। सजिल्द, रायल साइज़ के ११६ पृष्ठ, मूल्य १।)

(४) चर्म बनाने के सिद्धान्त—लेखक, बाबू देवदत्त अरोरा, बी० एस-सी०। सचित्र, आयवरी फ़िनिश पेपर, कपड़े की जिल्द, रायल साइज़ के ३०४ पृष्ठ, मूल्य ३)

(५) हिन्दी सर्वे कमेटी की रिपोर्ट—लेखक, राय बहादुर लाला सीताराम, बी० ए०। मूल्य १॥)

(६) अरब और भारत के संबंध—लेखक, मौलाना सय्यद सुलैमान साहब नदवी, अनुवादक, बाबू रामचंद्र वर्मा। मू० ४)

मिलने का पता— मंत्री, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

१—मन्दोदरी और सीता (रङ्गीन) मुखपृष्ठ

२—श्रीयुत मुईनउद्दीन अहमद ... २०३

३—दानलीला २२४

४-९—दादूपन्थी और उनका महाविद्यालय सम्बन्धी ६ चित्र २३१-२३९

१०-११—मैं लहासा कैसे पहुँचा ?-सम्बन्धी २ चित्र २५५-२५८

१२—अहिरावण-वध (रङ्गीन) २६४

१३-१९—अखिल-एशिया-शिक्षा-सम्मेलन-सम्बन्धी ७ चित्र २६७-२७३

२०-२९—चारु चयन-सम्बन्धी १० चित्र ... २९३-३००

३०-३५—विज्ञान की करामात-सम्बन्धी ६ चित्र ३०२-३०५

३६-३८—मातृ-मण्डल-सम्बन्धी ३ चित्र ... ३०६-३०८

३९—संकीर्तन ३१२

हिन्दी-शब्दसागर

जिसका कार्य वर्षों से चल रहा था, जिसके समान बड़ा विस्तृत और अच्छा कोष हिन्दी में क्या, दूसरी भाषाओं में भी किसी का ही निकला होगा—पूरा होगया। प्रत्येक साहित्य-प्रेमी को इस कोष का संग्रह अवश्य करना चाहिए। पूरा कोष डिमाई क्वार्टो साइज़ के ४५ अंकों में समाप्त हुआ है। प्रत्येक अंक में लगभग १२५ पृष्ठ हैं। मूल्य प्रति अंक १)

मैनेजर (बुकडिपो),
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,
प्रयाग

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, संयुक्तप्रांत, प्रयाग

ये पुस्तकें छप रही हैं—

(१) हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता—लेखक, डा० बेनीप्रसाद, एम० ए०, डी० एस्-सी०।

(२) वेलि क्रिसन रुकमणी री, राठौड़राज प्रिथीराज री कही—संपादक, श्रीयुत सूर्यकरण पारीक।

(३) जन्तु-जगत्—लेखक बाबू व्रजेशबहादुर, बी० ए०, एल्-एल्० बी०। सचित्र मूल्य ६॥)

नाटकों के अनुवाद—

(४) धोखा-धड़ी (Skin Game by J. Galsworthy)—अनुवादक, पंडित ललिताप्रसाद शुक्ल, एम्० ए०।

(५) चाँदी की डिबिया (Silver Box by J. Galsworthy)—अनुवादक, बाबू प्रेमचन्द, बी० ए०। मूल्य १॥)

(६) न्याय (Justice by J. Galsworthy)—अनुवादक, बाबू प्रेमचन्द, बी० ए०।

मिलने का पता—मंत्री, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती के नियम

१—सरस्वती प्रतिमास प्रकाशित होती है।

२—डाकव्यय सहित इसका वार्षिक मूल्य ६॥) है। इसका वर्ष जनवरी से दिसम्बर तक वा जुलाई से जून तक समझा जाता है। बीच में ग्राहक होनेवालों को पूरे वर्ष की संख्यायें दी जाती हैं। प्रतिसंख्या का मूल्य ॥=) है। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य ८), छः महीने का ४) और प्रतिसंख्या का ॥=) है। बिना अग्रिम मूल्य के पत्रिका नहीं भेजी जाती। पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं। जो मिलती भी हैं उनका मूल्य १) प्रति से कम नहीं लिया जाता।

३—अपना नाम और पूरा पता साफ़ साफ़ लिख कर भेजना चाहिए, जिसमें पत्रिका के पहुँचने में गड़बड़ी न हो।

४—जिन सज्जनों को किसी मास की सरस्वती न मिले उन्हें पहले अपने डाकघर से पूछना चाहिए। अगर पता न लगे तो डाकघर से जो उत्तर आवे उसे हमारे पास—जिस महीने की संख्या न मिली हो उसके—अगले महीने की १५ तारीख़ तक भेजें। जिन पत्रों के साथ डाकघर का उत्तर न होगा उन पर ध्यान न दिया जायगा; चाहे वे अगले महीने की १५ ता० के भीतर ही आवें। उन्हें संख्या मूल्य ही पर मिलेगी। सरस्वती यहाँ से दो बार अच्छी तरह जाँच कर रवाना की जाती है। अतएव इस विषय में पहले डाकघर से ही पूछताछ करना अच्छा होगा।

५—यदि एक ही दो मास के लिए पता बदलवाना हो तो डाकख़ाने से उसका प्रबन्ध करा लेना चाहिए और यदि सदा अथवा अधिक काल के लिए बदलवाना हो तो उसकी सूचना हमें अवश्य देनी चाहिए।

६—लेख, कविता, समालोचना के लिए पुस्तकें और लेख के पत्र सम्पादक 'सरस्वती', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग," के पते से भेजने चाहिए। मूल्य तथा प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र "मैनेजर सरस्वती, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद", के पते से आने चाहिए।

७—किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने वा न करने का तथा उसे लौटाने वा न लौटाने का भी अधिकार सम्पादक को है। लेखों के घटाने-बढ़ाने का भी अधिकार सम्पादक को है। जो लेख सम्पादक लौटाना मंजूर करें उनका डाक और रजिस्टरी ख़र्च लेखक के ज़िम्मे होगा। बिना उसे भेजे लेख न लौटाया जायगा।

८—अधूरे लेख नहीं छापे जाते। स्थान के अनुसार उसे एक वा अधिक संख्याओं में प्रकाशित होते हैं।

९—जिन लेखों में चित्र रहेंगे, उन चित्रों के मिलने का जब तक लेखक प्रबन्ध न कर देंगे, तब तक वे लेख न छापे जायँगे। यदि चित्रों के प्राप्त करने में व्यय आवे

१०—पुरस्कार के योग्य लेखों पर लेखकों को यदि वे स्वीकार करेंगे, तो नियमानुसार पुरस्कार भी दिया जायगा।

सरस्वती के विज्ञापन-छपाई के रेट

कवर का दूसरा पृष्ठ	३६)	प्रतिमास
,, ,, ,, एक कालम ...	२१)	,,
,, ,, तीसरा पृष्ठ	३६)	,,
,, ,, ,, एक कालम ...	२१)	,,
,, ,, चौथा पृष्ठ	४८)	,,
,, ,, ,, एक कालम ...	२४)	,,
पाठ्य विषय की समाप्ति के सामनेवाला पृष्ठ	३०)	,,
,, ,, ,, ,, ,, एक कालम	१८)	,,
कवर के द्वितीय पृष्ठ के सामनेवाला पृष्ठ	३०)	,,
,, ,, ,, ,, ,, एक कालम	१८)	,,
कवर के तीसरे पृष्ठ के सामनेवाला पृष्ठ	३०)	,,
,, ,, ,, एक कालम	१८)	,,
रङ्गीन चित्र से पहलेवाला पृष्ठ ...	३०)	,,
,, ,, ,, ,, ,, एक कालम	१८)	,,
लेख-सूची के नीचे ½ पृष्ठ ...	१८)	,,
,, ,, ,, ½ कालम ...	१२)	,,
,, ,, ,, ¼ ,, ...	७)	,,

साधारण नियम ये हैं:—

१ पृष्ठ या २ कालम की छपाई ...	२४)	प्रतिमास
½ ,, या १ ,, ,, ...	१३)	,,
¼ ,, या ½ ,, ,, ...	७)	,,
⅛ ,, या ¼ ,, ,, ...	४)	,,

१—"सरस्वती" में अश्लील विज्ञापन नहीं छापे जाते, अतः कुरुचि-पूर्ण विज्ञापन न भेजिए।

२—एक कालम या इससे अधिक विज्ञापन छपानेवालों को सरस्वती बिना मूल्य भेजी जाती है, औरों को नहीं।

३—छपाई का रेट जो ऊपर दिया है वह अकाट्य (FINAL) है। इसके लिए लिखा-पढ़ी करना व्यर्थ है।

४—जितने समय तक के लिए कन्ट्रैक्ट किया गया है, उतने समय तक विज्ञापन छपाना होगा। विज्ञापन न छपाने पर भी उसका चार्ज विज्ञापक को देना होगा।

पत्र-व्यवहार करने का पता—

मैनेजर, विज्ञापन-विभाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिगड़े हुए स्वास्थ्य के सुधारने और

शरार में नवीन शक्ति का सञ्चार

करने की अव्यर्थ औषधि

सुरबल्ली-कषाय

अर्थात्

प्राचीन काल का सार्सापरीला

यह शरीर में नया खून पैदा करता है और शरीर को समुचित रूप से सतेज बनाता है।

सी० के० सेन एण्ड को० लिमिटेड,

२६, कोलूटोला स्ट्रीट
कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LALIMLI
PURE WOOL

हिन्दुस्तान के बने हुए ऊनी कपड़े

ट्रेड मार्क

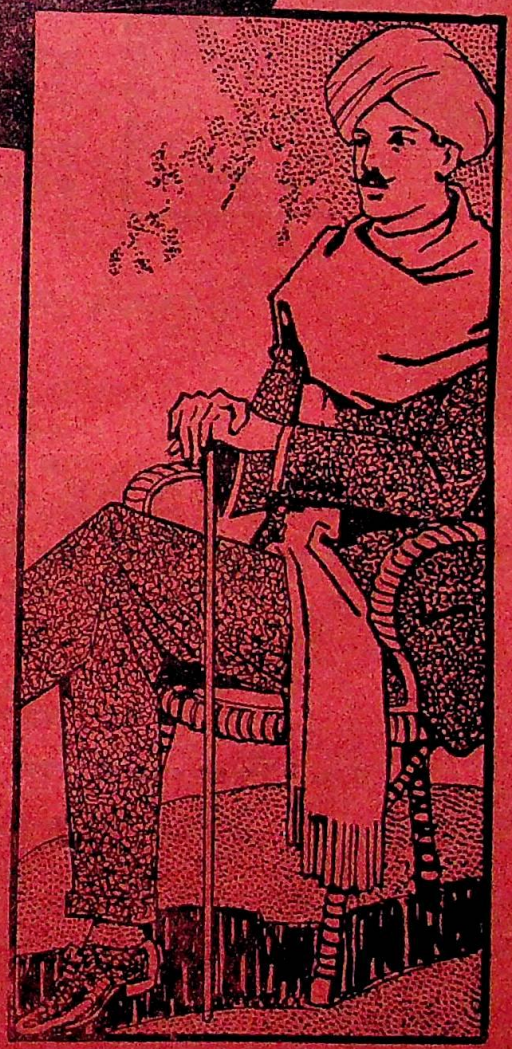

लाल इमली का माल हिन्दुस्तान के चतुर और अनुभवी कारीगरों से तैयार कराया जाता है। बाज़ारों में जितने भी ऊनी कपड़े मिलते हैं, यहाँ का माल उन सबसे मज़बूत, बढ़िया और सस्ता होता है।

फ़लालेन, ट्वीड, सूट के कपड़े, बनियान, सूटर, लोइयाँ, कम्बल, रग, मोज़े और लम्बे मोज़े।

मूल्य और नमूने के लिए हमारे स्थानीय एजेंट से मिलिए, या हमसे पत्र-व्यवहार कीजिए।

दि कानपुर ऊलेन मिल्स, कानपुर

हिन्दुस्तान के पचास वर्ष से अधिक पुराने ऊनी माल के निर्माता।

लाल इमली की एजेंसी—

मेसर्स सदनलाल खन्ना, चौक, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

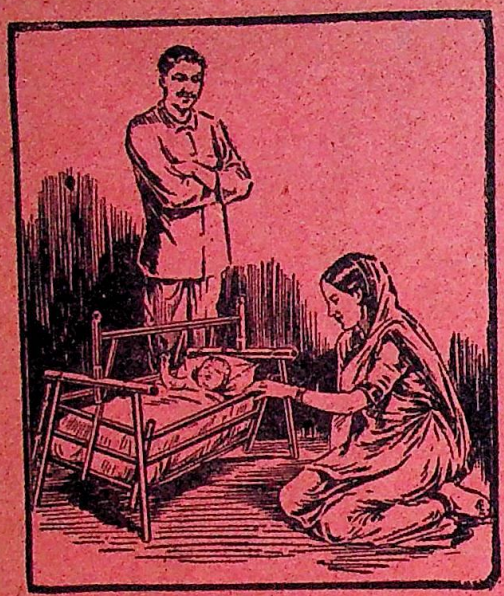

प्रत्येक विवाहित क्यों बीमा कराये ?

अपने परिवार की रक्षा के लिए

अपने लड़के की शिक्षा के लिए

अपनी लड़की के दहेज़ के लिए

बुढ़ापे में सहारा के लिए

प्रूडेंशियल इन्डौमेंट पालिसी में बीमा कराइए और समझ लीजिए कि तुम्हारे बच्चों की शिक्षा, स्त्री की रक्षा और बुढ़ापे में निर्वाह का इन्तज़ाम हो गया।

बुद्धिमानी इसी में है।

THE PRUDENTIAL
—OF ENGLAND—

से

बीमा करा कर इनकी रक्षा कीजिए।

इसके २,६०,००,००० से ज़्यादा पालिसी होल्डर हैं।

विवरण के लिए यह कूपन भेजिए।

To The Prudential Assurance Co., Ltd.,
Clive Buildings, CALCUTTA.

Please send me particulars of all children's Endowment Assurances.

I can afford to pay Rs.....per annum.

Child's age next birthday.....years.

My age next birthday will be.....years.

Name.....

Address.....

PLEASE WRITE IN BLOCK LETTERS.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौहरी और बड़ासाज़
बी० के० मुकर्जी
(जो पहले बचलर सन्स एंड कं० में मुलाज़िम थे)

हमारे कारख़ाने में अँगरेज़ी, हिन्दुस्तानी, काश्मीरी, बंगाली, मुसलमानी हर तरह के ज़ेवर हमेशा बिक्री के लिए तयार रहते हैं। तथा आर्डर देने पर निहायत किफ़ायत के साथ बनाये भी जाते हैं। असली सोना और गिन्नी सोना होने की हम गारंटी करते हैं।

रईसों, अमीर उमरावों से लेकर सभी तरह के पुरुष और स्त्रियों की कलाई पर बाँधने योग्य रिस्टवाच, जेबघड़ी, सोने-चाँदी व निकल केस की घड़ियाँ, कलकत्ता व बम्बई की क़ीमत पर इस कारख़ाने से मिल सकती हैं। एक बार परीक्षा कीजिए। पता—
बी० के० मुकर्जी, ६२ जानसेनगंज, प्रयाग।

शास्त्रीय हिन्दी हार्मोनियम गाईड

बाजे की पेटी बजाने को सिखलानेवाली पुस्तक, ४० रागों के आरोह अवरोह, लक्षण, स्वरूप, विस्तार, १०४ प्रसिद्ध गायनों का स्वरतालयुक्त नोटेशन, सुरावर्त, तिल्लाने इत्यादि पूरी जानकारी-सहित, द्वितीय आवृत्ति, पृष्ठ-संख्या २००, क़ीमत १॥) रुपया, डाक-ख़र्च ।=) विषयों का और गायनों का सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए।

गोपाल सखाराम एण्ड कम्पनी
कालबादेवी रोड, बंबई नं० २

नेशनल इंस्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड
(स्थापित सन् १९०६)

हेड आफ़िस, ९ ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता।

आर्थिक दशा का यथार्थ विवरण।

कुल रक़म जो चालू बीमा में लगी हुई है—	५ करोड़ से ऊपर
कुल रक़म जिसका १९२८ में नया जीवन-बीमा हुआ—	१ करोड़ से ऊपर
प्रीमियम से १९२८ ई० में आय—	२५ लाख ,, ,,
कुल "क्लेम" जो दिये जा चुके—	६२ ,, ,, ,,
कुल रक़म (व्यापार में लगी हुई)—	१ करोड़ ३५ लाख से ऊपर

कम्पनी की विशेषतायें

(१) प्रीमियम का रेट कम है।
(२) रुपया आसानी से उधार मिल जाता है।
(३) 'क्लेम' फ़ौरन तय किये जाते हैं। अगर तय होने में ६ महीने से अधिक विलम्ब हो जाय तो ४) रु० सैकड़ा ब्याज दिया जाता है।
(४) बोनस माकूल मिलता है।

फ़ार्म और एजेन्सी के लिए हमारे चीफ़ एजेंट से पत्र-व्यवहार कीजिए—

श्रीयुत एस० एन० दास गुप्त, एम० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति का ख़ज़ाना यानी पृथ्वी पर का अमृत

मदन मंजरी

ये दिव्य गोलियाँ दस्त साफ़ लाती हैं, वीर्य-विकार-संबंधी तमाम शिकायतें नष्ट करती है और मानसिक व शारीरिक प्रत्येक प्रकार की कमज़ोरी को दूर करके नया जीवन देती हैं। क़ी० गोली ४० की डिब्बी १ का १)

बंबई ब्रांचः—३९३ कालवा देवी रोड } राजवैद्य नारायणजी केशवजी। हेड ऑफ़िस जामनगर (काठियावाड़)

इलाहाबाद के एजेन्टः—युनाइटेड स्टोर्स, चौक

अच्छी अच्छी पुस्तकों के लिए आप हमेशा

इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग को ही लिखिए

✻ ऐसा कौन है जिसे फ़ायदा नहीं हुआ ✻

तत्काल गुण दिखानेवाली ४० वर्ष की परीक्षित दवाइयाँ सब दुकानदारों के पास मिलती हैं

सुधासिंधु

कफ़, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेटदर्द, क़ै, दस्त, जाड़े का बुख़ार (इन्फ़्लूएंज़ा) बालकों के हरे पीले दस्त और ऐसे ही पाकाशय के गड़बड़ से उत्पन्न होनेवाले रोगों की एकमात्र दवा। इसके सेवन में किसी अनुपान की ज़रूरत न होने से मुसाफ़िरी में लोग इसे ही साथ रखते हैं। क़ीमत ॥) आने। १ से २ सुधासिंधु का डा० ख़र्च ।=)

बालसुधा

बच्चों को बलवान्, सुन्दर और सुखी बनाने के लिए सुखसंचारक कम्पनी मथुरा का मीठा **"बालसुधा"** पिलाइये। क़ीमत ॥।) आने। १ से २ बालसुधा का डा० ख़र्च ॥)

दद्रुगजकेशरी

यदि संसार में बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को जड़ से खोनेवाली कोई दवा है तो वह यह है। दाद चाहे पुराना हो या नया, मामूली हो या पकनेवाला इसके लगाने से अच्छा होता है। क़ीमत ।) आने। १ से २ का डा० ख़र्च ।=)

वृद्धामृत

शरीर में तत्काल बल बढ़ानेवाली कब्ज़, बदहज़मी, कमज़ोरी, खाँसी और नींद न आना दूर करता है। बुढ़ापे के कारण होनेवाले सभी कष्टों से बचाता है। पीने में मीठा स्वादिष्ट है। क़ीमत तीन पाव की बोतल २), छोटी १) रु० डाकख़र्च। बड़ी बोतल का १॥=) रु० छोटी बोतल का ॥।≡) है।

मिलने का पता—सुखसंचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्व सुविधा ! अनुपम लाभ !!

आपको जब कभी किसी भी विषय की

बालोपयोगी, स्त्रियोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, नैतिक, जीवनचरित्र, अध्यात्म, दर्शन, वेदान्त, विज्ञान, आरोग्यचिकित्सा, उपन्यास, क़िस्से-कहानी, नाटक, उपाख्यान, काव्य, साहित्य-समालोचना, इतिहास, अर्थशास्त्र, गणित, अलंकार, कोष, निबन्ध, व्याकरण, भ्रमण, धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक आदि उत्तमोत्तम इंडियन प्रेस, लिमि०, प्रयाग की तथा काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित पुस्तकों की आवश्यकता हो तो आप हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग-हाउस, चौक, बनारस को लिखिए। स्कूलों की टेक्स्टबुक भी आपको मिलेंगी। साथ ही ग्राहकों ख़रीदारों के साथ ख़ास रियायत की जायगी। प्रत्येक ख़रीदार ग्राहक को कमीशन दिया जायगा। एक बार आज़माइए।

निवेदक—देवेन्द्रचन्द्र विद्याभास्कर, प्रोप्राइटर,
हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग-हाउस, चौक, बनारस।

विराट् विक्री ! विराट् विक्री !

५६२ चीज़ के साथ घड़ी और जूता इनाम।

एक बार परीक्षा करें। सब वस्तु की दर मालूम हो जायगी।

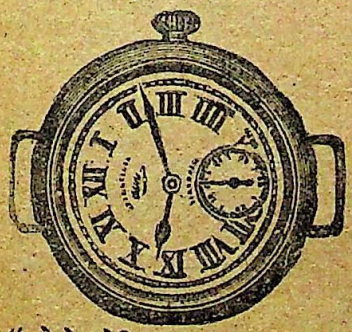

"ओटो मोतिया एसंस" की ६ शीशी ख़रीदनेवालों को नीचे लिखी चीज़ें बिलकुल मुफ़्त दी जायँगी—बैण्डसहित न्यू फैन्सी गोल्ड-गिल्ट "टवाय" रिस्टवाच, एक जोड़ा सुन्दर पैतावा, सुन्दर रूमाल, जोड़ा गोल्ड-गिल्ट चश्मा, लाल पत्थर जड़े अँगूठी, सुन्दर आइना, कंघी, पत्थर जड़ा दुल फौण्टेन पेन (क्लिप और डापर के साथ), पेनसिल, एक कलम, १ रेजर, १ दरजन निब, २४४ जलछवि, ब्लू ब्लैक स्याही की १४४ गोली, १ मनीबेग, १ सुगन्धित साबुन, १ डब्बा ताम्बूलबिहार (पान में व्यवहार करने के लिये) १ पत्थर जड़े नोजरिङ्ग (नाक की झुलनी), १ जोड़ा पारसी मकरी, ६ बालों में लगाने का पीन, ६ सेफ्टी पीन, एक जोड़ा इयर-रिंग (कान की झुलनी), २५ सुइयाँ, १ बण्डल सुन्दर चाक् प्लेइङ्ग कार्ड, एक बन्दूक, १०० टोप, मिलिटरी जीन के जूते, १ जोड़े (पैर के नाप लिखें)। क़ीमत सिर्फ़ ३) पैकिङ्ग व पोस्टेज ॥) अलग लगेगा।

पता—दि इण्डियन नेशनल स्टोर (स०) १७ जयमित्र स्ट्रीट, पोस्ट हाटखोला, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाइरेक्स

सब ज्वरों के लिए

यह दवा बड़ी मशहूर है और सब बुख़ारों पर अच्छी तरह आज़माई हुई है। पाइरेक्स का नियमित रूप से सेवन करने से हज़ारों रोगियों के मलेरिया बुख़ार और दूसरे क़िस्म के बुख़ार जड़ से दूर हो गये हैं।

बासक का अर्क़

मरोड़ और बलग़म की प्रसिद्ध दवा। खाँसी, ज़ुकाम और छाती तथा गले की दूसरी तकलीफ़ों में अत्यन्त लाभ-दायक है।

सब अँगरेज़ी दवा बेचनेवालों के यहाँ मिलती है।

बङ्गाल केमिकल एण्ड
फ़ार्मेसिटिकल वर्क्स, लिमिटेड,
कलकत्ता

Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्ची शक्ति का संग्रह क्यों नहीं करते ?

आँतों को ख़राब होने से रोकती है—

पाचन-शक्ति ख़ूब बढ़ाती है

भारी से भारी भोजन पचाती है

ज्ञानतन्तु की कमज़ोरी—

साधारण कमज़ोरी

हर प्रकार की कमज़ोरी दूर करती है—

तन्दुरुस्ती-ताक़त को बढ़ाती है

—०—

प्रत्येक ऋतु में उपयोगी है

क्या ?

भंडु की

सुवर्ण-मिश्रित

मकरध्वज गुटी

स्वल्प चन्द्रोदय मकरध्वज-भैषज्य-रत्नावली ध्व०

पूर्ण चन्द्रोदय तथा सुवर्ण और चन्द्रोदय का अनुपान मिलाकर बनाई हुई सुनहरे खोलवाली

सुन्दर मनोहर गोलियों से

सच्ची शक्ति का सङ्ग्रह करो

क़ीमत १ तोला की ८) आठ रुपये

विशेष जानने के लिए मकरध्वज का विवरण-पत्र मँगाइए

भंडु फार्मास्युटिकल वर्क्स लि०—बम्बई नं० १४

प्रयाग के एजेन्ट—लक्ष्मीदास एण्ड ब्रादर्स, ४६ जान्स्टनगंज।
लखनऊ के एजेन्ट—ज्ञानेन्द्रनाथ दे, कमलाभण्डार, ८ श्रीराम रोड
बिलासपुर के एजेन्ट - कविराज रवीन्द्रनाथ वैद्यशास्त्री
दिल्ली के एजेन्ट—बालबहार फ़ार्मेसी, चाँदनी चौक।
कानपुर के एजेन्ट—पी० डी० गुप्ता एण्ड को०, जनरलगञ्ज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडियन परफ़्यूमरी के बढ़िया तोहफे

ओटो

दिलप्यारा

क्या कभी आपने इसे लगाया है ? इसकी मीठी ख़ुशबू सचमुच दिल को प्यारी है। स्मृति-रक्षा के लिए 'दिलप्यारा' सचमुच दिल को प्यारा है। बहुत बढ़िया शीशी में दिलप्यारा की न्योछावर सिर्फ़ १), तीन शीशी २॥।), एक दरजन १०) रु०।

बढ़िया

सुगन्धित तेल

तेल मसाला—एक बार इसे लगाने पर ही गुण मालूम हो जावेगा। क़ीमत ३) ४) तथा ८) सेर तक।

तिल्ली का सुगन्धित तेल—ख़ालिस तिल्ली के तेल के गुण सभी को मालूम हैं। इस तेल की सुगन्ध बहुत ही मनोहर है एक बार व्यवहार कर देखिए दाम १२ औंस की एक बोतल १।), तीन बोतलों का ३॥)।

तेल—बेला (मोगरा) ३), ४) ५), ७), १०) सेर।

चमेली ३), ४), ५), ८) १२) सेर।

मेंहदी, आँवला, गुलाब ४), ८) सेर

सुरती

तम्बाकू

क्या आप पान के साथ सुरती खाते हैं ? तो लीजिए एक बार हमारे कारख़ाने में बड़ी पवित्रता के साथ तैयार की गई सुरती का इस्तेमाल कीजिए कैसी ख़ुशबू है और कैसा स्वाद है। आपने तरह तरह की बाज़ारू सुरती खाई होगी, पर इसके खाने से चित्त प्रसन्न होता है और पान का स्वाद सुधरता है। यह असली देशी चीज़ों से तैयार की गई है। कृपा कर एक बार इसे ज़रूर आज़माइए।

पत्ती ४) सेर से ३२) रु० सेर तक, ज़र्दा ४) सेर से ३२) रु० सेर तक।

पता—दी इंडियन परफ्यूमरी, १४ नं० पार्क रोड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने में सभी सुमन अच्छे लगते हैं

परन्तु

जिनमें सुगन्ध होती है वे सबको मोह लेते हैं।

ठाकुर गुरुभक्तसिंह 'भक्त' बी० ए०, एल-एल० बी० रचित

स र स सु म न

में आपको ऐसे ही सुमन मिलेंगे। इसमें पवन, भानु, चपला, जुगनू और बसन्ती पर पाँच सुन्दर कवितायें हैं। प्रत्येक कविता से यह सिद्ध होता है कि कवि प्रकृति-निरीक्षण में कितना कुशल है। पुस्तक बहुत साफ़ और सुन्दर छपी है और उसमें आर्ट पेपर पर दो अत्यन्त सुन्दर तिरङ्गे चित्र भी हैं। एक बार मँगाकर देखिए। तबीयत ख़ुश हो जायगी। मूल्य सिर्फ़ ॥) आठ आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

TWO GEMS

Outcome of 45 years' experience of this renowned Doctor

THE SEVEN BITTERS

An Infallible Specific for Malarious Fevers, acute and chronic, remittent or intermittent with enlargement of Liver and Spleen, Dropsy, etc.

Price—Re. One per bottle.

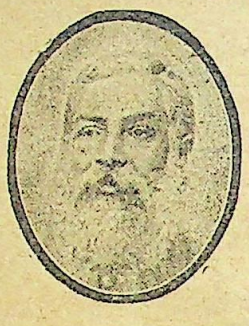

Late Dr. A. C. BANERJI.
Allahabad

INSANITY POWDER

(Specific for Insanity)

Infallible Remedy for Insanity, Mania, Melancholia, Hysteria, Insomnia, etc. Dose one powder a day with Syrup.

Price—Annas Twelve per dose.

सप्ततिक्त

ज्वर, मलेरिया, जूड़ी, तिजारी, चौथिया, नया और पुराना ज्वर, अतरा, ताप, तिल्ली और यकृत इनकी यह अव्यर्थ औषधि है। विस्तृत हाल साथ के व्यवस्थापत्र में देखिए।

मूल्य—१ बोतल का १) एक रुपया।

इनसेनीटी पाउडर

अर्थात् पागल की दवा

इस दवा के सेवन से किसी भी प्रकार से उत्पन्न हुआ पागलपन निस्सन्देह आरोग्य हो जाता है। रात में नींद न आना, सिर में गरमी मालूम होना तथा हिस्टीरिया आदि सब कष्ट दूर हो जाते हैं। दिन में सिर्फ एक खूराक खाई जाती है। विधान-पत्र दवा के साथ भेजा जाता है। दाम ।।।) फ़ी खूराक।

SEVEN BITTERS OFFICE, ALLAHABAD

बालक-बालिकाओं के लिए नई पुस्तकें

मिस्र और हब्श देश का परिचय

यह पुस्तक बहुत ही रोचक तथा उपयोगी है। इसके द्वारा बालकों का मनोरञ्जन तो होगा ही, साथ ही उन्हें बहुत-सी ज्ञातव्य बातें भी अनायास ही मालूम हो जायँगी। मूल्य ।=) छः आने है।

वाल्मीकि

यह आदिकवि वाल्मीकि का संक्षिप्त परिचय है। ऐसे उपाख्यानों के द्वारा बालकों को अपनी प्राचीन सभ्यता की जानकारी प्राप्त करने में बड़ी सहायता मिलती है। मूल्य ।) चार आने है।

राजकहानी

इस पुस्तक में राजपूतों के समय की कुछ ऐतिहासिक कहानियों का संग्रह किया गया है। पुस्तक पढ़ते पढ़ते बालकों का हृदय उत्साह तथा वीर-भाव से ओतप्रोत हो जाता है। मूल्य ।=) छः आने है।

गुदड़ी के लाल ।=) छः आने।

पकौड़ीवाली ।=) छः आने।

इन दोनों पुस्तकों में बालकों के लिए उपयोगी तथा मनोरञ्जक कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ सचित्र तथा शिक्षाप्रद हैं।

राबिन्सन-क्रूसो

यह एक रोचक तथा साहसपूर्ण अँगरेज़ी उपन्यास का अनुवाद है। मूल्य ।।।) बारह आने है।

जापान का हाल

(पण्डित देवीदत्त शुक्ल, सरस्वती-सम्पादक)

जापान के सम्बन्ध में जिन जिन बातों की जानकारी प्राप्त करना युवकों के लिए आवश्यक है, उन सभी का इसमें समावेश किया गया है। मूल्य ।।) आठ आने है।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

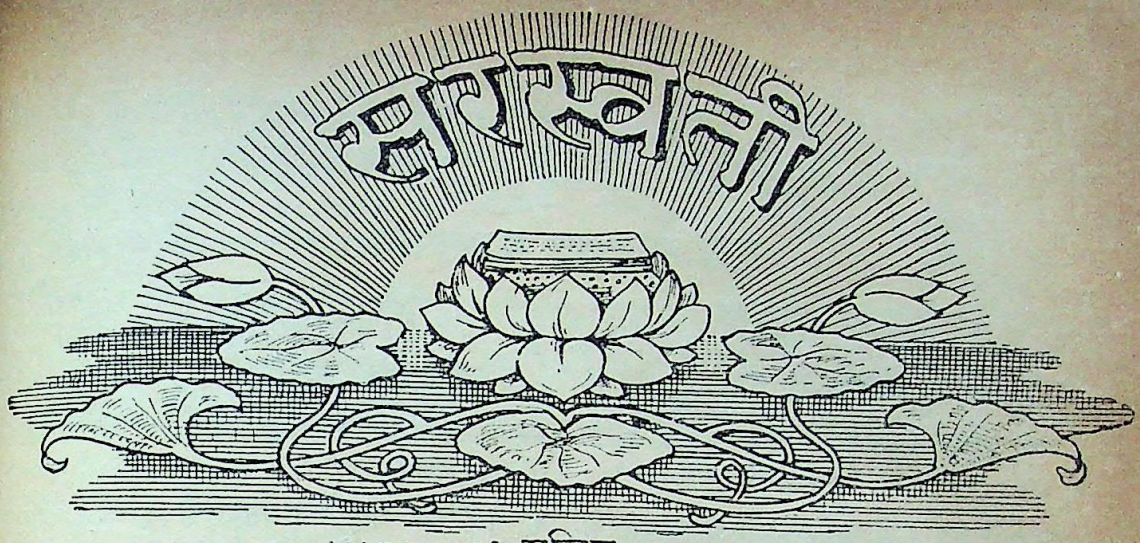

वार्षिक मूल्य ६॥)
Yearly Subscription, Rs. 6-8

सम्पादक
देवीदत्त शुक्ल

प्रति संख्या ॥=)
As. 10 per copy.

भाग ३२, खण्ड १] फ़रवरी १९३१—माघ १९८७ [सं० २, पूर्ण-संख्या ३७४

खोज

(१)

घन की घटा को देख होती कामना है यही,
बन के मयूर मैं तुम्हारी देख माया लूँ ।
चरण-सुधा के बदले है चाह होती यही,
चातक-समान जल-विन्दु बरसाया लूँ ॥
देख सविता की छटा करता यही है मन,
बसके सरोज में तुम्हारी देख छाया लूँ ।
क्यों मैं वसुधा में तुम्हें घूम घूम खोजूँ कहीं,
क्यों न निज प्रेम को तुम्हारी मान काया लूँ॥

(२)

जाते ही दिवा के जब आती है निशा तो तुम,
कुसुम-समान नभ-बीच खिल जाते हो।
मोद-भरी मंजु छबि में हो मिल जाते तुम,
बन के पयोद जल तुम बरसाते हो ॥
कोमल किशोर कलिका में दिखलाते कान्ति,
कंज की कली में छिपे तुम मुसुकाते हो।
आँखें हैं घुमाते तुमको जो देखने के लिए,
भूतल के बीच बस तुम्हीं तो दिखाते हो ॥

—श्री श्यामनारायण पाण्डेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक संस्कृतज्ञ मुसलमान

हिन्दुओं में अनेक अरबी-फ़ारसी के विद्वान् हुए हैं और हैं, किन्तु मुसलमानों में संस्कृत के विद्वान् बहुत कम हुए हैं। फ़ैज़ी आदि के विषय में भी उनके समकालीन मुसलमान इतिहास-लेखकों ने लिखा है कि वे स्वयं संस्कृतज्ञ न थे, संस्कृत और फ़ारसी के विद्वान् हिन्दुओं से ही उन्होंने ग्रन्थ-रचना कराई थी। आज हम सरस्वती के पाठकों का एक संस्कृतज्ञ मुसलमान विद्वान् से परिचय कराते हैं। आपका नाम श्रीयुत मुईनुद्दीन अहमद है। रहनेवाले मेरठ के हैं, किन्तु अब लगभग ३० वर्ष से बम्बई में ही रहते हैं। आपने प्रयाग और कलकत्ता-विश्व-विद्यालयों से उच्च परीक्षायें पास करके योरप का भ्रमण किया। ४ वर्ष तक मिस्र में अरबी, फ़्रेंच और जर्मन-भाषा का अध्ययन किया, वहाँ से लौट कर इन्दौर-कालेज में कुछ समय तक फ़ारसी-भाषा के प्रोफ़ेसर रहे। योरप जाने से पहले ही आपने संस्कृत-भाषा का अध्ययन साधारण रीति से आरम्भ कर दिया था, किन्तु वहाँ से लौट कर आप उसमें विशेष मनोयोग के साथ परिश्रम करने लगे। लगभग ३० वर्ष से आप संस्कृत-भाषा के सुविशाल साहित्य का अनुशीलन कर रहे हैं। रचना की दृष्टि से महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण के आप परम भक्त हैं। उसके अनेक पारायण आप कर चुके हैं, संस्कृत-भाषा का जो कोई पण्डित आपको मिलता है और जब वह यह बताता है कि मैंने कालिदास, भवभूति, माघ और श्रीहर्ष के काव्य पढ़े हैं, किन्तु रामायण का पारायण नहीं किया तब आपको बहुत दुःख होता है और उसे रामायण पढ़ने के लिए आग्रह-पूर्वक उत्तेजना देते हैं। आपकी सम्मति में प्राकृतिक सौन्दर्य और प्राचीन संस्कृति का जैसा अलौकिक और पूर्ण वर्णन आदि-कवि ने किया है वैसा और किसी ने नहीं किया। अनेक कामों में लिप्त रहने पर भी जब कभी आपको अवसर मिलता है रामायण का स्वाध्याय करते हैं।

आज-कल आप बम्बई के सुप्रसिद्ध विल्सन-कालेज में फ़ारसी के प्रोफ़ेसर हैं। यद्यपि इस समय आपकी अवस्था ६० से ऊपर है, शरीर भी बहुत दुर्बल है, किन्तु पढ़ने और पढ़ाने की शक्ति आपमें नवयुवकों से कहीं अधिक है। इसका कारण आपका नियमित और सरल जीवन-निर्वाह है। जवानी में ही आपकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया था, फिर आपने दूसरा विवाह नहीं किया और उस समय से अब तक बड़े संयम और शान्तभाव से भगवती सरस्वती की आराधना कर रहे हैं। कालेज में विद्यार्थियों को पढ़ाना, स्वयं पढ़ना और साहित्यानुशीलन करना ही आपका एक मात्र कार्य है। जब देखो, प्रोफ़ेसर साहब अपने छोटे से कमरे में पुस्तकों के ढेर में छिपे स्वाध्याय में मग्न हैं।

अध्यवसाय के कारण आप अनेक भाषाओं के अच्छे ज्ञाता हो गये हैं। संस्कृत-भाषा में तो आपकी ख़ासी गति है, बड़ा सुन्दर बोलते हैं और बड़ा अच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखते हैं। कई वर्ष हुए आपने एक फ़ारसी-पुस्तक का संस्कृत में अनुवाद 'दुःखोत्तरं सुखम्' के नाम से किया था। उन दिनों आप किसी कार्य से मुरादाबाद पधारे थे। पहली बार वहीं आपका दर्शन हुआ था। संयोग से उन्हीं दिनों काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान् पण्डित काशीनाथजी भी मुरादाबाद में ही थे। इन पङ्क्तियों के लेखक ने 'दुःखोत्तरं सुखम्' की एक कहानी गुरुजी को सुनाई। उसकी सुन्दर और ललित और साथ ही प्रौढ़ संस्कृत-भाषा को सुनकर गुरुजी बहुत प्रसन्न हुए और उसी समय एक श्लोक अपने कर-कमल से लिख कर आशीर्वादरूप में प्रोफ़ेसर महोदय के लिए दिया। 'दुःखोत्तरं सुखम्' की कहानियाँ बड़ी सुन्दर हैं, पढ़ते ही चित्त पर प्रभाव पड़ता है और प्रत्येक कहानी से कोई न कोई शिक्षा प्राप्त होती है। नवयुवकों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। नीचे दिये हुए उसके कुछ शीर्षकों से ही पुस्तक की उपादेयता का पता लग सकता है—

१ अपि वाणिज्यं विद्याया गरीयः।
२ आकारो न सदा लोके वर्त्तते तत्त्वदर्शकः।
३ विद्यैव परमा गतिः।
४ आशाभङ्गं न कुर्वन्ति भक्तस्यार्याः कथंचन।
५ आत्मा कदापि नावमन्तव्यः।
६ तथ्यद्रष्टारः सर्वथा सत्कारार्हाः।
७ दैवायत्तः सदा लोके विभवश्च पराभवः।

इन शीर्षकों के नीचे बड़ी अच्छी कहानियाँ लिखी गई हैं, जिन्हें पढ़कर चित्त बिना प्रभावित हुए नहीं रहता। प्रत्येक कहानी के अन्त में सुयोग्य प्रोफ़ेसर महोदय ने उससे मिलनेवाली शिक्षा अपने शब्दों में बड़े सुन्दर ढङ्ग से लिख दी है। अन्त में अपने कुछ शिक्षानुकूल पद्य भी लिख दिये हैं। अपि वाणिज्यं विद्याया गरीयः के अन्त में एक श्लोक लिखा है—

जन्यादभ्यासकाले तु विद्या ते मूर्ध्नि वेदनाम्।
संस्थापयेत्ततः सैव सर्वेषां मूर्ध्नि ते पदम् ॥१॥

जो विद्यारसिक विद्याप्राप्ति के लिए रातों को दिन कर देते हैं, दिनों को रात से जोड़ देते हैं, उनके परिश्रम का फल उन्हें प्राप्त होता है, इस बात को किस अच्छे ढङ्ग से और कितनी परिमार्जित भाषा में प्रोफ़ेसर साहब लिखते हैं—

"ये रसिका दीर्घरात्रीरभ्यासवादविवादैरादिनं यापयन्ति लम्बानि दिनानि चाक्षपमध्ययनेन नयन्ति अरसिका क्षेपवेदनां वहन्ति ध्रुवं तेऽभ्यासपरायणे उद्योग्युद्यमगुणग्राहिणि विधातरि विराजति सति

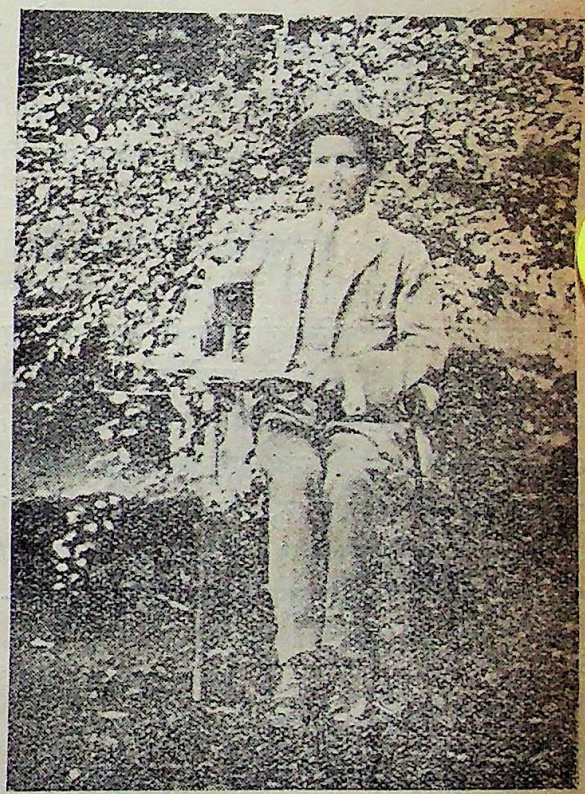

[श्रीयुत मुईनुद्दीन अहमद]

अध्ययनदुःखफलं सुखविग्रहमत्रामुत्र चास्मत्कथा-पुरुषवत्प्राप्नुवन्ति।"

अभी हाल में प्रोफ़ेसर साहब ने शेख़सादी की सुप्रसिद्ध नीतिपुस्तिका 'करीमा' का संस्कृत-पद्यानुवाद प्रकाशित किया है। इस अनुवाद में भी आपको बहुत सफलता प्राप्त हुई है। उसके पहले सुप्रसिद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेर 'करीमा वबख्शाये बर हाले मा'—का अनुवाद कितना सुन्दर किया है—

प्रसादः क्रियतां शम्भो दयनीया हि नो दशा।
वासनापाशपर्यस्ता वयं मोहमुपागताः॥
त्वया विना न नस्त्राता क्षन्ता त्वं पापकर्मणाम्।
जिह्माद्वारय नो मार्गात् क्षमस्वार्जवमादिश॥

मूर्खजन-परित्याग-सम्बन्ध में 'ज़ जाहिल गुरे ज़िन्दा चूँ तीरबाश'—का अनुवाद तो मूल से भी बढ़ गया है—

सङ्गतिं त्यज मूर्खाणां क्षिप्रं बाणो यथा धनुः।
प्रकृत्या सरलो वक्रं बाणस्त्यजति वै धनुः॥

सरल बाण और वक्र धनु की उपमा कितनी सुन्दर है।

प्रोफ़ेसर साहब ने इन पुस्तकों का प्रकाशन किसी आर्थिक लाभ के उद्देश से नहीं किया है। केवल सद्विचारों के प्रचार के लिए ही आपका यह परिश्रम है। जिन्हें इन पुस्तकों के पढ़ने की इच्छा हो वे आठ आने के टिकट भेजकर इन पुस्तकों को काज़ी नासिरुद्दीन अहमद बी० ए०, एल-एल० बी०, वकील हाईकोर्ट, अन्दर कोट, मेरठ, शहर से मँगा सकते हैं।

अभी कुछ दिन हुए आपने अपनी गाढ़ी कमाई के साठ हज़ार रुपये दान करके अलीगढ़-यूनिवर्सिटी में एक सुन्दर चित्रशाला बनवा दी है। इस दान के अतिरिक्त आपने अपने संगृहीत लगभग एक लाख रुपये के चित्र भी शाला को भेंट दिये हैं।

प्रोफ़ेसर साहब केवल विद्वान् ही नहीं हैं, विद्या का जो सात्त्विक फल सरलता, विवेक और विनय है उसकी भी आप मूर्त्ति हैं। जिन्हें आपसे मिलने का कभी अवसर हुआ है—यद्यपि आप बड़े विविक्तसेवी हैं—उन्हें इसका पहली भेंट में ही परिचय हो जाता है।

आज-कल आप अरबी, फ़ारसी और संस्कृत के समभावपूर्ण पद्यों का एक सुन्दर संग्रह कर रहे हैं, पूर्ण होने पर यह संग्रह भी अपने ढङ्ग का निराला होगा।

आपका रहने का ढङ्ग बड़ा सादा है। एक छोटे से स्थान में अकेले रहते हैं, न कोई साथी—पुस्तकों को छोड़ कर—न कोई नौकर। अपना सब काम अपने हाथ से करते हैं। इसी संयम और मितव्ययिता के कारण एक बड़ी रक़म आप दान कर सके हैं। अपना एक क्षण भी आप यथासम्भव ख़राब नहीं करते।

ईश्वर से प्रार्थना है कि ऐसे विद्याप्रेमी वयोवृद्ध, किन्तु विचारतरुण और अनेक भाषावित् विद्वान् को वह चिरजीवी करे।

—ज्वालादत्त शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूँटी बाबू का अपराध

(१)

किसी ने एक दिन मज़ाक में उन्हें खूँटी बाबू कह दिया था। यह नाम लोगों को इतना पसन्द आया कि उस दिन से सब उन्हें खूँटी बाबू कहने लगे। बात यह थी कि उनमें और एक खूँटी में बहुत अर्थों में समानता थी। दिन भर वे अपनी कुर्सी से टस से मस नहीं होते थे। और जैसे वे कुर्सी से टस से मस नहीं होते थे, वैसे ही जीवन भर उस दफ़्तर से टस से मस नहीं हुए थे जिसमें वे काम करते थे। किसी ने कभी उन्हें बिगड़ते नहीं देखा था। अगर उनके मातहतों से कोई भारी भूल हो जाती थी तो वे बहुत करते थे तो उनकी ओर देखकर थोड़ा मुस्करा देते थे। उनका यह क्लर्क का जीवन जितना मनहूस था, उतने ही वे सीधे भी थे। लोग अकसर कह दिया करते थे—खूँटी बाबू बड़े सीधे हैं, ये किसी को कभी कोई हानि नहीं पहुँचा सकते।

उनको अटलराम नरायनदास के कारख़ाने में आये कितना समय हुआ, यह कोई नहीं बतला सकता था। नये नये क्लर्क रोज़ भर्ती होते थे और चले जाते थे, परन्तु खूँटी बाबू अपने स्थान पर ज्यों के त्यों जमे थे। अटलराम बुड्ढे आदमी थे। उनके ख़याल भी पुराने थे। नये ज़माने के साथ उन्होंने बढ़ना नहीं सीखा था। आधुनिक कार्य्य-व्यवस्था को अपने कारख़ाने में न घुसने देने के लिए उन्होंने अपनी शक्ति भर कुछ बाक़ी नहीं रक्खा था। युवक हृदय में उठनेवाली आकांक्षाओं और उमङ्गों के लिए यह स्थान मरुभूमि के समान था। इसमें सन्देह नहीं कि कारख़ाने की आय पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ता था, परन्तु अटलराम को इसकी परवा नहीं थी। वेतन पर काम करनेवाले निरन्तर बदलते रहते थे। केवल खूँटी बाबू इसके अपवाद थे। उनके सिवा उस कारख़ाने में कोई पुराना आदमी न था।

चञ्चलकुमार उत्साही तथा बहुत परिश्रमी युवक था। परन्तु वह भी उस दफ़्तर में बहुत दिन नहीं ठहर सका। वहाँ से निकल कर दूसरी जगह नौकरी कर लेने पर वह प्रायः कहा करता था—अच्छा हुआ जो मैं उस आफ़िस से निकल भागा, नहीं तो मेरा भी खूँटी बाबू की भाँति जीवन बर्बाद होता।

यह चञ्चलकुमार जब उस दफ़्तर में था तब भी खूँटी बाबू के बारे में प्रायः बातें किया करता था। कभी कभी कहता था—खूँटी बाबू बिलकुल खूँटी ही हैं। बेवकूफ़ जब जवान था तब उस दफ़्तर से जान बचा सकता था। पर अब तो उसी में मरेगा। बेचारे की मिट्टी ख़राब है। सचमुच मुझे इस बुड्ढे पर बड़ी दया आती है। इसने किसी को कभी कोई हानि नहीं पहुँचाई और न अपने को बहुत लाभ ही पहुँचाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन खूँटी बाबू ने यह बात सुनली। अपने सम्बन्ध में वे इसी प्रकार की और भी अजीब अजीब बातें सुना करते थे। कभी कभी उस पुराने ढङ्ग के कार्य्यालय के सञ्चालक भी खूँटी बाबू के सम्बन्ध में इसी प्रकार की बातें करते थे। इन बातों का खूँटी बाबू पर बहुत प्रभाव न पड़ता था। पर चञ्चलकुमार की उस दिन की बात से वे न जाने क्यों चौंक-से पड़े। वे अपनी ज़रा सी सफ़ेद दाढ़ी पर हाथ फेर कर मन ही मन न जाने क्या क्या सोचने लगे। उस दिन एक प्रकार के गुप्त आनन्द में स्नान-सा किये वे दिन भर अपनी कुर्सी पर झुके बैठे रहे। उन्होंने मन-ही-मन प्रसन्न होते हुए कहा—चञ्चलकुमार बेवकूफ़ लड़का है—बिलकुल बेवकूफ़। मनुष्य-स्वभाव की गहराइयों का उसे क्या पता? उसे क्या मालूम कि कौन अपने हृदय में क्या छिपाये बैठा है। उसने क्या कहा था? शायद यह कि खूँटी बाबू ने किसी को कोई हानि नहीं पहुँचाई। शायद इस बात पर उसको पूरा विश्वास है। परन्तु यदि उसे एकाएक सत्य बात का पता चल जाय तो क्या हो? बेवकूफ़ युवक चौंक उठेगा। कहेगा, ऐं खूँटी बाबू और ऐसा कार्य्य!

खूँटी बाबू ने कल्पना की कि चञ्चलकुमार को असलियत मालूम हो गई है। उसका चेहरा आश्चर्य्य में छिप गया है। वह कह रहा है—ओह, खूँटी बाबू से मैं स्वप्न में भी ऐसी आशा नहीं करता था।

एक रजिस्टर के पृष्ठों को उलटते हुए खूँटी बाबू ने कहा—बेचारा कोरा जवान है। ऐसी बातों की वह कल्पना भी नहीं कर सकता। दूरदर्शिता का तो उसमें सर्वथा अभाव है।

जब खूँटी बाबू ने यह अनुभव किया कि उन्हें कोई भारी ज़िम्मेदारी के कार्य्यों के योग्य नहीं समझता तब उन्हें एक प्रकार का भीतर ही भीतर क्लेश होने लगा। कभी कभी वे ज़ोर से कह उठते—ओह! दुनिया में कैसे कैसे पापी छिपे हुए हैं।

(२)

उस रात खूँटी बाबू को नींद नहीं आई। उसके बाद भी कई रातें उन्होंने जागकर काटीं। बिस्तर पर लेटे लेटे वे सोचते—ओह! यह काम कितनी सरलता से मैंने कर डाला! किसी को पता तक न चला! और मज़ा यह कि इस काम के करने में कोई तैयारी भी नहीं करनी पड़ी। सालों से मेरी उसकी दोस्ती थी। वह कितना हँसमुख और उत्साही युवक था। और जब एक दिन सवेरे वह अपने बिस्तर पर मरा हुआ पाया गया तब किसी ने मुझ पर शक तक नहीं किया! ओह! उदयप्रताप मैंने तुम्हें क्यों मार डाला? तुमने तो मेरा कुछ बिगाड़ा भी नहीं था।

खूँटी बाबू ने कष्ट के साथ करवटें बदलते हुए फिर सोचना आरम्भ किया—मैंने उसकी हत्या कैसे की? शायद मेरे हाथ में एक क़लम—लोहे का क़लम—था। उसी से! बस, एक क़लम से मैंने उसे मार डाला और किसी ने मुझे सन्देह की दृष्टि से देखा भी नहीं। और कोई देखता कैसे? उदयप्रताप का मैं घनिष्ट मित्र जो था। मित्र पर ऐसा सन्देह कोई कर ही कैसे सकता है?

खूँटी बाबू यह सोचते सोचते ज़ोर से हँस पड़े। एकाएक फिर चुप हो गये। उस समय वे एक विचित्र प्रकार की बेचैनी से छटपटा रहे थे। सबसे बड़ा दुःख उन्हें एक बात का था। वह यह कि यह हत्या का अपराध उनके दिल में अब भी ताज़ा था। इतने वर्ष हो जाने पर भी यह घटना उन्हें सविस्तर याद थी। उदयप्रताप का वह हँसोड़ चेहरा भी उन्हें नहीं भूला था। जान पड़ता था, मानो उसे उन्होंने कल ही देखा हो और वह लोहे का क़लम जिससे उन्होंने उदयप्रताप की हत्या की थी, उन्हें भूलता ही न था। वे चारों तरफ़ अपना ख़याल दौड़ाते, परन्तु उनकी समझ में कुछ न आता? कभी कभी वे ज़ोर से कह उठते, "मैंने उदयप्रताप की हत्या क्यों की?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तर्क की सारी उँगलियाँ खूँटी बाबू की यह उलझन सुलझाने में बेकार हो गईं। अब रात दिन उनके ध्यान में यही बात रहने लगी—हाय ! मैंने उदयप्रताप को क्यों मार डाला ? कभी कभी वे यही बात रसीदों की पीठ पर भी लिख बैठते। कभी कभी वे सोचते—उँह, जो होना था सो हो चुका। अब पछताने से क्या ? जैसे आज तक इस हत्या का भेद नहीं खुला, वैसे आगे भी न खुलना चाहिए। इस बात को अब गुप्त ही रखना अच्छा है। ओह ! वह कितना बड़ा पापी है और लोग उसे कितना सीधा समझते हैं।

परन्तु किसी प्रकार खूँटी बाबू को चैन न आता। उदयप्रताप की याद उन्हें बनी ही रहती। वे मन ही मन कहते रहते—मेरी उसकी कोई दुश्मनी भी तो नहीं थी। कोई लड़ाई नहीं थी। फिर मैंने उसे क्यों मारा ? अच्छा उसकी मौत हुए कितने साल हुए ? बहुत ! बहुत समय बीता और मैंने मारा किससे ? क़लम से ! उँह होगा। परन्तु क्या क़लम ही था ? कोई औज़ार नहीं था ? होगा ! अब इसकी चिन्ता व्यर्थ है। पर स्मृति को क्या करूँ ? नालायक़ मेरा पिण्ड ही नहीं छोड़ती ? जान पड़ता है, उदयप्रताप की हत्या का बिना बदला लिये यह न रहेगी।

खूँटी बाबू काँप उठे। ओह ! उनसे कितना भयानक कार्य्य हो गया। और इतने पर भी लोग कहते हैं कि वे किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते। किसी को क्या मालूम कि उन्होंने उदयप्रताप जैसे युवक को सदा के लिए सुला दिया, उसकी महत्त्वाकांक्षाओं पर पानी फेर दिया। ज़िन्दा रहता तो वह न जाने क्या होता। पर शायद वह ज़िन्दा हो। जीव तो कभी मरता नहीं। पर इससे क्या अपने जीवन में तो वह नहीं है।

एकाएक खूँटी बाबू को एक ख़याल आया। परन्तु यदि मैं उदयप्रताप को मार न डालता तो शायद वही मुझे मार डालता। दो में एक का मरना ज़रूरी था। मैं न सही, वह सही।

अब वे पागलों की भाँति कभी कभी बड़बड़ा उठते—क़लम से ! हाँ, क़लम से !! क्यों ? कब ? कैसे ? वह क़लम कैसा था ? कहाँ से आया था ? उदयप्रताप ! क़लम !! उदयप्रताप ! क़लम !! हाँ, समझा, यह बात थी ! अहा हा ! यह बात थी। ऐं क्या बात ? क़लम !

(३)

इस प्रकार सोचते सोचते कई सप्ताह बीत गये। परन्तु खूँटी बाबू अपने हृदय की उलझन को न सुलझा सके। अब वे दफ़्तर का काम भी चित्त लगा कर न करते। अटलराम ने देखा कि खूँटी बाबू उनके कारखाने के लायक़ अब नहीं रह गये। वे उन्हें कुछ पेंशन दे-दिलाकर अलग कर देने की बात सोचने लगे। परन्तु खूँटी बाबू अपनी ही समस्या सुलझाने में इतने निमग्न थे कि इस ओर उन्होंने कुछ सोचा ही नहीं।

चौबीस घंटे अब खूँटी बाबू के दिल में यही बात रहने लगी कि मैंने उदयप्रताप को मार डाला है। पर मारा क्यों ? कारण तो समझ में आना चाहिए ? क्यों ? उसकी हत्या का क्या कारण था ? यह बात मस्तिष्क के कोने में ज़रूर कहीं छिपी होगी। परन्तु वह भागती है।

खूँटी बाबू कुछ उत्तेजित हो उठे—इस हत्या का कारण डरपोकपन है। भागता है। कहीं छिपा है। पर बच्चू तुम छिप नहीं सकते। तुम्हें मैं पकड़ूँगा। पुलिस से पकड़ाऊँगा। आख़िर पुलिसवालों का काम क्या है ?

हत्या का पता लगाना उसके कारण को खोजना आदि बातों के लिए वह तन्ख़्वाह पाती है। मैं थाने में जाकर इस कारण के भागने की इत्तिला करूँगा। सब बातें समझ में आती हैं। केवल कारण समझ में नहीं आता। पर मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास है कि सब बातें बता देने पर पुलिसवाले इस कारण को ज़रूर खोज निकालेंगे। पर इसका अर्थ यह है कि मैं हत्या के अपराध को स्वीकार करूँगा। उँह देखा जायगा। कारण तो मालूम हो जायगा।

दूसरे दिन सवेरा होते ही खूँटी बाबू थाने में जा पहुँचे। वहाँ काँपते हुए बोले—मैंने उदयप्रताप का ख़ून किया है। मुझे गिरफ़्तार करो और बताओ कि मैंने यह ख़ून क्यों किया है?

खूँटी बाबू एक मेज़ के पास खड़े थे। उसकी दूसरी तरफ़ एक अफ़सर बैठा था। अफ़सर ने पूछा—कब किया है?

"कोई तीस वर्ष हुए?"

"किस चीज़ से मारा?"

"क़लम से।"

"कहाँ?"

"अटलराम नरायणदास के दफ़्तर के पास।"

अफ़सर के कहने से एक मुंशी ने खूँटी बाबू का बयान लिखा और उनके अँगूठे का निशान लिया। इसी बीच में अफ़सर ने एक सिपाही अटलराम के कार्य्यालय में कुछ पूछ-ताछ करने के लिए दौड़ाया। खूँटी बाबू मन ही मन कहने लगे—मिस्टर 'क्यों', अब कहाँ जाओगे? बहुत सोचा, समझ में आते ही नहीं थे।

सिपाही ने लौट कर अफ़सर से कहा—हुज़ूर! मैंने अटलराम से भेंट की। वे कहते हैं कि यह मुमकिन हो सकता है। इधर कई सप्ताह से यह आदमी दफ़्तर में घबराया सा रहता था। वे पेंशन देकर इसे हटाना चाहते थे। इसी मार्च में इसकी नौकरी के तीस वर्ष पूरे हो जायँगे।

अफ़सर ने खूँटी बाबू को ध्यान से देखा और उनसे फिर पूछा—उदयप्रताप को मारे तुम्हें कितना समय हुआ?

"तीस वर्ष।"

अफ़सर ने मुस्करा कर कहा—ओह! तब तो तुम उस दफ़्तर में इस तरह छिपे रहे, जैसे कोई क़ब्र में सोया हो। क्यों?

खूँटी बाबू अब अत्यन्त शान्त थे। उनकी उलझन सुलझनेवाली थी। उन्होंने मुस्करा कर कहा—जी हाँ।

अफ़सर ने सिपाही से फिर पूछा—अटलराम ने इसका नाम क्या बताया था?

सिपाही ने कहा—लोग इसको खूँटी बाबू कहते हैं। परन्तु इसका असली नाम उदयप्रताप है।*

—श्रीनाथसिंह

*दी 'कुइन' नामक पत्रिका में प्रकाशित अलेक्ज़ेंडर बारबर की एक कहानी के आधार पर।

मक्खियों की करतूतें

पुस्तक छोटी-सी है परन्तु बहुत उपयोगी है। मक्खियों के कारण कैसे कैसे भयानक रोग पैदा हो जाते हैं यह किसी से छिपा नहीं। इस पुस्तक में खुलासा सब बातों का वर्णन किया गया है। ज़रा पढ़कर देखिए। मूल्य केवल ।=) छः आना।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूक्ति-सुमन

(१)

कल अलंकृति की कमनीयता,
विरल हो ध्वनि की कवि-चातुरी।
तदपि वांछित है वह विज्ञ को,
मधुर-साधु-रसा वचनावली ॥

(२)

विविध भूपति-वंशज भूख से,
तिरमिरा मरते पर-दास हो।
फिर नहीं यह बात नई यहाँ,
श्वपच का पचका यदि पेट हो ॥

(३)

विचलता नर कायर युद्ध से,
सतत जीवन वांछित है जिसे।
सुभट है मन में यह चाहता,
मरण हो रण होकरके कभी ॥

(४)

गृह रहे जन से धन से भरा,
पर बिना शिशु के छवि-हीन है।
सलिल-पूरित भी मन मोहती,
न सरसी सरसीरुह के बिना ॥

(५)

नियम है पर-पीड़न के बिना,
न मिटती प्रभुता नरनाथ की।
प्रथम कारण है तब कार्य है,
न रजनी रजनीमुख के बिना ॥

(६)

पठित हैं निगमागम भी नहीं,
न हठयोग-क्रिया गुरु से मिली।
तदपि क्यों न निजेन्द्रिय-संघ का,
दमन हो मन हो यदि हाथ में ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७)

सतत है यदि वांछित मित्रता,
न रिपुता जग में यदि चाहते।
प्रबल यत्न किया करिए सदा,
सुमन-सा मन साधु बना रहे ॥

(८)

यह नहीं महिमा कलिकाल की,
सफलता यह पौरुष की नहीं।
हृदय में अपने सच मानिए,
नियति से पति-सेवित है रमा ॥

(९)

परम पावन भारत-भूमि के,
अजित आर्य्य-कुलोद्भव वीर हो।
कपि-मुखाकृति दानव देख के,
शरभ-सा रभसा मत भागिए ॥

(१०)

दनुज के दल से दलिता हुई,
पर-अधीन हुई अति दीन है।
तदपि निद्रित होकर है पड़ी,
न जगती जगती गत लज्ज हो ॥

(११)

सुघर भी रचना यदि हो गई,
न तब भी मिलता फल काव्य का।
सुकवि की यदि निश्चल सात्विकी,
प्रकृति हो कृति हो तब कीर्तिदा ॥

—रामचरित उपाध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रेज़िल के बोरोबोरो लोग

[संसार के प्रायः सभी देशों में कुछ न कुछ जंगली जातियाँ अवश्य पाई जाती हैं। हमारे भारत में भी इनका अस्तित्व है। परन्तु अफ्रीका और अमरीका के देश में बहु-संख्या में निवास करती हैं। इस लेख में ब्रेज़िल की एक ऐसी ही जाति का परिचय दिया गया है। आशा है, यह पाठकों को रुचिकर प्रतीत होगा।]

जंगली मनुष्यों की जातियाँ संसार के प्रायः सभी देशों में पाई जाती हैं, परन्तु अफ्रीका, अमरीका तथा प्रशान्त महासागर के टापुओं में उनके जो विशाल समूह निवास करते हैं वे ही वास्तव में जङ्गली जातियाँ हैं। अमरीका के ब्रेज़िल-राज्य में जो जङ्गली जातियाँ निवास करती हैं उनमें से कुछ उत्तरी मैटोग्रोसो में निवास करती हैं। इस अञ्चल की असभ्य जातियों में से जो अभी स्वाधीन हैं और स्वच्छन्दता के साथ मनमाने ढङ्ग से अपने निवास के भू-भागों में विचरण करती हैं उनमें एक जाति को वहाँवाले 'बोरोबोरो इंडियन' कहते हैं। मैटोग्रोसो नाम के जङ्गली प्रदेश की यात्रा करके साहसी खोजी फ्रैंसिस गो स्मिथ ने इन लोगों के शील-स्वभाव और रहन-सहन का ज्ञान प्राप्त किया है। उनके सम्बन्ध में उन्होंने एक लेख लिखा है जो मनोरञ्जक है। वे लिखते हैं—

जब बोरोबोरो गाँव में जा पहुँचा था तब वहाँ मुझे एक भारी सङ्कट से सामना करना पड़ा था। उस दिन दोपहर के बाद मालूम हुआ कि मेरे साथ के लोग बोरोबोरो कल से पहले न पहुँच सकेंगे। अभी वह तीन-चार लोग आगे था। हम लोग १७ दिन से यात्रा में थे। लगभग ३०० मील की यात्रा कर चुके थे। कुछ समय तक एक डाकू-दल का साथ रहा। वह हीरे की खानों में रहनेवाले मेरे एक मित्र के लूटने की घात में था। बाद को वह दक्षिण ओर बस्तियों में डाका डालने को मुड़ गया। इधर कई दिन से हम अकेले यात्रा कर रहे थे। मैं एक जन-शून्य देश में यात्रा कर रहा था। अन्त में हमने उस अञ्चल में प्रवेश किया जहाँ जङ्गली जातियाँ निवास करती हैं। मैंने अपने साथी और इंडियन पथ-दर्शक को नौकरों और माल-असबाब के साथ आने को कहकर बोरोबोरो लोगों के देश में अकेले ही जाने का निश्चय किया। घोड़े के लिए मार्ग कष्टकर था। उच्च समभूमि की चढ़ाई थी, दोपहर का समय और चारों ओर सुनसान। उच्च समभूमि के ऊपर जाने को मार्ग का जो चिह्न सा जान पड़ता था वह लम्बी घास और झाड़ियों के बीच से गया था। यह पहाड़ी झरनों के ऊपर से टेढ़ा-मेढ़ा होकर गया था। चारों ओर अपार जङ्गल था। चलते चलते मुझे राह भूल जाने का सन्देह हुआ। तब यह विचार मन में उठा कि ऐसी दशा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात में कहीं अकेले ठहरना पड़ेगा। दिन भर से कुछ नहीं खाया था। शिकार करने की घात में लगा। इसी समय मेरे आगे से एक हिरन चौकड़ी भरता हुआ आ निकला। मैंने बन्दूक़ सँभाली और घोड़े पर से ही दाग़ दी। निशाना ख़ाली गया। हिरन बन्दूक़ की आवाज़ से चौंक कर खड़ा हो गया। इतने में मैंने घोड़े पर से उतर कर दूसरी बार गोली चलाई। हिरन गिर गया। उसे उठा कर अपने पीछे घोड़े पर बाँध दिया। इसके बाद रवाना हुआ। मैंने समझा, शायद आधी रात तक कहीं कोई गाँव मिल जाय।

घण्टे भर में सूर्यास्त हो गया। अन्धकार होने पर आकाश तारों से जगमगाने लगा। अब मुझे दिशा का ज्ञान नहीं रहा। अन्त में मुझे कुत्ते का भूँकना सुनाई दिया। मेरे घोड़े ने अपने कान ताने और वह चल पड़ा। थोड़ी ही देर में भूँकना अधिक स्पष्ट सुनाई देने लगा, इससे अन्धकार में चलने में सुविधा हो गई। इस समय मुझे एक दूसरी आवाज़ सुनाई दी। वह आवाज़ ऐसी थी, मानो जङ्गल का भूत इंजन की सीटी की नक़ल कर रहा हो। थोड़ी देर के लिए मैंने लगाम खींच ली। थका तो था ही, उस अलौकिक आवाज़ को सुनकर मैं चकित हो गया। इसके बाद मुझे वह आवाज़ मनुष्य की आवाज़ मालूम हुई। इसके साथ ही मुझे लकड़ी के धुएँ की बू का भी ज्ञान हुआ। कुछ दूर और आगे जाने पर मुझे वृक्षों के बीच से आग की दमक दिखाई पड़ी। यह देखकर मैं घोड़े से उतर पड़ा और घोड़े को लिये चुपचाप उस खुली हुई जगह के किनारे की ओर चला।

यद्यपि मैं सतर्कता से बहुत धीरे-धीरे वहाँ गया था, पर मैं छिपा नहीं रहा। ज्यों ही मैंने सघन वृक्षों की डालियों को चीर कर उस खुली जगह में पैर रक्खा, कुत्तों का एक झुण्ड ग़ुर्राता हुआ मेरी ओर दौड़ पड़ा, साथ ही आग के प्रकाश में चमकती हुई सैकड़ों आँखें भी मुझ पर आ पड़ीं। वह दृश्य कभी नहीं भूल सकता। उस छोटी सी खुली जगह में वृत्त के रूप में इंडियन लोगों के तम्बू तने थे। इस वृत्त के बीच में एक बड़ा-सा खुला बँगला था। यह ताड़ के पत्तों से छाया हुआ था। यहाँ इंडियन योद्धा बैठे थे जो अपना अपना मुँह मेरी ओर किये देख रहे थे। तम्बुओं के आगे आग के पास उनके स्त्री-बच्चे बैठे थे। योद्धाओं के एक किनारे उनका सरदार चुप बैठा था। स्त्रियाँ कपड़े पहने थीं। इससे मुझे मालूम हो गया कि ये बोरोबोरो लोग हैं, जो लड़ाकू नहीं हैं। अतएव मैं मैदान में आगे बढ़ा। मैंने अपना हाथ बढ़ा दिया था, जिससे वे मुझे अपना मित्र समझें।

योद्धा मेरे चारों ओर आकर खड़े हो गये और मित्र भाव से रुक-रुककर बातें करने लगे। कई एक युवकों ने मेरा घोड़ा भी थाम लिया। उनके इस प्रकार के शान्ति-पूर्ण व्यवहार से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इतने में ही एकाएक मैंने क्रोध की चिल्लाहट, कुछ भयङ्कर बुदबुदाहटें और उनके बाद 'पोबोगो' की आवाज़ सुनी। सभी ने बारी बारी से 'पोबोगो' की प्रतिध्वनि की। मेरे पास जो लोग मित्रभाव से खड़े थे वे एकाएक क्रुद्ध हो उठे। धमकाते हुए उन्होंने मुझे पकड़ लिया और क्रोध से मेरी ओर घूरने लगे। लोगों के क्रोध में चिल्ला उठने पर हो-हल्ला मच गया। इस परिवर्तन को देखकर मैं स्तब्ध-सा होकर एक एक के चेहरे को देखने लगा, पर किसी के चेहरे से उनके इस व्यवहार का कारण नहीं व्यक्त होता था।

इसी समय उन इंडियनों की भीड़ को चीर कर एक कैथोलिक पादड़ी बलपूर्वक बीच में घुस आया। वह नंगे सिर और नंगे पैर था। जो काली पोशाक वह पहने था उसे मानो वह जल्दी में पहन कर आया था। उसने कहा—स्वागत है। चुप रहो। ये सब चेले हैं। मैं उन्हें ठीक किये लेता हूँ। इस सबका कारण हिरन है।

मैं और भी अधिक चक्कर में पड़ गया। परन्तु मैं चुपचाप भेड़ की तरह खड़ा रहा। और वह पादड़ी बोरोबोरो भाषा में सरदार और उसके अनुयायियों से बातें करने लगा। पादड़ी के समझाने से वे धीरे धीरे शान्त हो गये। उसने कहा कि मैं बड़ा आदमी हूँ और मित्रभाव से दूर से आया हूँ। मुझे उनके रीति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस्म नहीं मालूम हैं, अतएव हिरन मार डालने का अपराध क्षमा के योग्य है। इसके बाद उसने उन्हें अपने अपने खेमे में चले जाने को कहा। उसने कहा कि सबेरे इस मसले पर विचार होगा। धीरे धीरे वे लोग चले गये। दो इंडियनों ने मेरे घोड़े की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। इसके बाद वह मुझे अपने खीमे में लिवा ले गया। उसने भीतर जाकर कहा—इन सबकी निगाहों में आज तुम नर-भक्षी के सिवा और कुछ नहीं थे। हिरन को ये लोग पवित्र मानते हैं। ये अपने को उसका वंशज मानते हैं। तुमने खाने के लिए उन्हीं की जाति के जीव को मार डाला है, इससे ये बहुत क्रुद्ध हो गये हैं। इनके ये मिथ्या विचार मुश्किल से दूर होते हैं। मैं इनको सत्य-धर्म का उपदेश करता हूँ और ये उसका पालन भी करते हैं। परन्तु ऐसी घटना के समय पुराने संस्कारों का जाग्रत हो उठना बहुत सम्भव है। ठंडा दाल-चावल खाकर मैं पड़ रहा। पादड़ी ने बोरोबोरो लोगों की उत्पत्ति-कथा का वर्णन किया। उसने कहा कि ये लोग विश्वास करते हैं कि किसी समय जब प्रलय हुआ तब एक इंडियन और एक हिरन पहाड़ पर जा चढ़ने से बच सके थे। उन्हीं दो से ये अपनी उत्पत्ति मानते हैं। वे कहते हैं कि कई पीढ़ियों तक उनके पूर्वजों के सींग और देह में बाल होते थे। इससे ये लोग हिरन का मारना बड़ा भारी पाप समझते हैं। यदि उनका कुत्ता हिरन को मार डालता है तो पहली बार ये उसकी दुम काट डालते हैं। दूसरी बार उसके वैसा करने पर उसके कान काट लिये जाते हैं। परन्तु यदि तीसरी बार फिर हिरन मारता है तो उसके पैर काट डाले जाते हैं और वह मर जाता है। ये हिरन को खाना नर-मांस-भक्षण के तुल्य समझते हैं।

दूसरे दिन मैंने अपने अपराध का प्रायश्चित्त किया। मैंने उनके सरदार को अपने गले का लाल रङ्ग का कपड़ा नज़र कर दिया। बोरोबोरो लोगों को लाल रङ्ग बहुत पसन्द है। अगर लाल रङ्ग के कपड़े उन्हें दिये जायँ तो शायद वे लोग भी कपड़े पहनना पसन्द कर लें। परन्तु वे कपड़े सिर्फ़ पादड़ियों के ही सामने पहनते हैं। इन लोगों ने उन पर अपना प्रभाव-सा जमा लिया है। उनके उपर्युक्त पादड़ी महोदय उनके साथ बड़ी नर्मी का व्यवहार करते थे। ब्रेज़िल में इन पादड़ी महोदय को अपने काम में बड़ी सफलता मिली है। ये उन्हें खेती करना सिखाते हैं, पर खेतों में काम करने को उन्हें बाध्य नहीं करते हैं। प्रत्येक रात को सभा-गृह में सरदार दूसरे दिन के लिए प्रत्येक को काम बाँटता है। शिकार करना, मछली मारना, गोली चलाने का अभ्यास करना, हथियारों को साफ़ करना, खेतों में काम करना आदि उनके काम हैं। योद्धा हफ़्ते भर में सिर्फ़ एक दिन खेतों में काम करता है। परन्तु स्त्रियाँ नित्य खेतों में काम करती हैं। वे अपने बच्चे अपनी पीठ पर ताड़ के पत्तों की झोली में लिये रहती हैं और अपना काम करती रहती हैं। बच्चा मा के कन्धों पर हाथ रक्खे उससे चिपटा रहता है।

बोरोबोरो योद्धा को हफ़्ते में छः घण्टे काम करने पर पादड़ी महोदय काग़ज़ का एक पुर्ज़ा दे देते हैं। जितने अनाज, चावल, दाल, शक्कर या आटे की उसे ज़रूरत होती है वह उसे उस काग़ज़ के दिखलाने पर मिल जाता है। पादड़ी लोग स्वयं भी इंडियनों के साथ खेतों पर काम करते हैं। परन्तु कभी कभी योद्धा महीनों के लिए शिकार खेलने को चले जाते हैं। उस समय वे कपड़े उतार कर वृक्षों पर टाँग देते हैं और लौटने तक बिलकुल नङ्गे रहते हैं।

तीस वर्ष पहले ये बोरोबोरो लोग युद्ध-प्रिय और बड़े धोखेबाज़ थे। उस समय संख्या में ये बीस हज़ार रहे होंगे। ये तब बस्तियों पर धावा करते थे और पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को मार डालते थे। ये मारे हुए लोगों के जबड़े की हड्डियाँ अपने साथ उठा ले जाते थे। इनकी स्त्रियाँ अपनी कण्ठियों में पहनती थीं।

बोरोबोरो लोग पाँच फ़ुट आठ इंच से लेकर छः फ़ुट तक ऊँचे होते हैं। इनके काले बाल सीधे होते हैं और काली आँखें तिरछी, दाँत पूरे और मंगोलों जैसी चिपटी नाक होती है। ये बड़े भयङ्कर होते हैं। प्रवासियों में तो इन लोगों ने तहलका मचा दिया होगा। यद्यपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये अब कुछ कपड़ा पहनने लगे हैं, तो भी दूसरी जङ्गली जातियों की भाँति उरूकू रस से अपनी देह को अब तक रँगते हैं।

पचीस वर्ष पहले इन लड़ाकू लोगों के बीच पादड़ी लोग पहुँचे थे। उनकी निर्भीकता और काली भड़कीली पोशाक का इन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। बोरोबोरो लोगों ने उनको किसी तरह की क्षति नहीं पहुँचाई। और अब तो ये लोग उनके भक्त हो गये हैं। गत २५-३०वर्ष के भीतर कई एक ब्रेज़िल-निवासियों को इन लोगों ने मार डाला है, पर अब तक एक भी पादड़ी नहीं मारा गया है।

एक्सइंगू और रिओडास मोर्टीस नामक नदियों के बीच के भू-भाग में उत्तर ओर इंडियन लोगों की एक बड़ी भयङ्कर जाति निवास करती है। शायद ही किसी ने इस जाति के इंडियन को कभी देखा हो। वर्षों से बोरोबोरो के पादड़ी उनसे परिचय प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं। उनके देश की सीमा में घुसकर ये उनके लिए भेंट-स्वरूप चाकू, मालायें और शक्कर रख आये हैं। दूसरे दिन वहाँ देखने पर चीज़ें तो ग़ायब मिलीं, पर कोई व्यक्ति धन्यवाद देने को उपस्थित नहीं मिला। इस जाति के इंडियन अब तक भी बोरोबोरो लोगों का निर्दयता से वध करते हैं। मेरे बोरोबोरो लोगों के गाँव में पहुँचने के पहले बोरोबोरो लोग शिकार को गये हुए थे। उस समय उनकी जाति की दो कन्यायें ज़हरीले तीर चला कर मार डाली गई थीं। वे जंगल में फल-फूल लाने गई थीं।

मैटोग्रोसो प्रदेश में जिस सभ्यता का प्रचार है उससे बोरोबोरो लोगों का अहित हो रहा है। उनमें बाल-वध का प्रचार है। पिछले पचीस-तीस वर्षों के भीतर उनकी बीस हज़ार की संख्या घटकर लगभग एक हज़ार आ पहुँची है। बोरोबोरो स्त्रियाँ प्रसव के समय जङ्गल में एकान्त-स्थान की खोज करती हैं। पर इन्हीं के समान करज-जाति के इंडियनों में सन्तान-प्रसव सर्वसाधारण के तमाशे की बात है। सौभाग्य से यदि नवजात शिशु जीने दिया गया तो पहले उसे नदी में धोते हैं। इसके बाद उसकी देह में गोंद का लेप कर उस पर तरह तरह के रंगों के पर चिपका देते हैं। यह क्रिया कर चुकने पर मा बच्चे को अपने पति को प्रदान करती है।

अब पादड़ियों ने बोरोबोरो लोगों के लड़कों-लड़कियों के पढ़ाने-लिखाने की व्यवस्था की है। वे इनकी निगरानी में पढ़ना-लिखना और सीना-पिरोना सीखने लगे हैं। इनके प्रयत्नों से उनमें अच्छी अच्छी आदतें भी आने लगी हैं और वे सभ्यता की बातें जानने लगे हैं। परन्तु उनमें बड़े लोग मूर्ख ही हैं। यद्यपि वे प्रार्थना के समय उपस्थित होते हैं, पर वह उनके लिए उस प्रकार व्यर्थ है जैसे हमारे लिए उनका नृत्य व्यर्थ है। उनका शब्द-ज्ञान भी परिमित है। कुछ ही कोड़ी शब्दों का वे प्रयोग करते हैं। वे बीस तक ही गिन पाते हैं। गिनती करते समय वे अँगुलियों की सहायता लेते हैं। बीस से अधिक संख्या के लिए वे 'मकामरागा' अर्थात् अनेक का प्रयोग करते हैं और उसके लिए सिर के बाल में अँगुली डालकर सङ्केत करते हैं। अपनी मूँछों, भौंहों और पलकों के बाल उखाड़ने के लिए वे चिमटे का उपयोग करते हैं तथा हाथों और छाती के बाल सीप की धार से कष्ट के साथ काट कर बनाते हैं। पति के मरने पर स्त्रियाँ अपने सिर के बाल कटवाती हैं। उनके भी बाल सीप की धार से ही काटे जाते हैं।

बोरोबोरो लोगों में मृतक-संस्कार की विचित्र प्रथा है। वे मृतक का मांस काट कर जला देते हैं और कंकाल पर पर चिपका कर उसे नदी में छोड़ देते हैं। उनका विश्वास है कि जीव हड्डियों में रहता है। ये लोग अपनी जाति का नाम 'ओटरी-युगू-डोगे' बतलाते हैं। इस शब्द का अर्थ है 'वे लोग जो चित्तेदार मछलीवाली नदी के किनारे पर रहते हैं।' विवाह की उम्र प्राप्त करने के पहले ही इस जाति के युवक को शिकार में अपनी शक्ति का परिचय देना पड़ता है। शक्ति का परिचय देने से इस बात का प्रमाण मिल जाता है कि वह अपनी स्त्री का निर्वाह कर सकेगा। जगुअर का शिकार करने में ही उनकी शक्ति की परीक्षा होती है। जिस स्त्री के जगुअर के दाँतों की कण्ठी होती है वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पति के बल का गर्व करती है। जगुअर का शिकार करना उनमें बड़ी वीरता की बात समझी जाती है। इसके शिकार में जब कोई युवक अपनी शक्ति का परिचय देता है तब उसके माता-पिता उसके लिए पत्नी चुनते हैं। यदि वह कन्या नहीं राज़ी होती तो कन्या के माता-पिता उसे यहाँ तक तंग करते हैं कि अन्त में वह उसके साथ विवाह करने को राज़ी हो जाती है। उसके अपनी रज़ामन्दी सूचित करने का ढङ्ग बड़ा विचित्र है। उसके लिए जो ख़ीमा नियत कर दिया जाता है उसमें वह अपने भविष्य पति की कुछ चीज़ें लेकर चली जाती है। इसके बाद उसका पति उस ख़ीमें में चला जाता है, और वे दोनों पति-पत्नी-रूप से रहने लगते हैं। प्रायः सुख के साथ उनका जीवन व्यतीत होता है। परन्तु जब कोई सन्तान होती है तब पति अपनी पत्नी का बड़ा आदर करने लगता है और लड़ाई-झगड़े सदा के लिए बन्द हो जाते हैं।

नव-वधू भोजन बनाती है। परिश्रम-साध्य सारे काम उसी को करने पड़ते हैं। यात्रा के समय उसे अपने पति की सारी चीज़ें और घर के कुछ बर्तन लाद कर ले चलने पड़ते हैं। उसको अपने पति के लिए सदा भोजन तैयार रखना पड़ता है। भूखा होने पर उसे भोजन सदा तैयार मिलना चाहिए। बोरोबोरो लोग नियत समय पर भोजन नहीं करते। अतएव स्त्री को अपने पति के लिए दिन या रात में किसी भी समय खाने के लिए कुछ गरम चीज़ें तैयार रखना ज़रूरी है। साथ ही उसे घर में काफ़ी मात्रा में नशीले पेय भी प्रस्तुत रखना पड़ता है। स्त्रियाँ अनाज की शराब बना लेती हैं। पर बोरोबोरो लोगों को ताड़ी से बड़ा प्रेम है। वे खजूर के वृक्षों पर चढ़ जाते हैं और वहाँ पत्तियों पर बैठकर मौज के साथ उसका रस तिनके से पीते हैं। इसके लिए सवेरे वृक्ष पर चढ़कर उसकी पत्तियाँ झुका दी जाती हैं और उसके सिरे में सीप से एक छोटा सा गड्ढा खोद दिया जाता है। इसमें रस अपने आप जमा होकर तप्त होता रहता है। नृत्य के समय वे ताड़ी ख़ूब पीते हैं।

बोरोबोरो लोगों का नृत्य उन्हीं की-सी दूसरी जातियों के नृत्यों की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है। वे रात में अपना प्रसिद्ध नाच नाचते हैं। यह नाच मण्डल बनाकर नाचा जाता है। उस समय वे कभी कभी चेहरे भी पहनते हैं तथा अपने ख़ूब रंगे हुए शरीर पर जुगुअर की खाल भी पहनते हैं? वे नाचते समय ख़ुद ही ताल भी दे लेते हैं। इसके लिए प्रत्येक नाचनेवाला कंकड़ों से भरा हुआ एक तोंबा लिये रहता है, जिसे वह लय के साथ हिलाता रहता है। कभी कभी वे नाचते समय चक्र लेकर भी नाचते हैं। इसका व्यास तीन फ़ुट से पाँच फ़ुट तक होता है। यह खजूर की पत्तियों से बुनकर बनाया जाता है। इसमें भी कंकड़-पत्थर भरे रहते हैं। सौ पौंड से भी अधिक वज़न का यह होता है। इसे वे सिर पर रख कर नाचते हैं। इस नाच में उन लोगों को बड़ा श्रम करना पड़ता है।

बोरोबोरो लोगों की आदतें लड़कों की-सी होती हैं। उनके धार्मिक विश्वास भी सीधे-सादे हैं। पादड़ी लोग इनको सभ्यता की दीक्षा देने में बड़ा परिश्रम कर रहे हैं। उन्हें अपने प्रयत्न में काफ़ी सफलता भी मिली है।

—शिवनारायणलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख की खोज

(१)

वह थी अनिन्द्य सुन्दरी। परन्तु उसकी तक़दीर थी बिलकुल फूटी, क्योंकि उसका पति था घोर शराबी। वह लखनऊ में किसी दफ़तर में नौकरी करता था। स्वामि-सुख से चिरवञ्चिता दुःखी नारी अपना दुःख-दर्द क्षुद्र छाती के अंदर यथासाध्य दबा कर घर के कामों में अपने को डुबाये रख सकती थी। पर काम भी तो अधिक नहीं था। इसलिए उसकी सुप्त-कामना पति-सेवा के लिए सहस्र अभिलाषाओं के साथ हृदय के गुप्तस्थान से निकल पड़ती, इसके साथ ही उसके छोटे से उर को रौंद डालती। पति की एक मधुर मुसकान देखने के लिए, उनके अधरों के एक सुमिष्ट शब्द सुनने के लिए, उनके मुखारविंद की एक तृप्तिकर झलक से गौरवान्वित होने के लिए उसका प्यासा हृदय व्याकुल हो उठता। परंतु थी तो वह नारी—अबला, इसी लिए किसी बात में उसका ज़ोर या हठ नहीं चलता था। अतएव मुँह पर मुहर लगा कर उसको सब कुछ सहन करना पड़ता।

× × × ×

लखनऊ की एक छोटी सी गली के अंदर एक होटल था। कम तनख़्वाहवाले क्लार्क उस होटल में आश्रय पाते थे। होटल में एक छोटी-सी कोठरी थी। उसमें एक गोल मेज़ के उपर धूमायमान चाय का एक प्याला रक्खा हुआ था और उसके सामने एक टूटी सी कुर्सी पर एक युवक बैठा था। चाय ठंडी हो रही थी, किन्तु युवक हाथ पर सिर रक्खे गंभीर चिंता में मग्न था।

'क्यों, भई, किस उधेड़बुन में पड़े हो?'—यह कहता हुआ और एक विलासी नवयुवक उस कोठरी में दाख़िल हुआ।

प्रथमोक्त युवक ने अपना चिंताक्लिष्ट मुँह उठा कर विषण्णभाव से जवाब दिया—किसी बात नहीं।

"तब उदास बैठे कैसे हो? कोई कारण तो अवश्य होगा।"

"नहीं, कारण कुछ भी नहीं है। आज मेरी मानसिक दशा अच्छी नहीं है।"

"फिर क्या नहीं चलोगे?"

"नहीं।"

"गुलबदन बीबी तो बाट—"

"अरे यार, बस रहने दो। हाथ जोड़ कर कहता चाहता हूँ; और कुछ न कहना—उन सब बातों की चर्चा आज मेरे सामने न करना। समझे हो न?—आज मेरी मानसिक दशा एकदम ख़राब है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं फिर अकेला ही जाता हूँ।" यह कह कर वह विलासी युवक उसकी ओर एक तीखी चितवन से देखकर बाहर चला गया।

यह युवक चुप-चाप बैठा ही रहा।

(२)

स्टेशन के प्लेटफ़ार्म के पास जब लखनऊ से आनेवाली 'एक्सप्रेस' लम्बी यात्रा की थकान के कारण एक भीषण गर्जन कर खड़ी हुई, उस समय भी संध्यादेवी अवनीतल पर अवतीर्ण नहीं हुई थीं। एक युवक ने गाड़ी से उतर कर एक बार चारों तरफ़ निगाह दौड़ाई कि कहीं किसी ने उसे देख तो नहीं लिया है; फिर तुरन्त ही स्टेशन के बाहर आकर खड़ा हो गया।

सूर्य भगवान् अपनी मरीचिमाला खींच कर अस्ताचल के पीछे छिप रहे थे; परंतु उस समय भी उनकी सेंदुर-सी अनंत लाल किरणें वृक्षों के शृंगों पर 'आँखमिचौनी' खेल रही थीं। युवक कुछ दूर जाकर एक छोटी-सी झाड़ी में छिप कर बैठ गया। अपने को आज महा अपराधी समझ कर वह लोक-चक्षु की आड़ में रहना चाहता था। वह मद्यसेवी है, वेश्यासक्त है, उसने इस संसार के एक निरपराधी प्राणी के जीवन को निष्फल कर दिया है, यही विचार रह-रह कर उसके कलेजे को मसोस रहे थे और वह आत्मग्लानि तथा पश्चात्ताप से गड़ा जा रहा था। इसी लिए संसार के सामने वह अपने को दंडित अपराधी-सा समझता था—वह चाहता था आत्म-गोपन।

× × × ×

वह जिस समय अपने निभृत स्थान से निकल आया, उस समय पहर रात हो गई थी; चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार था। ग्राम्य-पथ सम्पूर्ण जनशून्य था। किन्तु कहीं कुछ शब्द होने से ही वह फिर जल्दी से अपने को पथ के बग़ल में छिपा रखता। ज्यों ज्यों वह अपने मकान के समीप पहुँचता जाता था, त्यों त्यों उसकी छाती ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगती थी।

"किन्तु वह—वह रोशनी है न?" बहुत दूर पर एक धुँधला-सा दीपक टिमटिमा रहा था।

"भगवन्, क्या तुम—?"

युवक की हिम्मत ने अब जवाब दे दिया। उससे आगे बढ़ना कठिन हो गया। वह चार क़दम आगे बढ़ता था, फिर हाँफ कर बैठ जाता था। बहुत मुश्किल से दरवाज़े के पास पहुँच कर वह धम से गिर पड़ा। मुँह से सिर्फ़ ये शब्द निकले—

"गंगा—ओफ़्।"

गंगा अपनी निराशा-मथित छाती को तकिये से दबाये सोच रही थी अपने उपेक्षित जीवन की एक अतीत घटना को। जिस दिन उसके पति ने आदर-पूर्वक दाम्पत्य-प्रेम से विह्वल होकर उसको अपनी छाती से लगा कर कहा था—"गंगा, तुम बहुत ही सुंदर हो। तुम्हारा स्थान चिर काल के लिए ऐसे ही मेरे वक्षःस्थल पर विराजमान रहेगा।"

इसी सुषमामय स्वप्न की मधुर स्मृति ने गंगा के शून्य हृदय को परिपूर्ण कर रक्खा था।

ऐसे समय में उसका चिर परिचित-सा पुराना 'गंगा' सम्बोधन उसके कानों में बज उठा। उसने सोचा, कदाचित् यह स्वप्न है। परंतु दरवाज़े के पास एक भारी वस्तु के गिरने की ध्वनि से चौंक कर उसने रोशनी लेकर दरवाज़ा खोलकर देखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपक का प्रकाश युवक के मुख पर गिरा। आश्चर्यचकित लावण्यमयी ललना दीपक को और भी नीचा करके युवक के मुख के पास ले आई—"यह क्या देख रही हूँ, भगवन्!"

गंगा की आँखें आनंद से सजल हो गईं, उसका कंठ गद्गद हो गया, उसकी ज़बान शिथिल हो गई, उसका बाह्यज्ञान लुप्त हो गया, और वह दो-तीन मिनट तक पत्थर की मूर्ति की नाईं खड़ी रही।

(३)

"गंगा।"

"जी।"

आगे वार्तालाप नहीं हो पाया—दोनों प्राणियों के मुँह से शब्द ही नहीं निकला। आज भाषा को भी हार माननी पड़ी; हृदय की बात मुख से निकल नहीं सकी, दृष्टिविनिमय तो हो गया। युवती अपने लज्जापूर्ण चेहरे को पृथ्वी पर गड़ाये खड़ी रही। और युवक अपनी आकुल प्यासी दृष्टि के सहारे अपनी प्रेममयी स्त्री की सौन्दर्य-सुधा आकंठ आस्वादन करता रहा। उसने देखा, यह अर्द्ध-प्रस्फुटित पवित्र कमल-कली की भाँति क्षुद्र मनोहर छवि कैसी अनुपम सौन्दर्य-मण्डित है। सत्यदेव उसकी सुंदरता पर पहले भी मुग्ध था, परंतु गंगा में जो इतनी विचित्र विशेषता थी उसे सत्यदेव ने स्वप्न में भी कभी नहीं सोचा था। इसी लिए उसकी तरफ़ उसकी टकटकी लगी रही।

× × ×

"गंगा, बहुत ही सुंदर हो तुम।"

गंगा का सिर नीचे की तरफ़ और भी झुक गया, और वह जवाकुसुम से लाल ओठों का एकांश दाँत से दबा कर पैरों के नखाग्र से धरती कुरेदने लगी। पुनः अस्फुट स्वर से बाधा देकर वह बोली—"नहीं, नहीं, ऐसा न कहना। मैं तो आपके नाख़ून के भी योग्य नहीं हूँ।"

दूर से आये हुए गीत के अस्पष्ट शब्द-सा गंगा का वाक्य कानों में पहुँचने से सत्यदेव चौंक पड़ा। उसने सोचा, 'सुख की टोह में मैंने इतने दिन नरक में ही गँवा दिये।'

"गंगा, मुझे क्षमा करो।"

'ऐ मेरे साधन के धन, मेरे सर्वस्व, मेरे सर्वाधार! आप आज यह क्या कह रहे हैं? मैं तो आपकी दासी होने के भी अयोग्य हूँ। मैं क्या आपको क्षमा कर सकती हूँ? आप जो आज दूर शहर से मेरे पास लौट आये हैं, यही मेरा परम सौभाग्य है।' मन ही मन यह सोच कर गंगा ने संकोच के साथ कहा—"ऐसा न कहिए।"

फिर सजल नयनों से युवक के चरणों पर लोटती हुई उसने कहा—"मेरा स्थान तो यहाँ है।"

युवक तुरंत उसको उठा कर गाढ़ आलिंगन में बद्ध करके स्नेहपूर्ण, आनन्दातिशय गद्गद कंठ से बोला—"बहुत ही रमणीय तुम, गंगा, बहुत ही रमणीय हो! तुम्हारा स्थान वहाँ नहीं—मेरे इस वक्षःस्थल के ऊपर है। मोह-से—भ्रम से—असमर्थ के समान इतने दिन तक मृग-तृष्णा के पीछे पीछे दौड़ा था, किन्तु अब उसका पता लग गया है। केवल पता ही नहीं लगा है, बरन ऐसे निविड़भाव से लगा है कि अब तुमको मुझसे छीन कर ले जाना मानो मेरी छाती फाड़ कर हृत्-पिंड को ज़बरदस्ती उखाड़ लेना है। जानती हो; मैं अचानक क्यों आज ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात में आया हूँ ? तुमको ताज्जुब में डालने के लिए नहीं। बहुत ही बुरी ख़बर पाकर आया हूँ। मोहन ने मुझसे कहा कि तुमने आत्महत्या की है। तिवारीजी के लड़के रामेश्वर से उस दिन उसकी सहसा मुलाक़ात हुई थी। वह जल्दी जल्दी कहीं जा रहा था। वह सिर्फ़ इतना ही कह पाया था कि 'सत्यदेव की स्त्री गले में रस्सी का फंदा डाल कर मर गई है।' यह ख़बर सुनते ही दुनिया मेरी आँखों से अँधेरी हो गई, ग्लानि और क्षोभ से मेरा चित्त भर गया। मैं उसी दिन चल खड़ा हुआ। सोचा—और क्यों ? मकान पर रह कर खेती-बारी करूँगा और वहीं पड़ा रहूँगा। शायद किसी दिन अकस्मात् तुम्हारी प्रेतात्मा से ही भेंट हो जाय।

"मैं नहीं मरी हूँ सही, परंतु आपके ही नाम के मिश्राने के ठाकुर साहब के लड़के की स्त्री ने कल आत्महत्या की है।"

सत्यदेव ने आश्वासन की साँस भर कर गंगा का एक हाथ अपने हाथ में दबा कर, दूसरा हाथ उसके कंधे पर रख कर, उसे अपनी छाती से लिपटा लिया। गंगा के कपोल लाल हो गये।

पति के वक्षःस्थल पर सिर रख कर छोटी-सी बालिका के समान गंगा ने कहा—मैं जानती थी कि आप अवश्य आने की कृपा करेंगे, इसी लिए मैं आपको देखकर तनिक भी विचलित नहीं हुई थी।

उस समय नक्षत्र-खचित श्याम नभो-मंडल में शुक्ल-पक्ष की द्वादशी के सहृदय निशानाथ हँस रहे थे।

—कालीचरण चटर्जी

प्राचीन आर्यवीरता

के विषय में देखिए प्रसिद्ध पत्र "प्रताप" की क्या सम्मति है:—

"पुस्तक नागरी-प्रचारिणी सभा की मनोरञ्जन-पुस्तकमाला की ४९ वीं पुस्तक है। इसमें राजपूताने के महाराना प्रतापसिंह, पृथ्वीराज चौहान, भीमसिंह, हम्मीरसिंह, चूड़ा, राजसिंह, दुर्गादास आदि १४ वीरों के चरित्र दिये गये हैं। वीरों का चरित्र-चित्रण अच्छे ढंग से किया गया है और उनकी वीरता एवं साहसपूर्ण कार्यों को पढ़कर हृदय में वीर-रस का संचार हो उठता है। लड़कों के अभिभावकों तथा माता-पिताओं को चाहिए कि वे उन्हें ऐसी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया करें।

२१० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस की अग्नि-परीक्षा

[रूस की वास्तविक अवस्था का पूरा परिचय सुलभ नहीं है। तो भी इतना प्रकट है कि वहाँ की बोल्शेविक सरकार उसकी समुन्नति के लिए विशेष रूप से यत्नवान् है। वहाँ उद्योग-धन्धों को प्रचलित करके सरकार ने उसे व्यवसाय-प्रधान देश में परिणत करने के लिए एक नया कार्यक्रम जारी किया है। इसके अनुसार २ वर्ष काम किया जा चुका है और ३ वर्ष अभी और होगा। इस कार्य-क्रम के कारण वहाँ इस समय कैसी दशा है, इसी का दिग्दर्शन इस लेख में कराया गया है।]

यद्यपि संसार के साम्राज्यवादी देशों ने रूस को बदनाम करने में कोई भी कोशिश बाक़ी नहीं रक्खी और न उन्होंने उसकी सफलता के मार्ग में रोड़े बिछाने में ही कोर-कसर की, फिर भी वह जिस अदम्य उत्साह एवं दृढ़ संकल्प के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरवरत प्रयत्न करता रहा है और अनेक विघ्न-बाधाओं के होते हुए भी जिस तरह बराबर उन्नति के मार्ग में अग्रसर हो रहा है, उसे देखकर आश्चर्य होता है। जब से वहाँ बोल-शेविक शासन-प्रणाली स्थापित हुई तब से क्या राजनीति, क्या व्यवसाय, और क्या समाज—सभी क्षेत्रों में रूस का कायापलट हो गया है। यद्यपि यह सत्य है कि पूँजीवाद तथा साम्राज्यवाद के विरुद्ध इतने व्यापक प्रचार का यह प्रयत्न बिलकुल अश्रुतपूर्व होने के कारण बोलशेविकों को अपने सिद्धान्तों में बहुत कुछ संशोधन भी करना पड़ा है और परिस्थिति के सामने लाचार होकर कभी कभी उनके प्रयोग के सम्बन्ध में ढिलाई भी करनी पड़ी है, किन्तु इससे वे निराश नहीं हुए हैं। वे अब भी उसी तत्परता के साथ रूस की उन्नति के महान् प्रयत्न में जुटे हुए हैं, क्योंकि उन्हें सफलता की पूरी आशा है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि रूस भारत वर्ष की ही तरह कृषिप्रधान देश है, किन्तु जब से वहाँ नूतन शासन-प्रणाली की प्रतिष्ठा हुई और आरंभिक काल के गड़बड़ के बाद पुनः शान्ति की स्थापना हुई है तब से वहाँ के उद्योग-व्यवसायों को भी समुन्नत बनाने की चेष्टा की जा रही है। सन् १९२८ में पाँच वर्षों के लिए जो कार्यक्रम सामने रक्खा गया था, उसका उद्देश सोवियट रूस को आर्थिक दृष्टि से पूर्णतया स्वावलम्बी बनाना है। पिछले दो वर्षों में इसमें जो सफलता प्राप्त हुई है उससे इस बात की पूरी आशा हो रही है कि यदि कोई विघ्न-बाधा उपस्थित न हुई तो पाँच वर्ष का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानलीला

[चित्रकार—श्रीयुत असितकुमार हल्दार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यक्रम सन्तोष-जनक रीति से पूरा किया जा सकेगा।

रूस में जब से नूतन आर्थिक नीति जारी की गई है तब से बड़ी शीघ्रतापूर्वक वहाँ के उद्योग-व्यवसायों की उन्नति हो रही है, किन्तु फ़िलहाल इससे सर्वसाधारण के कष्ट घटने के बजाय और बढ़ गये हैं। नित्य काम में आनेवाली अत्यावश्यक वस्तुओं में से शायद ही कोई ऐसी हो जिसका वितरण मर्यादित न कर दिया गया हो। रोटी पाने के लिए लोगों को कार्ड दिये जाते हैं और अन्य भोजन-सामग्री का नियंत्रण किया जाता है। कपड़े भी एक निर्दिष्ट सीमा के भीतर ही ख़रीदे जा सकते हैं। मांस-वितरण के लिए कार्ड तो जारी किये जाते हैं, पर वह बहुत कम परिमाण में ही दिया जाता है। दूध, सिगरेट, जूते तथा दवाओं इत्यादि का भी यही हाल है। भोजन-सामग्री का वितरण यद्यपि मर्यादित कर दिया गया है, फिर भी वह काफ़ी मात्रा में मिल जाती है। अन्न वहाँ अधिक मात्रा में पैदा हुआ है और इस वर्ष कोई १६ प्रतिशत अधिक ज़मीन जोती जा रही है, अतः अगले वर्ष उसके और भी अधिक परिमाण में उत्पन्न होने की आशा है। इस स्थिति में भी खाद्य वस्तुओं का वितरण मर्यादित रखने का कारण रूस-सरकार की यह अभिलाषा है कि जितना अधिक अन्न बच सके उतना सब, यंत्रादि का मूल्य चुकाने के लिए, बाहर भेज दिया जाय। मांस की कमी का कारण कृषि की सामूहिक व्यवस्था का प्रचलित किया जाना और छीन लिये जाने के भय से किसानों का अपने बहुसंख्यक पशुओं का वध कर डालना है। अब तो वहाँ राज्य की ओर से बड़ी बड़ी पशुशालायें स्थापित हो गई हैं, अतः चार-पाँच वर्षों में ही पशुओं की संख्या पुनः यथेष्ट हो जायगी। अन्न के सिवा अन्य वस्तुओं के सम्बन्ध में भी सोवियट-सरकार की यही प्रवृत्ति है कि उनमें से जिन जिनका बाहर भेजना संभव हो वे सब विदेशों को भेज दी जायँ और उनके बदले में वहाँ से बड़ी बड़ी मशीनें, भारी बोझ उठाने के काँटे तथा और भी कई तरह के औज़ार इत्यादि मँगाये जायँ जो उसे अपने व्यवसायों की उन्नति के लिए आवश्यक हैं। मछलियों, कपड़ों, साबुन इत्यादि की कमी का संभवतः यही कारण है। इस नीति का परिणाम यह हो रहा है कि रूस के प्रत्येक नागरिक को अपने देश की व्यावसायिक उन्नति के लिए बड़ा आत्मत्याग करना पड़ रहा है। आवश्यक वस्तुओं का कम से कम प्रयोग कर सकने के कारण उसके दिन बड़े कष्ट से बीत रहे हैं। किन्तु वह इस आशा से प्रसन्नतापूर्वक सब कुछ बरदाश्त कर रहा है कि पाँच वर्ष बीत जाने पर देश में सुवर्णयुग आ ही जायगा और हमारे सब दुःख दूर हो जायँगे।

आवश्यक वस्तुओं की कमी के कारण रूस में कैसी विलक्षण परिस्थिति उत्पन्न हो गई है, इसका थोड़ा-बहुत अनुमान वहाँ के दो-एक नगरों की हालत जान कर किया जा सकता है। लेनिनग्रेड पहुँचने पर दर्शक का पहला ख़याल शायद यही होगा कि इतने ऊँचे ऊँचे मकानों, सुन्दर गुम्बजों तथा बड़ी बड़ी दूकानों के होते हुए भी वह एक दरिद्र नगर में पहुँच गया है। वर्षों से सफ़ेदी न होने के कारण दीवारों पर गर्द बैठ गई है और वे धूमिल वर्ण की देख पड़ती हैं। दूकानों के तख़्ते इत्यादि भी बड़े भद्दे मालूम पड़ते हैं, क्योंकि उन पर चिरकाल से रंग नहीं चढ़ाया गया है। सड़कों पर बाइसिकिल तो शायद ही कभी कोई देख पड़ती हो। हाँ, इनी-गिनी मोटरगाड़ियाँ तथा थोड़ी सी सवारी की अन्य गाड़ियाँ अवश्य देख पड़ती हैं। जिन बड़ी बड़ी सड़कों पर ट्राम चलती है उनकी दशा तो कुछ ठीक है, किन्तु अन्य सड़कें बहुत ख़राब हालत में हैं। उन पर चलते हुए जो स्त्री-पुरुष नज़र आते हैं वे प्रायः फटे-पुराने कपड़े पहने रहते हैं। पुरुष प्रायः रुई की बंडी और घटिया ऊन के पायजामे पहनते हैं। बीच में एक कमरपट्टा पड़ा रहता है। बहुतों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पाँवों में कैनवस के जूते भी रहते हैं। वे अपने सिर प्रायः खुले रखते हैं। कभी कभी टोपी भी पहनते हैं। मुलायम टोप उनके पास नहीं दिखाई देते। इसी तरह स्त्रियाँ भी प्रायः बहुत दिनों से प्रयोग में रहनेवाली कुर्तियाँ तथा साया धारण करती हैं। सिर उनके भी खुले रहते हैं अथवा उन पर कम क़ीमत के रूमाल बाँध लिये जाते हैं। उनके जूते बिलकुल पतले तले के होते हैं।

दूकानों में से बहुत-सी तो बन्द ही हैं। जो खुली हैं उनमें भी प्रायः थोड़ी ही वस्तुओं का संग्रह रहता है। वे प्रायः भीतर की ओर रक्खी रहती हैं। लोगों के देखने के लिए सामने सजाकर नहीं रक्खी जातीं। सहयोग-भाण्डारगृहों में प्रत्येक वस्तु की क़ीमत निश्चित रहती है। कोई वस्तु एक जगह सस्ती मिले, दूसरी जगह महँगी, ऐसी बात नहीं है। प्रत्येक ख़रीदार के पास अपनी अपनी टिकट-बही रहती है। ये तीन तरह की होती हैं—रोटी के लिए, अन्य खाद्य वस्तुओं के लिए, तथा जूते, कपड़े इत्यादि की तरह कारख़ानों में तैयार की गई वस्तुओं के लिए। जिसे जिस वस्तु की आवश्यकता होती है वह उसके लिए अपनी टिकट-बही दूकान की खिड़की में बैठे एक आदमी को दे देता है। वह उसमें से एक टिकट फाड़ लेता है और उसे एक पुर्ज़ा दे देता है। यह पुर्ज़ा उस खिड़की में ले जाना पड़ता है, जहाँ से वस्तुओं का वितरण होता है। स्पष्ट ही यह पद्धति बड़ी असुविधाजनक है। दूकानों के सामने प्रायः ख़ूब भीड़ लग जाती है और प्रत्येक व्यक्ति को वाञ्छित वस्तु पाने के लिए कभी कभी घण्टों खड़े रहना पड़ता है। तब कहीं उसकी पारी आती है।

यद्यपि विक्रयार्थ उपस्थित किये गये अन्न तथा अन्य खाद्य वस्तुओं की बड़ी तंगी है, फिर भी रोटी प्रायः काफ़ी मात्रा में मिल जाती है। शारीरिक परिश्रम करनेवालों को प्रतिदिन एक सेर रोटी मिलती है और लिखने-पढ़ने इत्यादि का काम करनेवालों को आधा सेर। यह रोटी कुछ कुछ भूमिवर्ण की और अत्यन्त पुष्टिकारक होती है। लेनिनग्रेड में इन दूकानों पर दूध बिलकुल नहीं मिलता। वह केवल मरीज़ों तथा बच्चों के लिए रख लिया जाता है। दूध न मिल सकने के कारण रूसी लोग बिना दूध की ही चाय पीते हैं। वे प्रायः नींबू को एक तरह फाँकों का रस भी चाय में निचोड़ लिया करते थे, पर इधर दो वर्षों से लेनिनग्रेड तथा मास्को में एक भी नींबू बिकने के लिए नहीं लाया गया। चाय भी एक आदमी के पीछे महीने भर में कुल दो छटाँक तक मिलती है, अतः मामूली से कम चाय डालकर ही लोग काम चलाते हैं। इसके सिवा चीनी भी बहुत कम मिलती है। जो लोग शारीरिक परिश्रम करते हैं उन्हें हफ़्ते में तीन या चार दिन थोड़ी मात्रा में मांस भी दिया जाता है। किन्तु जो शारीरिक परिश्रम नहीं करते उन्हें वह नाममात्र को ही मिलता है। अक्सर यह होता है कि दूकान पर लगी हुई भीड़ के आख़िरी लोगों की पारी आने के पहले ही भाण्डार ख़ाली जाता है और वे बेचारे कोरे ही रह जाते हैं। यदि कभी किसी को दूध, मक्खन या अण्डा खाने की विशेष इच्छा हुई तो वह उन्हें सड़कों पर या बाज़ारों में किसानों अथवा छोटे दूकानदारों से ख़रीद सकता है, किन्तु यहाँ क़ीमत ज़्यादा देनी पड़ती है। मास्को तथा लेनिनग्रेड में एक अण्डा लगभग आठ आने में मिलता है और आधा सेर मक्खन बारह रुपये से चौदह रुपये तक में मिलता है। संतरे तथा नाशपाती लगभग नौ रुपये सेर मिलते हैं। कीव्ह में वे कुछ सस्ते हैं। कहीं कहीं तो, उदाहरणार्थ 'रक्टोव्ह' में, फल प्रायः मिलते ही नहीं। हाँ, छोटे छोटे टोमाटो (विलायती भंटा) अवश्य मिल जाते हैं।

मास्को और लेनिनग्रेड में भोजन की समस्या जितनी कठिन है, कपड़ों की समस्या उससे कम कठिन नहीं। सिलेसिलाये तैयार कपड़े मामूली सस्ते दामों में पाना तो वहाँ प्रायः असम्भव ही है। जो कपड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलते हैं वे प्रायः बहुत घटिया मेल के होने के कारण ज्यादा दिन नहीं चलते और मूल्य भी अधिक देना पड़ता है। रुई के कपड़े के बने हुए मामूली पायजामे के लिए कोई चौदह रुपये लगते हैं और जो कुछ दिन चल सकें ऐसे कोट-पतलून-वास्कट के लिए अस्सी-नब्बे रुपये खर्च करने पड़ते हैं। बिक्री की सीमा निर्धारित रहने के कारण प्रायः प्रत्येक व्यक्ति को तब तक ठहरना पड़ता है जब तक पुनः उसकी पारी नहीं आ जाती। स्त्रियों के साये के लिए इँग्लेंड इत्यादि देशों में जो मूल्य देना पड़ता है उसका वहाँ दूना देना पड़ता है। मोज़े उन्हें सूती ही मिल सकते हैं, ऊनी या रेशमी नहीं।*

ऊपर लेनिनग्रेड तथा मास्को की दशा का जो चित्र दिया गया है उससे तुरन्त यह अनुमान कर लेना तो ठीक न होगा कि वस्तुतः सारे रूस की यही हालत है। फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि अल्पाधिक मात्रा में प्रायः सर्वत्र, खास कर शहरों में, कुछ कुछ ऐसी ही परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। इतनी असुविधाओं के होते हुए भी, आश्चर्य है, जनता में शासन के प्रति विशेष असन्तोष का भाव दृष्टिगोचर नहीं होता। यदि और किसी सभ्य देश में लोगों को ऐसी तकलीफें उठानी पड़ें तो वहाँ एक भीषण शासन-संकट उपस्थित होने में देर न लगे। उदाहरणार्थ यदि केवल एक सप्ताह के लिए इँग्लेंड के प्रत्येक व्यक्ति को दूध के बिना रहना पड़े तो क्या इस हालत में वहाँ की मज़दूर-सरकार एक मिनट भी अपना अस्तित्व बनाये रख सकती है? उसी प्रकार यदि अमेरिका या अन्य किसी देश में रोटी और मांस पाने के लिए लोगों को घंटा तक दूकानों के सामने खड़ा रहना पड़े तो इस संकट को वे कितने दिनों तक बरदाश्त कर सकेंगे और कब तक वहाँ की सरकार क़ायम रह सकेगी? किन्तु रूस में सब कुछ संभव है। वहाँ के लोग बड़े सहनशील हैं। ज़ारशाही के ज़माने में कई बातों में वे इससे भी अधिक कष्ट भोग चुके हैं और यद्यपि किसानों की हालत इस समय भी सन्तोषजनक नहीं कही जा सकती, फिर भी पहले की अपेक्षा वह बहुत कुछ सुधर गई है। मज़दूरों की दशा तो अब निश्चय ही अधिक अच्छी है। ज़ार के शासनकाल में उन्हें प्रायः पेटभर भोजन भी नहीं मिलता था और न वे अच्छे कपड़े पहन सकते थे। उन्हें दिन भर में ग्यारह-बारह घण्टे काम करना पड़ता था और मज़दूरी भी बहुत कम मिलती थी। जब वे असन्तुष्ट होकर हड़ताल कर देते थे तब उन्हें कोसक जाति के सवार कोड़े लगाकर पुनः काम पर लौट जाने के लिए विवश करते थे। यद्यपि अब भी उन्हें अनेक दिक़्क़तें उठानी पड़ रही हैं, फिर भी जो कुछ वे अतीत काल में भोग चुके हैं उसकी तुलना में यह कुछ नहीं है।

मज़दूरों को भोजन तथा कुछ और चीज़ें कारख़ानों में ही बाँट दी जाती हैं और उनकी मात्रा भी काफ़ी रहती है। यही बात सेना के विषय में भी कही जा सकती है। अन्न तथा अन्य खाद्य वस्तुओं के सम्बन्ध में देश भर में इतना संकट होते हुए भी बोलशेविक सेना की ख़ूराक में रत्ती भर भी कमी नहीं की गई है, बल्कि उसमें कुछ वृद्धि ही करने का विचार किया जा रहा है। बात यह है कि मज़दूरों और सैनिकों को सन्तुष्ट रखने में ही बोलशेविक शासन की भलाई है। इन्हीं दोनों के हितों की रक्षा और सुख-शान्ति की भित्ति पर वह खड़ा हुआ है। जिस दिन इन लोगों में असन्तोष फैल जायगा, उसी दिन से वर्तमान रूसी सरकार की सत्ता भी डावाँडोल हो जायगी, अस्तु।

रूस में अन्न-वस्त्रादि की जो कमी देख पड़ रही है उसके दो कारण प्रतीत होते हैं। एक तो सरकार की यह नीति, जिसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं, कि अन्नादि वस्तुएँ जहाँ तक ख़र्च से बचाई जा सकें, बचाई जायँ और व्यावसायिक उन्नति के लिए

* लेनिनग्रेड की हालत का यह वर्णन, प्रधानतया "डेली हैरल्ड" में प्रकाशित एमरिश न्यूज़ के लेख के आधार पर दिया गया है। —लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक मशीनों तथा औज़ारों के मूल्य के बदले में विदेशों को भेज दी जायँ। दूसरे, स्वयं रूस में ही व्यावसायिक उन्नति का आरम्भ हो जाने के कारण अब वहाँ व्यावसायिक वस्तुओं की खपत भी बढ़ गई है। जो लोग पहले थोड़ी सी वस्तुओं से काम चला लेते थे उन्हें अब क्रमशः अधिक वस्तुओं की आवश्यकता प्रतीत होने लगी है। तुर्किस्तान-साइबेरियन रेलवे के खुल जाने से किरघिज इत्यादि के निवासी भी जो पहले शायद ही कभी किसी कारखाने में तैयार की गई वस्तु का प्रयोग करते थे, अब इन वस्तुओं के आदी होते जा रहे हैं। इसके सिवा विविध व्यवसायों को प्रोत्साहन मिलने के कारण प्रतिवर्ष कोई सात लाख मनुष्य गाँव छोड़ छोड़ कर शहरों में बसते जा रहे हैं। गाँवों की अपेक्षा यहाँ उनकी आवश्यकतायें अधिक बढ़ गई हैं और अब वे अपने नित्य के कामों में अधिक वस्तुओं का प्रयोग करने लगे हैं। तात्पर्य यह है कि रूस के कारखानों में जो चीज़ें तैयार हो रही हैं वे वहाँ के लोगों की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं, ख़ास कर ऐसी हालत में जब कि उनका एक अंश मशीनों इत्यादि के मूल्य के बदले विदेशों को भेज दिया जाता है। इसी से रूसवालों को इतनी तंगी हो रही है।

अब प्रश्न यह होता है कि आख़िर यह हालत कब तक रहेगी? क्या पाँच वर्ष का कार्यक्रम समाप्त होने के बाद ही रूस के क्लेशों का अन्त हो जायगा और वहाँ के लोग जिस सुवर्णयुग की आशा से धैर्यपूर्वक अपने दिन बिता रहे हैं उसकी स्थापना हो जायगी? इसका उत्तर देना कठिन है। वहाँ की परिस्थिति के सम्बन्ध में आज-कल समाचार-पत्रों में जो लेख निकल रहे हैं उनसे प्रतीत होता है कि यद्यपि पंचवर्षीय कार्यक्रम के पर्याप्त रूप से सफल हो सकने के सम्बन्ध में विशेष शंका करने के लिए स्थान नहीं है, फिर भी उसके समाप्त होते ही रूस की हालत सुधर जायगी, इसमें सन्देह है। संभव है, इसके बाद सरकार को अपनी नीति में कुछ परिवर्तन करना पड़े अथवा ऐसा ही एक और कार्यक्रम निर्धारित करना पड़े, क्योंकि व्यावसायिक उन्नति के मार्ग में एक बार अग्रसर होकर पीछे लौटना रूस के लिए संभव नहीं दिखाई देता। यदि व्यावसायिक नीति में ज़रा भी शिथिलता हुई और मज़दूरों को थोड़े समय के लिए भी बेकार रहना पड़ा तो समझिए कि बोलशेविक सरकार के पतन में अब देर नहीं है। बेकारी की समस्या अन्य देशों की अपेक्षा सोवियट रूस के लिए अधिक भयानक है, क्योंकि मज़दूरों की भलाई और सुखशान्ति पर ही वहाँ की सरकार का अस्तित्व निर्भर है जैसा कि एक लेखक का कहना है, "रूस ने स्वयं ही एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी है जिसमें व्यवसाय की नकेल सरकार के हाथ में नहीं है, बरन सरकार की ही नकेल व्यवसाय के हाथ में है।" अतः यह स्पष्ट है कि अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए बोलशेविक सरकार को, जहाँ तक संभव होगा वहाँ तक, ज़ोरों से व्यवसाय की उन्नति के निरन्तर प्रयत्न करते रहना पड़ेगा। देखें, रूस किस तरह इस समस्या को हल करता है और कब उसकी अग्नि-परीक्षा समाप्त होती है।

—मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

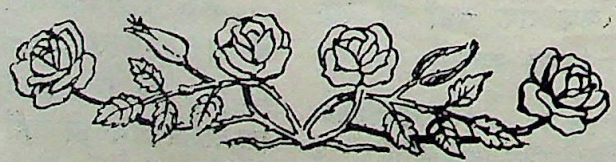

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योत्स्नामयी

(१)

छिपा जगत् से सान्ध्य मलिनता
उतर चन्द्र-किरणों से रानी—
ज्योत्स्ना कहती थी रो-रोकर
मूक-व्यथा की करुण कहानी ॥
नाच रहा था तरुण चन्द्रमा
ख़ुश होकर जल की छाती पर ।
कहीं तुंग शैलों से निकले
हर-हर करते थे शुचि निर्झर ॥

(२)

छोड़ गई थी स्मृति की अस्फुट
रेखा जगतीतल पर सन्ध्या ।
सिसक रही थी दूर विजन में
कहीं विरहिणी रजनी वन्ध्या ॥
किन्तु दीखते थे झिलमिल-से
अगणित बच्चे गोद गगन की ।
झूल रही सूने में वारिद—
बाला रस्सी डाल पवन की ॥

(३)

लुढ़का देता था स्वभाव से
शैल भूमि पर पृथुल शिलायें ।
बड़ी दूर तक फैली थी
हँसती हरियाली दायें-बायें ॥
तरु-पत्रों के मर्मर में था
फैला भग्न-हृदय का गाना ।
शुष्क भूमि पर बिखर पड़ा था
ज्योत्स्ना की किरणों का ख़ज़ाना ॥

(४)

कितने निर्झर पृथुल शिलाओं
से टकराकर गाते गाते ।
झर झर झरते थे शैलों से
वक्र पथों से आते-जाते ॥
तरु-पत्रों के अन्तराल से
ज्योत्स्ना की छिप करके छाया ।
श्वेत तूलिका से रँग देती
थी धरती की काली काया ॥

—श्रीप्रफुल्लचन्द्र ओझा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दादूपन्थी और उसका महाविद्यालय

भारतीय सन्त-सम्प्रदायों में दादूपन्थियों का अपना विशेष स्थान है। यहाँ हम उन्हीं के सम्बन्ध में लिख रहे हैं। परन्तु इसका विवरण देने के पहले हम महात्मा दादूजी का जीवन-वृत्तान्त देना चाहते हैं।

दादूजी का जन्म या उपलब्धि

भारत के साधुओं में दादूजी एक आदर्श साधु थे। जनता पर उनका प्रभाव था। लोग उनको देवता के तुल्य मानते थे। तत्कालीन सम्राट् भी पूजते थे। उनकी बनाई बानी 'गीता' के समान थी। उनकी जन्म-कथा विलक्षण है।

कुछ कहते हैं कि दादूजी 'गृहजात' थे, कुछ का यह मत है कि वे 'संप्राप्त' थे। जो कुछ हो, यहाँ दोनों बातों का उल्लेख किया जाता है। (१) वयः-प्राप्त अवस्था में दादूजी साँभर या आमेर में अधिक रहे थे। यवनों या यवन-संसर्गियों के संपर्क से उनको उर्दू-फ़ारसी और अरबी के बहुत से शब्द अभ्यस्त हो गये थे, अतः कुछ लोग उनको यहीं के मानते हैं। परन्तु (२) उनका प्राकट्य अहमदाबाद में हुआ था। वे संवत् १६०१ के फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को अरुणोदय के समय साबरमती के सलिल से नवजात शिशु के रूप में उदय हुए थे।

कहा जाता है कि अहमदाबाद में लोधीराम एक नागर ब्राह्मण थे। वे धनी और विख्यात व्यापारी थे। दान-पुण्य, उपासना, पूजा-पाठ में उनका मन लगा रहता था। उनको पुत्रलाभ की कामना थी। वे साबरमती में स्नान किया करते थे। एक दिन उनके पास एक साधु आये। उन्होंने लोधीराम की सेवा-पूजा और अभ्यर्थना से सन्तोष प्रकट किया और यह कह दिया कि 'तुम इसी साबरमती से पुत्र लाभ कर सकोगे'। लोधीराम ने महात्मा के वाक्यों पर विश्वास किया और यथापूर्व आचरण करते रहे। एक दिन उनको साबरमती के शान्त प्रवाह में बहकर आती हुई एक डलिया नज़र आई। समीप आने पर मालूम हुआ कि उसमें एक सद्योजात शिशु सुखपूर्वक सो रहा है। उसे देखकर उन्होंने समझा कि पूर्वोक्त साधु का वरदान इसी रूप में सत्य हुआ है। अतएव उन्होंने उसे जल से निकाल लिया और अपनी स्त्री को देकर उसे पुत्ररूप में परिणत किया। और एक जननी के उदर से जन्म और दूसरी के स्तनपान से दुग्ध ग्रहण कर पोषित हुआ। आगे वह संप्राप्त शिशु दादू नाम से विख्यात हुआ।

उक्त दम्पति ने दादूजी का सस्नेह पालन किया किन्तु ग्यारह वर्ष की अवस्था में वे साधु हो गये। एक वृद्ध महात्मा से उपदेश ग्रहण कर उन्होंने ग्राम त्याग दिया।

दादूजी की भजन भावना और भ्रमण

अहमदाबाद छोड़ कर दादूजी आबू होते हुए बरडाले गये और वहाँ बहुत वर्षों तक भजन किया। पीछे उन्होंने राजपूताने की यात्रा की, जिसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

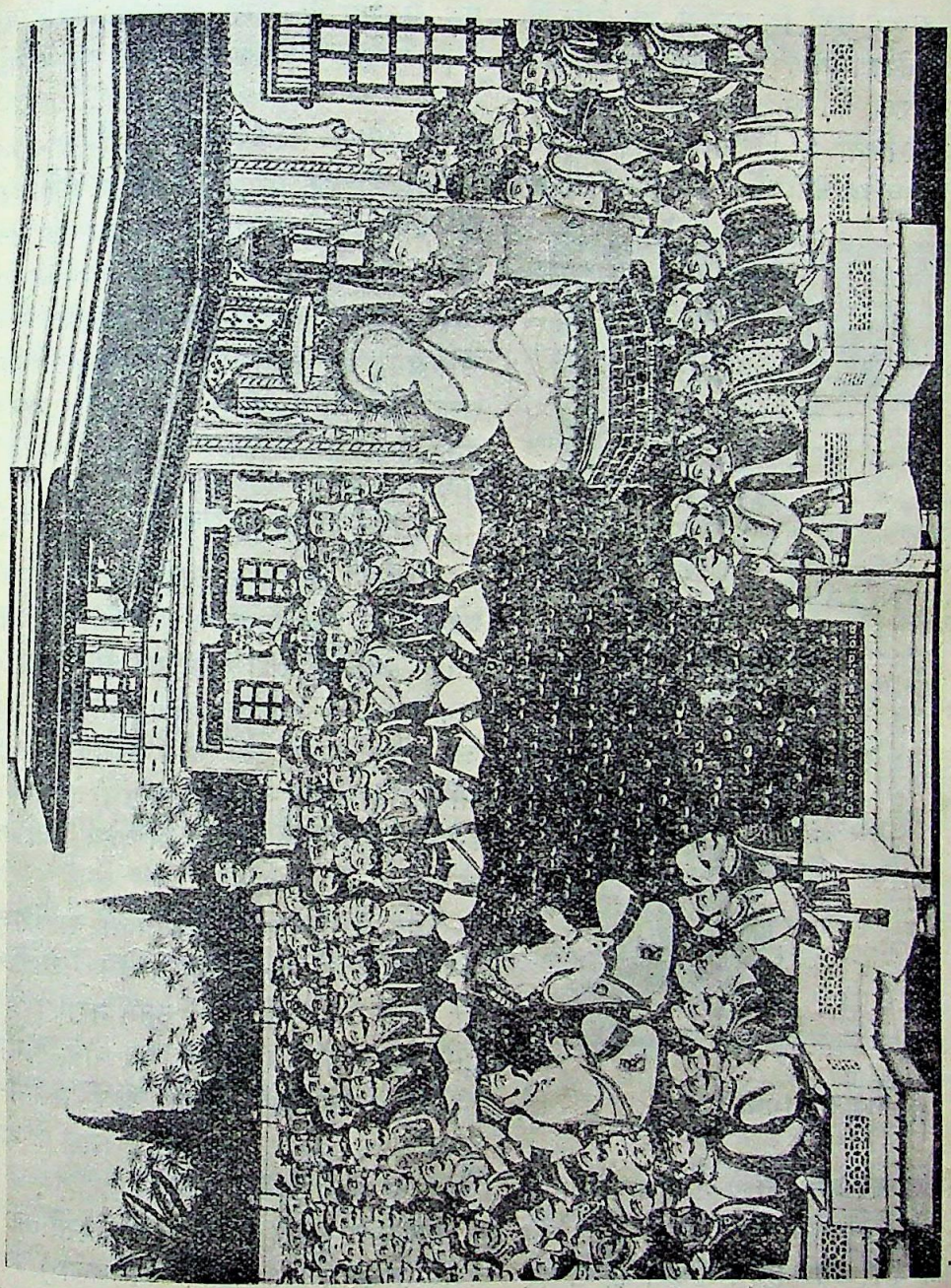

[सीकरी का शाही दरबार]

(१) महात्मा दादूदयाल, (२) सम्राट् अकबर, (३) महाराज मानसिंह, (४) अन्य दरबारी राजा लोग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साँभर, आमेर, दौसा और नराणे आदि में यथाक्रम रहते हुए नराणे में आयुष्य का निःशेष किया।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि दादूजी उच्च कोटि के महात्मा थे। उनको निर्गुण उपासना अभीष्ट थी। उन्होंने नाम-स्मरण के साथ निर्गुण उपासना का सिद्धान्त स्थिर किया था। उनके मनोगत भाव उनकी 'बानी' से विदित होते हैं। दादूजी व्यवहार

[बाबू रनीरामजी]

में भेदभाव वर्जित सब प्राणियों में भ्रातृभाव स्थापन करनेवाले थे! वे खण्डन-मण्डन या वैरभाव को अनुचित समझते थे। उनके हृदय में दया का संचार विशेष रूप से था। इसी लिए उनके नाम में दादू के साथ दयाल की योजना हुई थी। उन्होंने जो कुछ लिखा, निर्पेक्ष होकर लिखा और अपने स्थिर सिद्धान्तों पर आरूढ़ रहे। "आपा में है हरि भजै तन-मन तजै विकार। निर्वैरी सब जीवसूँ, यह मनसार।" कैसा हृदयंगम करने का वाक्य है। एक ही में अनेक समस्यायें हल हो गई हैं।

अकबर से भेंट

दादूजी बड़े प्रभावशाली और प्रतिभावान् पुरुष थे। आमेर-नरेश महाराज मानसिंह उनकी भक्ति करते थे। महाराज के अनुरोध से अकबर ने उन्हें अपने सीकरी के दरबार में उनको बुलाया था। खानखाना के द्वारा किये हुए कल्मा या नमाज सम्बन्धी प्रश्नों का उनसे यथार्थ उत्तर पाकर अकबर उनसे प्रसन्न हुआ था।

दादूजी का देहान्त और उनकी गद्दी

महात्मा दादूजी का देहावसान संवत् १६६० ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी को नराणे में हुआ था। और उनका निर्जीव शरीर नराणे के समीप भैराणे पहाड़ी खोल में स्थापित किया गया था। दादूपन्थी उन दोनों स्थानों को तीर्थ समान मानते हैं और साँभर तथा आमेर को पूज्य दृष्टि से देखते हैं। क्योंकि इन दोनों स्थानों में दादूजी ने बहुत वर्षों तक भजन किया था।

दादूजी के अनेक अनुयायी या शिष्य-प्रशिष्य थे। उनमें ५२ शिष्य विशिष्ट थे। उनके ५२ स्थान ५२ दादूद्वारे कहलाते हैं। उनमें नराणा 'प्रधान गुरु द्वारा है'। वहाँ राज्य से ५२ बीघे ज़मीन मिली हुई है, जिसमें नागे, विरक्त और मकानधारियों के बनवाये हुए बहुत मकान हैं। मेले के अवसर पर आये हुए साधु उन्हीं में रहते हैं।

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी से एकादशी तक नराणे में "दादू-सम्मेलन" (दादूजी का मेला) होता है। पहले देश-देशान्तरों में विचरती हुई सब जमातें उस अवसर पर नराणे में आ जाती थीं। अब कोई दो हज़ार साधु इकट्ठे होते हैं। वहीं "दादूजी की प्रचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गद्दी" है। उस पर दादूजी से पीछे १५ महात्मा आरूढ़ हो चुके हैं।

(१) गरीबदासजी संवत् १६६० से १६९३ पौष कृष्ण १३ तक, (२) महाकिशनदासजी संवत् १६९३ से १७०५ वैशाख शुक्ल ८ तक, (३) फकीरदासजी १७५० भाद्र कृष्ण ८ तक, (४) जैतरामदासजी १७८९ मार्ग कृष्ण ८ तक, (५) किशनदेवजी १८१० माघ कृष्ण १३ तक, (६) चैनरामजी १८३७ चैत्र बदी ८ तक (७) निर्भयरामजी १८७१ आसोज बदी ८ तक, (८) जीवनदासजी १८७७ मार्ग शुक्ल ८ तक, (९) दलेरामजी १८९७ फाल्गुन कृष्ण २ तक, (१०) प्रेमदासजी १९०१ ज्येष्ठ बदी २ तक, (११) नारायणदासजी १९१२ कार्तिक कृष्ण १३ तक, (१२) उदयरामजी १९३१ आश्विन कृष्ण १० तक, (१३) गुलाबदासजी १९४८ मार्ग शुक्ल १४ तक, (१४) हरजीरामजी संवत् १९५५ वैशाख शुक्ल १० तक और—(१५) दयारामजी संवत् १९५५ वैशाख में उक्त गद्दी के अधिकारी हुए जो इस समय वर्तमान हैं।

सुप्रसिद्ध शिष्य

दादूजी के ५२ शिष्यों में सबसे बड़े प्रथम सुन्दरदासजी थे। इसी प्रकार सबसे छोटे द्वितीय सुन्दरदासजी थे। बड़े सुन्दरदासजी शस्त्रधारी थे और छोटे शास्त्रधारी। बड़ों का निवास घाटड़े में रहा, छोटे फ़तेहपुर में विराजे। 'घाटड़ा' जयपुर-राज्य में साधुओं का बसाया हुआ गाँव है। ६ सौ रुपये वार्षिक आय की भूमि राज्य से उदकदत्त है। घाटड़े के महन्तों को नागा साधु अब भी गुरु-भाव से मानते हैं।

छोटे सुन्दरदासजी दौसा में जन्मे थे। जाति के धूसर थे। उनकी गद्दी फ़तेहपुर में है। वहाँ वे बहुत रहे थे। दादूजी के देहान्त-समय में सुन्दर जी ७ वर्ष के थे। प्रारम्भिक शिक्षा रज्जबजी से मिली थी। पीछे काशी गये थे। मृत्यु साँगानेर में हुई थी। वे संस्कृत के उत्कृष्ट पण्डित और अष्टांगयोग के निपुण योगी थे। हिन्दी से उनका विशेष अनुराग था। 'सुन्दरविलास' उन्हीं की रचना है। 'सुन्दरकाव्य' उनका दूसरा ग्रन्थ है। दोनों छप गये हैं। इनके सिवा बीसों ग्रन्थ और हैं जो अमुद्रित हैं, पर सुरक्षित हैं।

सुन्दरदास के ग्रन्थों में 'ज्ञान-समुद्र' अनुपम है। उसमें जितने प्रकार के छन्द हैं, उतने शायद ही अन्य में हों। वे संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित, योगाभ्यास के उत्कृष्ट अनुभवी, और छन्द-रचना में विशेष निपुण थे। रज्जबजी आध्यात्मिक विद्या के प्रगाढ़ पण्डित थे, साथ ही वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, अनुभव और बहुश्रुत थे। उन्होंने अपनी 'बानी' में आध्यात्मिक और व्यावहारिक विषयों का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। खेद है कि उनकी बानी का अर्थ अति गहन होने के कारण जन-साधारण की समझ में नहीं आता। विद्वान् ही काम चला सकते हैं।

निश्छलदासजी वेदांत विषय के मर्मज्ञ पण्डित थे। उनके 'विचारसागर' और 'वृत्तिप्रभाकर' दोनों ग्रंथ अनमोल हैं। उनकी लाखों प्रतियाँ बीसों बार छप चुकी हैं। निश्छलदासजी का स्थान रोहतक में था, जो अब भी मौजूद है।

आत्मारामजी वैद्यक-विषय के अनुभवी ज्ञाता थे। उनके बनाये हुए 'आत्मप्रकाश' से हिन्दी जाननेवाला अच्छा वैद्य बन सकता है और आतुरभेषज की व्यवस्था कर सकता है।

दादूजी की शिष्य-परम्परा में सुन्दरदासजी जैसे शस्त्रधारी, रूपरामजी जैसे अभ्यस्त योगी, सरूपदास, लालदास, आत्मबिहारी, मोतीराम और निगमराम जैसे सत्कवि तथा हरिदासजी और गोवर्धनदासजी जैसे विख्यात वीणा-वादक कई शिष्य हो चुके हैं। और वर्तमानकाल में भगवान्दासजी जैसे विद्वान्, महानंदजी जैसे व्याकरण-महारथी, हरजीरामजी जैसे संत तथा सूतलीदासजी जैसे सिद्ध पुरुष मौजूद हैं। ये अपने स्वार्थत्याग और लोकोपकार से उपकृत लोगों के हृदयंगम हो रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माओं का महत्त्व

किसी दिन दादूसंप्रदाय के साधुओं का सर्वत्र आदर था। उनकी चरण-रज लेने को राजा-रंक, रईस सब राज़ी थे। ऐसा क्यों था? इसलिए कि वे विद्यावान् थे, दयावान् थे, सदाचारी थे, और थे स्वार्थ-शून्य सच्चे साधु। उनकी बानी में सत्य की धारा थी। हृदय में दया का समुद्र था। हाथों में अभय के अस्त्र थे और अंतःकरण में परदुखहारी थे। उनको ज्ञान-सत्ता के प्रवाह में जनसमुदाय का जीवन-स्रोत पल भर में पलट जाता था और उनके उपदेश से पाप-पुंज छिप जाते थे।

बानी

इस पन्थ के प्रत्येक महात्मा ने अपने मनोगत भाव अपनी बनाई हुई बानियों में व्यक्त किया है। उनके अनुयायी उन बानियों का बड़ा आदर करते हैं। वास्तव में वे आदरणीय ही हैं। दर्शनशास्त्र जैसे जटिल विषयों को हिंदी के सीधे-सादे पद्यों में आबद्ध करके मामूली गुदड़ी में मूल्यवान् रत्न भर दिये हैं। आध्यात्मिक और व्यावहारिक विषयों पर उनमें भली भाँति प्रकाश डाला है। विशेषकर आत्म-विवेचन पर अधिक ज़ोर दिया है। जिस प्रकार गीता, दुर्गा और रामायण आदि पर प्रजा का प्रेम है, उसी प्रकार साधु-समाज उन बानियों से प्रेम रखते हैं और उनको देव-दुर्लभ धन की तरह प्राणप्रिय मानते और देव-तुल्य पूजते हैं। यही कारण है कि उनके हस्तलिखित सुन्दर, सुनहरे और सचित्र आदि घटिया-बढ़िया कई संस्करण हुए हैं।

(५)

नागे और उनकी जमातें

इस पन्थ के नागे साधु बड़े सुन्दरदासजी के शिष्य हैं। गुरु-परंपरा के अनुरोध से पाँच शस्त्र और एक वस्त्र रखते हैं। शस्त्रों में ढाल, तलवार, सेल, बंदूक और कटारा या धनुष हैं, और वस्त्र में एकमात्र लँगोटी है। इसी से इनका नाम 'नागा' हुआ है।

आरंभ में सब साधुओं की एक जमात थी। वे मण्डली बनाकर देश-भ्रमण करते थे। लूट-खसोट और मार-काट से उन दिनों उदर-पोषण होता था। एक मात्र मंडलीश्वर या महन्त सब साधुओं के शिक्षण, रक्षण, संचालन और उत्तरदायित्व के अधिकारी होते

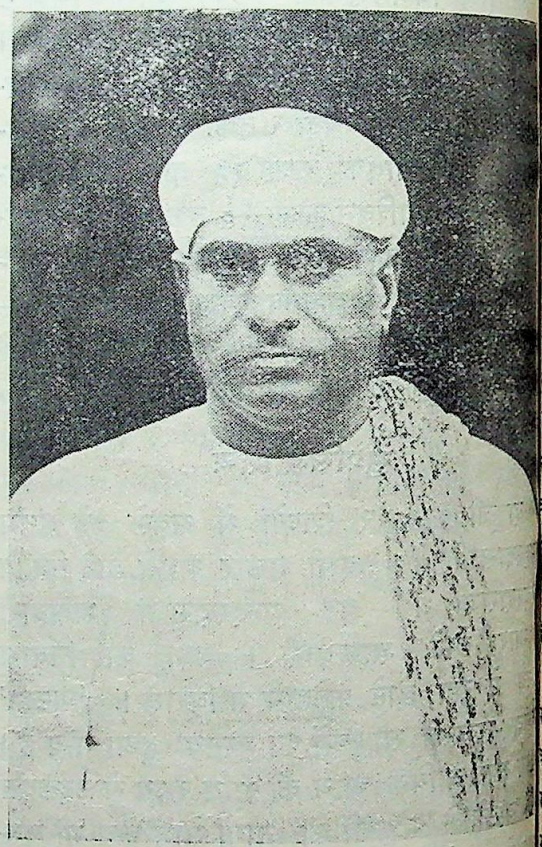

जयपुर के प्रसिद्ध वैद्य
[स्वामी लक्ष्मीरामजी आचार्य]

थे। जयपुर-राज्य में इस समय इनकी सात जमातें हैं। (१) उदयपुर (सेखावाटी), (२) चानसोर (काठैड़ा), (३) मोरड़ी, (४) लालगोट, (५) सवाई माधवपुर, (६) निवाई और (७) महावीर ये उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक़ाम हैं। उदयपुर की जमात और निवाई तथा घाटड़ा के महंत मुख्य हैं।

(१) नागे, (२) विरक्त और (३) मकानधारी ये तीन श्रेणियाँ इनमें आरंभ से ही बनी हुई हैं। अधिक संख्या नागों की है। उनसे कम मकानधारी हैं और विरक्त या आश्रयहीन सिर्फ़ दो सौ हैं। इनकी पूर्ण संख्या क्रम से ५,०००, १,०००, २०० या छः से सात हज़ार के भीतर है।

इनके पूर्व-पुरुष सुन्दरदासजी और प्रहलाददासजी घाटड़े रहे थे। उनके पीछे प्रहलाददासजी के शिष्यों में एक शिष्य घाटड़े और एक जयपुर रहे। जिस समय जमातें अलग अलग हुईं उस समय ये निवाई के महंत कहलाये।

जयपुर-राज्य का आश्रय

यह ऊपर लिख चुके हैं कि आरंभ में ये जमातें इतस्ततः घूमती रहती थीं। इनके साथ में सामान लादने के लिए घोड़े और ऊँट तथा मदद के लिए ३-४ सौ शस्त्रधारी साधु रहते थे। उन दिनों की लूट-खसोट से भी इनका नाम नागा हुआ था। अवसर आने पर जयपुर-राज्य युद्ध आदि में इनकी सहायता लेता था। उन दिनों जोधपुर में भी जयपुर की जमात थी। इनको ऐसी सेवाओं का फुटकर हाथ-खर्च मिलता था।

संवत् १८३६ में 'भडूँच' नाम का एक उपद्रवी मनुष्य देश में उपद्रव करता हुआ जयपुर-राज्य में आया। खाटू के समीप राज्य की सेना ने उसका मार्गावरोध किया। नागे साधुओं के निवाईवाले महंत मंगलदासजी अपनी फ़ौज को लेकर उस युद्ध में अग्रसर हुए थे। उन्होंने अपना सिर कट जाने पर भी घोर युद्ध किया था। अंत में भडूँचा के सैनिकों ने नील के छींटे देकर उनको धराशायी किया। इस युद्ध में नागों के प्रायः सभी साधु मारे गये। केवल छोटे बच्चे और बूढ़े पुरुष बचे थे। जयपुर-राज्य ने उनको माजी के बाग़ में रख कर सात-वर्ष तक पालन किया। और निवाईवालों को २॥ गाँव तथा जमातों को सवा लाख रुपये प्रति वर्ष मिलते रहने का पट्टा कर दिया। बाद को महाराज माधवसिंह (द्वितीय) ने उसको द्विगुणित करके अढ़ाई लाख कर दिया, जो अब तक मिलता है। और २॥ गाँव निवाईवाले अलग भोगते हैं।

(६)

नागों के युद्ध-कौशल

जिन दिनों नागे लोग युद्ध-भूमि में खड़े होकर सब प्रकार के शस्त्र-संचालन के कौतुककारी खेल दिखाते थे, उन दिनों उनके आतंक की धाक जमी हुई थी। उनके वानरी कृत्यों से सुभट-सेना भी सहम जाती थी। वे लोग नल, नील, अंगद, हनूमान और सुग्रीव जैसे स्वरूप बनाकर शस्त्र-प्रहार के साथ शत्रुओं पर टट पड़ते थे और उछल-कूद के कौशल से हाथी पर बैठे हुए शत्रु का सिर काट लाते थे। युद्धोद्धत नागे इतनी शीघ्रता से काम करते थे, मानो बिजली का आदमी कर रहा हो। उनकी युद्ध-क्रीड़ा अँगरेज़ों ने भी देखी थी।

एक अद्भुत अस्त्र

नागों ने एक अद्भुत प्रकार के अस्त्र का भी आविष्कार किया था। वह लोहे की ३ अंगुल मोटी और ३६ अंगुल लम्बी पोली नली में बारूद के मिश्रण का मसाला भर कर बनाया जाता था। और उसके अग्र-भाग में छुरी-कटारी और तलवार आदि जोड़ कर कर्णरन्ध्र में आग लगा कर शत्रु-सेना पर उसे फेंक देते थे। वह वीर-करनिर्गत 'विलक्षण अस्त्र' तीर की तरह सनसनाता हुआ सेना-समूह में जाकर उछलता-कूदता और शत्रुओं को नीचे-ऊपर तथा आगे-पीछे से काटता-पीटता और हताहत करता हुआ देर में शान्त होता था। उसका नाम बाण था और बनाने आदि की क्रिया प्रच्छन्न थी। उन दिनों ऐसे बाण बहुत बनते थे। किन्तु ५० वर्ष से राज्य ने उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्माण का निषेध कर दिया है। अब वे देखने-मात्र के लिए उदयपुर की जमात में हैं, किन्तु उनका प्रभाव हीन हो गया है।

नागों की वर्तमान अवस्था

पूर्व-काल में नागों ने जो कुछ किया उसका दिग्-दर्शन ऊपर करा दिया गया। अब न वह समय है और न सामर्थ्य, और न सामर्थ्य-प्रकाशन का प्रयोजन है। इस त्रिधा विरक्ति से साधु भी शस्त्र और शास्त्र दोनों के अनुभव और अभ्यास से हीन हो गये हैं। यही कारण है कि जयपुर-राज्य ने भी अब इनकी नियुक्ति तालुक़ों और तहसीलों में कर दी है। वहाँ ये हासिल-उगाही, कर-वसूली, और तहसील-संग्रह का काम करते हैं। कभी किसी गृहस्थ नागे की नागाई मिटाने की ज़रूरत होती है तब नागों की दस्तग भी भेज दी जाती है। दस्तग में १०-२० या सौ-पचास साधु होते हैं।

जमातों की हाज़िरी

प्रत्येक जमात में जितने साधु होते हैं वे सब जमातों में जमा नहीं रहते। आस-पास की बस्तियों में भी बसते हैं और जब कभी प्रयोजन पड़ता है आजाते हैं। कदाचित् अकस्मात् आवश्यकता आजाय तो अन्य आदमियों से भी काम निकाल लेते हैं।

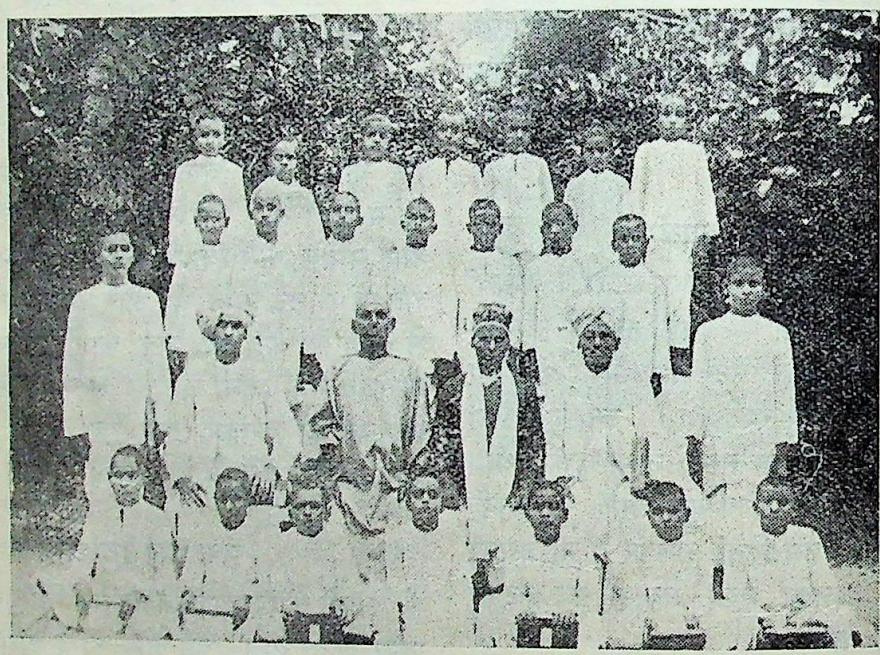

[दादू महाविद्यालय के कार्यकर्ता तथा कुछ छात्र]

वर्ष भर में जमातों की दो बार गणना होती है उसका समय चैत्र और आश्विन का दशहरा है उस समय जितने आदमी अन्यत्र होते हैं, जमातों में आकर जमा हो जाते हैं। और हाज़िरी की संख्या पूर्ति करा के चले जाते हैं।

जमातों का क़ायदा

पूर्वोक्त खाटू-युद्ध के अवसर पर राज्य की ओर से जमातों के नागे साधुओं को हाथी, नित्रयन और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौबत मिली थी। चढ़ाई के अवसर पर या स्वागत-सम्मान के समय उनका ये अब भी उपयोग करते हैं और राजप्रासादों या महाराज के महलों तक संप्राप्त राजचिह्नों को ले जाते हैं। प्रधान द्वार तक इनके बाजे आदि की अब भी मनाही नहीं है।

दादू पंथियों के स्थान

राजस्थान के दादूपंथी मुख्यतया जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और उदयपुर में रहते हैं। इसके सिवा पंजाब के बाँगर और हरियाना ज़िलों में, नाभा, पटियाला, फ़िरोज़पुर और कसूर में तथा गुजरात के अहमदाबाद और सूरत में इनके स्थान हैं। किन्तु अब अधिकांश स्थान स्वामी और संपत्ति से सर्वत्र ही सूने पड़े हैं। विरले मकान ही ऐसे होंगे जहाँ ५-७ साधु एकत्र मिल सकें। साम्पत्तिक स्थिति भी अब इनकी सामान्य है। क्योंकि राज्य से जो कुछ मिलता है उसको ये बराबर बाँट लेते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो कृषि-वाणिज्य से धन बढ़ाते हैं।

विद्या-वृद्धि के आयोजन

उपर्युक्त विवरण से विज्ञ पाठक जान सकते हैं कि दादूपंथियों ने अपनी बढ़ी हुई विद्वत्ता, लोकोत्तर भ्रातृभाव, उत्कृष्ट ग्रंथ-रचना और अद्भुत युद्ध-कौशल आदि के द्वारा गत ३॥ सौ वर्षों में भारत का कितना हित किया है, वात्सल्य-भाव से कितनी शांति फैलाई है और युद्धोद्धत होकर आगत शत्रुओं का कितना संहार किया है। किन्तु जो समय विद्वानों की वृद्धि चाहता है, जिसमें विद्या-विहीन साधु भी साधु नहीं माने जाते, और जिसने विद्या के बल से ही सबको सबल बनाया है उस समय में दादूपंथी साधुओं में विद्या की न्यूनता नितांत अखरती है। इस त्रुटि का मिटाना नागे साधुओं के लिए निःसंदेह श्रेयस्कर और आवश्यक है।

दादू महाविद्यालय

भगवान् संस्थापकों का भला करे, उपर्युक्त त्रुटि मिटाने के लिए इस समय जयपुर का "दादू-महाविद्यालय"—सात्विक रूप की शिक्षा देकर शतशः साधुओं को सुयोग्य बनाने में आदर्श और अग्रसर होरहा है और वह इसी निमित्त या उद्देश से स्थापित किया गया है।

विद्यालय का बीजारोपण

सर्वप्रथम दादू-संप्रदाय के सात्विकी साधु स्वामी मंगलदास ने आचार्यवर स्वामी लक्ष्मीरामजी को आज्ञा पाकर संवत् १९७६ के नरायणे के 'दादू सम्मेलन' में अपने मर्मस्पर्शी चित्ताकर्षक भाषण में 'दादू-विद्यालय' के स्थापन का प्रस्ताव किया था। भगवत्-प्रेरणा से वह पास हो गया और तत्काल ही ३३ हज़ार रुपये का चन्दा लिखा गया।

विद्यालय की स्थापना और उसका फल

उसके पीछे डाक्टर दलगंजनसिंह एम० बी० की प्रबल प्रेरणा से संवत् १९७७ ज्येष्ठ शुक्ल गंगा-दशमी को जयपुर के स्वर्गीय स्वामी रतीरामजी के बाग़ में विद्यालय की स्थापना हुई। १३ छात्र और १४ हज़ार की पूँजी से इस विद्यालय का आरम्भ हुआ। डेढ़ वर्ष तक मासिक सहायताओं से काम चला था। कुछ रुपये भी हो गये। नवजात विद्यालय बाल्यकाल के कष्टों से बच निकला।

स्वामी सेवारामजी की प्रबल प्रेरणा से बहुत से सज्जनों ने आर्थिक सहायता दी और बिड़ला-बांधव दो सौ रुपये देने लगे। इसके तीसरे ही वर्ष ३० छात्र होगये और शिक्षा का कार्य सुचारु रूप से चल निकला। शिक्षा, शिक्षक, सहायता और परिणाम सभी सन्तोष-जनक प्रतीत हुए और जनता का ध्यान भी इधर हुआ।

चौथे वर्ष के अंत में इस विद्यालय के आठ विद्यार्थी 'गवर्नमेंट संस्कृत कालेज काशी' में व्याकरण की प्रथमा परीक्षा में सम्मिलित हुए, जो सबके सब पास हो गये। तब से कई छात्र काशी की परीक्षा में प्रतिवर्ष प्रविष्ट होते हैं। और प्रतिशत ८० से ९० तक पास होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ से अब तक बहुत से छात्र शास्त्री-परीक्षा में पास हुए हैं। बहुत से व्याकरण, वेदान्त, साहित्य और आयुर्वेद के उपाध्याय और शास्त्री हुए हैं। वर्तमान वर्ष में २ छात्र अँगरेज़ी की प्रवेशिका में भी पास हुए हैं।

विद्यालय में भींद, रोहतक, दिल्ली, जोधपुर और बीकानेर तक के विद्यार्थी हैं। पढ़ाने के लिए ४ संस्कृत के अध्यापक हैं, एक हिन्दी का और एक अँगरेज़ी का भी अध्यापक है। उनमें २ अवैतनिक और ४ वैतनिक हैं। पूर्वापेक्षा छात्रों की संख्या अब अर्धशत से अधिक होगई है। सेवा के लिए ६-७ आदमी अलग नियुक्त हैं।

व्याकरण, वेदान्त और साहित्य की शिक्षा आप ही देते हैं।

(२) सेवा-कार्य में स्वामी सेवारामजी अग्रगण्य हैं। आप विरक्त महात्मा हैं। आपकी प्रेरणा से विद्यालय को ३३ हज़ार रुपये की सहायता मिली थी। शारीरिक सहायता में भी आप सर्वोपरि हैं।

(३) जिस स्थान में विद्यालय स्थापित हुआ वह स्थान जयपुर के स्वर्गीय स्वामी रतीरामजी का है। स्वामीजी जाति के वैश्य थे। उनकी व्यवसाय-बुद्धि प्रदीप्त थी। जवाहरात के काम में वे प्रवीण थे। उसी से उनकी सम्पत्ति बढ़ी थी। उनके बाद ४ पीढ़ी चली गई। वर्तमान मोतीरामजी पाँचवें हैं।

(४) स्वनामधन्य वैद्यरत्न स्वामी लक्ष्मीरामजी विद्यालय के प्राण हैं। आपके उद्योग से ही विद्यालय स्थापित हुआ है। उसके कोश में लक्षार्ध की सम्पत्ति आप ही से हुई है। ३ हज़ार देकर अर्थसंग्रह का

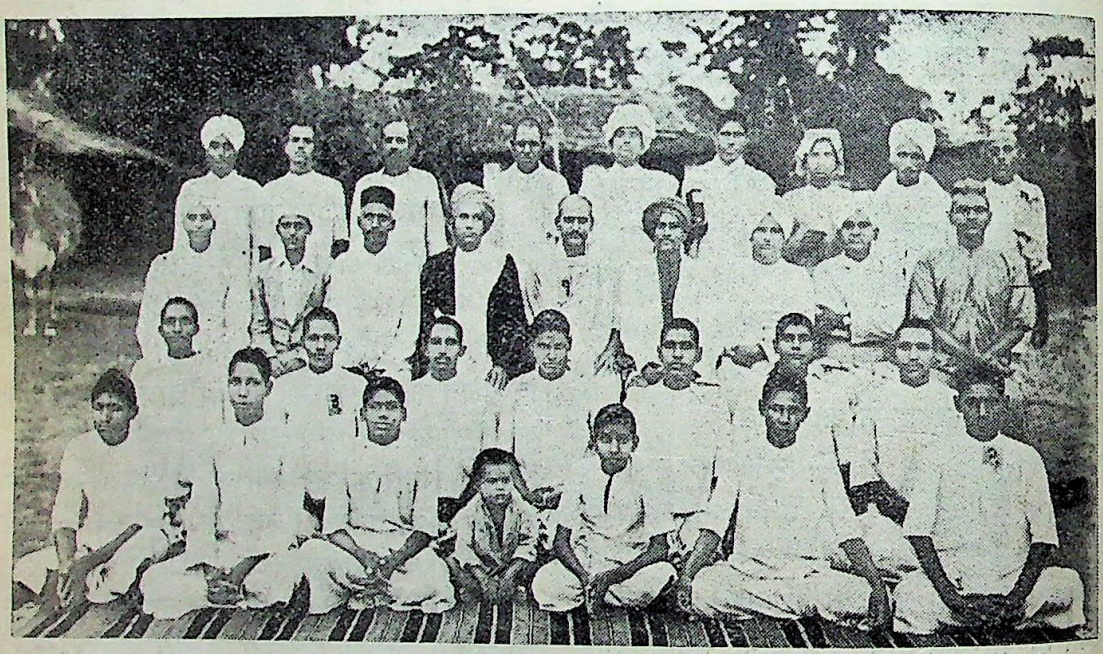

[दादू महाविद्यालय के अध्यापक तथा छात्र]
(१) प्रधानाध्यापक पंडित रामचन्द्र शास्त्री (२) श्री सुरजनदास तथा (३) श्री मोतीराम विद्यार्थी

सेवक-सहायक-संरक्षक

(१) मेरठ के विद्याभूषण पंडित रामचन्द्र शास्त्री 'दादूविद्यालय' के प्रधानाध्यापक हैं। आप अनेक शास्त्रों के ज्ञाता और व्याकरण के निष्णात हैं। यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप ही ने श्रीगणेश किया था। सौ रुपये वार्षिक सदा से देते ही हैं और १० हज़ार देने का अभी वचन दिया है।

(५) स्वामी मंगलदास इस क्षेत्र के परिश्रमी कृषक कहे जा सकते हैं। नराणे के प्रस्ताव-फल से आपने इसका बीजारोपण करवाया, अंकुरावस्था में इसकी सँभाल की, पल्लवित होने पर इसका सेवासलिल से सिंचन किया, और अब देवधान्य देखकर निष्काम (अवैतनिक) उपासना कर रहे हैं। यहाँ तक कि आपके भोजन आदि का ख़र्च भी दूसरे ही देते हैं।

(६) वैद्य कृपारामजी ने ३ वर्ष और महंत चैनसुखजी ने ७ वर्ष सेवा करके विद्यालय को आभारी किया था। अब वे यहाँ नहीं, किन्तु उनकी सेवा-स्मृति मौजूद है। ऐसे सत्पुरुषों के सहयोग से ही दादू-विद्यालय जैसी पारमार्थिक संस्था सुचारु-रूप में चल सकती है। और विद्या-प्रचार के साथ ही संस्थापकों की यश-विस्तृति तथा लोकोपकार कर सकती हैं।

एक विशेषोत्सव

थोड़े दिन पहले विद्यालय का 'विशेषोत्सव' हुआ था। उस अवसर पर जमातों के साधु-महात्माओं के मुखिया, जयपुर के धनोमानी विद्वान् तथा सरदार लोग आये थे। उत्सव २ दिन हुआ था। प्रथम दिन के सभापति जोवनेर के अधिपति ठाकुर महेंद्रसिंहजी थे और दूसरे दिन के सभाध्यक्ष चौमूँ-नरेश श्रीमान् ठाकुरां देवीसिंहजी थे।

इस उत्सव में गत दश वर्षों के कार्य-विवरण से विदित हुआ कि अब तक का अध्ययन-फल अच्छा रहा। किसी एक विषय में २२ छात्रों का प्रविष्ट होना और उनमें २१ का पास होना कम महत्त्व का नहीं।

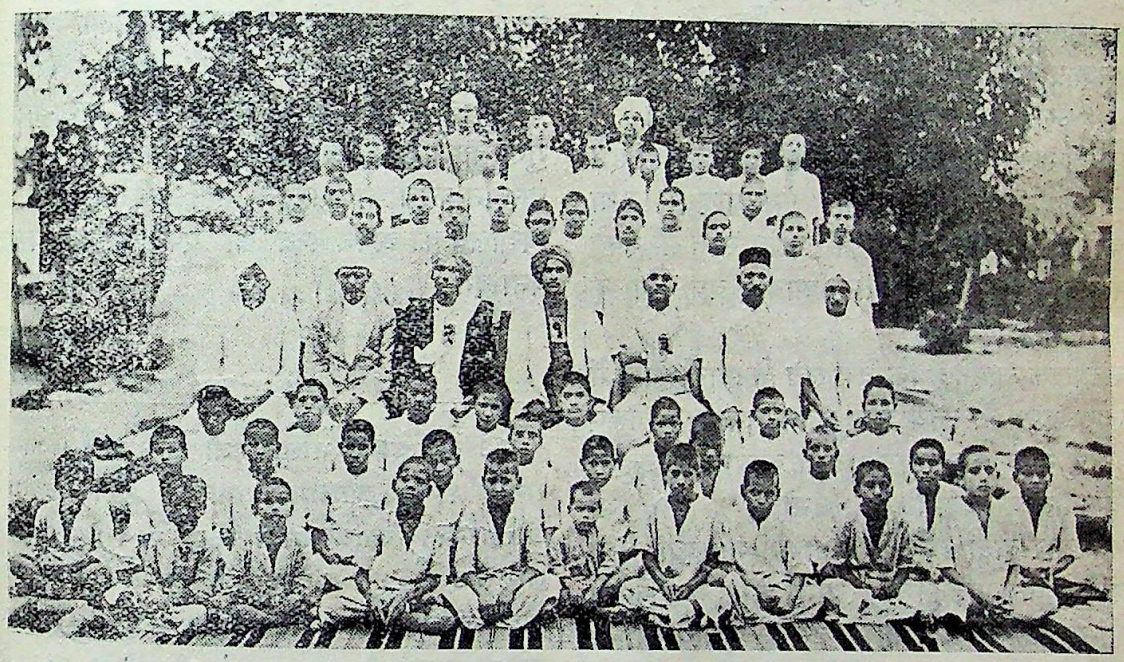

[दादू महाविद्यालय के कार्यकर्ता तथा छात्र]

(१) स्वामी मंगलदास, (२) श्री बालकरामजी, (३) श्री कृपारामजी, (४) श्री हनूमानदास (६ वर्ष उम्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ाई का विधान, छात्रों की योग्यता और उनकी संख्या-वृद्धि से रक्षकों, दर्शकों और समीक्षकों सभी को संतोष हुआ। विशेषकर तीन छात्र अधिक उत्कृष्ट माने गये।

सत्रह वर्ष का सुरजनदास मेधावी छात्र है। वह साहित्य में शास्त्री, अँगरेज़ी में मिडिल, और व्याकरण का भविष्य शास्त्री है। उसको 'लक्ष्मीराम' स्वर्णपदक प्राप्त हुआ था। मोतीराम १८ वर्ष का विद्यार्थी है। वह साहित्य का शास्त्री, व्याकरण का भविष्य शास्त्री और आयुर्वेद का उपाध्याय है। इसको 'रजतपदक' प्राप्त हुआ। और नौ वर्ष का हनूमानदास व्याकरण की प्रथमा में प्रथम उत्तीर्ण हुआ। उसको 'सधन्यवाद रजतपदक' मिला।

परन्तु इस संस्था की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। बालकों के भोजन, वस्त्र और पुस्तकादि में तथा कार्यकर्ताओं के वेतन आदि में क़रीब सात सौ रुपये मासिक ख़र्च होते हैं। और आय ३ वर्ष पूर्व के बराबर नहीं है।

संचालक चाहते हैं कि विद्यालय के स्थायी कोश में एक लाख रुपये हो जायँ और भवन-निर्माण के लिए २० हज़ार रुपये मिल जायँ। इसी कामना से उन्होंने यह विशेषोत्सव किया जिसमें जमातों के साधु भी आये थे और दानों दिन के सभापति महोदयों तथा महामहोपाध्याय पंडित गिरधर शर्मा आदि ने ओजस्वी भाषणों में अपील की थी। उसके फलस्वरूप २७ हज़ार लिखे गये।

क्या ही अच्छा होता कि इस अवसर पर आये हुए सातों जमातों के साधु अपनी दो दो महीने की आय दे देते। उन्होंने इस बात का विचार नहीं किया कि विद्यालय हमारी पैत्रिक संपत्ति है। इसमें पढ़े हुए साधु आगे जाकर आदर पा सकेंगे और वर्तमान के धरना पाशी त्याग देंगे।

स्थायी कोश में लगभग ५० हज़ार रुपये हैं। उक्त २७ हज़ार रुपये चन्दे के लिए स्वामी लक्ष्मीरामजी जयपुर १०,०००), चानसेन जमात ४,०००), लालसोट जमात ३,०००), महंत मनीरामजी कलानोर २,१००); लालदास जी बीकानेर २,०००) और चौमूँ-नरेश श्रीमान् ठाकुरां देवीसिंहजी ने २,०००) के वचन दिये हैं। शेष के लिए जमातों से विशेष आशा थी कि वे उसको निःशेष पूर्ण कर देंगे।*

हमारा निवेदन है कि नागे साधु अपनी पूर्व प्रतिष्ठा और वर्तमान परिस्थिति पर फिर विचार करें और दादू-विद्यालय के अर्थसंकोच को अति शीघ्र मिटा दें। संचालकों से भी हमारा अनुरोध है कि वे साधुओं की सेवा में सुयोग्य सज्जनों का डेपूटेशन भेजकर एक बार फिर प्रार्थना करें और उनको विद्याहीनता के अवगुण और विद्या-वृद्धि के गुण बतलावें। आशा है, ऐसा करने से साधु लोग धनदान करने का संकोच नहीं करेंगे। और इस विद्यालय को अपने पन्थ का एक आदर्श विद्यालय बना देंगे।

—हनूमान शर्मा

---

*उपर्युक्त चंदे में भोलारामजी बड़ू ने ५५१) चेतरामजी रामगढ़ ५०१) कृपारामजी भिवानी ५०१) दयारामजी अलेवा २५१) ख्यालीरामजी फतेपुर २५१) ओंकारदासजी लालसोट २०१) हरदेवदासजी चानसेन २०१) गिधारीदासजी तपसी १०५) बलरामजी वेरी १०१) गोवर्धनदासजी नराणा १०१) धर्मदासजी दतिया १०१) देवादासजी बीकानेर १०१) बालूरामजी मंडलीश्वर १०१) सहजरामजी कानोड़ १०१) शिवकरणदासजी चिड़ावा १०१) जुगलरामजी नराणा १०१) वैद्य श्यामलालजी जयपुर १०१) पु० रामनिवासजी चौमूं १०१) अमरदासजी सीकर १०१) पारांवाई विसाक १००) भगवानदासजी लछमनगढ़ ५१) पं० अर्जुनलालजी चौमूं ५१) हरिनृसिंहजी सांभर ५१) और भानाबाई ने ५०) दिये थे।

(वि० द० वि०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्याचार का परिणाम

पूर्ण सन्नाटा था। एक शब्द भी न सुनाई देता था। मन्दिर का वह विशाल सोने का घंटा आज गम्भीर स्वर में नहीं बज रहा था और नर्त्तकियाँ ही आज सोमनाथ बाबा को प्रसन्न करने के हेतु अपनी अपनी कला दिखला रही थीं। दर्शकगण आते थे और चुपचाप चले जाते थे। पहले की भाँति कोई किसी से हँसता-बोलता न था, कोई मन्त्रोच्चारण न करता था, कोई बम बम न करता था।

मन्दिर की विशाल बारादरी के एक कोने में बैठे पुजारी देवता कुछ और आदमियों से परामर्श कर रहे थे। सब बड़े गम्भीरभाव से बैठे किसी गूढ़ विषय पर विचार कर रहे थे। कुछ समय पश्चात् पुजारी ने पूछा—कहिए सरदार साहब, उद्धार का कोई मार्ग दृष्टि में आया।

सरदार—"महाराज, अपनी परस्थिति इतनी गिरी हुई है कि कोई बात समझ में नहीं आती। भगवान् ही रक्षा करें तो हो सकती है, नहीं तो कोई आशा नहीं।

दूसरा मनुष्य—"सत्य है, जब सुराष्ट्र के सब राजाओं की सम्मिलित सेनायें महमूद को न रोक सकीं तब फिर हम लोग क्या कर सकते हैं?"

पुजारी—"फिर क्या आप लोग सोमनाथ के इस प्राचीन मन्दिर को भी भारत के अन्य मन्दिरों की भाँति भ्रष्ट होने देंगे?"

सरदार—"नहीं, जान रहते ऐसा सम्भव नहीं।"

पुजारी—"धन्य है, धन्य है।"

तीसरा मनुष्य—"परन्तु महाराज! यह तो विचारिए कि ऐसे भक्त कितने हैं जो सोमनाथ को म्लेच्छों के हाथों से बचाने के लिए अपने प्राण विसर्जन करने को तैयार हैं?"

चौथा—"और यदि हों भी तो जब महमूद ने लड़ैते जवानों के छक्के छुड़ा दिये तब हम लोग किस गिनती में हैं।"

पुजारी—"मेरी समझ में एक बात आती है जिससे सम्भव है कि हम लोग अपने इस प्राचीन देवस्थान की रक्षा कर सकें।"

सरदार—"कहिए महाराज, वह कौन-सा उपाय आपकी समझ में आया है।"

पुजारी—"यह तो आप जानते ही हैं कि महमूद कुछ अपना राज्य स्थापित करना नहीं चाहता। उसका ध्येय है धन। मेरी समझ में यदि उसे हम लोग बहुत-सा धन देने का वचन देंगे तो वह मन्दिर पर आक्रमण न करेगा।"

सरदार—"बहुत उत्तम विचार है, किन्तु यदि वह इस पर राज़ी न हुआ।"

पुजारी—"फिर हम अपने अपने प्राणों को सोमनाथ के चरणों पर निछावर कर देंगे।"

सब—"ठीक है, ठीक है। इससे बढ़कर निस्तार का और कोई मार्ग नहीं दिखलाता।"

इसके दूसरे ही दिन महमूद की सेना ने मन्दिर का घेरा डाल दिया और पुजारी से यह कहला भेजा कि यदि वह बिना लड़े हुए मन्दिर ख़ाली कर देगा तो उसके प्राण बच जायँगे, नहीं तो उसकी और उसके साथियों की दुर्दशा ही होगी।

पुजारी ने दूत से कहा—"तुम जाकर अपने मालिक से कहो कि हम अपने एक आदमी को उनसे बातचीत करने को शीघ्र ही भेजते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महमूद का दूत चला गया और कुछ ही क्षण पश्चात् पुजारी ने एक मनुष्य को महमूद के पास भेजा।

महमूद ने उससे पूछा—"कहो, तुम्हारे सरदार ने क्या तय किया है।"

पुजारी का दूत—"पुजारीजी ने कहा है कि यदि आप वापस चले जाने का वचन दें तो वे पचास लाख रुपया देने को तैयार हैं।"

महमूद—"ग़ैर मुमकिन।"

दूत—"अच्छा एक करोड़ दिये जायेंगे।"

महमूद—"नहीं, नहीं, हरगिज़ नहीं।"

दूत ने दो करोड़ देने को कहा, परन्तु महमूद ने वह भी स्वीकार न किया। धीरे धीरे पाँच करोड़ तक कहे गये परन्तु हर बार महमूद ने वही उत्तर दिया—"मैं किसी प्रकार मन्दिर को नहीं छोड़ सकता।"

अन्त में दूत ने कहा—"अच्छा आपके जितने ऊँट हैं सब सोने और चाँदी के सिक्कों से लाद दिये जायँगे और इसके अतिरिक्त ऐसे अमूल्य हीरे और मोती दिये जायँगे जिनके वास्तविक मूल्य का कोई भी अन्दाज़ा नहीं लगा सकता।"

महमूद ने बड़े क्रोध में कहा—"जाकर अपने पुजारी से कह दो कि मैं मूर्ति तोड़नेवाला हूँ, बेचनेवाला नहीं।"

दूत वापस चला गया। पुजारी महमूद का यह उत्तर पाकर हताश हो गया। उसने समस्त मनुष्यों को एकत्र करके कहा—"भ्राताओ, अब प्राण देने का समय आ गया है। बोलो कौन सोमनाथ बाबा के लिए प्राण देने को तैयार है।" सैकड़ों हाथ उठ गये। सरदार उन सब मनुष्यों और अपनी सेना को लेकर युद्ध करने को बाहर निकल आया।

महमूद भी आगे बढ़ा। घमासान युद्ध हुआ। परन्तु हार अन्त में हिन्दुओं की ही हुई। महमूद, विजयी महमूद मन्दिर में घुस गया। जिस सोमनाथ के मन्दिर में मनुष्य नङ्गे पैर जाते थे, वहाँ आज यवन-सैनिक जूते पहने हुए घुस गये और सोमनाथ की विशाल मूर्ति टुकड़े टुकड़े कर दी गई।

महमूद मूर्ति तोड़ कर खड़ा ही हुआ था कि एक यवन सरदार ने आकर कहा—"हुज़ूर, पुजारी भाग गया और मुझे शक है कि उसके पास बहुत से क़ीमती जवाहर हैं।"

महमूद—"अच्छा उसके घर की तलाशी लो।"

सरदार चला गया। शीघ्र ही यवन-सेना ने पुजारी के घर को घेर लिया। यद्यपि नौकरों ने यवन-सरदार को विश्वास दिलाया कि पुजारी घर में नहीं है, परन्तु वह कब माननेवाला था। सैनिकों को आज्ञा दी कि घर में घुस जाओ। तत्काल ही दरवाज़े तोड़ दिये गये और सरदार अपने कुछ विश्वासी सैनिकों को लेकर भीतर गया। घर भर छान डाला गया, परन्तु कुछ हाथ न आया। केवल पुजारी की षोडशवर्षीया कन्या उनके हाथ आई। यवन सरदार ने उससे पूछा—"बता तेरे वालिद कहाँ हैं?"

उस कन्या ने हँस कर कहा—"क्या आप समझते हैं कि यदि मैं जानती भी होऊँगी कि वे कहाँ हैं तो तुमको बता दूँगी।"

सरदार—"अगर न बतायेगी तो मारी जायगी।"

कन्या—"इसकी मुझे चिन्ता नहीं।"

सरदार ने अपने सहकारी ग़फ़ूर को आज्ञा दी कि इसको नग्न करके कोड़े लगाये जायँ। यह आज्ञा पाते ही कुछ सैनिक आगे बढ़े। उनको बढ़ते देखकर कन्या ने उठकर कहा—"ख़बरदार जो हाथ लगाया।" इतना कह कर उसने अपनी कुरती से एक छूरा निकाल लिया। सैनिक ठहर गये। सरदार उनको रुकते देखकर क्रोध से लाल होकर कहने लगा—"नामर्दो एक औरत से डर कर पीछे क़दम रखते तुम्हें शर्म नहीं आती।" इतना कह कर वह आगे बढ़ा। कन्या का हाथ पकड़ने ही वाला था कि उसने समूचा छुरा उसकी छाती में घुसेड़ दिया। यवन सरदार 'मार डाला' कह कर गिर पड़ा। उसको गिरते देख कर ग़फ़ूर और उसके साथियों ने उस अबला पर एक साथ आक्रमण किया और एक क्षण में उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये गये। तत्पश्चात् वे अपने सरदार का मृतक शरीर लेकर चले गये।

इनके जाने के कुछ ही क्षण पश्चात् एक सुन्दर युवक आकर पुजारीजी के द्वार पर खड़ा हो गया। उसकी भव्य मूर्ति देखकर पुजारी के परिचारकों को कुछ धैर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ, फिर भी वे यवनों के इस अत्याचार के दुख को अपने हृदय में न दबा सके। अश्रु की धार उनके नेत्रों से बह चली।

युवक ने कहा—"यह समय रोने का नहीं है। शीघ्र मृणालिनी को लेकर चलो। उसको यहाँ रखना उचित नहीं है।" परिचारक और रो पड़े। उनको अधिक रोता देख कर युवक ने अधीर होकर कहा—"मेरी कही करो। रोने का समय बाद को भी है।"

एक वृद्ध ने सिसकते हुए कहा—"शिशुपाल मृणालिनी अब कहाँ! उसको तो यवनों ने मार डाला।"

युवक का मुख मुर्झा गया। उसने एक हाथ की और अपनी तलवार निकाल कर महमूद की सेना की ओर चला। उसके मुख का तेज द्विगुणित हो गया। उसके क्रोध और दुख को देख कर सब लोग समझ गये कि यह भी अपने प्राण देने जा रहा है। उस वृद्ध ने आकर युवक का हाथ पकड़ लिया और कहा, "शिशु! बदला मूर्खता से नहीं लिया जाता। वहाँ जाकर केवल दो-एक मनुष्यों को मार डालने से कहीं बदला चुक सकता है। बदला ऐसा लो कि ये हृदय-रहित यवन भी तो कुछ शिक्षा पायें।"

युवक ठहर गया। उसने अपनी तलवार म्यान में कर ली और धीरे धीरे घर में चला गया। भीतर जाकर उसने मृणालिनी का रक्तरंजित मस्तक उठाकर हृदय से लगा लिया और कहा—"मृणालिनी, मैं तेरी और सोमनाथ की शपथ खाकर प्रण करता हूँ कि इन यवनों को इस अत्याचार के बदले ऐसा कष्ट दूँगा कि इनको भी याद रहेगी। महमूद ही नहीं, उसके साथी भी मेरी धधकती हुई कोपाग्नि में भस्म होंगे।"

इतना कह कर शिशुपाल न जाने किधर चला गया।

× × × ×

महमूद ग़ज़नी लौटने के विचार में था। ख़ास दरबार में यह प्रश्न उठा कि किस मार्ग से जाना उचित है। महमूद ने कहा—"ग़ज़नी जल्द से जल्द पहुँचना ज़रूरी है, क्योंकि बलवाई अगर जल्द ही न दबाये जायँगे तो बहुत मुमकिन है कि वे ग़ज़नी पर भी हमला करें।"

एक सरदार—"ठीक है। मगर सिन्ध के रास्ते से तो दो महीने से ज़्यादा ही लग जायगा।"

दूसरा सरदार—"हुज़ूर, मैंने सुना है कि राजपूताना होकर जाने से बहुत कम वक़्त लगता है। मगर रास्ता बहुत ख़राब है।"

महमूद—"अगर रास्ते की मुसीबतों का सामना कर भी लिया जाय तो रास्ता दिखलानेवाला कहाँ मिलेगा।"

पहला सरदार—"हुज़ूर इस रास्ते का ख़याल छोड़ दीजिए। वहाँ की मुसीबतों का सामना करना नामुमकिन है। अगर कहीं एक दिन भी पानी न मिला तो सैकड़ों आदमी प्यासों मर जायँगे।"

महमूद—"एक अच्छा राहबर इन सारी मुसीबतों को दूर कर सकता है।"

दरबार में सन्नाटा था। इतने में ग़फ़ूर जो अब तक चुप था, कहने लगा—"हुज़ूर मैं एक ऐसे हिन्दू को जानता हूँ जो राजपूताना के रेगिस्तान से ऐसा ही वाक़िफ़ है जैसा हम लोग ग़ज़नी की सड़कों से। बड़े बड़े मुस्लिम सय्याहों और कारवान सरदारों ने उसकी वफ़ादारी और सचाई की तारीफ़ की है। उसका कहना है कि मैं राजपूताना के रेगिस्तान से आँखों पर पट्टी बाँध कर निकल सकता हूँ। उसके एक एक चप्पे से वह वाक़िफ़ है। वह जानता है कि पानी कहाँ मिल सकता है। अगर हुज़ूर उसको रुपये का लालच देकर रास्ता दिखलाने को राज़ी कर लें तो सारी परेशानी दूर हो सकती है।"

महमूद सरदार की बात सुनकर हर्ष से फूल गया। उसकी दृष्टि के सामने ग़ज़नी का सुन्दर दृश्य नाचने लगा। उसने सरदार से कहा—"ग़फ़ूर जाओ, उस हिन्दू को तलाश करके ले आओ।"

ग़फ़ूर चला गया। लगभग दो घण्टे के पश्चात् वह एक सुन्दर युवक को अपने साथ ले आया। उसकी विशाल सौम्य मूर्ति को देखकर सारा दरबार सन्नाटे में आ गया। उसकी चाल में गर्व था, उसकी आवाज़ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाभिमान की प्रतिध्वनि थी और उसके नेत्रों में अनुपम ज्योति।

महमूद ने कहा—"नौ जवान हिन्दू! क्या तेरी बातों पर यक़ीन किया जाय।"

युवक—"यवन-सरदार! हिन्दू झूठ बोलना जानते ही नहीं।"

इतना कह कर युवक ने अपनी जेब से काग़ज़ का एक पुलिन्दा निकाल कर महमूद के आगे रख दिया। वे बड़े बड़े मुसलमान यात्रियों के प्रशंसा-पत्र थे। उनको देख कर महमूद बोला—"युवक, तुम्हारी वफ़ादारी और सचाई की तारीफ़ तो सभों ने की है। अच्छा अगर तुम मुझे आराम के साथ और जल्द से जल्द रेगिस्तान के बाहर कर दोगे तो इतनी दौलत दूँगा कि मालामाल हो जाओगे।"

युवक—"मैं वही करूँगा जो मेरा कर्तव्य है।"

दूसरे दिन प्रातःकाल महमूद ग़ज़नी की ओर चल दिया। सबसे आगे वही युवक था। सारी सेना उसके पीछे पीछे जा रही थी। उस दिन कोई विशेष बात न हुई। सारा दिन अत्यन्त हर्ष-पूर्वक बीता। हर एक सैनिक अपने अपने राग में मस्त था। हर एक ग़ज़नी पहुँचने की आशा में मग्न था। शाम को एक अतिरमणीक स्थान में सभों ने डेरा डाला। अब वे रेगिस्तान के किनारे पहुँच गये थे।

प्रातःकाल सारी सेना रेगिस्तान में होकर आगे बढ़ने लगी। विचित्र परिवर्तन था। हरे हरे खेत और सुन्दर सुन्दर वृक्ष और लतायें सब विलीन हो गये। उनके स्थान पर दूर तक, दृष्टि की अन्तिम सीमा तक, एक ही दृश्य था और वह था अथाह, अपरिमित बालू का। ऐसा प्रतीत होता था मानो बालू का समुद्र है। कहीं भी हरियाली न थी, कहीं भी पानी न था। सूर्य की प्रखर किरणें बालुका-राशि को ऐसा चमका रही थीं कि उनकी ओर देखना असम्भव था।

परन्तु दिन भर का दुख शाम को दूर हो गया। युवक उनको ऐसे मनोहर स्थान पर ले गया जहाँ पानी का सुन्दर झरना था और हरी हरी घास और वृक्ष भी थे। सभों ने प्रसन्न होकर युवक को धन्यवाद दि[illegible] और फिर तम्बू लगा कर अपने अपने काम में लग गये। कोई तो घास पर लोट रहा था, कोई स्नान कर रहा [illegible] और कोई पड़े पड़े गा ही रहा था।

महमूद ने युवक को बुला भेजा। वह जाकर साम[illegible] खड़ा हो गया। महमूद ने कहा—"हम तुम्हारी [illegible] वफ़ादारी से बहुत ख़ुश हैं। जैसी राहबरी तुमने [illegible] दो दिनों की अगर ऐसा ही करते रहे तो हम तु[illegible] और भी ज़्यादा दौलत देंगे और अगर चाहोगे तो [illegible] उमदा ओहदा भी दिया जायगा।"

युवक का मुँह एक क्षण के लिए लाल हो गया [illegible] फिर उसने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं तो पहले ही [illegible] चुका हूँ कि मैं वही करूँगा जो मेरा कर्तव्य है।"

महमूद—"क्या इसी तरह हर शाम को पानी मिल[illegible] रहेगा।"

युवक—"आशा तो ऐसी ही है।"

महमूद—"तो ज़्यादा पानी भर कर ले चलने [illegible] कोई ज़रूरत नहीं।"

युवक—"जैसा आप उचित समझें, कर सकते हैं।"

दो-तीन दिन तक ऐसा ही रहा। महमूद [illegible] उसके साथी प्रातःकाल चलते और दिन भर की दु[illegible] यात्रा के पश्चात् सायंकाल किसी न किसी सुन्दर र[illegible] णीक स्थान पर जा पहुँचते, जहाँ जानवरों के लिए [illegible] घास और पानी बहुतायत से मिलता था और सैनिक [illegible] दिवस की थकावट दूर करते थे। सभों को यह आशा [illegible] कि कुछ दिनों की ऐसी ही यात्रा के पश्चात् वे पंजाब [illegible] पहुँचेंगे। किन्तु दूसरे ही दिन उनकी आशा पर पानी [illegible] गया। उस दिन रास्ता ऐसा ख़राब था कि जानवरों [illegible] पैर बालू में धँस जाते थे। हवा ऐसी गरम और [illegible] चल रही थी कि सैनिकों का शरीर झुलसा जाता था [illegible] वे अपने नेत्र तक न खोल सकते थे, क्योंकि पलकें [illegible] ही बारीक बालू वायु के तेज़ झोंके के साथ आँखों में [illegible] जाती थी और असहनीय वेदना होती थी, किन्तु [illegible] मरीचिका उनको हतोत्साह नहीं होने देती थी। सायंकाल [illegible] को किसी सुन्दर स्थान में पहुँचने की आशा उनके [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को हरा किये हुए थी। वे दिल खोल कर पानी पी रहे थे, क्योंकि उनको यह शङ्का तो थी ही नहीं कि शाम को पानी न मिलेगा। हर एक यही सोचता था कि यह दुख दो-चार घड़ी का है।

शाम हो गई, किन्तु उनकी आशालता न फूली। कहीं पानी और घास न दिखलाई पड़ी। सभों की दृष्टि उस युवक की ओर थी। अन्त में महमूद ने उससे पूछा—"नौ जवान! क्या आज पानी नहीं मिलेगा?"

युवक—"जी नहीं, पानी यहाँ से अभी बहुत दूर है। मुझे यह आशा थी कि हम लोग उस स्थान तक पहुँच जायँगे, परन्तु ईश्वरीय कोप के कारण न पहुँच सके। यदि वायु इतनी तेज़ न होती तो कदाचित् हम लोग अपने मनोरथ में सफल हो जाते।"

सभों के मुँह मुर्झा गये। सारी आशायें निराशा में परिणत हो गईं। दिन भर के थके सैनिक बेदम होकर गिर पड़े। गरम हवा अब भी चल रही थी। पहले की भांति आज वे उमंगें न थीं, वह हर्ष न था, वह चहल-पहल न थी। चारों ओर सन्नाटा था। सब अपना अपना काम कर रहे थे, परन्तु उचाट मन से। खाना पक रहा था, परन्तु यह चिन्ता लगी थी कि कल के दिन पानी कहाँ से आयेगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल सेना आगे बढ़ी। सभी मुर्झाये हुए थे, परन्तु वह युवक आज भी पिछले दिनों की तरह गा रहा था। उसकी राग-लहरी चारों दिशाओं में गूँज कर वायु में विलीन होने लगी। सैनिक कहते थे—"यह भी अजीब आदमी है। मुसीबत में भी गाने की सूझती है।" कुछ इस पर कहते—"अजी यह तो ऐसी तकलीफ़ों का आदी है।

युवक के सुन्दर मुख पर मन्द मुसकान की रेखा थी, आँखों में असीम हर्ष की चमक। वह सदा की भाँति निर्भीकता-पूर्वक चला जा रहा था। उसकी चाल में औरों के समान डगमगाहट न थी।

आज पिछले दिन से भी अधिक कष्ट का सामना था। उनके पैर घुटनों तक धँस धँस जाते थे और वे बड़ी कठिनाई से बढ़ रहे थे। वायु धीरे धीरे इतनी गरम होने लगी कि सैनिकगण विह्वल हो उठे। उनका सारा शरीर पसीने से तर था, उनकी ज़बान सूख रही थी, उनकी आँखें बाहर निकली पड़ती थीं। उनके मुख से निकल रहा था "पानी, पानी।" परन्तु पानी का वहाँ कहीं पता ही न था।

इसी समय घोर तूफ़ान आया। रेगिस्तान का तूफ़ान कितना प्रलयकारी होता है सो कौन नहीं जानता। बालू का बादल चारों ओर छा गया। किसी को हाथों हाथ न सूझता था। आँखें, कान और नाक सब बालू से भर गये थे। दाँतों के तले बालू पड़ जाने से रोंगटे खड़े हो जाते थे। साँस लेना दुर्लभ था। बहुत से थके हुए सैनिक तो अधमरे होकर भूमि पर गिर पड़े और ऐसे गिरे कि फिर न स्वयम् उठे और न कोई उठानेवाला ही मिला। भला ऐसे विपत्-काल में कौन किसका होता है। सबको अपनी अपनी पड़ी थी।

तिस पर भी युवक ठहरा नहीं। उसने महमूद से कहा—"ठहरने में मौत के सिवा और कुछ भी नहीं है। यही उचित है कि हम लोग जितना शीघ्र हो सके यहाँ से निकल चलें, क्योंकि यह तूफ़ान शाम के पहले रुकने-वाला नहीं।"

सब एक-दूसरे के पीछे चले जा रहे थे। कुछ दूर जाने के पश्चात् युवक सहसा दाहनी ओर घूम गया। आगे के सैनिक तो उसके पीछे चले, परन्तु पीछे वाले चक्कर बचाने की नीयत से सीधे युवक की ओर चल पड़े। कुछ दूर आगे जाने पर वे सहस्रों मनुष्य जो सबसे आगे थे, बालू में धँस गये। केवल उनका धड़ बाहर रह गया और धीरे धीरे वह भी बालू में समाने लगा। ऐसा प्रतीत होता था कि कुछ ही क्षण में वे पूर्णरूप से बालू में धँस कर अपने प्राण त्याग करेंगे।

बहुतों ने उनके बचाने का प्रयत्न किया, परन्तु जो जिसको बचाने गया उसके साथ स्वयम् भी बालू के उस अगाध दलदल में घुस गया। युवक ने यह देखकर चिल्ला कर कहा—"उधर से घूम कर आओ। इस ओर अगाध बालू का दलदल है, जिसमें पड़कर कोई मनुष्य कभी जीवित निकल नहीं सकता।" उसके वचन समाप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी न हुए थे कि वे सब मनुष्य पूर्णरूप से बालू में अन्तर्हित हो गये।

महमूद ने एक गहरी साँस ली और आगे बढ़ गया। अब सारी सेना युवक के पीछे पीछे चलने लगी। कोई एक पग भी इधर-उधर न हटता था। कुछ क्षण पश्चात् आँधी तो दूर हुई, परन्तु फिर भी किसी को शान्ति न मिली। मारे गरमी और प्यास के सभों का बुरा हाल था। सैकड़ों सैनिक पानी-पानी चिल्ला चिल्ला कर अपने प्राण त्याग रहे थे।

साँझ हुई, परन्तु फिर भी पानी का कहीं चिह्न न था। जानवर और मनुष्य सभी बेदम हो रहे थे, परन्तु वह युवक अब भी अपनी मस्तानी तान आलाप रहा था। ऐसा प्रतीत होता था, मानो उसे कोई भय ही नहीं, कुछ दुख ही नहीं, मानो वह लोहे का बना था। उसका मुख कुन्दन सा दमक रहा था, माथे पर बल तक न था।

आज महमूद अपने साथियों की दुर्दशा देखकर विचलित हो उठा। उसने युवक से पूछा—"क्या बात है, जो आज भी हम लोग पानी तक न पहुँच सके।"

युवक ने उत्तर दिया—"आपने तो देखा ही था कि कैसा भयानक तूफ़ान चल रहा था और फिर सैनिकों के दलदल में फँस जाने के कारण भी बड़ा समय नष्ट हुआ। ऐसी दशा में कैसे सम्भव था कि वहाँ तक पहुँच जाते।"

महमूद—"अगर कल भी कहीं ऐसा ही हुआ तो हम लोग बे मौत मरेंगे।"

युवक—"मरना-जीना तो ईश्वराधीन है। मनुष्य का तो कर्तव्य है केवल अपना काम करना।"

सूर्योदय के पश्चात् सैनिक फिर आगे बढ़े। वही दुख फिर सामने आया—वही तूफ़ान, वही गरमी, वही अग्नि-वर्षा। एक क्षण के लिए भी सूरज बादलों की ओट में न होता था। पानी की त्राहि त्राहि चारों ओर मच रही थी। मरा मरा की हृदय-विदारक चीख़ रह रह कर सुनाई दे जाती थी।

मगर युवक आज और दिनों से अधिक प्रसन्न प्रतीत होता था। उसका गान आज अधिक मनोहर था, उसकी चाल अधिक मस्तानी थी। उसके मुँह का तेज बढ़ रहा था। महमूद और उसके साथियों को बड़ा आश्चर्य था कि यह कैसा विचित्र मनुष्य है जो जीवन-मरण के समय भी अपनी तान नहीं बन्द करता। क्या इसको इन आपदाओं की चिन्ता नहीं!

दोपहर के समय महमूद का सबसे बड़ा सरदार और ग़फ़ूर दोनों अपने अपने ऊँटों से गिर पड़े। अत्यन्त गरमी से उनके प्राण निकल रहे थे। महमूद और वह युवक दोनों उनके पास ही खड़े थे।

दोनों ने महमूद की ओर देख कर कहा—"रुख़सत" महमूद के नेत्र भर आये। दोनों ने फिर कहा—"रुख़सत"। इतना कहते कहते उनकी आँखें चढ़ गईं। युवक ने ग़फ़ूर का सिर अपनी जाँघों पर रख लिया और पंखा झलने लगा। ग़फ़ूर ने आँखों से अपनी कृतज्ञता प्रकट की। युवक ने झुक कर मन्द स्वर में कहा—"यवन-सरदार, यह तुझे सोमनाथ के मन्दिर में एक असहाय अबला की हत्या करने का परिणाम मिल रहा है।"

ग़फ़ूर उछल पड़ा और कुछ कहना चाहता था, परन्तु मृत्यु ने इतना समय न दिया।

शाम हो गई, किन्तु पानी फिर भी कहीं दिखाई न दिया। सारी सेना में हलचल मच गई। सैनिकों के सामने मृत्यु का भीषण दृश्य नाचने लगा। वे अपने सहस्रों साथियों को प्यास से तड़फ-तड़फ कर मरता देख चुके थे और अब उन्हें विश्वास था कि उनका भी अन्तकाल अधिक दूर नहीं है।

परन्तु वह युवक अब भी गा रहा था। उसकी आवाज़ में कम्पन न था, उसके मुख पर विषाद के चिह्न न थे। उसके नेत्र मन्द न थे वे हर्ष से चमक रहे थे, उनमें दैवी प्रकाश था।

महमूद ने बड़े क्रोध में युवक को बुला भेजा। युवक निडर रूप से जाकर सामने खड़ा हो गया। महमूद ने कहा—"क्यों, तूने तो कहा था कि आज शाम तक हम लोग ज़रूर ही पानी तक पहुँच जायँगे, मगर उसके ख़िलाफ़ यहाँ तो कोसों तक पानी की बू भी नहीं।"

युवक हँस पड़ा। उसकी हँसी भीषण थी। उसमें पाशविकता की झलक थी। महमूद के क्रोध का ठिकाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। उसने कहा—"बोल सच सच बतला कि तू हम लोगों के साथ फ़रेब तो नहीं कर रहा है।"

युवक फिर हँसा और तत्पश्चात् कहने लगा—महमूद, तू समझता था कि तेरे इस पाशविक अत्याचार का, पवित्र मन्दिरों को इस प्रकार भ्रष्ट करने का बदला तुझसे लेनेवाला कोई है ही नहीं, परन्तु ईश्वर हर एक के अच्छे-बुरे कर्मों का फल तत्काल ही देता है। तूने जो सोमनाथ का मन्दिर भ्रष्ट किया और एक अनाथ अबला को मरवा डाला, यह उसी पाप का परिणाम तुझे मिल रहा है। जिस पुजारी की लड़की मृणालिनी के तेरे अत्याचारी सरदार ग़फ़ूर ने टुकड़े टुकड़े कर दिये थे, देख ले मैं उसी मृणालिनी का भावी पति था। तूने मेरे प्रेम की हरी-भरी लता का नाश किया था, आज मैंने उसका बदला चुका लिया। जिन प्रशंसा-पत्रों को देखकर तूने मुझे अपना रास्ता दिखानेवाला बनाया था वे सब झूठे थे। उस बीहड़ रास्ते से जहाँ सदा तूफ़ान ही चलता रहता है और जहाँ कोसों पानी नहीं, मैंने तुझे लाकर तेरे पापों का तुझे दंड दिया है।"

युवक ने अपनी बात समाप्त भी न की थी कि सैकड़ों तलवारें उसके शरीर में घुस गईं। वह भूमि पर गिर पड़ा, परन्तु उसके मुँह का तेज घटने की जगह और द्विगुणित हो गया। मरते मरते उसके मुख से निकला "सोमनाथ, मृणालिनी" और फिर वह पवित्र आत्मा अनन्त में विलीन हो गई।

—रामेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव

[क्षेपक-रहित असली रामायण]

रामचरितमानस

टीकाकार बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए०

आज तक भारतवर्ष में जितनी रामायण छपीं और आज-कल छप कर बिक रही हैं वे सब नक़ली हैं क्योंकि उनमें कितने ही दोहे-चौपाइयाँ लोगों ने पीछे से लिख कर मिला दिये हैं। हमारे यहाँ की रामायण असली है क्योंकि इस रामायण का पाठ गुसाईंजी के हाथ की लिखी पोथी से मिला कर और काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा के पाँच सभासदों द्वारा मिलकर शोधा गया है। इसके सिवा और भी कितनी ही पुरानी हस्तलिखित प्रामाणिक पुस्तकों से पाठ मिला-मिला कर इसमें गुसाईंजी की रचना रक्खी गई है और क्षेपक आदि कूड़ा करकट अलग कर दिया गया है। मूल चौपाइयों के अक्षर बड़े और सुस्पष्ट हैं। अर्थ बहुत सरल और सुन्दर भाषा में किया गया है। यदि आप तुलसीदासजी की वास्तविक रामायण का रसास्वादन करना चाहते हैं तो इसे अवश्य ख़रीदिए। मोटा चिकना काग़ज़, सुन्दर जिल्द मूल्य केवल ६) रुपये।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत का भविष्य

भारत की वर्तमान समस्या के तीन प्रधान स्वरूप हैं—राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक। यह सत्य है कि ये भारतीय प्रश्न कुछ नये नहीं हैं, सैकड़ों वर्षों के पुराने हैं। तथापि यह भी कम तथ्यात्मक नहीं है कि आज प्रायः प्रत्येक भारतीय इन्हें जिस व्यग्रता से देखता है और सुलझाना चाहता है वह आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व के लोगों में नहीं थी। सम्प्रति सभी की यह उत्कट अभिलाषा है कि राजनैतिक क्षेत्र में भारत स्वाधीनता का अनुभव करे, धार्मिक क्षेत्र में आडंबरहीन पावनता हो तथा समाज में अनावश्यक बाध्य-बंधन न हों ताकि लोग एक दूसरे को भाई-भाई समझें तथा भारतमाता के अभ्युदय के हेतु मिल-जुल कर सहयोग-पूर्वक सतत प्रयत्न करते रहें।

भारत की राजनैतिक स्थिति का भविष्य रूप क्या होगा। यह सबके जानने की बात है। अँगरेज़ी भारत में लोग वर्षों से स्वराज्याधिकारों के लिए आन्दोलन कर रहे थे। फलतः पहले-पहल १९०९ में मारलेमिंटो की योजना के अनुसार भारतीयों को कुछ अधिकार दिये गये। इसके ग्यारह वर्ष पश्चात् फिर १९२० में मांटेगू-चेम्सफ़ोर्ड-सुधार-योजना कार्य में परिणत की गई। पहली योजना से प्रतिनिधि-पूर्ण शासन-प्रणाली का भारतीयों को ज्ञान कराया गया और दूसरी ने उसके ढंग का भी कुछ अंग दिखाया। परन्तु इन योजनाओं से कोई राजनैतिक दल पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं हुआ। अँगरेज़ी सरकार ने समय समय पर लोगों को आश्वासन दिया है कि ब्रिटिश-नीति का ध्येय भारतीयों को उत्तरदायित्व-पूर्ण शासन देना ही है, किंतु जब मुडीमैन कमिटी की "अल्पमतवालों की रिपोर्ट" में कुछ अधिक राजनैतिक सुविधाओं के लिए माँग पेश की गई तब वह ठुकरा दी गई, तथा दो वर्ष बाद अपनी अवधि से साल भर पहले ही सायमन-कमीशन नियुक्त हुआ जिसमें एक भी हिन्दुस्तानी सदस्य नहीं रक्खा गया। यह देखकर कुछ लोगों की रही-सही आशा भी जाती रही और सभी को यह शंका होने लगी की अँगरेज़ जाति भारत पर सदा अपना अधिकार बनाये रखने का प्रयत्न कर रही है। अतएव गरमदलवालों के साथ नरमदलवालों ने भी सायमन-कमीशन का बहिष्कार किया। अब अँगरेज़ी सरकार कुछ चकराई, और सोच-विचार कर भारतीयों को सूचित किया कि भविष्य में दूसरी सुधार-योजना निश्चित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते समय केवल सायमन-कमीशन की ही रिपोर्ट का ध्यान नहीं रक्खा जायगा, अपितु भारत के सम्मानित प्रतिनिधि आमंत्रित किये जायँगे, जो ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधियों से स्वतंत्र रूप से परामर्श करेंगे और उनकी सम्मिलित सिफ़ारिश पर पूरा ध्यान दिया जायगा। इस सूचना से नरमदल-वालों का आश्वासन हो गया और फलस्वरूप वे आज इँग्लेंड में परामर्श कर रहे हैं। पहले ब्रिटिश भारतीयों को स्वराज्य की प्राप्ति में देशी नरेशों से सहयोग पाने की आशा न थी। किंतु उनके भी प्रतिनिधि इँग्लेंड में उपस्थित हैं और ब्रिटिश-भारत के प्रतिनिधियों की माँग का पूर्णरूप से समर्थन कर रहे हैं। इस प्रकार यह पहला अवसर है, जब भारतीय प्रतिनिधि मिल-जुलकर अपने देश में स्वतंत्र रहने के लिए अँगरेज़ सरकार के समक्ष अपनी माँग पेश कर रहे हैं। इस माँग में इतना न्याय, इतना सहयोग तथा इतना बल है कि ब्रिटिश सरकार उसे निस्सन्देह पूरा करेगी। अब तक जो कार्यवाही हुई है वह संतोषजनक है। सेना तथा परराष्ट्र-विभाग तथा कर का कुछ अंश अँगरेज़ों के अधिकार में कुछ दिनों के लिए भले ही रह जाय, किंतु और सभी विषयों का दायित्व हिन्दुस्तानियों को दिया जायगा। शेषांश के लिए कोई अवधि नियत होगी और उस अवधि के बाद भारत को पूर्ण औपनिवेशिक स्वतंत्रता प्राप्त हो जायगी।

अब रही भारतीय सरकार के स्वरूप की बात। उसका निपटारा इस प्रकार होने जा रहा है कि भारत के सभी प्रांत तथा देशी राज्य आंतरिक मामलों में पूर्ण स्वतंत्र रहें और केवल अखिल भारतीय प्रश्नों के संबंध में एक परिषद् के अधीन रहें, जिसमें सभी प्रांतों तथा राज्यों तथा ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि रहें। उस परिषद् का निर्णय सबको मान्य होगा।

इस राजनैतिक भविष्य का धार्मिक भविष्य से भी गहरा संबंध रहेगा। भारत के प्रधान धर्म हिन्दू-धर्म में युग-युगांतर से सुधार होता आ रहा है। उपनिषदों के द्रष्टा ऋषियों से लेकर आधुनिक काल के राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द आदि संत और आचार्यों ने यही प्रयत्न किया है कि भारतीय एक आदर्श धर्म के उपासक रहें, जिसमें विश्व के सभी धर्मों का समुच्चय हो। उन सभी के प्रयत्नों का फल यह दीख रहा है कि जो लोग सुशिक्षित हैं वे समझते हैं कि धर्म नाम की वस्तु हृदय की वस्तु है, बौद्धिक खंडन-मंडन अथवा भौतिक यज्ञ-जाप से वह बहुत दूर रहती है। किन्तु ऐसे सुशिक्षितों की संख्या बहुत कम है। शेष हिन्दू-जनता धर्म से कुछ उदासीन-सी दीखती है। कदाचित् इसका प्रधान कारण यह है कि सामान्य शिक्षा-दीक्षावालों के लिए एक सर्वप्रामाणिक सुबोध धर्म की पोथी नहीं है। यदि समय पाकर हिन्दू-विचारक उसका निर्माण करें तो धर्म का बड़ा प्रसार हो। किसी धर्म को जीवित रखने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि उसके अनुयायी नित्य अपने शास्त्रों का पाठ करें तथा किसी उपासना-पद्धति की साधना करें। इसी को लक्ष्य में रख कर हमारे ऋषियों ने ज्ञानयज्ञ तथा संध्योपासन को नित्य का अत्यंत आवश्यक कर्म कहा है। इस अभ्यास की इस समय बड़ी कमी है। यह दुःख और सन्ताप का विषय है। इस दिशा में अपने अपने विचार-विश्वास के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही महर्षि मालवीय, विश्ववन्द्य टैगोर तथा स्वर्गीय श्रद्धानन्द ने क्रमशः हिन्दू-विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन, विश्वभारती तथा गुरुकुल की स्थापना करके बड़ा ठोस कार्य किया है। ऐसे शिक्षा-केन्द्रों से हिन्दुओं में धार्मिक जीवन की पुनर्जागृति होगी।

पूर्व-काल में मुसलमानों का दृढ़ विश्वास था कि सभी हिन्दू एक दिन मुसलमान बन जायँगे। किन्तु अब वह विश्वास ढीला पड़ रहा है। उनके राजनैतिक आधिपत्य तथा हिन्दुओं की कुछ सामाजिक कुरीतियों ने मुसलमानों की संख्या पहले बढ़ा दी थी। किन्तु अब एक ओर उनका आधिपत्य जाता रहा और दूसरी ओर हिन्दू अपनी खबर लेने लग गये हैं, और इसलिए मुसलिम-संख्या की बाढ़ कुछ रुक गई है। यही हाल ईसाई-धर्म का भी है। उसका भी पहले यहाँ अच्छा प्रचार हुआ, किन्तु अब वह प्रगति नहीं रही। जब भारत में भारतीय सरकार की स्थापना हो जायगी तब सभी धर्मवालों को अपने अनुचित प्रयोगों को त्याग करना पड़ेगा और सभी से सहिष्णुता का व्यवहार करना पड़ेगा। इससे जो धर्म जिस संख्या में आज हैं, कदाचित् उसी के आस-पास बने रहेंगे। किसी एक का अधिक आधिपत्य न हो सकेगा। राजनैतिक सुख के उल्लास में लोग कदाचित् उसकी विशेष चिंता भी न करेंगे।

किन्तु सामाजिक क्षेत्र में यह साम्यावस्था कदाचित् न रहेगी। उसमें बड़े बड़े परिवर्तन होंगे। हिन्दुओं का प्रधान वर्ण-भेद स्वाभाविक है और वह न मिट सकेगा। किन्तु अनेक उपवर्ण अवश्य ही मिट जायँगे। पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार तथा मिलजुल कर राजनैतिक आन्दोलन करने, नाना यातनायें सहने के कारण लोगों में सामाजिक भेदों का भेद शिथिल पड़ते जा रहे हैं। ऊँच-नीच का भेदभाव मिट रहा है तथा सामान्य बंधुत्व की भावना ज़ोर पकड़ती जा रही है। भविष्य में यह अधिकाधिक बढ़ेगी। उस समय बहुत से विषय जो आज धर्म के अंतर्गत समझे जाते हैं, सामाजिक समझे जाने लगेंगे और धर्म का वृत्त जीवन में न्यून होता जायगा। विवाह-बंधन तथा भोजन के नियम धर्म की अधीनता में न रह सकेंगे।

स्त्री-जाति की अवस्था पूर्ण सामाजिक स्वतंत्रता की अवस्था हो जायगी। उसका कारण उनकी शिक्षा की वर्तमान प्रगति है। स्त्री-शिक्षा का दिन दिन प्रचार होता जा रहा है और शिक्षाप्राप्त स्त्री न परदे में रहेगी, न पुरुष की चेरी बन कर। शिक्षा तथा दासता में बड़ा विरोध है। दोनों साथ नहीं रह सकते।

अंत में यह कहा जा सकता है कि भविष्य का भारत सुखी भारत होगा। जीवन के प्रत्येक विभाग में शांत और सुख होगा। हमारा भविष्य बड़ा उज्ज्वल है। शायद हम एक बार फिर जगत् के लिए आदर्श जाति बन जायँ।

—रामप्रसाद पाण्डेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराशा

(१)

आशा की झलक बची थी
मैं भी था पलक बिछाये
उस समय अचानक चुपके
तुम मन-मन्दिर में आये

(२)

मैंने भी तुमको उस क्षण
ऊँचे आसन बैठाया
सब कुछ अर्पण कर डाला
तुमने हँस हँस अपनाया

(३)

अगणित अवसर पर तुमने
थी मदिरा आकर ढाली
अब चले गये क्यों चुपके
ख़ाली रक्खी है प्याली

(४)

यद्यपि था विकट असम्भव
नाता दोनों के तन का
पर आशा विहँस रही थी
था मेल आँख का मन का

(५)

चुन चुन कर कलियाँ तोड़ीं
ख़ाली कर डाली डाली
क्यों व्यर्थ बने थे आकर
इस हृदय बाग़ के माली

(६)

चिन्ता, करुणा, क्रन्दन, से
है शान्ति दूर भग जाती
आशा भी करवट लेकर
सोई वेदना जगाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७)

मैं पिरो रहा हूँ बैठा
अपनी आँसू की लड़ियाँ
है व्यर्थ अनिल में जलती
इच्छाओं की फुलझड़ियाँ

(८)

जब लगन लगेगी सच्ची
जब सच्चा ठाठ ठनेगा
पाषाण हृदय वह तेरा
गल करके सदय बनेगा

(९)

तब तक समझूँगा मैं भी
जीवन अपना है सपना
बस ध्येय यही स्मृति की
सूखी मालायें जपना

—देवशंकर त्रिवेदी

योरप का इतिहास

योरप के इतिहास का अध्ययन करने पर आप रोम, यूनान आदि के उत्थान-पतन, और इँग्लैंड, जर्म्मनी आदि देशों के उलट-फेर से चकित होंगे, साथ ही, क्रमशः योरप के सभी देशों में राजा की निरङ्कुशता का अन्त होते और प्रजा के सम्मिलित और सामूहिक स्वर की प्रभावशालिता देखकर आनन्दित भी होंगे। अतएव आज ही एक पत्र लिखकर प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता और हिन्दी के सुलेखक भाई परमानन्द एम० ए० द्वारा लिखित 'योरप का इतिहास' की एक प्रति मँगा लीजिए। पचासों चित्रों से युक्त एक प्रति का मूल्य केवल ४) चार रुपये हैं। विशेष विवरण विज्ञापन में देखिए।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ल्हासा कैसे पहुँचा ?

तृतीय परिच्छेद

१७

दिसम्बर को हम फर्दापुर से जलगाँव के लिए बैलगाड़ी पर पाडुर तक १० मील आये, फिर २४ मील जलगाँव तक बस में। जलगाँव से मैं तो उसी दिन साँची के लिए रवाना हो गया, किन्तु सूथर साहब ने दूसरे दिन आने का निश्चय किया। सवेरे मैं साँची पहुँच कर उसे देखने गया। कभी ख़याल आता था कि यही स्थान है, जहाँ अशोक के पुत्र महेन्द्रसिंहल में धर्म-प्रचारार्थ हमेशा के लिए प्रस्थान करने से पूर्व कितनेही समय तक रहे थे। यही स्थान है, जहाँ मगध छोड़, बुद्ध का शुद्ध-तम धर्म (स्थविरवाद) शताब्दियों तक रहा। उसी समय तथागत के दो प्रधान शिष्य महान् सारिपुत्र और मौद्गल्यायन की शरीर-अस्थि विशाल सुन्दर स्तूपों में रक्खी गई थी, जो अभी तक यहीं रही थी, और अब ब्रिटिश म्यूज़ियम की शोभा बढ़ा रही है।

चैत्यगिरि के स्तूपों को गद्गद हो देखा। भूपाल राज्य के पुरातत्त्वविभाग के सुन्दर प्रबन्ध को भी देखकर अत्यन्त सन्तोष हुआ। लौटकर स्टेशन आया तब सूथर साहब भी आ गये थे, इसलिए एक बार उन्हें दिखाने के लिए भी जाना पड़ा।

१९ से २६ तारीख़ तक कोंच में अपने एक पुराने मित्र के यहाँ रहना हुआ। दाशार्णों का देश सूखा होने पर भी कितना मधुर है।

अब मुझे शिवरात्रि से पूर्व मध्यदेश के बुद्ध के चरण से परिपूत कितने ही प्रधान स्थानों को देख लेना था। २७ से मैंने फिर बाबा रामउदार की काली कँमली पहनी, एक छोटा सा झोरा और आनन्द की सिंहल पहुँचाई बाल्टी को साथ लिया। २७ को कन्नौज पहुँच गया। बे-घर को घर की क्या फ़िक्र! एक्केवाले से कहा, शहर से बहुत दूर न हो ऐसी बग़ीची में पहुँचा दो। एक छोटी सी बग़ीची मिल भी गई। पुजारीजी ने अकिंचन साधु को उसके लायक़ ही स्थान बतला दिया। खुली जगह थी, दो वर्ष बाद जाड़े से भेंट हुई थी, इसलिए मधुर तो नहीं लगा।

कन्नौज? नया कन्नौज तो अब भी बिना गुलाल का छिड़काव किये ही सुगन्धित हो रहा है। लेकिन मैं तो मुर्दों का भक्त ठहरा। २८ को थोड़ा जलपान कर चला टीलों की ख़ाक छानने। ऐसे तो सारा ही देश असह्य दरिद्रता से पीड़ित हो रहा है, लेकिन प्राचीन नगरों का तो इसमें और भी अभाग्य है। शताब्दियों से उनका पतन आरम्भ हुआ, अब भी नहीं मालूम होता कहाँ तक गिरना है। विशेषकर श्रमजीवियों की दशा अकथनीय है। मैंने चमारों के यहाँ जाकर एक जानकार आदमी को साथ लिया। एक दिन के लिए चार आना उसने काफ़ी समझा, मैंने जो देना है, यह तो पहले ही निश्चय कर लिया था, कहीं वह कुछ और न समझ जाय, इसलिए उसको उसकी ही माँगी मज़दूरी पर तब तक छोड़ दिया।

कन्नौज क्या एक दिन में देखने लायक है? और उसका भी पूरा वर्णन क्या इस लेख में लिखना शक्य है, जिसका मुख्य सम्बन्ध एक दूसरे ही सुदीर्घ वर्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से है। मैं अजयपाल, रौज़ा, टीला मुहल्ला, जामा मस्जिद (=सीता रसोई) बड़ा पीर, क्षेमकलादेवी, मखदूम जहानिया, कालेश्वर महादेव, फूलमती देवी, मकरन्द नगर, तक ही पहुँच सका। हर जगह पुरानी टूटी-फूटी चीज़ों की अधिकता, अर्ध सत्य कहावतों की भरमार, पुरातन सुन्दर किन्तु अधिकतर खंडित मूर्तियाँ, इतिहास-प्रसिद्ध भव्य कान्यकुब्ज की क्षीण छाया प्रदर्शित कर रही थीं। फूलमती देवी के तो आगे-पीछे बुद्ध प्रतिमायें ही अधिक दिखलाई देती हैं।

आदमी को चार आने पैसे दिये, उसने अपने पड़ोसियों से पुराने पैसे* कुछ दिलवाये, उसके लिए भी उन्हें दाम मिला। वहाँ से मैं एक्के के ठहरने की जगह गया। किन्तु मेरे अभाग्य से वहाँ कोई न था। पास में कुछ मुसलमान भद्र जन बैठे थे। उन्होंने देखते ही कहा—आइए शाहजी! कहाँ से तशरीफ़ लाये? मैंने कहा—भाई! दुनिया की ख़ाक छाननेवालों से क्या यह सवाल भी करना होता है?

"जुमा की नमाज़ क्या जामा मस्जिद में अदा की? पान खाइए।"

"शुक्रिया है, पान खाने की आदत नहीं। फ़र्रुख़ाबाद जाना है।"

उन्हें मेरी काली लम्बी जुल्फ़ी देखकर ही यह भ्रम हुआ। भ्रम क्यों? हिन्दू भी तो नास्तिक ही कहते। किसी तरह और सवाल का मौक़ा न देकर वहाँ से चम्पत हुआ। स्टेशन के पास फ़तेहगढ़ के लिए बसें खड़ी मिलीं। बसों और रेल की यहाँ बड़ी लाग-डाँट है। कोई कोई कहते थे, रेल को घाटा भी हो रहा है। अस्तु, पाँच बजे के क़रीब हमने कन्नौज से विदाई ली।

रास्ते में पुनीत पांचाल के हरे खेत, आमों के बग़ीचे, देहाती हाट, फटी धोतियाँ, कृश शरीर, नटखट और भविष्य की आशा ग्रामीण विद्यार्थी-समूह को देखते ठीक समय पर फ़र्रुख़ाबाद पहुँचा। वहाँ से फ़तेहगढ़ को गाड़ी बदली, उसी दिन मोटा स्टेशन पहुँच गया।

रात को स्टेशन ही पर खुली हवा में मोटा स्टेशन की सर्दी की बहार लूटी। सवेरे संकिसा-वसन्तपुर का रास्ता लिया। काली-नदी की नाव ने २९ दिसम्बर को पहले-पहल मुझे ही उतारा। खेतों में भूलते-भटकते पूछते-पाछते ३ मील दूरी तय कर बिसारी देवी के पास पहुँच गये। देखा भारत के भव्य भूत की जीवन्त मूर्ति, सम्राट् अशोक के अमानवीय स्तूपों में से एक के शिखर-हस्ती के पास ही कुछ क्षीण-काय, मलिन-वेष भारत-सन्तानें धूप ले रही हैं। पुष्करगिरि बेचारे ने परिचित की भाँति स्वागत किया। मुँह आदि धोने के बाद प्राचीन अशोक-स्तम्भ को दखल करनेवाली परिचय-रहित बिसारी देवी का दर्शन किया। उन्होंने भोजन बनाने की तैयारी आरम्भ की, और मैं गढ़ संकिसा की ओर चला। पांचालों की पुराने महानगर सांकास्य का ध्वंस भी वैसा ही महान् है। गाँव में अधिकांश मकान पुरानी ईंटों के ही बने हुए हैं। कहते हैं, दूर तक कुआँ खोदते वक़्त कभी कभी लकड़ी के तख़्ते मिलते हैं। क्यों न हो, क़िले, महल, फ़र्श सभी किसी समय लकड़ी के तख़्तों के ही तो होते थे। संकिसा फ़र्रुख़ाबाद ज़िले में है। इसके पास ही सराय-अगहत एटा में है, जहाँ अब भी कितने ही जैन (सरावगी)-परिवार वास करते हैं। कितने ही दिन हुए वहाँ भी मूर्त्तियाँ निकली थीं। संकिसा पुराने नगर के ऊँचे भीटे पर बसा हुआ है। पुष्करगिरि के हाथ का बनाया सुमधुर भोजन ग्रहण कर उसी दिन शाम को तीन ज़िलों का चक्कर लगाकर मैं मोटा (मैनपुरी-ज़िला) पहुँचा।

चतुर्थ परिच्छेद

अब मेरा इरादा कुरुकुल की अन्तिम शिखा 'हारि-चरित वत्सराज' उदयन की राजधानी कौशाम्बी देखने का था। मोटा से भरवारी का टिकटलिया।

*पुराने पैसे कन्नौज के पुराने टीलों पर बरसात के दिनों में बहुत मिला करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

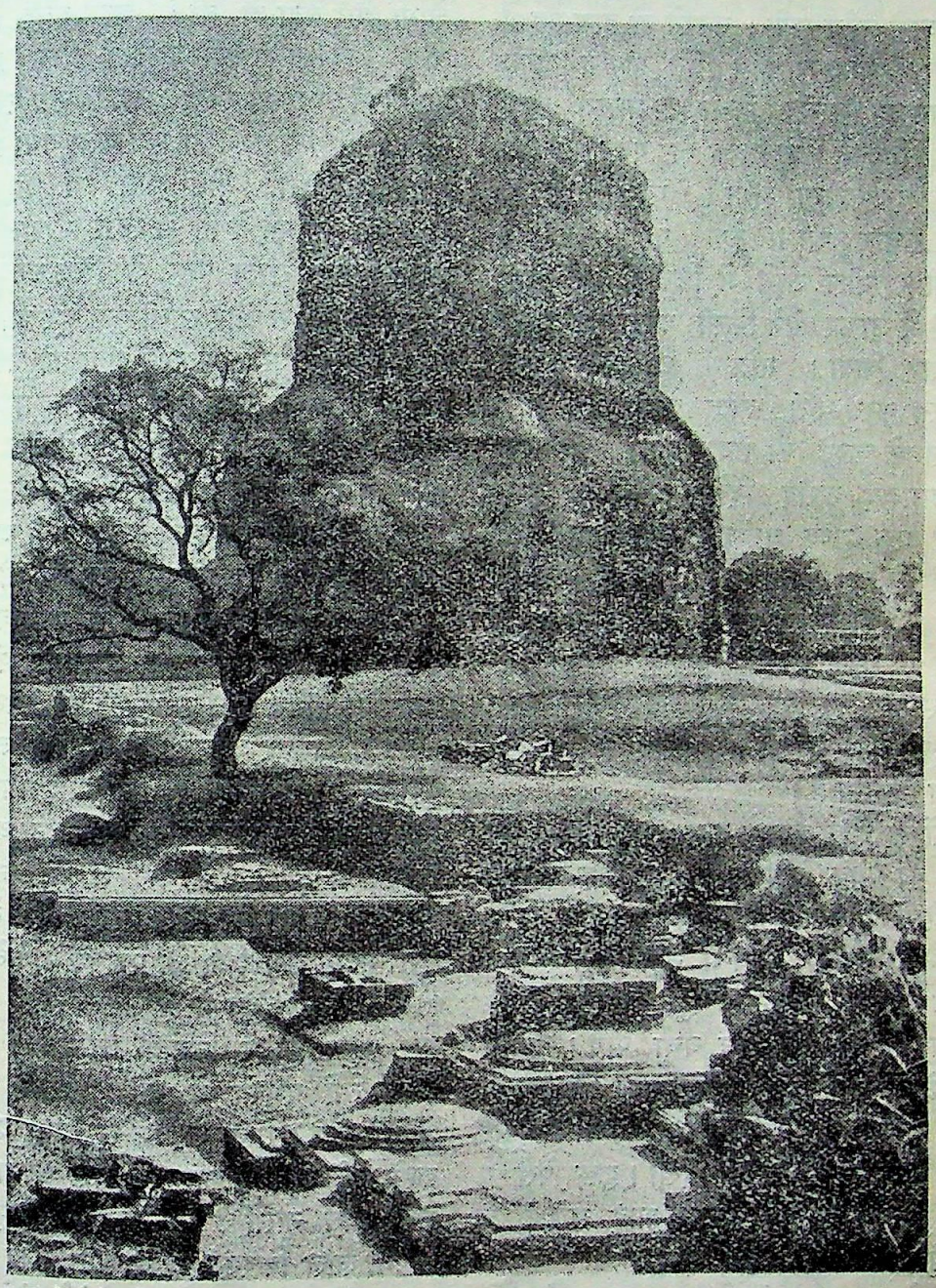

[सारनाथ का धमेख-स्तूप तथा विहार के भग्नावशेष]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकोहाबाद में रात की ट्रेन कुछ देर से मिलती है। सवेरे ही भरवारी पहुँच गया। उतरते ही हाथ-मुँह धो पहले पेट-पूजा करनी शुरू की। मैंने पभूसा जाकर कौशाम्बी आने का निश्चय किया। मालूम हुआ, करारी तक सड़क है। वहाँ तक को एक्का मिलेगा, उसके बाद पैदल जाना होगा। एक्का किया। खाते ही सवार हुआ। तेज़ एक्के को कच्ची सड़क पर भी ९ मील जाने में कितनी देर लगती है। करारी में जाकर मैंने किसी आदमी को साथ लेने का विचार किया। गाँव में अधिकतर मुसलमान निवास करते हैं। बहुत कहने-सुनने से दो मुसलमान लड़के चलने को तैयार हुए। मैंने उनके लिए भी अमरूद ख़रीद दिये। गाँव से बाहर निकलते ही एक मध्य वयस्क पतली-दुबली मूर्ति जिसके चेहरे से ही मुहब्बत टपक रही थी, मिली। ये इस गाँव के पुराने मुसलमान अमीर ख़ानदानों में से एक थे। देखते ही—

"शाह साहब! इस वक़्त कहाँ जा रहे हैं? आज मेरे ग़रीब-ख़ाने पर तशरीफ़ रखिए।" "भई! आज पभूसा पहुँचना है।"

"फ़क़ीरों को आज-कल में क्या फ़र्क़? आज मेरे ग़रीब-ख़ाने को पाक कीजिए। हम बद्-क़िस्मतों को कहाँ ऐसी हस्तियाँ नसीब होती हैं?"

जान-बूझकर तमप् प्रत्यय में नहीं बोल रहे थे। ऐसे प्रेम के बन्धनों से छूटना बहुत मुश्किल है ही, बड़ी मुश्किल से वहाँ से जान बचा पाये। अभी उनके गाँव के खेतों में ही थे। तब तक एक लड़का पाख़ाने का बहाना कर नौ-दो ग्यारह हुआ। दूसरे को भी मैंने इधर-उधर झाँकते देखा। कुछ पैसे दे लौटा दिया। बेचारों ने लौटकर शाह साहब की तारीफ़ का पुल ज़रूर बाँध दिया होगा।

करारी से पभूसा पाँच कोस बतलाते हैं। दिसम्बर का दिन था, एक से अधिक बज चुका था, रास्ता भी अनदेखा, इसलिए जल्दी जल्दी क़दम रखना ही अच्छा मालूम हो रहा था। खेत वैसे चारों ओर हरे-भरे थे, तो भी ताज़ी वर्षा ने उनकी शोभा और बढ़ा दी थी। आगे बबूल के दरख़्तों के नीचे इनी-गिनी भेड़-बकरियाँ लिये कुछ कुमार-कुमारियाँ उन्हें चरा रहे थे। यद्यपि एक एक अंगुल बोई भूमि में भेड़ों के चरने का युग चला गया है, तो भी वे शताब्दियों पुराने गीत कान में अँगुली लगाकर आज भी गा रहे थे। मैं खेतों में रास्ता भूल गया था, इसलिए रास्ता पूछने के लिए उनके पास जाना पड़ा। वहाँ एक और साथी कुछ दूर आगे जानेवाला मिल गया। उसका मकान गंगा की नहर के किनारे बसे आगे के बड़े गाँव में था। ग़रीब मालिक के लिए गाँजा ख़रीदने गया था। हमको तो उस गाँव से कोई काम न था, आज ही पभूसा पहुँचना था। उसने कहा, यदि मालिक ने छुट्टी दे दी तो मैं आपको पभूसा तक पहुँचा दूँगा। आगे नहर पर मैंने थोड़ी देर इन्तिज़ार किया। फिर जान लिया कि मालिक की मर्ज़ी न हुई होगी। मैंने रास्ता पूछा और यह भी कि रास्ते में कहीं कोई पंडित है। मुझे नहर की पटरी पर ही एक पंडितजी का घर बतला दिया गया। जल्दी जल्दी वहाँ पहुँचा। अब दिन बहुत नहीं रह गया था। पभूसा पहुँचने का लोभ अब भी दिल से न हटा था। पंडितजी के बारे में पूछा। वे घर में थे, निकल आये। पीछे एक अपरिचित ग़रीब साधु को देखकर उनके चित्त में भी वही हुआ जो एक अभागे देश के साधन-हीन गृहस्थ के हृदय में हो सकता है। उन्होंने आगे एक बहुत सुन्दर टिकाव बतलाया। मेरी भी अन्तरात्मा पभूसा में थी। आगे चलकर नहर छोड़नी पड़ी। रास्ता खेतों में से होकर था। भूलने पर कहीं कहीं ऊख के कोल्हू के पास जाना पड़ता था। जाते जाते नालों के आरम्भ होने से पूर्व ही सूर्य ने अपनी लाल किरणों को भी हटा लिया। अब रास्ता कुछ अधिक स्पष्ट था, तो भी पोसों नीचे, पोसों ऊपर आनेवाले रास्ते में, जिसमें जहाँ-तहाँ और रास्ते आते जाते दिखाई पड़ते थे, रास्ते का क्या विश्वास था। जल्दी कोई गाँव भी नहीं आता था। ख़याल था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो यमुना के उत्तर वत्सों का समतल देश है। परन्तु यहाँ तो चेदियों (बुंदेलों) की-सी ऊबड़-खाबड़, अनेक नालों से परिपूर्ण भूमि है। आखिर पानी की यमुना ही तो इसे चेदी बनाने में रुकावट डालती है। अब भी आगे बढ़ते जारहे थे, तो भी धीरे धीरे आशा ने साथ छोड़ना आरंभ किया। कहीं दूर भी कोई चिराग़ टिमटिमाता नहीं दिखाई पड़ता था। उसी समय एक तालाब का बाँध दिखलाई पड़ा। पहले पीपल के दरख़्त के नीचे गये। पीछे पास में एक छोटा सा शून्य देवालय दिखाई पड़ा। विचार किया, इतनी रात को अपरिचित गाँव में ऐसी सूरत से जाने की अपेक्षा यहीं शून्य देवालय में विहार करना अच्छा है। बाहर चबूतरा बहुत पुराना हो जाने से बिगड़ गया था। बिजली की मशाल से देखा, टूटी-फूटी अनेक मूर्तियों से जटित वह छोटी मढ़ी दिखाई पड़ी। हमने रात वहाँ बिताने का निश्चय कर लिया। आगे बढ़ने का विचार अभी चित्त से बिदा ही हुआ था कि कुछ दूर पर आदमियों की बात सुनाई दी।

बरगद के पेड़ के नीचे वहाँ दो गाड़ियाँ खड़ी देखीं। मालूम हुआ, कुछ जैन-परिवार दर्शन करने के लिए इन्हीं गाड़ियों पर आये हैं, जो पास ही धर्मशाला में ठहरे हुए हैं। पभूसा पहुँच गये सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। धर्मशाला के कुएँ से पानी भर लाये और गाड़ीवानों के बग़ल में आसन लगा दिया। बेचारों ने धूनी भी लगा दी। सवेरे गाँव से होकर यमुना स्नान को गया। गाँव में कुछ ब्राह्मण-देवालय भी दिखाई पड़े। स्नान से लौट कर पहले विचार हुआ, पहाड़ देखना चाहिए, जिसके लिए इतनी दूर की ख़ाक छानी थी। जब एक पाली-सूत्र में कौशाम्बी के घोषिताराम से आनन्द के 'देवकट सोब्भ' को एक छोटे पर्वत के पास पढ़ा था, तब संकेत होगया था कि यमुना के उत्तर में कहाँ से पहाड़। लेकिन अयुष्यान् आनन्द जब इन सभी तीर्थों को घूमकर सिंहल पहुँचे, तब वह सन्देह जाता रहा। इस एकांत पहाड़ी के दो भाग हैं, उत्तरवाला बड़ा पहाड़ कहा जाता है, जिसके निचले भाग में पद्म-प्रभु का मंदिर है। जैन गृहस्थों ने कहा, साथ चलें तो दरवाज़ा खोलकर दर्शन होगा। मैं थोड़ा आगे हो गया। (पहाड़ी की ऊपरी चट्टानों पर कितनी ही पुरानी छोटी छोटी मूर्तियाँ खुदी हुई हैं, बहुत सी दुर्गम भागों पर हैं। ये मूर्तियाँ अधिकतर जैनी मालूम होती हैं। इससे मालूम होता है, सहस्रों वर्ष तक कौशाम्बी के समृद्धिकाल में यहाँ जैन-साधुजन रहा करते थे। उस समय कौशाम्बी के धनकुबेर यहाँ कितनी ही बार धर्म-श्रवण करने आया करते थे। थोड़ी देर में जैन गृहस्थ भी आगये। उन्होंने स्वयं भी दर्शन किया। मुझे भी बड़े आदर से तीर्थंकर की प्रतिमाओं का दर्शन कराया। बाहर उस समय दो-चार बूँदे पड़ रही थीं। चौड़े गच किये हुए खुले आँगन पर कहीं कहीं पीली बूँद सी कोई चीज़ निकली हुई थी। उन्होंने बड़ी श्रद्धा से कहा—यहाँ अतीतकाल में केशर बरसा करती थी। तब लोग सच्चे थे, अब आदमियों के बेईमान होजाने से यही केसर की भाँति चीज़ निकलती है। मैंने सोचा अतीत कितनी मधुर स्मृति है। भारत का यही तो एक सबसे पुराना जीवित धर्म है, जो अविच्छिन्न रूप से चला आता है। बौद्ध यदि होते तो बराबरी का दावा करते। शंकर, रामानुज,……सभी तो इनके सामने कल के हैं। ढाई हज़ार वष हो गये, कौशाम्बी जन-शून्य, गृहशून्य हो गई, भूमि ने कितने ही मालिक बदले, परन्तु इनके लिए केसर की वर्षा की बात पूरी सच्ची है। उन्होंने भोजन करने का निमंत्रण दिया। कौन उस गाँव में उसे अस्वीकार करता, यदि वह सत्कार बिना भी मिलता। वहाँ से मैं पहाड़ की परिक्रमा करने निकला। फिर ऊपर गया। पुराने स्तूप का ध्वंस है। एक छोटा सा नया स्तूप बना हुआ है। वहाँ से पास में एक ओर कलिन्द-नन्दिनी की मन्द नीली धार देखी, जिसके उस पार अभिमानी शिशुपाल का देश फैला है। प्रद्योत ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

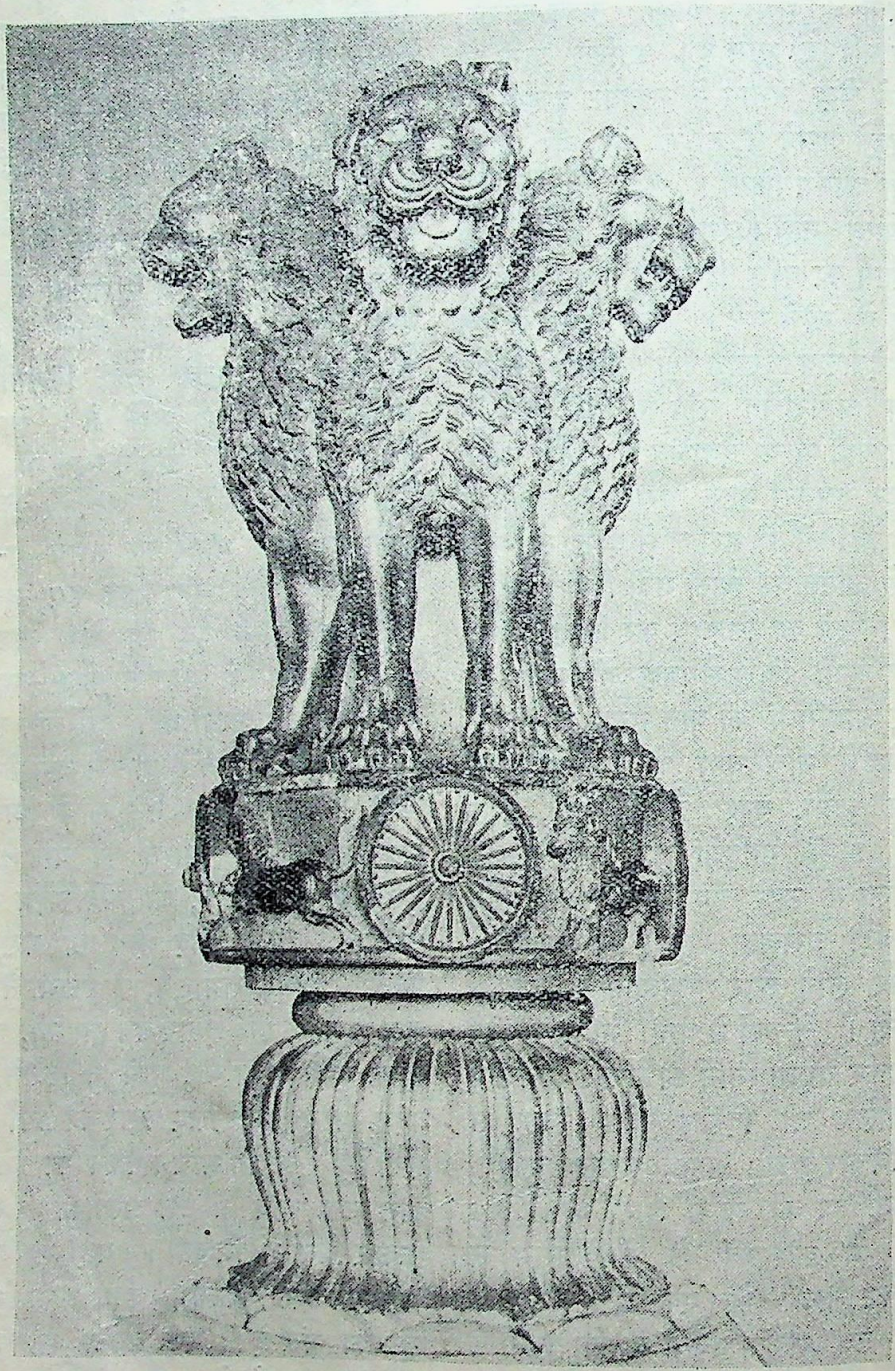

[सारनाथ में पाये गये अशोक-स्तम्भ का ऊपरी भाग]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उधर ही दूर के किसी जंगल में हाथी के शौक़ीन उदयन को पकड़ा होगा। लेकिन वत्स तब भी स्वतंत्र रहा, कौशाम्बी स्वतंत्र, वैभव-सम्पन्न कौशाम्बी वर्षों तक यमुना के उस ओर टकटकी लगाये देखती रही। अन्त में उसने एक द्रुतगामिनी हथिनी पर कुरुओं की अंतिम रेखा को अकेले ही नहीं, प्रचंड अवन्तिराज की त्रिभुवनसुन्दरी कन्या वासवदत्ता के साथ। किन्तु आज की कौशाम्बी को क्या आशा है जब कि उसके बच्चे उसकी क्षीण स्मृति को भी भुला चुके हैं !

'बड़ा पहाड़' से उतर कर दक्षिणवाले 'मुँडिया' पर चढ़े। इसके ऊपर भी भूमि समतल है, बड़ी बड़ी ईंटों का स्तूपावशेष है। यमुना इसकी जड़ से बह रही है। आज यह पहाड़ सूखा है, किन्तु ढाई सहस्र वर्ष पूर्व यहाँ कोई स्वाभाविक जलाशय रहा होगा, जो देव-कट-सोब्भ कहा गया है।

लौटने पर भोजन में अभी थोड़ी देर मालूम हुई। फिर रातवाली मढ़ी की ओर गया। मालूम हुआ, 'प्रभास-क्षेत्र' के ब्राह्मणों ने तालाब का नाम 'देवकुंड' और मढ़ी को 'अनन्दी महारानी' का पुनीत नाम दे रक्खा है। एक परिमाणाधिक शिर, मध्य में जैन ध्यानी मूर्ति, और नीचे दूसरी किसी मूर्ति का खंड बस "अनन्दी माई" बन गई। पूछने पर तरुण ब्राह्मण ने अपने को "मलइयाँ पाँड़े" बतलाया। फिर क्या, ख़ून हमारे शरीर में भी तेज़ी से दौड़ने लगा—

"क्या यहाँ भी मलइयाँ पाँड़े !"

युवक ने कारण बताया। कैसे किसी समय संकृति-वंशी कोई सरवार—मलाँव के ब्राह्मण तरुण ने विवाह-संबन्ध-द्वारा ऊँचा बनने की इच्छावाले किसी दूसरे ब्राह्मण के फेर में पड़ कर हमेशा के लिए जन्मभूमि को छोड़ दिया। उसने चलते चलते जैन-मन्दिर जाने तथा जैन की पकाई रोटी खाने के बारे में भी अपनी टिप्पणी कर दी। संकिसा की भाँति यहाँ के लोग 'सरोका' को न-पानी-चलनेवाला नहीं कहते।

प्रेम और श्रद्धापूर्वक दी हुई मधुर रसोई, उस पर चौबीस घंटे का कड़ाका, फिर वह अमृत से एक जौ भी कैसे नीचे रह सकती है। वे लोग भी कौशाम्बी जाना चाहते थे, किन्तु उन्हें नाव से जाने का प्रबन्ध करना था। साथ में बच्चे और स्त्रियाँ भी पर्याप्त संख्या में थीं, उनको हमारी नज़र से देखना भी न था। इसलिए हम भोजन के बाद अकेले ही चल पड़े। सिंहबल एक कोस पर है। उससे आगे पाली। पाली में पुरानी ईंटों के बने हुए घर बहुत देखने में आते हैं। पाली से थोड़ी ही दूर आगे कोसम है। यहाँ बस्ती के अधिकतर मुसल्मानों की पुरानी लाखौरी ईंटों के बने मकान बतलाते हैं कि कौशाम्बी मुसल्मानों के हाथों आते ही एकदम ध्वस्त नहीं कर दी गई।

कोसम से प्रायः आधा कोस पर गढ़वा है। यही पुरानी कौशाम्बी है। यह यमुना के तट पर है। दूर तक इसके दुर्ग-प्राकार आज भी छोटी पहाड़ियों से दिखाई पड़ते हैं। इसी के बीच में एक ऊँची जगह में जैन-मन्दिर है। मन्दिर के पास ही एक अति सुन्दर खंडित पद्म-प्रभु की प्रतिमा है। जैन-मन्दिर के उत्तर ओर थोड़ी दूर पर विशाल अशोक-स्तम्भ है। यह किस स्थान को सूचित कर रहा है, यह निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता। घोषिताराम, बदरिकाराम आदि बौद्ध-संघ को दिये गये तीनों ही आराम शहर से बाहर थे। संभव है, यह उस स्थान को सूचित करता है, जहाँ पर उदयन की एक रानी बुद्ध की एक श्रद्धालु उपासिका श्यामावती सखियों के सहित अपनी सौत मागन्दी-द्वारा जलवा दी गई थी। श्यामावती बुद्ध के ८० प्रसिद्ध शिष्य-शिष्याओं में है। जलते वक़्त उसका धैर्य भी अपूर्व बतलाया गया है। वह महल में जली थी, इसलिए सम्भव है कि यहाँ ही राजकुल रहा हो।

कन्नौज की भाँति कोसम में भी रास्ता पूछते वक़्त एक मुसलमान सज्जन ने अपने मकान ले जाने का बहुत आग्रह किया था। न मानने पर गढ़वा देख कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आने के लिए ज़ोर दिया। यद्यपि उन्होंने 'शाहजी' नहीं कहा, तो भी मालूम होता है, उनको भी मुझमें मुसलमानीपन ज़ाहिर होता था। यही भ्रम एक और मुसलमान ने उसी शाम को अकिलसराय के क़रीब कुछ दूर पर बकरियों को पत्ता खिलाते हुए, 'सलामालेकुम्' कहकर प्रदर्शित किया था। अँधेरा हो जाने पर अकिलसराय पहुँचे। पक्के कुएँ के पास ही धर्मशाला है, जिसके पास ही मंदिर। मन्दिर के अधिक साफ़ होने से वहीं रात बितानी चाही। मंदिर में आसन लगाकर आरती के बाद ठाकुरजी को दण्डवत् न करने जाना मेरा बड़ा भारी अपराध था। पुजारीजी ने नास्तिक कह ही डाला। लेकिन उसकी चोट लगे, इसका दिल ही कहाँ। इस प्रकार अकिल की सराय में १९२८ समाप्त हो गया।

पहली जनवरी को बस पर चढ़ मनौरी आये। बस में इलाहाबाद को जानेवाले दफ़्तर के बाबू भी थे। इस बार एक हिन्दू बाबू ने भी मुसलमान होने का सन्देह किया। ख़ैर! उनके साथी ने नहीं माना और यही अन्तिम सन्देह था। इस सन्देह की भी बड़ी मौज रही। मैं हैरान होता था—सिवा १५-२० दिन के बढ़े हुए बाल के, और क्या बात देखते हैं, जो लोग मुझे मुसलमान बनाते हैं। उन्हें मालूम ही क्या था कि मैं राम-खुदाई दोनों से योजनों दूर हूँ।

[क्रमशः

—राहुल सांकृत्यायन

ध्रुपद-स्वर-लिपि

का प्रचार बड़े ज़ोरों से हो रहा है। हिन्दी-साहित्य में अपने ढँग का एक अनूठा और सबसे बढ़िया ग्रन्थ है। इसमें १७० से अधिक उच्च कोटि के प्राचीन राग तथा राग-मालाओं की बहुत ही सरल व्याख्या की गई है। तथा भारतीय सङ्गीत के नवसिखियों तथा उच्च श्रेणी के गायकों के लिए व्यावहारिक विधि बतलाई गई है। विवरण के लिए हमारा विज्ञापन देखिए।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़िलस्तीन

[फ़िलस्तीन की समस्या एक प्रकार से अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। और अपने इस रूप में वह धीरे धीरे महत्त्व को भी प्राप्त होती जा रही है। इस लेख में श्रीयुत परिपूर्णानन्दजी ने इसका विस्तार के साथ वर्णन किया है। राजनीति के प्रेमियों को आशा है इससे विशेष मनोरञ्जन होगा।]

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से फ़िलस्तीन का प्रश्न बड़े महत्त्व का है। इस प्रश्न के साथ ब्रिटिश-प्रतिज्ञा-पालन की प्रतिष्ठा का बहुत गहरा सम्बन्ध है। फ़िलस्तीन के सम्बन्ध में मौजूदा ब्रिटिश-मन्त्रि-मण्डल ने जिस नीति का अवलम्बन किया है उसके विषय में हाउस आफ़् कामन्स में २८ आक्टोबर को ब्रिटिश-अनुदार-दल के नेता तथा भूतपूर्व प्रधान मन्त्री मिस्टर बाल्डविन ने कहा था—

"मज़दूर-दल की फ़िलस्तीन-सम्बन्धी नवीन नीति का सबसे बड़ा दोष यह है कि यह हमारी पुरानी नीति को तो बदल ही रही है, साथ ही हमारे वादे को झूठा प्रमाणित कर रही है। पूर्व तथा पश्चिम की ऐसी परिस्थिति के समय जब कि एक नव युग का आरम्भ करने के लिए हम अपनी भारतीय प्रजा का एक सम्मेलन कर रहे हैं, अपने पुराने वादों को, चाहे वे कैसे ही कठिन और अनुचित क्यों न हों, तोड़कर अपनी नीयत में सन्देह उत्पन्न कराना बड़ा ख़तरनाक है।"

फ़िलस्तीन का प्रश्न ऐसा ही है। मिस्टर बाल्डविन के शब्दों में ब्रिटेन के 'पुराने वादों' की सचाई को तोलने की एकमात्र कसौटी है, अतएव इस प्रश्न का यहाँ थोड़ा इतिहास बतलाना सामयिक होगा।

महासमर के समय

गत योरपीय महायुद्ध में तुर्कों के सुलतान ने जर्मनी का साथ दिया। अपने एशियाई साम्राज्य के कारण इँग्लैंड को विशेष चिन्ता हुई और इसी कारण मेसोपोटामिया आदि में जमकर लड़ाई हुई। उस समय का ब्रिटिश-मन्त्रिमण्डल—लायड जार्ज—की लिबरल सरकार बड़ी प्रतिभाशाली और दूरदर्शी थी। उसने तुर्की-साम्राज्य को छिन्न-भिन्न कर डालने का एक कार्यक्रम बनाया। उसके अनुसार यह घोषणा की गई कि ग्रेटब्रिटेन पैलेस्टाइन, आर्मीनिया आदि को तुर्की साम्राज्य की अधीनता से निकाल कर पूर्ण स्वाधीन कर देगा। १९१८ में लायड जार्ज ने यह घोषणा भी की थी कि 'हमारी सम्मति में अरब,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्मीनिया, मेसोपोटामिया और सिरिया को यह हक़ है कि उनकी भिन्न राष्ट्रीय स्थिति स्वीकार की जाय। तुर्कों और अरबों से पूरी तरह कभी नहीं निभी थी। स्वधर्म्मी होने पर भी तुर्क-शासक अरबों को नीची निगाह से देखता था और अरब भी अपने को पराधीन समझता था। ब्रिटेन के इस वादे से अरब लोग स्वाधीनता के स्वप्न देखने लगे। वे लुक-छिपकर तुर्क-सरकार के ख़िलाफ़ षड्यन्त्र करने लगे। सुलतान की जर्जर शक्ति और भी नष्ट हो गई।

महासमर की समाप्ति के कुछ पहले तुर्क-राष्ट्र पद-दलित हो चुका था। तुर्क-सरकार की शक्ति एक-दम नष्ट हो गई थी। रूस के लड़ाई से हाथ खींचने, जर्मनी से सहायता न मिलने तथा अरबों के असन्तोष ने सुलतान को शक्ति-हीन बना दिया। इधर प्रतिभाशाली लायड जार्ज ने तटस्थ राष्ट्रों को भी अपनी ओर मिलाकर उन्हें भी लड़ाई में शामिल करना शुरू कर दिया। जापान लड़ाई में शामिल हो चुका था। अमरीका का शामिल कराना ज़रूरी थी। अमरीका की सरकार धनियों की सरकार है। अपने करोड़ों रुपये से मदद देकर वहाँ के धनी राष्ट्रपतिपद के लिए अपना उम्मेदवार खड़ा करते हैं। अतएव अमरीका के राष्ट्रपति के मित्रों को मिलाना ही सबसे बड़ी कूट-नीति थी। अमरीका में ९० प्रतिशत धनी और प्रभावशाली व्यक्ति यहूदी हैं। इनका वहाँ बड़ा प्रभाव है। इँग्लेंड में भी प्रत्येक राजनैतिक दल को यहूदियों-द्वारा रुपये-पैसे से बड़ी मदद मिलती है। अतएव इँग्लेंड के ख़ाली ख़ज़ाने की सहायता तथा विश्वभर के यहूदियों की सहानुभूति तथा अमरीका का साथ प्राप्त करने के लिए लायड जार्ज के मन्त्रिमण्डल की ओर से लार्ड बालफ़ोर ने यह घोषित किया कि 'सम्राट् की सरकार फ़िलस्तीन में यहूदियों का 'राष्ट्रीय घर' बनाना चाहती है तथा इस प्रकार यहूदियों का एक राष्ट्रीय स्थान बनाने में वह पूरी सहायता देगी।' बालफ़ोर की यह घोषणा संसार की सर्व-प्रसिद्ध घोषणाओं में से है।

बालफ़ोर-घोषणा का महत्त्व

फ़िलस्तीन ईसाई, यहूदी तथा मुसलमान तीनों का प्रसिद्ध धर्म-स्थान है। इस स्थान पर अधिकार पाने के लिए करोड़ों के लगभग जानें गई होंगी। यहीं हज़रत ईसा को सूली दी गई, यहीं हज़रत पैग़म्बर एक चट्टान पर पैर रखकर (वह चट्टान अभी तक सुरक्षित है) स्वर्ग को चले गये थे—यहूदियों के पैग़म्बर अथवा उनसे भी बढ़कर 'यहोवा' का यही स्थान है, यहीं यहोवा का संसार में किसी समय सबसे बड़े मन्दिरों में से एक मन्दिर था। मुसलमानों ने हमला करके उस मन्दिर को तोड़ डाला और उसी की एक दीवार को मिलाकर अपनी बहुत बड़ी मस्जिद बनवाई। वह दीवार अब तक है और हफ़्ते में एक दिन—शुक्रवार के दिन—यहूदी उस मस्जिद में जाकर उस दीवार पर सिर पटक कर रोते हैं और यहोवा से प्रार्थना करते हैं कि तू फिर संसार में आ और तेरा मन्दिर पुनः बन जाय।

मुसलमानों ने यहूदियों को जेरुसेलम तथा फ़िलस्तीन प्रान्त भर से निकाल दिया था। वे विश्व भर में फैल गये। किन्तु यहूदियों और ईसाइयों की लड़ाई देनों है। यहूदियों ने ही हज़रत ईसा को सूली पर चढ़ाया था। अतः जहाँ यहूदी गये, झगड़ा बाँधते गये। यहूदियों पर ईसाई राष्ट्रों ने पर्याप्त अत्याचार किया, पर उनके धन ने सब वैर ठंढा कर दिया। तो भी यहूदियों को यह बात हमेशा खटका करती थी कि उनका कोई घर नहीं है। ब्रिटिश सरकार ने उनका प्यारा 'फ़िलस्तीन' ही उनको देने का वादा कर मानो उन्हें स्वर्ग दे दिया। वे बड़े प्रसन्न हुए। ब्रिटिश-राजनीति काम कर गई। विश्व के अधिकांश यहूदी ब्रिटेन की तरफ़ हो गये। अमरीका भी ब्रिटेन का साथी बन गया।

किन्तु अरब इस बात से बहुत असन्तुष्ट हुए। उनके घर में दूसरे को बसाने का निश्चय कर ब्रिटेन ने यह स्वीकार कर लिया कि वह फ़िलस्तीन को अरबों के हाथ में न छोड़ देगा। किन्तु अरबों की नाराज़गी से हानि होने की सम्भावना जाती रही। अरबों को ब्रिटिश-प्रतिज्ञा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर विश्वास न करने का कोई प्रत्यक्ष व्यावहारिक कारण भी स्पष्ट रूप से नहीं मिला था।

राष्ट्र-परिषद् का फ़र्मान

महासमर समाप्त हो गया। महासमर की प्रतिज्ञाओं का स्मरण दिलाकर अरबों ने अपने अपने देशों की आज़ादी की माँग पेश की। फ़िलस्तीन के अरबों ने भी आन्दोलन शुरू किया, पर वहाँ ब्रिटिश-संरक्षण में यहूदियों का उपनिवेश बसना शुरू हो गया। ब्रिटेन ने अरबों को स्वाधीनता देना इस बुनियाद पर नामंजूर किया कि 'नव युग की विकट परिस्थिति में ये राष्ट्र अपने पैरों पर नहीं खड़े हो सकते...पर इनमें सुशासन और सुव्यवस्था तथा उन्नति का आरम्भ कराना "सभ्यता" मात्र का एक पवित्र कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य का भार राष्ट्र-सङ्घ के नियम-द्वारा निश्चित हो जायगा।" इसी के अनुसार राष्ट्र-सङ्घ ने अपनी २२ वीं धारा में यह स्वीकार किया कि "कुछ वर्ग तुर्क-साम्राज्य के अन्तर्गत ऐसे भी हैं जिनकी उन्नति इतनी हो चुकी है कि वे स्वाधीन राष्ट्र मान लिये जायँ, पर उस समय तक के लिए जब तक वे अपना भार स्वयं वहन न कर सकें, राष्ट्र-सङ्घ अपने फ़र्मानों-द्वारा उन्हें किसी राष्ट्र के अन्तर्गत कर दे।"

इसी समय से यहूदी-अरबी कलह आरम्भ होता है। ब्रिटेन ने वादा कर दिया था कि यहूदियों के कारण अरबों के नागरिकता के अधिकार तथा धार्म्मिक स्वत्वों में कोई बाधा न पहुँचेगी। पर मुसलमान एक क़ाफ़िर क़ौम को पनपते नहीं देखना चाहते थे। दूसरे वे यहूदियों को ही अपनी आज़ादी का अड़ंगा मानते थे। दूसरे यहूदियों की ओर से यह कहा जाने लगा था कि 'फ़िलस्तीन यहूदी राष्ट्र' बनाया जा रहा है। उस समय के पर-राष्ट्र-सचिव मिस्टर विंस्टन चर्चिल ने स्पष्ट शब्दों में यह सूचित कर दिया था कि 'हम फ़िलस्तीन को यहूदियों का राष्ट्र नहीं बनाना चाहते, बल्कि फ़िलस्तीन के राष्ट्र में उनका एक राष्ट्रीय घर बनाना चाहते हैं।' फ़िलस्तीन यहूदियों का उस प्रकार कभी नहीं हो सकता जिस प्रकार इँग्लैंड अँगरेज़ों का है। मिस्टर चर्चिल की यह घोषणा १९२२ की है, उस समय मिस्टर बॉल्डविन प्रधान मन्त्री थे।

भारत-सचिव और भारत

१९१७ में बालफ़ोर-घोषणा प्रकाशित हुई थी। इस सम्बन्ध में भूतपूर्व भारत-सचिव स्वर्गीय मिस्टर मांटेगू के विचार ध्यान देने योग हैं। ११ नवम्बर १९१७ को जब वे भारत पहुँचे उस समय उनको घोषणा का समाचार मिला। अपने विचारों को उन्होंने अपनी प्राइवेट डायरी में लिखा है। वह डायरी अभी हाल में प्रकाशित हुई है। उसमें लिखा है—

"बालफ़ोर ने उस ज़िओनिस्ट (यहूदी) घोषणा की विज्ञप्ति कर ही डाली जिसके विरुद्ध मैं इतना लड़ा था। ऐसी सरकार (मन्त्रिमण्डल) का मेरा सदस्य होना एक आश्चर्यजनक बात है। जो सरकार व्यर्थ में अपने रास्ते से हटती है तथा अपने एक ऐसे सदस्य के कार्यों को घातक धक्का पहुँचाती है जो बहुत कुछ विरोधी होते हुए भी उसके साथ सहयोग करता जा रहा है।.....उन्होंने व्यर्थ एक ऐसे समूह को उत्पन्न करने की घोषणा की है जो वास्तव में नहीं है, व्यर्थ ही मुसलिम भयभीत किये गये हैं। हम मुस्लिम प्रवृत्ति के कारण मुहम्मदअली को नज़र-कैद करें और उधर स्वयं यहूदी प्रवृत्ति को जन्म दें। यह बात मैं इस ज़िन्दगी में न समझ सकूँगा।"

अस्तु, यहूदी-राष्ट्र के इस जन्म का क्या रहस्य था तथा वास्तव में उन्नत विचारवाले अँगरेज़ इससे कितने असन्तुष्ट थे, यह ऊपर के उदाहरण से जाना जा सकता है। तब से अब तक फ़िलस्तीन में कितने ही साम्प्रदायिक कलह हो चुके हैं और अरब स्वाधीनता की माँग ज़ोरों से कर रहे हैं। पर गत छः मास पूर्व दीवार के पीछे यहूदी-अरबी कलह ने जो भयंकर साम्प्रदायिक दंगे का रूप धारण किया, सैकड़ों की जानें गईं, नगर में फ़ौजी क़ानून तक जारी करना पड़ा, फ़िलस्तीन के समुद्र में ब्रिटिश जंगी जहाज़ भेजने पड़े,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीनों तक काफ़ी ख़ून-ख़राबा रहा, उससे यह बात स्पष्ट हो गई कि अरबी-यहूदी झगड़े का फ़ैसला करा डालना होगा। भारत के मुसलमानों की उत्तेजना का भी बहुत बड़ा ख़याल था। उधर न्यू-यार्क बर्लिन आदि नगरों में यहूदियों की ज़बर्दस्त सभाओं में ब्रिटिश-नीति की निन्दा की गई तथा अरबों को उचित दण्ड देने और फ़िलस्तीन को 'यहूदी-गृह' ही स्वीकार करने पर काफ़ी ज़ोर दिया गया। वहाँ के दो अरबी-पत्र बन्द करा दिये गये। यहूदी-पत्रों पर भी क़ानून का प्रतिबन्ध लगाया गया, अतएव स्थिति की भयंकरता इसी से स्पष्ट हो गई। मज़दूर-सरकार ने परिस्थिति की पूरी जाँच के लिए एक कमीशन बैठाया। उस समय लार्ड बालफ़ोर ज़िन्दा थे।

कमीशन ने परिश्रक-पूर्वक काम किया और काफ़ी जाँच-पड़ताल की गई। इस अवधि में दोनों ओर से पर्य्याप्त आन्दोलन भी हो गया था। कमीशन की रिपोर्ट समाचार-पत्रों में पाठकों ने पढ़ी होगी। बालफ़ोर-घोषणा के घोषक लार्ड बालफ़ोर मर चुके थे। रिपोर्ट का सारांश प्रायः सरकार-द्वारा प्रकाशित विज्ञप्ति से बहुत कुछ मिलता-जुलता है, अतः हम उसको यहाँ दुहराना नहीं चाहते। इधर पार्लामेन्ट में विरोधी दल की ओर से विशेष ज़ोर दिया जाने लगा कि फ़िलस्तीन के सम्बन्ध में सरकार क्या नीति रखती है, उसे स्पष्ट कर देना चाहिए। सरकार ने २० आक्टोबर (१९३०) को फ़िलस्तीन के सम्बन्ध में अपनी नीति को स्पष्ट कर दिया।

सरकार की ओर से इस सम्बन्ध में जो कहा गया उसका सारांश इस प्रकार है—"यह साफ़ तौर से समझ लेना चाहिए कि फ़िलस्तीन में यहूदियों के नवीन गुट को बसने की आज्ञा दी तथा भूमि के सम्बन्ध में और उनके दृढ़ और असहिष्णु विचारवाले नेताओं की माँग पूरी की जा सकती है। अरब नेताओं का यह आन्दोलन भी व्यर्थ है कि हम स्वतन्त्र शासन-विधान दे सकेंगे, जिससे यहूदी और ग़ैर-यहूदी दोनों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करने में हम असमर्थ हो जायँ। फ़रमान-द्वारा प्रस्ताविक ज़िम्मेदारियों को महसूस करते हुए इस प्रकार अपने कर्त्तव्य का पालन ही सरकार को अभीष्ट है, जिससे दोनों वर्गों का कल्याण हो सके।" इसके बाद १९२२ की चर्चिल की घोषणा के आधार पर एक व्यवस्थापक सभा की स्थापना की जाने की आशा है, जिसमें हाई-कमिश्नर, दस अफ़सर तथा १२ ग़ैर-सरकारी मेम्बर रहेंगे। फ़िलस्तीन में ब्रिटिश-सरकार की बहुत सेना है और उसका ख़र्च घटाने के लिए बड़ा आन्दोलन हो रहा है, पर मौजूदा स्थिति में ब्रिटिश सरकार ऐसा नहीं कर सकती। सरकार दोनों वर्गों से प्रार्थना करती है कि व्यर्थ की भिन्नता के लिए युद्ध न कर मिलकर काम करें।

इस विज्ञप्ति का कैसा स्वागत हुआ, इस विषय पर विचार करने के पहले हम यहूदी और अरबी स्थिति को स्पष्ट कर देना चाहते हैं। अरब चाहते हैं कि 'हमको पूर्ण शासनाधिकार दिया जाय तथा १९१७ का वादा पूरा किया जाय। हमारे सिर पर व्यर्थ की झंझट लादी गई है कि हम यहूदियों को भी स्थान दें। इस सम्बन्ध में अरब से सभी देशों के मुसलिम सहमत हैं।

यहूदियों का कहना है कि 'हमसे वादा किया गया था कि फ़िलस्तीन यहूदी-राष्ट्र बना दिया जायगा। अब वह वादा तोड़ा जा रहा है। हमने महासमर में तन-मन-धन से जो सहायता दी थी उसका एहसान ठुकराया जा रहा है।'

मज़दूर-सरकार इस बात को स्वीकार करती है कि फ़िलस्तीन अरबों का राज्य था, अतः यहूदियों को बसाना अनुचित था। पर अब उनको बसाकर हर प्रकार से उनको सुविधायें देनी होंगी, पर अरबों का राज्य यहूदियों का राष्ट्र नहीं बनाया जा सकता। इसके साथ ही यहूदियों को नाराज़ भी नहीं करना चाहते तथा अरबों को विशेष अधिकार भी नहीं देना चाहिए। स्वाधीनता का वादा तो जहाँ का तहाँ रह गया। साधारण शासन-सुधार तथा सैनिक व्यय से मुक्ति भी नहीं दी गई है तथा न दी जाने की सम्भावना है।

रिपोर्ट तथा विज्ञप्ति पर आन्दोलन

कमीशन की रिपोर्ट तथा इस सरकारी विज्ञप्ति ने खलबली मचा दी। ब्रिटिश-राजनीति में पर्याप्त प्रभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

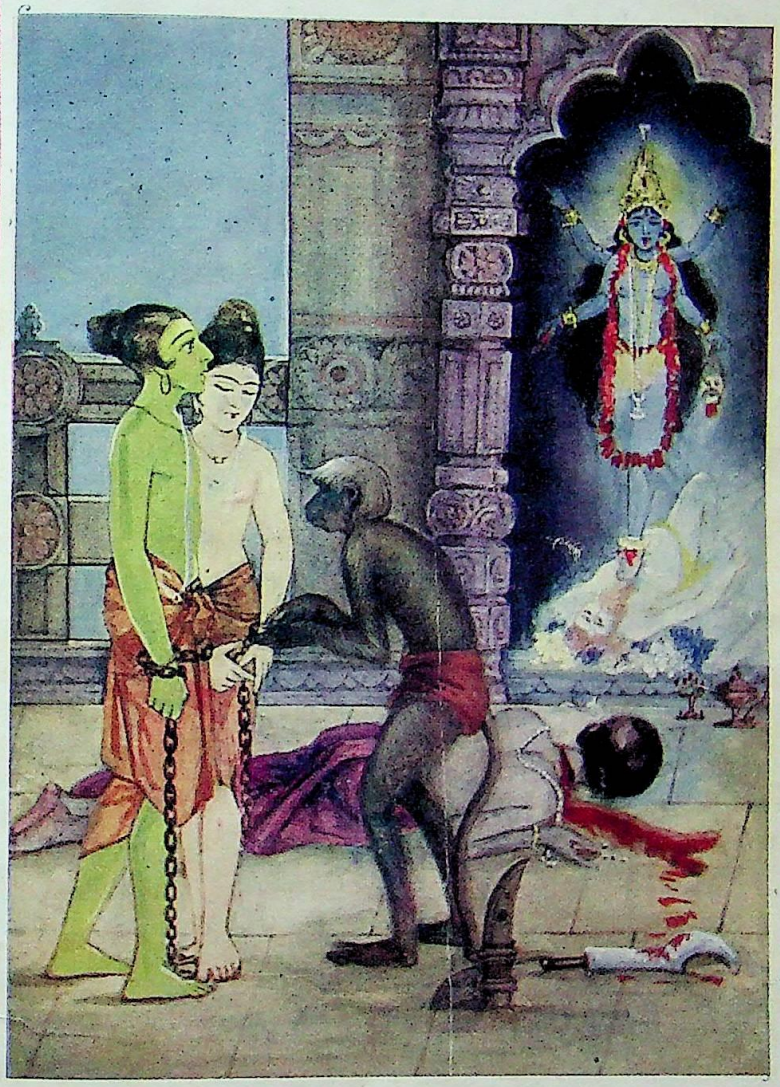

अहिरावण-वध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखनेवाले तथा अखिल-विश्व-यहूदी-आन्दोलन के अध्यक्ष डाक्टर वीज़मैन (Dr. Wiezman) ने फ़ौरन ही त्यागपत्र दे दिया। आपका कहना था कि 'ब्रिटेन के वादे झूठे निकले। मैं आन्दोलन का सभापति रह कर ही क्या करूँगा जब उसके सब फल व्यर्थ निकले।' डाक्टर वीज़मैन का इस्तीफ़ा एक बड़ी बात थी। लन्दन के 'टाइम्स' ने इस पर एक प्रभावशाली अग्रलेख लिखकर दुःख प्रकट किया। इसी पत्र में मिस्टर बाल्डविन, मिस्टर आमेरी तथा सर आस्टिन चैम्बरलेन के सम्मिलित हस्ताक्षर से एक पत्र प्रकाशित हुआ, जिसमें वीज़मैन की तारीफ़ तथा मज़दूर-सरकार की नीति की निन्दा की गई।

अरब भी रिपोर्ट से सन्तुष्ट नहीं थे। पर उनको उतना दुःख भी न था। संसार में यहूदियों का बड़ा ज़ोर है। मुसलमानों का इतना प्रभाव कहाँ? अतः वे बहुत डरते थे कि कहीं यहूदियों की बात पूरी न हो जाय। इसी कारण उन्होंने अपना डेपुटेशन लन्दन भेजा था। उनके भाग्य से मज़दूर-सरकार का अधिकार था।

आज मिस्टर बाल्डविन और उनके समर्थक इस विज्ञप्ति का क्यों विरोध कर रहे हैं? वे यहूदियों के प्रति इतनी सहानुभूति क्यों दिखलाते हैं? इसका कारण यह है कि मज़दूर-दल स्वयं ग़रीबों का दल है, पर अनुदार-दल के पास काफ़ी पैसा है और यह पैसा इँग्लेंड के धनी यहूदियों का है। अनुदार-दल में स्वयं यहूदी अच्छे प्रभावशाली मेंबर हैं, जिनमें लार्ड रीडिंग का नाम विशेष उल्लेखनीय है। अतएव अनुदार-दल यहूदियों को प्रसन्न करना चाहता है, यद्यपि स्वयं १९२२ में मिस्टर बाल्डविन के समय में ही चर्चिल की अत्यावश्यक घोषणा प्रकाशित हुई थी।

गाँधी का अनुकरण

यहूदियों ने ब्रिटेन को दण्ड देने के लिए गांधी-नीति के अवलम्बन का निश्चय किया है। यहूदियों की राष्ट्रीय कौंसिल ने जेरुसलेम में २३ आक्टोबर को अपनी सभा की ८ घण्टे तक की लगातार बैठक में सर्व-सम्मति से निश्चय कर सरकार को सूचित कर दिया है कि 'सरकारी नीति फ़िलस्तीन में यहूदी-गृह की स्थापना में बाधक होगी, अतएव उसके विरोध में वे प्रस्तावित कौंसिल का पूर्ण बहिष्कार करेंगे।

फ़्रेन्च ज़िवोनिस्ट (ज़िओनिस्त यहूदियों के उस वर्ग को कहते हैं जो "फ़िलस्तीन को लौट चलो" आन्दोलन का प्रचारक होता है) समिति के उपाध्यक्ष मिस्टर हिलेल ज़तोपोलस्की (M. Hillel Zratopolski) ने २२ आक्टोबर को ही सूचना प्रकाशित की कि 'महात्मा गाँधी की नीति के अनुसार फ़िलस्तीन में ब्रिटेन का तीव्र बहिष्कार किया जाय। जिस प्रकार जर्मनी ने बेल्जियम की तटस्थता भङ्ग कर घोर पाप किया था, उसी प्रकार ब्रिटेन कर रहा है। अगर फ़िलस्तीन में यहूदियों के लिए दरवाज़ा बन्द कर दिया जायगा तो वे फ़्रेंच झण्डे के नीचे सीरिया में अपना घर बसावेंगे। फ़्रांस में स्थान स्थान पर विरोध में सभायें भी हुईं। फ़्रांस के प्रमुख "रब्बी" और बैङ्करों ने भी विरोधी पत्र प्रकाशित कराये।

अमरीका में इस विज्ञप्ति से लाभ उठाने की उस समुदाय ने पूरी चेष्टा की जो ब्रिटेन का सदैव विरोधी रहा है तथा अमेरिकन-ब्रिटिश मैत्री का सदैव विरोध करता रहा है। न्यूयार्क की एक महती सभा में, ब्रिटेन तथा मज़दूरदल की घोर निन्दा की गई। सभा में प्रमुख वक्ता डाक्टर जॉन हेने होम्ज़ (Dr. John Heyne Holmes) थे, जो ब्रिटेन के विरुद्ध सदैव लेख लिखा करते हैं। आपने जनता से अनुरोध किया कि "फ़िलस्तीन में महात्मा गान्धी की नीति का ज़ोरदार तरीक़े से पालन किया जाय। वहाँ पूर्ण सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हो।

इसी समय एक और समाचार मिला जो अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण था। ब्रिटिश राजनीति में लार्ड मेलचेट का स्थान बड़ा ऊँचा है। आपने "यहूदी एजेन्सी की संयुक्त कौंसिल "तथा" राजनैतिक समिति" से त्यागपत्र दिया है।

दक्षिण-अफ़्रिका से जनरल स्मट्स ने तार देकर सरकार का ध्यान उसके प्रतिज्ञा-भङ्ग की ओर आकर्षित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। जेनरल स्मट्स स्वयं यहूदी हैं, अतः उन्होंने केवल इतना करके ही शान्ति न ली। तीव्र आन्दोलन शुरू कर दिया—इँग्लैंड के राजनीतिज्ञों पर दबाव डालना शुरू किया। इधर पार्लिमेण्ट की बैठक शुरू हो गई थी और मिस्टर बाल्डविन, सर सैमुयेल होर प्रभृति व्यक्तियों ने सरकार को चैन नहीं लेने दिया।

इतने आन्दोलन का प्रभाव अवश्य पड़ेगा। ३ नवम्बर का रायटर का संवाद है कि मज़दूर-सरकार अपनी नीति की विज्ञप्ति को स्पष्ट करने के लिए एक विवेचनात्मक विज्ञप्ति निकालने का निश्चय कर रही है और यह विज्ञप्ति कितनी महत्त्व-पूर्ण होगी, यह लिखना व्यर्थ है।

मज़दूर-उपनिवेश-सचिव लार्ड पैसफ़ील्ड ने अपने बयान में स्पष्टरूप से समझाने की कोशिश की है कि हमने फ़िलस्तीन में एक यहूदी-गृह स्थापित करने का निश्चय किया था न कि एक यहूदी-राज्य। भारत के उप-मंत्री डाक्टर ड्रमण्ड शील्स ने हाउस-आव-कामन्स में इसी बात को दुहराया। इस विषय में तीव्र विरोध के भय से ही २८ आक्टोबर को पार्लामेण्ट की बैठक का प्रारम्भ कराते समय सम्राट् का जो व्याख्यान हुआ था तथा जिसमें गोलमेज़-सम्मेलन का ज़िक्र किया गया था, इस महत्त्वपूर्ण घटना पर लेशमात्र भी "हिदायतें" नहीं दी गई थीं।

अरबों का भय

यहूदियों के इस आन्दोलन तथा सरकार के दूसरी 'विज्ञप्ति' प्रकाशन के संवाद से अरबों का चिन्तित होना स्वाभाविक था। ८ नवम्बर को उनकी कार्य-कारिणी समिति में एक प्रस्ताव पास हुआ, जिसके अनुसार ब्रिटिश-उपनिवेश-विभाग के पास तार भेजकर यह सूचित किया गया—"यहूदियों के आन्दोलन को देखते हुए तथा यह संवाद सुनकर कि सरकार अपनी घोषित नीति में परिवर्तन करना चाहती है, अरब-प्रजा भयभीत हो रही है। सरकारी नीति १९२२ की घोषणा से बिलकुल भिन्न नहीं है। सरकार फ़ौरन एक बयान प्रकाशित कर अरबों का भय दूर कर दे।"

उपनिवेश-विभाग ने अरबों को बहुत कुछ सहायता भी दी है, इसमें कोई सन्देह नहीं। यहूदियों की एक धारा-सी, बिना किसी रुकावट के फ़िलस्तीन में बहती आती थी। अरबों का कहना था कि इस छोटे से प्रान्त में जितनी आबादी को खिलाने की क्षमता हो उतने को ही आने देना चाहिए तथा आबादी को अनुपात से बढ़ा कर 'हमें भूखों न मारना चाहिए'।

उपनिवेश-विभाग ने आगामी ६ मास में १,४८० यहूदियों को फ़िलस्तीन में बसने की आज्ञा दी है तथा फ़िलस्तीन-सरकार इतने ही आज्ञा-पत्र निकालेगी। मज़दूर-सरकार ने एक दूसरी सरकारी विज्ञप्ति निकाल कर सूचित किया है कि "फ़िलस्तीन में यहूदी तथा अरबों—दोनों में घोर बेकारी है, अतएव वहाँ जानेवालों की संख्या नियमित करनी पड़ेगी। इसका यह अर्थ नहीं है कि जाना बन्द किया जा रहा है, केवल भूमि के ख़याल से अनुपात का नियमन-मात्र किया जा रहा है।"

अस्तु, गोलमेज़-सम्मेलन के इस अवसर पर फ़िलस्तीन में मज़दूर-सरकार की नीति की घोषणा बहुत महत्त्व रखती है। गोलमेज़ के बाद शायद मज़दूर-सरकार का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य यही है। गोलमेज़-सम्मेलन में भी फ़िलस्तीन का प्रश्न सामने आयेगा। जिस समय मुसलमानों के धार्मिक स्थानों के संरक्षण तथा नियमन का प्रश्न उठेगा, फ़िलस्तीन की महत्त्वपूर्ण समस्या भी उपस्थित होगी। इसी विषय में भारतीय मुसलिम सदस्यों को सहायता देने तथा प्रश्नों का उत्तर देने के लिए उन्हीं के अनुरोध से फ़िलस्तीन की प्रधान मुस्लिम-समिति के मंत्री श्रीयुत जमालहुसैनी लन्दन गये भी हैं।

ईश्वर सम्पूर्ण समस्याओं को सुलझा दे।

—परिपूर्णानन्द वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल एशिया शिक्षा-सम्मेलन

अखिल एशिया शिक्षा-सम्मेलन का जन्म वास्तव में योरप में हुआ। सन् १९२९ के अप्रेल में काशी तथा अन्य स्थानों से बहुत से गण्य-मान्य शिक्षित और विद्वान् लोग पर्यटन करने के लिए योरप गये थे। वहाँ डेनमार्क के 'इलिसनोर' स्थान में संसार के शिक्षित लोगों का एक महत् अधिवेशन हुआ था। उस अधिवेशन में संसार के तेंतालीस देशों के प्रतिनिधि इकट्ठा हुए थे। वहाँ एशिया-महाद्वीप के भिन्न-भिन्न देशों के प्रतिनिधि भी इकट्ठा हुए थे। वहीं एशिया के प्रतिनिधियों ने अखिल एशिया शिक्षा-सम्मेलन का एक अधिवेशन करना तय किया। यहीं से इस शिक्षा-सम्मेलन का सूत्रपात हुआ। उसके लिए स्थान भारतीविद्या का केन्द्र काशी-नगरी चुनी गई।

सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति की पहली बैठक काशी में हुई। महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय स्वागत-समिति के स्वागताध्यक्ष चुने गये। बाबू गौरीशंकर वकील कोषाध्यक्ष तथा सर राजा मोतीचन्द कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष चुने गये। पण्डित रामनारायण मिश्र स्वागत-समिति के मन्त्री बनाये गये। विलायत से लौटने के बाद पण्डितजी ने सम्मेलन का कार्य करना आरम्भ किया।

सम्मेलन का कार्य यों तो साधारणतया १५ दिसम्बर से ही आरम्भ हो गया था, लेकिन प्रधानतया २६ तारीख से ही आरम्भ हुआ। सम्मेलन का समारोह सेंट्रल हिन्दू-स्कूल में हुआ था। २६ तारीख के २ बजे सम्मेलन के संरक्षक महाराज द्विजराज काशिराज पधारे। उनका स्वागत हुआ।

[शिक्षा-सम्मेलन का उद्घाटन कार्य करके प्रिन्सपल शेषाद्रि के साथ हिज़ हाइनेस महाराज बनारस जा रहे हैं।]

उन्होंने ही सम्मेलन के अधिवेशन का उद्घाटन किया। सम्मेलन के मनोनीत सभापति प्रोफ़ेसर राधाकृष्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुने गये थे। महाराज के मन्त्री श्रीयुत ललितविहारी सेन ने महाराज का लिखा हुआ स्वागत-भाषण पढ़ा। तत्पश्चात् और भी भाषण पढ़े गये। अन्त में प्रोफ़ेसर राधाकृष्णन ने भाषण किया। आपका भाषण बड़ा ही सारगर्भित हुआ। आरम्भ से अन्त तक उसमें अन्तर्राष्ट्रीय भाव भरे थे। अधिवेशन के और दिनों में विभागों की बैठकें हुईं। उनमें लोगों ने अपने

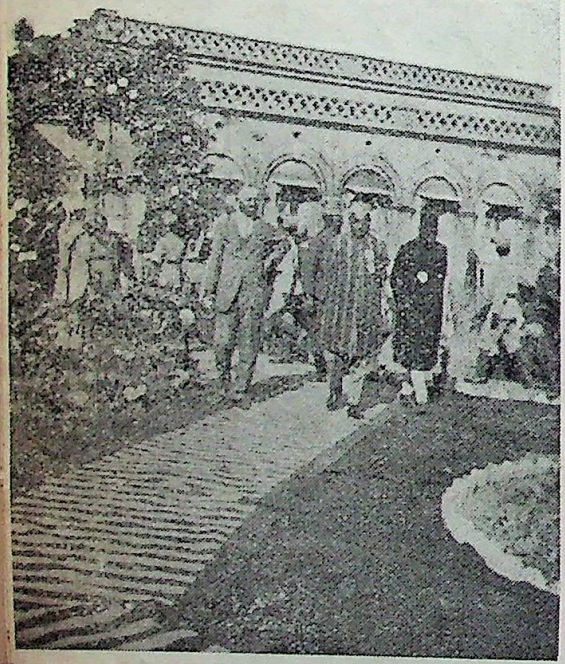

[कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष राजा सर मोतीचन्द सम्मेलन में भाग लेने को आ रहे हैं।]

अपने मत प्रकाशित किये। प्रधानतया सम्मेलन का कार्य सफलतापूर्वक समाप्त हुआ।

सम्मेलन के अधिवेशन में ब्रिटिश-भारत और देशी राज्यों की शिक्षा-संस्थाओं के प्रतिनिधि आये थे। केवल मदरास से २३० प्रतिनिधि आये थे। भारत के सिवा चीन, जापान, लंका के भी प्रतिनिधि आये थे। जो लोग आये उन्होंने सहानुभूति दिखाते हुए अधिवेशन में भाग लिया।

सम्मेलन के साथ साथ अखिल भारतीय शिक्षा-प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था। प्रदर्शनी के अध्यक्ष बनारस-विभाग के शिक्षा-इन्सपेक्टर श्रीयुत कैलाशनाथ बाचूँ चुने गये थे। उन्होंने प्रदर्शनी के आयोजन में जो अदम्य उत्साह से परिश्रम किया उसका परिणाम बहुत अच्छा हुआ। भारत की अनेक शिक्षा-संस्थाओं ने इससे सहयोग किया। मैसूर जैसे सुदूर देशों से अच्छी से अच्छी और एक से एक अनोखी वस्तुएँ आई थीं। दिल्ली के मुसलिम विश्वविद्यालय ने चित्रों का अच्छा संग्रह भेजा था। पुरस्कार देने के लिए निरीक्षक लोग चुने गये थे। शिक्षा-प्रदर्शनी का कार्य सबसे महत्त्वपूर्ण रहा। सहस्रों नर-नारियों ने उसको देख कर अपने नयन तृप्त किये। प्रदर्शनी में विशेषकर शिक्षा-सम्बन्धी वस्तुएँ थीं।

प्रदर्शनी की कई दर्शनीय वस्तुओं के बीच चीन से आये हुए चित्र विशेष उल्लेखनीय हैं। प्रदर्शनी का उद्घाटन संयुक्त-प्रान्त के शिक्षा-विभाग के संचालक (डाइरेक्टर) मिस्टर ए० एच० मैकेंज़ी ने किया। उन्होंने अपने भाषण में एक बड़े मार्के की बात कही। भारतवर्ष के लिए वह बात नई नहीं है, लेकिन इन दिनों हमारे शिक्षक और अभिभावक उसे भूल जरूर गये हैं। मिस्टर मैकेंज़ी ने कहा कि शिक्षकों के लिए सबसे अधिक आवश्यक बात उनका बच्चों के प्रति सद्भाव है और वह सद्भाव क्या है—'बच्चों के लिए सच्चा प्रेम और उस प्रेम से निकली हुई समझदारी।'

प्रदर्शनी के सम्बन्ध में डाक्टर एनीबेसेंट ने कहा—'यह प्रदर्शनी जो अपने ढंग की पहली है, संसार को बता देगी कि एशिया के मानसक्षेत्र में कैसे कैसे अपूर्व रत्न छिपे पड़े हैं। अगर कल के बने पश्चिम के देश इन रत्नों को न ठुकराते तो वे सारे संसार के ज्ञान-भाण्डार को बढ़ा सकते थे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन की बैठक के बाद सम्मेलन के कई विभाग कर दिये गये, जिनमें शारीरिक शिक्षा, प्रारम्भिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, स्त्री-शिक्षा इत्यादि विषयों पर अलग-अलग विचार हुए। देशी कसरत और खेल भी अच्छी तरह दिखाये गये। शान्ति-निकेतन की बालिकाओं की जुजुत्सु कसरत देखने ही योग्य थी।

अधिवेशन के दिनों में अधिवेशन-स्थान पर खासा बाज़ार लग गया था। बड़े बड़े पुस्तक-प्रकाशकों—ब्लैकी एन्ड सन्स, लांगमैन्स, इंडियन प्रेस आदि—की दूकानें लगी थीं। स्काउट सेन्ट्रल हिन्दू-स्कूल ने जलपान-गृह (रेस्टरा) खोल रक्खा था। अधिवेशन-बाज़ार में भी शिक्षा-सम्बन्धी वस्तुओं की ही अधिकता थी। अधिवेशन के प्रबन्धक पण्डित श्रीराम वाजपेयी (चीफ़ आर्गनाइज़िंग स्काउट कमिश्नर) थे। स्वयंसेवकों का प्रबन्ध उन्हीं के हाथ में था। उनका कार्यालय अधिवेशन-स्थान में ही था। मोटरगाड़ियाँ, साइकिल आदि के सुप्रबन्ध करने का तरीक़ा बहुत अच्छा रहा।

अधिवेशन के दिनों में यूनियन बैंक आफ़ एशिया नामक एक बैंक खुला था, जो केवल अस्थायी था। यह प्रतिनिधियों की सुविधा के लिए खोला गया था। एक पोस्टआफ़िस भी खुला था। अस्पताल अलग खुला था। उसके अध्यक्ष श्रीयुत अचलविहारी सेठ थे। कहने का अर्थ यह कि कुल प्रबन्ध बहुत अच्छा रहा।

अधिवेशन के दिनों में आनेवाले प्रतिनिधियों के रहने का अलग अलग प्रबन्ध किया गया था। परन्तु भारत के बाहर से आनेवाले प्रतिनिधियों को बनारस के महाराज ने अपना ख़ास अतिथि बनाकर नदेसर-पैलस में रक्खा था।

अधिवेशन में जिन जिन लोगों ने भाषण किया उनके भाषण बड़े सारगर्भित हुए। वे शिक्षा-पूर्ण थे। चीन के प्रतिनिधि श्रीयुत वागं महोदय ने अपने भाषण में कहा था कि 'पूर्व की सभ्यता के नीचे पाश्चात्य के लोग भी शीघ्र आवेंगे। हमें एक दूसरे से सहानुभूति रखकर अपना कार्य आरंभ कर देना चाहिए।'

[सम्मेलन के सभापति प्रोफ़ेसर एस० राधाकृष्णन]

काशी में इस सम्मेलन के श्रीगणेश के लिए स्थान नियत करने में बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया गया, क्योंकि अपनी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के कारण इस गई-बीती अवस्था में भी भारतवर्ष संसार के देशों में ऊँचा स्थान रखता है और उसी भारत के सुविख्यात एवं लब्धप्रतिष्ठ विद्या-केन्द्रों में काशी एक प्रमुख केन्द्र-स्थान है। इसलिए अखिल एशिया शिक्षा-सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन के लिए काशी से बढ़कर कोई और उपयुक्त स्थान सारे एशिया में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हो सकता था। माना कि काशी अब पहले जैसी नहीं है, लेकिन तो भी वह अपना प्रभाव रखती है। अब भी काशी के वायुमण्डल में मर्मज्ञों को प्राचीन समय के सुमधुर साम-रव का संगीतमय प्रकम्पन जान पड़ता है और अब भी वहाँ के वातावरण में भगवान् बुद्ध के प्रभावशाली व्यक्तित्व का उज्ज्वल आभास तत्त्वदर्शियों को देख पड़ता है।

सम्मेलन का होना उसके उन्नति-शिखर पर फिर से पहुँचने की पहली सीढ़ी नहीं है?

संसार की आधुनिक सभ्यता में पाश्चात्य देशों के सामने एशिया-महाद्वीप पिछड़ा-सा जान पड़ता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जापान और चीन ने इस कलङ्क को बहुत कुछ हटाया है, तो भी इस बात की आवश्यकता है कि सारा एशिया कम से कम

[सम्मेलन में आये हुए २ जापानी प्रतिनिधि]

इन दिनों भी संसार के कई विद्वानों ने कहा है कि काशी का भविष्य अत्यन्त आशामय और उज्ज्वल है। भारत के एक सच्चे सपूत ने काशी में हिन्दू-विश्वविद्यालय स्थापित कर और उसको सर्वाङ्ग-पूर्ण करने के लिए अपनी सारी शक्तियाँ समर्पित कर संसार भर के पक्षपात-रहित ज्ञानियों और मनीषियों के हृदय में यह आशा जगा दी है कि काशी एक बार फिर अपनी प्राचीन श्रेष्ठता को प्राप्त करेगी। कौन कह सकता है कि इस बार काशी में प्रथम एशिया शिक्षा-शिक्षा जैसे महत्त्व-पूर्ण विषय को लेकर एक जगह इकट्ठा हो, अपनी विशेष कठिनाइयों पर विचार कर उनको हल करने की चेष्टा करे, अपने विशेष गुणों को सुपुष्ट करे और उनको संसार के सामने रखकर यह सिद्ध कर दे कि हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति और हमारी संस्थायें संसार के किसी भी महाद्वीप की सभ्यता से कम नहीं हैं। एशिया के लिए ऐसा कर सकना कोई कठिन बात नहीं है। उसके कुछ देशों का प्राचीन इतिहास और गौरव,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति की ओर से प्राप्त कनेक सुविधायें और वर्तमान काल की चेष्टायें एशिया को फिर भी गौरवान्वित कर सकती हैं। लेकिन इसके लिए उसके विविध विद्वानों और वैज्ञानिकों को, समाज-सुधारकों और राजनीतिज्ञों को, स्त्री और पुरुषों को प्रतिवर्ष उसी तरह एकत्र होना चाहिए, जिस तरह वे इस बार शिक्षा के विषय को लेकर काशी में एकत्र हुए थे। इस दृष्टि से एशिया का यह पहला सम्मेलन बहुत ही महत्त्व-पूर्ण हुआ, क्योंकि इसने एशिया के अन्तर्गत विविध देशों के प्रतिनिधियों को एक ही विचार-मञ्च पर इकट्ठा होने का अवसर दिया। कहा जा सकता है कि दूसरे दूसरे देशों के प्रतिनिधि काफ़ी संख्या में नहीं आये या प्रबन्ध में कुछ त्रुटियाँ रह गई थीं, लेकिन इस तरह की पहली चेष्टा और भारत की वर्तमान अवस्था को देखते हुए जो कुछ भी हो सका वह अत्यन्त प्रशंसनीय है और जितने भी प्रतिनिधि आये बहुत आये। आशा है, आनेवाले दिनों में यह सम्मेलन, जिसका प्रारम्भ काशी में किया गया है, और भी सफल होगा और इसी तरह की और भी संस्थायें चल निकलेंगी, जिनके द्वारा अखिल एशिया अपनी कठिन समस्याओं को हल कर संसार में अपना सिर ऊँचा कर सकेगा।

एशिया की शिक्षा-सम्बन्धी सबसे कठिन समस्या क्या है? प्रिन्सपल शेषाद्रि ने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुआ इस विषय पर प्रकाश डाला था। उन्होंने भारतवर्ष के बारे में कहा कि यहाँ की सबसे कठिन समस्या साधारण जन-समुदाय की निरक्षरता है। एशिया-महाद्वीप का एक बहुत बड़ा अङ्ग भारत है, इसलिए कहा जा सकता है कि भारत की समस्या किसी अंश में सारे एशिया की समस्या है। प्रिन्सपल शेषाद्रि ने कहा कि पाँच वर्ष के बच्चों को छोड़ कर यहाँ के फ़ी सदी सिर्फ़ १४ मर्द और दो औरतें पढ़ी-लिखी हैं। अगर स्कूल में पढ़नेवाले लड़के-लड़कियों की संख्या भी सन्तोषजनक होती तो आशा की जा सकती थी कि कुछ वर्षों के बाद यहाँ के पढ़े-लिखे लोगों की संख्या काफ़ी बढ़

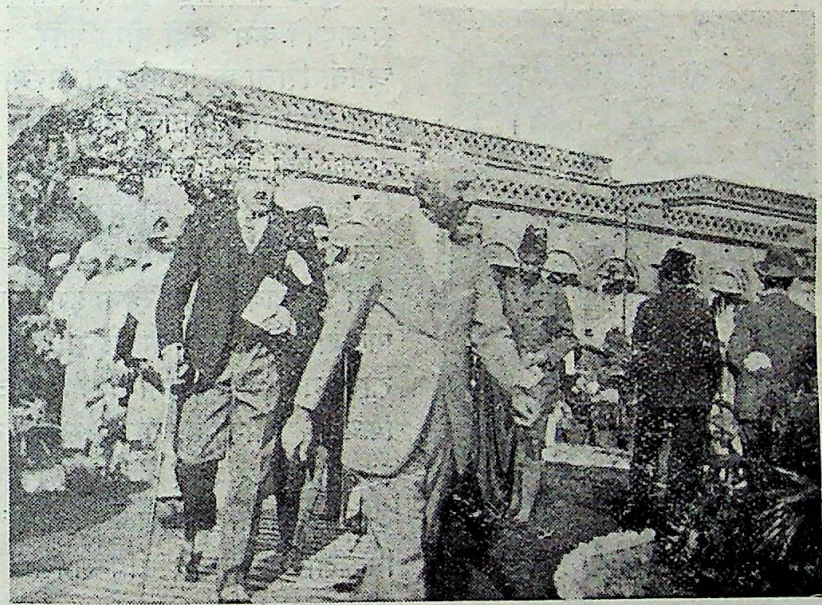

[अलीगढ़-यूनीवर्सिटी के वाइस चैंसलर डाक्टर एस० रास मसऊद सम्मेलन में आ रहे हैं]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायगी। लेकिन वह भी सन्तोष-जनक नहीं है। जितने लड़के अभी स्कूलों में पढ़ रहे हैं उनसे कम से कम दुगुनी संख्या को पढ़ना चाहिए और लड़कियों की संख्या तो कम से कम सातगुनी अधिक होनी चाहिए—तब कहीं भविष्य के सन्तोषजनक होने की सम्भावना हो सकती है। प्रिन्सपल शेषाद्रि

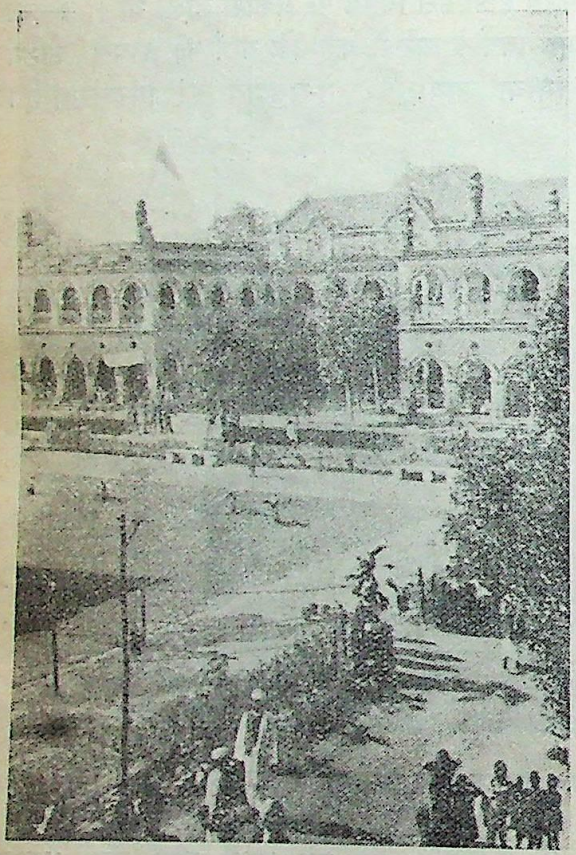

[सेंट्रल हिन्दू-स्कूल के इस भवन में प्रदर्शनी खोली गई थी]

ने यह भी कहा कि हार्टोग कमीटी की रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा के लिए प्रतिवर्ष २० करोड़ रुपये ख़र्च करने से कुछ दिनों के बाद यह निरक्षरता दूर हो सकती है! सोचने की बात है कि भारत जैसे दरिद्र देश के लिए यह समस्या कितनी कठिन है! और फिर आदर्शों का उलट-फेर तो देखिए। जिस भारत में उसके उत्कर्ष और अभ्युदय के दिनों में ऊँची से ऊँची शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी, जहाँ भारी से भारी विद्वान् बनने के लिए शायद कुछ भी ख़र्च नहीं करना पड़ता था, वहाँ की यह अवस्था कि निरक्षरता दूर करने के लिए प्रतिवर्ष २० करोड़ रुपयों की आवश्यकता हो! कुछ लोग कह सकते हैं कि भारत के अच्छे दिनों में भी सारा जन-समुदाय साक्षर और शिक्षित नहीं था, लेकिन उनको यह भी मानना पड़ेगा कि उस समय के शिक्षित मनुष्यों की संख्या आज-कल के ग्रैजुएट या मैट्रिक्यूलेशन 'पास' लोगों की संख्या से कदापि कम नहीं होगी और न उन शिक्षितों को अपनी शिक्षा के लिए इतने परिमाण में धन लगाना पड़ा होगा जितना कि आज-कल लगाना पड़ता है। इसका एक ही प्रत्युत्तर हो सकता है और वह यह कि आज-कल यहाँ की परिस्थिति बदल गई है। लेकिन बदली हुई परिस्थिति में भी अपने आदर्श की आधार-रेखा पर अवलम्बित रहना हमारा कर्त्तव्य है। अखिल एशिया शिक्षा-सम्मेलन के सामने निरक्षरता का प्रश्न लाया गया और प्रतिनिधियों ने उस पर विचार भी किया। आशा है, भावी सम्मेलनों के अवसर पर इस विषय पर और भी विचार किया जायगा और इस जटिल समस्या को हल करने की अच्छी से अच्छी विधि निकाली जायगी। प्रिन्सपल शेषाद्रि ने भारत की भयानक निरक्षरता के अतिरिक्त पढ़े-लिखे लोगों की बे-रोज़गारी, शिक्षकों की शोचनीय आर्थिकावस्था इत्यादि विषयों की ओर भी सम्मेलन का ध्यान आकर्षित किया।

सम्मेलन के सभापति भारत के योग्य विद्वानों में से एक, देश-विदेशों में सुविख्यात, कलकत्ता-यूनिवर्सिटी के फ़िलासफ़ी (दर्शन-शास्त्र) विभाग के अध्यक्ष डाक्टर राधाकृष्णन थे। संयोग से ही सभापति भी इतने अच्छे और योग्य मिल गये थे। वे काशी में दो ही दिन रहे, लेकिन उनके चले जाने पर भी उनका व्यक्तित्व जिसको उन्होंने अपने अपूर्व भाषण से फैला दिया था, सम्मेलन पर बराबर छाया रहा। उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपस्थिति में चीन के एक विद्वान् ने सभापति का काम किया। डाक्टर राधाकृष्णन ने अपने भाषण में प्राच्य, और विशेष कर भारत, की सच्ची संस्कृति का परिचय दिया। सुननेवाले दैवी उत्साह से पूर्ण हो गये और कहने लगे कि वास्तव में ये सज्जन अखिल एशिया-सम्मेलन के अध्यक्ष होने योग्य हैं। भारत की सच्ची संस्कृति क्या है? संसार के बाह्य आकारों के अन्दर एक ही जीवन-ज्योति का प्रकाश देखना, 'प्रकृति' होता था कि अन्तरात्मा का द्वार खुल गया है और उससे भावों की अविच्छिन्न धारा भाषारूपी स्रोत के सहारे निकली चली जा रही है। डाक्टर राधाकृष्णन ने कहा है—

'सच्ची शिक्षा मनुष्य के शरीर या मन को नहीं, बल्कि उसकी आत्मा को शिक्षित करना है। इसी पर सारी मानव-जाति का सामंजस्य, सहकारिता और सच्चा सुख निर्भर है। अन्तरात्मा की ज्योति चारों

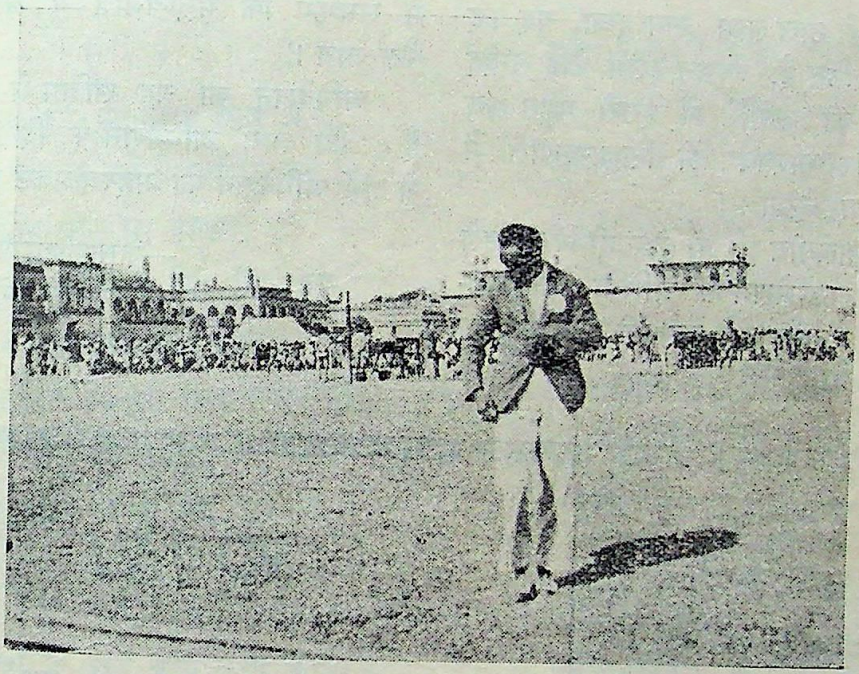

[खेल के मैदान में स्कूल के लड़के क़वायद और खेल दिखला रहे हैं]

ऊपर 'पुरुष' का सर्वाधिकार स्वीकार करना, 'अनेक' के भ्रम में न पड़कर हर समय, हर अवस्था और हर पदार्थ में 'एक' का ही अस्तित्व अनुभव करना। डाक्टर राधाकृष्णन ने प्राच्य सभ्यता और संस्कृति की इस विशेषता को सम्मेलन के सामने अत्यन्त उपयुक्त और ज़ोरदार शब्दों में रक्खा। उनके भाषण में कोई विशेष चेष्टा का चिह्न नहीं था। उनके हृदय के भावों को प्रकट करने के लिए उपयुक्त शब्द उनके होठों पर अनायास ही आ जाते थे। मालूम

और फैलाना, अपने स्वभाव को मधुर और गम्भीर बनाना, विवेक प्राप्त करना और विचारशील, दृढ़प्रतिज्ञ, धीर, ज्ञानवान् और साहसी होना ही सच्ची शिक्षा और संस्कृति के लक्षण हैं। जब तक शिक्षा का आदर्श यह नहीं होगा तब तक हम अपने भविष्य को अपने गौरवयुक्त अतीत के अनुकूल नहीं बना सकते। अगर हम इन आदर्शों को पुष्ट और चरितार्थ करेंगे तो प्राच्य और पाश्चात्य का कोई भेद ही नहीं रह जायगा। एशिया और योरप को हम विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या जीवन में अलग-अलग नहीं कर सकते। × × × अगर पाश्चात्य विज्ञान संसार के भौतिक सुख के लिए आवश्यक है तो प्राच्य का आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्य की मुक्ति के लिए ज़रूरी है। दोनों ही आवश्यक हैं। इसलिए प्राच्य और पाश्चात्य के भेद-भाव को दूर कर हम लोगों को श्रेष्ठ भारत, श्रेष्ठ एशिया और श्रेष्ठ संसार का निर्माण करना चाहिए।'

इस सम्मेलन से ठोस लाभ क्या हुआ, यह कह सकना अत्यन्त कठिन है, लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि एशिया की जागृति में इससे बहुत कुछ सहारा मिलेगा और भारतवर्ष की शिक्षा-प्रणाली में भी बहुत कुछ सुधार होगा।

सौभाग्यवश मालवीय जी जो कुछ ही दिन पहले जेल से निकले थे, सम्मेलन के अन्तिम दिन सभा-मण्डप में पधारे। दुर्बल होते हुए भी उन्होंने एक छोटा-सा, लेकिन प्रभावशाली भाषण किया और निम्न लिखित आशा प्रकट करते हुए सम्मेलन की कार्यवाही समाप्त की—

'अपने देश की समृद्धि, शक्ति और बल की उन्नति करने में हमको भारी प्रसन्नता होगी, लेकिन साथ ही साथ हमें दूसरे देशों की, चाहे वे छोटे हों या बड़े, समृद्धि, सुख और शान्ति की चिन्ता है। मैं आशा करता हूँ कि आप संसार का कल्याण इसी में समझेंगे कि मनुष्यमात्र में भ्रातृत्व का भाव फैल जाय।'

अधिवेशन का यह संक्षिप्त से संक्षिप्त विवरण है। जो लोग अधिवेशन के दिनों में काशी गये थे उन्हें अधिवेशन का महत्त्व प्रकट हुआ होगा।

—जानकीशरण वर्मा, बी० ए०,
नरसिंहराम शुक्ल

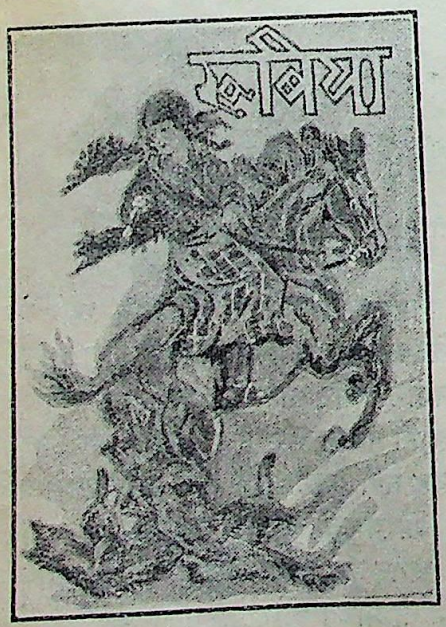

रूबिया

रूस की मशहूर ज़ारशाही का करुण दृश्य व विचित्र प्रेम देखने के लिए रूबिया उपन्यास पढ़िए। पुस्तक इतनी मज़ेदार और रोचक है कि बिना पूरी पढ़े छोड़ने को जी नहीं चाहता। चित्रों ने तो दुगुनी शोभा कर दी है।

मूल्य केवल १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्माद

(सागर-तरङ्गों के प्रति)

(१)

फैल फैल कर औ फिर फिर कर,
उठ उठ कर के औ गिर गिर कर।
लम्बी और पीन सी होकर,
फिर फिर आती हो घिर घिर कर।
विफल लालसाओं को लेकर,
नील क्षितिज से तुम भिर भिर कर।
तृषित लोचनों से लखती हो,
बार बार अति ऊँचा सिर कर॥

(२)

उछल रहा है कण कण कण का,
क्षण भी होती हो न हताश।
दर्पण-सा निर्मल छूने को,
स्वप्न-जगत् सा नीलाकाश।
लौट लौट कर पुनः लौट—
जाती हो बारम्बार निराश।
इसी साधना की समाधि में,
होता यहाँ तुम्हारा नाश।

(३)

पुनः गर्व-सी ऊपर उठ कर,
हो जाती हो नत-सी हीन।
तृष्णा-सी बढ़ बढ़ जाती हो,
हृदय-वासना में तल्लीन।
मन-सी वेगातुर-सी होकर,
उड़ना चहती पङ्ख-विहीन।
दीन-हृदय की इच्छा-सी फिर,
हो जाती हो विकल विलीन।

(४)

हृदय-पटल पर सागर के सिर
धुन धुन कर कर आर्त्त निनाद।
अश्रु-कणों से भिगो रहा है,
व्यथित हृदय को हृदय-विषाद।
तड़फ रही हो अन्तस्तल के—
तल पर करती मूक विवाद,
अट्टहास कर बजा रही हो,
कभी तालियाँ हा! उन्माद।

—रामगोपाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वन्द्व

[जनवरी के अङ्क में द्वन्द्व का पहला परिच्छेद प्रकाशित हुआ है। उसमें लीला की चाल-ढाल तथा माता के साथ उसके कथनोपकथन का जो विवरण प्रकाशित हुआ है, उसमें पाठकों ने उसकी स्वाधीन मनोवृत्ति का पता पाया होगा। इस अङ्क में उपन्यास का जो अंश प्रकाशित हो रहा है, उससे उसकी सहृदयता तथा सामाजिक विचारों पर प्रकाश पड़ता है।]

(२)

मिसेज़ राय के पास से लौट कर लीला अपने कमरे में आई। सीटी बजाना बन्द करके उसने ऊँचे स्वर से पुकारा—क्षेन्ति !

उसके प्रबल कण्ठ-स्वर से नीचे की मंज़िल के नौकर-नौकरानियाँ चकित और भयभीत हो उठे। उसके बाद ही क्षान्त को बुला देने के लिए एक साथ बहुत से तीक्ष्ण कण्ठों की तेज़ से तेज़ आवाज़ें विचित्र स्वर से चारों ओर गूँजने लगीं।

पाँच मिनट के बाद क्षेन्ति उर्फ़ क्षान्तमणि अपना मोटा-ताज़ा, काला और बेडौल शरीर लिये हाँफते हाँफते दौड़ कर आ पहुँची। उसके बाद ही वहाँ एक बड़े ज़ोर का झगड़ा-सा मच खड़ा हुआ।

"बाप रे, यह क्या ? देखो न, सूरत कैसी बनी है ? सवेरे जब घूमने गई हो, तब से सारे शरीर की यह दशा करके, कीचड़ और धूल लपेट कर अब लौट रही हो ? तुमसे तो कुछ कहते ही नहीं बनता बिटिया ? आज सवेरे ही यह साड़ी अलमारी से निकाल दी थी न ? उसे फाड़ भी डाला, और कीचड़ से लपेट दिया। छिः छिः, ऐसी उपद्रवी लड़की तो जीवन भर में कभी देखी ही नहीं ! देखो न, एक लड़की और भी घर में है, उसे तो कभी ऐसा उपद्रव करते हमने नहीं देखा।"

क्षान्त की इन अनर्गल बातों की धारा रोक कर लीला ने कहा—जा जा, तुझे दलाली करने की ज़रूरत नहीं है। बीसों बार कह चुकी हूँ कि तू ऐसी बातें मत किया कर ! क्या तू समझती है कि मैं अब भी वही ज़रासी बच्ची हूँ ?

क्षान्त ने हाथ हिला कर और मुँह टेढ़ा करके कहा—जी नहीं। बच्ची तुम्हें कौन कहता है ? तुम तो अब हमारी पुरखिन हो गई हो ! इसी लिए न जब चाहती हो डाँट लेती हो ? जब ज़रा सी थी, न रात को रात समझा और न दिन को दिन समझा, पाल-पोस कर इतना बड़ा किया, तब क्या इसका फल नहीं मिलेगा ? मेरा ऐसा खोटा कर्म ही है कि और कहीं ठिकाना नहीं लगता, यहीं पड़ी हूँ। इसी लिए तो मेरी इतनी दुर्दशा हो रही है। जिसे मैंने अपने हाथ से पाल-पोस कर इतना बड़ा किया है, वही मेरा अपमान करे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षान्त का सप्तम सुर क्रमशः धीमा होते देखकर लीला शङ्कित हो उठी। इसके बाद क्या क्या होगा और कौन कौन-सी बात आवेगी, यह सब पुराने अनुभव के अनुसार उसे मालूम था। इससे पहले ही सन्धि की आशा से लीला ने नम्र स्वर से कहा—व्यर्थ में बकबक करके क्यों मरती है? मैंने तुझे क्या कहा है, ज़रा बता तो। जब मैदान में खेलने गई थी, तब धोती में ज़रा-सा कीचड़ लग गया इसी के लिए अभी तक मा पचासों बातें सुनाती रहीं, वहाँ से लौट कर जैसे ही आई, तूने आरम्भ कर दिया! जाओ तुम लोग जैसा चाहो, वैसा करो। आज न तो मैं स्नान करूँगी न खाऊँगी, चुपचाप लेटी रहूँगी।

इस बात का प्रभाव पड़ने में विलम्ब नहीं हुआ। क्षान्त को जैसे ही यह बात मालूम हुई कि लीला मा के पास से डाँट खा आई है, उसका सारा क्रोध और अभिमान हवा हो गया। वह स्वयं लीला को चाहे जितना डाँट-फटकार लेती, इसमें कोई हानि नहीं थी परन्तु दूसरा कोई यदि उसे आधी बात भी कह देता तो वह उसे असह्य हो जाती।

लीला के जूते खोल कर मोज़े उतारते उतारते क्षान्त ने कहा—मा डाँटें न तो क्या करें? तुम्हारा यह लड़कापन देख देख कर मेरी ही हड्डियाँ सुलगने लगती हैं, फिर वे तो मा हैं। दस आदमी दस तरह की बातें कहेंगे। कुछ भी हो। मा के दिल में चोट तो लगेगी ही। इसी से कभी कभी दो चार बातें कह देती हैं।

लीला जब से पैदा हुई है, तब से क्षान्त ने ही उसे पाल-पोस कर इतना बड़ा किया है। इसलिए वह समझती थी कि लीला पर मेरा बहुत बड़ा अधिकार है। यही कारण था कि अब भी वह लीला से कुछ भी नहीं दब कर चलती थी। घर में भी उसका बड़ा प्रताप था। उसे कोई एक बात कहता तो वह चार बातें सुना देती। यहाँ तक कि उसकी जवान के भय से मिसेज़ राय को भी यथासम्भव उससे दब कर ही चलना पड़ता।

काम के साथ ही साथ क्षान्त का बकवाद भी बराबर जारी रहा। लीला किसी तरह अपने को सँभाले हुए चुपचाप बैठी रही। यदि कुछ प्रतिवाद करती तो और भी बुरा परिणाम होने की सम्भावना थी। अन्त में जब उससे न रहा गया तब कहने लगी—व्यर्थ में जब बकने लगती है तब तो दम तक नहीं लेती, परन्तु काम के समय कहीं पता भी नहीं रहता। घर में आकर जब बार-बार पुकारती हूँ तब भी तेरी सूरत नहीं दिखाती। मा ने कहा है कि स्नान करके अभी ही मेरे पास आओ। कहीं देरी हो गई तो फिर दस बातें सुनावेंगी, कहेंगी कि अभी तक कहाँ थी।"

लीला के भौंरे के समान काले काले बालों की उलझन छुड़ाते हुए क्षान्त ने कहा—जाऊँगी कहाँ। रात को जमादार साहब ने ताड़ी पी ली थी। उसी के नशे में आकर अपनी स्त्री को इतना मारा, कि मारते मारते अधमरी कर डाला। बेचारी फूट फूट कर रो रही थी। उसका माथा तो फूल कर ढोल हो गया है। इसीलिए ज़रा उसे देखने गई थी। परन्तु जैसे ही वहाँ जाकर खड़ी हुई, क्षेन्ति क्षेन्ति की चिल्लाहट शुरू हो गई। बाप रे, क्षण भर के लिए भी आँख के सामने से हटने की फ़ुर्सत नहीं!

यह बात सुनते ही क्रोध में आकर लीला ने कहा—क्या कहा? फिर उसने मारा है? मैंने उस दिन कह दिया था न उससे कि अब कभी ऐसा करेगा तो निकाल दूँगी? इतने पर भी वह नहीं माना?

यह सब अत्याचार लीला नहीं सह सकती थी। किसी को भी वह कभी ऐसा अत्याचार करते देखती तब सारे घर में तहलक़ा मचा देती। इसलिए यह बात लीला से कह डालने का क्षान्त को बड़ा पछतावा हो रहा था। इसे दबाने के लिए उसने तुरन्त ही अपनी बात का ढंग बदल दिया और कहने लगी—ज़रा सा मार ही दिया तो क्या हो गया? तुम तो सभी बातों में इतना क्रुद्ध हो जाती हो। स्वामी-स्त्री में तो यह सब होता ही रहता है। इसके पीछे तुम कहाँ तक पड़ी रहोगी। फिर भी उसने ऐसे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारा नहीं—ताड़ी पीने पर क्या आदमी को किसी बात का ज्ञान रह जाता है ?

लीला ने गम्भीर भाव से कहा—तब ताड़ी ही वह क्यों पीता है ? पचास बार रोक चुकी हूँ न ? ताड़ी पीकर आदमी को जान मार डाले और उससे कुछ कहें तो कह दे कि नशे में मार डाला है ! इस अन्धेर का ठिकाना है ? मैं तो यहाँ यह सब अत्याचार न होने दूँगी। आज दूसरे वक्त जमादार का बन्दोबस्त मैं खूब अच्छी तरह से कर दूँगी।

क्षान्त ने व्यस्त भाव से कहा—इस सबके लिए चिन्ता करने की तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं है बिटिया रानी ! तुम जाकर देखो तो शायद अब उन दोनों में मेल हो गया होगा। जमादार को कोई बात कहने लगोगी तो उल्टा उसकी स्त्री ही आकर तुमसे हाथ-पैर जोड़ने लगेगी। पति-पत्नी के झगड़े में दूसरे का न पड़ना ही अच्छा है।

लीला ने जब सोच कर देखा तब इस विषय में क्षान्त की ही बात ठीक उतरी। इससे पहले स्त्री पर अत्याचार करने के अपराध में वह जब जब जमादार को दण्ड देने गई थी तब तब वह अत्याचार-पीड़ित स्त्री ही रो रोकर और अनुनय-विनय करके पति के लिए क्षमा माँगने आती थी।

बहुत ही विरक्त होकर उसने कहा—ऐसा करते करते तो तुम्हीं लोगों ने पुरुषों का साहस इतना बढ़ा दिया है। वे समझते हैं कि हम जो भी अत्याचार करते जायँगे, वह सब स्त्रियाँ मुँह बन्द करके सहती जायँगी। यदि ऐसी बात न होती तो भला पुरुष कभी इतना साहस कर सकते ?

क्षान्त ने शान्त भाव से कहा—तो किया ही क्या जाय ? स्वामी को कोई स्त्री फेंक तो सकती नहीं।

"इसमें फेंकने की कौन सी बात है ? स्त्री स्वामी छोड़ तो सकती है ? जमादार जब इतना अत्याचार करता है तब उसकी स्त्री मुँह बन्द किये चुपचाप सहती क्यों जाती है ? जमादार को छोड़ देने में ही तो सारा झंझट दूर हो जायगा ?"

क्षान्त लीला के स्लीपरों की धूल झाड़ रही थी। उन स्लीपरों को यों हीं छोड़ कर कुछ क्षण तक वह लीला के मुँह की ओर ताकती रही। अन्त में उत्तेजित होकर उसने कहा—छोड़ दे ? ऐसी बात मुँह से फिर कभी न निकालना बिटिया रानी। हिन्दू-घरों में स्त्रियों का काम ही है सब कुछ सहती रहना। मनुष्य को जीवन में कितने दुःख-क्लेश सहने पड़ते हैं। तब स्वामी के हाथ से ज़रा सी मार खा लेने में ही इतना दुःख क्यों होता है ? स्त्री यदि अपने श्वसुर का घर और पति को त्याग कर निकल आवे तो क्या फिर उसे किसी तरह की लज्जा रह जाती है ? जमादार तो आदमी बुरा नहीं है। स्त्री को अच्छी तरह से खिलाता है, कपड़े देता है, गहने भी दे रक्खे हैं। परन्तु कभी कभी जो तंग करता है, वह नशे के ज़ोर से। इस बात की तो परवा भी न करनी चाहिए। पुरुष के बिना कहीं क्षण भर भी स्त्री का निर्वाह हो सकता है ? खाना-कपड़ा कहाँ से मिलेगा ? गहने कहाँ से आवेंगे ? पुरुष ही तो चार पैसे कमा लाते हैं।

"तू तो एक ज़बरदस्त फ़िलासफ़र मालूम पड़ती है। तेरी युक्तियाँ भी बहुत ही अमूल्य और अकाट्य हैं। परन्तु पहले मेरे स्लीपर साफ़ कर दे तब फिर अपनी यह फ़िलासफ़ी झाड़ना।"

लीला स्लीपर पहन कर हँसते हँसते कमरे से निकल गई। क्षान्त कमरे की सारी चीज़ें झाड़ झूड़ कर सजाने लगी। वह मन ही मन गुनगुनाती जाती थी—जब से विलायत से यह आई है, बिलकुल ईसाई हो आई है। मैं तो पहले ही से जानती थी कि इन सब अभागे देशों में जाने से आदमी को न तो किसी तरह की ज्ञान-बुद्धि रह जाती है और न उसका धर्म-कर्म रह जाता है। सारा दीन-धर्म नाश करके ये लोग न जाने कैसी और किस प्रकृति के हो गये हैं। सीता-सावित्री की बात तो चूल्हे में गई, कहती है स्वामी को छोड़ क्यों नहीं देती ? एकदम भ्रष्ट हो गई ? म्लेच्छों का सा ही इनका भी सारा कारखाना है ? राम ! राम !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३)

मिसेज़ राय उस समय भी पढ़ने-लिखने के ही काम में मग्न थीं। लीला स्नान से निवृत्त होकर इस बार बहुत कुछ शान्त भाव से उनके पास जाकर खड़ी हुई। शरद ऋतु की हवा से उत्फुल्ल होकर एक बर्र शायद दूसरा स्थान खोज निकालने की आशा से कमरे में आ पड़ा था, और उसे खोज निकालने से पहले ही बाहर जाने का रास्ता भूल कर पर्दे के आस-पास वह भनभनाता हुआ भटक रहा था। उसकी दुर्दशा देखकर लीला के हृदय में दया आगई और उसने पर्दा हटा कर उसे बन्धन से मुक्त कर दिया।

काग़ज़ों पर से मस्तक उठाकर मिसेज़ राय ने लीला की ओर देखा। बाद को किसी तरह से प्रसन्नता का भाव व्यक्त करके उन्होंने कहा—कहो, स्नान कर आई हो? ख़ैर, फिर भी अब ज़रा ज़रा देखने लायक़ तुम्हारा चेहरा हो गया। वह कुर्सी खींच कर बैठ जाओ। तुमसे बहुत सी बातें करनी हैं। अब तुम बड़ी होगई हो, परिवार के सुख-दुःख में तुम्हें भी और लोगों की तरह समान रूप से भाग लेना चाहिए। हम सब लोग तुमसे इस बात की आशा करते हैं।

मिसेज़ राय इस तरह नर्मी के साथ कभी बात नहीं करती थीं। आज माता की बातों में एकाएक ऐसा परिवर्तन देखकर किसी अज्ञात आशङ्का से लीला का हृदय काँप उठा। वह शङ्कित भाव से एक कुर्सी खींच कर बैठ गई और उत्सुक दृष्टि से माता की ओर ताकने लगी।

क़लम की स्याही साफ़ कर के मिसेज़ राय ने उसे क़लमदान में रख दिया और फिर लीला की ओर ताक कर कहने लगीं—आज सवेरे चाय पीने के बाद वीणा को अरुण की एक चिट्ठी मिली। बम्बई के अस्पताल से उसने लिखा है कि फ़्रांस के युद्ध-क्षेत्र में एक तोप फट गई थी, उसी के कारण उसकी दोनों आँखें फूट गईं।

"अरुण अन्धा हो गया? ओह, ईश्वर!" अतर्कित दुःसंवाद से लीला पहले पहल चौंक कर निस्तब्ध होगई। बाद को देखते ही देखते उसकी काली और बड़ी बड़ी आँखें आँसुओं की धारा से डूब गईं।

विषाद से मुँह नीचा करके मिसेज़ राय कुछ क्षण तक लीला की ओर ताकती रहीं। सदा से उनकी यही धारणा थी कि लीला बहुत ही हृदयहीन और निष्ठुर प्रकृति की है, स्त्री-सुलभ दया-ममता या स्नेह का उसमें लेश भी नहीं है। आज अरुण के दुख से हृदय फाड़ कर उसे रोते देखकर उनका चित्त लीला के प्रति बहुत कुछ कोमल हो गया। वे स्वयं भी रूमाल से आँखें पोंछ कर कहने लगीं—अब तुम यह अनुभव कर पाती होगी कि इस दुःसंवाद का वीणा के हृदय पर कितना सांघातिक प्रभाव पड़ा होगा। जब से उसे यह पत्र मिला है तब से वह कमरे से निकली तक नहीं। मेरे नेत्रों में तो सवेरे से आँसू ही आँसू आ रहे हैं। मेरी इतने दिनों की अभिलाषा, इतनी आशा, इस दुर्घटना से सारी की सारी मिट्टी हो गई।

लीला ने अरुण को कभी देखा नहीं था। वीणा के कमरे में उसका जो नयनाभिराम चित्र टँगा था उसे देखकर ही वह उससे मित्र के समान स्नेह करने लगी थी। कैसा सुन्दर उसका चेहरा था, उसके हृदय का भी ऐश्वर्य बड़ा मनोहर था। अरुण ने समरभूमि से वीणा को जितने पत्र लिखे थे उन्हीं के द्वारा उसके सरल, उन्नत और परिमार्जित हृदय का परिचय लीला को मिला था। मृत्यु की विभीषिका से परिपूर्ण उस भयङ्कर स्थान में रातदिन संहार का जो भयङ्कर ताण्डव-नृत्य हुआ करता उसमें निवास करते हुए क्षण भर के लिए भी अरुण ने अपने उत्साह तथा स्फूर्ति को नष्ट नहीं होने दिया। किस विशालता और प्रतिभा से पूर्ण था उसका हृदय! वीणा के ही प्रति उसका कैसा ज्वलन्त प्रेम था! उसके किसी पत्र में कभी उच्छ्वास का लेश नहीं रहता था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भी उसके पत्रों की एक एक पंक्ति में उसके संयमशील हृदय का स्वाभाविक अनुराग विकसित हो उठता था। वही अरुण! वह एक साथ ही सैनिक था, साहित्यिक था और कवि था! आज उसका सर्वस्व नष्ट हो गया। आज उसके नवीन चिर-सुन्दर नेत्रों पर चिर अन्धकार का बहुत ही मोटा पर्दा पड़ गया है! जीवन की सारी आशा, सारा आनन्द और सारा उत्साह, सब व्यर्थ हो गया, निष्फल हो गया। लीला कोई भी बात कह न पाई। अरुण के उस भयङ्कर परिणाम की बात सोच सोच कर वह केवल व्यथित और उच्छ्वसित हृदय से रोने लगी।

मिसेज़ राय भी कुछ क्षण तो निस्तब्ध रहीं बाद को उन्होंने कहा—आज केवल वही तीन मास पहले की बात मुझे याद आ रही है। किरण का वह घनिष्ट मित्र है। उसके पास जब वह यहाँ घूमने आया था, सारे शहर में एक तरह की धूम मच गई थी। जैसा सुन्दर उसका रूप है, वैसी ही शिक्षा है और वैसी ही शान्त एवं सरल प्रकृति है। इतने बड़े लक्षपति के घर का वह लड़का है और ऐसा सादा उसका स्वभाव है। क्या खेलने-कूदने में, क्या गाने-बजाने में, और क्या शिकार में, सारे शहर को उसने मोह लिया था। तुमने तो उसे नहीं देखा था न? तो तुम क्या समझ पाओगी कि वह कैसा अच्छा लड़का था! कितने ही लोगों ने उसे पाने की कितनी चेष्टा की। परन्तु उसने जिस दिन से वीणा को देखा था, उसी दिन से फिर उसने किसी की ओर घूम कर देखा तक नहीं। अहा! बेचारा कितना चाहता था वीणा को। वीणा के पास जब वह बैठता तब देख देखकर आनन्द और तृप्ति से मेरा हृदय परिपूर्ण हो उठता। मन में यही बात आती कि जैसी घर को चमका देनेवाली लड़की है वैसा ही सुन्दर दामाद भी मिल गया। कैसे अशुभ अवसर पर यह युद्ध छिड़ा है, कैसे अशुभ मुहूर्त में फ्रांस-सरकार ने बंगालियों की सेना भेजी! उसी के कारण मेरे भाग्य का सब कुछ जाता रहा।

बातें समाप्त करके मिसेज़ राय ने अपनी भीगी आँखें रूमाल से पोंछ लीं और तुरन्त ही उन्होंने फिर कहना आरम्भ किया—इसी लिए मैं सवेरे से ही तुम्हें खोज रही थी। इस समय वीणा को ज़रा-सी सान्त्वना देने की आवश्यकता है। परन्तु यह अधिक अच्छा होगा कि इस समय उसके पास जाकर तुम्हीं बैठो और उसे शान्त करो। मेरा जाना भी इतना अच्छा नहीं है, जितना कि तुम्हारा। आहा! बेचारी को कितनी चोट पहुँची है। मैं तो सवेरे से इसी सोच-विचार में पड़ी हूँ कि मैं अब उसे किस तरह शान्त करके सँभाल सकूँगी।

आँखें पोंछ कर लीला उसी समय उठ कर खड़ी हो गई। उसने कहा—मैं अभी उनके पास जाती हूँ मा।

जैसे ही लीला ने आगे की ओर पैर बढ़ाया—मिसेज़ राय ने कुछ व्यस्त भाव से कहा—ज़रा सा ठहर जाओ, तुम से एक बात और कह देनी है। वीणा से कहना कि अभी इतनी जल्दी अरुण के पत्र का उत्तर देने की कोई आवश्यकता नहीं है। दो एक दिन के बाद खूब सोच-समझ कर ही उत्तर देना अधिक अच्छा होगा। मेरा मतलब समझ रही हो न? मैं नहीं चाहती हूँ कि वीणा अरुण को कोई ऐसी बात लिखे, जिससे उसके मन में फिर किसी तरह की आशा रह सके। क्योंकि इस घटना के बाद से उसके साथ हमारा कोई भी सम्बन्ध न रह सकेगा।

यह बात सुनकर लीला चलते चलते ठमक कर खड़ी हो गई। इतनी देर के बाद सारा मामला उसकी समझ में आया। अब उसके दिल में यह बात जम गई कि मा अरुण के साथ किसी तरह का सम्पर्क नहीं रखना चाहतीं, परन्तु वीणा से यह बात कहने में उन्हें लज्जा आती है, अतएव इसे मुझसे कहलाना चाहती हैं।

मा का तात्पर्य समझ कर लीला को मन ही मन बड़ी वेदना हुई। जिस हतभाग्य पर दुर्दैव ने ही इस तरह का वज्र-प्रहार किया है, उसे मनुष्य भी इसी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की विडम्बना पहुँचावेगा ? इतने घोर सङ्कट के समय अपने प्रियजन से वह ज़रा भी स्नेह का स्पर्श तथा सान्त्वना की दो एक बातें भी न प्राप्त कर सकेगा ?

लीला का कर्तव्यनिष्ठ एवं परदुखकातर हृदय इस निर्णय को स्वीकार करने के लिए किसी तरह तैयार नहीं था। उसने बहुत ही कातर तथा विनीत स्वर से कहा—यह कार्य तो उचित न होगा मा ? यह दिन उसके बड़े दुख के दिन हैं, बड़ी निराशा के दिन हैं ? आज उसे तुम लोगों को छोड़ कर और कहीं से भी शान्ति न मिलेगी। उसकी भी मा तुम हो। इतने दिनों तक उससे स्नेह किया करती थीं, इतना प्यार करती थीं, आज उसे दूर कैसे कर देंगी ? या वीणा ही उसे यह बात कैसे सूचित कर सकेगी ? यह तो बड़ा भारी अन्याय होगा मा।

मिसेज़ राय ने इस बात पर कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया। उन्होंने उदासीन भाव से कहा—अब तो ऐसा नहीं हो सकता लीला। आज यदि वीणा हृदय के आवेग में आकर ऐसा जीवन-व्यापी त्याग करे भी तो यह उसकी बड़ी भारी भूल होगी। ऐसा करके वह जीवन में सचमुच कभी न सुखी हो सकेगी। अरुण की इस दुर्घटना से मेरे हृदय पर कितना आघात पहुँचा है, इस बात को यदि कोई अन्तर्यामी है तो वे ही जान सकेंगे। परन्तु यह सब होने पर भी अपनी सन्तान की भलाई-बुराई तो मुझे पहले देखनी पड़ेगी ? इतनी बड़ी विपत्ति जान-बूझ कर अपने सिर पर कौन लाद सकता है ? मैं ख़ूब समझती हूँ कि इस विवाह से वीणा का सारा जीवन ही बिलकुल नष्ट हो जायगा।

इस बात से लीला का चित्त शान्त न हुआ। सचमुच में जो मा है, वह क्या अपनी सन्तान के ही सुख-अशुभ पर ध्यान देती है ? और किसी की ओर दृष्टि फेरने का उसे अवसर ही नहीं है ? अरुण भी तो किसी दिन 'मा' कहकर अपने को स्नेह का अधिकारी प्रमाणित करते हुए सामने आकर खड़ा हुआ था ? वीणा के ही लिए इन्हें इतनी चिन्ता क्यों है ? मानव-जीवन में क्या स्नेह, प्रेम तथा कर्तव्यबुद्धि आदि किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं पड़ती ? क्या अपना ही सुख सबसे बड़ी चीज़ है ? दो ही दिन पहले जब उसका स्वास्थ्य, रूप, शक्ति आदि ज्यों के त्यों बने थे, तब वीणा उससे प्रेम करती थी।

उसने कहा—मान लीजिए कि इन लोगों का विवाह हो जाने पर कहीं ऐसी दुर्घटना होती तब तुम क्या कर सकतीं ? क्या उस समय भी इसी तरह निःसंकोच भाव से उसे परित्याग कर सकतीं ?

मिसेज़ राय के चेहरे पर अप्रसन्नता की रेखा विकसित हो आई। उन्होंने मन ही मन कहा—इस लड़की का सदा ही दुनिया से ऊपर व्यवहार रहता है। मानो इसने इस बात की प्रतिज्ञा-सी कर ली है कि जो बात स्वाभाविक और सीधी है उसे यह किसी तरह भी नहीं समझेगी। अपनी बहन के सुख-दुख पर तो ध्यान देती नहीं, जिसे कभी आँख से भी नहीं देखा उसी के लिए इसकी सारी माया-ममता उमड़ आई है। कैसी विपत्ति में वे पड़े हैं ?

प्रकट रूप से उन्होंने असहिष्णुभाव से कहा—नहीं, उस दशा में मैं वैसा नहीं कर सकती थी। तब तो चाहे कितना ही बड़ा दुःख पड़ता, वीणा को मस्तक झुका कर स्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई उपाय ही नहीं था। परन्तु यहाँ तो कोई ऐसी परिस्थिति है नहीं, बातचीत भर लगी थी। ऐसे प्रस्ताव कितने लोगों के सम्बन्ध में किये जाते हैं और वे रद हो जाते हैं। ऐसी दशा में इसके सम्बन्ध में अधिक ज़ोर डालने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। इसके अतिरिक्त मैंने स्वयं यह प्रस्ताव किया भी नहीं। अरुण ने ही वीणा से अपना इस तरह का अभिप्राय प्रकट किया था। उसका स्वभाव तो बहुत ही उदार और उच्च है। ऐसी परिस्थिति में आकर वह एक तरुण जीवन को इस निरानन्द दासता के जीवन में कैसे आकर्षित कर सकता है। यह विवाह न होने देने के लिए उसने स्वयं प्रस्ताव किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसे तो यह बात कहनी ही पड़ेगी, क्योंकि उसे यह मालूम है कि इस घटना के बाद से वीणा मुझे पहले की सी दृष्टि से न देख सकेगी। इसलिए उसे ऐसा ही कहना उचित था। यही सोच कर उसने ऐसा कहा भी है। यह उसका बड़प्पन है। परन्तु क्या उसके इतना कह देने से ही उसके प्रति तुम लोगों के सारे कर्तव्यों की इतिश्री हो गई? इस समय तो वीणा को यही कहना चाहिए कि मैं तुम्हें किसी तरह भी नहीं त्याग सकती। उसके प्रति यदि वीणा को सचमुच प्रेम होगा तो इसके अतिरिक्त और वह कह ही क्या सकेगी, यह मेरी समझ में नहीं आता। इस समय तो वीणा ही अपने अगाध प्रेम के द्वारा उसे शान्त और सुखी बना सकती है और उसकी सारी निराशा और वेदना को दूर कर सकती है। यह तो और किसी का भी काम नहीं है।"

मिसेज़ राय ने बहुत ही असन्तुष्ट होकर कहा—तुम इस विषय पर केवल एक भावुकता की दृष्टि से विचार करती हो, सोच-विचार कर नहीं देखती हो। जीवन बहुत ही सत्य और क्रियात्मक वस्तु है। भावों का आवेग दस-पाँच दिन रह सकता है। परन्तु जब उसका अन्त हो जायगा तब जीवन पर वह कैसा प्रभाव डालेगा? तुम लोगों का अभी लड़कपन है। संसार के सम्बन्ध में कुछ जानती नहीं हो, किताबों में लिखी हुई थोड़ी सी बातें दोहराना भर जानती हो। यदि गम्भीरतापूर्वक सोच कर देखतीं तो क्या तुम कभी ऐसा प्रस्ताव कर सकती थीं? अरुण के साथ विवाह करने पर वीणा को अब आजन्म धात्री एवं बन्दिनी होकर ही अपना जीवन व्यतीत करना पड़ेगा, क्योंकि वह तो अब बिलकुल असहाय है। सदा स्त्री पर निर्भर रहने के अतिरिक्त उसके पास और कोई उपाय ही नहीं है। अब ज़रा सोचो तो, जीवन भर के लिए इतना क्लेश स्वीकार कर लेना क्या कोई आसान काम है? विशेषतः वीणा जैसी लड़की के लिए, जिसने जीवन में न तो कभी ज़रा भी किसी प्रकार के दुख या क्लेश का अनुभव किया है और न जिसे किसी तरह का काम करने का अभ्यास है। लाड़-प्यार और आमोद-प्रमोद में ही सदा से उसका पालन-पोषण होता आ रहा है। क्या वह कभी ऐसा जीवन सहन कर सकेगी? कहीं उसे इस तरह रहना पड़ा, तब तो वह मर ही जायगी।

मिसेज़ राय कुर्सी पर से उठ कर कमरे के भीतर टहलने लगीं। लीला भी किंकर्तव्य-विमूढ़ होकर स्थिर भाव से बैठी रही।

कमरे में दो एक बार घूम कर मिसेज़ राय ने कहा—जीवन भर के लिए ऐसा दुख अपने आप मस्तक झुका कर वह स्वीकार ही क्यों करने लगी? ऐसी सुन्दर लड़की, जो रूप-गुण में अतुलनीय है, समाज का एक सर्वश्रेष्ठ रत्न है, उज्ज्वल भविष्य जिसके लिए खुला हुआ है। वह इच्छानुसार किसी वर के साथ विवाह करके आजन्म सुखी रह सकती है। वर्त्तमान और भविष्य दोनों ही उसके अनुकूल हैं। उसे क्या पड़ी है कि वह ऐसा जीवन-व्यापी दुख स्वीकार करने जाय? तुम उसके पास जाओ और थोड़ी देर तक वहीं रहो। यदि आवश्यकता समझो तो मैंने जो जो बातें कही हैं वे सब समझा भी देना। तुम्हें भी अपनी सारी भावुकता भुला कर उसकी अवस्था पर विचार करना चाहिए और अरुण के इस पत्र का उत्तर भी वैसा ही देना चाहिए। इसमें सङ्कोच करने का हमारे लिए कोई कारण नहीं है।

लीला ने समझ लिया कि इस सम्बन्ध में अब मा से कोई बात कहनी व्यर्थ है। वे किसी तरह भी अपने निश्चय से न हटेंगी। यदि अधिक वाद-विवाद करूँगी तो केवल मनोमालिन्य की ही सृष्टि होगी।

और कोई भी बात मुँह से न निकाल कर वह शुष्कहृदय से वीणा की खोज में चली गई।

[क्रमशः

—ठाकुरदत्त मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार-विमर्श

वीर-सतसई के कुछ बढ़िया दोहे

वीर-सतसई और उसके निर्माता का परिचय देने की ज़रूरत नहीं है। उनका सम्मान सुप्रसिद्ध श्रीमङ्गला-प्रसाद-पारितोषिक-द्वारा हो चुका है, अतएव लोग उनसे परिचित ही हैं। इस सतसई के सामान्य दोहों से यहाँ हमें कुछ मतलब नहीं। इस लेख में हम उन्हीं दोहों पर अपने कुछ विचार प्रकट करेंगे जिनमें कुछ साहित्यिक चीज़ लाने का प्रयत्न किया गया है।

आलोचना प्रारम्भ करने से पूर्व इतना निवेदन कर देना और आवश्यक है कि जब यह सतसई प्रकाशित हुई थी तभी पुरस्कृत होने से पहले ही इसकी समालोचना मैंने 'वीर-सन्देश' के दो-तीन अंकों में निकलवाई थी। बाद को 'सरस्वती' में भी इसी विषय की एक प्रत्यालोचना निकलवाई थी। अब हम यहाँ उक्त सतसई के दूसरे पहलू पर विचार करेंगे।

मंगलाचरण

वीर-सतसई के मंगलाचरण में यह दोहा दिया गया है—

रह्यो उरझि रथ-चक्र सों, धावत भीषम-ओर।
कब गहिहौं 'रणछोर' के, वा पटुका को छोर॥

दोहे का उत्तरार्द्ध चिन्त्य है। व्यर्थ ही नहीं, प्रत्युत अनर्थकर है। भला, पटुका का छोर पकड़ने से लाभ ही क्या? इच्छा भी की तो पटुका के छोर के पकड़ने की! क्या ख़ूब! भक्तजन भगवान् के चरणों के पकड़ने की इच्छा किया करते हैं, यह तो मैं जानता हूँ; किन्तु पटुका के छोर को पकड़ने की बात एक ही रही! और सो भी किस अवसर पर? जब हमारे स्वामी अपने प्रतिद्वन्द्वी की ओर वीर-वेश और वेग से बढ़े जा रहे हैं—उसका मुक़ाबला कर रहे हैं? कहिए तो सही, ऐसे समय में कौन सज्ञान अपने मालिक का कपड़ा पकड़ कर उसे रोक रखने की चेष्टा करेगा? ऐसा करने से उसके मालिक का और उसका लाभ सम्भावित है या हानि? फिर ऐसा काम करने से—ऐसे मौक़े पर कपड़ा पकड़ कर रोक रखने से—मालिक ख़ुश होगा या क्रुद्ध? और, वीर-सतसई के कर्ता को क्या यही उचित है कि ऐसे समय में स्वामी का कपड़ा पकड़ कर रोक रक्खें, जिससे वे प्रतिद्वन्द्वी पर हमला न कर सकें—वहीं खड़े छटपटाते रहें?

एक बात और। यहाँ 'रणछोर' पद देकर न जाने वीर-रस का क्या उत्कर्ष किया गया है? ऐसे-रण-विभोर भगवान् को 'रणछोर' पद—इस मौक़े पर कैसी शोभा देता है? कैसा मौजूँ है! वाह!! भई, जो स्वयं रण-छोर है—रण से भाग खड़ा होनेवाला है—वह तुम्हारी क्या मदद करेगा? तुम उसके पीछे क्यों पड़े हो? कैसा सुन्दर यह मंगलाचरण है!

कहते हैं, एक बार नीति-निपुण भगवान् श्रीकृष्ण मथुरा से—एक लड़ाई से—भाग खड़े हुए थे। मन-चले भक्त स्निग्ध परिहास में तभी से आपको 'रण-छोर' भी कहा करते हैं। द्वारका और डाकोर में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम आपका प्रसिद्ध भी है। सो, यह सब हो, भले हो, परन्तु 'वीर-सतसई' के मंगलाचरण में भगवान् के इस नाम के देने की क्या ज़रूरत थी? क्या 'कंसारि' आदि वीररस-व्यंजक नाम ढूँढ़े न मिले थे? जो भी हो, दोहे का उत्तरार्द्ध बिलकुल बिगड़ गया है।

वीर-रस की प्रधानता

कुछ लोगों ने शृंगार को रसराज माना है, पर यह उनकी भूल है। वस्तुतः शृंगार नहीं, वीर रसराज है, यह मैंने अपनी 'साहित्य-मीमांसा' में सिद्ध किया है। वीर-सतसईकार ने भी वीर को रसराज माना है, परन्तु आपने जो हेतु दिये हैं, बड़े अद्भुत हैं—हेत्वाभास हैं। उनसे अभीष्ट विषय सिद्ध नहीं होता। देखिए—

आदि, मध्य, अवसानहू, जामें उदित उछाह।
सुरस वीर इकरस सदा, सुभग सर्व रस-नाह॥

दोहे के पूर्वार्द्ध में प्रतिपादित विषय साध्य है और उत्तरार्द्ध में साधक (हेतु) है। परन्तु यह वस्तुतः हेतु नहीं, हेत्वाभास है। कहा गया है कि वीर-रस में उसका स्थायी भाव उत्साह सदा रहता है, इसलिए वह रसराज है। यह कोई बात नहीं हुई—इससे वीर-रस का रसराजत्व नहीं सिद्ध हुआ। यों तो शृंगारी जन कहेंगे कि शृंगार ही रस-राज है, क्योंकि उसमें सदा 'रति' रहती है। कोई कहेगा, भयानक-रस ही रसराज है, क्योंकि उसके आदि, मध्य और अन्त में—सदा ही उसका स्थायीभाव-भय उपस्थित रहता है। इसी प्रकार प्रत्येक रस के विषय में कहा जा सकता है। इससे वीर रसराज नहीं सिद्ध हो सकता। एक रस-अखण्ड-चिन्मय-रस-प्रकरण में उसका आदि, मध्य और अवसान कैसा? आपने लिखा है—

वीर-स्थायी भाव सों, सरस सर्व रस आहिं।
नीके हू फीके सबै, बिनु जाके जग माहिं॥

यह भी ग़लत! सब रस वीर के स्थायीभाव उत्साह से ही सरस हैं, यह बिलकुल भ्रम है—अज्ञान है। सब रस अपने अपने अनुभाव-विभावों से सुन्दर और पुष्ट होते हैं। दूसरे रस के स्थायीभाव से दूसरे की पुष्टि या सुन्दरता नहीं हुआ करती। यही नहीं, एक रस का दूसरे रस के साथ विरोध भी होता है। कहिए तो सही, यदि भयानक-रस के अवलम्बन-विभाव में वीर के स्थायीभाव उत्साह की भी रेखा हो तो क्या हाल होगा? यह फिर रस रहेगा या विष बन जायगा? कुछ पता नहीं! हाँ, तो दोहे का हेतु ठीक नहीं है। कोई भी रस दूसरे के स्थायीभाव से सुन्दर नहीं हुआ करता। उत्साह वीर-रस का स्थायीभाव है। इससे और रसों का उत्कर्ष नहीं हो सकता, अतएव वीर को रस-राज सिद्ध करने में यह समर्थ नहीं है। अलबत्ता इससे वीर रसराज सिद्ध होता है—

परिनामहुँ जो देतु है, लोकोत्तर आनन्द।
सुरस वीर रसराज सो, सहित उछाह अमन्द॥

वीर-रसानन्यता

छाँड़ि वीर रसु अब हमैं, नहिं भावतु रस आन।
ध्यायतु सावन आँधरो, हरो हरो हि जहान॥

इस दोहे में न तो दृष्टान्त ही है और न प्रतिवस्तूपमा ही—उपमान और उपमेय का साधारण धर्म न तो बिम्ब-प्रतिबिम्ब रूप से ही है और न उसकी शब्द-भेद से एक-रूपता ही है। सावन का अन्धा हरे हरे संसार का ध्यान नहीं किया करता, किन्तु उसे और कुछ दीखता ही नहीं—उसकी मनोवृत्ति ही वैसी हो जाती है। पर इस दृष्टान्त से प्रकृत का पोषण क्या और कैसे हुआ? यदि तन्मयता ही दिखाना अभीष्ट था तो 'भावतु' की जगह 'दिखात' आदि कोई पद देना चाहिए था। और भी—

कहा करौं माधुर्य्य लै, मृदुल मंजु बिनु ओज।
दिपैं न ज्योति-विकास बिनु, सुन्दर नैन-सरोज॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह ठीक नहीं। माधुर्य्य और ओज एकाधिकरणक हो ही नहीं सकते। दूसरी बात यह कि नयनों को सरोज बनाया तब उनके लिए 'दिपैं' क्रिया बिलकुल उपयुक्त नहीं। एक बात और। सभी ज्योतियों से सरोज नहीं खिलते, अतः यहाँ विशेष रूप से प्रखर-कर भगवान् भास्कर का ग्रहण होना चाहिए था। ओज का ठीक उपमान सूर्य्य है, न कि शीतल चन्द्रादि ज्योति भी। न चन्द्रादि के प्रकाश में सरोजों को विकसित करने की शक्ति ही है। बस, संक्षेप में इतना ही।

शूरवीर

खंड खंड ह्वै जाय बरु, देतु न पाछें पेंड़।
लरत सूरमा खेत की, मरत न छाँड़त मेंड़॥

बतलाइए, दोहे के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध में क्या फर्क है?

और—

मुँह-माँगे रण-सूरमा, देतु दान पर-हेतु।
सीस-दान हू देतु पै, पीठि-दान नहिं देतु॥

दोहे का प्रथम पद समस्त दोहे को इस प्रकार दूषित कर रहा है, जैसे सुन्दर शरीर में कुष्ठ का बुरा सा व्रण! ऐसा दानी सूरमा मुँह-मागे (मुख से माँगने पर ही) नहीं, किन्तु बिना माँगे भी याचक की इच्छा किसी तरह जान कर ही—'मुँह-माँगो' दान देता है। यों 'मुँह-माँगो' दान का विशेषण बन जायगा। 'मुँह-माँगे' पद से प्रकृत का अपकर्ष और 'मुँहमाँगो' से उत्कर्ष है।

दया-वीर

तूँहीं या नर-देह को, बलि पारखी अनूप।
दया-खड्ग मरमी तुही, दया-सूर शिवि भूप!

यहाँ दया में खड्ग का आरोप किया गया है, जो नितान्त भ्रष्ट है। उपमेय में उपमान का आरोप किसी न किसी साधारण धर्म के कारण हुआ करता है। परन्तु दया और खड्ग का कोई भी साधारण धर्म प्रसिद्ध नहीं है, इनका वैधर्म्म ही प्रसिद्ध है—एक से शत्रु की भी प्राण-रक्षा होती है और दूसरी उनके विध्वंस के लिए ही है। करुणा और हिंसा का किस बात में सादृश्य है? हाँ, एक प्रकार से दया का उपमान खड्ग हो भी सकता था; यदि उस दया-द्वारा किसी तरह शत्रु का नाश हो गया होता। प्रतिद्वन्द्वी शस्त्र-प्रहार करता है, तो भी कोई दयालु उस पर दया करता है। इस अनुपम गुण के कारण यदि शत्रु अपने आप हार मान बैठे अथवा और ही किसी तरह शिकस्त खा जाय तो अवश्य दया खड्ग कही जा सकेगी। परन्तु महाराज शिवि की दया से उनके किसी शत्रु की कोई वैसी बात नहीं हुई है। इसलिए यहाँ दया में खड्ग का आरोप उचित नहीं है। परम्परित रूपक में अप्रधान आरोप सादृश्य के बिना भी हो जाता है, सो यहाँ है नहीं। हाँ, यदि महात्मा गान्धी की दया में खड्ग का आरोप किया जाय तो ठीक भी है। मतलब यह कि जब तक प्रतिद्वन्द्वी-भाव न हो तब तक दया में खड्ग का आरोप उचित नहीं है। इस दोहे में भी अहिंसा में अस्त्र का आरोप उचित है।

भगवान् बुद्ध

दल्यो अहिंसा अस्त्र लै, दनुज-दुःख करि युद्ध।
अजय मोह-गज-केसरी, जयतु तथागत बुद्ध॥

यहाँ दुःख-रूपी राक्षस का विध्वंस करने के लिए अहिंसा को अस्त्र कहना उचित ही है। परन्तु एक दोष इस दोहे में भी आ गया है। उत्तरार्द्ध की उपमा से यह ध्वनित है कि बुद्ध ने बड़ी आसानी से मोह को जीत लिया। परन्तु वह मोह 'अजय' कह दिया गया है! यदि वह अजय है तो फिर उसे कोई जीत नहीं सकता और यदि किसी ने जीत लिया तो फिर वह अजय नहीं रहा। ये दोनों परस्पर विरुद्ध बातें वीर-सतसईकार ने साथ ही रख दी हैं, जिससे बिलकुल ही वाक्य दूषित हो गया है। 'अजय' की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगह 'प्रबल' या 'मत्त' आदि कर देने से यह दोष दूर हो सकता है।

सत्य-बीर

सुन्दर सत्य-सरोजु सुचि, विगस्यो धर्म-तड़ाग।
सुरभित चहुँ हरिचन्द कौ, जुग जुग पुन्य-पराग॥

यहाँ धर्म में तड़ाग का और सत्य में सरोज का रूपण हुआ है, सो तो ठीक, परन्तु 'पुन्य' में 'पराग' का रूपण बिलकुल असंगत है! कारण, धर्म और पुण्य एक ही बात है। अतएव जब धर्म में तड़ाग का रूपण हो चुका तब फिर पुण्य में पराग का रूपण अविचार-मूलक है। वही तड़ाग और वही पराग नहीं हो सकता। 'पुण्य' को जगह 'सुजस' कर देने से दोष दूर हो जाता है और यों 'चहुँ' भी गति-सम्पन्न हो जाता है; क्योंकि पुण्य चारों ओर नहीं फैलता, यश ही फैलता है। सो, यों इस दोहे का भी रूपक ग़लत है।

गीता-गुरु रस-वश!

तजि सरबसु रस-बसु कियो, गीता-गुरु गोपाल।
भाव-भौन-धुज धन्य वै, विरह-वीर ब्रज-बाल॥

इस जगह भगवान् को गीता-गुरु जब कह दिया तब फिर उन्हें रस के वश कहना उचित नहीं है। प्रेम-वश कहना ठीक भी हो जाता। रस के साथ गीता-गुरु का सामञ्जस्य नहीं है। 'रस-बसु' या 'गीता-गुरु' इन दो में से एक पद बदल देने से दोष दूर हो सकता है।

दधीचि की हड्डी

सुर-तरु लै कीजै कहा, अरु चिन्तामनि ढेरु।
इक दधीचि की अस्थि पै, वारिय कोटि सुमेरु॥

मालूम नहीं, दधीचि-अस्थि का सादृश्य कल्पवृक्ष, चिन्तामणि और सुमेरु से क्यों दिया गया है? दधीचि की अस्थि नहीं, स्वयं दधीचि महाराज से उक्त सादृश्य उचित है। अस्थि बेचारी तो देय पदार्थ है। उसकी क्या प्रशंसा और क्या बात? दोहा यों कर देने से ठीक हो जाता है:—

कहा बड़ाई कल्पतरु, अरु चिन्तामनि ढेरु।
इक दधीचि पै वारिए, कोटिन कोटि सुमेरु॥

शूर और कादर

सदय विवेकी सत्यव्रत, सुहृद लेखियतु सूर।
अविवेकी क्रोधी कुटिल, कादर कहियतु कूर!॥

दोहे में 'कूर' पद ऐसी जगह आया है जिससे प्रकट होता है कि 'सूर' का प्रतिद्वन्द्वी 'कूर' है, परन्तु यह बात नहीं है। उसका प्रतिद्वन्द्वी 'कादर' है। परन्तु 'कादर' शब्द ऐसे स्थल पर है जिससे उसका प्राधान्य नष्ट हो जाता है।

दूसरी बात यह कि पूर्वार्द्ध-वर्णित 'सूर' के विशेषणों के ठीक प्रतिकूल विशेषण 'कादर' के होने चाहिए थे और उसी क्रम से। परन्तु ये दोनों बातें बिगाड़ दी गई हैं। क्रम भी भ्रष्ट है और अन्तिम दो विशेषणों में प्रतिद्वन्द्विता भी नहीं है।

और देखिए—

कूकरु उदरु खलाय कै, घर घर चाटतु चून।
रँगे रहत सद खून सों, नित नाहर-नाखून॥

कुत्ता 'पेट खला' कर घर-घर चून नहीं चाटता, चोरी से चाटता है। दीनता प्रदर्शित करने में उक्त मुहाविरे का प्रयोग होता है। कुत्ता चोरी से घर घर चून चाटता है और टुकड़ा डालनेवाले के सामने पेट खला कर—दीन होकर—पूँछ हिलाने लगता है। इसलिए दोहे का पूर्वार्द्ध दूषित है, उसे यों परिवर्तित कर देने से दोष दूर हो जाता है—

कूकरु कुभछहु लाभ हित, दीन रहत दिन दून।
रँगे रहत सद खून सों, नित नाहर-नाखून॥

अथवा—

कूकरु जूँठनि के लिए, दीन रहन दिन दून।
" " " " ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और—

कहतु कौन कायर तुम्हैं, बल-सायर ! रणमाहि ।
भभरि भाजिबो पीठि दै, सबके बस कौ नाहिँ ॥

न जाने, 'सागर' न कह कर 'सायर' क्यों कहा है! दोहे का चौथा चरण भी ठीक नहीं है। शूर-वीर तो लाखों में एक होता है। ऐसी दशा में यह कहना कि घबराकर भाग खड़ा होना सबके बस की बात नहीं है, कुछ उचित नहीं है। सब तो भाग ही खड़े होते हैं, वीर ही नहीं भागते। तब फिर कहना यह चाहिए कि यों पलायन भी तो बहादुरी ही है। दोहे में 'व्याज-स्तुति' है। यों परिवर्तन कर देने से दोहा ठीक हो जाता है—

भभरि भाजिबो पीठि दै, कहा न विक्रम माहिँ ॥

युद्ध-वीर

केसरिया बागो पहिरि, कर कंकण उर माल ।
रण-दूलह ! बरि लाइयौ, 'दुलहिन' विजय 'सुबाल' ॥

'सुबाल' और 'दुलहिन' इन दो पदों में से एक अनावश्यक है—दोनों एकार्थक हैं। दूसरी बात यह कि ऊपर जो रण-दूलह का साज-सामान बतलाया है उसमें एक बड़ी कमी रह गई है। 'तलवार' का कहीं नाम ही नहीं आया ! और यही मुख्य है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि विवाह में तलवार का काम नहीं, अतः उसका ग्रहण नहीं किया गया। राजपूताने में और कहीं कहीं अन्यत्र भी यह प्रथा अब तक प्रचलित है कि दूलह तलवार धारण करता है। यही क्यों, तलवार के अभाव में उसका प्रतिनिधि-स्वरूप चाकू या लोहे की और कोई चीज़ रखने की प्रथा प्रायः सर्वत्र हिन्दुओं में है। और रण में तो यह प्रधान है ही। अतः कंकण आदि के साथ 'करवाल' का ग्रहण आवश्यक था और 'सुबाल' का परित्याग।

कल-माल

लरतु काल सों लाख में, कोइ माई कौ लाल ।
कटु केते करबाल कौं करत कंठ कल-माल ॥

'कल' शब्द 'शब्द' का ही विशेषण होता है। श्रुति-मधुर अस्फुट शब्द को 'कल' कहते हैं। इसलिए 'कल' को 'माल' का विशेषण बना देना ग़लती है।

तीन तीर्थ

अनल-कुण्ड असि-धार कै, रकत-रँग्यो रण-खेत ।
त्रय तीरथ तारण तरण, छिति छत्रिय-त्रिय हेत ॥

यहाँ असि-धार और रण-क्षेत्र का निर्देश पहले और अनलकुण्ड का बाद को करना था; क्योंकि अनलकुण्ड तो अगति की गति है—जब और कुछ न हो सका, तब अनलकुण्ड ! सो, अनल-कुण्ड का प्रथम-निर्देश वीरता की हत्या है। यों कर देने से ठीक हो जाता है—

असि-धारा, रण-खेत कै, अनलकुण्ड उद्दाम ।
छिति छत्रिय-कुल तरनहित, तीरथ तीन ललाम ॥

'कुल' न रख कर उसकी जगह 'त्रिय' पाठ भी रक्खें तो भी वैसी क्षति नहीं है; परन्तु 'कुल' में स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध सब आ जाते हैं। प्रतिज्ञा-भंग होने पर अर्जुन आदि का अनल-प्रवेश के लिए तैयार होना प्रसिद्ध ही है।

'वीर-किसान'

उक्त शीर्षक के नीचे वीर-सतसई में दो दोहे हैं। यह शीर्षक ठीक नहीं है। इससे प्रतीत होता है कि किसानों की वीरता का वर्णन होगा; परन्तु ऐसा नहीं है; सिर्फ़ वीर में किसान का रूपण है। इसी प्रकार 'वीर वैश्य' आदि शीर्षक ग़लत हैं। एक दोहा भी लीजिए—

बोय सीसु सींच्यो सदा, हृदय-रक्त रण-खेत ।
वीर-कृषक कीरति लही करी मही जस-सेत ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कि 'सीस' बो दिया तब फिर 'सदा' हृदय-रक्त से कैसे सींच सकता है? और उत्तरार्द्ध की 'कीरति' तथा 'जस' दो चीज़ें नहीं हैं, जिनका अलग अलग नाम आया है! यदि कहा जाय कि शत्रुओं के सिर काट कर बोये तो ठीक भी हो सकता है; परन्तु श्री वियोगी हरिजी के मन में शत्रुओं के सिर काटने की नहीं, अपना सिर कटवाने की ही बात है। देखिए दूसरा दोहा—

लै असि-हलु जोती मही, बोयो सीसु सुधान।
करि सुचि खेती जसु लुन्यो, धनि रजपूत-किसान॥

यहाँ 'बोयो' इस एक वचन क्रिया से सिर का एकत्व साफ़ है, जो शत्रुओं का न होकर अपना ही हो सकता है।

—किशोरीदास वाजपेयी

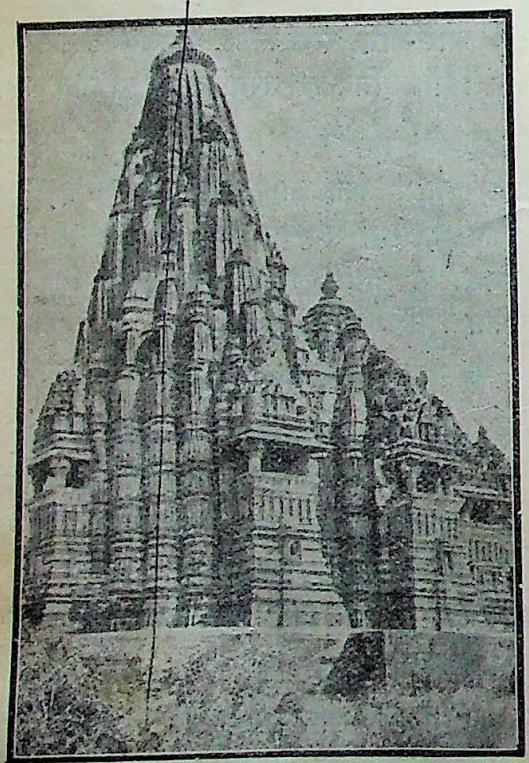

प्राचीन चिह्न

प्रत्येक जाति और प्रत्येक देश की प्राचीन सभ्यता को जानने के साधनों में प्राचीन इमारतें, प्राचीन स्थान और प्राचीन वस्तुएँ सबसे अधिक महत्त्व की समझी जाती हैं। इस पुस्तक के लेखों में पुराने नगरों, स्थानों और मन्दिरों आदि के संक्षिप्त विवरण देकर उनकी प्राचीन उन्नत अवस्था का उल्लेख किया गया है। नष्ट-भ्रष्ट वस्तुओं की रक्षा का एक-मात्र यही उपाय है कि पूरी तरह से उनका वर्णन पुस्तकों में हो, इसी विचार से यह उत्तम पुस्तक तैयार की गई है। पूरी किताब मनोरञ्जक और कौतूहल-वर्द्धक होने के सिवा अन्य दृष्टियों से भी ज्ञानप्रद अतएव जानने योग्य है। प्रत्येक इतिहास-प्रेमी को पूज्य द्विवेदीजी की यह पुस्तक अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य ॥।) बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—उस पार

मुझे जाना है उस पार,
उठा माँझी अब पतवार !

मुझे यह मिलता है आभास,
वहाँ का पथ है कण्टकहीन;
वहाँ है व्याप्त मुक्त वातास;
वहाँ है प्यार द्वन्द्व से हीन !

मुझे जाना है उस पार,
उठा माँझी अब पतवार !

उदधि का यह जल अतल अपार,
सहस्रों उसकी विमल तरङ्ग;
सतत जो रहती हैं अविराम,
शान्ति है—उनकी आज उमङ्ग !

मुझे जाना है उस पार,
उठा माँझी अब पतवार !

अरे ये प्राण, प्राण के प्राण,
बने हैं ये विहङ्ग उद्भ्रान्त;
वहाँ की सुषमा स्वर्गिक देख,
वहाँ का पा सौरभ सम्भ्रान्त !

मुझे जाना है साकार,
उठा माँझी अब पतवार।

—मंगलप्रसाद विश्वकर्मा

२—कामिनी या बाघिन

सभ्यता की स्थिति के अनुसार मनुष्यों की न्याय-प्रणाली भी परिवर्तित होती रहती है। अत्यन्त प्राचीन समय में आज-कल के समान कचहरियाँ न थीं। राजा स्वयं न्याय सुनाता था। उस समय न्याय का ढङ्ग अति असंस्कृत एवं विचित्र था। उसी काल के लगभग तरभा नामक देश में भीषण नाम का एक उजड्ड तथा मनमौजी राजा राज्य करता था। उसके विचार इतने अपरिमार्जित थे कि उसे अर्द्ध-बर्बर कहना अनुचित न होगा। उसका निर्देश ही नियम था। स्वादेश-भंग सुनकर वह आग का पुतला हो जाता था और अपराधी को कठोर से कठोर दण्ड देता था।

उस राजा ने एक सार्वजनिक अखाड़ा बनवाया था। उस अखाड़े को उसने यथाविधि सुसज्जित कर उसके निकट भूलभुलैया के सदृश एक गोलाकार रङ्गभूमि बनवाई थी, जिससे दर्शक उस पर होनेवाले खेलों का भले प्रकार अवलोकन कर सकें। इस अखाड़े में मानुषीय तथा पाशविक बल का प्रदर्शन कराकर जनता की मानसिक शक्ति को विकसित करने का भी प्रयत्न किया जाता था।

उस अखाड़े में पक्षपात के बिना दोषी को दण्ड तथा निर्दोषी को पुरस्कार प्रदान किया जाता था। जब कभी किसी बड़े अपराधी की सूचना राजा को दी जाती तब वह जाँच के निमित्त उस अपराधी को अपने अखाड़े में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी नियत समय पर बुलाता था। जिस दिन अभियुक्त की जाँच होने को होती थी उसकी सूचना समस्त प्रजा को दे दी जाती थी। नियत समय पर सब लोग कौतुक-वश वहाँ एकत्र होते थे। राजा उच्च सिंहासन पर बैठकर अपराधी को वहाँ के दो कमरों में से किसी एक कमरे के किवाड़ खोलने की आज्ञा देता था। ये दोनों कमरे एक दूसरे से मिले हुए तथा एक ही प्रकार के बने थे। इन कमरों में एक में एक अति सुन्दर कामिनी और दूसरे में एक अति भयानक तथा क्षुधार्त्ता बाघिनी पहले से ही बन्द कर दी जाती थी। यह बात अत्यन्त गुप्त रक्खी जाती थी कि किस कमरे में कौन है। अभियुक्त अपने इच्छानुसार किसी एक कमरे का दरवाज़ा खोलता। यदि दुर्भाग्यवश वह बाघिनीवाला कमरा खोल डालता तो फिर क्या। बेचारा शीघ्र काल का ग्रास बन जाता। बाघिनी झट उस पर आक्रमण कर उसे हड़प कर जाती। दर्शक उसके दुर्भाग्य पर शोक करते हुए अपने अपने घर चले जाते। और यदि कहीं सौभाग्यवश वह कामिनी-वाला कमरा खोल लेता तो फिर उसकी चाँदी हो जाती। समारोह-पूर्वक उन दोनों का पाणिग्रहण होता और अभियुक्त निर्दोष माना जाता। विवाहित तथा अवि-वाहित सबको ऐसे संयोग पर विवाह करना अनिवार्य था। ऐसा न करने पर वह दण्ड पाता। बस, न्याय की यही सर्वोत्तम पद्धति समझी जाती थी।

राजा के मोहनी नाम की एकलौती पुत्री थी, जिसे वह अपनी आँखों का तारा समझता था। मोहनी भी अपने पिता के समान कठोरहृदय, ईर्ष्यालु तथा रूखे स्वभाव की थी। युवा होने पर वह राज-दरबार के एक युवक पर आसक्त हो गई। स्वभावतः दोनों के पार-स्परिक प्रेम की सरिता उमड़ चली, दोनों स्नेह के पाश में बँध गये।

संयोगवश राजा को उन दोनों के प्रेम का हाल ज्ञात हो गया। वह इस बात को न सह सका। उसने तुरन्त युवक को कारागार में बन्द करवा दिया। प्रचलित प्रथा के अनुसार उसके प्रेम में फँसने के औचित्य की जाँच करने के लिए एक दिन नियत किया गया। देश-देशान्तरों से ढूँढ़कर एक अति भीषण बाघिनी मँगाई गई। युवक के अवस्थानुसार एक दिव्य कान्ता भी छाँटी गई। दोनों उस अखाड़े के एक एक कमरे में बन्द कर दी गईं। नियत दिवस पर जन-समुदाय एकत्र हुआ। राजा ने अपने उच्च आसन पर बैठकर अभियुक्त को किसी एक कमरे का द्वार खोलने की आज्ञा दी।

राजा के पास मोहनी भी विराजमान थी। उसको भी उस दृश्य के देखने की बड़ी लालसा थी। अहर्निशि सोते-जागते उठते-बैठते इस स्थान का दृश्य उसके मानसिक चक्षुओं के सामने उपस्थित रहता। उसने गुप्तरीति से यह ज्ञात कर लिया था कि किस कमरे में कामिनी बन्द थी और किसमें बाघिनी। केवल यही नहीं, उसने उस निर्वाचित कामिनी के भी विषय में अनेक बातों का पता लगा लिया था। वह उस देश की सबसे कमनीय युवती थी। यह सब हाल जान कर मोहनी के हृदय में सौतियाडाह की ज्वाला धधक उठी। वह अपने प्रेमी तथा उसकी भावी कान्ता के भविष्य पारस्परिक प्रेम का चित्र अपने मानस-पटल पर खचित करने लगी।

आदेश पाकर युवक अखाड़े में उतरा। उसने रीति-नुसार राजा को प्रणाम किया। परन्तु ऐसा करते ही मोहनी से उसकी दो-चार आँखें हो गईं। युवक ने यह आशा कर कि मोहनी जानती होगी कि किस कमरे में कामिनी है और किस में बाघिनी, आँखों के इशारे से कामिनीवाला कमरा पूछा। खग जाने खग ही की भाषा। मोहनी झट उसके मनोगत भाव को ताड़ गई और अपने नेत्रों से दाहने कमरे की ओर इङ्गित कर दिया। युवक ने बिना किसी सङ्कोच के तुरन्त दाहनी ओर के कमरे का दरवाज़ा खोल दिया।

परन्तु अब प्रश्न यह है कि कमरे से कौन निकला? कामिनी या बाघिनी? हमें इस बात का पता लगाना है कि मोहनी ने कामिनीवाले कमरे की ओर इशारा किया अथवा बाघिनीवाले की ओर। मानव-हृदय के अध्ययन से इस प्रश्न का उत्तर मिल सकता है। पाठक उस अर्द्ध-बर्बर राजकुमारी के चरित्र से इस बात का पता लगा सकते हैं कि कमरे से कौन निकला। उसका प्रेमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके हाथ से निकल गया था। वह उस पर दूसरे का प्रेम कैसे देख सकती थी? न्याय-दिवस के कई दिन पहले से ही वह अनेक प्रकार के विचारों में मग्न रहती थी। कभी वह अपने प्रेमी-द्वारा बाघिनीवाला कमरा खोलने का विचार करके शोकार्त्त हो बीभत्स तथा भयानक रसों का आस्वादन करती; और कभी वह दूसरा कमरा खोलने का ध्यान करती। ऐसा विचार करते ही वह ईर्षाडाह की ज्वाला में भस्म होने लगती। इसी प्रकार इन दोनों विचारों का आवागमन उसके कल्पना-क्षेत्र में हुआ करता। कभी कभी वह यह भी सोचती कि यदि मेरे प्रेमी को बाघिनी ने खा भी डाला तो मुझको अधिक शोक न करना चाहिए, क्योंकि परलोक में मेरा तथा उसका मिलाप अवश्य होगा। परन्तु हा! मैं जीते जी उसकी दूसरी प्रेयसी को कैसे देख सकती हूँ?

मोहनी ने नियत दिवस के सात-आठ दिन पूर्व ही युवक के प्रश्न के उत्तर के विषय में निश्चय कर लिया था, क्योंकि वह जानती थी कि यह प्रश्न उससे पूछा जायगा। इसी कारण प्रश्न पूछे जाने पर उसने तत्क्षण दाहने कमरे की ओर इशारा कर दिया। अलम्! अब पाठक विचार कर लें कि कमरे से कौन निकला। कामिनी या बाघिनी?*

राजकिशोर तिवारी 'कान्त'

३—भारतीय छायाचित्र

वर्तमान समय के छायाचित्र अनेक कार्यों में व्यस्त रहनेवाले जन-समाज के मनोरञ्जन के हेतु एक साधन से बन गये हैं। छायाचित्र केवल मनोरञ्जन के ही साधन न होने चाहिए, किन्तु इनमें ज्ञान-शक्ति और शिक्षा का भी समावेश होना चाहिए।

भारतीय छायाचित्र-व्यवसायी जन-समाज की मनोवृत्ति के आधार पर ही 'कथा' पसन्द करते हैं। परन्तु यहाँ यह कह देने में कोई हानि न होगी कि जन-समाज को ऐसी मनोवृत्तियों की ओर झुकानेवाले ये व्यवसायी ही हैं। यदि ये प्रथम से ही इस पर लक्ष्य रख कर उन्हें ऐसी मनोवृत्तियों के पोषक न बनाते तो आज इन्हें "देभर" टाइप के छायाचित्र बनाने की आवश्यकता ही न पड़ती। साथ ही व्यवसायी भी साहित्यिक या प्रजाहित की दृष्टि से छायाचित्र नहीं बनाते हैं, बरन इनका एक-मात्र उद्देश अपनी तिजोरियों को तर करने का ही रहता है।

जन-समाज का मानस भी इतना क्षीण हो गया है कि वह निरर्थक घुड़दौड़, नीरस पटेबाज़ी और वाहियात मारकाट के ही पीछे पागल बना फिरता है।

रूस में लोक-शिक्षा के लिए जितने साधन काम में लाये जाते हैं उनमें छायाचित्र ही एक-मात्र उत्कृष्ट साधन गिना जाता है।

यह तो सर्वविदित बात है कि छायाचित्रों और नाटकों के द्वारा जन-समाज की उन्नति में जितनी सहायता मिल सकती है, उतनी उपदेशों के करने से नहीं! इसी लिए आज छायाचित्रों के मार्ग में परिवर्तन करने की अत्यन्त आवश्यकता प्रतीत होती है। यह ठीक है कि सेन्सरबोर्डों की दृष्टि छायाचित्रों पर आठों पहर लगी रहती है। और इसी कारण हम अति उद्दाम तथा स्वदेशाभिमानी घटनाओं से परिपूर्ण छायाचित्र पर्दे पर नहीं दिखला सकते! परन्तु इसमें भी कई मार्ग ऐसे हैं जिनके द्वारा हम अपने उद्देशों की पूर्ति करते हुए भी सेन्सरबोर्डों की दृष्टि से बच सकते हैं।

हम सामाजिक जीवन में क्रान्ति पैदा करने के हेतु चाहे जैसी उग्रता स्क्रीन पर ला सकते हैं, इसमें सेन्सर किसी प्रकार का भी आक्षेप नहीं कर सकता है; लेकिन दुःख है कि इस क्षेत्र में अभी तक उचित ध्यान नहीं दिया गया है। छायाचित्रों में नवीनता लाने से कितने ही लाभ हो सकते हैं। एक ही प्रकार के छायाचित्रों को देखते देखते जनता भी उकता गई है। हमें अब आधुनिक जीवन की समस्याओं पर चारों ओर प्रज्वलित सामाजिक छायाचित्र का भयङ्कर से भयङ्कर चित्र स्क्रीन पर चित्रित करके उनकी आवश्यकतायें पूरी करना चाहिए।

छायाचित्रों को नये मार्ग पर लाकर भारतीय राष्ट्र को जागृत करने का समय आ पहुँचा है। इसके बिना

* एक अँगरेज़ी कहानी के आधार पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छायाचित्रों का अस्तित्व व्यर्थ व निरर्थक है। यह समय जीवन और जागृति का है, अतः ऐसे ही मार्गों का अनुसरण करना सिनेमा-कला को भी उचित है।

यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो नाटक और छायाचित्रों के बीच बहुत अन्तर है। नाटक की गति मन्द है—शिथिल है! इसकी कला धीरे धीरे विकसित होती है। इसमें लम्बे लम्बे भाषणों और गानों को सुनने के लिए प्रेक्षकों को घण्टों बैठना पड़ता है। इससे वस्तुविकास का वेग रुक जाता है। परन्तु छायाचित्र की गति इससे भिन्न है! छायाचित्र प्रचंड गति से आगे बढ़ते हैं। नाटक से तिगुनी गति के साथ इनमें घटनाक्रम बन जाते हैं। यदि प्रतिसप्ताह नियमित रूप से छायाचित्र बदलते रहें; तो सम्भव है कि छायाचित्रों की प्रगति में नाटकों का स्थान लुप्तप्राय हो जाय!

यदि जनता को कला और साहित्य की शिक्षा देने की अनिवार्य आवश्यकता हो—स्वार्थ-साधन में गोते खाते हुए मनुष्यों को स्वदेश और समाज के प्रति कुछ कर दिखाने की इच्छा हो—हृदयहीनों में पुनः नवजीवन का संचार करा देने की आशा हो, तो वर्तमान छायाचित्रों को नये मार्ग पर विचरण कराने के सिवा हमें तो अन्य कोई मार्ग दृष्टिगोचर नहीं होता है।

—कृष्णचन्द्र भुअल 'दुखित'

४—लाक्षागृह*

उपनाम

लच्छागिर

यह स्थान गंगा के उत्तरीय तट पर प्रयाग-नगर से कोई २२ मील पूर्व तथा बी० एन० डबल्यू रेलवे के 'हँड़िया ख़ास' स्टेशन से ३ मील दक्षिण की ओर है। यहाँ गंगा-किनारे लगभग २९ बीघे का एक बड़ा टीला है। इसी का नाम 'लच्छागिर' है।

महाभारत के आदिपर्व में अध्याय १४२ से एक कथा आरंभ होती है, जिसका सार यह है कि दुर्योधन ने पाण्डवों (युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव तथा अर्जुन) को नष्ट करने के लिए एक षड्यंत्र इस प्रकार रचा कि समस्त हस्तिनापुर में यह घोषित करा दिया कि 'वारणावत' नगर में पशुपति नाम का एक महोत्सव बड़े समारोह से होनेवाला है। यह समाचार सुनकर पाण्डव अपनी माता कुन्ती-सहित वहाँ जाने को तैयार हो गये। यह देखकर दुर्योधन ने अपने मंत्री पुरोचन को बुलाकर कहा कि 'तुम पहले से वारणावत पहुँच कर नगर के किनारे जतुगृह अर्थात् सन और धूप इत्यादि अग्नि-वर्द्धक पदार्थों से एक ऐसा भवन तैयार कराओ जिसकी दीवारें घृत, तैल तथा लाख आदि से लिपी हुई हों। पाण्डवों को बड़ी अभ्यर्थना के साथ उसमें ठहराना और किसी दिन अवसर पाकर उनके सो जाने पर उसमें आग लगा देना।' परन्तु विदुरजी ने पाण्डवों से वहाँ का यह सब रहस्य बता दिया। तदनन्तर पाण्डव फाल्गुन महीने की अष्टमी को रोहणी नक्षत्र में वारणावत को चले। जब वे (पाण्डव) वहाँ पहुँचे तब पुरवासियों ने बड़ी धूम-धाम के साथ उनका स्वागत किया। पुरोचन ने भी उनका बहुत आदर-सत्कार किया और उनको पहले एक प्रथक् स्थान में ठहरा दिया। दस दिन व्यतीत होने पर वह उनको जतुगृह में ठहराने के लिए लिवा ले गया। इसी बीच में विदुर का भेजा हुआ एक चतुर खनिक युधिष्ठिर के पास आया और उसने उस भवन के भीतर से बाहर निकलने के लिए एक सुरंग चुपचाप खोदना आरंभ किया। एक वर्ष के पश्चात् जब वह सुरंग बन कर तैयार हो गई तब एक दिन कुन्ती ने ब्रह्मभोज किया, जिसमें वहाँ के नगर-निवासी भी निमंत्रित किये गये। पुरोचन भी आया। सब लोग खा-पीकर अपने अपने घर चले गये, परन्तु पुरोचन और एक भीलनी जिसके पाँच बच्चे थे, वहीं सो रहे। उस रात को हवा बड़े वेग से चल रही थी और सब लोग निद्रादेवी की गोद में अचेत पड़े हुए थे। भीम ने सुअवसर देखकर जिस खंड में पुरोचन सोता था पहले उसी ओर आग लगा दी, अग्नि बात

*('प्रयाग-प्रदीप' नामक एक अप्रकाशित पुस्तक से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बात में जतुगृह के चारों ओर फैल गई। पाण्डव अपनी माता-सहित सुरंग में जा घुसे और उसके द्वारा सुरक्षित बाहर निकल गये। वे वहाँ से रातों रात कुछ दूर तक गंगा के किनारे किनारे चले, फिर विदुरजी की भेजी हुई एक नौका मिली। उसी से पार उतर कर वे दक्षिण की ओर चले गये।

उत्तर

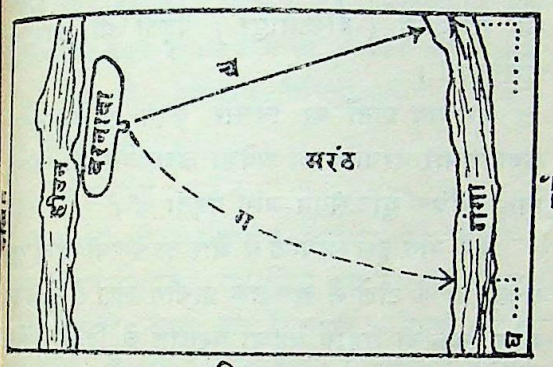

दक्षिण

स्थानीय दन्तकथा यह है कि उक्त 'वारणावत' वही स्थान था जो पीछे इस घटना के कारण 'लाक्षागृह' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। फिर पीछे बिगड़ कर 'लच्छागिर' हो गया। पाण्डव लच्छागिर कुछ दूर तक (लगभग ६ मील) गंगा के किनारे-किनारे पश्चिम की ओर चलकर सिरसा के सामने गंगापार करके दक्षिण 'मेजा' की ओर गये थे।

परन्तु यह विषय विवादास्पद है, क्योंकि कुछ विद्वानों का यह मत है कि प्राचीन 'वारणावत' मेरठ के ज़िले में था, जो अब तहसील ग़ाज़ियाबाद में 'बरनावा' के नाम से प्रसिद्ध है।* वहाँ एक ऊँचा टीला 'खेड़ा' के नाम से प्रसिद्ध है, इसको लोग लाख का मंडप कहते हैं। मेरठ-ज़िले के गज़टियर में इतिहास का भाग मिस्टर आर० बर्न ने लिखा है। उनका कहना है कि बरनावा के अतिरिक्त लच्छागिर का भी वारणावत होना बतलाया जाता है।*

हम कुछ विस्तार के साथ यहाँ यह विचार करना चाहते हैं कि इन दोनों स्थानों में किसके पक्ष में वारणावत होने का अधिक अनुमान किया जा सकता है—

यहाँ पाठकों को सुगमता के लिए इन दोनों स्थानों के स्थिति-सूचक दो छोटे-छोटे मान-चित्र दिये जाते हैं—

बरनावा के विषय में वारणावत होने का अनुमान निम्न कारणों से हो सकता है—

(१) वारणावत से उसका नाम अधिक मिलता-जुलता है।

(२) बरनावा लच्छागिर की अपेक्षा हस्तिनापुर से अधिक निकट है।

उत्तर

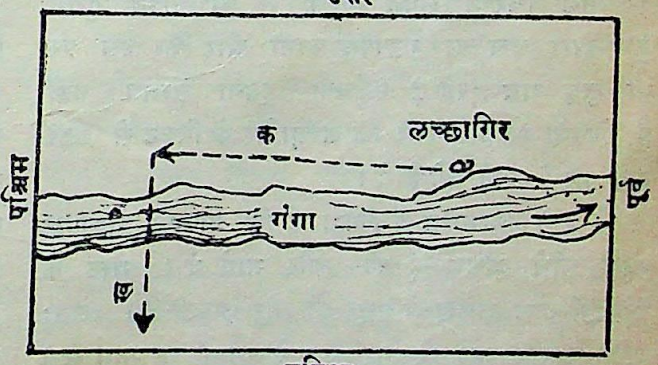

दक्षिण

अब लच्छागिर के पक्ष के प्रमाणों तथा युक्तियों को देखिए—

* देखो Geographical Dictionary of Ancient and Mediæval India by Mr. Nando lal Dey, P. 101 तथा District Gazetteer Meerut, P. 205 and 206.

* District Gazetteer Meerut, P. 148 तथा Archaeological Survey of India New Series by Dr. Führer Vol. II p. 143.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) महाभारत के पढ़ने से मालूम होता है कि वारणावत गंगा के तट पर था,* लच्छागिर भी अब तक ठीक गंगा के किनारे पर है। उधर बरनावा गंगा से कम से कम ४० मील दूर हींडन-नदी पर है।

(२) महाभारत में है कि पाण्डव वारणावत के जतुगृह से निकल कर रात को पहले कुछ दूर तक गङ्गा के किनारे किनारे ('क' मार्ग-द्वारा) चले। फिर जब उनको विदुरजी की भेजी हुई नौका मिली तब उससे पार उतर कर वे दक्षिण की ओर ('ग' मार्ग से) रातों रात भाग गये।

लच्छागिर से दक्षिण मिली हुई गङ्गा पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है। अतः उसके निकट गङ्गापार करके पाण्डवों का दक्षिण की ओर भागना अधिक युक्ति-संगत है।

दूसरी ओर एक तो बरनावा के निकट गङ्गा है ही नहीं, दूसरे कम से कम आधी रात के उपरान्त जब सब सो गये होंगे तब जतुगृह में आग लगाई गई होगी, अतः उस रात के शेष ६ घण्टे में पाण्डवों का बरनावा से ५० ६० मील अँधेरे में सघन वनों † से आच्छादित दुर्गम मार्ग-द्वारा चल कर गङ्गापार करना और फिर उस पर भी कुछ रात रहे ‡ पहुँचना इतना सम्भव नहीं है, जितना यह मानने में कि लच्छागिर के निकट से गङ्गा उतर कर वे आगे गये होंगे।

(३) महाभारत में लिखा है कि पाण्डव गङ्गापार करके सीधे दक्षिण § की ओर भागे थे। मेरठ के ज़िले में गङ्गा दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। अतः यदि पाण्डव वहाँ से पार उतरते तो ('ग' मार्ग से) सीधे पूर्व की ओर उनका जाना अधिक स्वाभाविक था। यदि दक्षिण की ओर उनको जाना था तो उस पार नाव से उतर पड़ने की कोई आवश्यकता न थी, क्योंकि स्थल की अपेक्षा जल-मार्ग से ही वे अधिक आराम से दक्षिण की ओर जा सकते थे।

(४) यदि यह कल्पना की जाय कि बरनावा से ('च' मार्ग-द्वारा) वे भाग कर पार उतरे होंगे तो ऐसी अवस्था में उनका दक्षिण की ओर जिधर उनके शत्रुओं की राजधानी (हस्तिनापुर) पड़ती थी, जाना महा-मूर्खता थी।

इन सब बातों पर विचार करने से महाभारत के कथनानुसार बरनावा की अपेक्षा लच्छागिर का वारणावत होना अधिक युक्तिसंगत जान पड़ता है।

एक बात इस सम्बन्ध में और उल्लेखनीय है वह यह कि लच्छागिर के टीले में अब तक प्राचीन काल से लेकर यवन-काल तक की मुद्राएँ बहुधा बरसात के दिनों में मिलती हैं जो इस बात का सूचक हैं कि पुराने समय में यहाँ कोई महत्त्व-पूर्ण स्थान अवश्य रहा होगा। अभी थोड़े दिन हुए ३० सिक्के हमको इस स्थान से मिले हैं, जिनमें ६ बौद्धकाल के और २ अवन्ती के राजाओं के समय के हैं। इनमें से किन्हीं किन्हीं सिक्कों पर ब्राह्मीलिपि में लेख हैं। विशेषज्ञों का मत है कि ये सिक्के २०० वर्ष ई० पू० से सन् १८० ई० तक के होंगे। शेष यवन-काल के हैं, जिनमें फ़ारसी-अक्षरों में लेख हैं। बरनावा से ऐसी पुरानी मुद्राओं के मिलने का हमको कहीं उल्लेख नहीं मिला।

इस समय लच्छागिर एक साधारण गाँव के रूप में बसा हुआ है। केवल इतना महत्त्व है कि सोमवती अमावस्या तथा वारुणी के अवसर पर वहाँ गङ्गा-स्नान का बड़ा मेला लगता है।

—शालग्राम श्रीवास्तव

* महाभारत आदिपर्व अ० १५१ श्लो० ५,११। अ० १५२ श्लो० १९ तथा श्रीचिन्तामणि विनायक वद्यकृतै महाभारत-मीमांसा हिन्दी पृ० ४०९।

†महाभारत आदिपर्व अ० १५२ श्लो० २२
‡ ,, ,, ,, १५२ ,, २१
§ ,, ,, ,, १५२, ,, २०

५—कुसुम !

कुसुम !

अंशुमाली की तिग्म रश्मियों की ऊष्मा से मुरझाई हुई तुम्हारी यह करुणोत्पादक दशा किस सहृदय के हृदय को न पिघला देगी? तुम्हें ही यदि निज अस्तित्व का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किञ्चित् भी ज्ञान होता तो तुम्हारे भी नयन आज दो-चार अश्रु-बिन्दुओं से वसुन्धरा का अर्चन अवश्य कर देते।

कहाँ तो तुम्हारा वह अभिनव विकसित यौवन, दर्शक-वृन्द के चित्तों को आकर्षित करनेवाला आकर्षण और प्रेमी-युगलों के हृदयों को रंजित करनेवाला लालित्य और कहाँ यह तुम्हारी जीर्ण-शीर्ण दुर्दशा, धूलि-धूसरित, दलित और इतस्ततः बिखरी हुई पँखुड़ियाँ! इस आकर्षणीय और हृदय-द्रावक दृश्य को देखकर बरबस मुँह से निकल पड़ता है—'कालस्य विचित्रा गतिः'। ओह! कितना परिवर्तन!!

हा, रंक कुसुम!

तुम लुट गये, तुम्हारा अक्षय भाण्डार खो गया—तुम राजा से रंक हो गये। लुट चुका तुम्हारा वह सौरभ-भण्डार, जिसकी भिक्षा का भिखारी अलिपुञ्ज तुम्हारे समीप आकर निरन्तर मृदु-झङ्कार से तुम्हारी वन्दना किया करता था, जिसकी याचना के लिए शीकर-शीतल-पवन सर्वदा तुम्हारी परिक्रमा किया करता था और जिसके कारण मानव-समाज तुम्हारा आदर, सत्कार और अभिनन्दन किया करता था।

कुसुम!

बतलाओ, बोलते क्यों नहीं हो। क्यों मौनावलम्बन कर लिया है?

कहाँ है वह तुम्हारा सहायक बाल-सखा, मधुकर-मण्डल, और तुम्हारे साथ बाल्यकेलि करनेवाला प्रतिहतगामी मातरिश्वा—जिनके ऊपर तुम इतना भरोसा किया करते थे? बोलो इस दयनीय संकट-ग्रस्त दशा में तुम्हारी सहायता को क्यों नहीं आते?

अरे भोले कुसुम!

तुम इस प्रपञ्ची संसार में प्रपञ्चियों से वञ्चित किये गये हो। याद रक्खो, यह संसार प्रपञ्च का पुतला है। यहाँ बड़े छोटों को हड़प जाने के लिए, उनको तहस-नहस कर डालने के लिए अनेक प्रकार के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रयत्न करते रहते हैं। अतएव संसार में भोले और सरल लूटे तथा पीसे जाते हैं। तुमने अपनी सरल प्रकृति के कारण अपना सर्वस्व, आजन्म सञ्चित कोष लुटा दिया सो भी इस प्रकार कि तुम जान भी न पाये।

कहाँ है तुममें अब सौरभ, मकरन्द और मधुरता? कहाँ है तुम्हारे पास लालित्य, कोमलता, सरसता और विकसता? अरे भोले, छलिया तुम्हें छल चुके। अब तुम्हें भ्रमर या अनिल से आशा करना व्यर्थ है। मानव-समाज भी तुम्हारा उपभोग कर चुका। अब वह तुम्हें नीरस, निर्गन्ध और त्याज्य समझता है। तुम उसकी दृष्टि में तुच्छ हो। हा! इस समय संसार में तुम्हारा कोई भी आश्रयदाता नहीं है। वाह रे स्वार्थी संसार!

परन्तु,

कुसुम!

तुम्हारा जीवन धन्य है, अनुकरणीय है और वन्दनीय है। बिरले ही प्राणी तुम्हारे जैसे उत्कृष्ट जीवन के साँचे में ढले हुए मिलेंगे। तुम्हारे जीवन का एक एक क्षण परोपकारजन्य आनन्द-रस से सिक्त था। जन्म से लेकर आज पर्यन्त तुमने परोपकार को ही अपनाया। उसको ही अपने जीवन का मुख्य ध्येय चुना। तुमने निःसङ्कोचभाव से अपना परिमल और किञ्जल्क, भ्रमरों और पवन को लुटाकर, दान देकर रिक्त कर दिया। स्वयं निर्धन बनकर दूसरों को धनी बना दिया।

अधिक क्या कहें, परोपकार के सुदृढ़ सिद्धान्त पर ही तुम्हारा सुकोमल शरीर तीक्ष्ण सूई से छेद कर इष्टदेव के पुष्पोपहार में गूँथा गया। आज सूर्य्य की प्रखर किरणों से झुलसी हुई, पथ में पड़ी हुई तुम्हारी एक एक पँखुड़ी मौन-रूप से आने-जानेवाले यात्रियों को परोपकार का पाठ पढ़ा रही है। संसार बधिर है, वह तुम्हारी मौन-भाषा न समझ सकेगा, परन्तु तुम्हारे पाठ का एक एक शब्द मेरे हृन्मन्दिर में तारस्वर से प्रतिध्वनित होकर गुञ्जायमान हो रहा है।

—चन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६—मैक्डानल्ड यूनीवर्सिटी हिन्दू-बोर्डिंग-हाउस प्रयाग की स्वदेशी प्रदर्शनी

भारत में स्वदेशी का बहुत दिनों से प्रचार है और इस बात का प्रयत्न होता रहा है कि हमारे यहाँ हमारी आवश्यकता की सब चीज़ें बनने लगें। इस प्रयत्न से भारतवासी स्वदेशी वस्तुएँ ख़रीदने लगे हैं। आशा है, अब देश की दशा बहुत कुछ सुधर जायगी। बहुत से बेचारे ग़रीबों को पेट भर अन्न मिलने लगेगा। परन्तु केवल चीज़ों के बनने से देश का भला न होगा। लोगों को यह भी मालूम हो जाना चाहिए कि देश में क्या क्या चीज़ें बनती हैं। इसके लिए प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। आचार्य राय ने कलकत्ता में एक स्वदेशी प्रदर्शनी का उद्घाटन करते समय कहा था कि स्वदेशी-प्रचार के लिए प्रदर्शनियाँ आवश्यक हैं और हमको ऐसी प्रदर्शनियाँ भिन्न भिन्न स्थानों पर करनी चाहिए। इससे लोगों को मालूम हो जायगा कि देश में क्या क्या चीज़ें बनती हैं। आज-कल बहुत से स्थानों में स्वदेशी वस्तुएँ नहीं पहुँचतीं। प्रदर्शनी-द्वारा इन स्थानों में भी वे सब पहुँचने लगेंगी।

प्रदर्शनी से व्यापारी तथा ग्राहक दोनों को ही लाभ होता है। व्यापारी की बिक्री ऐसे अवसर पर अच्छी हो जाती है, साथ ही उसका विज्ञापन भी हो जाता है। दूर दूर के व्यापारी एक ही स्थान पर एकत्र होते हैं, जिससे उनको अपनी चीज़ों की बुराई-भलाई मालूम हो जाती है। ऐसे अवसर के लिए व्यापारी अच्छे से अच्छा माल बना कर लाता है और उसको मूल्य भी अच्छा मिलता है। इससे वह नई चीज़ें बनाने के लिए और भी उत्साहित होता है। ग्राहकों को भी अच्छी और हर प्रकार की चीज़ें प्रदर्शनी में सस्ते दाम में मिल जाती हैं।

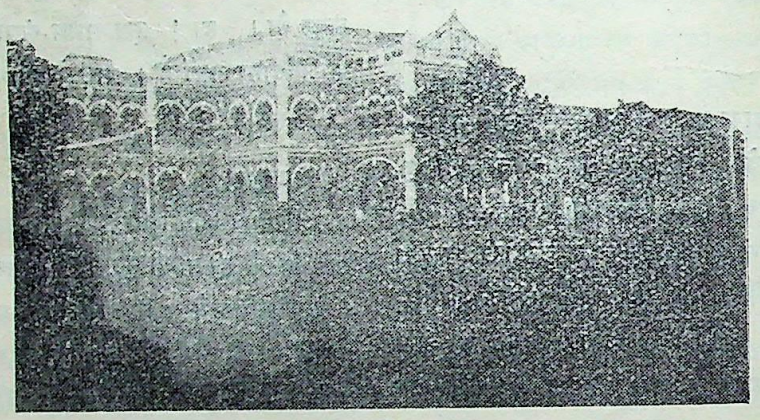

[हिन्दू-बोर्डिंग-हाउस जहाँ श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया]

इसके सिवा देश को भी बहुत फ़ायदा होता है। लोगों का ध्यान आविष्कार करने की ओर आकर्षित होता है और देश का व्यापार भी उन्नत होता है। जिस स्थान में प्रदर्शनी होती है, वहाँ के लोगों का उत्साह बढ़ जाता है। इसलिए हमको चाहिए कि समय-समय पर भिन्न-भिन्न स्थानों में ऐसी प्रदर्शनियाँ करके लोगों को स्वदेशी का प्रेम सिखायें। व्यापारियों को भी पुरस्कार देकर उत्साहित करना चाहिए। बम्बई-प्रान्त के बहुत से भागों में ऐसी प्रदर्शनियाँ होती रहती हैं, पर हमारे प्रान्त में ऐसी कोई प्रदर्शनी सन् १९११ के बाद से नहीं हुई। हाल में प्रयाग में एक ऐसी ही प्रदर्शनी हुई थी, जिसका वर्णन यहाँ किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

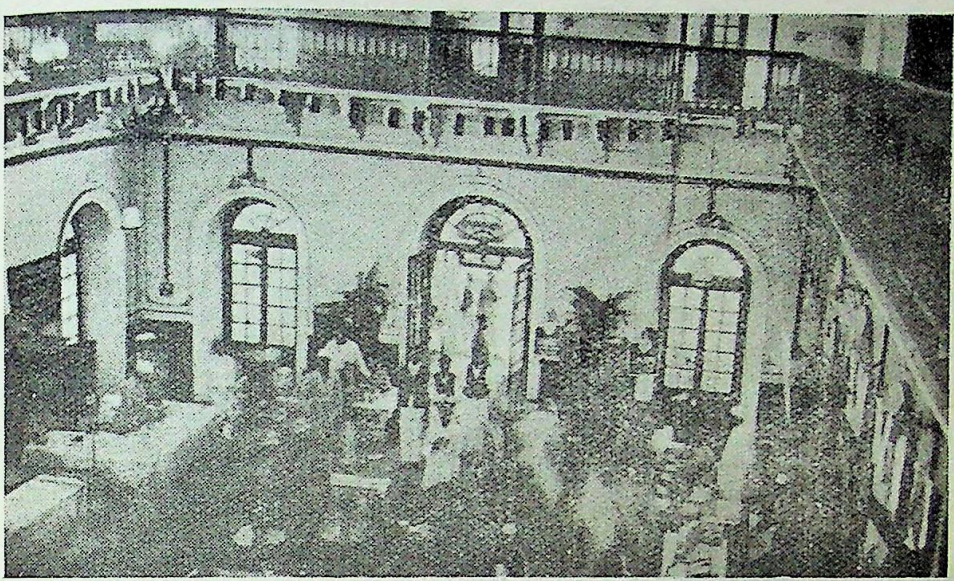

[प्रदर्शनी का प्रवेश-द्वार]

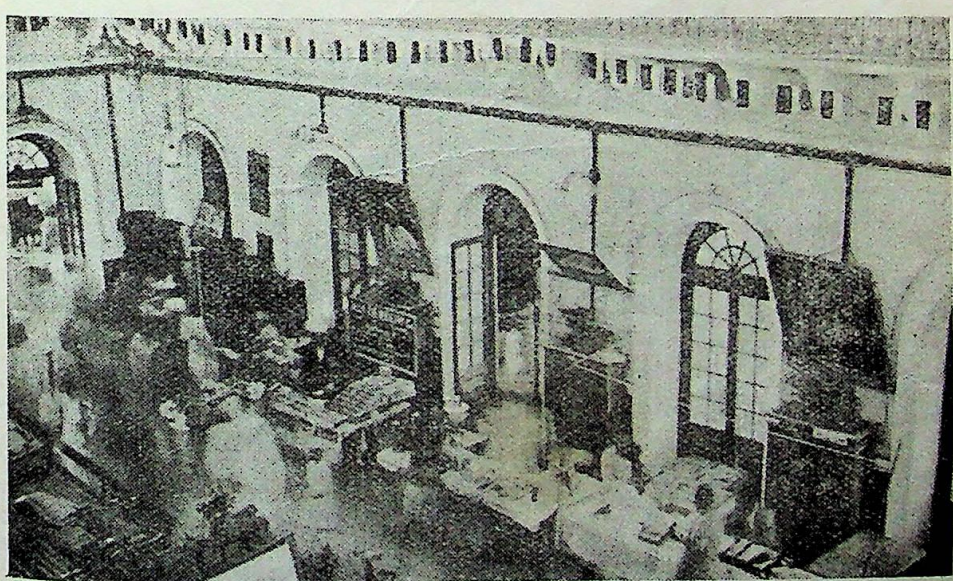

[प्रदर्शनी के उस अञ्चल का दृश्य जहाँ बम्बई, लाहौर और सहारनपुर के व्यापारियों की दूकानें थीं]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

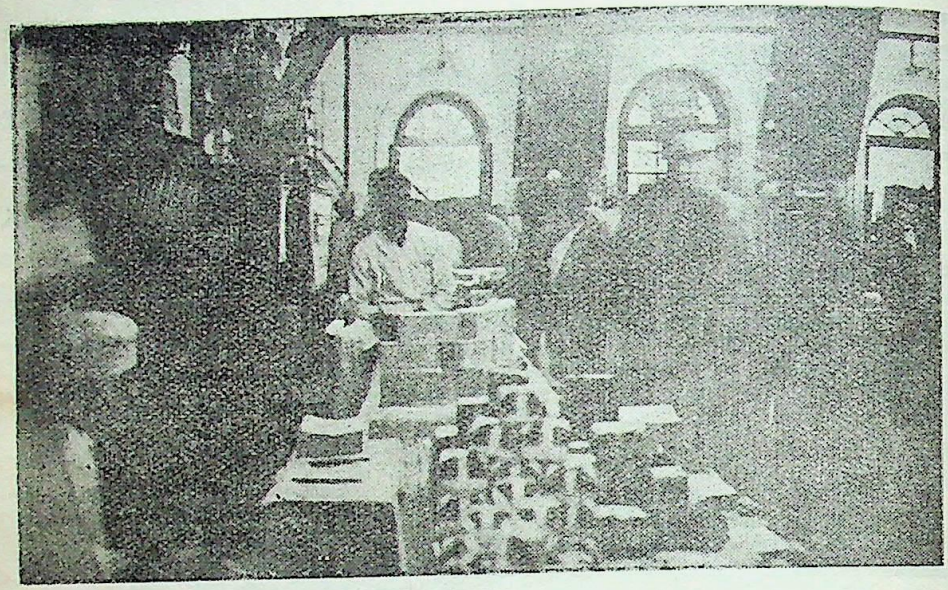

[प्रदर्शनी के दूसरे अञ्चल का दृश्य। यहां बिस्कुट हलवा आदि की दूकानें थीं]

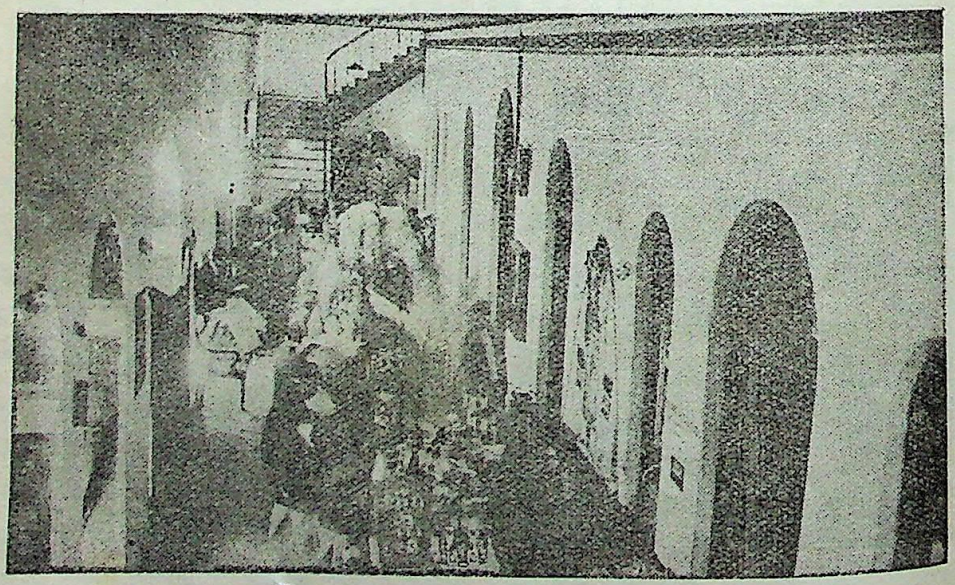

[प्रदर्शनी के बरामदे का दृश्य। नैनी ग्लास वर्क, ब्राडकास्ट कम्पनी और चर्ख़े की दूकानें]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

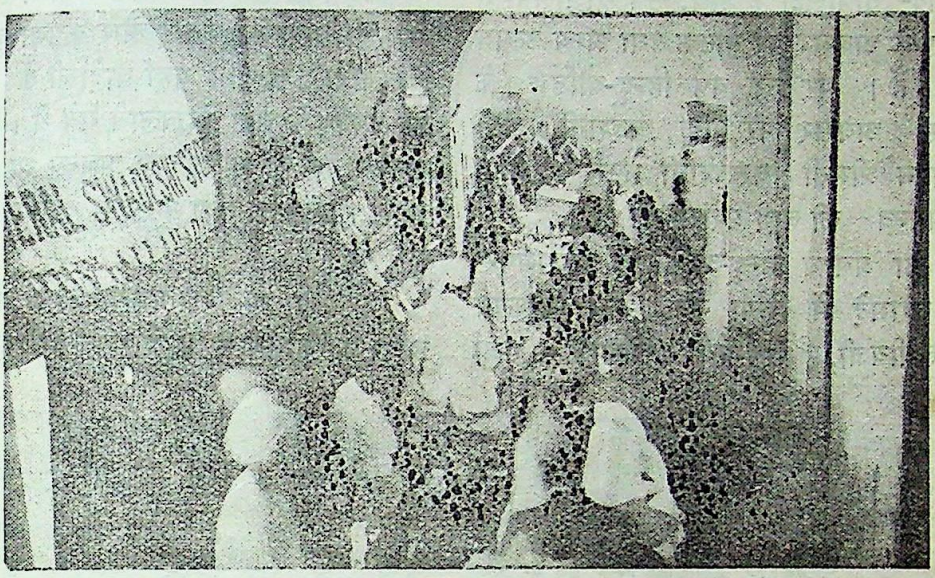

[प्रदर्शनी का एक दूसरा दृश्य। यहाँ पर बटन और तेल साबुन की दूकानें थीं]

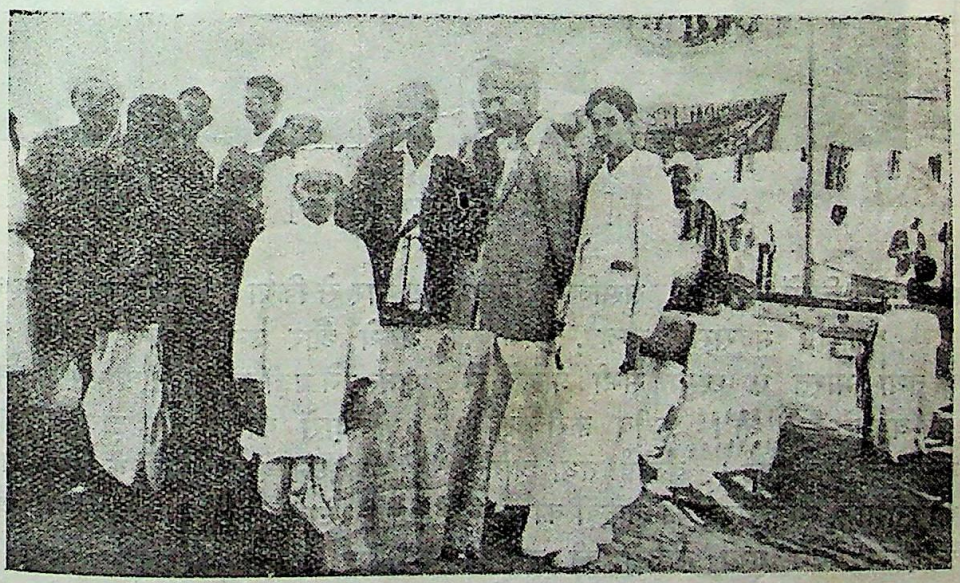

[म्यूनिसिपल स्कूल प्रयाग के चर्ख़े के पण्डाल का दृश्य]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद-यूनीवर्सिटी के प्रायः सब छात्रालयों में उपाधिवितरण के अवसर पर नाटक तथा अन्य उत्सव मनाये जाते हैं। पर इस वर्ष हिन्दू-बोर्डिङ्ग के छात्रों ने इस अवसर पर एक प्रदशनी की। इसका उद्घाटन श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू ने किया और इसके प्रबन्ध की बड़ी प्रशंसा की।

प्रदर्शनी का प्रबन्ध हिन्दू-बोर्डिङ्ग के बलरामपुर-हाल और बरामदे में किया गया था। महात्मा गान्धी, मालवीयजी, स्वर्गीय लालाजी तथा अन्य नेताओं के चित्रों से हाल सुसज्जित किया गया था। बंगाल, मदरास, बम्बई, पंजाब, राजपूताना तथा भारत के अन्य सभी प्रान्तों से तरह-तरह की वस्तुएँ आई थीं। क़रीब क़रीब सभी दूकानों पर अच्छी बिक्री हुई। बजोई तथा आगले का शीशे का सामान, सहारनपुर का लकड़ी का काम, बम्बई के चाँदी के बटन तथा लकड़ी की तसवीरें और दयालबाग़ की चीज़ें बड़ी प्रशंसनीय थीं और इन दूकानों में बिक्री भी ख़ूब हुई।

प्रदर्शनी के साथ साथ म्यूनिसिपल स्कूल की तरफ़ से चर्ख़ा की कताई और कपड़ा बुनाई का काम दिखलाया गया था। यहाँ बार्दोली के तथा अन्य कई कई प्रकार के चर्ख़े दिखलाये गये थे। दर्शकों के लिए गाना सुनने का भी अच्छा प्रबन्ध था। रेडियो-द्वारा, बम्बई, कलकत्ता तथा दूर-दूर देशों का गाना सुनाया गया था।

प्रदर्शनी का पूरा प्रबन्ध हिन्दू-बोर्डिङ्ग-हाउस के छात्रों के ही हाथ में था और उन्होंने इसको बहुत भले प्रकार से किया। कुछ दूकानों पर छात्र ही विक्रेता भी थे और उन्होंने अच्छी बिक्री की। प्रयाग की जनता ने बड़ी संख्या में आकर कार्यकर्ताओं का तथा दूकानदारों का उत्साह बढ़ाया। जनता के अनुरोध से एक दिन केवल स्त्रियों के लिए नियत किया गया था। उस दिन का प्रबन्ध स्थानीय क्रास्थवेट कालेज की अध्यापिकाओं तथा बालिकाओं के हाथ में था और उन्होंने उसे बहुत भले प्रकार किया।

[दिल्ली अनाथालय का बैंड]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रदर्शनी से प्रयाग में स्वदेशी का अच्छा प्रचार हो गया। लोगों को मालूम होगया कि ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो भारत में न बन सकती हो। आशा है, विद्यार्थीगण भविष्य में अपने ऐसे समयों में नाटक आदि मनोरञ्जनों के साथ इस प्रदर्शनी जैसे लोकोपकारी कार्य करने को भी सचेष्ट होंगे।

—बिहारीलाल खन्ना

७—सौन्दर्य

तरल तान किस तंत्री की हो,
हो किस सरस सुधा के सार।
किस अज्ञात लोक की सुरभित,
कलियों के हो कोमल हार।
किस मदिरा की मादकता हो,
किस उन्मादी के उन्माद।
मतवाला हो जाता है जन,
पाकर तेरा मधुर प्रसाद॥
पूर्व पुण्य से जिसके ऊपर,
देता है तू हाथ पसार।
उसे देखने को लालायित,
रहती निशि-दिन दृष्टि अपार॥
शुद्ध स्वच्छ अति सरस सृष्टि में,
वही सदा कहलाता है।
अपनी रूप-सुधा से जिसको,
तू संतत नहलाता है॥
प्राप्य नहीं कुछ भी रहता है,
पाकर तुझ-सा अनुपम रत्न।
विश्व सुहृद बन जाता है वह,
बिना किये ही प्रबल प्रयत्न॥
शारदीय सुषमा के समुदय,
मानस के मोहक सौन्दर्य।
अकथनीय माना जाता है,
तीन लोक में तेरा शौर्य॥
वीरों का भी गव खर्व सा,
हो जाता है तुझे निहार।
विवश पाद-पद्मों में तेरे,
शीश झुकाता है संसार॥

—कुंवर हिम्मतसिंह साहित्यरञ्जन

———

यदि आप हिन्दू-संस्कृति का सच्चा स्वरूप जानना चाहते हैं तो आज ही हमारे यहाँ से प्रकाशित

सचित्र हिन्दी-महाभारत

की ग्राहक-श्रेणी में अपना नाम लिखा लीजिए। इससे आप तथा आपके स्त्री-बच्चों का मनोरञ्जन तो होगा ही साथ ही आपकी ज्ञान-वृद्धि भी होगी। सबसे बढ़कर लाभ यह होगा कि इसके अनुशीलन से आपके परिवार में सदाचार और सद्भावनाओं की वृद्धि होगी। हमारा महाभारत लाखों हाथों में पहुँच चुका है। तमाम भारत में दिनोंदिन इसका प्रचार बढ़ता जा रहा है। इसकी सरसता, सरलता और रोचकता ने हर एक को मोहित कर लिया है। यह एक संग्रहणीय चीज़ है। विशेष विवरण विज्ञापन में देखिए।

मैनेजर—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान की करामात

१—लोहे के जूते

पाठकों ने सुना ही होगा कि चीन-देश में बाल्य-काल से ही स्त्रियों के पैरों में लोहे के जूते डाल दिये जाते हैं। लोहे के कटघरे में बन्द होने के कारण पैरों का प्राकृतिक विकास रुक जाता है, पैर छोटे हो जाते हैं। सभ्यता के प्रसार के अनुसार धीरे धीरे चीन से अब यह प्रथा उठ चली है।

परन्तु लोहे के जूतों की आवश्यकता अब जर्मनी को मालूम होने लगी है। .कैदियों को अधिकार में रखने के लिए सारे संसार में लोहे की हथकड़ियों का प्रयोग होता है। वैज्ञानिक जर्मनी हथकड़ियों के स्थान में लोहे के जूते पहनाना चाहता है। इन जूतों के पहनने से पैरों को किसी प्रकार की हानि नहीं होती। हां, इनको पहन कर .कैदी भाग नहीं सकता। यदि वह प्रयत्न भी करे तो गिर पड़ता है। जूतों में ताले का भी प्रबन्ध रहता है, अतएव .कैदी उन्हें स्वतन्त्रता से निकाल भी नहीं सकता। .कैदियों को क़ाबू में रखने की यह नई युक्ति वास्तव में बड़ी उपयोगी है।

२—विचित्र गाड़ी

डाक्टर हेलेन्ड और मेक्स वेलियर ये दो प्रसिद्ध जर्मन व्यक्ति हैं। पहला वायुओं को द्रवरूप में करनेवाला विशेषज्ञ है और दूसरा राकेट गाड़ियों का तैयार करनेवाला है। कुछ समय से ये दोनों व्यक्ति एक ऐसी गाड़ी के तैयार करने में लगे हुए थे जो अन्य गाड़ियों से भिन्न हो और जिसके संचालन करने में भी एक ऐसे पदार्थ का उपयोग हो जिस पर वायुमंडल के ऊपरी हिस्से के नीचे तापक्रम का कोई असर न हो। संक्षेप में ये ऐसी गाड़ी तैयार कर रहे थे जो सफलता से पृथ्वी चंद्रमण्डल तक जा सके।

बहुत-सी परीक्षाओं के बाद इन्होंने दो पदार्थों को चुना—वेनजेन और द्रव ओषजन। ओषजन में वस्तुओं

[वेलियर महोदय अपनी अग्निमयी गाड़ी में]

जलाने की बड़ी भारी शक्ति है। यदि आप गरम लोहे ही उसमें डाल दें तो वह तीव्र प्रकाश फैलाते हुए जल जावेगा। इस द्रव ओषजन और वेनजेन को दो नलियों के द्वारा इन्होंने मोटर की एक नली में प्रवेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—सच्चा पत्र

अभी तक पत्रों के द्वारा हम अपने हृदय के संदेश को शब्दों-द्वारा ही भेज सकते थे, परन्तु एक जर्मन आविष्कारक को यह बात वैज्ञानिक युग के लिए लज्जा-जनक-सी दिखी। उसने छोटे छोटे पोस्टकार्ड बना

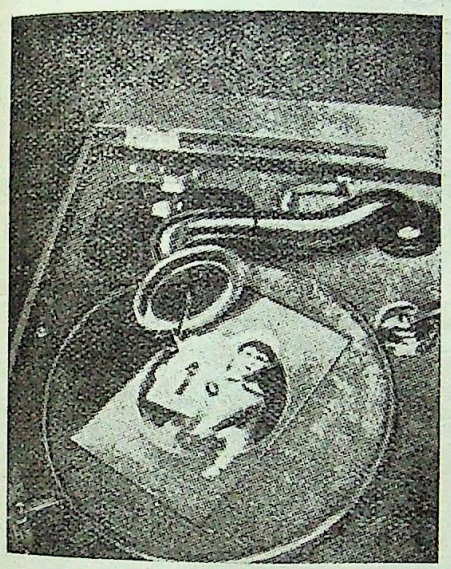

[ग्रामोफ़ोन पोस्ट कार्ड]

डाले। इन पोस्टकार्डों पर ग्रामोफ़ोन के रिकार्ड के समान अपनी आवाज़ को भी लिपिबद्ध वे कर सकते हैं और साथ ही अपना चित्र भी उस पर उतरवा सकते हैं। आप का मित्र ग्रामोफ़ोन की मशीन पर जाकर आपकी आवाज़ में ही आपके संदेश को सुन लेगा और चित्र-पट के दर्शन कर सकेगा।

६—इच्छित ऋतु

बहुत दिन से पाश्चात्य मनुष्य की इच्छा थी कि वह इच्छित ऋतुएँ तैयार कर सके। सौभाग्य से छोटे रूप में अब यह सम्भव हो गया है। एक प्रकार की मशीन तैयार की गई है जो घर में इच्छित ऋतुओं का संचार करती है। इसके द्वारा आप अपने कमरे में कभी

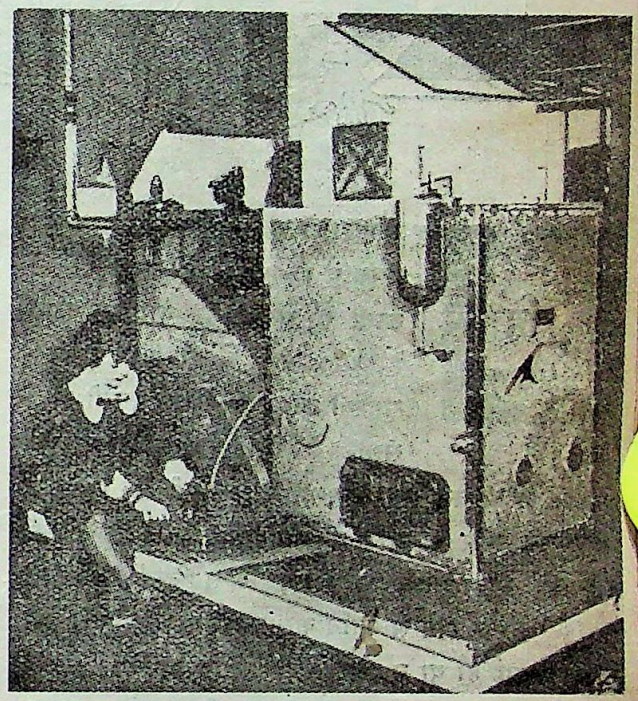

[ऋतु-दायक मशीन]

वसंत की बहार लूट सकते हैं, गर्मी की ऋतु में ठंड का अनुभव कर सकते हैं और ठंड की ऋतु में अपने कमरे के वायुमण्डल को गरम रख सकते हैं। यहाँ तक कि वायुमंडल को आर्द्र और सूखा भी बना सकते हैं। कैसी अद्भुत बात है?

—नाथूराम शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृ-मण्डल

हिन्दू महिलाओं की धार्मिक भावना बड़ी प्रबल है। धर्म के ही नाम पर वे उठती हैं, धर्म के ही नाम पर बैठती हैं और धर्म के ही नाम पर घर-गृहस्थी का सारा काम करती हैं। संसार में ऐसा कोई भी काम नहीं है जिसका वे धर्म से सम्बन्ध न जोड़ती हों। कोई हिन्दू स्त्री शरीर की शुद्धि तथा स्वास्थ्य की उन्नति की दृष्टि से स्नान नहीं करती है, किन्तु इसलिए करती है कि धार्मिक दृष्टि से स्नान करना अनिवार्य है। दाँतों की काफ़ी सफ़ाई हो या न हो, इसकी उसे विशेष चिन्ता नहीं। वह तो नीम की एक पतली-सी लकड़ी मुँह में डाल कर घुमा लेने में भी अपने एक विशेष कर्तव्य से मुक्त हो जाती है। इसके विपरीत ब्रश या मञ्जन से दाँतों को रगड़ रगड़ कर साफ़ करने पर भी दातून किये बिना उसे सन्तोष नहीं होता, क्योंकि हमारे प्रातःकृत्य में इस तरह का विधान नहीं है। परन्तु क्या यह व्यवस्था उपयोगी है ?

हिन्दू-समाज में विवाह तथा अन्यान्य उत्सवों के समय बहुत-सा ऐसा कर्मकाण्ड प्रचलित है जिसका प्रत्यक्ष-रूप से शास्त्र से कोई सम्बन्ध नहीं दिखाई पड़ता, पद्धतियों में भी उसका उल्लेख नहीं है, परन्तु उसका होना अनिवार्य है। उस कर्मकाण्ड के कराने में प्रायः पुरोहित महाराज के भी छक्के छूट जाते हैं। उस समय प्रधान आचार्य का पद पास-पड़ोस की बड़ी-बूढ़ी स्त्रियों को ही मिलता है। ऐसा कर्मकाण्ड सुधारवादी युवकों की दृष्टि में निरर्थक एवं त्याज्य चाहे भले ही हो, किन्तु महिला-समाज के

[कुमारी मृणालदास गुप्त]

(ढाका यूनिवर्सिटी से आप ने हाल में एम० ए० की डिगरी प्राप्त की है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसके प्रति लेशमात्र भी अवहेलना सह्य नहीं है। उसकी पद्धति में ज़रा भी हेर-फेर हुआ कि मानो सारा कर्मकाण्ड ही चौपट होगया, शास्त्रीय पद्धति का चाहे भले ही तत्परता के साथ अनुसरण किया गया हो। परन्तु हमारी गृहलक्ष्मियाँ इस बात की ओर ध्यान नहीं देतीं। है, त्यों त्यों आचार-अनुष्ठान के प्रति वे प्रायः उदासीन होते जा रहे हैं। काम-काज की उलझन के मारे भोजन-शयन आदि अनिवार्य कामों के लिए भी समय निकालना किसी उद्यमशील पुरुष के लिए कठिन हो जाता है। ऐसी दशा में जिन बातों से उसके दैनिक जीवन का कोई सम्बन्ध

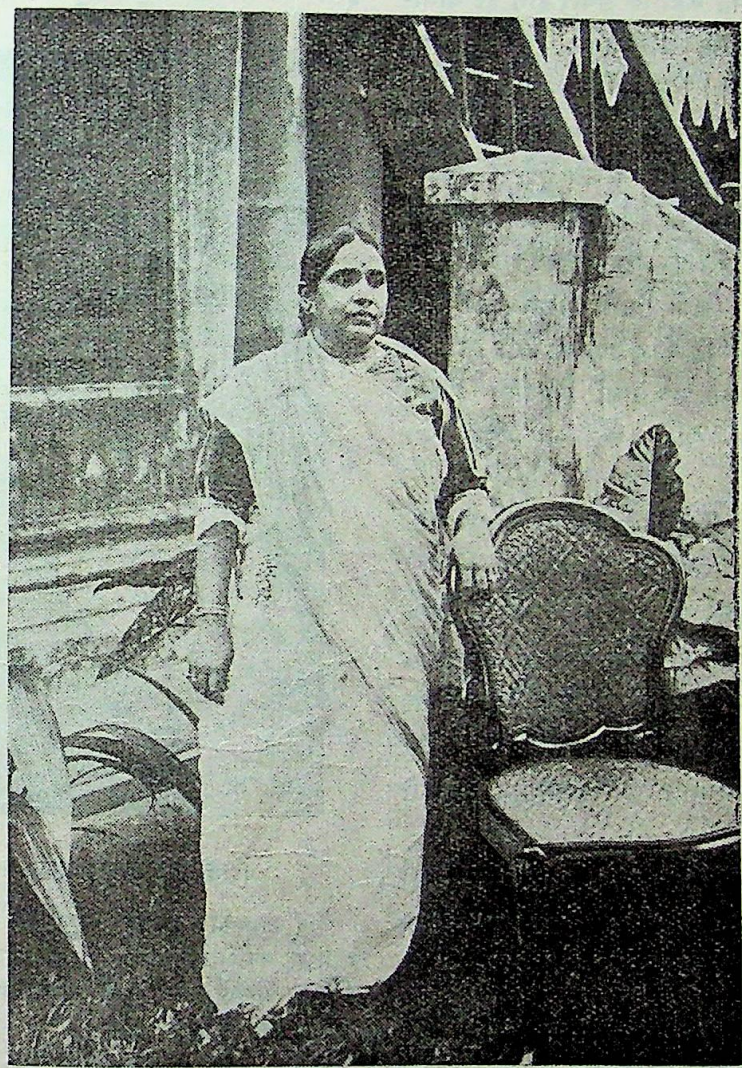

[कोचीन के प्रजाहितैषी महाराज की महारानी श्रीमती वी० के० परुक्कुठी नेथियारम्मा]

कथा-पूजा, व्रत-नियम तथा मन्दिर-तीर्थ आदि की ओर भी स्त्रियों का ही झुकाव अधिक है। व्यावहारिक क्षेत्र में पुरुषों की क्रियाशीलता ज्यों ज्यों बढ़ती जा रही नहीं, उनके पीछे समय नष्ट करना उसे असह्य हो जाता है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थी बिस्तर छोड़ने से पहले ही कोर्स की किताबों के पन्ने उलटने लगते हैं, बाबू लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी फ़ाइलों का ढेर लादे बिना आफ़िस से पैर नहीं उठा पाते, उनके उलटने-पलटने में ही सुबह-शाम का उनका सारा समय बीत जाता है। मुअक्किल लोग तो रात-दिन वकीलों की खोपड़ी चाटते ही रहते हैं। शायद अपने मुक़दमों के ही सम्बन्ध में वे रात में स्वप्न भी देखते हों। इन बेचारों को इतनी फ़ुर्सत कहाँ कि सवेरा होते ही धोती-लोटा लेकर गङ्गाजी के तट तक जायँ। परन्तु स्त्रियों को ये सब झंझट नहीं रहते। सुबह-शाम भोजन बना कर ही वे समस्त दिन के काम से प्रायः छुट्टी ले लेती हैं। जिनकी आर्थिक अवस्था ज़रा अच्छी हुई वे आठ-दस रुपये मासिक व्यय करके इस जंजाल से भी छुट्टी ले लेती हैं। फिर चाहे, घूम कर गङ्गा नहायें या बरामदे में बैठ कर ताश-शतरंज खेलें, उन्हें पूछनेवाला कोई नहीं रहता। घर में यदि कोई उपद्रवी बच्चा हुआ तो वह कभी कभी इनकी शान्ति में बाधा पहुँचाता अवश्य है, किन्तु दो-एक चपत खाकर वह भी शान्त हो जाता है।

गृह-प्रबन्ध में हिन्दू-महिलायें भाग लेती अवश्य हैं, किन्तु उसमें भी उनका कोई विशेष उत्तरदायित्व नहीं रहता। आवश्यक वस्तुओं की सूची बनाने में ही उनके कर्तव्य की बहुत कुछ इतिश्री हो जाती है। उन वस्तुओं के संग्रह का भार गृहस्वामी पर ही पड़ता है। इस प्रकार फ़ुर्सत होने से पुरुषों की अपेक्षा कहीं अधिक वे अपनी प्रवृत्ति के अनुसार धर्म-चिन्ता और मनोरञ्जन आसानी से कर पाती हैं।

और हिन्दू-महिलाओं—विशेषतः प्राचीन प्रथा की महिलाओं के मनोरञ्जन का प्रधान साधन हैं तीर्थ-यात्रा और धार्मिक मेले। ऐसे मेलों में ही आँख खोलकर वे सारी चीज़ें देख पाती हैं। वहीं जाकर वे तरह तरह के आदमी भी देख पाती हैं। इन मेलों और तीर्थों के अतिरिक्त बाह्य दृश्य देखने का उन्हें प्रायः और कहीं अवसर नहीं मिलता। इस प्रकार यदि इन मेलों का सदुपयोग किया जाय तो इनसे बहुत कुछ शिक्षा मिल सकती है। किन्तु खेद है कि हमारी महिलाओं में अभी वह शक्ति नहीं है। चित्र-विचित्र के दृश्य और भिन्न-भिन्न आकार-प्रकार और प्रकृति के मनुष्यों को देखकर वे थोड़ा-बहुत मनोरञ्जन चाहे भले ही करलें, किन्तु उन्हें विवेचनात्मक दृष्टि से देखने की योग्यता उनमें नहीं होती। यही कारण है कि उससे वे कुछ लाभ नहीं उठा पातीं।

परन्तु तीर्थों या अन्य धार्मिक स्थानों में हिन्दू-जनता इसी विचार से नहीं जाती। वहाँ तो वह धार्मिक

[कुमारी मथुरा रामराव नादकर्णी]

(आपको बम्बई यूनीवर्सिटी के कनवोकेशन के अवसर पर 'वायसराय सिल्वर मेडल' और 'लेडी रीडिंग सिल्वर मेडल' दिया गया है। आप सुन्दरदास मेडिकल कालेज की हैं।)

भावना से ही प्रेरित होकर जाती है। हिन्दुओं का यह विश्वास है, और यह विश्वास आज का नहीं है, बल्कि बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है कि तीर्थों में जाने से मोक्ष मिलता है। यहाँ हम इस विश्वास की सत्यता या असत्यता के सम्बन्ध में विचार करना आवश्यक नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझते। किन्तु प्रत्यक्षरूप में तीर्थों में विशेषतः मेले के समय महिलाओं का अपमान ही हुआ करता है। कितने ही तीर्थ या धार्मिक स्थान तो वञ्चकता के अड्डे-से हो गये हैं, जहाँ बड़े बड़े पंडे-पुजारी और साधू-महन्त तक कुल-कमलाओं को अपमानित करने की ताक में रहते हैं। मेले में भूल कर या किसी अन्य कारण से यदि कोई स्त्री उनके चंगुल में फँस गई तब फिर उसका उद्धार प्रायः असम्भव-सा हो जाता है। घर के कड़े पर्दे में बन्द रहते रहते महिलाओं में इतना सत्साहस भी नहीं रह गया है कि इन दुराचारियों का वे वीरता के साथ सामना कर सकें और अपना मार्ग स्वयं खोज लें।

बहुत-सी गर्भवती तथा आसन्नप्रसवा महिलाएँ भी ऐसे मेलों में जाती हैं। उनके हृदय में मोक्ष का लोभ इतना प्रबल होता है कि वे अपने या अपनी सन्तान के स्वास्थ्य और शरीर की ओर ध्यान तक नहीं देतीं। उनके इस कृत्य का परिणाम कभी कभी तो बहुत ही भयङ्कर हुआ करता है। बड़े मेलों में छोटे छोटे बच्चों का खो जाना तो एक साधारण-सी बात है। क्या ही अच्छा हो कि महिलायें इन सब क्लेशों से बचकर घर पर ही धर्म-चिन्ता किया करें। धार्मिक भावना को दृढ़ करने तथा आत्मा के उत्कर्ष का अच्छा साधन है धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय और भिन्न-भिन्न विषयों का ज्ञान-सञ्चय। हमारी सीधी-भोली महिलायें यदि इस ओर विशेष रूप से दत्तचित्त हों तो वे अपना भी सुधार कर सकेंगी, साथ ही देश का भी उनसे बड़ा उपकार होगा।

हमारे तीर्थ और धार्मिक मेले अब वैसे शुद्ध नहीं रहे जहाँ जाकर मनुष्य अपनी धार्मिक उन्नति कर सके। इनकी महत्ता घटने का प्रधान कारण है आने-जाने की सुगमता। जब से भारत में रेलों का विस्तार हुआ है और थोड़ा ही सा धन और समय का व्यय करके लोग आसानी से भिन्न-भिन्न स्थानों की सैर करने लगे हैं, तब से इन तीर्थों का उपयोग बहुत-से लोग सैर-सपाटे के लिए भी करने लगे। प्राचीन काल में जब महीनों पैदल चल कर लोग किसी निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच पाते थे तब केवल वे ही लोग चाहे स्त्री हों या पुरुष—घर से पैर निकालने का साहस करते थे जो अपने उद्देश में दृढ़ होते थे। इस प्रकार चुने ही चुने आदमी तीर्थों में पहुँचते थे, और रास्ते भर एक दूसरों से मिलने-जुलने और भावों का आदान-प्रदान करने के कारण वे लोग बहुत कुछ ज्ञान वृद्धि भी कर लिया करते थे। साथ ही उनके विचार भी परिपक्व हो जाते थे। उन अनुभवी तथा धुन के पक्के जिज्ञासुओं के सामने पाखण्डी और वञ्चक पंडे-पुजारियों और महन्तों के पाँव नहीं अड़ पाते थे। उस समय तो केवल वे ही प्रतिष्ठा प्राप्त कर पाते थे जिनमें वास्तव में कुछ तत्त्व होता था, साथ ही उनका आचार-विचार भी शुद्ध होता था।

क्या हमारा स्त्री-समाज इन कुछ बातों की ओर ध्यान देने की कृपा करेगा ?

—गङ्गाप्रसाद वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

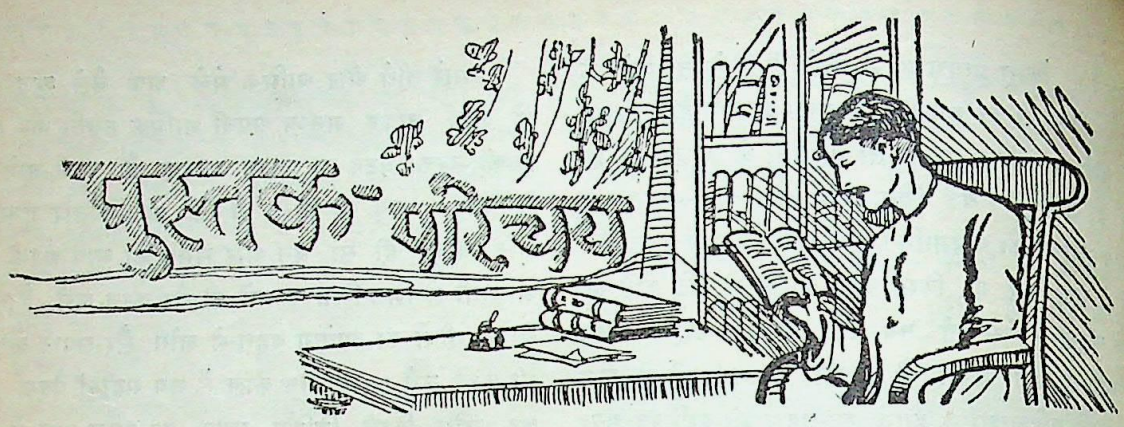

१—अरब और भारत के सम्बन्ध—संयुक्त-प्रान्त की 'हिन्दुस्तानी एकेडेमी' ने अब तक कई बड़ी उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित की हैं। हाल में उसने 'अरब और भारत के सम्बन्ध' नाम की हिन्दी में एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित की है। उर्दू के प्रसिद्ध विद्वान् मौलाना सैयद सुलेमान नदवी ने एकेडेमी के भवन में सन् १९२९ के मार्च में उपर्युक्त विषय पर गवेषणापूर्ण व्याख्यान पढ़े थे। वही उर्दू में पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। उस उर्दू-पुस्तक का यह हिन्दी-भाषान्तर है।

यह पुस्तक उपयोगी ही नहीं, सामयिक भी है। अरबी तथा फ़ारसी के अनेक दुर्लभ ग्रन्थों का विवेचनापूर्ण अध्ययन करके इसकी रचना हुई है। मुसलमानों के भारत-विजय के पहले भारत से मुसलमानों का जो व्यावसायिक, विद्या-सम्बन्धी एवं धार्मिक सम्बन्ध क़ायम था उस सबका विश्वसनीय प्रमाणों के आधार पर इस व्याख्यान-सङ्ग्रह में अलग-अलग प्रकरणों में ब्योरेवार वर्णन किया गया है। इसके पढ़ने से प्रकट होता है कि भारत-विजय के पहले से ही मुसलमानों का भारत से घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया था। सिन्ध से लेकर ट्रावनकोर तक समुद्र के किनारे किनारे उनकी अनेक बस्तियाँ क़ायम हो गई थीं, जहाँ वे मस्जिदें निर्माण करके अपने ढङ्ग से धर्म-कर्म करने को सर्वथा स्वतन्त्र थे। यही नहीं, उनका उन उन स्थानों के राजाओं तथा राजकर्मचारियों से सद्भाव था। इन सब बातों का सप्रमाण विवरण इस पुस्तक में किया गया है। पुस्तक के अन्तिम प्रकरण में उन मुसलमान यात्रियों का तथा भारत-सम्बन्धी उनके यात्रा-विवरणों का भी विस्तार के साथ उल्लेख किया गया है। इस पुस्तक से तत्कालीन भारत के विश्वसनीय इतिहास के एक विशेष अंश का बहुत कुछ ज्ञान हो जाता है। इतिहास के प्रेमी पाठकों के लिए तो पुस्तक उपयोगी है ही, इतर जनों का भी इससे काफ़ी मनोरञ्जन हो सकता तथा उनकी ज्ञान-वृद्धि हो सकती है। हिन्दी के प्रेमी पाठकों को इस पुस्तक से लाभ उठाना चाहिए। इसका अनुवाद बाबू रामचन्द्र वर्मा ने किया है। अनुवाद बहुत सुन्दर है। इस जिल्द बँधी पुस्तक की पृष्ठ-संख्या ३३० और मूल्य ४) है। पता—हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद है।

विज्ञान-परिषद् प्रयाग की ४ नवीन पुस्तकें

(१) **कार्बनिक रसायन**—लेखक श्रीयुत सत्य प्रकाश, मूल्य २॥)

(२) **वैज्ञानिक परिमाण**—लेखक श्रीयुत निहालकरण सेठी तथा सत्यप्रकाश, मूल्य १॥)

(३) **वैज्ञानिक परिभाषा**—लेखक श्रीयुत सत्य प्रकाश, मूल्य ॥)

(४) **साधारण रसायन**—लेखक श्रीयुत सत्य प्रकाश, मूल्य २॥)

रसायन-शास्त्र के प्रायः दो बड़े बड़े विभाग माने जाते हैं—आङ्गारक रसायन तथा अनाङ्गारक रसायन। इन्हीं दोनों अंगों पर नं० १ तथा नं० ३ की पुस्तकें विज्ञान-परिषद् ने हाल में ही प्रकाशित की हैं। पहले ये पुस्तकें 'विज्ञान' में क्रमशः छपी थीं। वही लेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकत्र कर अब पुस्तकरूप से प्रकाशित किये गये हैं। 'विज्ञान' ने हिन्दी-साहित्य की जो सेवा गत सोलह वर्षों में की है उसके लिए हिन्दी-संसार विज्ञान-परिषद् का सदैव ऋणी रहेगा। 'विज्ञान' में अनेक ग्रन्थ भरे पड़े हैं। उनमें से अब तक प्रायः २० ग्रन्थ पुस्तक रूप से प्रकाशित हो चुके हैं। उन्हीं में से ये ऊपर के चार ग्रन्थ हैं।

२—कार्बनिक रसायन—इस पुस्तक में डबल क्राउन अठपेजी साइज़ के १९६+६ पृष्ठ हैं। प्रतिपाद्य विषय आङ्गारक या कार्बनिक रसायन है। भारतीय विश्व-विद्यालयों की इंटर मीडियेट परीक्षा के लिए जितने कार्बनिक रसायन के ज्ञान की आवश्यकता है, उतने विषय का समावेश इस पुस्तक में है।

प्रयाग-विश्वविद्यालय ने श्री सत्यप्रकाश को "एम्प्रेस विक्टोरिया रीडर" बनाया था। उस पद पर रहते हुए अथवा उपर्युक्त छात्रवृत्ति पाते हुए आपने इस ग्रन्थ का निर्माण कर यूनिवर्सिटी को भेंट किया है। कुछ वर्ष हुए पंडित शालिग्राम भार्गव ने भी चुम्बकशास्त्र की रचना इसी सम्बन्ध में की थी।

आङ्गारक रसायन पर अभी तक हिन्दी में कोई ग्रन्थ नहीं था, अतएव हर्ष है कि इस कमी को श्रीयुत सत्यप्रकाशजी ने पूरा कर दिया।

पुस्तक प्रचलित अँगरेज़ी की पुस्तकों के ढंग पर लिखी गई है। परन्तु उसमें छापने में कुछ असावधानी की गई है। आंगारिक रसायन के ग्रन्थों में संगठनसूत्रों का बड़ा महत्त्व है। विशेषतः बन्दशृंखला (closed chain) के यौगिकों के लिए कुछ छोटे छोटे ब्लाक बनवा लिये जाते तो अधिक अच्छा था। खुली शृंखला के सूत्रों में भी कई स्थानों पर ग़लतियाँ हो गई हैं। इसी प्रकार यदि कई प्रकार के टाइपों का ठीक तरह से प्रयोग होता तो विषय के समझने में सुगमता होती। यौगिकों के नाम तथा सूत्र किसी भिन्न टाइप में रखने से विषय अधिक स्पष्ट हो जाता। पुस्तक की भाषा में भी यदि थोड़ा सा प्रयत्न किया जाता तो अधिक सरल और सुबोध बनाई जा सकती थी।

पारिभाषिक शब्दों की सूची पुस्तक के अन्त में दी गई है।

३—वैज्ञानिक परिमाण—विज्ञान के पठन-पाठन में ऐसे अनेक परिमाणों की पग-पग पर आवश्यकता पड़ती रहती है जिनको स्वयम् उसी समय गणना अथवा प्रयोग-द्वारा निकालना कठिन हो जाता है। गणना अथवा प्रयोग करने में एक तो समय बहुत लगता है, दूसरे सबको समान सुविधा तथा सामग्री नहीं जुटती। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे परिमाण हैं जो वैज्ञानिकों ने बड़ी मेहनत से वर्षों में निकाले हैं। अतएव अँगरेज़ी में परिमाण-सूचियों के ग्रन्थ बनाये गये हैं, जिनमें साधारण तथा काम में आनेवाले सभी परिमाण दिये रहते हैं। हिन्दी में भी इस प्रकार के ग्रन्थ का प्रकाशित हो जाना बड़े सौभाग्य का विषय है। वैज्ञानिक लोग ही नहीं, बरन जितने कारीगरपेशे के लोग हैं—मिस्त्री, सुनार, बिजलीवाले, इंजीनियर, लोहार आदि सभी को इस पुस्तक से लाभ पहुँच सकता है। ज्यों ज्यों इनकी जानकारी बढ़ती जायगी, त्यों त्यों ये अपने अपने कामों में अधिक सफल होंगे और तभी ये प्रस्तुत ग्रन्थ के मूल्य को समझेंगे।

४—वैज्ञानिक परिभाषा—'विज्ञान' प्रायः १६ वर्ष से प्रकाशित हो रहा है। इस दीर्घ समय में सैकड़ों वैज्ञानिक विषयों पर हज़ारों लेख उसमें छप चुके हैं। उन लेखों में अनेक पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। उन्हीं पारिभाषिक शब्दों का यह उपयोगी संग्रह अब पुस्तकरूप से प्रकाशित हो गया है।

इसमें शरीर-विज्ञान, वनस्पति-शास्त्र, रसायन-शास्त्र, और भौतिक विज्ञान के पारिभाषिक अँगरेज़ी शब्द और उनका हिन्दी-अनुवाद दिया गया है। पुस्तक बड़ी उपयोगी है। यदि पत्रों के सम्पादक महोदय इन्हीं शब्दों का प्रयोग लेखकों-द्वारा कराने लगें तो एक बड़ी कठिन समस्या हल हो जाय।

५—साधारण रसायन—अनाङ्गारक रसायन का यह ग्रन्थ है। यह भारतीय विश्वविद्यालयों के इन्टर-मीडियेट के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है। श्री सत्यप्रकाशजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने इस ग्रन्थ की रचना कर प्रायः २५ वर्ष बाद इस विषय को हिन्दी-संसार के सामने रक्खा। श्रीयुत महेश-चरण सिनहा के ग्रन्थ के बाद यही दूसरा ग्रन्थ हिन्दी-में लिखा गया है। आशा है कि इससे हिन्दी के पाठक लाभ उठायेंगे।

—गोपालस्वरूप भार्गव, एम० एस-सी०

६—इँग्लैंड का सरल इतिहास (पूर्वार्द्ध)—लेखक श्रीयुत मुरलीधर बी० ए०, प्रकाशक दी युनाइटेड प्रेस, लिमिटेड, भागलपुर हैं। पृष्ठ-संख्या २०६ और मूल्य १=) है।

भारतीय विश्वविद्यालयों ने जब से मातृभाषा के द्वारा हाईस्कूलों में इतिहास, भूगोल आदि की शिक्षा देने का नियम स्वीकार कर लिया है तब से हिन्दी में भी इन विषयों की उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रकाशित होने लगी हैं। स्कूलों के विद्यार्थियों के ही उपयोग के लिए यह पुस्तक भी प्रकाशित हुई है। इसमें अँगरेज़ी इतिहास के प्रारम्भिक काल से लेकर रानी एलिज़ाबेथ के समय तक का हाल सरल भाषा में लिखा गया है। पुस्तक उपयोगी है।

७—निबन्धावली—लेखक और प्रकाशक श्रीयुत धर्मानन्द पन्त, पन्त ब्रादर्स ऐंड कम्पनी, नैनीताल हैं। पृष्ठ-संख्या ५१ और मूल्य ॥) है।

यह पुस्तक विद्यार्थियों के काम की है। इसमें मनुष्यत्व, समय, शिक्षा, आज्ञा-पालन, साहस, सहानुभूति, जीवन-संग्राम, सत्य, रहन-सहन तथा समाज आदि विषयों पर छोटे छोटे दस निबन्धों का संग्रह किया गया है। सभी निबन्ध सरल तथा शुद्ध भाषा में लिखे गये हैं। इनके द्वारा छठी-सातवीं कक्षाओं के विद्यार्थी रचना-सम्बन्धी ज्ञान बढ़ाने में सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

८—सन्दर्भ-मञ्जरी—लेखक और प्रकाशक श्रीयुत नित्यगोपाल शर्मा, विद्याविनोद, संस्कृताध्यापक, विक्टोरिया-कालेज, कूचबिहार हैं। पृष्ठ-संख्या ५४ और मूल्य ।-) है।

यह पुस्तक संस्कृत में है। लेखक महोदय ने इसे आधुनिक प्रथा की एक रीडर का रूप दिया है। ईश्वर-वन्दनम्, रामायणी कथा, भारतकथासंक्षेपः, अशोक-चरितम्, भीष्मचरितम्, युधिष्ठिरकथा, कर्णचरितम्, श्रीरामचरितम्, लक्ष्मणचरितम्, महर्षिदेवेन्द्रनाथः, विद्यासागरचरितम्, आशुतोषमाहात्म्यम्, वीरवरचरितम्, देशबन्धुचित्तरञ्जनमहिमा तथा जन्मभूमिवन्दनम् आदि विषयों पर गद्य तथा पद्यमय छोटे छोटे पाठ हैं। सभी पाठ सरल, बोधगम्य तथा शिक्षाप्रद हैं। प्रत्येक पाठ के अन्त में आपने टिप्पणी भी दे दी है, जो प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है। अँगरेज़ी स्कूलों के नवीं और दसवीं कक्षा के विद्यार्थी तो इससे लाभ उठा ही सकते हैं, साथ ही यह संस्कृत की प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के भी काम की है। परन्तु इसमें 'चरितों' का ही बाहुल्य है। यदि इसमें कुछ अन्य विषयों का भी समावेश किया गया होता तो यह और भी अधिक उपयोगी हो गई होती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकीर्तन

[चित्रकार—श्रीयुत असितकुमार हल्दार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

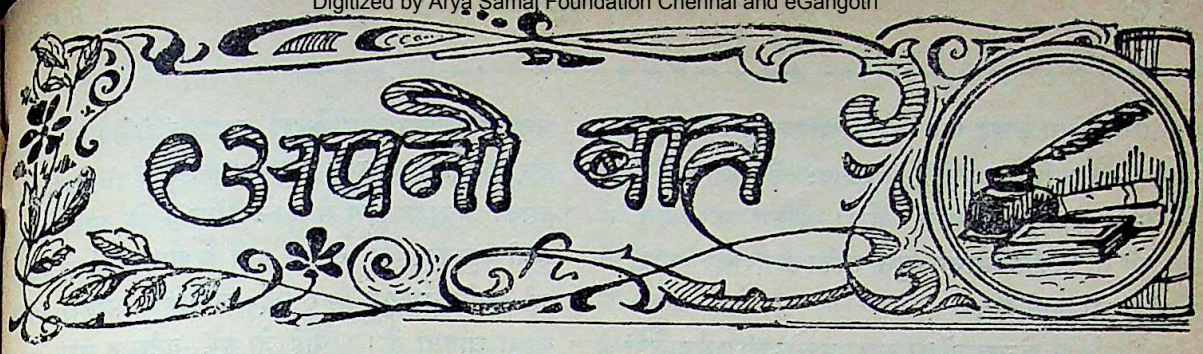

१—चीन में जेल-सुधार

गृह-युद्ध के कारण यद्यपि चीन की अवस्था अभी भले प्रकार व्यवस्थित नहीं हो पाई है, तो भी वहाँ की राष्ट्रीय सरकार धैर्य-पूर्वक अपने निश्चय पर दृढ़ है। एक ओर वह अपने विरोधी गृह-युद्ध के सूत्र-धारों का सशस्त्र मुकाबिला करने में संलग्न है तो दूसरी ओर राष्ट्र के निर्माण-कार्य में भी दत्त-चित्त है। अपने अधिकृत विस्तृत प्रदेशों में वह शान्ति और व्यवस्था स्थापित करने में बहुत कुछ सफलमनोरथ हो गई है। इसी से संसार के प्रायः सभी प्रमुख राष्ट्र उससे समवेदना रखते हैं, साथ ही व्यावहारिक रूप में उसकी समय समय पर सहायता भी करते रहते हैं। यही कारण है कि आज नानकिंग की सरकार राष्ट्रपति च्यांग कैशेक के नेतृत्व में सभी विघ्न-बाधाओं को पार करती हुई नये नये सुधार जारी करने में कृतकार्य हुई है। इस सम्बन्ध की उसकी सारी कार्रवाइयों का विवरण यथासमय समाचार-पत्रों में प्रकाशित होता रहा है। हाल में उसके जेल-सम्बन्धी सुधार के सत् प्रयत्न का विवरण समाचार-पत्रों में छपा है। इस सम्बन्ध में अध्यापक चिंग यूयेन ने हाल में लन्दन में एक बड़ा मनोरञ्जक व्याख्यान किया है। अध्यापक महोदय पेकिंग के लिंग मिशनरी विश्वविद्यालय में समाज-शास्त्र के अध्यापक हैं। जेल की वास्तविक अवस्था का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आपने जेल जाकर बन्दीजीवन तक व्यतीत किया है। चीनी जेलों के सुधार के सम्बन्ध में आपने कहा है—

'इस शताब्दी के आरम्भ में वाशिंग्टन के जेल-सुधार-सम्मेलन में चीन के दो प्रतिनिधि गये थे। उन्होंने अमरीका तथा योरप के जेलों की स्थिति देखकर जो रिपोर्ट लौटने के बाद दी उसी के कारण चीन में इस विचार ने जड़ जमाई कि जेल ऐसे होने चाहिए जहाँ क़ैदी केवल सुरक्षित रक्खे ही न जा सकें, बरन उनका सुधार भी किया जा सके। इसके बाद तुरन्त चीन में जेल-सुधार-आन्दोलन आरम्भ हुआ और विभिन्न स्थानों में ७९ नये जेल बनाये गये। इन जेलों का नाम पहले माडल जेल रक्खा गया, पर बाद में अनुभव हुआ कि कोई जेल माडल नहीं हो सकता, कारण विचारों की प्रगति के साथ साथ जेलों में भी बराबर सुधार करने की आवश्यकता पड़ेगी। गृह-युद्ध समाप्त हो जाने के बाद इन नये जेलों के निरीक्षण के लिए पृथक् जेल-विभाग बनाया गया और ६ मास के बाद राष्ट्रीय जेल-कांग्रेस की गई जो बड़ी सफल रही।

'इन जेलों के लिए प्रायः वैसे ही नियम बनाये गये जैसे अन्य देशों के जेलों में हैं। प्रत्येक जेल में, फिर वह कितना ही छोटा क्यों न हो, एक डाक्टर के रहने की व्यवस्था थी। इसके कामों में एक यह भी था कि वह क़ैदियों को मिलनेवाले भोजन की देखभाल करे। २० वर्ष से कम उम्र के क़ैदियों को प्रतिदिन दो घंटे पढ़ाने का प्रबन्ध था। चीन के विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियोंद्वारा विभिन्न धर्मावलम्बी क़ैदियों को धार्मिक शिक्षा दिलाने की व्यवस्था की गई। प्रति रविवार को कोई भी अधिकारी व्यक्ति क़ैदियों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए आ सकता था। पीछे इन धर्मशिक्षकों की संख्या इतनी अधिक होने लगी कि केवल रविवार को सबको मौक़ा नहीं मिल सकता था और उनके लिए दूसरे दिन निश्चित करने पड़ते थे।

'बहुत से जेलख़ानों में क़ैदियों को मज़दूरी भी दी जाती है। जेलों का भोजन वैसा ही होता है जैसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारण लोग बाहर पाते हैं। और बहुत कम .कैदी भागने की कोशिश करते हैं। प्रायः क़ैदी जाड़े के दिनों में छूटने से बहुत घबराते हैं। पेकिन के बहुत से आदमी तो रोज़ी कमाना बहुत मुश्किल देखकर जाड़ों में जेल में आ जाते हैं।

'स्त्रियों के जेलख़ानों का सारा प्रबन्ध स्त्री कर्मचारियों के हाथ में रहता है और स्त्री .कैदियों को बहुत थोड़ा काम करना पड़ता है। स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा बहुत अधिक छूट मिलती है, जब संभव होता है वे छोड़ दी जाती हैं।'

बड़े बड़े अपराधों के सम्बन्ध में चीन का क्या दण्ड-विधान है, इसका भी अध्यापक महोदय ने अपने भाषण में उल्लेख किया है आप कहते हैं—

वहाँ लोगों को प्रायः फाँसी नहीं दी जाती। यदि कोई अपने माता पिता का .ख़ून करता है तो वह ज़रूर फांसी पाता है बशर्ते कि यह साबित न हो जाय कि हत्या करने के समय वह पागल था। .ख़ून के साथ जब चोरी भी की जाती है तब कभी-कभी अपराधी को फांसी दी जाती है। अन्यथा .ख़ून करने पर आजन्म कारावास की सज़ा दीजाती है, जिसका अर्थ १० वर्ष की क़ैद होता है। इसके बाद .कैदी छोड़ दिया जाता है। आजन्म .कैद की सज़ा पानेवालों को अच्छे चाल-चलन के लिए अकसर छूट भी दी जाती है—आधी सज़ा समाप्त होते होते वह छूट जाता है।

भगवान् करे, चीन का राष्ट्र इसी प्रकार उत्तरोत्तर उन्नति करे और उसके गौरव की वृद्धि हो।

२—रूस की बिभीषिका

इसी अङ्क में अन्यत्र 'रूस की अग्नि-परीक्षा'-शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआ है। उसमें रूस की बोल्शेविक सरकार के पञ्च वार्षिक कार्यक्रम का उल्लेख हुआ है। उसके इस कार्यक्रम से वहाँ के प्रजा-जन कहाँ तक सन्तुष्ट हैं, यह बात तो अधिकार-पूर्वक नहीं कही जा सकती है, किन्तु मास्को में जो षड्यन्त्र का मुक़द्दमा अभी उस दिन समाप्त हुआ है और जिसके निर्णय के अनुसार कतिपय प्रोफ़ेसरों तथा इंजीनियरों को गोली मार देने तथा आजन्म कारावद्ध करने की सज़ा दी गई है उसका विवरण पढ़ने से प्रकट होता है कि साधारण जन रूसी सरकार से सन्तुष्ट नहीं हैं और उनमें से एक दल उसे अधिकारच्युत कर नई लोकप्रिय सरकार स्थापित करना चाहता है। चाहे जो हो, वर्तमान रूसी सरकार क्रान्ति की सरकार है और उसका जीवन क्रान्ति का जीवन है। यही कारण है कि न तो वह रूस में लोकप्रिय हो सकी और न रूस के बाहर किसी अन्य देश में। इसके लोकप्रिय न होने का मूलकारण है इसकी अभिनव क्रान्ति की भावना। क्योंकि बोल्शेविकों ने जो कुछ अपने देश में किया है वही वे संसार के अन्य देशों में भी होता देखना चाहते हैं। यही नहीं, इसके लिए वे तरह तरह के षड्यन्त्र करते रहते हैं और उनका यह कार्य सर्वथा निन्द्य है। इस सम्बन्ध में उन्होंने अब तक जितने प्रयत्न किये हैं उनका परिणाम कहीं अभिनन्दनीय नहीं हुआ। इतना ज़रूर हुआ कि व्यर्थ में अशान्ति का ही सूत्रपात हुआ। इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण चीन है। वहाँ इनके षड्यन्त्रों से जो मारकाट मच गई थी तथा इस समय भी मची हुई है उससे चीन की अपार हानि हुई है। परन्तु रूस के बोल्शेविकों को इसकी परवा नहीं। वे तो एक चीन क्या, एशिया के सभी देशों में नहीं संसार भर में अपने यहाँ की सी क्रान्ति मचवाना चाहते हैं। हमारे भारत के लिए भी उनका एक कार्य-क्रम अलग ही बना हुआ बताया जाता है। इस कार्य-क्रम के अनुसार वे भारत में अधर्म का राज्य क़ायम करवाना चाहते हैं। इसके अनुसार जातिपाति तथा जाति-सम्बन्धी अधिकार तोड़ दिये जायँगे, सबकी सम्पत्ति हड़प ली जायगी, ज़मींदारों तथा राजे, महाराजे न रहने पायेंगे, मठ-मन्दिर तोड़ दिये जायँगे और न मालूम क्या क्या न किया जायगा। बोल्शेविकों की भारत-सम्बन्धी क्रान्ति की योजना भारत को ऐसी ही न्यामतें देने का वादा करती है। परन्तु धर्मप्राण भारत तो उन्हें दूर ही से नमस्कार करेगा। इस भावी विभीषिका से भारत पहले से ही सावधान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—मौलाना मुहम्मद अली का देहावसान

मुसलमानों के प्रसिद्ध नेता मौलाना मुहम्मद अली का लन्दन में ४ जनवरी को देहान्त हो गया। आप राउंडटेबल कान्फ़रेंस के प्रतिनिधि होकर लन्दन गये थे। आपकी मृत्यु से भारत का एक तेजस्वी नेता उठ गया। आप कट्टर मुसलमान होते हुए भी एक खरे राष्ट्रवादी नेता थे। जहाँ आपने मुसलमानों के जगाने का काम किया, वहाँ आपने देश की भी पूरी सेवा की है। आप निर्भीक वाग्मी और प्रखर लेखक थे। आपकी मृत्यु से देश की वास्तव में क्षति हुई है।

मौलाना मुहम्मद अली का जन्म सन् १८७९ में हुआ था। शैशवावस्था में ही आप पितृहीन हो गये। उस समय आपके बड़े भाई मौलाना शौकत अली भी दो ही वर्ष के थे। इसलिए उनके लालन-पालन का भार उनकी सुप्रसिद्ध मा बी अम्मा पर पड़ा। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् मुहम्मद अली अलीगढ़ के मुस्लिम कालेज में पढ़ने को भेज दिये गये। इसके पश्चात् आप इँग्लेंड की आक्सफ़ोर्ड-यूनीवर्सिटी में भर्ती होकर सन् १८९८ से सन् १९०५ तक शिक्षा पाते रहे। आई० सी० एस० की परीक्षा में आप अनुत्तीर्ण रहे।

भारत में लौटने पर मौलाना मुहम्मद अली रामपुर-रियासत के चीफ़ एजूकेशनल अफ़सर नियुक्त हुए और एक साल के बाद बड़ौदा-राज्य में अफ़ीम-विभाग के उच्च अधिकारी हो गये। आपने वहाँ १९०४ से १९१० तक नौकरी की। इसके बाद सन् १९११ में आप सार्वजनिक क्षेत्र में अवतीर्ण हुए और कलकत्ते से 'काम रेड' नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करना शुरू किया। इस पत्र के द्वारा आपने मुसलमानों की बड़ी सेवा की। इधर जब योरपीय महायुद्ध छिड़ गया तब मौलाना के कुछ प्रकाशित लेख गवर्नमेंट को राजविद्रोहात्मक मालूम पड़े, फलस्वरूप १९१५ में दोनों भाई नज़रबन्द कर दिये गये। मांटेगू-चेम्स-फ़ोर्ड-रिफ़ार्म स्कीम के प्रारम्भ में जब राजनैतिक कैदियों को क्षमा प्रदान की गई तब आप लोग बेतूल-जेल से मुक्त किये गये। आलइण्डिया मुस्लिम लीग की स्थापना आपने ही की थी।

असहयोग-काल में मौलाना मुहम्मद अली ने महात्माजी का पूरा साथ दिया था। १४ सितम्बर सन् १९२१ को आप विजगापट्टम में गिरफ़्तार कर लिये गये। कराँची के मुक़द्दमे में आपको दो साल की कड़ी क़ैद की सज़ा हुई। कारावास से मुक्त होने पर आप सन् १९२३ में कोकोनाडा में होनेवाली कांग्रेस के सभापति चुने गये। मदरास-कांग्रेस के बाद आप कांग्रेस से एक-दम अलग हो गये। वर्तमान सविनय-अवज्ञा-आन्दोलन में आपने भाग नहीं लिया था। इन दिनों आप मुसलमानों के हित-रक्षा के आन्दोलन में ही निरत रहे।

लन्दन में आपकी मृत्यु के समय आपकी स्त्री, आपकी लड़की, मौलाना शौकत अली, तथा इनके दो पुत्र उपस्थित थे। मौलाना का शव लन्दन से सरकार-द्वारा लाया जाकर उनके प्रसिद्ध तीर्थस्थान जेरूसलेम में ख़लीफ़ा उमर के मक़बरे में दफ़नाया गया है। भगवान् दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

४—दिसम्बर का पिछला सप्ताह

दिसम्बर का पिछला सप्ताह इधर कई वर्षों से राष्ट्रीय सप्ताह कहलाने लगा था। इन दिनों बड़े दिन की छुट्टी में राष्ट्रीय महासभा के सिवा अन्य अनेक सभा-समाजों के भी जल्से होते थे। इस कारण इस अवसर पर देश में बड़ी चहल-पहल हो जाती थी। परन्तु पिछली लाहौर की कांग्रेस में यह निश्चय हुआ था कि भविष्य में राष्ट्रीय महासभा के जलसे दिसम्बर में न होकर फ़रवरी में हुआ करें, अतएव उसका जल्सा इस बार दिसम्बर के पिछले सप्ताह में नहीं किया गया। इससे यद्यपि कई एक महत्त्व-पूर्ण सभा-समाजों के इस अवसर पर जल्से हुए भी, तो भी पहले का सा नव जीवन इस बार नहीं दृष्टिगोचर हुआ। दिसम्बर के महीने में जिन सभाओं के जल्से हुए उनमें 'अखिल-एशिया-शिक्षा-सम्मेलन' का विशेष महत्त्व रहा। इस सम्मेलन के सम्बन्ध में इसी अंक में एक सचित्र लेख प्रकाशित हुआ है। यह सम्मेलन अपने ढङ्ग का पहला सम्मेलन है। यद्यपि इसमें एशिया के सभी देशों के काफ़ी प्रतिनिधि नहीं शामिल हुए तथा मुसलमानी देशों का एक भी प्रतिनिधि नहीं आया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो भी निराश होने की ज़रूरत नहीं है। यह उसका पहला ही अधिवेशन था। भविष्य में यह त्रुटि न रहेगी और यह सम्मेलन क्रमशः अपने आप सङ्गठित होता जायगा।

इस शिक्षा-सम्मेलन की ही भाँति सफलतापूर्वक पटने में 'ओरियंटल कान्फ़रेंस' का जलसा हुआ है। इसके भी अधिवेशन में भारत के सभी प्रान्तों के प्रसिद्ध प्रसिद्ध विद्वान् एकत्र हुए थे। सभापति का आसन हिन्दी के अनुरागी पुरातत्त्वविद् रायबहादुर हीरालालजी ने ग्रहण किया था। आपने अपने भाषण में ऐतिहासिक खोज के सम्बन्ध में कई एक उपयोगी सूचनायें प्रकट कीं और इस बात पर अधिक ज़ोर दिया कि पुस्तकों के पुराने भाण्डारों की ख़ूब छानबीन होनी चाहिए।

परन्तु इस अधिवेशन में बम्बई के सर जीवनजी मोदी ने चन्द्रगुप्त और अशोक के ईरानी होने की चर्चा फिर छेड़ी है। मोदी साहब पारसी हैं और पुरातत्त्व के विद्वान् भी हैं। परन्तु आपने इस सम्बन्ध में जो बातें कही हैं, जिन कारणों से आपने चन्द्रगुप्त और अशोक को ईरानी सिद्ध किया है वे तो सबकी सब डाक्टर स्पूनर की दलीलें हैं। सन् १९१५ में डाक्टर साहब ने ही पहले-पहल इस सिद्धान्त की कल्पना की थी। पारसी-धन-कुबेर ताता की आर्थिक सहायता से आपने पाटलीपुत्र में खोदाई करवाई थी, जिसके परिणामस्वरूप आपने चन्द्रगुप्त और अशोक को ईरानी सिद्ध किया था। परन्तु आपकी दलीलों की निस्सारता उसी समय सिद्ध कर दी गई थी। परन्तु शायद मोदी साहब डाक्टर स्पूनर को ठीक राह पर समझते हैं। आशा है, इतिहास के विद्वानों का इस महत्त्व-पूर्ण चर्चा की ओर ध्यान आकृष्ट होगा।

उपर्युक्त दो महत्त्व-पूर्ण संस्थाओं के सिवा इलाहाबाद में मुसलिम लीग, कराँची में हिन्दू-महासभा, जलगाँव में वर्णाश्रम-स्वराज्य-संघ के जलसे हुए हैं। मुस्लिम लीग के सभापति डाक्टर इक़बाल थे। हिन्दू-महासभा के सभापति भाई परमानन्द और वर्णाश्रम-स्वराज्य-संघ के सभापति नाथद्वारे के गोस्वामी दामोदरलालजी थे। मुस्लिम लीग और हिन्दू-सभा में साम्प्रदायिकता का ही ज़ोर रहा। परन्तु इस नये वर्णाश्रम-स्वराज्य-संघ में एक नई बात हुई। इसमें अछूतों के लिए समुचित स्थान न दिये जाने से उन्हें सत्याग्रह का आश्रय लेना पड़ा, जिसके फल-स्वरूप उनका नेता तथा स्वयंसेवक पुलिस के द्वारा गिरिफ़्तार किये गये। तब कहीं संघ के अधिवेशन की कार्यवाही शुरू हो पाई। शायद इस संघ के कर्णधारों ने अछूतों को 'वर्णाश्रम' के अन्तर्गत न समझा हो। तभी तो यह नौबत पहुँची। ख़ैर, इस बार दिसम्बर का पिछला सप्ताह इसी प्रकार मनाया गया।

५—हिन्दी की पत्रिकायें

हिन्दी की 'पत्रिकायें'—पत्र नहीं—किस तरह निकल रही हैं, इसकी ओर हिन्दी के पाठकों का ध्यान आकृष्ट हुआ है। उनके सम्बन्ध में 'आज' में हाल में ही दो लेख निकले हैं। एक लेख के लेखक महोदय की यह शिकायत है कि मासिक पत्रिकायें ठीक समय पर नहीं निकलती हैं। आपकी यह शिकायत समुचित है। पत्रिकाओं के संचालकों को उन्हें ठीक समय पर निकालने का प्रयत्न करना चाहिए। दूसरे लेख के लेखक श्रीयुत लक्ष्मीकान्त झा का कहना है कि हिन्दी की मासिक पत्रिकायें 'खिचड़ी-पन्थी' हैं। आप लिखते हैं—

'हिन्दी में पत्रिकाओं की संख्या बढ़ रही है। साधारणतः लोग इसे साहित्य की उन्नति का चिह्न समझते हैं पर वास्तविक उन्नति नहीं हो रही है। कारण, जितनी पत्रिकायें निकलती हैं उनमें कुछ भी विषय-भेद अथवा विशेषता नहीं दीखती। एक दो पत्रिकाओं को छोड़ बाक़ी सब पत्रिकाओं में क़रीब क़रीब एक ही प्रकार के विषय रहते हैं। हाँ, प्रत्येक पत्रिका में विषयों की भरमार रहती है। मैं नहीं समझ सकता कि एक या दो प्रधान सम्पादक अपने चार पाँच सहकारी सम्पादकों के साथ—जिन्हें प्रूफ़रीडरी भी करनी पड़ती है—इतने विषय के लेखों का अच्छी तरह सम्पादन कर सकते हैं। फल यह होता है कि मासिक पत्रिकाओं का मूल्य उनकी पृष्ठ-संख्या, चित्र-संख्या और कार्टून-संख्या पर निर्भर समझा जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'किसी मासिक पत्र को देखिए। उसमें छायावादी कविता से लेकर प्रहसन तक, दर्शन-शास्त्र से लेकर व्यङ्गविनोद तक, स्वास्थ्य-रक्षा से लेकर संगीत-स्वरलिपि तक, इतिहास से लेकर विज्ञान-वैचित्र्य तक, यात्रा और पर्यटन से लेकर समालोचना तक, मेस्मरिज़्म-विद्या से लेकर पाकशास्त्र तक, सभी विषय आप पायेंगे। इसका फल यह होता है कि आप किसी भी विषय पर अच्छे लेख जल्दी नहीं पाते।'

झा महाराज के ये अभियोग भी उपेक्षणीय नहीं हैं। परन्तु क्या हिन्दी उस अवस्था को पहुँच गई है जब उसमें भी उनके कथनानुसार 'विलायती और अमरीकन' पत्रिकाओं जैसी विषय-विशेष की पत्रिकायें अलग अलग प्रकाशित हो सकें? क्या योरप और अमरीका की तरह हिन्दी में ऐसा पाठक-समुदाय अस्तित्व में आ गया है जो विषय-विशेष की मासिक पत्रिकाओं को प्रश्रय दे सके। अनुभव तो यही प्रकट करता है कि अभी वैसी पत्रिकाओं के लिए हिन्दी में जगह नहीं है। यदि ऐसा होता तो कृषि, स्वास्थ्य, कविता, विज्ञान जैसे विषयों की पत्रिकायें निकल निकलकर अकाल में ही काल-कवलित न हो गई होतीं या ग्राहकों के अभाव में दान के आश्रय पर उन्हें अपना जीवन न बिताना पड़ता। ऐसी दशा में वर्तमान पत्रिकाओं की रूप-रेखा एकाएक परिवर्तन कर देना कहाँ तक उपयुक्त होगा, यह अधिकार-पूर्वक नहीं कहा जा सकता है। तो भी पाठकों की अपेक्षा इस ओर स्वयं पत्रिकाओं के संचालकों का भी ध्यान विशेषरूप से आकृष्ट रहता है। अन्त में यहाँ झा महोदय की तरह के विचार रखनेवाले हिन्दी-प्रेमियों से हमारा यह निवेदन है कि जो पत्रिकाएँ खिचड़ी पन्थी समझी गई हैं वे वैसी नहीं हैं। किन्तु वे अपनी अलग विशेषता या भिन्नता रखती हैं। और जिनमें वैसा स्पष्ट भेद अभी नहीं दिखाई दे रहा है उनमें भी समयान्तर में वह दिखाई देने लग जायगा। क्योंकि तभी वे फूल-फल सकेंगी।

६—राउंडटेबल कान्फ़रेंस

भारत के राजनैतिक इतिहास में लन्दन की राउंड-टेबल कान्फ़रेंस का अपना अलग महत्त्वपूर्ण अध्याय होगा। यद्यपि भारत में डेढ़ सौ वर्ष से अँगरेज़ी अमलदारी क़ायम है और शासन-सम्बन्धी मसलों पर विचार करने के लिए अँगरेज़ी सरकार छोटे-बड़े अनेक जाँच कमीशन अब तक बैठा चुकी है, तथापि यह पहला ही अवसर है कि शासक वर्ग तथा प्रजावर्ग के अनुभवी प्रतिनिधि इतनी संख्या में इस प्रकार एक सभा में एकत्र हुए हों और उसमें भारतीय प्रतिनिधियों ने भारत के स्वाधिकारों की माँग व्यवस्थित रीति से उपस्थित की हो और अँगरेज़ी सरकार के प्रतिनिधियों ने उस पर मनोनियोग-पूर्वक विचार किया हो। जहाँ इस अवस्था के आ उपस्थित होने का एक कारण भारत का राजनैतिक आन्दोलन है, वहाँ वर्तमान साम्यवादी अँगरेज़-सरकार भी एक कारण है। यद्यपि मज़दूर-दल की सरकार का अँगरेज़ी पार्लियामेंट में बहुमत नहीं है, तो भी अपने जीवन के कुछ ही समय के भीतर उसने अनेक जटिल प्रश्नों के सुलझाने का यत्न ही नहीं किया है, किन्तु अपनी सहृदयता का भी पूरा परिचय दिया है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में वह विश्वव्यापी शान्ति स्थापित करने के लिए संसार की दूसरी महाशक्तियों से सैन्य-बल के घटाने एवं उसी प्रकार की अन्य महत्त्वपूर्ण बातों का समझौता कर रही है तो इधर साम्राज्य में अधिक दृढ़ता लाने के लिए वह उपनिवेशों के साथ साथ साम्राज्य के अन्य देशों की विकट समस्याओं के हल करने को भी अग्रसर हुई है। उपर्युक्त राउंडटेबल कान्फ़रेंस इसी प्रसङ्ग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इस कान्फ़रेंस में अँगरेज़ी भारत के सभी धर्मों तथा वर्गों के प्रतिनिधि तो हैं ही, देशी राज्यों के भी प्रतिनिधि हैं। इन प्रतिनिधियों में से प्रायः सबके सब भारत के चुने हुए व्यक्ति हैं। इनमें अधिकांश नामी नामी राजनीतिज्ञ तथा प्रभावशाली नेता हैं। देश के इन नररत्नों ने भारत की स्वाधिकार-सम्बन्धी माँगों को जिस विवेचनात्मक ढङ्ग से उक्त सभा में उपस्थित किया है उसके लिए उनकी वहाँ भूरि भूरि प्रशंसा हुई है। अमरीका के संयुक्त-राज्यों के राजदूत ने तो यहाँ तक कहा है कि यदि कोई व्यक्ति इन भारतीय प्रतिनिधियों पर किसी तरह का दोषारोपण करेगा तो उसका यह काम राष्ट्रद्रोह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समान होगा। इसमें सन्देह नहीं है कि इन प्रतिनिधियों ने भारत की परिस्थिति का स्पष्ट वर्णन किया है और अपनी माँगें भी उसी प्रकार स्पष्ट भाषा में उपस्थित की हैं। यदि मुसलमान प्रतिनिधि जातिगत समस्याओं पर अधिक ज़ोर न देते तो कान्फ़रेंस का परिणाम और भी अधिक स्पष्ट रूप में प्रकट हुआ होता। तो भी इस कान्फ़रेंस ने भारत को अपने लक्ष्य की प्राप्ति का मुख्य सूत्र प्रदान कर दिया है। यही इसका महत्त्व है। इस कान्फ़रेंस में जो विचार-विनिमय हुआ है उसीका यह परिणाम हुआ है कि इसकी समाप्ति पर प्रधान मन्त्री रामसे मैकडोनल्ड साहब ने बहुत अर्थ-गर्भित महत्त्वपूर्ण घोषणा की है। यह घोषणा साम्राज्य-सरकार की ओर से की गई है। वह इस प्रकार है—

"ब्रिटिश-सरकार का मत है कि भारत-शासन की ज़िम्मेवारी केन्द्रीय और प्रान्तीय व्यवस्थापक सभाओं को दी जाय, पर साथ ही परिवर्तन-काल के लिए कुछ ऐसे नियम बना दिये जायँ जिनसे कुछ ख़ास कर्तव्यों का पालन किया जाय तथा कुछ ख़ास परिस्थितियों का मुक़ाबिला किया जाय, तथा ऐसी गारंटियाँ भी दी जायँ जिन्हें अल्पसंख्यकवर्ग अपने राजनीतिक स्वत्वों और स्वातन्त्र्य की रक्षा के लिए आवश्यक समझते हैं। परिवर्तन-काल की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए जो क़ानून बनाये जायँगे उनके सम्बन्ध में ब्रिटिश-सरकार प्रधानतया इस बात का ख़याल रक्खेगी कि संरक्षित अधिकारों की रचना ही इस प्रकार की जाय कि उनसे भारत नये शासन-विधान के ज़रिये पूर्ण उत्तरदायित्व प्राप्त कर सके और उसमें किसी प्रकार की बाधा न हो।

"ब्रिटिश-सरकार यह घोषणा करते समय भी जानती है कि ऐसे शासन की सफलता के लिए कतिपय आवश्यक बातों का अन्तिम निर्णय अभी तक नहीं हुआ है। तथापि उसे आशा है कि यहाँ अब तक जो काम किया जा चुका है उससे उक्त बातें यहाँ तक पहुँच गई हैं कि इस घोषणा के बाद और बात-चीत करने से उनका निपटारा हो जायगा।

"ब्रिटिश-सरकार ने इस बात को नोट कर लिया है कि यहाँ अब तक जो बात-चीत हुई है उसका आधारस्तम्भ यह है तथा इसे सब दलों ने मान लिया है कि केन्द्रीय सरकार ब्रिटिश-भारत और भारतीय रियासतों की संयुक्त शक्ति हो तथा ये केन्द्र की द्विअङ्गक व्यवस्थापक-संस्था में सम्मिलित हों। इस सामूहिक सरकार का प्रकृतरूप राजाओं और ब्रिटिश-भारत के प्रतिनिधियों से सलाह करके ठहराया जायगा। उस सरकार के ज़िम्मे कौन कौन विषय किये जायँगे, इस बात पर भी और विचार करना पड़ेगा, क्योंकि उस सरकार का सम्बन्ध रियासतों की उन्हीं बातों से होगा जिन्हें राजा लोग, समूह में प्रवेश करते समय, सामूहिक सरकार के ज़िम्मे कर देंगे।" (आज से)

इस घोषणा से इस कान्फ़रेन्स की समग्र कार्यवाही को एक सङ्गत रूप प्राप्त हो जाता है और यह प्रकट हो जाता है कि इस महत्त्वपूर्ण सभा का क्या सुपरिणाम होगा। प्रधान मन्त्री ने भावुकता के साथ स्पष्ट शब्दों में स्वीकार कर लिया है कि भारत उत्तरदायित्वपूर्ण शासन का सर्वथा अधिकारी है। तथास्तु।

७—सूचना

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, संयुक्त प्रान्त, प्रयाग का वार्षिक सम्मेलन आगामी फ़रवरी १९३१ में होना निश्चय हुआ है।

सम्मेलन का उद्देश यह है कि हिन्दी और उर्दू के विद्वान् एकत्र होकर अपने विचारों का विनिमय तथा इन भाषाओं के आधुनिक साहित्य और भाषा-सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करें।

यह भी निश्चय हुआ है कि भिन्न-भिन्न विषयों पर विद्वानों से लेख माँगे जायँ और उनसे यह प्रार्थना की जाय कि वे सम्मेलन के अवसर पर उपस्थित होकर अपने लेखों को पढ़ें अथवा किसी निश्चित विषय पर व्याख्यान दें।

लेखों और व्याख्यानों के लिए ये विषय चुने गये हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. समालोचना
२. साहित्य का इतिहास
३. कला
४. भाषाविज्ञान
५. इतिहास और पुरातत्व
६. दर्शन और विज्ञान
७. एकेडेमी के उद्देश

लेखों तथा व्याख्यानों का विवरण एकेडेमी की ओर से पुस्तकरूप में प्रकाशित किया जायगा।

इसके अतिरिक्त यह भी प्रबन्ध किया गया है कि एकेडेमी की ओर से प्रतिवर्ष होनेवाले व्याख्यान भी इसी अवसर पर दिये जायँ।

जो विद्वान् इस अवसर पर अपने निबंध पढ़ना चाहें उनसे अनुरोध है कि वे अपने निबंध का संक्षेप एकेडेमी के दफ़्तर में १५ जनवरी १९३१ तक अवश्य भेज दें जिसमें उसका विवरण यथासमय प्रकाशित हो सके।

सब भाषा-प्रेमियों से अनुरोध है कि इस सम्मेलन में उपस्थित होकर और इसमें भाग लेकर हमें अनुगृहीत करें।

विस्तृत कार्य-क्रम बाद में प्रकाशित किया जायगा।

ताराचन्द एम० ए० डी० फ़िल० आक्सन
१२ दिसम्बर १९३० जेनरेल सेक्रेटरी
हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग

८—भूल-सुधार

(१)

जनवरी की सरस्वती में 'भविष्य की भावना' शीर्षक लेख पृष्ठ १६ कालम दूसरे की १४ वीं लाइन इस तरह पढ़ी जाय—'कि मनुष्य सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ नहीं है, एकदेशिक है।'

(२)

दिसम्बर की सरस्वती में 'महा-पुरुष कौन है' शीर्षक एक कविता छपी है। उसके मेकप में ग़लती हो गई है। उसमें तीनों मन्दाक्रान्ता के बाद पहले कुण्डलिया के ऊपर के शिखरणी, भुजंगी और सरसी छन्द पढ़े जायँ।

९—चित्र-परिचय

(१) मन्दोदरी और सीता—इस भावपूर्ण चित्र का चित्रण श्रीयुत उपेन्द्रचन्द्र घोष दस्तीदार ने किया है। इसकी रचना रामायण की एक घटनाविशेष पर हुई है। एक बार मन्दोदरी ने अपने वार्तालाप में सीताजी को डाँटा-डपटा था। उनकी उसी अवस्था का चित्रण चित्रकार महोदय ने अपने इस चित्र में किया है। मन्दोदरी वृक्ष के चबूतरे पर बैठी सीताजी को डाँट-फटकार रही है और बेचारी सीताजी सिर झुकाये उसका अन्याय सहन कर रही हैं। इसी भाव को छविमान करने में चित्रकार महोदय ने सफलता प्राप्त की है।

(२) अहिरावण-वध—यह चित्र भी दस्तीदार बाबू की ही रचना है। रावण के कहने पर पाताललोकवासी अहिरावण राम और लक्ष्मण को उनकी सेना से हर ले गया था और अपनी नगरी में ले जाकर उनका भगवती काली के आगे बलिदान कर देने का उपक्रम कर रहा था। परन्तु इसी बीच में हनूमानजी ने वहाँ पहुँचकर उसी का बलिदान कर दिया। इस चित्र में यही दृश्य दिखलाया गया है।

(३) दानलीला—और (४) सङ्कीर्तन—ये दोनों चित्र प्रसिद्ध चित्रकार श्रीयुत असितकुमार हल्दार की रचनायें हैं। एक में कृष्णजी की अनोखी लीलाओं में से दान-लीला का चित्रण किया गया है और दूसरे में श्रीचैतन्यदेव का स्वर्गीय सुख का नर्तन है। दोनों ही चित्र बहुत ही सुकुमार भाव प्रकट करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नव प्रकाशित पुस्तकें

अँगरेज़ी भाषा की शिक्षा

(ई० एस० ओकली, एम० ए०)

यह अँगरेज़ी भाषा का एक प्रकार का व्याकरण है। अँगरेज़ी व्याकरण की प्रायः सभी बातें इसमें विस्तार-पूर्वक समझाई गई हैं, साथ ही अँगरेज़ी शब्दों और मुहाविरों का संग्रह तथा उनका प्रयोग भी दिया गया है। इस पुस्तक की सहायता से अँगरेज़ी लिखने का अभ्यास अच्छी तरह से किया जा सकता है। मूल्य २) दो रुपये।

प्रबन्धप्रकाशः

(डाक्टर मंगलदेव शास्त्री, एम० ए०, डी० फ़िल०)

इस पुस्तक में संस्कृत में निबन्ध लिखने की विधि बतलाई गई है। साथ ही कई उत्तमोत्तम निबन्धों का संग्रह भी किया गया है। संस्कृत के सुप्रसिद्ध विद्वानों तथा अध्यापकों ने इसकी उत्तमता की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है। संस्कृत-कालेज बनारस की मध्यमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। मूल्य १) एक रुपया।

पञ्चतन्त्रम् (पञ्चमं तन्त्रम्)

(श्री हरिहर शास्त्री)

यह श्री विष्णुशर्मा-द्वारा सङ्कलित पञ्चतन्त्र का पांचवां तन्त्र है। शास्त्रीजी ने पुस्तक के आदि में मूलग्रन्थ प्रकाशित किया है और बाद को छब्बीस पृष्ठों में संस्कृत में टिप्पणियाँ प्रकाशित की हैं, जिनमें आवश्यकतानुसार बड़े बड़े शब्दों के समास, प्रतिशब्द, श्लोकों तथा कथाओं के सारांश आदि दिये गये हैं। अन्त में ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। पुस्तक संस्कृत-कालेज काशी की प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। मूल्य ॥) आठ आने।

प्राणायामविज्ञान और कला

(पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल एम० ए०, एल-एल० बी०)

यह पुस्तक डाक्टर शोजा-बुरो ओटेब के 'साइंस एंड आर्ट आफ़ डीप ब्रीदिंग' का हिन्दी अनुवाद है। इसके मूललेखक एक सुप्रसिद्ध चिकित्सक थे। प्राणायाम के विषय में लगातार बहुत दिनों तक प्रयोग एवं मनन करके उन्होंने जो कुछ अनुभव किया है, उसी का इसमें संग्रह है। योरप की कई भाषाओं में इसका अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। मूल्य ।॥) बारह आने।

नीरोग कन्या

(श्रीयुत सन्तराम बी० ए०)

स्वास्थ्य-रक्षा के लिए जिन जिन बातों का जानना आवश्यक है, उन सब पर इस पुस्तक में विशद रूप से विवेचन किया गया है। पुस्तक स्त्रियों—विशेषतः छात्राओं के लिए बहुत उपयोगी है। मूल्य १) रु०

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

Printed and Published by K. Mittra at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्दी (Winter) में शरीर को पुष्ट बनाइए

कविविनोद वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य आविष्कारक अमृतधारा, ५ दर्जन वैद्यक पुस्तकों के रचयिता, सम्पादक "देशोपकारक" तथा पुरुषों के गुप्त रोगों के विशेषज्ञ ने मनुष्य के शरीर को सोना बनानेवाली लगभग ६ दर्जन अकसीरें तैयार की हैं, जिनमें से किञ्चित् का वर्णन नीचे दिया जाता है। जो सविस्तर चाहें, वे "नपुंसकत्व" नामी पुस्तक आध आने का टिकट भेजकर बिना मूल्य मँगवा सकते हैं। मगर विद्यार्थी इसके वास्ते पत्र न भेजें। जो सज्जन औषधि मँगवाना चाहें, वे अपनी अवस्था के अनुसार जो अकसीर अपने लिए उचित समझें, मँगवा लें। यदि स्वयं न चुन सकें, तो वृत्तान्त लिखकर १) फ़ीस के साथ जो कि आरम्भ में केवल १ बार ली जाती है, भेज दें। श्रीपण्डितजी से औषधि तजबीज़ कराके सूचना दे दी जायगी या भेज दी जायगी। जैसा आप लिखेंगे। इन अकसीरों के प्रभावशाली होने के भरोसे पर इनका नमूना भी दिया जाता है:—

अक्सीर नं० १—यह पुरुषों के विशेष रोगों की उत्तम औषधि है। शुक्रमेह, शीघ्रपतन को हितकर है, और निर्बलता को दूर करने के लिए अद्वितीय है। मूल्य ६४ गोली ४) ३२ गोली २) नमूना ८ गोली ॥)

अशूगरी—उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त मूत्र में शक्कर आने के लिए एक ही औषधि है, हर प्रकार के प्रमेह के लिए अद्वितीय है। मूल्य ३२ गोली ४), नमूना १)

अक्सीर नं० ५०—उपरोक्त गुणों में अद्वितीय है। जगत् में कोई पौष्टिक औषधि इसकी तुलना नहीं कर सकती है। पहली गोली ही अपना स्वास्थ्यदायक प्रभाव दिखाती है। अमीरों के वास्ते है। मूल्य १५ गोली ७), ८ गोली ४)।

अक्सीर नं० ११—शीघ्रपतन, शुक्रमेह, अनिद्रा को दूर करने के अतिरिक्त हृदय, मस्तिष्क, यकृत, आमाशय, मूत्राशय को भी बल देती है। मूल्य ६४ गोली १०), १६ गोली २॥) रु० नमूना ४ गोली ॥=)

अक्सीर नं० १६—शुक्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, प्रमेह, जीर्णज्वर, ज्वर के बाद ही निर्बलता को दूर करनेवाली, आनन्ददायक, पौष्टिक, उत्तेजक और हृदय, मस्तिष्क को बल देनेवाली है। मूल्य ३२ गोली ४), नमूना १)।

अक्सीर नं० २०—वृद्ध को युवा और युवा को मल्ल बनाने के वास्ते यह योग शिवजी महाराज का निर्मित है। जो खांसी, नज़ला, जुकाम, श्वास, पाण्डु आदि को भी हितकर है। मूल्य ६४ गोली ४), नमूना ॥)

अक्सीर नं० ३०—इससे वीर्य्य बहुत बढ़ता है। उसके पश्चात् पुंस्त्व बढ़ना आरम्भ होता है। शुक्रमेह, स्वप्नदोषादि को हितकर है। मूल्य एक पाव २), नमूना ॥)

अक्सीर नं० ३१—२० प्रकार का प्रमेह, या मूत्ररोग, अर्श, श्वास, अपाचन आदि को लाभकारी है और शुक्रमेह को भी हितकर है। मूल्य ३२ गोली १), नमूना ।)

अक्सीर नं० ३४—(क) शुक्रमेह के वास्ते अद्वितीय औषधि है, मूल्य ३२ गोली २), नमूना ॥)

अक्सीर नं० ३४—(ख) जो इसके अतिरिक्त हृदय, मस्तिष्क, मूत्राशय, यकृत, आमाशय आदि को बल देती है। मूल्य ३२ गोली ५), नमूना १।)

अक्सीर नं० ३९—वीर्य्य को गाढ़ा करती और बढ़ाती है, मस्तिष्क को ताज़ा करती है, दृष्टि को बढ़ाती है। शीघ्रपतन दूर होता है। दूध में मिलाकर खाते हैं। मूल्य एक पाव २), नमूना ॥)।

अक्सीर नं० ४०—स्वप्नदोष की अद्वितीय औषधि विद्यार्थियों के लिए विशेषकर लाभकारी है। मूल्य ३२ गोली १), नमूना ।)

दत्त तिला—जब चाहो मलो, न पानी का परहेज़ न ज़ख़म। मूल्य २)।

पत्र तथा तार का पता—अमृतधारा ११, लाहौर।

विज्ञापक—मैनेजर अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा भवन, अमृतधारा रोड, अमृतधारा डाकख़ाना, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़के क्या चाहते हैं ?

यह वह पुस्तक है जिसकी एक प्रति हर एक होनहार बालक के पास होनी चाहिए।

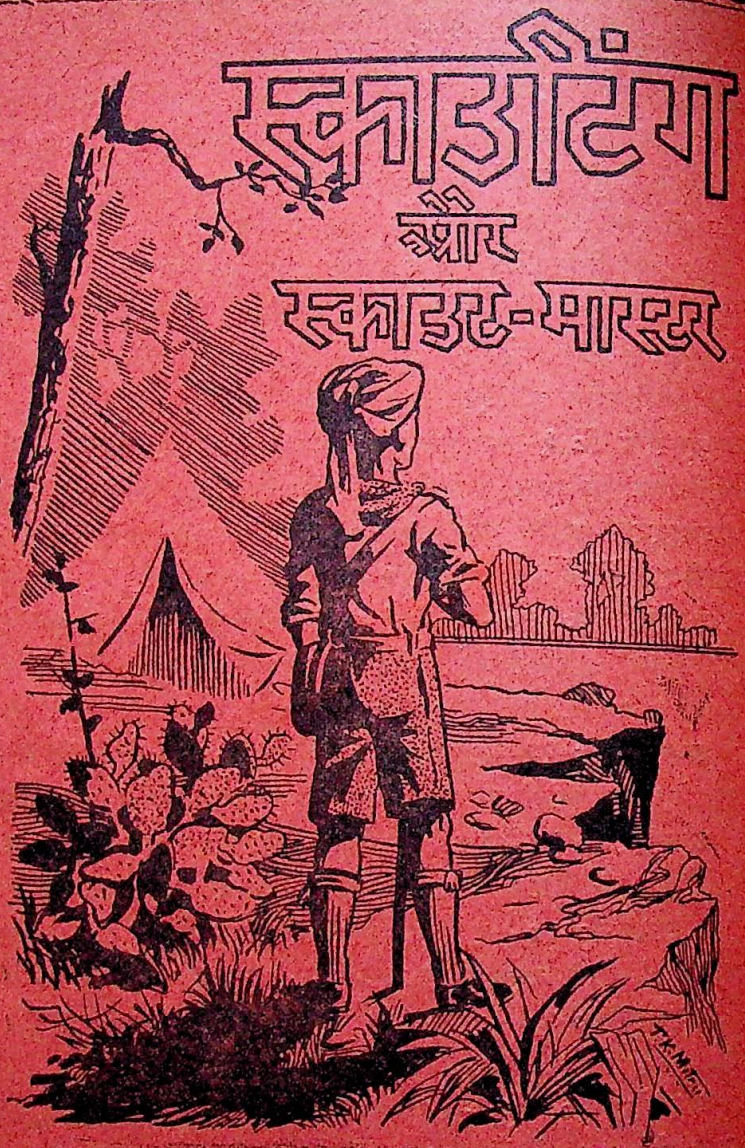

इस पुस्तक में अखिल भारतीय सेवासमिति बालचर-मण्डल प्रयाग के प्रधान केन्द्र-कमिश्नर बाबू जानकीशरण वर्मा, बी० ए० ने स्काउटिङ्ग के विषय में सभी जानने योग्य बातें बड़े रोचक ढङ्ग से लिख दी हैं। ज़रूरत के हिसाब से पुस्तक में आर्ट पेपर पर बहुत से हाफ़ टोन के चित्र भी हैं। मूल्य केवल ॥=) है।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें ! नई पुस्तकें !!

अकबरी दरबार

दूसरा भाग

यह 'सूर्यकुमारी-पुस्तकमाला' का १० वाँ पुष्प है। जिन्होंने इस 'दरबार' का पहला भाग देखा है उनको विशेष रूप से इसका परिचय देने की ज़रूरत नहीं है। इसमें मुग़ल बादशाह अकबर के प्रसिद्ध दरबारियों की ख़ास ख़ास घटनाओं का वर्णन, स्वर्गीय शम्सुल् उ ल्मा मौलाना मुहम्मद हुसेन साहब 'आज़ाद' का किया हुआ, है। वर्णित घटनाओं से उस समय की राजनैतिक परिस्थिति का ज्ञान तो होता ही है, साथ ही तत्कालीन भारत की दशा का बहुत कुछ हाल मालूम हो जाता है। पृष्ठ-संख्या सवा पाँच सौ से ऊपर। मूल्य सिर्फ़ ३॥) तीन रुपये आठ आने।

कर्मवाद और जन्मान्तर

यह उक्त पुस्तकमाला का ११ वाँ पुष्प है। इसके मूल-लेखक प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् बाबू हीरेन्द्रनाथ दत्त, एम० ए०, बी-एल० वेदान्तरत्न हैं। आपकी पुस्तक का वङ्ग-भाषा-भाषियों में ख़ासा आदर हुआ है। इसमें लेखक ने, भारतीय और पाश्चात्य सभी, प्रामाणिक ग्रन्थों से प्रमाण देकर हिन्दू-सिद्धान्तों का प्रतिपादन 'थियासफ़ी' के ढँग पर किया है। पुस्तक में २३ अध्याय हैं जिनमें कर्मवाद की युक्ति, कर्म और कर्मफल, कर्म और धर्मनीति, व्यक्तिगत और जातिगत कर्म, दैव और पुरुषकार, कर्म की निवृत्ति, जन्मान्तर का प्रमाण, विवर्तनवाद और जन्मान्तर, सन्तति या उन्नति, आधिभौतिक या आध्यात्मिक, जन्मान्तर और जातिस्मर तथा जीव की उत्क्रान्ति और गतागति प्रभृति शीर्षकों में वर्ण्य विषय का प्रतिपादन किया गया है। इसके पढ़ने से कर्म के संबंध की बहुत-सी बातें मालूम होंगी और जन्मान्तर होने के विलक्षण उदाहरण देखने को मिलेंगे। पुस्तक अपने ढँग की बिलकुल नई है। पृष्ठ-संख्या पौने चार सौ से ऊपर। मूल्य केवल २॥) दो रुपये आठ आने।

मिलने का पता—मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तक ! नई पुस्तक !!

हिन्दी भाषा और साहित्य

लेखक—राय साहब श्यामसुन्दरदास, बी० ए०

इस ग्रन्थ को लेखक ने अपने अनेक वर्षों के अनुभव, और परिश्रमपूर्वक एकत्र की हुई सामग्री, की सहायता से बड़ी छान-बीन करके लिखा है। इसके पूर्वार्द्ध में हिन्दी भाषा का और उत्तरार्द्ध में साहित्य का विशद रूप से विवेचन किया गया है। लेखक ने इसका उद्देश्य प्रत्येक युग की मुख्य मुख्य विशेषताओं का उल्लेख करना और यह बतलाना रक्खा है कि साहित्य की प्रगति किस समय में किस ढङ्ग की थी। इस दृष्टि से यह ग्रन्थ अन्य इतिहास-ग्रन्थों से पृथक् है। मूल्य ६) छः रुपये।

कुछ सम्मतियाँ देखिए:—

पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी—

सम्प्राप्य सुन्दरतरं नवपुस्तकं ते
हे श्यामसुन्दर मया मुमुदे नितान्तम्।
आनन्दनिर्भरहृदा विनिवेद्यतेऽद्य
त्वं शारदेन्दुविमलं सुयशो त्वमेव॥

बाबू मैथिलीशरण गुप्त—

ग्रन्थ सर्वथा आपके अनुरूप हुआ है।

डाक्टर सर जार्ज ए० ग्रियर्सन—

I heartily congratulate the author on the completion of this very valuable work. It has long been wanted, and could not have come from a higher authority on the subject.

रायबहादुर बाबू हीरालाल—

यह एक-दम नवीन सूझ है जिस पर हिन्दी-साहित्य के इतिहास के इतिहास-लेखकों का ध्यान अभी तक आकृष्ट नहीं हुआ था।...पुस्तक बड़े मार्के की है और समीक्षा की एक प्रकार की नवीन विधि स्थापित करती है।

"भारत" प्रयाग—

हिन्दी-साहित्य से सम्बन्ध रखनेवाले पठित समाज में बाबू श्यामसुन्दरदास की यह नवीन पुस्तक चिर काल तक आदर और प्रेम की दृष्टि से देखी जायगी।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-मंदिर, प्रयाग की पुस्तकें

हमारे यहाँ से मँगाइए

कविता-कौमुदी, पहला भाग—हिन्दी		३)
कविता-कौमुदी, दूसरा भाग—हिन्दी		३)
कविता-कौमुदी, तीसरा भाग—संस्कृत		३)
कविता-कौमुदी, चौथा भाग—उर्दू		३)
कविता-कौमुदी, पाँचवाँ भाग—ग्राम-गीत		३)
काश्मीर सचित्र	...	५)
भूषण-ग्रन्थावली सटीक	...	१)
पथिक-खंडकाव्य, सादा ।।) सचित्र सजिल्द		१)
मिलन—खण्डकाव्य	...	।।)
मानसी—कविताओं का संग्रह	...	।।)
स्वप्न—खण्डकाव्य	...	।।)
कुललक्ष्मी	सजिल्द	१।)
दम्पति-सुहृद्	...	१।)
सद्गुरु-रहस्य	...	२।।)
अयोध्याकांड सटीक	...	१)
बाल-कथा-कहानी—छः भाग, प्रत्येक का		।=)
दूज का चाँद	...	।।।)
हिन्दी-पद्य-रचना	...	।)
सुभद्रा	...	।।)
रहीम (संशोधित संस्करण)	...	।।)
नीति-शिक्षावली	...	।।)
प्रेम	...	।=)
रानी जयमती	...	।।।≡)
बालकों के लिए रीडरें चार भाग		=),≡),।–),।।)
कन्या-शिक्षावली चार भाग		–), =), ≡), ।)
हिन्दी-प्राइमर सचित्र	...	–)
इतना तो जानो	...	।।)
कौन जागता है ?	...	।।)
देश का दुःखी अंग	...	।)

सूचीपत्र मुफ़्त मँगा लीजिए

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-रसगङ्गाधर

सूर्यकुमारी-पुस्तकमाला का यह १३ वाँ पुष्प है। यह संस्कृत के उद्भट विद्वान् पण्डितराज जगन्नाथ के ग्रन्थ का हिन्दी-रूपान्तर है। इस ग्रन्थ को पढ़कर अब हिन्दी के पाठक भी पण्डितराज के पाण्डित्य का परिचय पा सकेंगे। इसमें उदाहरण के मूल श्लोक तो हैं ही, उनका रूपान्तर भी छन्दोबद्ध ही है। आरम्भ में, कोई १०६ पृष्ठों में, 'निवेदन', 'पण्डितराज का परिचय' और 'विषय-विवेचन' आदि हैं जिससे ग्रन्थ के समझने में ख़ासी सहायता मिलती है। पृष्ठ-संख्या सवा चार सौ। मूल्य सिर्फ़ ३॥) तीन रुपये आठ आने।

पुस्तक मँगाने का पता—

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें ! नई पुस्तकें !!

हिन्दी वैज्ञानिक शब्दावली

कोई ३० वर्ष हुए, काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने विद्वानों की एक समिति-द्वारा हिन्दी में भूगोल, खगोल, गणित, अर्थ-शास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायनशास्त्र और वेदान्त-विषयक पारिभाषिक शब्दों का संग्रह कराके 'हिन्दी वैज्ञानिक कोष' प्रकाशित किया था। तब से उल्लिखित विषयों में आशातीत उन्नति हुई और नये नये शब्दों की आवश्यकता होने लगी। इधर उक्त कोष भी अप्राप्य हो गया। इस दशा में 'सभा' ने काशी-हिन्दू-विश्व-विद्यालय के लब्धप्रतिष्ठ अध्यापकों की एक समिति-द्वारा इस हिन्दी वैज्ञानिक शब्दावली का सङ्कलन और सम्पादन कराया है। कहने की आवश्यकता नहीं कि वैज्ञानिक शब्दों का ऐसा उत्तम संग्रह भारतीय भाषाओं में उपलब्ध नहीं है। इसके दो खण्ड प्रकाशित हो गये हैं।

प्रथम खण्ड

भौतिक विज्ञान

का सङ्कलन काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय के, इसी विषय के, अध्यापक डाक्टर निहालकरण सेठी एम० ए०, डी० एस-सी० ने किया है। मूल्य ।।।) बारह आने।

द्वितीय खण्ड

रसायनशास्त्र

के सङ्कलनकर्ता भी उक्त विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान के अध्यापक श्रीयुक्त फूलदेव-सहाय वर्म्मा, एम० ए० हैं। इसका मूल्य ॥=) दस आने है।

तृतीय खण्ड प्रेस में है। शीघ्र प्रकाशित होगा।

पुस्तकें मिलने का पता—

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडियन प्रेस, लिमिटेड की नवीन भेंट

"प्रेमा"

प्रकाशित हो गई ! प्रकाशित हो गई ! !

उच्च कोटि की सुन्दर और सचित्र मासिक पत्रिका

सम्पादक

रामानुजलाल श्रीवास्तव—परिपूर्णानन्द वर्मा

विशेषतायें

मार्मिक कवितायें, रसीली कहानियाँ, साहित्यिक अन्वेषण, सारगर्भित समालोचनायें, हास्योत्पादक विनोद, अन्तर्राष्ट्रीय समस्यायें तथा कृषि, उद्योग, व्यापारसम्बन्धी आलोकमय लेख और मनोमुग्धकारी रङ्गीन चित्र !

द्वितीय (नवम्बर) अङ्क के रत्न—

श्रीसम्पूर्णानन्दजी, पं० रामेश्वरप्रसाद शुक्ल, आचार्य महावीरप्रसादजी द्विवेदी, श्रीमहादेवप्रसादजी 'सामी', पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे, श्रीदेवेन्द्रनाथ सान्याल, बी० ए०, श्रीअन्नपूर्णानन्द "निखट्टू", श्रीअयोध्यासिंहजी उपाध्याय इत्यादि ।

तृतीय (दिसम्बर) अङ्क के हीरे

श्रीजगन्नाथदास 'रत्नाकर', डा० प्यारेलाल श्रीवास्तव, डी० फिल (आक्सन), श्रीपदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बी० ए०, कुमारी बिजली बाला, बसु, नरेन्द्रदेव स्नातक, म्यूनिच (जर्मनी), श्रीमङ्गलप्रसाद विश्वकर्म्मा, श्रीदेवीप्रसाद गुप्त 'कुसुमाकर' बी० ए०, श्रीयुत मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, बी० ए० इत्यादि ।

वार्षिक मूल्य ४॥) छःमाही का २॥)

मैनेजर (प्रेमा), इंडियन प्रेस, लिमिटेड शाखा, जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्व पुस्तकें ! अपर्व पुस्तकें !!

हिन्दी-साहित्य में नई पुस्तकें

मौलाना हाली और उनका काव्य

परलोक-गत शम्स-उल-उल्मा मौलाना अल-ताफ़ हुसेन हाली उर्दू के मशहूर कवि हो गये हैं। आप महाकवि ग़ालिब के शिष्य थे। उर्दू-साहित्य में आपकी ख़ासी धाक थी। आपने उर्दू-कविता की धारा में एक-दम परिवर्तन कर दिया था। मुस्लिम जाति की जागृति में आपकी उर्दू-कविता का विशेष स्थान है। आपकी कविता उच्च कोटि की होती थी। उसमें ओज है, तेज है, माधुर्य है और मुर्दार लोगों के लिए वह हण्टर का काम देती है। उन्हीं विख्यात कविवर की जीवनी पण्डित ज्वालादत्त शर्मा ने लिखी है। साथ में उनकी चुनी हुई कविताओं का अच्छा संग्रह भी दिया गया है। कविता के नमूने अनेक ग्रन्थों से एकत्रित किये गये हैं। पद्यों का अर्थ सरल हिन्दी में दे दिया गया है। पुस्तक के अन्त में कठिन शब्दों का अर्थ जानने के लिए कोष भी दे दिया गया है। सामयिक पत्रों ने मुक्त-कण्ठ से इस संग्रह की सराहना की है। पृष्ठ-संख्या पौने दो सौ से ऊपर। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १) एक रुपया।

मानव-जीवन का विधान

असल में यह पुस्तक संस्कृत में थी जिसका कि चीनी भाषा में अनुवाद हुआ और वहाँ से अँगरेज़ी में भाषान्तरित होकर अब हिन्दी में इसने दर्शन दिये हैं। पुस्तक की उत्तमता का पता आप सिर्फ़ इस बात से पा सकते हैं कि सन् १८१२ ईसवी तक विलायत में इसके पचास संस्करण हो चुके थे।

पुस्तक कोई ४७ प्रकरणों में समाप्त है जिनमें कि विचार, विनय, उपयोग, स्पर्धा, दूरदर्शिता, धैर्य, संतोष, आशा, भय, क्रोध, कामना, पति, पिता, पुत्र, भाई, राजा-प्रजा, स्वामी और भृत्य, उपकारशीलता, दान, कृतज्ञता, मानवशरीर, इन्द्रियों का उपयोग, वृथा गर्व, विपत्ति, विवेक, लोभ, समृद्धि और विपत्ति, दुःख और मृत्यु आदि के सम्बन्ध में मूल्यवान उपदेश हैं। पुस्तक सभी के काम की है। आकार छोटा, पृष्ठ-संख्या ढाई सौ से ऊपर। मूल्य सिर्फ़ ॥।) बारह आने

गुलिस्ताँ

यह फ़ारसी-साहित्य का उत्कृष्ट लोकप्रिय ग्रन्थ है। इसमें लेखक ने राजनैतिक और सामाजिक विषयों पर भी प्रकाश डाला है; कहीं कहीं पर साधारण शिक्षाओं को बड़ा मनोहर रूप दे दिया है। सारी पुस्तक कहानियों के रूप में लिखी गई है जिससे पुस्तक को समाप्त किये बिना उसे छोड़ने को जी नहीं चाहता।

इसमें आपको मुस्लिम-सभ्यता की परिपक्वावस्था का चित्र मिलेगा। इसलिए यदि एक ही ग्रन्थ के द्वारा आप मुस्लिम-साहित्य से परिचय प्राप्त करना चाहते हैं तो आपसे अनुरोध है कि इसको अवश्य पढ़िए।

अनुवाद के विषय में इतना कहना ही बस होगा कि फ़ारसी के विद्वान् और प्रयाग-विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर बाबू वेणीप्रसाद एम० ए० ने इसका हिन्दी-रूपान्तर किया है। भूमिका में शेख शादी के जीवन-चरित्र और काव्य का विस्तृत वर्णन दिया गया है। मूल में यथेष्ट पादटिप्पणियाँ भी लगाई गई हैं, जिससे पुस्तक के असली अभिप्राय को समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर। मूल्य केवल २) दो रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्भुत करुणा और विनोद का आगार

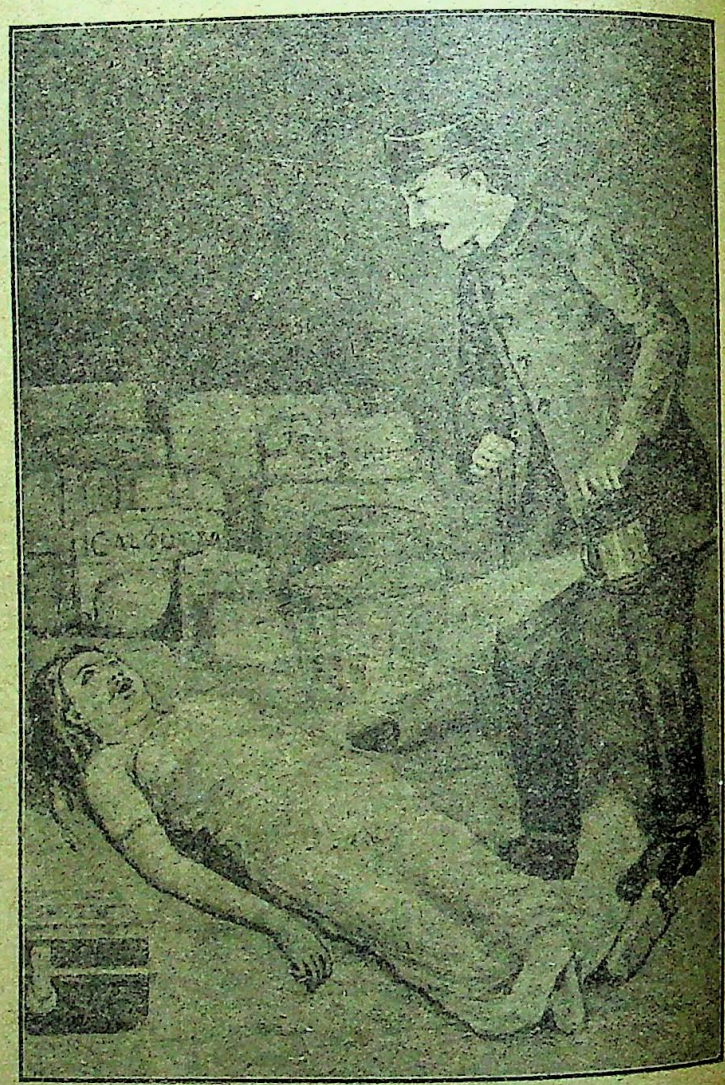

यह शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास बँगला के प्रसिद्ध लेखक प्रभात बाबू की रचना है। इस उपन्यास में पाठकों की कल्पना को विशेष रूप से उत्तेजना मिलती है। इसको प्रारम्भ कर कोई बिना समाप्त किये नहीं छोड़ सकता। पढ़ते पढ़ते कभी आप विस्मय से अभिभूत होंगे, कभी करुणा से द्रवित होंगे, और कभी भक्तिभाव से पुलकित हो जायँगे। पढ़ने में इतना मन उलझ जायगा कि खाने-पीने की भी सुध न रहेगी। उपन्यास पढ़ने का यदि आपको शौक़ है तो इसे मँगाकर अवश्य पढ़िए। इसकी भाषा सरल, सरस और साधारण बोल-चाल की है। लिखने का ढङ्ग बहुत ही रोचक है। इस पुस्तक में एक से एक सुन्दर कई चित्र भी हैं। सुन्दर जिल्द से विभूषित पुस्तक का मूल्य केवल २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भूतपूर्व सरस्वती-सम्पादक साहित्य-महारथी
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी

की लिखी पुस्तकें

चरित-चर्च्या

यह आचार्य द्विवेदीजी की कृति है। इसमें जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सफलता-पूर्वक कार्य करनेवाले बारह महापुरुषों की जीवनियों का संग्रह है। पुस्तक उपयोगी और शिक्षाप्रद है। मूल्य ॥=) चौदह आने है।

कुमारसम्भव

यदि आप संस्कृत पढ़े बिना भी जगत्प्रसिद्ध कालिदास की लेखनी का रसास्वादन करना चाहते हैं, और काव्य का आनन्द लूटना चाहते हैं तो इसे अवश्य मँगाइए। मूल्य केवल १)

किरातार्जुनीय

महाकवि भारवि का यह वही काव्य है जिसकी धूम संस्कृत-साहित्य में सैकड़ों वर्षों से मची हुई है। इसमें राजनीति, धर्मनीति आदि कूट कूट कर भरी पड़ी है। पुस्तक ऐसी मनोरञ्जक है कि एक बार शुरू करने से बिना ख़तम किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य २)

कुमारसम्भवसार

कालिदास के "कुमारसम्भव" काव्य का यह मनोहर सार है। प्रत्येक हिन्दी-कविता-प्रेमी को यह मनोहारिणी कविता अवश्य पढ़नी चाहिए। कविता सरस और प्रभाव-शालिनी है। मूल्य ।)

शिक्षा

बाल-बच्चेदार मनुष्यों को हर्बर्ट स्पेन्सर-लिखित शिक्षा-सम्बन्धिनी मीमांसा अवश्य पढ़नी चाहिए। जो इस समय विद्यार्थि-दशा में हैं वे भी एक दिन पिता के पद पर आरूढ़ होंगे। अतएव उन्हें भी इस पुस्तक से लाभ उठाने का यत्न करना चाहिए। आरम्भ में विस्तृत भूमिका, हर्बर्ट स्पेन्सर का जीवन-चरित और पुस्तक का संक्षिप्त सारांश भी है। मूल्य ३॥)

आलोचनाञ्जलि

इस पुस्तक में गवेषणापूर्ण आलोचनात्मक १२ लेख लिखे गये हैं। जिनमें संस्कृत-साहित्य के कई प्राचीन और प्रतिष्ठित ग्रन्थों का परिचय दिया गया है।

पुस्तक की भाषा और वर्णन-शैली कैसी होगी इसके लिए द्विवेदीजी का नाम जान लेना ही पर्याप्त है। हम इतना कह सकते हैं कि पुस्तक एक बार प्रारम्भ करके शायद आप बिना पूरी पढ़े न छोड़ेंगे। मूल्य केवल १)

जल-चिकित्सा

जर्मनी के विख्यात जल-चिकित्सक लुई कुने के सिद्धान्तानुसार जल से ही सब रोगों की चिकित्सा करने का इसमें वर्णन किया गया है। मूल्य ।-)

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति

इस पुस्तक को पढ़ने से मालूम होगा कि हिन्दी भाषा की उत्पत्ति कहाँ से है। पुस्तक बड़ी छान-बीन करके लिखी गई है। हिन्दी भाषा की उत्पत्ति का विवेचन तो इसमें हुई है, इसके अतिरिक्त और भी कितनी ही भारतीय भाषाओं का विचार किया गया है। मूल्य ।=)

कालिदास की निरङ्कुशता

सरस्वती पत्रिका के बारहवें भाग में "कालिदास की निरङ्कुशता" शीर्षक एक लेख-माला प्रकाशित हुई थी। अनेक हिन्दी-प्रेमियों के आग्रह करने पर वही लेख-माला पुस्तक-रूप में प्रकाशित की गई है। आशा है, सभी हिन्दी-प्रेमी इसे मँगाकर पढ़ेंगे। मूल्य ।=)

विक्रमाङ्कदेव-चरित-चर्चा

विल्हण कवि-प्रणीत 'विक्रमाङ्कदेव-चरित' काव्य की यह आलोचना है। इसमें विक्रमाङ्कदेव का जीवनचरित भी है और विल्हण कवि की कविता के कुछ नमूने भी हैं। इसके सिवा इसमें विल्हण कवि का संक्षिप्त जीवनचरित भी है। मूल्य ।=)

नाट्य-शास्त्र

इसमें नाटक-सम्बन्धी सभी बातों का वर्णन है। हिन्दी-प्रेमियों को और ख़ास कर उन लोगों को, जो नाटक-मण्डलियाँ स्थापित करके अच्छे अच्छे नाटकों-द्वारा देश में सुरुचि का बीज बो रहे हैं, यह पुस्तक अवश्य लेनी चाहिए। मूल्य ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेकानेक एकरंगे और बहुरंगे चित्रों से विभूषित सचित्र पुस्तकें

१९ चित्रों सहित **हिन्दी-महाभारत** ५००से अधिक पृष्ठ

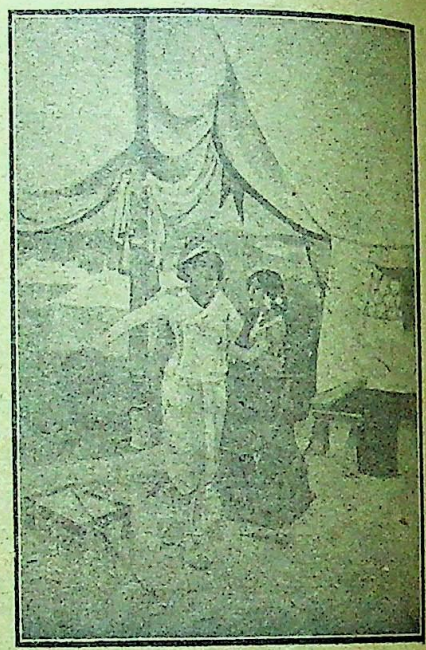

महाभारत सर्वमान्य ग्रन्थ है। हिन्दू-मात्र उसे वेदों के समान पूज्य दृष्टि से देखते हैं और उसकी गिनती पाँचवें वेद में करते हैं। यह ग्रन्थ ज्ञान-रत्नों का अक्षय भाण्डार है। कोई बात ऐसी नहीं जो महाभारत में न हो; कोई तत्त्व ऐसा नहीं जिसका निरूपण महाभारत में न हो, कोई शास्त्रीय विषय ऐसा नहीं जिसका विवेचन महाभारत में न हो। महाभारत को हिन्दू-समाज का जीवात्मा कहना चाहिए। इसी से महाभारत के अठारहों पर्वों का सम्पूर्ण कथाभाग बड़ी ही सरल, सरस और सुन्दर भाषा में हमने छपाया है। इसकी क्या प्रशंसा की जाय, इसका अधिक प्रचार ही इसकी उत्तमता का प्रमाण है। हम दावे के साथ कह सकते हैं, कि अब तक इतना अच्छा सजीला, सस्ता, मनमोहक और सीधी सरल भाषा में महाभारत का पूरा उपाख्यान हिन्दी में नहीं छपा। हिन्दी के प्रायः सभी पत्रों ने मुक्तकण्ठ से इसकी प्रशंसा की है। इसमें ऐसे ऐसे सुन्दर हृदय-ग्राही और भावपूर्ण बहुरंगे चित्र लगाये गये हैं, कि 'महाभारत' का ज़माना 'बायस्कोप' की भाँति आँखों के सामने नाचने लगता है। दाम सुन्दर जिल्द सहित ४)

४६ चित्रों सहित **कविता-कलाप** कविताओं का संग्रह

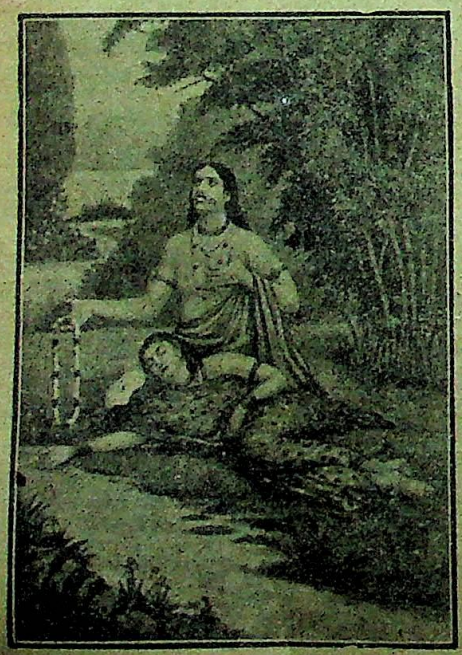

कविता भी एक प्रकार का चित्र है। चित्र देखने से नेत्र तृप्त होते हैं, कविता पढ़ने या सुनने से कान। यही समझ कर तथा कितने ही चित्र-कला-प्रेमी और कविता-लोलुप सज्जनों के आग्रह से यह सचित्र कविताओं का संग्रह पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया है। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि स्वर्गीय राय देवीप्रसाद (पूर्ण) बी० ए०, बी-एल०, पण्डित नाथूराम 'शङ्कर' शर्मा, पण्डित कामताप्रसाद गुरु, बाबू मैथिलीशरण गुप्त और पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की ओजस्विनी लेखनी से लिखी गई ४६ प्रकार की सचित्र कविताओं का यह अपूर्व संग्रह प्रत्येक हिन्दी-भाषा-भाषी को मँगा कर पढ़ना चाहिए। अधिकांश कविताएँ बोल-चाल की भाषा में हैं। इसमें कई चित्र रङ्गीन भी हैं। ऐसी उत्तम सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहू-बेटियों को उपहार देने योग्य पुस्तकें

स्त्रियों के कोमल हृदय पर सती तथा पतिव्रता नारियों के जीवन-चरित पढ़ने से जो प्रभाव पड़ सकता है, वह अन्य पुस्तकों से नहीं। यदि आप चाहते हैं कि हमारी स्त्रियाँ वीर मातायें बनें एवं सुचरित्रा तथा सुशीला बनें और गृहस्थी सोने की हो जाय तो नीचे लिखी भारतीय विदुषियों के चरित्र उन के हाथों में अवश्य दीजिए।

पतिव्रता

सती, सुनीति, गान्धारी, सावित्री, दमयन्ती और शकुन्तला - इन छः पतिव्रताओं के चरित का इसमें सङ्ग्रह है। इसकी भाषा बहुत ही सीधी सादी है। वर्णन-शैली भी बहुत अच्छी है। हमारे देश की प्रत्येक हिन्दी पढ़ी-लिखी स्त्री को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १), सुन्दर संस्करण १॥)

पतिव्रता गान्धारी

प्रातःस्मरणीया पति-परायणा सती गान्धारी का यह उज्ज्वल चरित्र बड़ी मनोहर तथा सरल भाषा में नये ढँग से लिखा गया है। भारतीय स्त्रियाँ इस पुस्तक से पातिव्रत्य, धर्मपरायणता, अतिथि-सेवा, क्षमा, सार्वजनिक प्रेम, धैर्य, शील, शान्ति और सुख इत्यादि के सम्बन्ध में बहुत कुछ सीख सकती हैं। मूल्य ॥=)

भारतीय विदुषी

इस पुस्तक में प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक की भारती, उर्वशी, लीलावती, आत्रेयी, मन्दालसा, देवहूति, गार्गी, मैत्रेयी, मीराबाई, ज़ेबुन्निसा, गुलबदन बेगम, लक्ष्मीबाई आदि आदि कोई ४० देवियों के संक्षिप्त जीवन-चरित लिखे गये हैं। इसमें स्त्री-शिक्षा-सम्बन्धी अनेक उपयोगी बातें ऐसी हैं जिनके पढ़ने से पढ़नेवालियों के हृदय में विद्यानुराग की लालसा प्रबल हो जाती है। मूल्य ॥)

रामायण का सार

सीताचरित

शिक्षा का भाण्डार

यह जगन्माया, त्रिभुवन सुन्दरी सती सीता का चरित हिन्दू बालक-बालिकाओं और गृह-लक्ष्मियों के पढ़ने योग्य सर्वोत्तम ग्रन्थ-रत्न और हिन्दी-साहित्य का सुललित शृङ्गार है। इसके पढ़ने से एक ही साथ इतिहास, पुराण, काव्य, नाटक,

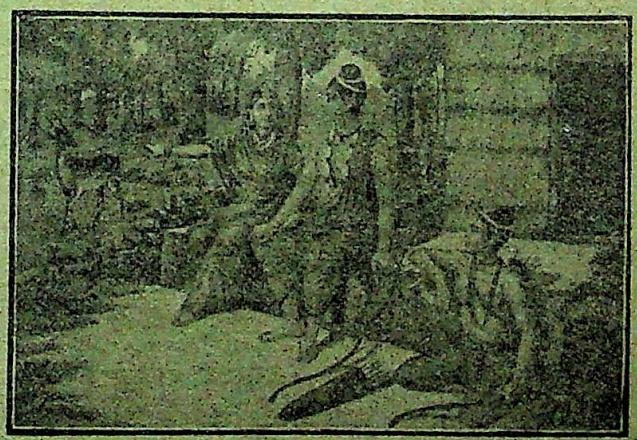

उपन्यास और नीति-शास्त्र का आनन्द मिलता है। यह राज-नीति, धर्मनीति, समाज, जाति और गार्हस्थ्य नीति की कुंजी है। इसके पढ़ने से घर-घर में सुख-शान्ति का निवास होता है। पृष्ठ-संख्या २३५, सजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥।) सुन्दर संस्करण २।)

मिलने पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-शिक्षा-विषयक उपन्यास और कहानियाँ

आज-कल स्त्री-शिक्षालयों से अल्प-शिक्षा प्राप्त कर निकलते ही बालिकाएँ हीन उपन्यासों और भ्रष्ट साहित्य के फेर में पड़ जाती हैं जिससे उनकी मानसिक उन्नति होना तो दूर रहा, उल्टा समय और धन, दोनों का अपव्यय होता है और प्रायः लोग स्त्री-शिक्षा के विरोधी बन जाते हैं। यदि आप अपनी बहू, बेटियों, बहनों और देवियों को यथार्थ में गृहलक्ष्मी तथा अपने घर को सोने की गृहस्थी बनाना चाहते हैं, तो नीचे लिखे उपदेशप्रद उपन्यास मँगा कर पढ़ने के लिए उनके हाथ में निःसङ्कोच दीजिए:—

षोडशी

बाबू प्रभातकुमार मुखोपाध्याय की लिखी हुई उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद सोलह कहानियों का इसमें सङ्ग्रह है। कहानियाँ एक से एक बढ़ कर भावपूर्ण, हृदय-ग्राही और रोचक हैं। हिन्दी में एक-दम नई चीज़ है। पढ़ने पर ही मज़ा आता है। मूल्य १।)

सीता-वनवास

इसमें श्रीसीताजी के पवित्र चरित्र और अपूर्व त्याग तथा श्रीरामचन्द्रजी द्वारा गर्भवती सीताजी के परित्यक्त किये जाने की कथा विस्तार-पूर्वक बड़ी ही रोचक और करुण-रस-पूर्ण भाषा में लिखी गई है। इसे पढ़-सुन कर आँखों में आँसू बहने लगते हैं और पाषाण-हृदय भी मोम की तरह मुलायम हो जाता है। मूल्य ।।=)

सुशीला-चरित

सुशीला का चरित स्त्रियों को बहुत कुछ शिक्षा दे सकता है। प्रत्येक पढ़ी लिखी स्त्री को सुशीला-चरित्र पढ़ना चाहिए। इसके पढ़ने से अपने आप उन्नति करने की उन्हें इच्छा होगी। मनोरंजक इतना है कि बिना पढ़े छोड़ने का जी नहीं चाहता। मूल्य १॥)

तारा

लेखक ने इसे बँगला के "शैशव सहचरी" नामक उपन्यास के अनुकरण पर लिखा है। यह सामाजिक उपन्यास बहुत ही चित्ताकर्षक और मनोरञ्जक है। घटनाओं की विचित्रता पढ़ते ही बनती है। छपाई सफ़ाई उत्तम। मूल्य १)

पार्वती और यशोदा

इसमें दो प्रकार के स्त्री-स्वभावों का ऐसा बढ़िया चित्र अङ्कित किया गया है कि समझते ही बनता है। इसके पढ़ने से स्त्रियों का स्वभाव बहुत कुछ सुधर सकता है। स्त्रियों के लिए ऐसे उपन्यासों की बड़ी आवश्यकता है। हर एक स्त्री को यह उपन्यास अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य ॥=)

सौभाग्यवती

पढ़ी लिखी स्त्रियों को एक बार यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। सौभाग्यवती सचमुच सौभाग्यवती ही है। इसके पढ़ने से स्त्रियाँ बहुत कुछ उपदेश ग्रहण कर सकती हैं। मूल्य ।)

लक्ष्मी

यह उपन्यास सामाजिक है। फलतः इसमें समाज के भले-बुरे सभी चित्र अङ्कित हैं। लक्ष्मी का चरित उच्च श्रेणी का है। वह बहुत अधिक सताई गई,—बदनाम की गई—किन्तु उसने अपने धर्म को नहीं छोड़ा। जिन्होंने उसके साथ बुरा व्यवहार किया उनकी भी उसने भलाई की। उधर बिलासराय को देखिए जिसने किसी का भी, अपनी जान में, भला नहीं होने दिया। दूसरे का घर उजाड़ करके अपना ख़ज़ाना भरा और दूसरों की बहू-बेटियों को सदा कुदृष्टि से देखा। बड़े घर के लाड़ले लड़के, मुँह-लगे नौकर, चापलूस साथी और देवशङ्कर जैसा सच्चा मित्र—क्या करता है, यह इस पुस्तक में देख कर कहीं तो पाठक को विस्मित होना पड़ता है और कहीं खिन्न भी। यह उपन्यास बहुत बढ़िया है और अभी ही छपकर तैयार हुआ है। मूल्य सिर्फ़ ॥=) दस आने।

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श महापुरुषों के जीवन-चरित्र

स्वदेश-प्रेम को जाग्रत तथा उन्नत करने के लिए प्रसिद्ध पुरुषों का चरित अवश्य पढ़ना चाहिए और विचार करना चाहिए कि किन कारणों से इन पुरुषों ने इतना नाम पाया। नामी आदमियों का चरित पढ़ने से मनोरंजन भी होता है, इतिहास-ज्ञान भी बढ़ता है और उन बातों का अनुकरण करने की इच्छा भी होती है। अस्तु। निम्नलिखित जीवन-चरितों को मँगाकर अवलोकन कीजिए:—

विद्यासागर

प्रातःस्मरणीय पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के अनेक गुणों और कार्यावली का इसमें विस्तृत, वर्णन है। इसकी जोड़ का जीवन-चरित, इस समय, भारत की किसी भी भाषा में नहीं पाया जाता। यदि आप अपनी सन्तान को कर्मवीर, निडर, देशभक्त और जाति-सेवक बनाना चाहते हैं, तो इस पुस्तक की अपेक्षा बढ़िया साधन आप को न मिलेगा। मूल्य केवल ३), सुन्दर संस्करण ३॥)

महादेव गोविन्द रानडे

न्यायमूर्ति रानडे प्रसिद्ध देशभक्त और समाज-सुधारक हो गये हैं। सरकारी नौकर होने पर भी वे सदा किसी न किसी रूप में देश-सेवा किया करते थे। राजा और प्रजा सभी के यहाँ उनका मान था। देश और समाज की उन्नति के लिए कटिबद्ध, अनेक सज्जन उनको गुरु का आसन देते हैं। पृष्ठ-संख्या पाने चार सौ से ऊपर। मूल्य केवल १॥)

अकबर

प्रसिद्ध मुग़ल-सम्राट् अकबर का यह सविस्तर जीवन-वृत्तान्त है। इसके पढ़ने से आपको बादशाह अकबर से सम्बन्ध रखनेवाली बहुतेरी नई-नई बातें मालूम होंगी। बादशाह ने बहुत छोटी उम्र में ही राज्य सँभाल कर बड़े विचित्र काम किये थे और हिन्दू-मुसलमानों के भेदभाव से बच कर शासन किया था। मूल्य केवल १)

गारफील्ड ॥।)

भारतवर्ष के धुरन्धर कवि ।=)

वीरकेसरी नेपोलियन बोनापार्ट

इस पुस्तक में फ्रांस के प्रसिद्ध वीर सम्राट् नेपोलियन के जीवन की प्रायः समस्त छोटी बड़ी घटनाओं का समावेश हो गया है। नेपोलियन की शिक्षा, सरकारी नौकरी में प्रवेश, सम्राट् की गद्दी तक पहुँचना, यूरोप के भिन्न भिन्न नरेशों के साथ सन्धि-विग्रह, प्रजा-पालन-चातुरी, कार्य-दक्षता, उसके पश्चात् फ्रांस की दशा आदि का वर्णन इस ग्रन्थ में है। हिन्दी में नेपोलियन का ऐसा विस्तृत जीवन-चरित अब तक नहीं था। पृष्ठ-संख्या ६५० के ऊपर। मूल्य २॥), सुन्दर संस्करण ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीजिए ! तैयार हो गया !! जल्दी मँगाइए !!!

हिन्दी-साहित्य में एक अनूठा रत्न

वेदान्त का सार **ज्ञानेश्वरी** ज्ञान का भण्डार

अर्थात्

श्रीमद्भगवद्गीता का भावात्मक अनुवाद

लेखक

मराठी-साहित्य के दिग्गज विद्वान् और प्रमुख सन्त श्रीज्ञानेश्वर महाराज

जिसके लिए हिन्दी-संसार बहुत दिनों से तरस रहा था, वही चमत्कार पूर्ण ग्रंथ छप कर तैयार हो गया। कौन ऐसा अभागा हिन्दू होगा जिसके घर में श्रीमद्भगवद्गीता का पवित्र ग्रन्थ न हो। यह हिन्दू-धर्म के विज्ञानमय तत्त्व को पूर्णरूप से समझानेवाला, ज्ञान-गरिमा को बढ़ानेवाला, भवसागर की भयपूर्ण तरङ्गों से बचानेवाला, अजर-अमर और अनमोल ग्रन्थ है। मुर्दों की नसों में संजीवनी भर कर जिलानेवाले इसी के उपदेशों से आज तक हिन्दू धर्म का आधार बना हुआ है। यों तो श्रीमद्भगवद्गीता की अनेक संस्कृत और भाषा-टीकायें प्रसिद्ध हैं, तो भी हमारे यहाँ से जो यह टीका प्रकाशित हुई है वह अन्य टीकाओं की अपेक्षा साहित्य की दृष्टि से अनुपम तथा सिद्धान्त की दृष्टि से अनोखी, उत्कृष्ट और विशेष महत्त्व की है। इसमें गीता के प्रत्येक श्लोक का भाव देकर, शांकर मतानुसार शुद्धाद्वैत मानते हुए, भक्ति तथा ज्ञान का अत्यन्त सरस, प्रेम-युक्त और हृदयङ्गम निरूपण किया गया है। मूल पुस्तक मराठी छन्दों में है। तुलसी, चैतन्य, नानक की तरह महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर महाराज नामक एक बड़े भारी सिद्ध और अनुभवी योगी हुए हैं। इन्होंने शङ्कराचार्य के मतानुसार भगवद्गीता का मर्म समझाने के लिए ज्ञानेश्वरी नाम की विशद टीका की है। उसी का अनुवाद हिन्दी की सरस, सुन्दर और प्राञ्जल भाषा में बड़ी ही सावधानी से किया गया है। विषय गहन और बातें बारीक हैं, पर लेखनशैली इतनी मनोमुग्धकर, हृदय में चुभनेवाली और सरल है कि सर्वसाधारण बिना कष्ट के समझ सकते हैं। पुस्तक साम्प्रदायिक झगड़ों से रहित है। छपाई शुद्ध और स्वच्छ, काग़ज़ बढ़िया, सुन्दर और मज़बूत जिल्द, पृष्ठ-संख्या ७२०। प्रत्येक गीता-प्रेमी को एक बार इस टीका का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। इसे पढ़ लेने से फिर किसी अन्य टीका के पढ़ने की ज़रूरत नहीं रहती। मूल्य केवल ४)

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गल्प-गुच्छ

गौरमोहन

चार भाग, मू० ३।।।)

छोटी छोटी कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ क्या हैं मनुष्य के अन्तर्जगत् के रहस्यागार हैं। एक एक कहानी एक एक भाव का सजीव चित्र है।

दो भाग प्रत्येक २)

यह प्रसिद्ध उपन्यास 'गोरा' का हिन्दी अनुवाद है। जिन्होंने रवि बाबू के उपन्यास पढ़े हैं वे जानते हैं कि यही उनका सर्वोत्तम उपन्यास है।

श्रीयुत रवीन्द्रनाथ को कौन नहीं जानता। उनके मुख का निकला हुआ एक एक शब्द कितना रहस्य-पूर्ण होता है यह कहने की आवश्यकता नहीं। उन्हीं की ग्रन्थावली की

ये चार सर्वोत्तम पुस्तकें

हैं। इन्हें मँगाना न भूलिए।

नीचे की पुस्तक का मूल्य १।।)

विचित्र सामाजिक कथानक है, इसकी एक एक घटना चक्कर में डालनेवाली है। पुस्तक शुरू करके हाथ से नहीं छूटती। नाम ही देखिए

नीचे की पुस्तक का मूल्य २)

छोटी छोटी गल्पों का संग्रह है। प्रत्येक गल्प विचित्रता से भरी हुई है और मनुष्य-जीवन पर विचित्र असर डालती है।

आश्चर्य-घटना

विचित्र प्रबन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया संस्करण प्रकाशित हो गया

रामचरितमानस

जहँ जहँ रामचरन चलि जाहीं
तेहि समान अमरावति नाहीं

इ०प्र

तुलसीदास

द्वा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप रहा है। छप रहा है।

पूर्व मध्य-कालीन भारत

अन्धकार में पड़ी हुई कुछ ऐतिहासिक सत्यताओं का वैज्ञानिक दिग्दर्शन, यत्र-तत्र बिखरी हुई सामग्री की निरुक्ति, इतिवृत्तात्मक समस्याओं पर गवेषणापूर्ण विचार, हिन्दू-मुसलिम-सभ्यताओं का संमिश्रण, पूर्व मुसलिम-काल की राजनैतिक समीक्षा, धर्म का राजनीति पर प्रभाव, मुसलिम-जड़ जमानेवाले सुल्तानों के नैतिक चित्र, उनके आचार-विचार, रीति-नीति, आकांक्षाओं, सफलताओं तथा असफलताओं का विश्लेषण, आदि-आदि विषयों की विशद व्याख्या इस ग्रन्थ-रत्न की विशेषतायें हैं। श्रीमान् महाराजकुमार साहब श्रीरघुवीरसिंहजी बी० ए० एल्-एल्० बी० द्वारा लिखित यह ग्रन्थ धुरन्धर इतिहास-वेत्ताओं की कृतियों की समकक्षता रखता है। आज-कल मातृ-भाषा में ऐसे ग्रन्थ-रत्न दुर्लभ थे।

यह ग्रन्थ इंडियन प्रेस-द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित होगा। इसका मूल्य लेखक के आज्ञानुसार लागत-मात्र २॥) ढाई रुपया होगा।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये तो बस "बाल-सखा" लेंगे

साल भर का २॥) रुपये

एक प्रति का ।-)

हिन्दी में इनके लिए यही सबसे बढ़िया, सुन्दर और सस्ता पत्र है।

आप अपने बच्चों के हाथ में

बाल-सखा

दे दीजिए

फिर वे आपसे कुछ न माँगेंगे। इसमें ऐसी ऐसी कहानियाँ, कवितायें और लेख रहते हैं कि बालक बड़े चाव से पढ़ते हैं। तसवीरों का तो कुछ कहना ही नहीं है। हँसानेवाले चुटकुले ऐसे रहते हैं कि बालक पढ़ते ही लोट-पोट हो जाते हैं। जो शिक्षा आप सैकड़ों मास्टर रखकर बच्चों को नहीं दे सकते, वह उन्हें केवल बाल-सखा से मिल सकती है। हर्ष का विषय है कि अब इसका उर्दू-संस्करण भी प्रकाशित होने लगा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तक ! नई पुस्तक !! नई पुस्तक !!!

महात्मा टाल्स्टाय की रचनाओं ने रूस के साहित्य में युगान्तर उत्पन्न कर दिया है। उनका एक एक शब्द हृदय पर जादू का सा प्रभाव डालता है।

इसी लिए आपसे हमारा अनुरोध है कि

टाल्स्टाय की कहानियाँ

अर्थात्

(महात्मा टाल्स्टाय की दस कहानियों का हिन्दी अनुवाद)

हमारे यहाँ से मँगाकर एक बार अवश्य पढ़िए।

पुस्तक की विशेषता लेखक के नाम से ही प्रसिद्ध है। समाज तथा राजनीति की गूढ़ से गूढ़ समस्याओं पर सीधी और सरल भाषा के द्वारा प्रकाश डालने में महात्मा टाल्स्टाय सिद्धहस्त थे। संसार में कौन ऐसा साहित्यिक होगा जो उनकी रचनाओं पर मुग्ध न हो। ऐसे प्रगल्भ लेखक की रचनाओं का हिन्दी में रसास्वादन करना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर मँगवा लीजिए। अनुवाद की भाषा सरल, सरस तथा रोचक है। मूल्य १॥)।

इप्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों की लिए तीन खेल

बड़ी मज़ेदार भाषा में सावित्रीजी का चरित्र लिखा गया है। कई एक सुन्दर चित्र हैं। मूल्य ।) चार आने।

卐

जैसा नाम है ठीक वैसा ही गुण है। इसे पढ़ने में बच्चों को बड़ा आनन्द आता है। मू० ।) चार आने।

卐

इस पुस्तक की सचित्र विचित्र कहानियाँ पढ़कर अचरज पैदा होता है। मू० ।) चार आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी किलिस्तीनरत्न

कई चित्र देकर धर्मराज युधिष्ठिर की धर्मगाथा रोचक भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।=) छः आने।

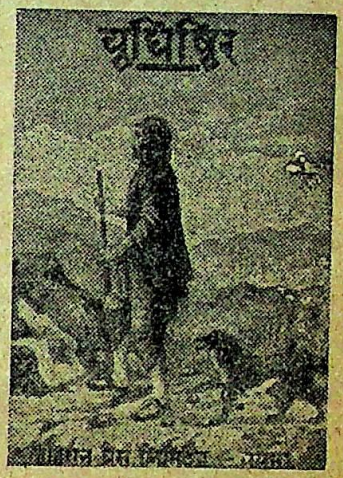

卐

इसमें भक्त प्रह्लाद की सचित्र जीवनी बड़ी रोचक और सरल भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।) चार आने।

卐

इस पुस्तक में प्रसिद्ध दक्षपुत्री सती के चरित्र का सचित्र रोचक वर्णन है। मूल्य ।-) पाँच आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन संन्यासी

इसे पढ़ कर आप अचम्भे में पड़ जायँगे।
नागरिक और ग्राम्य-जीवन का सुन्दर चित्र, सामाजिक और धार्मिक समस्याओं पर उत्तम विचार, जासूसीपूर्ण विचित्र घटनायें, आपको इसी पुस्तक में मिलेंगी।

सजिल्द और सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल ३॥)

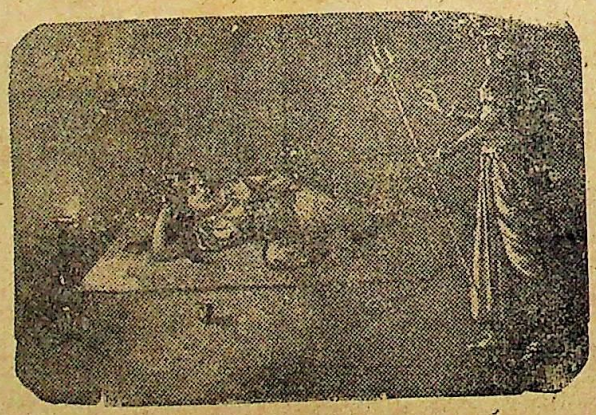

प्रत्येक चित्र, विचित्र रहस्य प्रकट करता है।

लीलावती ने आँख खोल कर देखा—
लाल साड़ी पहने काले रङ्ग की एक स्त्री सामने खड़ी है। उसके हाथ में त्रिशूल मन्द मन्द हिल रहा है जिसका अगला हिस्सा लोहू से लिप्त है।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू-संस्कृति का सच्चा स्वरूप

महाभारत

है, जो आज भी हमें जीवित रक्खे हुए है। महाभारत में क्या है? इसका एक ही उत्तर है—महाभारत में सब कुछ है। लौकिक और पारलौकिक के सम्बन्ध में आप जो जानना चाहते हैं, सब महाभारत में मिलेगा।

हाँ, ऐसा महाभारत पढ़िए जिससे सरलता से सब समझ में आ जाय। जिसे बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी पढ़ सकें और समझ सकें।

इंडियन प्रेस का महाभारत आज लाखों हाथों में पहुँच चुका है। तमाम भारत में दिनों दिन इसका प्रचार बढ़ता जा रहा है। इसकी सरसता, सरलता और रोचकता ने हर एक को मोहित कर लिया है। चित्रों ने कमाल पैदा कर दिया है। आज तक कहीं से ऐसा महाभारत प्रकाशित नहीं हुआ। एक संग्रहणीय चीज़ है। लगभग तीन चौथाई भाग प्रकाशित हो चुका है। प्राप्त होने का तरीक़ा बहुत सुगम है। पत्र-व्यवहार कीजिए। एक प्रति नमूने के तौर पर मँगाइए।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल नई चीज़ बिलकुल नई चीज़

बालक-बालिकाओं को उपहार में देने के लिए निराले ढङ्ग की पुस्तक।

सुन्दर और रङ्गीन छपाई तथा बहुत से उत्तमोत्तम चित्रों से सुशोभित।

शतदल कमल

(नाट्य गीत)

प्रणेता—पण्डित श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम० ए०, एल-टी० "श्रीवर"

हिन्दी में बालक-बालिकाओं के मनोरञ्जन के लिए आज तक जितनी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, उन सबसे यह उत्तम और बिलकुल नये और निराले ढंग की है। इसमें उनकी रुचि का ध्यान रख कर रंग-बिरंगे, फूलों, भिन्न भिन्न रंगों और 'मार्च' पर कवितायें लिखी गई हैं, जिन्हें बच्चे सामूहिक रूप से गा गाकर ख़ूब प्रसन्न होंगे। हर एक वस्तु के वर्णन के साथ ही साथ 'बैक ग्राउंड' पर उसका चित्र भी अङ्कित किया गया है, इससे पुस्तक की सुन्दरता और भी अधिक बढ़ गई है। सच बात तो यह है कि ऐसी सुन्दर, आकर्षक और मनोरञ्जक पुस्तक हिन्दी में आज तक एक भी नहीं प्रकाशित हुई है। जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में अपने पुत्रों तथा पुत्रियों को उपहार देने के लिए प्रत्येक माता-पिता को इसकी एक एक प्रति अवश्य ख़रीदनी चाहिए। मूल्य केवल २) दो रुपये।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौहरी और घड़ीसाज़
बी० के० मुकर्जी
(जो पहले बचलर सन्स एंड कं० में मुलाज़िम थे)

हमारे कारख़ाने में अँगरेज़ी, हिन्दुस्तानी, काश्मीरी, बंगाली, मुसलमानी हर तरह के ज़ेवर हमेशा बिक्री के लिए तयार रहते हैं। तथा आर्डर देने पर निहायत किफ़ायत के साथ बनाये भी जाते हैं। असली सोना और गिन्नी सोना होने की हम गारंटी करते हैं।

रईसों, अमीर उमरावों से लेकर सभी तरह के पुरुष और स्त्रियों की कलाई पर बाँधने योग्य रिस्टवाच, जेबघड़ी, सोने-चाँदी व निकल केस की घड़ियाँ, कलकत्ता व बम्बई की क़ीमत पर इस कारख़ाने से मिल सकती हैं। एक बार परीक्षा कीजिए। पता—
बी० के० मुकर्जी, ९२ जानसेनगंज, प्रयाग।

शास्त्रीय हिन्दी हार्मोनियम गाइड

बाजे की पेटी बजाने को सिखलानेवाली पुस्तक, ४० रागों के आरोह अवरोह, लक्षण, स्वरूप, विस्तार, १०४ प्रसिद्ध गायनों का स्वरतालयुक्त नोटेशन, सुरावर्त, तिल्लाने इत्यादि पूरी जानकारी-सहित, द्वितीय आवृत्ति, पृष्ठ-संख्या २००, क़ीमत १॥) रुपया, डाक-ख़र्च ।=) विषयों का और गायनों का सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए।

गोपाल सखाराम एण्ड कम्पनी
कालबादेवी रोड, बंबई नं० २

नेशनल इंस्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड
(स्थापित सन् १९०६)
हेड आफ़िस, ९ ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता।

आर्थिक दशा का यथार्थ विवरण।

कुल रक़म जो चालू बीमा में लगी हुई है—	५ करोड़ से ऊपर
कुल रक़म जिसका १९२८ में नया जीवन-बीमा हुआ—	१ करोड़ से ऊपर
प्रीमियम से १९२८ ई० में आय—	२५ लाख ,, ,,
कुल "क्लेम" जो दिये जा चुके—	६२ ,, ,, ,,
कुल रक़म (व्यापार में लगी हुई)—	१ करोड़ ३५ लाख से ऊपर

कम्पनी की विशेषतायें

(१) प्रीमियम का रेट कम है।
(२) रुपया आसानी से उधार मिल जाता है।
(३) 'क्लेम' फ़ौरन तय किये जाते हैं। अगर तय होने में ६ महीने से अधिक विलम्ब हो जाय तो ४) रु० सैकड़ा ब्याज दिया जाता है।
(४) बोनस माक़ूल मिलता है।

फ़ार्म और एजेन्सी के लिए हमारे चाफ़ एजेंट से पत्र-व्यवहार कीजिए—

श्रीयुत एस० एन० दास गुप्त, एम० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति का ख़ज़ाना यानी पृथ्वी पर का अमृत

मदन मंजरी

ये दिव्य गोलियाँ दस्त साफ़ लाती हैं, वीर्य-विकार-संबंधी तमाम शिकायतें नष्ट करती हैं और मानसिक व शारीरिक प्रत्येक प्रकार की कमज़ोरी को दूर करके नया जीवन देती हैं। क़ी० गोली ४० की डिब्बी १ का १)

बंबई ब्रांचः— ३९३ कालवा देवी रोड } राजवैद्य नारायणजी केशवजी। हेड ऑफ़िस जामनगर (काठियावाड़)

इलाहाबाद के एजेन्टः—युनाइटेड स्टोर्स, चौक

मायाक्षेत्र का माहात्म्य और हरिद्वार का इतिहास

इसमें हरिद्वार-सम्बन्धी अनेक गूढ़ विषयों पर विचार किया गया है। यह यात्रियों और इतिहास-प्रेमियों के लिए अतिशय उपयोगी है। ५ रंगीन चित्र और तिरंगा कवर है, फिर भी सजिल्द का मूल्य प्रचारार्थ केवल १)।

मैनेजर "साहित्य-सदन" हिसार

* ऐसा कौन है जिसे फ़ायदा नहीं हुआ *

तत्काल गुण दिखानेवाली ४० वर्ष की परीक्षित दवाइयाँ सब दुकानदारों के पास मिलती हैं

सुधासिंधु

कफ़, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेटदर्द, क़ै, दस्त, जाड़े का बुख़ार (इन्फ़्लूएंज़ा) बालकों के हरे पीले दस्त और ऐसे ही पाकाशय के गड़बड़ से उत्पन्न होनेवाले रोगों की एकमात्र दवा। इसके सेवन में किसी अनुपान की ज़रूरत न होने से मुसाफ़िरी में लोग इसे ही साथ रखते हैं। क़ीमत ॥) आने। १ से २ सुधासिंधु का डा० ख़र्च ।=)

बालसुधा

बच्चों को बलवान्, सुन्दर और सुखी बनाने के लिए सुखसंचारक कम्पनी मथुरा का मीठा **"बालसुधा"** पिलाइये। क़ीमत ॥।) आने। १ से २ बालसुधा का डा० ख़र्च ॥)

दद्रुगजकेशरी

यदि संसार में बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को जड़ से खोनेवाली कोई दवा है तो वह यह है। दाद चाहे पुराना हो या नया, मामूली हो या पकनेवाला इसके लगाने से अच्छा होता है। क़ीमत ।) आने। १ से २ का डा० ख़र्च ।=)

द्राक्षासव

शरीर में तत्काल बल बढ़ानेवाली कब्ज़, बदहज़मी, कमज़ोरी, खाँसी और नींद न आना दूर करता है। बुढ़ापे के कारण होनेवाले सभी कष्टों से बचाता है। पीने में मीठा स्वादिष्ट है। क़ीमत तीन पाव की बोतल २), छोटी १) रु० डाकख़र्च। बड़ी बोतल का १॥=) रु० छोटी बोतल का ॥।≡) है।

मिलने का पता—सुखसंचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्व सुविधा ! अनुपम लाभ !!

आपको जब कभी किसी भी विषय की

बालोपयोगी, स्त्रियोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, नैतिक, जीवनचरित्र, अध्यात्म, दर्शन, वेदान्त, विज्ञान, आरोग्यचिकित्सा, उपन्यास, क़िस्से-कहानी, नाटक, उपाख्यान, काव्य, साहित्य-समालोचना, इतिहास, अर्थशास्त्र, गणित, अलंकार, कोष, निबन्ध, व्याकरण, भ्रमण, धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक आदि उत्तमोत्तम इंडियन प्रेस, लिमि०, प्रयाग की तथा काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित पुस्तकों की आवश्यकता हो तो आप हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग-हाउस, चौक, बनारस को लिखिए। स्कूलों की टेक्स्टबुक भी आपको मिलेंगी। साथ ही ग्राहकों ख़रीदारों के साथ ख़ास रियायत की जायगी। प्रत्येक ख़रीदार ग्राहक को कमीशन दिया जायगा। एक बार आज़माइए।

निवेदक—देवेन्द्रचन्द्र विद्याभास्कर, प्रोप्राइटर,
हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग-हाउस, चौक, बनारस।

महाकवि अकबर और उनका उर्दू-काव्य

[तीसरा परिवर्द्धित संस्करण]

इस पुस्तक में स्वर्गीय महाकवि अकबर इलाहाबादी के चुने हुए और अत्यन्त मनोरञ्जक पद्यों का संग्रह है। तुलनात्मक समालोचना तथा महाकवि की जीवनी और चित्र भी शामिल हैं। तीसरा परिवर्द्धित संस्करण है। बढ़िया काग़ज़, सुन्दर छपाई, पृष्ठ २५०, मूल्य केवल १।=)

(१) टालसटाय की आत्मकहानी ॥=)
(२) पुष्पलता ।॥)
(३) उर्दू कवियों की नीति-कवितायें ।=)
(४) उपयोगितावाद १)
(५) मनोरञ्जक कहानियाँ ॥)
(६) अनारकली ≡)॥

ज्ञान-प्रकाश-मन्दिर, पो० माछरा, ज़ि० मेरठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाइरेक्स

सब ज्वरों के लिए

यह दवा बड़ी मशहूर है और सब बुख़ारों पर अच्छी तरह आज़माई हुई है। पाइरेक्स का नियमित रूप से सेवन करने से हज़ारों रोगियों के मलेरिया बुख़ार और दूसरे क़िस्म के बुख़ार जड़ से दूर हो गये हैं।

बासक का अर्क़

मरोड़ और बलग़म की प्रसिद्ध दवा। खाँसी, ज़ुकाम और छाती तथा गले की दूसरी तकलीफ़ों में अत्यन्त लाभ-दायक है।

सब अँगरेज़ी दवा बेचनेवालों के यहाँ मिलती है।

बङ्गाल केमिकल एण्ड
फ़ार्मेसिटिकल वर्क्स, लिमिटेड,
कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्ची शक्ति का संग्रह क्यों नहीं करते ?

आँतों को ख़राब होने से रोकती है—

पाचन-शक्ति ख़ूब बढ़ाती है

भारी से भारी भोजन पचाती है

ज्ञानतन्तु की कमज़ोरी—

साधारण कमज़ोरी

हर प्रकार की कमज़ोरी दूर करती है—

तन्दुरुस्ती-ताक़त को बढ़ाती है

—०—

प्रत्येक ऋतु में उपयोगी है

क्या ?

भंडु की

सुवर्ण-मिश्रित

मकरध्वज गुटी

स्वल्प चन्द्रोदय मकरध्वज-भैषज्य-रत्नावली ध्व०

पूर्ण चन्द्रोदय तथा सुवर्ण और चन्द्रोदय का अनुपान मिलाकर बनाई हुई सुनहरे खोलवाली

सुन्दर मनोहर गोलियों से

सच्ची शक्ति का सङ्ग्रह करो

क़ीमत १ तोला की ८) आठ रुपये

विशेष जानने के लिए मकरध्वज का विवरण-पत्र मँगाइए

भंडु फार्मास्युटिकल वर्क्स लि०—बम्बई नं० १४

प्रयाग के एजेन्ट—लक्ष्मीदास एण्ड ब्रादर्स, ४६ जान्स्टनगंज।
लखनऊ के एजेन्ट—ज्ञानेन्द्रनाथ दे, कमलाभण्डार, ८ श्रीराम रोड
बिलासपुर के एजेन्ट कविराज रवीन्द्रनाथ वैद्यशास्त्री
दिल्ली के एजेन्ट—बालबहार फ़ार्मेसी, चाँदनी चौक।
कानपुर के एजेन्ट—पी० डी० गुप्ता एण्ड को०, जनरलगञ्ज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडियन परफ़्यूमरी के बढ़िया तोहफे

ओटो

दिलप्यारा

क्या कभी आपने इसे लगाया है ? इसकी मीठी ख़ुशबू सचमुच दिल को प्यारी है। स्मृति-रक्षा के लिए 'दिलप्यारा' सचमुच दिल को प्यारा है। बहुत बढ़िया शीशी में दिलप्यारा की न्योछावर सिर्फ़ १), तीन शीशी २॥), एक दरजन १०) रु०।

बढ़िया

सुगन्धित तेल

तेल मसाला—एक बार इसे लगाने पर ही गुण मालूम हो जावेगा। क़ीमत ३) ४), तथा ८) सेर तक।

तिल्ली का सुगन्धित तेल—ख़ालिस तिल्ली के तेल के गुण सभी को मालूम हैं। इस तेल की सुगन्ध बहुत ही मनोहर है। एक बार व्यवहार कर देखिए। दाम १२ औंस की एक बोतल १।), तीन बोतलों का ३॥)।

तेल—बेला (मोगरा) ३), ४), ५), ७), १०) सेर।

चमेली ३), ४), ५), ८), १२) सेर।

मेंहदी, आँवला, गुलाब ४), ८) सेर तक

सुरती

तम्बाकू

क्या आप पान के साथ सुरती खाते हैं ? तो लीजिए एक बार हमारे कारख़ाने में बड़ी पवित्रता के साथ तैयार की गई सुरती का इस्तेमाल कीजिए कैसी ख़ुशबू है और कैसा स्वाद है। आपने तरह तरह की बाज़ार सुरती खाई होगी, पर इसके खाने से चित्त प्रसन्न होता है और पान का स्वाद सुधरता है। यह असली देशी चीज़ों से तैयार की गई है। कृपा कर एक बार इसे ज़रूर आज़माइए।

पत्ती ४) सेर से ३२) रु० सेर तक, ज़र्दा ४) सेर से ३२) रु० सेर तक।

पता—दी इंडियन परफ़्यूमरी, १४ नं० पार्क रोड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने में सभी सुमन अच्छे लगते हैं

परन्तु

जिनमें सुगन्ध होती है वे सबको मोह लेते हैं।

ठाकुर गुरुभक्तसिंह 'भक्त' बी० ए०, एल-एल० बी० रचित

स र स सु म न

में आपको ऐसे ही सुमन मिलेंगे। इसमें पवन, भानु, चपला, जुगनू और बसन्ती पर पाँच सुन्दर कवितायें हैं। प्रत्येक कविता से यह सिद्ध होता है कि कवि प्रकृति-निरीक्षण में कितना कुशल है। पुस्तक बहुत साफ़ और सुन्दर छपी है और उसमें आर्ट पेपर पर दो अत्यन्त सुन्दर तिरङ्गे चित्र भी हैं। एक बार मँगाकर देखिए। तबीयत ख़ुश हो जायगी। मूल्य सिर्फ़ ॥) आठ आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

TWO GEMS

Outcome of 45 years' experience of this renowned Doctor

THE SEVEN BITTERS

An Infallible Specific for Malarious Fevers, acute and chronic, remittent or intermittent with enlargement of Liver and Spleen, Dropsy, etc.

Price—Re. One per bottle.

Late Dr. A. C. BANERJI.
Allahabad

INSANITY POWDER

(Specific for Insanity)

Infallible Remedy for Insanity, Mania, Melancholia, Hysteria, Insomnia, etc. Dose one powder a day with Syrup.

Price—Annas Twelve per dose.

सप्तितक्त

ज्वर, मलेरिया, जूड़ी, तिजारी, चौथिया, नया और पुराना ज्वर, अतरा, ताप, तिल्ली और यकृत इनकी यह अव्यर्थ औषधि है। विस्तृत हाल साथ के व्यवस्थापत्र में देखिए।

मूल्य—१ बोतल का १) एक रुपया।

इनसेनीटी पाउडर

अर्थात् पागल की दवा

इस दवा के सेवन से किसी भी प्रकार से उत्पन्न हुआ पागलपन निस्सन्देह आरोग्य हो जाता है। रात में नींद न आना, सिर में गरमी मालूम होना तथा हिस्टीरिया आदि सब कष्ट दूर हो जाते हैं। दिन में सिर्फ़ एक खूराक खाई जाती है। विधान-पत्र दवा के साथ भेजा जाता है। दाम ।।।) फ़ी खूराक।

SEVEN BITTERS OFFICE, ALLAHABAD

बालक-बालिकाओं के लिए नई पुस्तकें

मिस्र और हब्श देश का परिचय

यह पुस्तक बहुत ही रोचक तथा उपयोगी है। इसके द्वारा बालकों का मनोरञ्जन तो होगा ही, साथ ही उन्हें बहुत-सी ज्ञातव्य बातें भी अनायास ही मालूम हो जायँगी। मूल्य ।=) छः आने है।

वाल्मीकि

यह आदिकवि वाल्मीकि का संक्षिप्त परिचय है। ऐसे उपाख्यानों के द्वारा बालकों को अपनी प्राचीन सभ्यता की जानकारी प्राप्त करने में बड़ी सहायता मिलती है। मूल्य ।) चार आने है।

राजकहानी

इस पुस्तक में राजपूतों के समय की कुछ ऐतिहासिक कहानियों का संग्रह किया गया है। पुस्तक पढ़ते पढ़ते बालकों का हृदय उत्साह तथा वीर-भाव से ओतप्रोत हो जाता है। मूल्य ।=) छः आने है।

गुदड़ी के लाल ।=) छः आने।

पकौड़ीवाली ।=) छः आने।

इन दोनों पुस्तकों में बालकों के लिए उपयोगी तथा मनोरञ्जक कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ सचित्र तथा शिक्षाप्रद हैं।

राबिन्सन-क्रूसो

यह एक रोचक तथा साहसपूर्ण अँगरेज़ी उपन्यास का अनुवाद है। मूल्य ।।।) बारह आने है।

जापान का हाल

(पण्डित देवीदत्त शुक्ल, सरस्वती-सम्पादक)

जापान के सम्बन्ध में जिन जिन बातों की जानकारी प्राप्त करना युवकों के लिए आवश्यक है, उन सभी का इसमें समावेश किया गया है। मूल्य ।।) आठ आने है।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

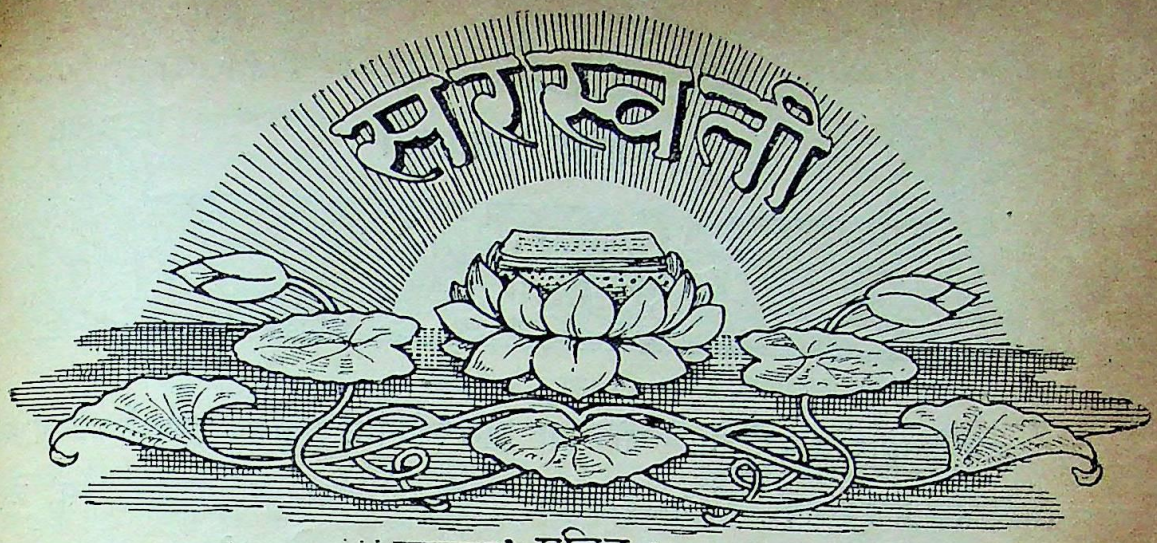

सचित्र
मासिक पत्रिका

वार्षिक मूल्य ६॥)
Yearly Subscription, Rs. 6-8

सम्पादक
देवीदत्त शुक्ल

प्रति संख्या ॥=
As. 10 per copy

भाग ३२, खण्ड १] मार्च १९३१—फाल्गुन १९८७ [सं० ३, पूर्ण-संख्या ३७५

नरदेव-सम्बोधन

(१)

दानवों की ताप के प्रताप का प्रतापवान
पूषण पयोधि-पृथिवी को तप्त करता।
समय-समीर अनुकूल हो प्रवहमान
धारा-धर-धावन के संग है विचरता।
अङ्ग-अङ्ग अपने अनूप गगनाङ्गन भी,
तीव्र तेज-पुञ्ज विभा विद्युत का धरता।
बाद को प्रचण्ड वज्र-ध्वनि का निनाद-रूप,
हाहाकार चारों ओर विश्व में उभरता।

(२)

जीवन की ज्योति जग उठती वसुन्धरा में,
अमित अनूप एक सृष्टि जन्म लेती है।
आती द्रवता है रस-रसित-रसातल में,
होती क्षण ही में विप्लवित खल खेती है।
देव ! वसुधा में शुभागमन तुम्हारा सुन,
सारी जन-मण्डली कृषकसम चेती है।
एक एक संसृति-सुधार पर बार बार,
सम्पदा समोद सदा वार वार देती है।

—अनूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक स्वायत्तता

[लन्दन के गोलमेज़-सम्मेलन में जो नया शासन-विधान निश्चित हुआ है उसमें आर्थिक स्वराज्य की कहाँ तक गुंजाइश की गई है, इसी महत्त्व-पूर्ण प्रश्न का विचार इस लेख में किया गया है। इस लेख के लेखक श्रीयुत पथिकजी ने उक्त सम्मेलन की कार्यवाही की आलोचना करते हुए भारतीयों के भी मत का यथास्थान उल्लेख कर दिया है। इससे वास्तविक अवस्था प्रकट हो जाती है। लेख सामयिक है।]

नये शासन-विधान में भारतवर्ष को सम्पूर्ण आर्थिक स्वायत्तता चाहिए। राजनैतिक अधिकारों का उपभोग देश तब तक नहीं कर सकता जब तक उसे विदेशी माल पर कर लगाने, भारतीय चलन, हुंडी, क़र्ज़ और ख़र्च आदि के सब अधिकार नहीं प्राप्त होते। स्वराज्य की असली कुंजी आर्थिक स्वायत्तता ही है।

भारत-सरकार ने साइमन-रिपोर्ट से मिलते-जुलते हुए आशय का जो ख़रीता लन्दन को भेजा है उससे प्रकट हो जाता है कि हमारे अधिकारी क्या चाहते हैं। भारत-सरकार भारत में ब्रिटिश-सेना की आवश्यकता और उसके लिए प्रतिवर्ष ५५ करोड़ रुपये के ख़र्च का महत्त्व प्रकट करती हुई रक्षा की रूप-रेखा बतलाती है। आर्थिक ज़िम्मेदारियों के सम्बन्ध में भारत-सरकार कहती है कि हमें आर्थिक प्रश्नों के तीन अंगों पर विचार करना चाहिए। वे तीन अंग इस प्रकार हैं—

(१) सेना के ख़र्च के लिए धन।

(२) सरकार ने आज तक जो क़र्ज़ लिया है उसे स्वीकार करने की पूरी ज़िम्मेदारी लेना।

(३) सिविलियनों का वेतन, पेंशन, फ़ेमिली पेंशन और प्रावीडेंट फ़ण्ड आदि।

सरकार कहती है कि इन सब ख़र्चों के लिए किसी का विश्वास नहीं किया जा सकता। इन्हें किसी ज़िम्मेदार परिषद् के अधीन भी नहीं सौंपे जा सकते हैं। इन मदों में कभी कोई बाधा उत्पन्न हो, इसलिए इनका नियंत्रण ब्रिटिश-सरकार के अधीन रहना चाहिए। टैक्स और अन्य सरकारी ख़र्चों के लिए भी सरकार ही ज़िम्मेदार रहेगी। भारतीय करेन्सी के सम्बन्ध में सरकार का वक्तव्य अधिक स्पष्ट नहीं है। सरकार केवल यह कहती है कि आर्थिक ज़िम्मेदारियाँ परिषद् के हाथों को सौंपने के पूर्व 'रिज़र्व बैंक' खोलने की ख़ास ज़रूरत होनी चाहिए। इस बैंक के विधान में रक्षा-सम्बन्धी क़ानून होने चाहिए, जिससे राजनैतिक उपद्रवों का कोई हमला न हो सके। इतना ही नहीं, बैंक के विधान में प्रधान रूप से इस बात का उल्लेख हो कि यह 'भारतीय रिज़र्व बैंक' बैंक 'आफ़ इंग्लैंड'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पूर्ण सहयोग से कार्य करेगा। बैंक आफ़ इंग्लैंड का सहयोग महत्त्व-पूर्ण बतलाया जाता है। कहा जाता है कि वह बैंक कठिन अवसरों पर आस्ट्रेलिया को भी सहायता देता है। इससे इसका प्रभाव भारत पर भी पड़ेगा। इस देश में भी कई आर्थिक कठिनाइयाँ हैं। संसार की आर्थिक दुरवस्था ने भारत की आर्थिक अवस्था शोचनीय कर दी है। फिर इस देश के राजनैतिक आन्दोलन से भारत की साख का प्रश्न और अगले तीन वर्ष तक कई क़र्ज़ों की रक़मों की ज़िम्मेदारियाँ सरकार के लिए चिन्तनीय बातें हो गई हैं। भारत की नई राष्ट्रीय सरकार को उसी अवस्था में आर्थिक ज़िम्मेदारियाँ सौंपी जायँगी जब इस बात की व्यवस्था पहले से हो कि भारत की साख और विश्वास फिर से क़ायम किया जाय, रिज़र्व बैंक के कोष में काफ़ी स्टर्लिंग रक्खे जायँ और वह कुछ वर्षों तक अच्छी तरह चल कर अपना काम सन्तोषजनक प्रकट करे। क़र्ज़ अदा करने की निस्बत देश के ज़िम्मेदार नेताओं को यह घोषणा करनी पड़ेगी कि भारतवर्ष सब क़र्ज़ चुकायेगा। इससे विशेष नहीं तो थोड़ा लाभ होगा ही। पर वह कार्य तभी अधिक उपयोगी होगा जब भारतीय अपने निजी आर्थिक साधनों-द्वारा भारत की आर्थिक अवस्था सुधारेंगे। संसार में आज जो ग़लतफ़हमी और अविश्वास उत्पन्न हो गया है उसकी ज़िम्मेदारी भारतीयों के सिर पर है। भारतीयों को भारत-सरकार के अर्थ-विभाग को सौंपने पर भी ब्रिटिश-पार्लियामेंट यह चाहेगी कि शासन-विधान में यह सुरक्षा हो कि कांसोलीडेटेड फ़ंड के द्वारा क़र्ज़ का ब्याज रेलवे की एन्यूटीज़, वेतन, पेंशन, फ़ेमिली पेंशन, प्रावीडेंट फ़ंड और भारत-मंत्री-द्वारा नियुक्त सिविलियनों की तनख़्वाहें, सेना के अफ़सरों और सेना का सब ख़र्च अदा हो और गवर्नर-जनरल को कुछ अधिकार आर्थिक स्थिरता के लिए सौंपे जायँ, जिससे उनका नियंत्रण और देख-भाल रहे तथा भयप्रद आर्थिक गड़बड़ मचने की हालत में भारत-मंत्री को हस्तक्षेप करने का अधिकार हो। भारत-सरकार का ख़रीता साइमन-कमीशन की इस सिफ़ारिश को मानता है कि आगे से भारत के लिए क़र्ज़ लेने का कार्य लंदन में भारत-मंत्री के स्थान पर हाई कमिश्नर को सौंपा जाय। रिज़र्व बैंक के स्थापित होने पर उसे यह काम सौंप दिया जाय। नई राष्ट्रीय सरकार को आर्थिक विभाग के संचालन का अधिकार रहे। भारत-मंत्री आज-कल की तरह नियंत्रण करने के बजाय सलाहकार रहें और आर्थिक मामलों में सहायता देते रहें। भारत में बाहर के लोग आकर स्वतन्त्रता-पूर्वक व्यापार व उद्योग-धंधे खोल सकें और उनके साथ उपयुक्त बर्ताव किया जाय। दूसरी ओर भारतवासी न्याय-पूर्वक देश के उन कुछ राष्ट्रीय धन्धों के सम्बन्ध में अपने अधिकारों की माँग कर सकेंगे जो आंशिक तथा पूर्णरूप में अँगरेज़ व्यापारियों के हाथ में हैं। इस सम्बन्ध में सहयोग-पूर्ण नीति से सुपरिणाम निकलेगा। रेलों के संचालन में ब्रिटिश-सरकार का हाथ रहेगा। रेलों का ख़र्च, रक्षा, नौकरियाँ और एंग्लो इंडियनों की सुरक्षा आज जैसी है, वैसी ही रहेगी। ट्रेफ़िक के प्रबन्ध की सुविधा सेना के अधिकारी पूर्ण रूप से चाहेंगे। इस दृष्टि से उनके प्रबन्ध में आर्थिक अड़चनें नहीं आने पावेंगी। भविष्य में योरपीयों को नौकरियाँ देना सेना की दृष्टि से आवश्यक होगा। रेलों में भारतीय ईसाइयों की नौकरियाँ रक्षित रहेंगी। रेलों का व्यापारिक सुप्रबन्ध रखना ज़रूरी होगा।

भारत-सरकार की सिफ़ारिशों का यही संक्षिप्त विवरण है, जो गोलमेज़-सम्मेलन में नये शासन-विधान के लिए उपस्थित किया गया था। इन सिफ़ारिशों में सेना का प्रश्न विकटरूप से उपस्थित किया गया है। गोलमेज़-सम्मेलन में जब सङ्घ-तन्त्र-शासन-विधान की योजना पर विचार हुआ तब इँग्लैंड के लिबरल दल की ओर से उसके नेता मिस्टर लायड जार्ज महोदय की आज्ञा लेकर भारत के भूतपूर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सराय लार्ड रीडिंग ने यह घोषित किया कि वे
ीय सरकार में उचित सुरक्षाओं के साथ अधिक
अधिक ज़िम्मेदार सरकार की स्थापना करने देंगे।
ाँ वे सेना, रक्षा और बाहरी मामले भारत को
ं सौंपना चाहते, वहाँ वे आर्थिक प्रश्नों में भी
के बाहर और भीतर के क़र्ज़ आदि को भी ब्रिटिश-
कार के हाथ में रखना चाहते हैं। टैक्स,
न्सी और विनिमय की दर आदि के सम्बन्ध में
लार्ड रीडिंग अत्यन्त चिन्तित हैं और इस
बन्ध में पूरी ज़िम्मेदारी के साथ संरक्षा चाहते हैं।
इनके भाषण करने के पूर्व सर तेजबहादुर
ने अपनी योजना रखते हुए सम्मेलन में यह
षणा ज़ोरदार शब्दों में की थी कि भारत की नई
कार पूरा पूरा क़र्ज़ चुकाने के लिए ज़िम्मेदार होगी।
रत क़र्ज़ न चुकाने की बात सोच ही नहीं सकता
र न इसकी आवश्यकता ही समझता है कि आज
क के क़र्ज़ की जाँच के लिए कोई पंचायत बैठाई
ाय। क़र्ज़ की सब रक़में ठीक हैं और भारतवर्ष
हें पूर्णरूप में चुकायेगा। सर सप्रू की यह
षणा भारत-सरकार की इच्छा की पूर्ति करती है।
टिश-सरकार भी यही चाहती थी। सम्मेलन में
न्य प्रतिनिधियों ने भी क़र्ज़ चुकाने की बात
ीकार की है। लार्ड रीडिंग ने भी अपने वक्तव्य
यह शर्त पेश की है कि नये शासन-विधान में इस
ात की पूरी ज़िम्मेदारी होगी कि भारत सब क़र्ज़
कायेगा, ब्याज अदा करेगा, करंसी और हुंडी
था टैक्सों के लगाने में कोई गड़बड़ न करेगा।
यापारिक प्रश्नों के लिए व विदेशियों के व्यापारिक
त्वों की संरक्षा आदि के निर्णयों के लिए
क आर्थिक पंचायत क़ायम की जायगी, जो इन
ार्यों का निर्णय किया करेगी। रिज़र्व बैंक जब
क स्थापित न होगा तब तक अर्थ-विभाग का कार्य
ायसराय के अधिकार में रहेगा।

इन सब महत्त्वपूर्ण प्रश्नों की आलोचना
रने के पूर्व सर भूपेन्द्रनाथ मित्र के वक्तव्य का
यहाँ उल्लेख करना सर्वथा उपयुक्त होगा।
सर मित्र का भारतीय कांग्रेस से ज़रा भी
सम्बन्ध नहीं है। वे भारत-सरकार के उच्च पदा-
धिकारी हैं। वे छुट्टी देकर सम्मेलन में भेजे गये थे।
इस सरकारी सम्बन्ध के कारण उनका भाषण अधिक
स्पष्ट तो नहीं हुआ, तो भी साहसपूर्वक उन्होंने यह
कह ही डाला कि क़र्ज़ की जाँच की तो अब चर्चा
नहीं होनी चाहिए, मगर भारत पर जो बाहरी क़र्ज़
है उसे भारत की नई सरकार उन्हीं क़ानूनों के अनु-
सार जाँच करा सकती है जिनके अनुसार अन्य
उपनिवेशों में ट्रस्ट सिक्यूरिटियों की जाँच हुई थी।
उन्होंने कहा कि यद्यपि वे यह नहीं चाहते कि इस
क़र्ज़ की कोई जाँच हो, किन्तु वे यह स्वीकार करते हैं
कि भविष्य में यदि कोई गड़बड़ पैदा हो तो यह मामला
जाँच के लिए एक स्वतन्त्र पंचायत को सौंपना
पड़ेगा। इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी स्पष्ट शब्दों
में कह दिया कि भारतवर्ष को जो देना—क़र्ज़, और
ब्याज आदि का—है वह 'कांसीलीडेटेंड—स्थायी फ़ंड'
से अन्य ख़र्चों से उतर के होगा, अर्थात् द्वितीय श्रेणी
का ख़र्च होगा। इसी परिषद् में कुछ अँगरेज़ व्यापा-
रियों ने अपने व्यापार के लिए विशेष रिआयतें माँगीं।
संघ-तंत्र-शासन-विधान के मसौदे में भी इन सब
रिआयतों का उल्लेख है। इँग्लैंड की प्रमुख व्यापारी
संस्था 'लण्डन चेम्बर आफ़ कामर्स' अपनी माँगों में
बहुत आगे बढ़ गई है। वह यह कहती है कि नये
शासन-विधान में इस बात की गारंटी हो कि ब्रिटेन
के माल पर भारत में नये कर आदि नहीं लगेंगे।
ब्रिटेन के माल के लिए भारत के बाज़ार में आज-कल
की रियायतें रहेंगी। योरप आदि अन्य देशों की
अपेक्षा ब्रिटेन के माल को भारत में प्रिफ़रेंस मिलेगा।
इसके अलावा भारत में रुपये वा पौंड में जो व्यापार
अँगरेज़ों का है उसे हटाने की कोशिश नहीं की जायगी।

इस गोलमेज़-सम्मेलन में न तो कोई भारतीय
व्यापारी ही गया है और न इन विषयों पर विचार
होने के समय किञ्चित् इशारा भारत से भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारियों ने ही किया। भारतीय व्यापारी संस्थायें अन्य अन्य बातों के सम्बन्ध में भारत-सरकार व प्रान्तीय सरकारों का ध्यान आकर्षित किया करती हैं। किन्तु सम्मेलन की चर्चा के सम्बन्ध में उन्होंने कुछ भी नहीं कहा। राष्ट्रीय महासभा के समान वे भी इस सम्मेलन के कार्य से तटस्थ हैं। अखिल भारतीय व्यापारी कान्फ्रेंस का तो अधिवेशन तक नहीं हुआ, किन्तु आर्थिक परिषद् का महत्त्व-पूर्ण अधिवेशन लाहौर में हुआ। उसके अध्यक्ष 'मिण्टो कालेज' के अर्थशास्त्र के प्रोफ़ेसर डाक्टर प्रमथनाथ बनर्जी ने अपने भाषण में आर्थिक समस्याओं की गम्भीर आलोचना की।

इस आर्थिक परिषद् के अधिवेशन प्रतिवर्ष होते हैं, किन्तु आज तक सारे देश की समस्याओं पर पूर्णरूप से कभी विचार नहीं हुआ। इतना ही नहीं, पूर्णरूप से आर्थिक प्रश्न भी नहीं छेड़े गये। अभी तक यह होता आया है कि भारत की आर्थिक समस्याओं को राजनैतिक उलझनें कह कर उन पर विचार करना या न करना सरकारी विशेषज्ञों का कार्य समझा जाता था। पर इस वर्ष एक गवर्नमेंट कालेज के अध्यापक होते हुए भी डाक्टर बनर्जी ने राजनैतिक उलझनों पर भी एक अर्थविशेषज्ञ की दृष्टि से विचार करना सर्वथा उचित समझा। वे न कांग्रेसी हैं और न आन्दोलनकारी बातें कहते हैं। वे जैसे शान्त व्यक्ति के मुख से उन बातों की पुष्टि होती है जिन्हें देश की व्यापारी संस्थायें और राष्ट्रीय महासभा के नेता कहते हैं। ऐसे वक्तव्यों से राष्ट्रीय दृष्टि से आर्थिक स्वायत्तता की माँग पर पूर्ण प्रभाव पड़ता है।

साइमन-कमीशन के सम्मुख सर बाल्टर लेटन ने एक अर्थ-विशेषज्ञ की दृष्टि से जो सिफ़ारिशें की थीं उन पर विचार करते हुए श्रीयुत बनर्जी ने कहा कि इस देश में भविष्य के लिए आर्थिक सुधारों की अत्यन्त आवश्यकता है। पूर्णरूप से ज़िम्मेदार शासन तभी होगा जब सत्य आधारों पर आर्थिक सुधार होंगे। वर्तमान आर्थिक शासन में देश के धन का सबसे बड़ा भाग सेना के पालन-पोषण में ख़र्च हो जाता है, और वस्तुतः शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक भलाई के लिए कोई रक़म नहीं बचती है। इसलिए वे यह कहते हैं कि आगे से आर्थिक बँटवारे का स्पष्टीकरण हो जाय। केन्द्रीय सरकार को धन सेना, क़र्ज़, पेंशन और शासन आदि के लिए चाहिए और प्रान्तीय सरकार को शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग-धन्धे, पुलिस और शासन के लिए चाहिए। इन कार्यों पर लक्ष्य देते हुए केन्द्रीय सरकार का ख़र्च कभी नहीं बढ़ना चाहिए, अपितु वह अत्यधिक न्यून हो, और प्रान्तीय सरकार के ख़र्च में बराबर वृद्धि हो, जिससे शिक्षा और स्वास्थ्य आदि के अतिरिक्त व्यापार और उद्योग-धन्धों की पूर्ण उन्नति हो। डाक्टर बनर्जी कहते हैं कि नये शासन-विधान में नये टैक्स नहीं लगाये जा सकेंगे, क्योंकि इससे सुधारों में सफलता नहीं मिलेगी। जन-समुदाय तो सच्चा शासन-विधान मिलने पर ही संतुष्ट होगा, किन्तु नये टैक्स सम्प्रति बढ़ाये जा सकते हैं। इसलिए डाक्टर बनर्जी की तरह हम चिंतित नहीं होते कि नये शासन-विधान में टैक्स बढ़ाने व नये टैक्स लगाने का अवसर ही नहीं मिलेगा। इस देश में अधूरे टैक्सों से आय में जो कमी है उसे भुलाना नहीं होगा। जहाँ नये शासन-विधान में ग़रीबों की रक्षा के लिए नमक आदि पर से क़तई कर हटा देना होगा, वहाँ विदेशी वस्त्र, सिगरेट, साबुन, फ़ेंसी माल, मोटर और शराब आदि पर अधिक से अधिक टैक्स बढ़ाये जा सकेंगे, और उस सम्बन्ध में लोकमत का किञ्चित् विरोध नहीं होगा। देश तो आज भी इन वस्तुओं पर टैक्स बढ़ाने की माँग कर रहा है। ख़र्च में कमी की चर्चा अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण है। इस ग़रीब देश को भारी भारी तनख़्वाहों के नौकरों की ज़रूरत नहीं है। एक प्रभावशाली कमीशन-द्वारा जाँच करके बड़ी बड़ी तनख़्वाहों को एकबारगी घटा देना चाहिए। भारतवासी अत्यन्त स्वल्प वेतन में काम करने को प्रस्तुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गे। मालगुज़ारी भी खेती की पैदावार बढ़ाकर रकार बढ़ा सकती है। पर उसका बढ़ना कठिन । कारण भारतीय किसानों से इस समय जो ालगुज़ारी वसूल की जाती है उसमें निश्चय ही कमी रनी पड़ेगी। इसकी पूर्ति सरकार सेना का ख़र्च टाकर कर सकती है। सम्प्रति सेना में ५५ करोड़ पये ख़र्च होते हैं। इस मद में भारत के राजस्व की ामदनी का दो तृतीयांश ख़र्च हो जाता है। इस र्च में बहुत कमी की जा सकती है।

सेना का ख़र्च एक नीति का प्रश्न है और उसमें रिवर्तन करने की माँग बहुत ज़बर्दस्त है। भारतीय ना में से अँगरेज़ सैनिकों को भारी तादाद में घटा देने र भी भारत की जान-माल की रक्षा में कोई बाधा पस्थित न होगी। महायुद्ध के समय भारत में ब्रिटिश-सेना में कठिनाई से १५ हज़ार सिपाही रहे ोंगे, किन्तु उससे कोई ख़तरा नहीं हुआ। आज संसार में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की प्रबलता के कारण चढ़ाई करने की बात ही नहीं रह गई है और भारत में स्वायत्त शासन की उन्नति होने से भीतरी शान्ति भी स्थापित हो जायगी। यह अनेक बार कहा जा चुका है कि भारत में सेना आवश्यकता से अधिक है और पूर्व में ब्रिटेन इतनी सेना अपना प्रभुत्व जमाये रखने के लिए रक्खे हुए है। इसके लिए ब्रिटेन को भी अपने ख़ज़ाने से ख़र्च करना चाहिए। इसके अलावा जो सेना बचेगी उसका भारतीयकरण करने पर सेना के रक्षण में २० व ३० करोड़ रुपये ख़र्च की ही ज़रूरत रह जायगी। नौकरियों में भारतीयकरण होने से ख़र्च में बहुत बचत होगी। भारतीय थोड़े वेतन पर काम करने के लिए मिल जायँगे। वेतन घटाने और नौकरियों में भारतीयों को भर्ती करने का कार्य शीघ्रतापूर्वक होना चाहिए। पेंशनों में भी बहुत रक़म ख़र्च होती है। भारत जैसा ग़रीब देश ग़रीबों की रक्षा करने के बजाय सम्पन्नवान् व्यक्तियों को आगे से इतनी इतनी बड़ी पेंशनें देने में असमर्थ है। इन सब ख़र्चों में मितव्ययिता करने से देश में कई करोड़ की बचत होगी। होम चार्जेज़ की रक़म में कमी करने की माँग देश वर्षों से करता आ रहा है, किन्तु वह वैसी ही स्थायी बनी हुई है। इन सब प्रश्नों के अलावा देश ने क़र्ज़ न चुकाने का जो आन्दोलन उठाया है और जिसके कारण विदेशी भी सावधान हो गये हैं, उस सम्बन्ध में गोलमेज़-सम्मेलन में स्पष्ट विचार नहीं हुआ है। डाक्टर सप्रू के उद्गार उतना मूल्य नहीं रखते, जितना एक अर्थ-विशेषज्ञ डाक्टर बनर्जी के। वे स्पष्ट कहते हैं कि क़र्ज़ में कमी होना चाहिए। आरम्भ में जब महात्मा गांधी ने क़र्ज़ में कमी करने की ज़ोरदार माँग की तब देश के अनेक लोगों को वह पसन्द नहीं हुई। महात्मा गांधी ने कहा था कि एक स्वतंत्र पंचायत-द्वारा इस बात का निर्णय किया जाय कि इस क़र्ज़ की रक़म में से भारत को न्यायपूर्वक कितना अंश देना चाहिए। डाक्टर बनर्जी न तो असहयोगी हैं और न साम्यवादी, तो भी वे गम्भीरतापूर्वक यह सलाह देते हैं कि इस क़र्ज़ की रक़म में से अफ़ग़ान और बर्मा-युद्ध के क़र्ज़ों को भारत पर से हटा कर ब्रिटेन पर लादना चाहिए।

इस क़र्ज़ के छुटकारे से ही इस देश की आर्थिक मुक्ति होगी। नये शासन-विधान के काल में इसका फ़ैसला होना आवश्यक है। नये नये टैक्सों का निर्माण करना भी अनुचित न होगा। जिन्हें कृषि से अधिक आमदनी होती है वे आज साफ़ बच जाते हैं। एक बात और अत्यंत वाञ्छनीय है। इस निर्धनदेश को तभी नये शासनविधान की उपयुक्तता प्रकट होगी जब ग़रीबों को अनेक प्रकार से आराम मिलेगा। इसलिए आर्थिक दृष्टि से सरकार को समाज-सुधार का कार्य भी अपने हाथ में लेना चाहिए। शिक्षा और स्वास्थ्य तो ऐसे प्रश्न हैं जिनमें बड़ी शीघ्रता से कार्य करने की ज़रूरत है। किन्तु समाज-सुधार के प्रश्नों में वृद्धावस्था में पेंशन, दरिद्रों की रक्षा और बेकारों का बीमा अर्थात् उन्हें खाने को देना सरकार का कर्त्तव्य है। सरकार को चाहिए कि या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वह बेकारों को काम में लगावे या उन्हें खाने को दे।

पर ये सुधार तभी संभव हैं जब बिना किसी शर्त के पूर्ण आर्थिक स्वायत्तता ह्वाइट हाल से दिल्ली की ज़िम्मेदार परिषद् को सौंप दी जाय। लार्ड रीडिंग महोदय परिषद् के मिनिस्टर को अर्थ-विभाग सौंप देना स्वीकार करते हैं, किन्तु वह वैसा ही कि मक्खन हमारे पास रहेगा और छाँछ तुम्हें मिलेगी। वे इतने अधिक आर्थिक मामले अपने अधिकार में रखना चाहते हैं, जिससे भारत को आर्थिक स्वायत्तता मिलना एक कोरा मज़ाक ही रह जाता है। बाहरी क़र्ज़ का अधिकार वायसराय को रहेगा और भीतरी क़र्ज़ में उनका हस्तक्षेप हो सकेगा। शायद उनका ख़याल है कि इन क़र्ज़ों का प्रभाव साख और आर्थिक अवस्था के स्थापित्व पर पड़ता है। सम्प्रति एक्सचेंज और करन्सी के नियन्त्रण के अधिकार वाइसराय महोदय के हाथ में रहेंगे, किन्तु रिज़र्व बैंक के स्थापित होने पर उसके हाथ में इन दोनों का नियन्त्रण आ जायगा। रिज़र्व बैंक के सम्बन्ध में यह बतलाया जाता है कि उसका सङ्गठन राजनीति से परे होगा, जिससे वह करन्सी का भले प्रकार नियन्त्रण कर सके। पर यह नहीं बतलाया गया है कि राजनीति से परे वह कौन सी योजना है जिसके आधार पर बैंक का सङ्गठन होगा। लार्ड रीडिंग की इन माँगों को भारत नेताओं ने किस प्रकार स्वीकार कर लिया, य आश्चर्य की बात है। ब्रिटिश व्यापारियों की संरक्ष के लिए जो पञ्चायत परिषद् की अधीनता में का करेगी उस सम्बन्ध में विदेशी व्यापारियों के भयभी होने की आवश्यकता नहीं है। लार्ड रीडिंग तो ए पञ्चायत की योजना भर सुझाते हैं, किन्तु भारतव विदेशी व्यापारियों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार हो के लिए कई पञ्चायतें क़ायम कर सकता है। पिछ वर्षों में भारत ने ब्रिटेन को जो अत्यधिक व्यापारि रियायतें सौंप दी हैं उनसे ब्रिटिशों का प्रभुत्व बहु अधिक स्थापित हो गया है। इस समय जिस द की अधिक संरक्षा करने की ज़रूरत है और जिस साथ अधिक रियायतें होनी चाहिए वह भारतीय द है। भारतीयों की यह माँग कि उनके देश व आर्थिक स्वायत्तता का कोई भी अङ्ग वायसरा महोदय के अधिकार में न रहे। यही देश की माँ है। इस माँग में रुकावटें डालने का यह अ होगा कि अनिश्चित काल तक ब्रिटेन का स्वा भारत के आर्थिक विभाग में घुसा रहेगा औ विदेशी व्यापारियों की धींगाधींगी वैसी ही जार रहेगी।

—जी० एस्० पथि

मक्खियों की करतूतें

पुस्तक छोटी-सी है परन्तु बहुत उपयोगी है। मक्खियों के कारण कैसे कैसे भयानक रोग पैदा हो जाते हैं यह किसी से छिपा नहीं। इस पुस्तक में खुलासा सब बातों का वर्णन किया गया है। ज़रा पढ़कर देखिए। **मूल्य केवल ।≈) छः आना।**

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाभिमान

वह एक दुबली-पतली कुरूपा नारी थी। यौवन ने अपनी रस-भरी पिचकारी से उसे भिगोने का कई बार प्रयत्न किया था, परन्तु ग़रीबी की प्यासी चादर ने उस सारे रस को ऊपर ही ऊपर सोख लिया था। उसकी धूल-धूसरित मिट्टी की क़ब्र-सी देह पर धँसी हुई आँखों के रूप में दो दीपक टिम-टिमा रहे थे। पर जान पड़ता था, इस बार का अन्धकार उन्हें दबा लेगा।

वह एक ताबूत के पीछे पीछे कुहरा-सी चली जा रही थी। इस बात का पता लगाना कि उसके शरीर में किस स्थान पर चेतना है और किस स्थान पर नहीं है, मुश्किल था। ताबूत को दो पड़ोसी आगे-पीछे से अपने कंधों पर उठाये थे और उस पर चिथड़ों से ढँका एक बालक सोया-सा जान पड़ता था। शायद यह उस बालक की अनन्त निद्रा थी। साथ में आठ दस पड़ोसी और चले जा रहे थे। अब ये लोग उस सड़क की ओर घूमे जो क़ब्रस्तानवाले गिरजाघर की ओर जाती थी। मोड़ के पास पहुँचने पर साथ के एक पड़ोसी ने कहा—यारो ज़रा दम ले लो। यद्यपि बालक भारी नहीं है। उसके शरीर में था ही क्या। परन्तु इस स्थान पर लोग सुस्ताते हैं। यह जो बड़ा-सा वृक्ष खड़ा है इसकी छाया में मृतक को शान्ति मिलती है।

ताबूत रख दिया गया। लोग बैठ कर बातें करने लगे—'एक तरह से इसका मर जाना अच्छा ही हुआ? मारा मारा फिरा करता था। कभी पेट भर खाना भी तो नहीं पाता था। बाप इसी मुसीबत में पहले ही चल बसा। रह गई माता से उसकी कमाई उसी भर को नहीं होती। उसके पास न कुछ देने को है, न कुछ खोने को। अच्छा हुआ बेचारा मर गया'।

परन्तु इन पड़ोसियों को क्या मालूम कि उस बेचारी माता का हृदय किस क़दर राख हो गया था। अरे वही तो उसका सर्वस्व था, वही उसकी हड्डियों की हड्डी और वही उसके मांस का मांस था। इस निर्दय संसार में वही उसका एक-मात्र अवलम्ब था। उसकी दृष्टि में उस व्यर्थ ही जन्म ग्रहण करनेवाले बालक का कितना मूल्य था, यह वही समझ सकती थी।

वह इधर-उधर देखने लगी कि उसके आस-पास कितने जीवित शरीर हैं, कितनी आँखों में उसके प्रति सहानुभूति का पानी है? वह एक ऊँचे खानदान की लड़की थी, ऊँचे खानदान में विवाही गई थी। उसका घराना ऊँचा था। ऐसे अवसरों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने अपने घर में मातम-पुर्सी करनेवालों की भारी भीड़ देखी थी। शोक के पहाड़ के नीचे दब जाने पर भी उसका स्वाभिमान जीवित था और जैसे उसे दो सूरतें दूर से सवारी पर उसकी ओर आती हुई दिखाई पड़ीं, उसका यह कुचला हुआ स्वाभिमान चंचल हो उठा। वह अपनी अँगुलियों पर गिनने लगी—दस, बारह, पन्द्रह, बीस, बाईस। कुल बाईस मनुष्य साथ में थे, जो इस निर्धन अवस्था को देखते हुए कम नहीं थे। उसका बालक यों ही चुपचाप नहीं चला जा रहा है। इतने आदमी उसे विदाई देने के लिए एकत्र हुए हैं।

सवारी क़रीब आकर ताबूत के पास सड़क पर खड़ी हो गई। उसमें से एक पुरुष उतरा। उसके चेहरे पर बड़ी बड़ी मूछें थीं और वह एक सफ़ेद टोप दिये था। यह पुरुष उसका जेठ था। उसके पीछे सफ़ेद पोशाक पहने जो स्त्री उतरी वह उसकी जिठानी थी। उसका जेठ उसके पति की मृत्यु से पहले ही जुदा हो गया था। वह दूकानदारी करता था, काफ़ी धन जोड़ लिया था। परन्तु उस धन का उपभोग करने को उसके कोई सन्तान न थी। उसके विवाह को पूरे बाईस वर्ष हो चुके थे, परन्तु परमात्मा ने उसे विवाह का वह फल न प्रदान किया था जिसके लिए लोग ब्याह करते हैं। दोनों स्त्रियों में कोई बात न हुई। बहुत दिनों से उन दोनों में बोल-चाल बन्द थी।

यह मातमी जलूस आगे बढ़ा। सड़क के दोनों ओर के घरों के द्वार खुलने लगे और उनमें से स्त्रियाँ और बच्चे झाँक झाँक कर कहने लगे—'हाय! कौन है?' रास्ते में एक स्कूल पड़ता था। उससे झुण्ड के झुण्ड लड़के यह दृश्य देखने को बाहर निकल आये। माता का हृदय गद्गद हो उठा। ओह! उसके पुत्र का कैसा स्वागत हो रहा है! उसका शोक कितना महान् है! जैसे संसार के अन्य बड़े लोगों का जनाज़ा निकलता है, वैसे ही उसके पुत्र का जनाज़ा निकल रहा है। वह किसी से कम नहीं है। और कम भी हो तो क्या? मृत्यु सबको बराबर कर देती है।

उसके शोक से ढँके चेहरे पर यह सुख की रेखा आँसू बरसाते हुए सन्ध्या के बादलों पर इन्द्रधनुष के समान अङ्कित हो रही थी। और यह इन्द्रधनुष थोड़ा और चटक हो उठा जब उसने सामने से एक तेज़ छोटे से सुन्दर मोटर पर अपने देवर और देवरानी को आते देखा। उसका देवर अलग बँगले में रहता था। वकालत करता था, किसी बात की कमी न थी। हाँ, कभी कभी बँगले की छत पर से पतंग उड़ानेवाले छोटे बच्चे का अभाव उसको भी खटक जाता था।

उसके देवर ने ऐसा मुँह बनाया, मानो इस जलूस से उसका कोई सम्बन्ध ही न हो। वह उधर से सैर को जा रहा था। रास्ते में इस प्रकार शर्मिन्दा होना पड़ेगा, इसका उसे ध्यान तक न था। उस दुखिया नारी को मालूम हो गया कि उसका देवर उसे पहचानना नहीं चाहता। उसने अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लिया और चाहा कि वह अपना मोटर दौड़ाता हुआ एक अपरिचित की भाँति निकल जाय। देवर ने इधर-उधर देखा। उसके जी में आया कि मोटर घुमाकर पीछे लौट जाय। परन्तु उधर लोक-लाज की गहरी खाई खुद गई थी। उस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोटर निकाल ले जाना मुश्किल था और इधर क का बन्धन उसे खींचकर मैले मूर्ख अपाहिज ागों के बीच में खड़ा करना चाहता था। वह भारी रेशानी में पड़ गया। उसको समझ में न आया क क्या करे।

बच्चे की मा ने भी उसकी इस दशा का अनुव किया। पर उसने मन ही मन कहा, उँह! क्त का बन्धन कोई भले ही न तोड़ सके, पर ानुष्य के लिए यह ज़रूरी नहीं है कि इस बन्धन के ारण वह अपने मैत्रीभाव का द्वार सबके लिए ोल दे।

वह कुछ मुस्कराई, फिर हँसने लगी। लोगों ने मझा, वह होश में नहीं है। पर वास्तव में यह था कि उस समय केवल उसी को होश था। वह अपने महान् शोक के सामने देवर के उस चमकदार मोटर को तुच्छ समझ रही थी। उसने देखा कि उसके देवर का चेहरा झूठी शान की लपटों से जला जा रहा है। शायद इसी लिए वह हँसी थी।

अन्त में लोकलाज के भय ने इस दम्पति को मोटर से उतार कर सड़क पर खड़ा कर दिया और उनको भी साथ लेकर जनाज़ा आगे बढ़ा।

क़ब्रस्तान में पहुँचने पर सब लोग बैठ गये। ताबूत हरी घास पर रख दिया गया। वह स्त्री ताबूत के पास जाकर खड़ी हो गई। फिर झुकी। उसने अपने बच्चे को अन्तिम बार देखा। उसके निकट जाने का या उससे बातें करने का किसी को साहस ही नहीं हुआ। जो शब्दों-द्वारा अपनी सहानुभूति प्रकट करना चाहते थे वे भी इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह उनकी तरफ़ कुछ सुनने की आशा से देखे तो कुछ कहें। परन्तु उसने अपना भाव इतना गम्भीर बना लिया कि जिसकी तरफ़ उसकी दृष्टि गई उसी के होंठों पर आये हुए शब्द भय से कण्ठ के नीचे हो रहे। उसने उदास भाव से इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई और अन्त में अपनी जेठानी, देवरानी और उनके पतियों को देखा। वे आपस में कानाफूसी कर रहे थे। शायद उसी के सम्बन्ध में कुछ कह रहे थे। उसने उनकी बातें समझने का प्रयत्न किया। सम्भवतः वे उसकी, इस प्रकार अपने परिवार की ग़रीबी प्रदर्शन करने के लिए, समालोचना कर रहे थे।

बच्चे को देख चुकने पर वह उस स्थान की ओर जाने लगी जहाँ छोटी-सी क़ब्र बन रही थी। रास्ते में उसके कानों में कुछ शब्द उड़कर गिरे। उसके जेठ और देवर आपस में कह रहे थे, इसने हमारी नाक कटा ली—हाँ नाक! ओह लोग क्या कहते होंगे कि हमारा लगाव ऐसे दरिद्र प्राणियों से है। ओह! कितनी भद्दी बात है। सिर्फ़ ४-६ रुपये की बात थी। किसी से कहला भेजती तो भी पहुँच जाते।

परन्तु जिस स्वाभिमान ने उसे कभी उनके द्वार पर भिखारी की भाँति नहीं खड़ा होने दिया था उसे अब किस बात की चिन्ता थी। उसकी समझ में उन मैले चिथड़ों में जो बातें थी वह रेशमी कफ़न में नहीं पैदा हो सकती थी।

उसे क़रीब देखकर वे चुप हो गये और खाली आँखों से उसकी ओर देखने लगे, मानो कुछ कहना चाहते थे, पर उनके पास कुछ कहने को था नहीं। जब उसने उनकी ओर फिर दृष्टि फेरी तब उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने सिर झुका लिये। वे उससे आँख नहीं मिलाना चाहते थे। उन्होंने पारिवारिक समवेदना के ऋण को इतनी दूर आकर अदा कर दिया था। इससे अधिक उनसे और क्या आशा की जा सकती थी?

परन्तु यदि वह उनके पास जाती, सहायता की प्रार्थना करती तो वे इनकार नहीं कर सकते थे। आह! पर यह उसकी जाति से होना असम्भव था। उसने मन ही मन कुछ सोचते हुए स्वाभिमान के साथ अपने सिर को पीछे की ओर झटका! सिर का आभरण नीचे गिर गया। खुले केश लहरा उठे। शोक ने उसे दबाया नहीं था, ऊँचे उठा दिया था। उसकी आँखों में दीनता नहीं थी, गर्व था।

जब क़ब्र खुल कर बन्द हो गई तब उसने अपने उन परिवार के लोगों की ओर लक्ष्य करके वहाँ बैठे हुए लोगों से कहा—पड़ोसियो! यहाँ तक मेरे साथ आने के लिए मैं तुम सबको धन्यवाद देती हूँ। यद्यपि यह एक ग़रीब के पुत्र का जनाज़ा था, पर उस माता के पास जो कुछ था उसने इस जनाज़े में लगाया। यह समझना भूल है कि वह इस अवसर पर उन लोगों से पैसे माँगेगी जिन्होंने उसे उस समय छोड़ दिया था जब बच्चा पैदा हुआ था और जब उसे उनकी सहायता की बेशक आवश्यकता थी।

उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। रुदनपूर्ण स्वर में उसने फिर कहा—परन्तु मैंने उस बच्चे को उसके दादा और परदादा के पास पहुँचा दिया और वे उसे ख़ूब प्यार करेंगे। मेरे परिवार में वह अकेला बच्चा होगा जिसे उनके साथ रहने का सुख प्राप्त हुआ है। फिर उसने अपनी बन्ध्या जेठानी और देवरानी की ओर देखते हुए कहा—उसे वहाँ स्वर्ग में जो कुटुम्बीजन मिलेंगे वे उसके यहाँ पृथ्वी के कुटुम्बी जनों की भाँति उससे घृणा न करेंगे यद्यपि वह यहाँ से ग़रीब ही जा रहा है।❀

—श्रीनाथसिंह

❀मैंचेस्टर गार्जियन में प्रकाशित बर्नर्ड मैकर्थी की एक कहानी।

ध्रुपद-स्वर-लिपि

का प्रचार बड़े ज़ोरों से हो रहा है। हिन्दी-साहित्य में अपने ढँग का एक अनूठा और सबसे बढ़िया ग्रन्थ है। इसमें १७० से अधिक उच्च कोटि के प्राचीन राग तथा राग-मालाओं की बहुत ही सरल व्याख्या की गई है। तथा भारतीय सङ्गीत के नवसिखियों तथा उच्च श्रेणी के गायकों के लिए व्यावहारिक विधि बतलाई गई है। विवरण के लिए हमारा विज्ञापन देखिए।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोंमार्त्र

आधी रात के समय मेरी कोठरी में टेलीफ़ोन की घंटी बजने लगी। रिसीवर उठा कर मैंने पूछा, कौन? उत्तर मिला, तैयार हो जाओ। मैंने फिर पूछा, किसलिए? उत्तर मिला, भ्रष्ट स्वप्न का रूप देखने! स्वर मेरे एक मित्र का था। मैंने कहा—सीधे बोलो, नहीं तो रिसीवर रख दूँगा। मेरे मित्र ने जवाब दिया—चलो, तुम्हें मोंमार्त्र दिखा लाऊँ।

मोंमार्त्र पेरिस के उस भाग का नाम है, जहाँ दिन में सन्नाटा छाया रहता है और रात में कलरव मचता है। यहाँ की भड़कीली दूकानें दिन भर बन्द रहती हैं। यहाँ के भोजनालय रात में ही खुलते हैं। यहाँ सभी प्रकार का सामान मिलता है। झोपड़ी का रहनेवाला महल के बाशिन्दे की शान रखता है; उसका मान भी वैसा ही होता है। यहाँ के सभी ग़रीब दिल के अमीर होते हैं। यहाँ किसी को किसी से घृणा नहीं। सभों को सभी से प्यार भी नहीं। वेश्या के घर के ऊपर निरासक्त चित्रकार का डेरा रहता है। साहित्यिक की साधना सङ्कीर्ण कोठरी में सिद्ध होती है। सुन्दर और असुन्दर की राखी मोंमार्त्र को एक साथ बाँध रही है। मोंमार्त्र का रूप अरूपात्मक है।

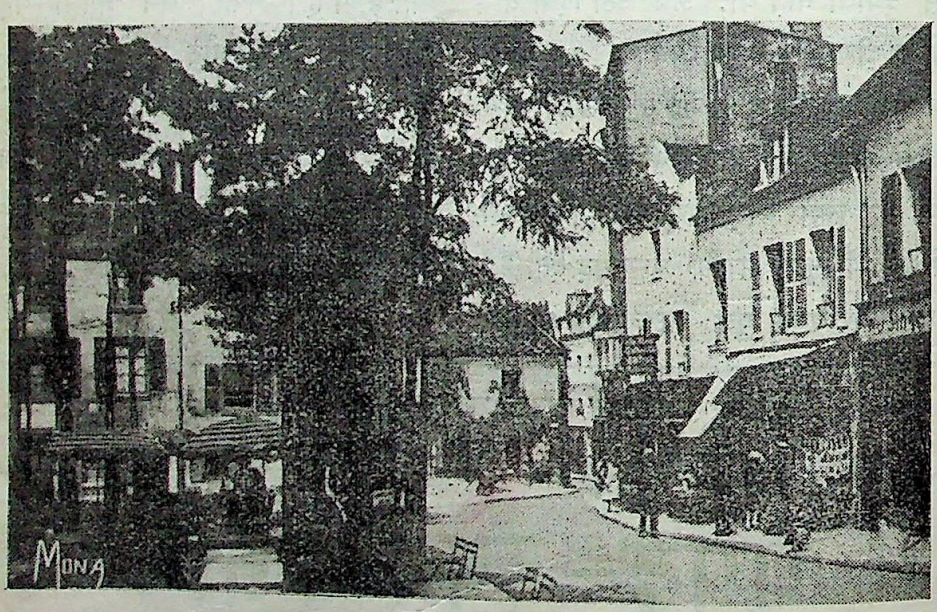

[ह्रासदुतेत्र मोंमार्त्र]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक यहाँ अपनी साधना का रूप देखता है। इसका सामान यहाँ प्रस्तुत रहता है। चित्रकार असुन्दर के बीच सुन्दर की खोज में व्यस्त रहता है। सफलता इसे मिल ही जाती है। रँगे हुए ओठों से भी त्याग की लालसा यह बोलने की रहती है कि मैं भी प्यार करती हूँ, मैं भी त्याग करूँगी। कभी कभी उसकी यह लालसा पूर्ण हो जाती है। कामलोलुप यात्रियों के लिए मोंमार्त्र इष्ट-भूमि है। वासनाओं की तृप्ति के लिए एकत्र अनेक, असाधारण, मोहमय प्राणियों को यहाँ देखकर भ्राम्यमान विदेशियों का चित्त अपवित्र हर्ष से मत्त हो उठता है। ऐसे लोग मोंमार्त्र को देखने की अपेक्षा अपने आपको अधिक दिखाते हैं। मोंमार्त्र हृदय की कसौटी है—नैतिक बल की परीक्षा।

इसी भूमि को देखने के लिए मैं अपने मित्र के साथ 'ग्रास ओपेरा' नामक स्थान से रवाना हुआ। पृथ्वी के नीचे की रेलगाड़ी से 'ब्लांश' नामक स्थान में आकर हम लोग सड़क के ऊपर आये। सामने ही 'मूला रूज' नामक विशाल नृत्यालय था। चार आने टिकट देकर हम लोगों ने इसके भीतर प्रवेश किया। क्या क्या? असंख्य नर-नारियों की भीड़ लगी थी। सभी आपस में, चिल्ला कर कुछ न कुछ बोल रहे थे। मदिरा का सामान चारों ओर बिखरा पड़ा था। सिगरेट-सिगार-सेंट की गन्ध से हवा झूम रही थी। मोटे-पतले, छोटे-बड़े, काले, सफ़ेद लोग नारियों के साथ नाच रहे थे। एक कोने में बैंड बज रहा था। उसकी मधुर ध्वनि, नारी के अर्धनग्न वक्षःस्थल की तरह, उत्तेजना की तरंग फैला रही थी। इसी में सभी सराबोर थे। कोई सहमती हुई बालिका को अपनी ओर खींच लेता—पैसे देकर। युवतियाँ युवकों के गले लिपट जातीं, प्यार से नहीं, अर्थ के लोभ से। सभों को अपनी ही सुध थी। कोई दूसरों की परवा न कर रहा था। पर इस जनपूर्ण नृत्यालय में सभी अकेले थे। हृदय के श्मशान को जगाने में सचेष्ट पर असफल। यह

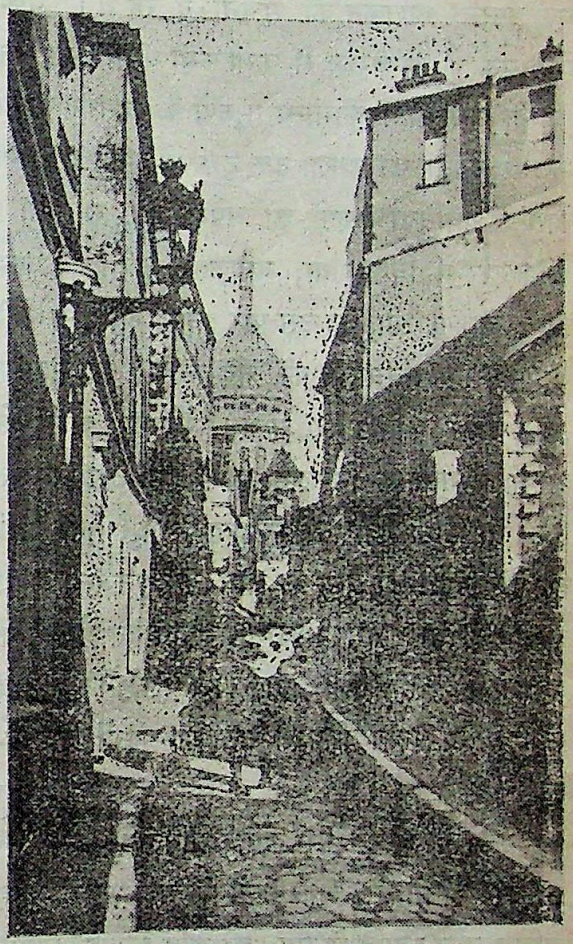

[मोंमार्त्र की एक गली में वीणा-वाद्य]

(दूर में पवित्र-हृदय का मन्दिर)

बृहत् आयोजन मेरे लिए दया की वस्तु थी, घृणा की नहीं। यहाँ हँसते थे सभी ज़ोरों से, पर हँसी की तरङ्गों पर थिरक उठती थी भग्न आशाओं की धीमी चीख़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्थान से बाहर निकल कर हम लोगों ने 'रू बर्थे' नामक एक सङ्कीर्ण गली में प्रवेश किया। हम लोग 'साक्रे कर' या 'पवित्र-हृदय' नामक मन्दिर की ओर जा रहे थे। दोनों ओर बड़े बड़े मकान एक अनन्त अशकुन की सूचना दे रहे थे। बध्य वातायन के अन्तराल से कभी कभी धीमी आह सुन पड़ती, कभी कभी कामान्ध पुरुषों के असंयत हास्य से निस्तब्धता का प्याला टूक टूक हो जाता। कोनों कोनों में युवतियाँ पुरुषों की अपेक्षा कर रही थीं। इनके स्वर में विषाद था, मादकता नहीं। कृत्रिम हास्यरेखा के मोह के उस पार इनकी आँखें रो रही थीं—विनष्ट पवित्रात्मा की याद करके। वेश-भूषा के चिह्न इनके शरीरों पर न थे। रँगे हुए ओठों से अश्लील गान न निकलता था। इन्हें देखकर ज्ञात होता था कि सत्यासत्य का द्वन्द्व इनके भीतर अभी दृढ़ है। हृदय की मृत्यु को लाँघ कर पुनर्जन्म ग्रहण करने की चाह इनकी ध्वनि में अनाहूत वैराग्य का पूर्वाभास दे रही थी। इनके शिथिल, करुण अङ्गों से एक ही प्रश्न निकल रहा था—क्यों? क्यों? क्यों?

कुछ ही देर में हम लोग 'पवित्र-हृदय' नामक मन्दिर के निकट आ पहुँचे। मन्दिर की चूड़ा मलिन चन्द्र-ज्योति में सपने की तरह अस्पष्ट, अस्थिर दीख रही थी। ऐसी अस्पष्ट ज्योति में भी, इतनी घनी रात को, एक चित्रकार चित्राङ्कण में लीन था। अति सङ्कीर्ण, निकट स्थित एक गली से वीणा का मतवाला सुर हवा को नचा रहा था। दूर में गृहस्थों का पेरिस सो रहा था। पास ही, मोंमार्त्र में चित्रकारों, साहित्यिकों, व्यभिचारियों, पागलों का पेरिस जाग रहा था। सुप्त और जाग्रत इन दो स्थानों के बीच 'पवित्र-हृदय' की चूड़ा अपना निराला रूप दिखा रही थी। इसे कोई देखता, कोई न देखता था। पेरिस और मोंमार्त्र—प्रेम और वासना—का सन्देश इसी मन्दिर के निकट से निकल रहा था। इसे कोई सुनता, कोई न सुनता था। यहाँ संयम की रेखा स्वेच्छाचार की लहर में आ मिली थी। यहाँ सभी अपनी अपनी परीक्षा ले रहे थे। कोई संयम की रेखा में अपने को विलीन कर, कोई स्वच्छन्द चाह के जाल में अपने को लिपटाकर।

"थक गये क्या?" मेरे मित्र ने मेरी ओर करुण नेत्रों से देखा। मैंने कहा—"नहीं।"

हम लोग आगे बढ़े। पथ सङ्कीर्ण था। दैन्य के लक्षण चारों ओर दिखाई दे रहे थे। वातायन के परदों में मैल था। दीवारों पर अश्लील चित्र, असभ्य भाषा, उत्तेजक चित्र। कई बच्चे द्वारों पर बैठे मा की अपेक्षा कर रहे थे—बीती रात को। इनके सुनहले केश पतिता नारियों किन्तु माताओं की अँगुलियों में गुँथे थे। इनके गालों की लाली माताओं के चुम्बन से सनातन हो रही थी। इनके भविष्य को चिन्ता कर अतीत भस्म क्यों न हो जाय?

मेरे मित्र ने कहा—कभी कभी हो जाता है।

उन्होंने बहुतेरे उदाहरण दिये। साहित्यिक समाज की बहुतेरी घटनायें सुनाईं। मैं संतुष्ट हुआ, मानो एक रहस्य का पता मुझे मिल गया।

कोई यह न समझे कि मैं इन नारियों की भूलों की प्रशंसा करता हूँ। कोई यह भी न समझे कि मैं इन भूलों से घृणा करता हूँ—यदि इनकी समाधि पर सत्य और सुन्दर का रूप उछल पड़े। सत्य को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिधि विस्तृत होती है। इन नारियों में कुछ ऐसी होती हैं जो मिथ्या के आवरण को दूर कर अपने जीवन में सत्य की प्रतिष्ठा कर डालती हैं। दिनों, युगों का पाप एक मुहूर्त्त में धुल जाता है—वैराग्य के प्रताप से। ऐसी नारियों की कथा से फ़रासीसी साहित्य पूर्ण है। अतीत के अनामृत अञ्चल में इनका परिवर्तित जीवन नवीन उल्लास से चमक उठता है। यह एक अज्ञेय रहस्य है कि उज्ज्वलज्योति अन्धकार की गोद में छिपी रहती है। साधारण फूल हर जगह खिलता है, पर कमल हँसता है पङ्क में।

—कृपानाथ मिश्र

हुएनसांग का भ्रमण-वृत्तान्त

प्रस्तुत पुस्तक प्रसिद्ध चीनी यात्री हुएनसांग के भारत-भ्रमण का वृत्तान्त है, जो ईसा की सातवीं शताब्दी में भारतवर्ष आया था। पुस्तक में बड़ी सुन्दरता से भारत के मुख्य मुख्य स्थानों का वर्णन, वहाँ का रहन-सहन, भाषा आदि का वर्णन किया गया है। पुस्तक पढ़ने से भारतीय प्राचीन सभ्यता का उज्ज्वल चित्र-पट आँखों के सामने खिँच जाता है। भारत का हाल जानने की इच्छा रखनेवाले प्रत्येक प्रेमी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य केवल ४) चार रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूक्ति-सुमन

(१)

न जिसमें पति के पद-प्रेम है,
न पटुता जिसमें गृहकार्य की।
सकल सौष्ठव से परिपूर्ण भी,
न रमणी रमणीयतमा वही ॥

(२)

मति वही यदि है सुविवेकिता—
चरित में करुणाकर ईश के।
हठ-कुतर्क-निरीश्वरवाद में—
प्रखरता, खरता-सम जानिए ॥

(३)

कल नहीं मिलती पल एक भी,
विकल है अपमानित हो सदा।
सुखद है जग में सच मानिए,
निधन ही धन-हीन मनुष्य को ॥

(४)

यदपि दारुण कर्म कहा गया,
वध-विधान सदा श्रुति-शास्त्र में।
तदपि जीव-समूह-विघात के—
नियम को, यम कोमल मानता ॥

(५)

फल-विहीन हुई वर विज्ञता,
तृण-समान हुई ध्रुव धीरता।
मन सदा यदि पीड़ित आपका,
विवश हो वश होकर काम के ॥

(६)

सुभट हो लड़ता यदि सामने,
परम शत्रु उसे कहिए तभी।
पर उसे कहिए निज मित्र ही,
शरण में रण में जब आगया ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७)

न अपने मन में बनिए बड़े,
सुयश की मत चाह बढ़ाइए।
नरशिरोमणि हैं तब, आपकी—
सुजनता, जनता जब मान ले॥

(८)

न कुछ भी ख़रचा शुभ काम में,
न सुख से कुछ भोजन ही किया।
फिर रहा धन तो किस काम का?
इतर सा तरसा धनवान भी॥

(९)

नित अकारण हास्य हुआ करे,
अमित वाद-विवाद रहे जहाँ।
न कुछ भी शक है, फिर तो वहाँ—
कलह में, लहमे भर देर है॥

(१०)

अधम-काम कुलीन कभी कहीं,
दुख पड़े पर भी करता नहीं।
रहितराज्य चरा सकती कभी—
न महिषी महिषी महिपाल की॥

(११)

यदपि गर्हित-वंशज साधु हो,
तदपि है वह आदरणीय ही।
न किसके सिर से धृत कज्ज है?
कमल का मल कारण क्या नहीं?

(१२)

सुघर भूरि भरे यदि भाव हों,
रस-अलंकृति-शब्द मनोज्ञ हों।
तब कहीं पर छन्द-निबन्ध की—
विकृति भी, कृति-भीषणता नहीं॥

—रामचरित उपाध्याय

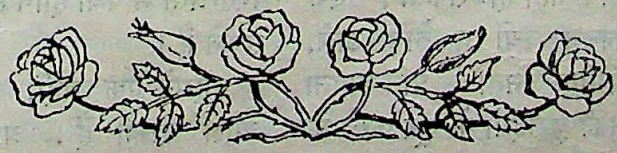

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम-सङ्गठन

[भारतीय ग्राम दयनीय दशा को प्राप्त हो गये हैं। वर्तमान समय में तो उनकी दशा और भी बुरी हो गई है। अन्न के सस्ता हो जाने से उनसे इस समय और भी कुछ करते-धरते नहीं बन पड़ता। उनकी ऐसी ही अवस्था से द्रवित होकर लेखक ने अपने इस लेख में इनकी दुरवस्था के कारणों पर विस्तार से विचार किया है और उनका सङ्गठन करने के लिए लेख के अन्त में कुछ उपाय भी सुझाये हैं। लेख उपयोगी और सामयिक है।]

भारतवर्ष की सारी शक्ति, उसका सारा व्यवसाय और उसका सारा सुख उसकी ग्राम-पद्धति पर ही अवलम्बित था। परन्तु आज उस पद्धति का अस्तित्व नहीं रहा। और ग्राम ही भारतवर्ष का हृदय है। इन्हीं ग्रामों में भारतवर्ष की पचहत्तर प्रतिशत जनता रहती है। नगरों में बड़ी बड़ी सभायें करना, जलूस निकालना, किसी नेता के नाम का ज़ोर से जय-घोष करना अथवा 'इन-क़िलाब' का नारा लगाना तब तक हमें अपने निश्चित ध्येय पर पहुँचने में सहायक नहीं बना सकता जब तक हम भारतवर्ष की तीन-चौथाई जनता को पीछे छोड़े रहेंगे। प्लेटफ़ारमों पर लम्बी लम्बी विविध अलंकारों से आच्छादित वक्तृतायें करने से हमारा भला कदापि नहीं हो सकता। एक क़ानून नहीं, हम सब क़ानून क्यों न तोड़ डालें, परन्तु जब तक हम ग्रामीण जनता के प्रति अपना कर्त्तव्य-पालन अर्थात् उनकी बुराइयों के दूर करने का उपाय नहीं करते तब तक हम कुछ भी सफलता नहीं पा सकते। हमारे सहस्रों और लक्षों भाई आज अज्ञानान्धकार में पड़े हुए हैं। इन्हें अपनेपन तक का ज्ञान नहीं है। ग्रामीणों में न अब कोई सामर्थ्य है न अभिलाषा। ये यहाँ तक गिर गये हैं कि अपने ऊपर होनेवाले अत्याचारों का विरोध तक नहीं करते। साथ-साथ पतितों के जो प्रधान प्रधान लक्षण हैं वे सब इनमें आगये हैं, अर्थात् अपने से दुर्बल को सताना अथवा उनसे अनुचित व्यवहार करना, अन्याय या अपकर्म-द्वारा लाभ उठाना। यहाँ तक कि आपस के भाईचारे में अन्तर पड़ गया है। असह्य दरिद्रता, पारस्परिक वैमनस्य, द्वेष तथा झगड़े के कारण ग्राम्य-जीवन नीरस तथा अंधकारमय हो रहा है। जब ग्रामीणों की ऐसी दशा है तब इन्हें आज़ादी या स्वराज्य क्या वस्तु है, उसमें क्या लाभ है और परतन्त्रता में क्या हानि है आदि विषय कैसे मालूम हो सकते हैं।

हमने एक नहीं, कई एक राजनैतिक संस्थायें खोल रक्खी हैं। प्रतिवर्ष उनके अधिवेशनों में लाखों रुपये व्यय होते हैं। यही क्यों, सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी कमीशन पर कमीशन नियुक्त करती है, कमीशन आते हैं, और अपनी जाँच करके चले जाते हैं, उनके विवरणों पर तर्क-वितर्क होते हैं। परन्तु दरिद्र ग्रामीणों की कोई सुध नहीं लेता। यहाँ यह प्रश्न नहीं है कि ये राजनैतिक संस्थायें अथवा कमीशन भारतवर्ष के लिए लाभ-प्रद हैं अथवा हानिकर। प्रश्न तो यह है कि हमने आज तक इन करोड़ों गूँगों के प्रति क्या कर्त्तव्य-पालन किया है? अस्पताल हमने खोले हैं। परन्तु नगरों में, जहाँ कई एक अस्पताल पहले से हैं, जहाँ धनी मनुष्यों की बस्ती है, जो रुपया देकर डाक्टर भी पा सकते हैं। शिक्षा-संस्थायें हमने खोली हैं। परन्तु वहाँ जहाँ इतनी शिक्षा-संस्थायें हैं कि पढ़नेवाले नहीं मिलते। सब कुछ किया, पर हमने वास्तव में ग्रामीणों के लिए कुछ भी नहीं किया। अब समय आगया है कि हम अपनी दया-दृष्टि इधर फेरें, क्योंकि काम बहुत बिगड़ गया है। जो प्राचीन ग्राम-संगठन की शृंखला थी वह टूट गई है। ग्राम में रहना लोग चाहते नहीं। नगरों की ओर भागे चले जारहे हैं। नगर की ऊँची ऊँची अट्टालिकाओं के सामने उन्हें अपने छोटे छोटे मिट्टी के घर अच्छे नहीं लगते। जो ग्राम में ही पड़े हैं उनकी भी लिप्सा बढ़ रही है। प्राचीन कार्य-क्रम बिगड़ गया है। स्वावलम्बन का सिद्धान्त लोग भूलते जा रहे हैं। ग्राम के रहनेवाले स्वयं अपने हाथ से नाना प्रकार की वस्तुएँ उपार्जित कर अपना काम चलाते थे तथा औरों को भी देते थे, आज उन्हीं वस्तुओं के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं। और स्थानों में तो कम, पर नगर के निकटवर्ती स्थानों में हम इस 'गड़बड़' का पूरा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। ये लोग आटा, दाल, चावल तक के लिए नगरों पर निर्भर रहने लगे हैं। यदि सौभाग्य-वश इनके घर गेहूँ रहा तो स्वयं न पीस कर बैलगाड़ियों पर लाद कर नगरों में आटा पिसाने आते हैं। ग्राम के लुहार-बढ़ई जो आसानी से ग्राम की आवश्यकताओं को पूरा करते थे वे अब कुदाली-फावड़ा तक नहीं बना सकते। देहाती लोग इन छोटी छोटी वस्तुओं को भी शहरों से ले जाते हैं और एक का तीन दाम देते हैं। ये वस्तुएँ देखने में सुन्दर होती हैं, परन्तु बहुत कम दिन चलती हैं और टूटने पर इनकी मरम्मत भी नहीं की जा सकती। ऐसा करके ग्रामवासी अपनी दुहरी हानि करते हैं, एक तो अपना निज का व्यवसाय खोकर विदेशों को रुपया देते हैं और दूसरे इन महँगी वस्तुओं को खरीद कर अपने रोटी के प्रश्न को और भी जटिल बनाते हैं।

इन्हीं सब कारणों से ग्रामीण बड़े आर्थिक संकट में पड़ गये हैं। ग्राम्य जीवन का क्रम भङ्ग हो जाने से समस्या का हल करना बड़ा कठिन हो गया है। अपना अपना कार्य कोई करता नहीं। एक के काम को दूसरा करना चाहता है। सुप्रबन्ध और सुव्यवस्था का नाम-निशान नहीं रह गया है। स्वार्थ, आवश्यकता तथा लोभ के वशीभूत हो काम करनेवाले श्रमजीवी, नाई, धोबी, दर्ज़ी निरख से अधिक पैसा माँगने लगे हैं। समय पर काम न करना तो इनका एक प्रधान गुण हो गया है। इनके लिए एक कहावत बन गई है 'नाई धोबी दर्ज़ी। यह तीन जाति अलगर्ज़ी।' पहले ये लोग 'जवरा' (अन्न) पर काम करते थे, पर अब ये पैसा माँगते हैं। इससे बड़ी हानि होती है। गृहस्थों से मन-माने भाव पर बनिये अन्न लेते हैं और 'डेढ़' का 'एक' दाम देते हैं। इससे यह होता है कि बनियों के खज़ाना होने लगा और देहाती गृहस्थ दरिद्र बनने लगे। धीरे धीरे यही बनिये 'महाजन' और गृहस्थ 'खदुका' (कर्ज़दार) की अवस्था को पहुँच गये। अब ये महाजन लोग उन्हीं को रुपया सूद पर देने लगे। सूद ये लोग दो आना प्रति रुपया, प्रतिमाह की दर से लेते हैं। इस हिसाब से १५०) प्रति शत बेचारों को सूद देना पड़ता है। धीरे धीरे ये बेचारे इनके चंगुल में फँस जाते हैं। इस तरह आज सहस्रों सुव्यवस्थित घर बरबाद हो चुके और होते जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीविका का प्रश्न इस प्रकार कठिन देखकर लोग कलकत्ता, बम्बई, रंगून, फ़ीजी और अफ़्रीका आदि नगरों तथा देशों में जीविका कमाने के लिए जाते हैं। अपने प्यारे सम्बन्धियों को छोड़, अपनी प्यारी मातृभूमि को छोड़, करोड़ों भारतवासी इस समय प्रवास कर रहे हैं? विदेशों में जाकर कठिन यम-यातना भोग करते हैं, पशुवत् व्यवहारों को सहते हैं। दक्षिण अफ़्रीका, फ़ीजी आदि में जो भारतवासी पड़े हुए हैं, आसाम के चाय के बाग़ीचों में जो काम कर रहे हैं वे देहात के दरिद्र ग्रामीण ही हैं। ग्राम के सुख-मय जीवन, स्वास्थ्य-प्रद वायु, सम्बन्धियों के प्रेम को त्यागने के बाद इन्हें नगरों के मैले-कुचैले स्थान, धूम से आच्छादित दूषित वायु, मालिकों की डाँट और सबसे बढ़कर दुःखदाई परतन्त्रता मिलती है। घर छोड़ते समय इन्हें यदि इन दुःखों का ज्ञान हो जाय तो बहुत संभव है कि ये अपनी 'आधी रोटी' को छोड़ कर 'सारी' के लिए दौड़ने का कभी प्रयत्न न करें। बाहर जाकर यदि काम पा भी जाते हैं तो बाह्य प्रलोभनों में इस तरह फँस जाते हैं कि इनका जीवन ही नष्ट हो जाता है।

आर्थिक जीवन में ग्रामवासी इतने पिछड़ गये हैं कि भविष्य में होनेवाली फ़सल पर उधार खाने लगते हैं। इतना होते हुए भी इनमें फ़िज़ूल-ख़र्ची की आदत पड़ गई है। ब्याह, यज्ञ और भोज आदि अवसरों पर ये लोग अधिक क्या अपनी हैसियत से दूना-तिगुना व्यय करते हैं। यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि ब्याह आदि उत्सव आनन्द के लिए मनाये जाते हैं, पर भारतीय घरों में ये अवसर दुःख-प्रद हो रहे हैं, क्योंकि इन अवसरों पर ऋण तो पहले लिया जाता है। देहाती ऐसे अवसरों पर 'नाम' के लिए अपनी जीविका का साधन अपनी भूमि तक बेंच कर रुपया लाते हैं और व्यय करते हैं। कुछ सामाजिक बन्धनों ने भी ऐसा जकड़ लिया है जो इन्हें इन सब बातों के लिए लाचार करते हैं। इन्हें इन सब बातों में उचित सलाह देनेवाला भी कोई नहीं है।

ग्रामीणों की दूसरी फ़िज़ूल-ख़र्ची 'मुक़द्दमेबाज़ी' है। इनकी 'मुक़द्दमेबाज़ी' इन्हें दरिद्र ही बना के छोड़ती है। खाने को नहीं, बच्चे भूख से तड़फ रहे हैं, घर में स्त्रियाँ कपड़े बिना नङ्गी रहती हैं, परन्तु कुछ ऐसे ज़िद्दी हैं कि मुक़द्दमा लड़ेंगे। इन्हें उसका अफ़ीम की तरह चस्का लग जाता है। एक कहावत है कि 'लत' और 'अदालत' नहीं छूटती। रात्रि को उपवास कर पचीसों कोस पैदल चलकर एक एक पैसा इकट्ठा करेंगे और कचहरियों में लेजाकर उन्हें पानी की तरह बहा आयेंगे।

तीसरी भी फ़िज़ूल-ख़र्ची ग्रामीणों में धीरे धीरे घर बना चुकी है। पहले लोग मोटा खाना, मोटा कपड़ा और मोटी चाल पसन्द करते थे और यह अब भी कहा जाता है कि "चाल चलिये मरजादा। जो चल गये बाप और दादा।" परन्तु ये लोग अब उस आदत को छोड़ रहे हैं, खेत में का पैदा हुआ मोटा अन्न बेच कर महीन अन्न खाते हैं। गाँव के मन्नू जुलाहे की बनी हुई धोतियों के जोड़े न ख़रीद कर ये लोग तोप मार्का धोतियाँ, चूड़ीदार किनारे की साड़ियाँ, विलायती मलमल प्रयोग में लाते हैं। कड़ुए तेल के चिराग़ न जलाकर डिट्ज़ मार्का अमेरिकन लेनटेर्नो (लालटेम) में किरासिन तेल जलाकर घर के वायु को दूषित करते हैं।

देहात की चौथी फ़िज़ूलख़र्ची स्त्रियों का शौक है। पुरुष चाहे खद्दर या मोटे कपड़े की धोतियाँ पहन लें, परन्तु स्त्रियाँ कब पहनने की। बहुत से लोग जब बजाज़ों की दूकानों पर कपड़ा ख़रीदने आते हैं तब उन्हें यहाँ तक कहते सुना गया है कि 'साहब क्या करें स्त्रियाँ मानती नहीं'। यहाँ यह कह देना मैं आवश्यक समझता हूँ कि इसमें पचहत्तर प्रतिशत दोष पुरुषों का ही है। यदि स्त्रियों का कुछ दोष है तो वह उनके गहनों के बाबत है। महात्मा गाँधी 'गहने' के प्रश्न पर अपने नवजीवन में लिखते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'गहनों की उत्पत्ति की जो कल्पना मैंने की है अगर वह ठीक हो तो चाहे हल्के और खूबसूरत क्यों न हों, हर हालत में गहने त्याज्य हैं।'

'स्त्रियाँ जो हाथों और पैरों में गहने पहनती हैं वे उनके क़ैदीपने की निशानी है। पैर के गहने तो इतने वज़नदार होते हैं कि वे उन्हें पहन कर दौड़ना तो दूर रहा आसानी से चल-फिर भी नहीं सकतीं। कई स्त्रियाँ हाथ में इतने अधिक गहने पहनती हैं कि वे अपने हाथों से ठीक तरह काम नहीं ले सकतीं। इसलिए ऐसे गहनों को मैं हाथ-पैर की बेड़ी समझता हूँ। नाक-कान बिँधाकर जो गहने पहने जाते हैं, मेरी नज़र में तो उनकी उपयोगिता यही साबित हुई है कि उनके ज़रिये आदमी औरतों को जिस तरह चाहे नचावे। एक छोटा सा बच्चा भी यदि किसी स्त्री की नाक या कान पकड़ ले तो उसे बेबस हो जाना पड़ता है। मेरी राय में गहने तो ग़ुलामी की ही निशानी हैं।'

गहने के विषय में महात्मा गांधी के ये विचार हैं, इससे अधिक गहने की अनुपयोगिता पर क्या लिखा जा सकता है। यहाँ इतना ही कहना है कि यह एक प्रकार की रूढ़ि चली आती है। इससे हानि छोड़ लाभ नहीं होता।

इस तरह की फ़िज़ूल-ख़र्चियों से देहाती दिन पर दिन ग़रीब होते जा रहे हैं। उनकी ग़रीबी में ज़मींदारों का इज़ाफ़ा लगान, वस्तुओं की मँहगी और नये ज़माने की हवा तथा संतानों की पढ़ाई आदि अलग उनके आर्थिक सङ्कट का कारण होते हैं। अर्थात् सब ओर से ये बेचारे आर्थिक संकट की चक्की में पिसते हुए चले जा रहे हैं। इन्हें इस सङ्कट से बाहर निकालना ही हमारा प्रधान काम होना चाहिए।

अब देहातियों की कुछ सामाजिक कठिनाइयों की ओर भी ध्यान देना चाहिए। यद्यपि भारतवर्ष की प्रत्येक सामाजिक बातें धार्मिक समझी जाती हैं, तो भी उनमें हिम्मत करके सुधार करना ही पड़ेगा।

अविद्या के ही कारण ग्रामीणों में अनेक बुराइयाँ आ गई हैं। साफ़-सुथरा न रहने की तो उन लोगों ने मानो क़सम खा ली है। घर में नाबदानों में कीड़े सड़ते हैं और बाहर कूड़े। इधर-उधर पशुओं का गोबर पड़ा ही रहता है। छोटे बच्चे घर के पास ही मल-मूत्र का त्याग करते हैं। घर के पास ही गढ़े खोदते हैं। उनमें पत्ते सड़ कर मलेरिया के मच्छड़ों के घर बनते हैं। बैलों के रहने के स्थान महीनों गन्दे पड़े रहते हैं, जिससे पशुओं का स्वास्थ्य प्रायः ख़राब रहता है। पशुओं को अलग न बाँध कर मनुष्यों के रहने के पास ही बाँधते हैं, जिससे मनुष्यों के स्वास्थ्य पर काफ़ी धक्का पड़ता है। गोपालन के सिद्धान्त को बिलकुल भूल गये हैं। गऊओं को भोजन दिन में एक बार भी न देंगे, पर दूध दो बार दुहेंगे। भोजन के स्थान को भी ठीक साफ़ नहीं रखते। जिस बर्तन में भोजन पकायेंगे उसको ढँकना नहीं जानेंगे। यद्यपि ये बातें बहुत मामूली हैं, तो भी ये इतनी आवश्यक हैं कि इनके न जानने से हम अधिक हानि उठाते हैं। इन सब गन्दगियों के कारण ये बेचारे भयङ्कर बीमारियों के शिकार बनते हैं। पहले वैद्य आदि इन्हें मिलते नहीं और यदि कहीं मिल भी गये तो ये देहाती लोग दवा कराने में आनाकानी करते हैं। बीमारियों को ये लोग भूत का प्रकोप समझते हैं। उनके अच्छा होने के लिए भूतों की पूजा करने में दस पाँच रुपया व्यय कर डालेंगे, परन्तु दवा करने में दो पैसे 'काढ़ा' के लिए ख़र्च करने में संकोच और आगा-पीछा करेंगे। बीमारी की दशा में रोगी पड़ा पड़ा खाट पर कराहता रहेगा। उसकी दवा न होगी। उसके बिस्तरे महीनों गंदे पड़े रहेंगे। चारों ओर उसका थूक सड़ता रहेगा। उस दशा में यदि रोगी के मस्तिष्क पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा और वह कुछ बक-झक करने लगा तो लोग कहने लगते हैं कि भूत आ गया। उस हालत में उस रोगी को लोग पकड़ कर दबाते हैं, मारते हैं और नाना प्रकार से दुःख देते हैं, मिरचे की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूनी, थूक कर चटाना, थप्पड़ मारना आदि का प्रयोग करते हैं तब रोगी शान्त हो जाता है, इसे वे अपनी सफलता का द्योतक समझते हैं। सोखा (ओझा) बुलाया जाता है वह आकर देखता है और भूत का प्रकार-उपचार बताता है। देवी का प्रकोप, चुड़ैल का आक्रमण बतला कर उनको शान्त करने के लिए सूअरों और बकरियों के बच्चों की मनौती मानी जाती हैं। विन्ध्याचल आदि स्थानों पर चैत्र के महीने में हज़ारों बकरों का बलिदान होता है। इस तरह अंध-विश्वास ने वहाँ घर बना रक्खा है। शहरों में शिक्षा-प्रचार के कारण ऐसी रूढ़ियाँ मिटती जा रही हैं, परन्तु देहातों में इनका काफ़ी बोल-बाला है। इनके अतिरिक्त अन्य रूढ़ियों ने देहातों को अपना घर बना लिया है। सच पूछिए तो देहात सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक बुराइयों के गढ़ बन गये हैं। 'ग्रामों में भी पहले कोई राजनैतिक समस्या थी' इस बात को हम अभी समझ नहीं पाये हैं। परन्तु इतना अवश्य समझ रखिए कि हमारी ग्राम-प्रणाली बड़ी ही सुव्यवस्थित थी। उस व्यवस्था को यदि हम राजनैतिक दृष्टि से विचार करें तो हमें अपनी उस प्रणाली पर आश्चर्य होगा।

जिस तरह ग्रीस-देश की स्वतंत्रता के उत्पादक, पोषक, रक्षक वहाँ के नगर-राज्य (सिटी-स्टेट्स) थे, उसी तरह भारतवर्ष की सभ्यता के उत्पादक, पोषक, रक्षक हमारे ग्राम थे। ग्राम-व्यवस्था के लिए पहले निम्न-लिखित व्यवस्था थी*—

मुखिया—गाँव का प्रधान प्रत्येक काम में (ग्रामिक)

पण्डित—ज्योतिषी और हर एक नवीन काम में उचित सम्मति देनेवाला।

पटवारी—गाँव का हिसाब-किताब, खेत आदि का ब्योरा जाननेवाला।

पवनी—नाई, धोबी, दर्ज़ी, लुहार, बढ़ई आदि।

* मनुस्मृति।

आज जिसे हम (कोपरिटिव-लाइफ़) संगठन-सहयोगमय जीवन कहते हैं वह हमारे गाँवों में बहुत पहले से था। अब हमें इन्हीं सब बातों का पुनरुत्थान करना होगा। इन सबका पुनरुत्थान हम 'शिक्षा' के द्वारा ही कर सकते हैं। इस शिक्षा में सरकार हमारा साथ नहीं दे सकती है। शहरों में चाहे सरकारी सहायता से हाईस्कूल बढ़ रहे हों, परन्तु देहातों में उनके नियम उस तरह लागू नहीं हो रहे हैं।

देहातों में जाकर यदि इस बात की खोज की जाय तो आठ मील के इर्द-गिर्द में एक अपर प्रायमरी स्कूल कदाचित् मिल जाय। पाठशालायें इतनी दूर होती हैं कि छोटे छोटे बच्चे वहाँ जा नहीं सकते। यह तो पाठशालाओं के न अधिक होने का कारण है। इधर गाँव के लोग अपने बालकों को पढ़ाना भी नहीं चाहते। इन दो कारणों से आज भारतवर्ष का सारा ग्रामीण-समाज अशिक्षित हो गया है। यों तो साधारणतया भारतवर्ष भर में शिक्षा का कम प्रचार है। प्रतिशत नौ मनुष्य ऐसे हैं जो पढ़ना-लिखना जानते हैं। प्रांत के विचार से नीचे लिखे मुताबिक़ लोग पढ़े हैं—

मदरास	प्रतिशत	५·५०
बम्बई	,,	५·२८
पंजाब	,,	५·१३
बंगाल	,,	५·७५
आसाम	,,	३·६०
बिहार उड़ीसा	,,	३·१८
मध्य-प्रदेश	,,	२·८२
संयुक्त प्रान्त	,,	२·६२

इन अंकों के देखने से यह पता चल जायगा कि भारतवर्ष की अधिकांश जनता निरक्षर भट्टाचार्य है। यह पहले ही कहा जा चुका है कि भारतवर्ष की ९०·० प्रतिशत जनता गाँवों में बसती है। शहरों में बसनेवाली जनता केवल १० प्रतिशत ही है। उनमें शिक्षा का काफ़ी प्रचार है। शिक्षित समुदाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में शहरवालों की संख्या अधिक है। यही अशिक्षा ग्रामीणों के विनाश का कारण है। यदि हम भारतवर्ष की इतनी जनता का उद्धार करना चाहते हैं तो हमारा प्रथम कर्त्तव्य उन्हें शिक्षित करना होगा।

जीवन के किसी भी अंग में यदि हम विकास करना चाहते हैं तो हमें शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है, फिर वह शिक्षा किसी भी प्रकार की क्यों न हो। वर्तमान समय की शिक्षा-प्रणाली को प्रायः सभी अपूर्ण बतलाते हैं। तो भी आरंभिक शिक्षा आवश्यक ही है। इस आरंभिक शिक्षा के लिए नगरों में तो पर्याप्त साधन हैं, परन्तु ग्रामों में उसके लिए वैसा प्रबन्ध नहीं है और जो है उससे ग्रामवासियों का वैसा लाभ नहीं है। नगरों में तो लड़कों को केवल पढ़ना-लिखना ही रहता है, परन्तु देहात में किसानों को अपनी खेती में अपने लड़कों की सहायता की आवश्यकता रहती है। ऐसी दशा में देहात के लड़कों के लिए शिक्षा की दूसरे ढङ्ग की व्यवस्था होनी चाहिए। ग्रामीण पाठशालाओं की पढ़ाई का समय ऐसा होना चाहिए कि पढ़ भी लें, साथ ही अपने घर के काम में अपने पिता की सहायता भी करें। नगरों की तरह दस बजे से चार बजे सायंकाल तक पाठशालायें खोलने का ढङ्ग देहात के लिए उपयोगी नहीं है। आरंभिक शिक्षा के बाद देहात के विद्यार्थियों के योग्यतानुसार उनको और विषय पढ़ाये जायँ। उनको इतिहास, भूगोल, गणित आदि सभी विषय पढ़ाकर किसी डिगरी वा डिप्लोमा के लिए तैयार न किया जाय। डिगरी या डिप्लोमा उन्हें उनके जीवन में सहायक नहीं हो सकता। उन्हें वही शिक्षा दी जाय जो उन्हें सच्चा खेतिहर बना सके। सच्चे खेतिहर बनने के लिए निम्नलिखित बातें जानने की आवश्यकता है—

(१) खेती के नवीन और प्राचीन ढंग का जानना—खेती करने के प्राचीन ढंग में से अधिकांश ग्रामीणों के लिए उपयुक्त हैं, तो भी उनमें कुछ दोष आ गये हैं। वैज्ञानिक रीति से खेती करने के नवीन आविष्कार यद्यपि पूरी तौर से भारतीयों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते, तथापि उनमें से कुछ यदि वे जान पावें तो उनकी उपज बढ़ सकती है। एक हल की ही बात लीजिए। भारतीय हलों से मिट्टी अधिक नहीं ऊपर होती है जितनी कि नये प्रकार के हलों से। इस बात का ध्यान रहे कि हम जब नये हल का प्रचार करें तब ग्रामीणों को उन हलों को क्रय करने के लिए न उत्साहित करें, बरन हम उन्हें वैसे हल बनाना सिखावें। ऐसा करने से आविष्कार करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी, देश में एक नई शिल्पकला बढ़ेगी। दूसरी बात खेती के सम्बन्ध में उपयुक्त खाद का प्रयोग है। ग्रामीण लोग जिस प्रकार की खाद का प्रयोग करते हैं उसमें विज्ञान ने विशेष उन्नति की है। कुछ ऐसे मसाले निकाले गये हैं जिनका प्रयोग करने से खाद अच्छी बन सकती है। उन वस्तुओं का किसानों को ज्ञान करा देना नितान्त आवश्यक है।

(२) व्यावहारिक ज्ञान—साधारण नागरिक के क्या अधिकार हैं, उन्हें अपने अधिकारों के बर्तने के लिए कितने साहस की आवश्यकता है, आदि बातें बताना भी आवश्यक है। ग्रामीण लोग इस विषय में अधिक ज्ञान-शून्य हैं। उन्हें अपने अधिकारों का ज्ञान ही नहीं है। जबर्दस्त लोग जो कह देते हैं वही उनके लिए क़ानून हो जाता है। उनके इस अज्ञान के कारण मालगुज़ारी वसूल करनेवाले, पुलिस, ज़मींदार, उनके कारिंदे आदि अनेक प्रकार से उन्हें तंग करते हैं। इन सब छोटी छोटी बातों का ग्रामीणों को ज्ञान कराना उनकी शिक्षा का मुख्य उद्देश होना चाहिए। चुनाव आदि को देहाती एक प्रकार का पर्व समझते हैं। जैसे पर्वों पर भेड़ियाधसान की तरह सभी कोई किसी एक कार्य के लिए एक साथ टूट पड़ते हैं, उसी तरह वे लोग चुनावों पर भी करते हैं। चुनाव क्यों होता है, इसका अर्थ क्या है, इसका परिणाम क्या होता है, अमुक मनुष्य के चुनाव से हमारा क्या भला है, आदि विषयों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान से वे शून्य रहते हैं। इस तथा ऐसी बातों के ज्ञान का प्रचार देहातों में वाञ्छनीय है।

सफ़ाई, स्वास्थ्य-रक्षा, गृह-धंधों आदि के सम्बन्ध में चलित चित्रों की सहायता से भाषणों-द्वारा शिक्षा देने की व्यवस्था होनी चाहिए।

किसानों को आर्थिक संकट से बचाना ग्राम-सङ्गठन का मुख्य हेतु होगा। ब्याह-शादी, मृतक-कर्म आदि के अवसरों पर ग्रामीणों को अधिक कठिनाइयों का सामना करना तो पड़ता ही है। साथ ही खेतीबारी के लिए बैल ख़रीदना या अन्य प्रकार के कार्य जैसे कुआँ बनवाना, बैलगाड़ी बनवाना आदि कार्यों के लिए भी ग्रामीण लोग एक साथ रुपया नहीं इकट्ठा कर सकते हैं। ऐसे समयों में वे ऋण लेते हैं। और ऋण देनेवाले एक के दो लेते हैं। इस ऋण से उनकी रक्षा दो प्रकार से हो सकती है—एक तो उनमें सहयोग-समितियाँ स्थापित की जायँ या इस प्रकार का कोई विधान बने जो ऐसे अवसरों पर अधिक सूद लेनेवाले से उनकी रक्षा कर सके। सहयोग-समितियाँ सुविधा के साथ स्थापित की जा सकती हैं। परन्तु पहले ग्रामीणों को उनका महत्त्व समझाना होगा। बिना महत्त्व समझे ग्रामवासी जनता उनसे लाभ उठा नहीं सकती है। जब ग्रामीण उनका महत्त्व भली भाँति समझ जायँ तब कार्य आरंभ किया जाय। गाँव के ईमानदार व्यक्तियों की एक समिति बने। परन्तु उनका चुनाव ग्राम की जनता ही करे। समिति बन जाने पर समिति के सदस्य अपने ग्रामवासियों की आर्थिक दशा का ज्ञान प्राप्त करें। उसके उपरान्त प्रत्येक गृहस्थ की हैसियत के अनुसार उनसे समिति के लिए चन्दा लिया जाय। आरम्भ के वर्ष में उसमें से कुछ भी व्यय न हो। द्वितीय वर्ष कम सूद पर वही रुपया ग्रामीणों को जब आवश्यकता पड़े तब दिया जाय। इस तरह जब वे समिति की उपयोगिता समझ जायँगे तब समिति का कार्य चल निकलेगा।

ग्राम की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए प्रत्येक ग्राम में एक ग्राम-सभा होनी चाहिए। सभा की सदस्यता का अधिकार सभी ग्रामवासियों को हो। सभा की एक कार्य-कारिणी समिति हो, जिसका चुनाव सभा स्वयं करे। इस समिति में ही ग्राम के छोटे-मोटे अभियोग, झगड़े आदि निपटाये जायँ। परन्तु पंच आदि बनाने का नियम चुनाव पर रहे। तभी ठीक तरह से काम चल सकता है। अन्याय और अपमान पकड़नेवाले पञ्च की सज़ा एक-मात्र सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए। ग्रामसभा-द्वारा बनाये गये नियमों का जो पालन न करे उसका सामाजिक बहिष्कार हो। इससे ग्राम-व्यवस्था सुधर सकती है।

—नरसिंहराम शुक्ल

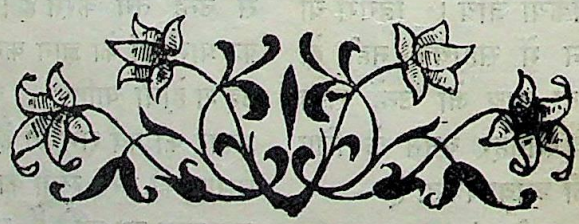

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्त्तव्य-भ्रष्ट

दुर्गा भी एक विचित्र आदमी था। पूरा लड़ाका और मनचला तो था ही, परन्तु दयालु भी कम न था। धनिकों को लूटता और दरिद्र असहाय मनुष्यों की सहायता करता। उनकी कन्याओं के विवाह कराता, उनके दुख-सुख में काम आता। वह कभी भूल कर भी लूट के माल की एक कौड़ी अपने ऊपर न ख़र्च करता। यही कारण था कि सारी तराई के दरिद्र उसे अपना प्रतिपालक समझते और इसी कारण लाख प्रयत्न करने पर भी सरकार उसे अभी तक पकड़ न सकी थी।

अन्त में सरकार ने सरदार यूसुफ़ख़ाँ को उसके पकड़ने के लिए भेजा। वे पहले बुन्देलखण्ड में जासूस-विभाग के इन्सपेक्टर थे। वहाँ अपनी निपुणता का ऐसा परिचय दिया कि थोड़े ही दिनों में बड़े बड़े राजकर्मचारी उनका आदर करने लगे। कोई भी काम न था जो सरदार साहब के हाथ में आकर अधूरा रहा हो। इसी कारण अब वे जासूस-विभाग के डिप्टी सुपरेन्टेन्डेन्ट बना कर तराई में भेजे गये थे। चार्ज लेने के दूसरे ही दिन उनको पता लगा कि सेठ राधाकृष्ण के यहाँ दुर्गा ने डाका डाला है। यूसुफ़ख़ाँ भी सादे कपड़े पहने घटना-स्थल पर जा पहुँचे! उन्होंने वहाँ बहुत जाँच की, परन्तु कुछ भी पता न लगा। दुर्गा ने कोई भी ऐसा चिह्न न छोड़ा था जिससे उसके विषय में किञ्चित्-मात्र भी पता लगता।

परन्तु यूसुफ़ख़ाँ हताश होनेवाले जीव न थे। वे प्रतिदिन भेष बदल बदल कर चारों ओर घूमने लगे। वे गाँव-गाँव घूमते-फिरते थे। कभी कभी तो अकेले ही कोसों चले जाते और कभी कभी दो-एक गुप्तचर भी साथ रखते। मार्ग में जो कोई भी मिल जाता उसी से न जाने क्या क्या बातें करने लगते और बहुधा तो घंटों उनकी बातों का अन्त ही न होता।

दो-तीन सप्ताह पश्चात् वे कुछ भेष बदले हुए सिपाहियों को साथ लेकर सीसपुर के थाने में जाकर जम गये। यद्यपि इसके छिपाने का बड़ा प्रबन्ध किया गया, तो भी धीरे धीरे यह बात चारों ओर फैल गई कि कोई बड़ा अफ़सर दुर्गा की खोज में आया है। बहुतों को तो उसका आना दुखदायी प्रतीत हुआ। वे दुर्गा को हृदय से चाहते थे, वे उसको देवता समझते थे।

दो दिन पश्चात् सरदार साहब घूमते हुए सीसपुर से चार-पाँच मील आगे चले गये। तराई का विकट जङ्गल अब पास ही था। जङ्गल से थोड़ी ही दूर पर एक छोटे से गाँव में पहुँच कर सरदार साहब ने देखा कि ग्रामवासी किसी आनन्दोत्सव में मग्न हो रहे हैं। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि जेठ में कौन सा ऐसा त्योहार होता है जिससे सारे मनुष्य ऐसे बेसुध हो रहे हैं। वे देहाती भेष में तो थे ही, इसलिए निःसङ्कोच गाँव में घूमने लगे। परन्तु किसी से कुछ पूछने का साहस न पड़ता था। उनको यह भय लगा था कि कहीं कोई उन पर सन्देह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कर बैठे। परन्तु एक छोटे-से गाँव में कोई बाहरी मनुष्य अधिक समय तक अपने को छिपा नहीं सकता। लोगों की सन्देह-पूर्ण दृष्टि उन पर पड़ने लगी। दो-एक टोंक भी बैठे।

एक ने पूछा—कौन हो भाई ?

सरदार साहब—मैं हूँ माधवपुर का रहनेवाला। सरजू पासी की खोज में आया हूँ।

सरदार साहब कहने को तो यह कह गये, परन्तु इससे किसी का सन्देह दूर न हुआ। एक ने कहा—अरे यह कहीं भेदिया न हो।

दूसरा—पकड़ न लो साले को।

तीसरा—अभी गाँव की मेड़ ही पर होगा।

इतने में एक स्त्री ने आकर कहा—चौधरी बाबा, आज गाँव में कौन आया है ?

चौधरी—क्यों री मखनिया, क्या बात है ?

स्त्री—एक बाहरी आदमी पूछता था कि गाँव में किस बात को ख़ुशी मना रहो हो ?

चौधरी—तूने क्या कहा ?

स्त्री—मैंने बताया कि आज दुर्गा भैया आ रहे हैं।

एक आदमी—फिर ?

स्त्री—फिर क्या, बग़िया की ओर चला गया।

एक आदमी—वही है।

चौधरी—कोई भेदिया है।

दूसरा—चलो पकड़ें, नहीं तो गड़बड़ मचायेगा।

चौधरी बहुत से आदमियों को साथ लेकर उस बाग़ की ओर चल दिया जिधर सरदार यूसुफ़ख़ाँ गये थे। एक घने आम के बाग़ में बैठे हुए वे कुछ सोच ही रहे थे कि इन देहातियों ने जाकर उन्हें घेर लिया। उन्होंने झट अपना पिस्तौल निकाल लिया, परन्तु किसी बलिष्ठ हाथ ने पीछे से उनकी क़लाई पकड़ ली और पिस्तौल छीन कर अपनी कमर में लगा लिया। लोगों ने उसे देखते ही कहा, मोहन भैया, बड़े मौक़े पर आये।

मोहन—इस साले को बाँध कर ले चलो।

बात की बात में सरदार साहब रस्सियों से जकड़ दिये गये और लाकर गाँव के बाहर एक बड़े बरगद के वृक्ष से बाँधे गये।

मोहन ने चलते समय कहा—बच्चा ठहरो। दुर्गा भैया बिटिया के पैर पूज लें तो फिर तुझे आकर ठिकाने लगाऊँ। साले इतनी हिम्मत हो गई कि दुर्गा भैया की खोज में लगा है। इतना कह कर वह चला गया।

सरदार साहब समझ गये कि अब निस्तार कठिन है, जान से हाथ धो बैठे। रह रह कर उनके हृदय में उठता कि किस घड़ी इस दुर्गा के पीछे चला था। परन्तु फिर सोचते कि क्या हुआ, जान जायगी तो क्या परवा ! मैंने अपना फ़र्ज़ तो अदा किया।

कुछ समय पश्चात् बाजे बजने लगे और जङ्गल से बहुत से मनुष्य आते दिखलाई पड़े। धीरे धीरे लोगों का दल उनकी ओर बढ़ने लगा और अन्त में उन्होंने देखा कि बहुत से मनुष्यों ने आकर उन्हें घेर लिया। सभी कहते, यही है, हाँ, यही तो है। इसके साथ ही साथ उन पर दो-चार हाथ भी पड़ जाते।

रात के ग्यारह बजे जब सरदार साहब मृत्यु के भीषण दृश्य देख रहे थे, जब वे कल्पना के सागर में पड़ कर भाँति भाँति के कुविचारों से पीड़ित हो रहे थे, उन्होंने अपने सामने एक भीमकाय मनुष्य को खड़ा पाया। उसकी सौम्य भयरहित मूर्ति, उसकी बड़ी बड़ी दयालु आँखें, उसकी चढ़ी हुई मूँछें और उसका विशाल माथा, सभी उसकी वीरता का परिचय देते थे। वह एक क्षण उनकी ओर देखता रहा और फिर बोला—सरदार साहब !

सरदार साहब चौंक पड़े। उन्हें आश्चर्य हुआ कि यह मनुष्य उनके छद्म भेष को किस प्रकार पहचान गया। उन्हें गर्व था कि भेष बदल डालने के पश्चात् उनकी माता भी उन्हें नहीं पहचान सकती। फिर यह विचित्र मनुष्य कौन है ? वह मनुष्य उनके हृदय के भावों को समझ गया। उसने कहा—सरदार साहब, दुर्गा की आँखों से कोई अपने को छिपा नहीं सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बचाना चाहता है। परन्तु नदी की ओर देखते ही उनकी शङ्का जाती रही। उन्होंने देखा कि वह गुजराती बड़ी तेज़ी के साथ तैरता हुआ एक डूबते और उतराते हुए मनुष्य की ओर जा रहा है, जो धारा के प्रवाह में पड़कर बड़े वेग से बहा चला जा रहा था।

सरदार यूसुफ़ख़ाँ सरयू के किनारे-किनारे उसी ओर बढ़ने लगे जिधर वह अजनबी जा रहा था। वे अब भी अपने को उसकी दृष्टि से छिपाये हुए थे। उधर वह मनुष्य शीघ्र ही उस बहते हुए आदमी के पास जा पहुँचा। एक हाथ से उसे पकड़ कर वह दूसरे हाथ से तैरता हुआ किनारे की ओर चला। सरदार यूसुफ़ख़ाँ एक वृक्ष की ओट में खड़े हो गये।

दस ही पाँच मिनट में वह गुजराती उस मनुष्य को लिये हुए किनारे पहुँच गया। उसने उसे खींच कर किनारे पर लिटाया ही था कि पीछे से उसे पद-ध्वनि सुनाई दी। उसने घूमकर देखा तो अपने सिर पर सरदार यूसुफ़ख़ाँ को पिस्तौल ताने खड़ा पाया। उसने आश्चर्यपूर्वक कहा—कौन सरदार साहब ?

सरदार साहब—हाँ दुर्गा, मैं ही हूँ। चलो अब तुम मेरे क़ैदी हो। इतना कहकर उन्होंने अपनी जेब से हथकड़ी निकाल ली।

दुर्गा—चलता हूँ। ज़रा इस युवक को होश में आ जाने दीजिए।

दुर्गा के कहने पर सरदार यूसुफ़ख़ाँ ने उस युवक की ओर देखा। देखते ही चौंक पड़े। उनके मुख से निकला—कौन ? नसरत, नसरत ? दुर्गा, देखो देखो यह ज़िन्दा है या मर गया।

दुर्गा (आश्चर्यपूर्वक)—ज़िन्दा है। क्या आप इसे जानते हैं ?

सरदार साहब—हाँ, यह मेरा ही लड़का है। दुर्गा तुमने इसकी जान बचाकर मुझ पर तीसरी बार एहसान किया।

दुर्गा—नहीं सरदार साहब, एहसान कैसा ? यह तो मेरा कर्तव्य था जो मैंने पूरा किया। अब आप अपना कर्तव्य पूरा कीजिए। मैं तैयार हूँ। यह कहकर दुर्गा ने अपने हाथ आगे बढ़ा दिये।

सरदार साहब उसके मुख की ओर एक क्षण तक देखते रहे और फिर हथकड़ी सरयू में फेंक कर कहने लगे—जाओ दुर्गा। मैं तुम्हें क़ैद नहीं करूँगा।

दुर्गा—यह क्या ? क्या आप अपने कर्तव्य-पथ से विचलित होना चाहते हैं ?

सरदार साहब—जो भी हो। जाओ जाओ। बहादुर सरदार जाओ। यही आख़िरी मुलाक़ात है। सलाम।

दुर्गा चला गया। सरदार यूसुफ़ख़ाँ जब तक दुर्गा उनकी दृष्टि से ओझल नहीं हो गया, उसी की ओर देखते रहे। इसके बाद पास से जाते हुए गाड़ीवाले को बुलाया। उस पर नसरत को लिटा कर उससे कहा—जाओ इसे अस्पताल पहुँचा दो। इतना कहकर गाड़ीवाले के हाथ में दो रुपये रख दिये और स्वयम् आगे चल दिये।

थोड़ी दूर जाने के पश्चात् सरदार साहब सरयू के किनारे एक सुनसान जगह में बैठ गये और कहने लगे। मैं अपने फ़र्ज़ को पूरा न कर सका। मुजरिम को क़ाबू में लाकर छोड़ दिया। मैं नमकहराम हूँ। नमकहरामी की ज़िन्दगी पर लानत है। इसके बाद उन्होंने अपने आदमी को एक काग़ज़ लिखकर दिया और फिर उससे बिना कुछ कहे-सुने एक ओर को चले गये।

दूसरे सप्ताह समाचार-पत्रों में निकला कि सरदार यूसुफ़ख़ाँ ने दिमाग़ ख़राब हो जाने से अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया। सभों ने विश्वास कर लिया। परन्तु दुर्गा ने यह समाचार पाकर एक गहरी साँस ली और कहा—सरदार साहब, तुम सच्चे बहादुर हो। इसके साथ ही साथ आँसू के दो बूँद ढुलक कर उसके कपोलों पर आ गिरे। एक वीर की स्मृति में दूसरे वीर के ये ही अमूल्य रत्नकण थे।

—रामेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान की नाक दिल्ली

संस्कृत की कहावत है कि 'दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा' और सचमुच यदि भारतवर्ष का इतिहास देखा जाय तो दिल्ली का वह महत्त्व स्पष्ट हो जाता है। यदि कहें कि दिल्ली का इतिहास भारतवर्ष का इतिहास है तो अत्युक्ति न होगी। इसमें सन्देह नहीं कि दिल्ली का केन्द्रीय और राजनैतिक दृष्टि से सर्वाङ्गपूर्ण स्थान सर्वथा इसे राजधानी के उपयुक्त बना देता है। और अँग-रेज़-सरकार ने भी अन्त में इसे अपनी राजधानी बना कर इस बात की सत्यता स्वीकार कर ली है।

दिल्ली नाम कितना पुराना है और पहले-पहल इसकी स्थापना किसने की थी, यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। दिल्ली के संस्थापक तोमर-वंशी राजा अनंगपाल द्वितीय (१०५२ ईसवी) कहे जाते हैं। इसके प्रतिकूल यहाँ का लौहस्तम्भ राजा चंद्र का बनवाया कहा जाता है, जो चौथी शताब्दी में हुए थे। किसी किसी का कहना है कि यह स्तम्भ राजा धव ने सन् ३१९ ईसवी में गड़वाया था। कहते हैं कि पहले इसके ऊपर गरुड़ की एक मूर्ति बनी हुई थी, क्योंकि यह स्तम्भ भगवान् विष्णु की पूजा में गाड़ा गया था और बह्लिक नामक किसी जाति के पराभव

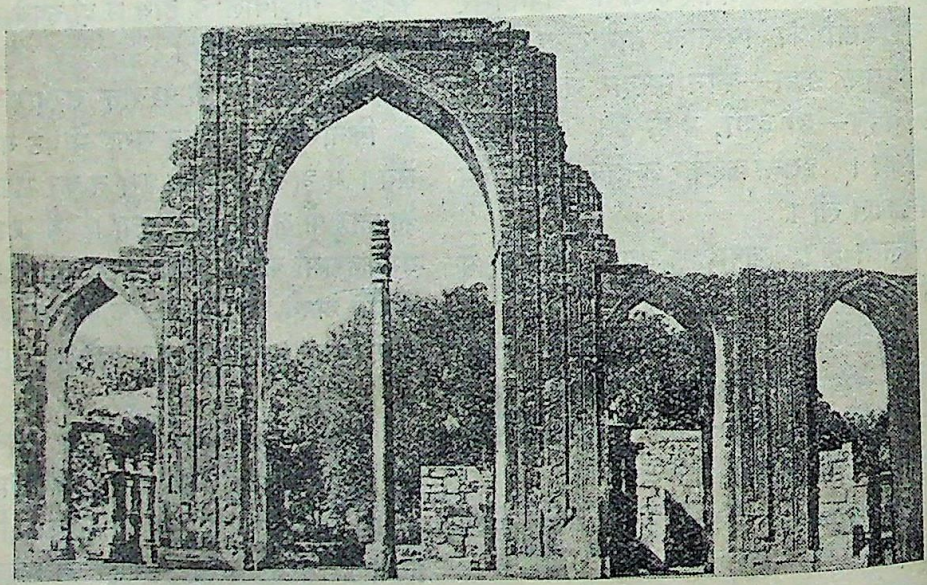

[कूवतुल इस्लाम मस्जिद और लौहस्तम्भ]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की स्मृति-रक्षा के लिए था। यह वह्लिक जाति शायद सिंधु-नदी के किनारे रहती थी। दूसरों का कहना है कि चौहान-वंश के राजा विग्रहराज ने मुसलमान आक्रमणकारियों को जीत कर अपनी कीर्ति सुरक्षित रखने के लिए यह स्तम्भ बनवाया था। जो कुछ हो, पर सैकड़ों वर्ष से यह स्तम्भ इसी प्रकार आँधी-पानी तथा धूप-छाँह में बराबर खड़ा है और इसमें नाम-मात्र के लिए भी मुर्चा नहीं लगा। इसी बात से प्राचीन हिन्दुओं की रासायनिक क्रिया के ज्ञान का एक प्रमाण मिलता है, क्योंकि ८ गज़ लम्बे और सैकड़ों मन भारी खम्भे का ढालना कुछ खिलवाड़ नहीं। कहा जाता है कि ग़ुलाम क़ादिर नामक एक मुसलमान आक्रमण करनेवाले ने इस पर एक बार तोप का गोला भी मारा था, पर उसका कुछ भी प्रभाव इस स्तम्भ पर न पड़ा।

इस स्तम्भ के पास ही क़ुव्वत-उल्-इस्लाम नाम की एक मस्जिद है, जिसे क़ुतुब-मीनार के निर्माता क़ुतुबुद्दीन ऐबक ने लगभग १२०० ईसवी में बनवाया था। ख़िलजी तथा ग़ुलामवंश के स्मारकों में से यही मस्जिद पुरानी दिल्ली में रह गई है। पुरानी दिल्ली में ही लालकोट है, जो चौहानों तथा तोमरों का बनवाया बतलाया जाता है। लौहस्तम्भ के बाद प्राचीनता में दूसरा नम्बर यहाँ के जैन-मन्दिर का है। यह मन्दिर आठवीं शताब्दी के अन्त में बना था और इसका निर्माण-कौशल प्रशंसनीय है। भीतरी छत सुनहरी है और खम्भे सभी संगमरमर के हैं। महाराज पृथ्वीराज का बनवाया एक और मन्दिर है, जिसे पृथ्वीराज अथवा राय पिथौरा का मन्दिर कहते हैं। इस मन्दिर की भी पच्चीकारी तथा अन्य कारीगरी देखने ही योग्य है, यद्यपि अब यह कुछ टूट-फूट गया है। हिन्दू-स्थानों में से सबसे प्रसिद्ध वह है जिसे आज-कल 'जंतर-मंतर' कहते हैं। इस समय तो यह खण्डहर ही रह गया है, पर किसी समय यह भी भारतवर्ष की प्रख्यात वेधशालाओं में था, जिनमें एक तो उज्जैन और दूसरी काशी में है। दिल्ली की यह वेधशाला जयपुर के महाराज जयसिंह की बनवाई हुई है और इतनी नष्ट-भ्रष्ट हो जाने पर भी इसके अनेक स्थल अभी तक ज्यों के त्यों बने हुए हैं। अलबत्ता यत्र-तत्र मुसलमानों के आक्रमण के

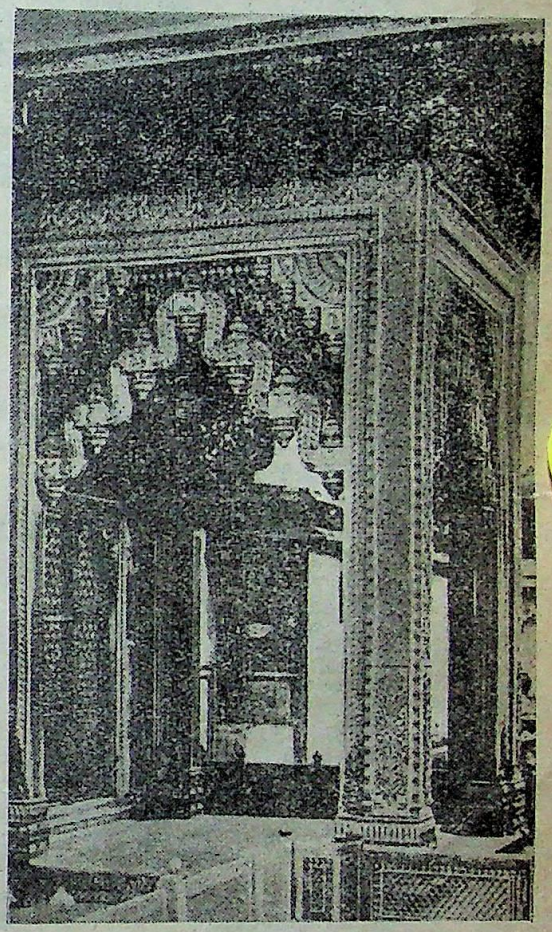

[जैन-मन्दिर]

चिह्न अब तक दिखाई देते हैं और जान पड़ता है कि हिन्दूविज्ञान की इस स्मृति की रक्षा करना भी उनकी तितिक्षा-शक्ति से बाहर था।

यों तो पुरानी दिल्ली जिसमें 'लालकोट' है, सबको सब 'क़िला राय पिथौरा' के नाम से अब तक प्रसिद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, पर हिन्दू-काल की औ· इमारतें अब वहाँ नहीं रह गई हैं। मुसलमान-समय के ही निर्माण-वैभव का दृश्य देखने को मिलता है, सो भी पृथक् पृथक् और दूर दूर स्थानों में। कारण यह है कि इस समय की

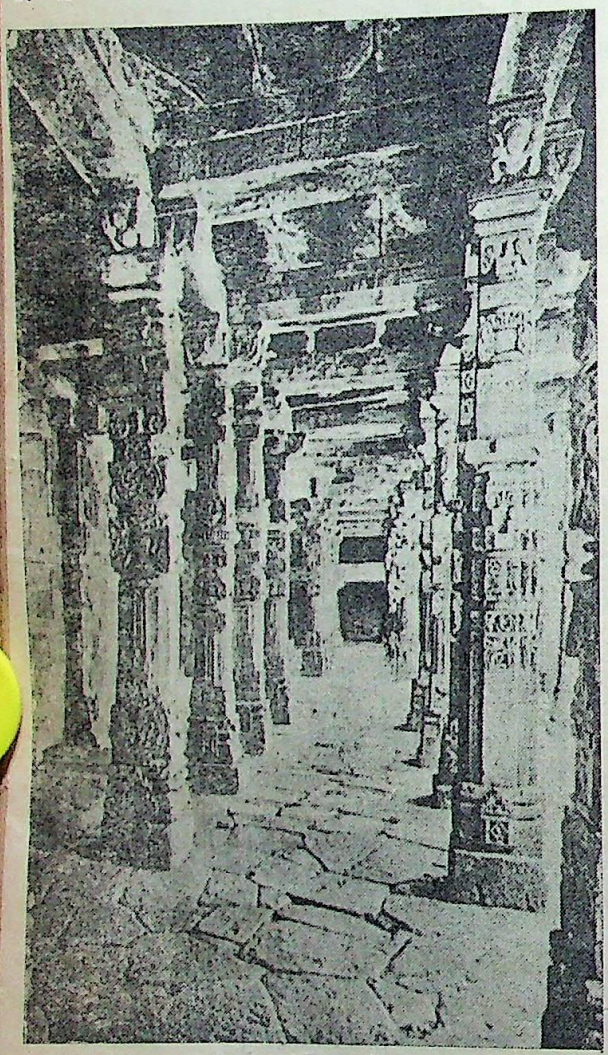

[महाराज पृथ्वीराज का मन्दिर]

जो दिल्ली है उसका यह रूप कई शताब्दियों में जाकर विकास-द्वारा हुआ है। कहा जाता है कि क्रमशः सात शहर बसे थे जो इस समय सभी दिल्ली की परिधि में आ जाते हैं। इनमें से 'पुरानी दिल्ली' जहाँ लौह-स्तम्भ है, प्राचीन हिन्दू राजधानी की स्थली कही जाती है, जिसे १२ वीं शताब्दी में गुलामवंशी राजाओं ने फिर से बसाया था। यहाँ से उत्तर-पूर्व की ओर लगभग तीन मील पर अलाउद्दीन ख़िलजी ने दूसरा नगर बसाया, जिसका नाम 'सीरी' था और जिसमें एक लम्बी-चौड़ी दीवार मंगोलों के आक्रमण से रक्षा करने के लिए बनाई गई थी। तीसरा नगर तुग़लक़ाबाद है जिसे तुग़लक़-वंश के प्रथम राजा ने १३२१ ईसवी में बसाया था और जो पुरानी दिल्ली से चार मील पूर्व की ओर है। अब तो यहाँ खण्डहर ही खण्डहर रह गये हैं और इसके संस्थापक ग़यासुद्दीन की क़ब्र को छोड़ कर और कुछ नहीं है।

चौथा शहर 'जहाँपनाह' के नाम से मशहूर हुआ और इसे मुहम्मदशाह तुग़लक़ ने १३२७ ईसवी में बसाया। मुहम्मद 'सीरी' तथा 'पुरानी दिल्ली' को मिला कर दोनों को सुरक्षित रखना चाहता था और इसी से इसका नाम भी ऐसा रक्खा था। इसके भीतर कई पुरानी इमारतें हैं, जैसे विजय-मण्डल तथा बेगमपुरमस्जिद। इसके अतिरिक्त 'खिरकी' तथा 'रोशन-चिराग़-दिल्ली' की सभी इमारतें भी 'जहाँपनाह' के अंदर ही समझी जाती हैं। तुग़लकों को इमारतों का उतना ही शौक़ था, जितना मुग़लों को, और थोड़े ही दिन के बाद १३५४ में फ़ीरोज़ तुग़लक़ ने पुरानी दिल्ली से कोई आठ मील उत्तर फ़ीरोज़ाबाद नाम का एक नया नगर बसाया। इसे 'फ़ीरोज़शाह का कोटिला' भी कहते हैं। इसके भीतर ही एक चबूतरे पर अशोक का एक स्तम्भ है और कलाँ मस्जिद नामक एक पुरानी मस्जिद है जिसे काली मस्जिद भी कहते हैं।

तुग़लकों का युग समाप्त होने पर मुग़लों का वैभव प्रारम्भ हुआ। इस युग में भी 'पुराना क़िला' नामक दिल्ली का एक खण्ड बसा, जिसका श्रेय हुमायूँ तथा शेरशाह दोनों को है। हुमायूँ ने बसाना शुरू किया था कि शेरशाह का आक्रमण हुआ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुमायूँ को भागना पड़ा। पर शेरशाह ने नवीन नगर का क्रम चलने दिया और जब हुमायूँ लौटा तब फिर उसने अपने नगर की पूर्ति की। शेरशाह की मस्जिद अब तक यहाँ है और शेर-मण्डल नामक एक और इमारत भी है। यहाँ से दक्षिण की ओर पास ही हुमायूँ का मक़बरा और दूसरी छोटी-मोटी इमारतें हैं। ये सब यहाँ छठे शहर में हैं।

सातवाँ शहर शाहजहानाबाद हुआ, जिसे १६३८ और १६५८ ईसवी के बीच में मुग़ल-सम्राट् शाहजहाँ बनवाया। क़िला अथवा लालमहल तथा जामा-मस्जिद इसकी प्रसिद्ध इमारतें हैं, जो अभी तक यहाँ के सर्वश्रेष्ठ इमारतों में से हैं। इस नगर की दीवारों की बहुत कुछ मरम्मत अँगरेज़-सरकार ने कराई है, जिससे वे ज्यों की त्यों बनी हुई हैं। शाहजहाँनाबाद के उत्तर की ओर आज-कल की 'नई दिल्ली' है और यहाँ से तीन-चार मील पर 'रायसीना' नामक स्थान है जहाँ भारत-सरकार की नई इमारतें बन गई हैं। इस प्रकार स्पष्ट देख सकते हैं कि ज्यों-ज्यों राज्य-परिवर्तन होता रहा, त्यों-त्यों दिल्ली में भी परिवर्तन एवं परिवर्धन होते रहे। इसका कुछ कारण तो आबादी की बढ़ती थी और बहुत कुछ नये नये राजाओं की गृह-निर्माण-प्रियता।

थोड़े दिनों के लिए दिल्ली मरहठों के हाथ में भी आ गई थी, पर उनकी सत्ता यहाँ इतने थोड़े दिन तक रही कि उन्हें कोई स्थायी स्मारक बनवाने की फ़ुर्सत ही शायद न मिली। उस समय बूढ़े बादशाह शाह-आलम की मिट्टी पलीद हो रही थी और पुराने मुग़ल-काल के वैभव का अन्त हो चुका था। बेचारे बाद-शाह का उपहास करने के लिए उस समय एक कहावत प्रसिद्ध हो गई थी—

"अज़देहली तापालम
बादशाही शाहआलम"

अर्थात् शाहआलम की बादशाही दिल्ली से पालम तक ही है। पालम नामक गाँव अब भी दिल्ली से कोई १० मील पर है। इसी समय के ऐतिहासिक

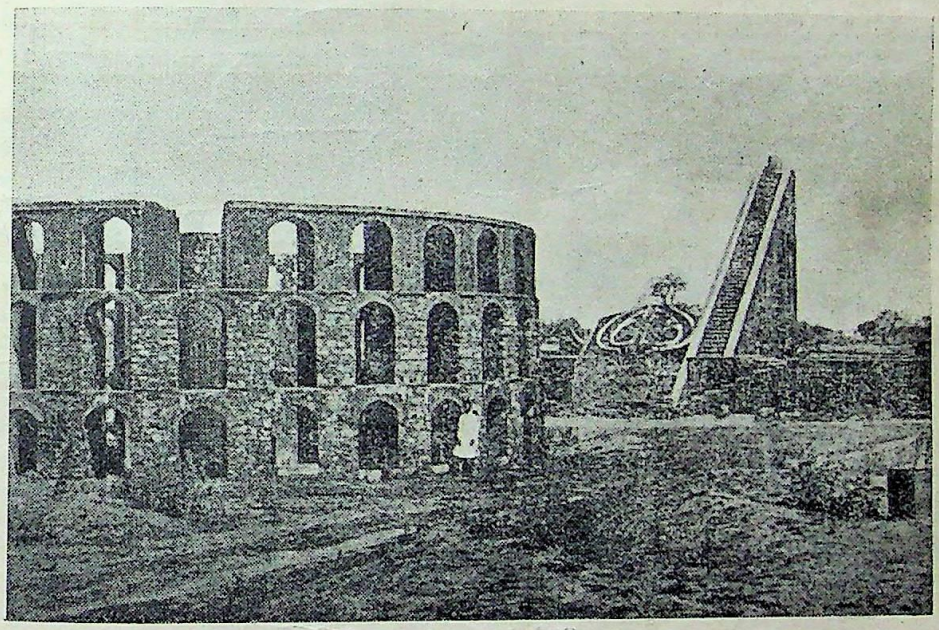

[जंतर-मन्तर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थानों में दो एक क़ब्रें हैं, जिनसे उस समय की अवस्था का स्मरण हो आता है। जैसे अजमेर गेट के पास गाज़िउद्दीन की क़ब्र और कुतुबरोड के पास सफ़दरजंग की क़ब्र। गाज़िउद्दीन हैदराबाद के प्रथम निज़ाम आसफ़जाह के पिता थे और सफ़दरजंग अवध के प्रथम नवाब के भतीजे थे। उस समय इन दोनों राज्यों का प्रारम्भ हो चुका था और दिल्ली से उनका सम्बन्ध टूट चुका था। ये दोनों क़ब्रें बहुत उत्तम बनी हुई हैं। इसी प्रकार यहाँ अनेक मुसलमान

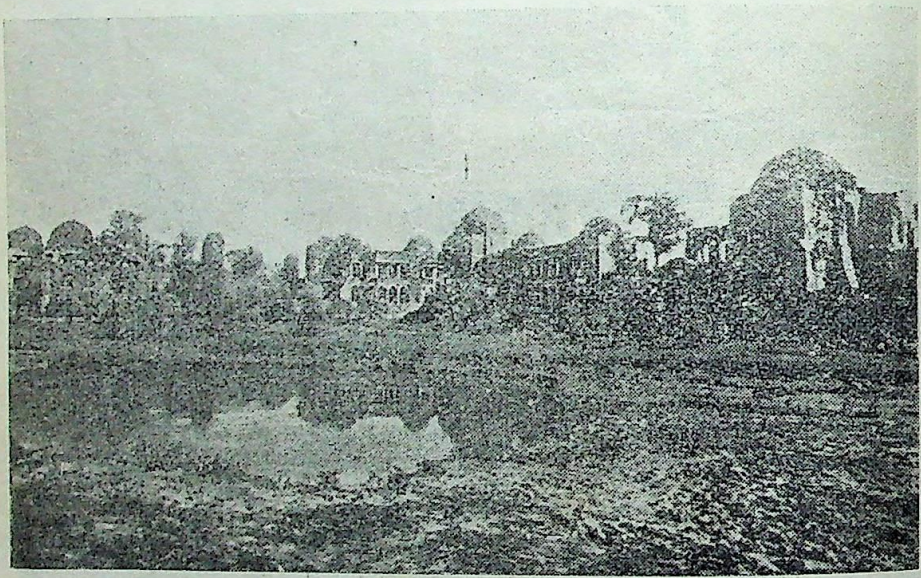

[हौज़ ख़ास]

बादशाहों की क़ब्रें हैं, जिनका विवरण आगे दिया जायगा। जहाँ एक ओर इन ऐतिहासिक पुरुषों की कीर्ति बड़े बड़े विशालकाय महलों में फहराती है, वहीं इनकी क़ब्रों को देखकर संसार की ऋद्धि-सिद्धि की असारता तथा क्षणभङ्गुरता का दृश्य सामने आ जाता है।

इनके अतिरिक्त अन्य इमारतों में क़ुतुबमीनार सबसे प्राचीन है, जिसे क़ुतुबुद्दीन ऐबक ने १२०० ईसवी के लगभल प्रारम्भ करवाया था। उसके जीवनकाल में यह पूरी न हो सकी तब उसके उत्तराधिकारी शमसुद्दीन अलतमश ने बीस वर्ष पीछे १२२० ईसवी में पूरा कराया। इसकी लम्बाई लगभग ८० गज़ है और मोटाई कुछ कम १६ गज़ है। ऊपर जाकर यह मोटाई ३ गज़ हो जाती है और नीचे से ऊपर तक सब लेकर इसमें ३७९ सीढ़ियाँ हैं। इसकी दीवारों पर क्यूफ़ी तथा अरबी लिपि में अनेक लेख हैं और बीच बीच में बेलबूटे बने हुए हैं। इस कारीगरी में बहुत परिश्रम किया गया है और वास्तव में यह संसार के अद्भुत स्थानों में रहने योग्य है। यद्यपि पेरिस की ईफ़ल टावर भी बड़ी प्रसिद्ध है, पर जो कलाकौशल क़ुतुबमीनार में है वह उसमें कहाँ। दिल्ली पहुँचने के पहले से ही बहुत दूर से यह मीनार दिखाई देता है। कहते हैं, किसी समय तो काशी के माधवरावाले धौरहरे से क़ुतुबमीनार के चिराग़ दिखाई देते थे।

प्राचीनता में इसके बाद उस तालाब का नम्बर आता है जिसे हौज़-ख़ास कहते हैं और जो इस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्डहरों तथा खेतों के बीच में नष्ट-भ्रष्ट पड़ा है। यहाँ का दृश्य बहुत कुछ माँडू के जहाज़-महल का-सा है, क्योंकि इसके भी चारों ओर महल बने हुए थे जो इस समय गिरे पड़े हैं। इसे अलाउद्दीन ख़िजली ने १२९५ ईसवी में बनवाया था और फिर १३५४ ईसवी में इसकी मरम्मत फ़ीरोज़शाह तुग़लक़ ने कराई थी। इसी स्थान पर फ़ीरोज़शाह की क़ब्र भी बनी है, जिसे नासिरुद्दीन तुग़लक़ ने १३८९ ईसवी में बनवाया था। पास ही उसके लड़के और पोते नासिरुद्दीन तथा सिकंदर लोदी की भी क़ब्रें हैं। पहले की सी चहल-पहल न होने से इस समय तो यह सबका सब क़बरिस्तान ही हो रहा है।

इन क़ब्रों के अतिरिक्त तुग़लक़वंश की और कई क़ब्रें तुग़लक़ाबाद में हैं, जहाँ एक पुराना क़िला भी है। यह क़िला १३०७ ईसवी का बना हुआ है और मलिक फ़ख़रुद्दीन ने इसके भीतर अपने बाप की क़ब्र बाद को बनवाई थी। यह स्थान क़ुतुबमीनार से चार मील है और १३२५ ईसवी में ग़यासुद्दीन तुग़लक़ ने यहाँ अपनी राजधानी स्थापित की थी। यह क़िला जो इस समय टूटा-फूटा पड़ा है, किसी समय बहुत दुर्गम स्थानों में से था, क्योंकि अब तक इसके ५२ दरवाज़े स्पष्ट दिखाई देते हैं और कहते हैं कि इसमें ५६ कँगूरे थे जो दूर से दिखाई पड़ते थे। इसमें सन्देह नहीं कि यह अपने समय में मुसलमानों के ज़बर्दस्त क़िलों में से रहा होगा। यह क़िला मिस्र-देश के क़िलों के ढङ्ग पर बनवाया गया था।

तुग़लक़ों के बाद दिल्ली के वैभव का कुछ ह्रास हो गया, क्योंकि बाबर तथा हुमायूँ के समय में मुग़लों की उन्नति में अनेक बाधायें आती रहीं और अकबर ने एक तरह से दिल्ली को छोड़कर आगरे को ही अपना लिया था। इसलिए इस बीच के दो सौ वर्ष के भीतर की कोई इमारत यहाँ नहीं है। केवल हुमायूँ की क़ब्र है, जिसे उसकी बेगम ने १५५५ में बनवाना शुरू किया था। यह उस समय पूरी न हो पाई थी और इसके बनने में १६ वर्ष लग गये थे। हुमायूँ की क़ब्र के इर्द-गिर्द और भी कई लोगों की क़ब्रें बनीं

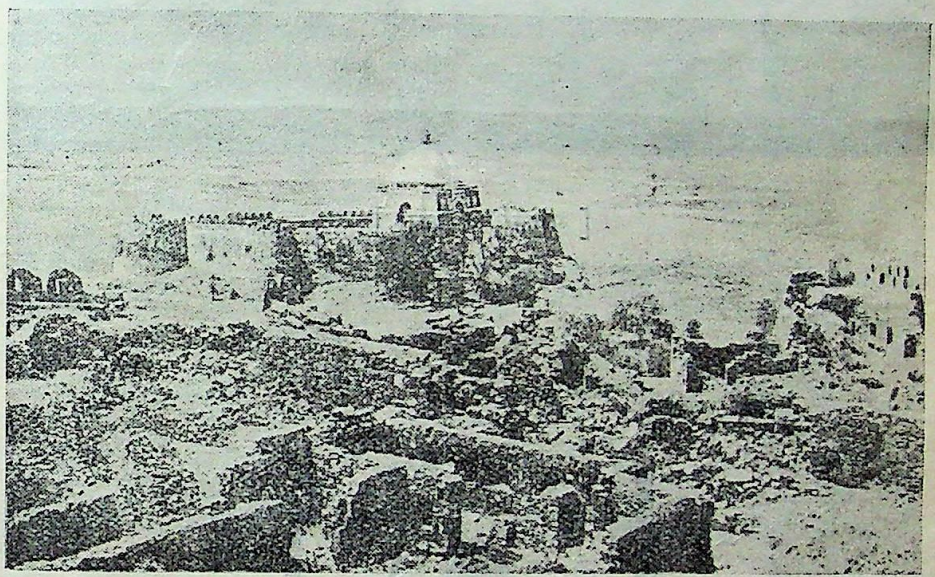

[तुग़लक़ों का क़िला और उनकी राजधानी के खण्डहर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

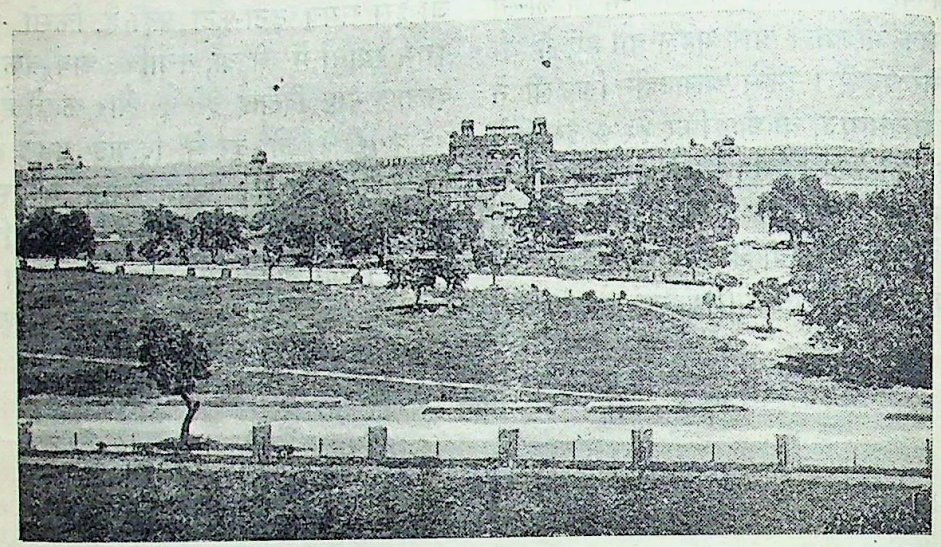

[मुग़लों का क़िला]

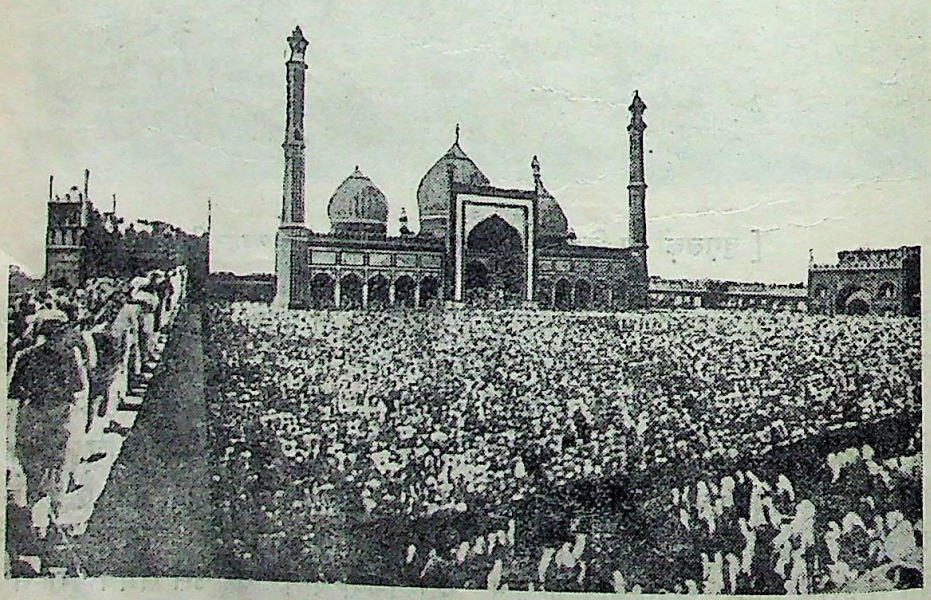

[जामा मस्जिद]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई हैं। इनमें से दाराशिकोह, जहाँदारशाह, आज़मशाह, रफ़ीउद्दौला, रफ़ीउद्दरजात तथा फ़र्रुख़सियर के नाम उल्लेखनीय हैं।

हुमायूँ के बाद अकबर और जहाँगीर के समय में इमारतों के सम्बन्ध में एक प्रकार से दिल्ली में सन्नाटा ही छाया रहा। परन्तु शाहजहाँ ने इस अभाव की एक-दम पूर्ति कर दी, क्योंकि इस समय दिल्ली की सभी इमारतों में जितनी शाहजहाँ की बनवाई रह गई हैं उतनी और किसी की नहीं। शाहजहाँ यों भी भारतवर्ष के सभी शासकों में अपनी गृह-निर्माण-प्रियता के लिए प्रसिद्ध ही है, पर दिल्ली तथा आगरे पर उसकी विशेष कृपा थी। दिल्ली में उसकी बनवाई हुई इमारतों में से दीवान-आम तथा दीवान-ख़ास जो क़िले के भीतर हैं, और जामा मस्जिद है। क़िला दस वर्ष में बना था। इसका १६३८ ईसवी में प्रारम्भ हुआ था। हिन्दुस्तान के क़िलों में यह अद्वितीय है। इसके भीतर कला-कौशल की पराकाष्ठा पाई जाती है, जो इसकी विशेषता है, क्योंकि प्रायः क़िलों में फ़ौजों के रहने का ही प्रबन्ध रहता है और इसके भीतर तो शाहजहाँ का दरबार भी लगता था और आरामगाह भी था। दरबार के लिए दो स्थान थे एक तो दीवान-आम जहाँ सर्वसाधारण के भी जाने की आज्ञा थी। इसके भीतर संगमरमर के बड़े बड़े स्तम्भ हैं और पीछे की तरफ़ बादशाह के बैठने की जगह है, जहाँ तख़्त-ताऊस रक्खा जाता था। सामने ही एक चबूतरे पर वज़ीर बैठते थे और फिर बादशाह प्रार्थनाओं को देख देख न्याय करते थे। दीवान-ख़ास के खम्भों की तथा छत की कारीगरी तो और भी शोभापूर्ण है। यहाँ शाहंशाह विशेष अवसरों पर दरबार करते थे और वज़ीरों से राजकाज के सम्बन्ध में विचार-विनिमय होता था। कला-कौशल से ही मुसल्मानियत टपकती है और संगमरमर के ऊपर का काम इतना पक्का है कि अभी तक यह जान पड़ता है कि जैसे सभी कल-परसों के बने हुए हैं। तख़्त-ताऊस प्रायः यहीं रक्खा रहता था और ख़ास ख़ास मौक़ों पर ही दरबार-आम में जाता था।

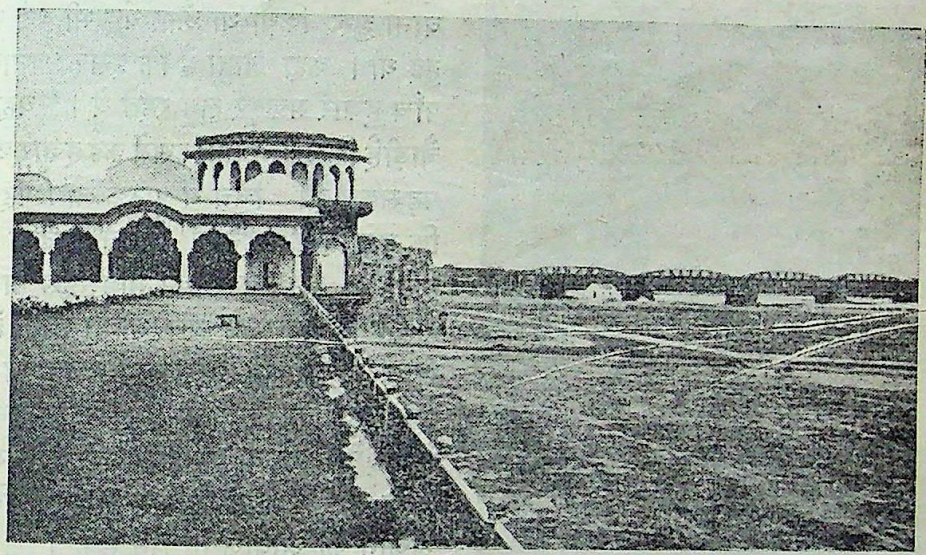

[मिर्ज़ा फ़ख़रू का महल और यमुना के पुल का दृश्य]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क़िले के भीतर ही एक तरफ़ बादशाह के आराम करने के लिए कमरे बने हैं। इसकी दीवारों तथा मेहराबों की चित्रकारी तो और भी अद्भुत है। दरबार से या कचहरी से फ़ुर्सत पाकर शाहजहाँ यहीं

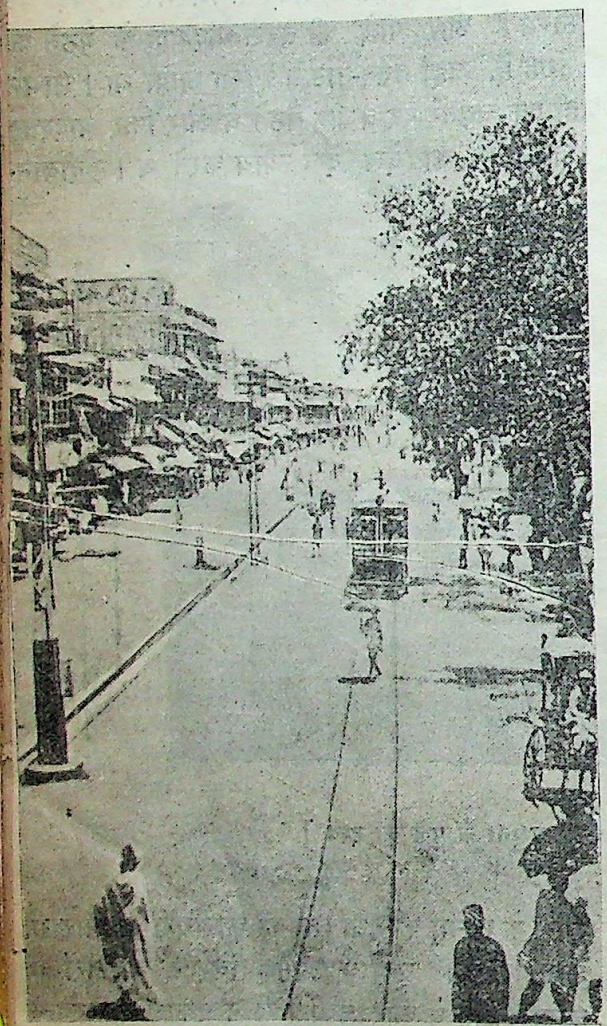

[चाँदनी चौक]

आराम करते थे और राजकाज की समस्याओं पर यहीं बैठकर मनन भी करते थे। इसी लिए शायद सामने की मेहराब के नीचे तराज़ू की तसवीर बना दी गई है, जिससे इस भाग को अँगरेज़ लोग स्केल आव जस्टिस अर्थात् न्याय की तुला कहते हैं। बादशाह शायद प्रतिक्षण अपने सम्मुख न्यायप्रियता एवं समदर्शिता का आदर्श रखना चाहते थे, जिसके द्योतक-स्वरूप तुला की यह मूर्ति दीवार पर बनवा ली थी। यहाँ से वहाँ तक सारा स्थान संगमरमर का बना हुआ है, जिस पर भिन्न-भिन्न रङ्गों की चित्रकारी बड़ी ही मनोहर है। छोटे से छोटा प्रत्येक चित्र इतना स्पष्ट है कि आश्चर्य होता है कि कितने कारीगरों ने उसे पूरा किया होगा।

जामा मस्जिद को शाहजहाँ ने १६४४ ईसवी में बनवाना शुरू किया था और यह भी कई साल में तैयार हुई थी। कहा जाता है कि इसके बनाने में प्रतिदिन पाँच हज़ार मज़दूर लगे रहते थे। यह इतनी लम्बी-चौड़ी है कि एक ही साथ इसमें कई हज़ार आदमी नमाज़ पढ़ सकते हैं। चित्र में पाठक लोग यह देख सकते हैं कि मस्जिद के सहन में कितने आदमी खचाखच भरे हुए हैं। इस प्रकार की भीड़ इस मस्जिद में साल में ईद के दिन में अब भी हो जाती है। यह ऐसे स्थान पर बनी भी है कि यहाँ से दिल्ली शहर भर का पूरा दृश्य दिखाई देता है। जान-बूझकर इसकी स्थिति ऐसी रक्खी गई है जिससे जो नमाज़ में शरीक न हो सकें वे कम से कम शहर के किसी हिस्से से अज़ान की आवाज़ तो सुन सकें।

शाहजहाँ की निर्माण-प्रियता तो प्रसिद्ध ही है, पर यह बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि उसकी लड़की जहाँनारा को भी इमारतों का बड़ा शौक़ था। यों तो रोशनारा का नाम अब भी दिल्ली के प्रसिद्ध 'रोशनारा क्लब' ने स्मृति के लिए सुरक्षित रक्खा है, पर जहाँनारा की स्मृति शहर के एक प्रसिद्ध भाग के साथ संलग्न है। क्योंकि कहा जाता है कि चाँदनी चौक की सारी पुरानी इमारतें जहाँनारा बेगम की ही बनवाई हुई हैं। चाँदनी चौक की सड़क दिल्ली की बहुत उम्दा सड़कों में से है और क़िले से फ़तेहपुरी मस्जिद तक जाती है, जो लगभग एक मील के है। शहर भर में सबसे अधिक कारबारी महल्ला यही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

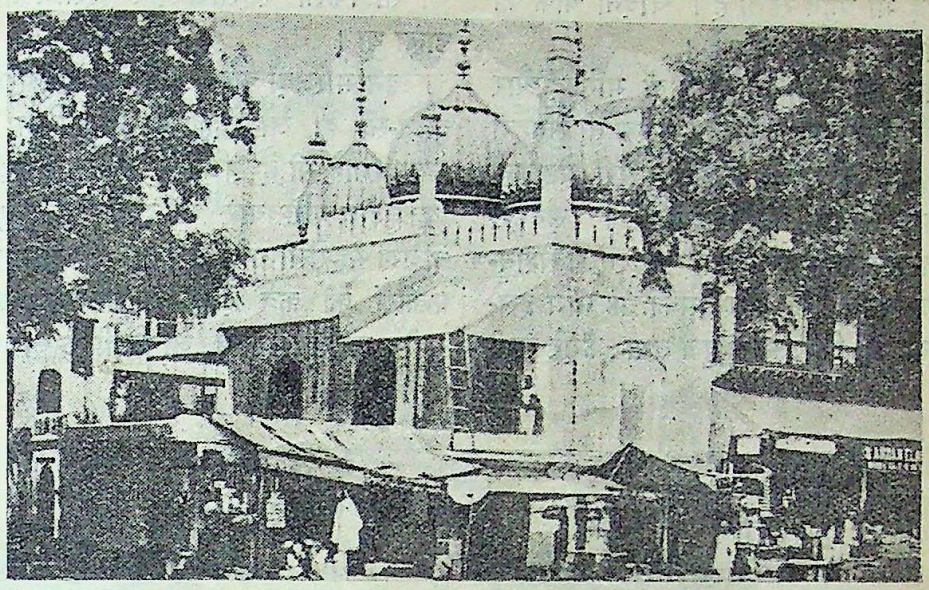

[सुनहरी मस्जिद]

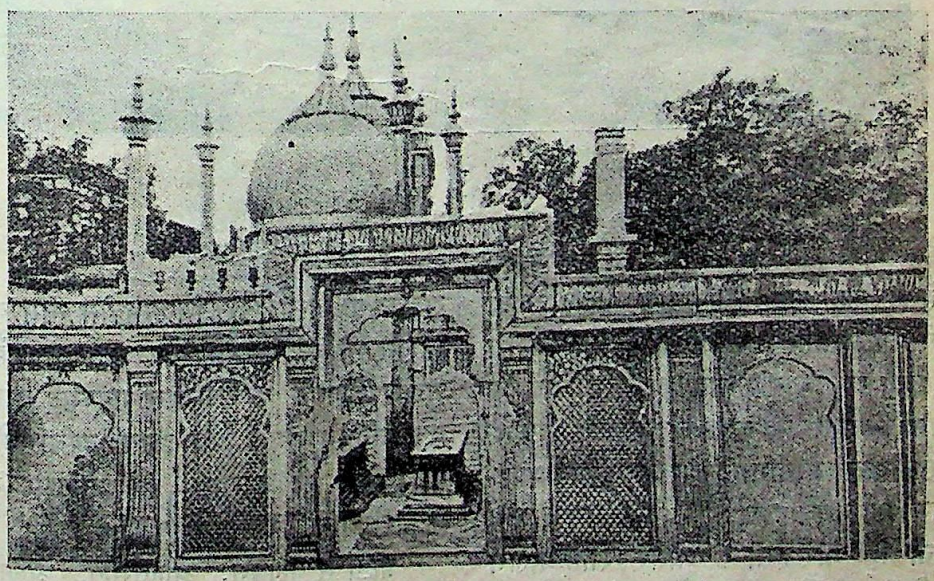

[मेहरौली की मोतीमस्जिद]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और यहाँ भीड़ भी बहुत रहती है। चाँदनी चौक की सड़क की चौड़ाई चालीस गज़ है।

मुग़ल-काल की इमारतों में से दो मस्जिदें और हैं, जो शाहजहाँ के बाद बनी हैं। एक तो सुनहरी मस्जिद के नाम से प्रसिद्ध है और दूसरी मेहरौली में मोतीमस्जिद के नाम से विख्यात है। सुनहरी मस्जिद मुग़ल-बादशाह मुहम्मदशाह के दरबारी रोशन-उद्-दौला की बनवाई है और इसका यह नाम इस-लिए पड़ गया है कि इसके बुर्ज तथा कँगूरे सभी सुनहरे बने हैं। कहा जाता है कि जब १७३९ ईसवी में अत्याचारी नादिरशाह ने शहर भर में क़तल-आम का हुक्म दे दिया था तब वह स्वयं इसी मस्जिद के ऊपर से अपनी निर्दयता का दृश्य खड़ा हुआ देखता था। मिहरौलीवाली मोतीमस्जिद बहादुरशाह शाह-आलम (प्रथम) की बनवाई हुई है। यह सन् १७०९ ईसवी की बनी है और इसी के भीतर शाहआलम प्रथम तथा द्वितीय दोनों की क़ब्रें हैं। इनमें से एक को तो किसी रुहेलासरदार ग़ुलामक़ादिर ने मार डाला था।

इन मस्जिदों और क़ब्रों के अतिरिक्त और भी बहुत-सी हैं, जो दिल्ली के भिन्न-भिन्न भागों में हैं। कई दरगाहें भी हैं जिनमें सबसे प्रसिद्ध है ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार की दरगाह जो क़ुतुबमीनार के दक्षिण मेहरौली गाँव में है। ये दरगाहें मुसलमान फ़क़ीरों की क़ब्रें हैं। दूसरी प्रसिद्ध दरगाह निज़ा-मुद्दीन औलिया की है, जो दिल्ली के बाहर मथुरावाली सड़क के पास है। निज़ामुद्दीन नाम का एक अलग स्टेशन भी बन गया है और कहा जाता है कि निज़ा-मुद्दीन बलबन के समय से मुहम्मद तुग़लक़ के समय तक जीवित रहे थे और इनका दरबार में बड़ा प्रभाव था। तीसरी दरगाह शाहआलम नामक किसी फ़क़ीर की वज़ीराबाद में बनी है।

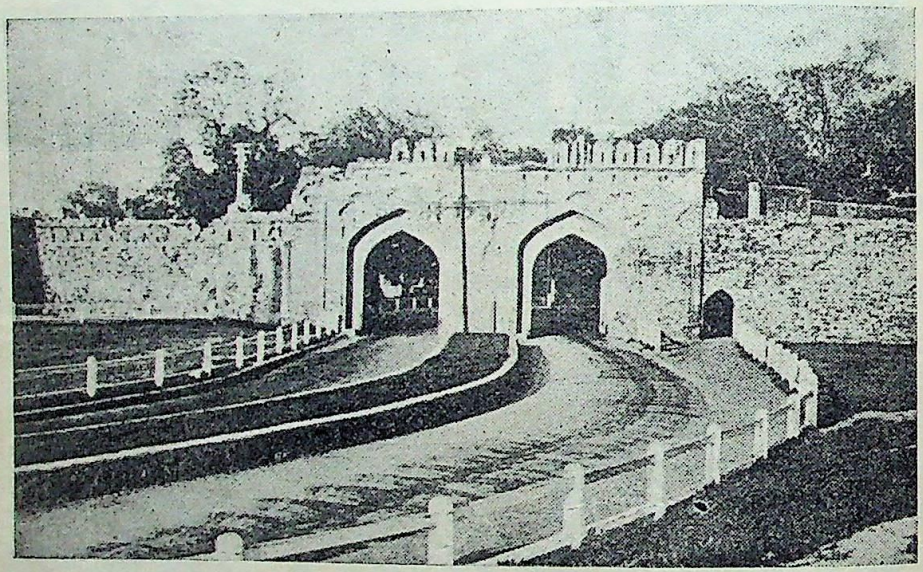

[काश्मीरी गेट]

क़ब्रों में बलबन, अलतमश, अलाउद्दीन, ग़या-सुद्दीन, मुबारकशाह, मुहम्मदशाह, ईसाख़ाँ, सिकंदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोदी तथा बहलोलशाह लोदी की क़ब्रें प्रसिद्ध हैं। ग़ाज़िउद्दीन की क़ब्र के पास ही एक अरबी का मदरसा था, जो इस वक़्त अँगरेज़ी तथा अरबी दोनों का शिक्षा का केन्द्र हो गया है और अजमेरी दरवाज़ा सुन्दर है और इसके पास शहर के उम्दा पार्क तथा बग़ीचे हैं। पास ही उस स्थान पर जहाँ अँगरेज़ी सेना का एक प्रसिद्ध अंश लड़ रहा था, एक स्मारक बना हुआ है जिसे बलवे का स्मारक कहते हैं। यह सन्

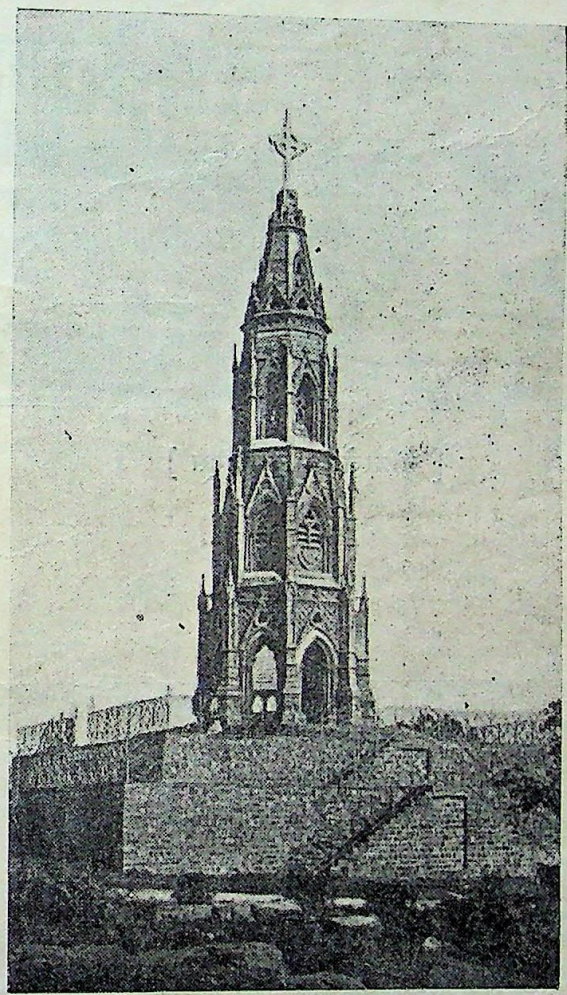

[सिपाही-विद्रोह का स्मारक]

के पास है। इस दरवाज़े की दूसरी ओर दूसरा प्रसिद्ध दरवाज़ा है, जिसे काश्मीरी गेट कहते हैं। इसी के पास १८५७ के बलवे में सरकारी फ़ौजों ने मोरचा लिया था और अभी तक ऊँची दीवारों में तोपों से टूटे हुए भाग दिखाई देते हैं। काश्मीरी गेट का रास्ता बहुत १८६३ ईसवी में सिपाहियों की स्मृति-रक्षा के लिए बनवाया गया था जो अँगरेज़ी राज्य के लिए अपनी जान देकर लड़े थे।

इधर हाल में दिल्ली भारत की राजधानी बना दी गई है और तदनुरूप 'नई दिल्ली' की रचना की गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

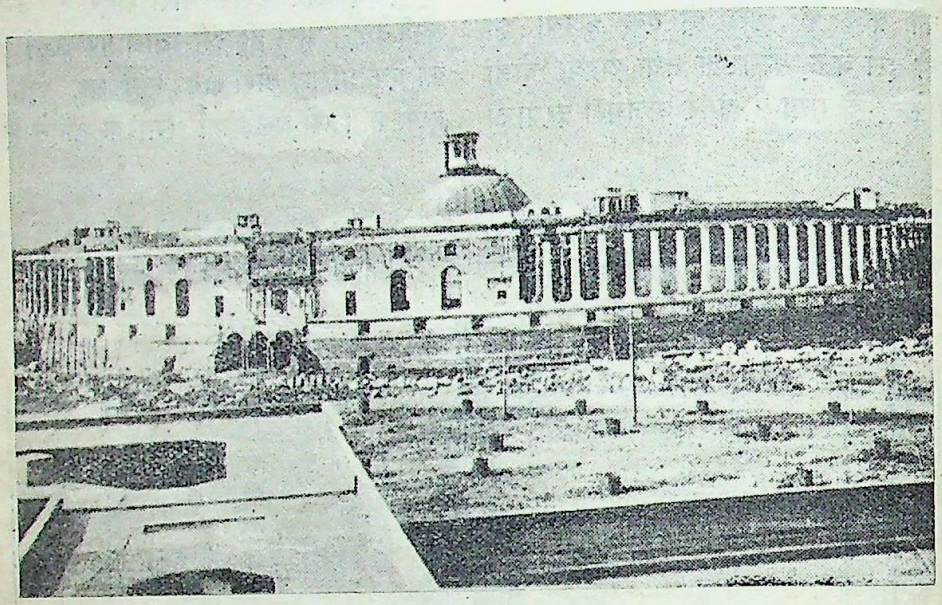

[लेजिस्लेटिव बिल्डिंग्स]

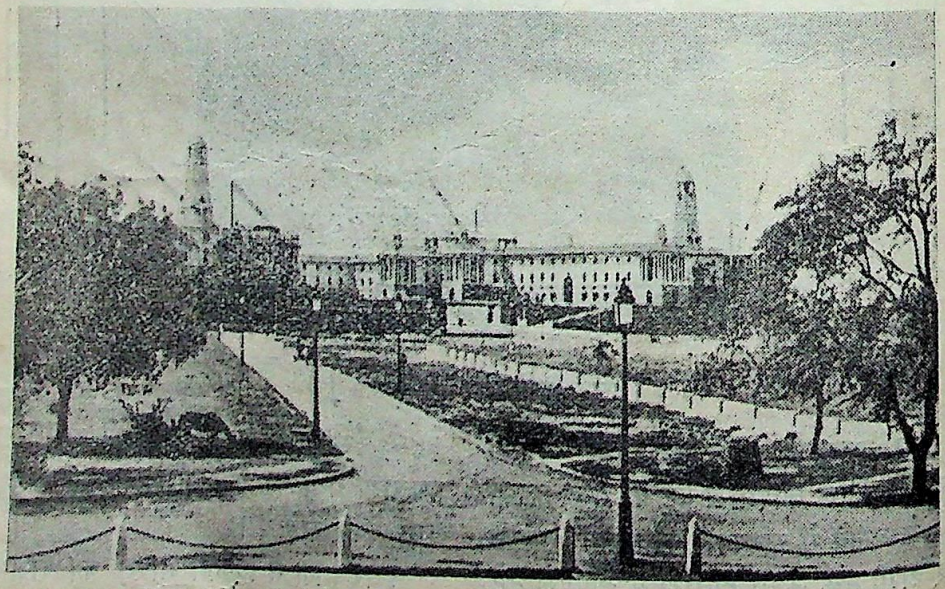

[सेक्रेटेरियट का दफ़्तर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इस सम्बन्ध में दो महत्त्वपूर्ण इमारतें इधर कुछ वर्षों में बन गई हैं। एक तो है सेक्रेटेरियट का दफ़्तर, जिसमें भारत-सरकार के सभी अफ़सरों के आफ़िस हैं और दूसरी वह विशाल-काय इमारत है जिसे 'लेजिस्लेटिव बिल्डिंग' कहते हैं। इस बड़ी इमारत में भारत-सरकार ने लाखों रुपये व्यय किये हैं और इसमें बड़ी व्यवस्थापिका सभा (Legislative Assembly), कौंसिल ऑव स्टेट तथा नरेशमंडल (Chamber of Princes) के कार्यालय रहते हैं। ये इमारतें दिल्ली के बाहर रायसीने में बनाई गई हैं, जो धीरे-धीरे एक शहर हो गया है। पुरानी दिल्ली से यह कई मील पर है और यहीं पास ही सब कर्मचारियों के लिए छोटे-बड़े सैकड़ों सरकारी क्वार्टर बना दिये गये हैं। वाइसराय के रहने का स्थान तथा व्यवस्थापिका सभा के अध्यक्ष का निवास-स्थान भी इसी भाग में हैं। इतनी जन-संख्या के लिए इर्द-गिर्द बाज़ार भी बसते जा रहे हैं और थोड़े ही दिनों में रायसीने में एक पूरी नई दिल्ली बस जायगी।

यहाँ सम्राट् (सप्तम) एडवर्ड तथा सम्राट् जार्ज (पंचम) के सिंहासनारोहण के समय दो अच्छे दरबार हुए थे और तभी से ब्रिटिश-सरकार के मन में इसे भारतवर्ष की राजधानी बनाने की बात अच्छी तरह बैठ गई। इस समय तो यह एक अलग प्रान्त भी बन गया है और इसका अपना एक पृथक् विश्वविद्यालय भी है। वास्तव में हिन्दू-काल से लेकर मुसलमानों के समय में होते हुए आज तक दिल्ली-नगर का महत्त्व एक सा ही रहा है। अतएव यदि इस प्राचीन तथा विशाल नगरी को हिन्दुस्तान की नाक कहें तो अत्युक्ति न होगी। आशा है कि शीघ्र ही दिल्ली अपने प्राचीन वैभव को प्राप्त करके ब्रिटिश-साम्राज्य एवं संसार के बड़े बड़े नगरों में सर्वोच्च स्थान पा लेगी।

—श्रीरामाज्ञा द्विवेदी 'समीर'

यदि आप हिन्दू-संस्कृति का सच्चा स्वरूप जानना चाहते हैं तो आज ही हमारे यहाँ से प्रकाशित

सचित्र हिन्दी-महाभारत

की ग्राहक-श्रेणी में अपना नाम लिखा लीजिए। इससे आप तथा आपके स्त्री-बच्चों का मनोरञ्जन तो होगा ही साथ ही आपकी ज्ञान-वृद्धि भी होगी। सबसे बढ़कर लाभ यह होगा कि इसके अनुशीलन से आपके परिवार में सदाचार और सद्भावनाओं की वृद्धि होगी। हमारा महाभारत लाखों हाथों में पहुँच चुका है। तमाम भारत में दिनोंदिन इसका प्रचार बढ़ता जा रहा है। इसकी सरसता, सरलता और रोचकता ने हर एक को मोहित कर लिया है। यह एक संग्रहणीय चीज़ है। विशेष विवरण विज्ञापन में देखिए।

मैनेजर—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुराग

सुलगती उर अन्तर में आग,
इसी को क्या कहते अनुराग ?

किसी का प्रतिपल दुसह वियोग,
बनाता हमको विकल अधीर ॥
न जाने हुआ कौन सा रोग,
बहा करता आँखों से नीर ॥
कपोलों पर आँसू के दाग़,
इसी को क्या कहते अनुराग ?

किसी का खिंचा हमीं में चित्र,
किसी की स्मृति-मधु में मन लीन,
बिंध गये हैं वंशी में प्राण,
तड़फता रहता व्याकुल मीन ॥
हुआ जगती से आज विराग,
इसी को क्या कहते अनुराग ?

एक आनन्द एक है शोक,
एक मूर्छा जागृति है एक ।
एक है ताप एक है शीत,
एक बन्धन विमुक्ति है एक ॥
हृदय में रही वेदना जाग,
इसी को क्या कहते अनुराग ?

—सोहनलाल द्विवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

नाटक और उपन्यास

[इस लेख के लेखक पण्डित अवध उपाध्याय सरस्वती के पाठकों से परिचित हैं। इसमें आपने नाटक और उपन्यास की तुलना की है और यह सिद्ध किया है कि नाटक उपन्यास से श्रेष्ठ है। लेख विचारपूर्ण है।]

साहित्य का वर्गीकरण कई दृष्टियों से किया जाता है। कुछ लोग इसे तीन भागों में—(१) महाकाव्य, (२) मुक्तक, (३) उपन्यास और नाटक— विभक्त करते हैं, कुछ लोग इसके दो भाग बतलाते हैं और शेष लोगों का विचार है कि साहित्य का इस प्रकार का वर्गीकरण व्यर्थ तथा निरर्थक है, क्योंकि साहित्य एक है। कुछ लोग कहते हैं कि साहित्य का सर्वश्रेष्ठ अंग महाकाव्य है, कुछ लोग मुक्तक को सर्वश्रेष्ठ समझते हैं और कुछ लोग कहते हैं कि नाटक ही साहित्य का सर्वश्रेष्ठ अंग है और नाटक-लेखक साहित्य के अन्य सब लेखकों से श्रेष्ठ हैं। कुछ लोग केवल नाटक और उपन्यास की पारस्परिक तुलना करते हैं और इस बात को सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं कि नाटक का महत्त्व उपन्यास से भी अधिक है।

यदि संसार के साहित्य का अध्ययन किया जाय तो पता चलेगा कि साहित्य के और सब अंगों की अपेक्षा सफल नाटक-लेखकों की संख्या बहुत ही कम है। प्रत्येक देश में सफल मुक्तक, महाकाव्य तथा उपन्यास-लेखकों की संख्या तो बहुत अधिक है, परन्तु सफल नाटक लेखकों की संख्या बहुत कम है। इससे यह बात निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाती है कि नाटक लिखना उपन्यास लिखने से कठिन है। कई अंशों में दोनों की कृतियों में समानता होती है, दोनों को कहीं न कहीं से प्लाट की सृष्टि करनी पड़ती है, दोनों को चरित्र-चित्रण की ओर विशेष ध्यान रखना पड़ता है, दोनों को कथोपकथन को रोचक तथा मनोरंजक बनाना पड़ता है और दोनों को सुन्दरता की सृष्टि करनी पड़ती है। परन्तु नाटक-लेखक को स्टेज का भी ध्यान रखना पड़ता है और स्टेज से उपन्यास-लेखक का विशेष रूप से कुछ भी संबंध नहीं होता। इस कारण उपन्यास-लेखक की कठिनाई अपेक्षाकृत बहुत बढ़ जाती है।

नाटक-लेखक को स्टेज का अध्ययन करना बहुत ही आवश्यक है। खेले जाते समय नाटकों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखना भी उसके लिए परम आवश्यक है। कुछ लोगों का तो यहाँ तक विचार है कि उसे कुछ नाटकों का पात्र बनना भी आवश्यक है। इन लोगों का विचार है कि शेक्सपियर के नाटकों के सफल तथा सर्वश्रेष्ठ होने का एक यह भी प्रधान कारण है कि वह स्वयं नाटकों का पात्र बनता था। नाटकों में स्टेज के कारण उपन्यास की अपेक्षा कठिनाई और भी अधिक हो जाती है।

इस बात को सब लोग मुक्तकंठ से स्वीकार करते हैं कि संगीत का साहित्य से बड़ा घनिष्ट संबंध है। यह संभव है कि उपन्यास-लेखक बिना संगीत-कला जाने ही अपना काम अच्छी तरह से चला ले जाय, परन्तु नाटक-लेखक के लिए संगीत-शास्त्र का जानना परमावश्यक है। जब तक नाटक-लेखक संगीत-कला का अच्छा ज्ञाता न होगा तब तक वह अपने नाटक में कभी सफल नहीं हो सकता। किस समय क्या गाना चाहिए, किस राग तथा रागिनी में रोना चाहिए, वीरभाव उत्पन्न करने के लिए किस स्वर का अवलंबन करना चाहिए आदि बातों का नाटक-लेखक के लिए जानना नितान्त आवश्यक है। संगीत-कला के साथ नाटक का संबंध होने के कारण नाटक-लेखक की कठिनाई और भी अधिक हो जाती है।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि नाटक और उपन्यास दोनों ही साहित्य के अंग हैं और दोनों में ही कविता का अस्तित्व पाया जाना चाहिए। परन्तु नाटक-लेखक को इस संबंध में बहुत ही अधिक विचार करना पड़ता है कि कहीं नाटक का कथोपकथन अधिक कवित्वमय न हो जाय। अँगरेज़ी-भाषा के कुछ समालोचकों ने इस बात का उल्लेख किया है कि नाटक ही कविता का सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोच्च अंग है। यह भी सत्य ही है कि उसमें अधिक कविता नहीं होनी चाहिए। पहले तो मालूम पड़ता है कि यह हेत्वाभास है, परन्तु वास्तव में ऐसी बात नहीं है। नाटक वास्तव में कविता का सर्वश्रेष्ठ अंग भी है और उसमें अधिक कविता नहीं होनी चाहिए, ये दोनों ही बातें सत्य हैं। इस सिद्धान्त के पालन करने में नाटक-लेखक को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

इसमें तो लेश-मात्र भी संदेह नहीं है कि उपन्यास और नाटक-लेखक दोनों को ही स्वाभाविकता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। परन्तु नाटक-लेखक इस अंश में भी अपेक्षाकृत नियमों से बहुत ही अधिक जकड़ा हुआ है। यदि नाटक में थोड़ी भी अस्वाभाविकता आई तो वह रद्दी समझा जायगा।

नाटक में लेखक अपनी ओर से एक शब्द भी प्रयोग नहीं कर सकता। उसे जो कुछ कहना है वह पात्रों के द्वारा ही कहला सकता है। परन्तु उपन्यास-लेखक यदि चाहे तो कई पृष्ठों तक स्वयं कहता चला जा सकता है। इस अंश में भी नाटक-लेखक को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उनसे उपन्यास-लेखक सर्वथा मुक्त है।

भाषा के प्रयोग के संबंध में भी नाटक-लेखक को बहुत ही अधिक सावधान रहना पड़ता है। जो पात्र जैसा हो उसे वैसे ही शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। जो मूर्ख है वह पण्डितों की भाषा का प्रयोग कदापि नहीं कर सकता, जो दुर्जन है उसे सज्जनों के भावों का व्यक्त करना असंभव है, एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारण आदमी साहित्यिक तथा कवित्वमय भाषा का कभी प्रयोग नहीं कर सकता। इन सब बातों पर थोड़ा भी चूक जाने से नाटक का सब मज़ा किरकिरा हो जा सकता है और प्रायः हो भी जाता है। इससे भी नाटक-लेखक की कठिनाई बढ़ जाती है।

उपन्यास-लेखकों को पर्दे का कुछ भी विचार नहीं करना पड़ता, परन्तु नाटक-लेखक के लिए ऐसा करना बहुत ही अधिक आवश्यक है। मैंने प्रायः देखा है कि आज-कल के नाटक-लेखक पर्दे का बिना विचार किये ही पुस्तक लिखने बैठ जाते हैं और ऐसी ऐसी भद्दी भूलें कर जाते हैं जिन्हें कभी नहीं करना चाहिए। नाटक-लेखक को पहले स्टेज देखना चाहिए और तब उसी के अनुसार उसे अपने दृश्यों को सजाना चाहिए। उसे अपने मन में भली भाँति देख लेना चाहिए कि पहले नदी का दृश्य दिखलाना चाहिए अथवा महल, पहले जंगल का दृश्य दिखलाना चाहिए अथवा सड़क का। इन सब बातों को न जानने से नाटक-लेखक भयंकर भूलें कर जाता है और इनके जाने बिना ही उपन्यास-लेखक अच्छी तरह से उपन्यास लिख सकता है।

इन सब बातों से स्पष्ट है कि उपन्यास लिखने से नाटक का लिखना अपेक्षाकृत अधिक कठिन है। और अधिक साहित्य-मर्मज्ञों का यह भी विचार है कि उपन्यास से नाटक अधिक महत्त्व का तथा उससे श्रेष्ठ है। यदि वास्तव में विचार किया जाय तो इनमें श्रेष्ठ होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता और दोनों ही अपने अपने विशेष-क्षेत्र में श्रेष्ठ समझे जा सकते हैं। तथापि कुछ लोगों ने इनकी तुलना की है। ऐसे लोगों में अधिक लोगों ने नाटक को उपन्यास से श्रेष्ठ माना है। इस सम्बन्ध में संस्कृत के विद्वानों ने भी विचार किया है और सारे साहित्य को (१) श्रव्य और (२) दृश्य दो भागों में विभाजित किया है। नाटकों की गणना दृश्य-काव्य में की गई है और साहित्य के सब शेष अंगों की गणना श्रव्य-काव्य में। संस्कृत-लेखकों ने दृश्य-काव्य को श्रव्य से श्रेष्ठ माना है। इसलिए संस्कृत के साहित्य-मर्मज्ञों के अनुसार नाटक का स्थान उपन्यास से ऊँचा है। अँगरेज़ी में शेक्सपियर सबसे श्रेष्ठ माना गया है। संस्कृत-साहित्य में कालिदास और भवभूति सर्वश्रेष्ठ माने गये हैं और दोनों ही नाटक-लेखक हैं। अँगरेज़ी साहित्य के जाननेवालों ने भी नाटक-लेखक को उपन्यास-लेखक से श्रेष्ठ माना है। अतएव इन सब काव्य-मर्मज्ञों के अनुसार नाटक का स्थान साहित्य में उपन्यास से ऊँचा ठहरता है। परन्तु हम लोगों को 'बाबावाक्यं प्रमाणं' नहीं मानना चाहिए और स्वयं विचार करना चाहिए कि वास्तव में सच बात क्या है। पहले इस प्रश्न पर कला की दृष्टि से विचार करना चाहिए। इसमें लेश-मात्र भी सन्देह नहीं है कि नाटक और उपन्यास दोनों की गणना साहित्य-कला के भीतर की जाती है, तथापि कला का जो विकसित रूप नाटक में देख पड़ता है वह उपन्यास में नहीं दृष्टिगोचर होता। इस बात को भली भाँति समझने तथा विश्लेषण करने के लिए कैंट, हीगेल तथा टाल्सटाय आदि की कला-सम्बन्धी परिभाषा का अध्ययन तथा प्रयोग करना पड़ेगा और इस छोटे-से लेख में ऐसा नहीं किया जा सकता। तथापि इस सम्बन्ध में इतना लिखना आवश्यक जान पड़ता है कि नाटक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कला इतनी उच्च समझी गई है कि उसके लिए प्रायः नाट्य-कला का प्रयोग किया जाता है। जब सभ्य-संसार की सभ्यता की परस्पर तुलना की जाती है, तब प्रायः यह भी देखा जाता है कि उस देश की नाट्य-कला की क्या दशा है। इस सम्बन्ध में एक उदाहरण देना अनुचित न होगा। रूस की राज्य-क्रान्ति के बाद बहुत-से लोग रूस की दशा के अध्ययन करने के विचार से वहाँ गये थे। उनमें से मिस स्नाउडन नाम की एक अँगरेज़ी महिला भी थी। रात के समय जब सब लोग नाटक देखने के लिए चलने लगे तब मिस स्नाउडन ने यह कह कर वहाँ जाना अस्वीकार कर दिया कि मैं रूसी-भाषा नहीं जानती। तथापि उनके मित्र उन्हें अपने साथ नाटक देखने के लिए घसीट ही तो ले गये। इसमें संदेह नहीं कि मिस स्नाउडन रूसी-भाषा नहीं जानती थी, तथापि रूस के पात्र नाट्य-कला में इतने दक्ष, चतुर और कुशल थे कि अँगरेज़ी-महिला नाटक की सब बातों को केवल पात्रों की भावभंगी और मुखाकृति की सहायता से ही समझ गई। उसने रूस की सभ्यता तथा कला की बड़ी प्रशंसा की। इसी कारण नाट्य-कला एक विशेष तथा स्वतंत्र कला मान ली गई है।

इस बात को सब लोग निर्विवाद रूप से मानते हैं कि संगीत का प्रभाव सब लोगों पर बहुत पड़ता है। संगीत के अनुशासन को पशु-पक्षी भी मानते हैं। इसी के प्रभाव से मृग पकड़ा जाता है और सर्प प्रेम में पागल हो उठता है। संगीत की सहायता से नाटक-लेखक इस शक्ति का प्रयोग करके जनता के ऊपर विशेष प्रभाव उत्पन्न कर सकता है और उपन्यास-लेखक ऐसा नहीं कर सकता। इस अंश में नाटक-लेखक जिस अमोघ अस्त्र का प्रयोग कर सकता है उससे उपन्यास-लेखक सर्वथा वंचित रहता है। पाठकों पर प्रभाव उत्पन्न करना भी साहित्य का एक विशेष कार्य है। इस कार्य को उपन्यास उतना नहीं कर सकता जितना नाटक। इसलिए नाटक उपन्यास से श्रेष्ठ ठहरता है।

पात्रों की सहायता से भी दर्शकों के ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ता है। जिस प्रभाव को उपन्यास-लेखक दस पृष्ठ रँग कर भी उत्पन्न नहीं कर सकता, उससे अधिक प्रभाव को नाटक-लेखक केवल किसी बालिका तथा दूसरे दृश्य की सहायता से सुगमता से उत्पन्न कर सकता है।

—अवध उपाध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करुण-मिलन

"एक बहुत फटा-पुराना फ़लालैन का जैकेट है। इसलिए बहुत थोड़ा मूल्य दिया है, केवल दो-चार पैसे। जैकेट में लगे हुए टिकट से जान पड़ता है कि किसी अभागिनी स्त्री का जैकेट है। पापी पेट को भरने के लिए इस भयानक जाड़े में काँपते हुए उसने शरीर के अपने एक इस वस्त्र को भी निकाल दिया है।"

लंदन की सड़कों पर गहरी बर्फ़ पड़ी हुई थी। तीक्ष्ण और निर्दय वायु मौक़ा पाकर रात के अँधेरे में रास्ते में भटकते हुए पथिकों का गला दबा रहा था। स्वस्थ और नौजवान लोगों के काफ़ी कपड़े-लत्ते से सज्जित होते हुए भी बीच बीच में उनके दाँत किट-किटाने की आवाज़ सुन पड़ती थी। अपने लोगों से परिवेष्टित, आग से गर्म हो रहे घर की भावी-स्मृति ही उन्हें इतनी फ़ुर्ती से उन्हें आगे खींचे लिये जाती थी।

'वंडर गार्डेन' को चारों तरफ़ से लतायें और पौधे घेरे हुए थे। फूलों की मधुर सुगन्ध इसे अलंकृत नहीं करती थी, किन्तु चारों तरफ़ पड़े हुए कूड़े का ढेर और रोग ही यहाँ अपना प्रभुत्व जमाये रहते थे। यहाँ मृत्यु अनायास ही अपनी उदर की पूर्ति करके सन्तुष्ट होती थी।

बाग़ के एक मकान के नीचे के तले में पीछे की ओर के कमरे में तीन मनुष्य रहते थे। घर के एक कोने में फटी-पुरानी गुदड़ी पर एक आदमी यक्ष्मा-रोग से पीड़ित पड़ा सो रहा था। दूसरे कोने में तुरंत खिले हुए गुलाब जैसी एक लड़की मरी हुई पड़ी थी और उसकी छाती पर एक रोती हुई म्लान-मुख स्त्री की असह्य शोकराशि बूँद बूँद करके झड़ रही थी। घर में बड़ी दुर्गन्ध फैली हुई थी।

घर में धूल भरी थी। कहीं कहीं पर सील भी थी। छप्पर कहीं कहीं टूट गया था। कुटिया का भीतरी भाग पूरा खण्डहर जान पड़ता था।

पेवन्दों से भरे हुए वस्त्रों की ढेरी में से क्षीण कण्ठ में सुनाई पड़ा "मेग!" स्त्री मरी हुई लड़की को छोड़ कर स्वामी के बग़ल में जाकर खड़ी हो गई। 'मेग, मुझे ज़रा उठा लो।'

वह बेचारी झुक गई और स्वामी को जीर्ण-शीर्ण दीवार के सहारे बैठा दिया।

वह झुकी ही खड़ी रही। युवक ने व्याकुल होकर कमज़ोर और शिथिल हाथों से अपनी प्यारी के गले को धर लिया।

उसके दोनों हाथ कितने दुर्बल थे, कितने निस्तेज! शक्तिहीन हाथों के स्पर्श से स्वामी के असाध्य रोग को समझने में उसे देर न लगी। उसने जान लिया कि निर्दय रोग ने अपना कार्य प्रायः शेष कर दिया है।

युवक अत्यन्त क्षीण और धीमी आवाज़ में बोला—प्राणप्रिये, तुम इस समय मेरे पास रहो, मुझे निर्जन स्थान में न मरने दो।

युवती आँसुओं से भरे हुए नेत्रों को पोंछकर स्वामी के और पास हो गई और उसके धँसे हुए ललाट पर अपने काँपते हुए अधर को ले जाकर उसके सफ़ेद और कान्तिहीन चेहरे को आँसुओं से भर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"छिः मेग, रोती क्यों हो ? जल्दी ही मेरे सारे कष्ट दूर हो जायँगे। जहाँ भूख की ज्वाला से पेट में आग नहीं जलती है, जहाँ शीत के प्रचण्ड आक्रमण से कँपकँपी नहीं उठती, जहाँ मेरे देखते देखते मेरी फूलती हुई गुलाब की कली चली गई, मैं भी वहीं जाऊँगा।"

"तो क्या मैं ही पड़ी रहूँगी ?"

मेग का गला आँसुओं के वेग से भर आया। दूसरे ही क्षण उसने स्वामी के मस्तक को अपनी धड़कती हुई छाती पर रख कर कहना आरम्भ किया।

"तुम कुछ देर तक चुपचाप पड़े रहो। मैं थोड़ी देर में प्रयत्न करके तुम्हारे लिए कुछ लाती हूँ।"

"मेग, तुम कहाँ जाती हो ? मैं कुछ नहीं चाहता।"

"जेम, भूख के मारे तुम्हारा शरीर चारपाई से मिल गया है।"

थोड़ी देर के लिए जेम के सफ़ेद होठों के पुट दुःख की नीरव हँसी से कुञ्चित हो उठे। उसने कहा—नहीं मेग, मुझे वैसी भूख नहीं लगी है। जब तक मेरे प्राण निकल न जायँगे तब तक मैं अच्छी तरह रह सकूँगा।

"तुम ऐसी बात क्यों कहते हो प्यारे ! तुम अभी बहुत दिनों तक रह सकते हो। यदि—"

"मैं जानता हूँ। यदि मैं पुष्टकर पदार्थ खाऊँ। नहीं प्राणप्यारी, मैं अपनी आत्मा को इतना कलुषित न करूँगा। अब उसे इतना नीचे न गिराऊँगा। केवल कुछ दिनों के लिए वेदना से जर्जर जीवन को वहन करने के लिए तुम्हें तुम्हारे एक बचे हुए वस्त्र से भी रहित कर दूँ ? मैंने तुम्हारा क्या नहीं ले लिया है ? मेरी उदर-पूर्ति के लिए क्या तुमने अपने सम्पूर्ण सुखों का हँसते हुए बलिदान नहीं किया है ? तुम्हारे शरीर के सारे कपड़े मेरे लिए क्या बन्धक नहीं रक्खे हुए हैं ?"

"नहीं प्यारे ! ये सब चीज़ें तुम्हारी ही हैं, उन्हें सबको बिदा कर दिया है, क्योंकि—"

"क्योंकि उन्हें मैं कभी नहीं चाहूँगा। ठीक कहती हो, मैं फिर उन्हें न चाहूँगा।"

"जेम, मैं इस समय चलती हूँ। इस अभागिनी की क़ब्र तैयार कर के तुम्हारे लिए एक प्याला चाय लेकर आऊँगी।"

एक प्याला चाय ! जेम के दोनों उज्ज्वल नेत्र आशा के प्रकाश से चमक उठे।

उसके होंठ मुरझाये हुए—सूखे हुए थे। हृदय में मार्मिक व्यथा हो रही थी, पेट में भूख के मारे ज्वाला सी उठ रही थी, मुखविवर में रसहीन रसना दाँतों की क़तार से मिल रही थी। झरोखे के छेदों में तीक्ष्ण हिमवायु ने आकर उसके शरीर को नीला कर दिया था, ऐसे समय में स्त्री के मुँह से एक प्याला चाय की बात से उसके तेजहीन शरीर में नवीन शक्ति का सञ्चार हो आया।

स्वामी की करुण-दृष्टि मेग की निगाह से न बच सकी, उसने इसका अर्थ समझ लिया। एक-मात्र कन्या के शोक से उसके हृदय को बड़ा धक्का लगा था। इस पर स्वामी की ऐसी हृदय-विदारक अवस्था हो रही थी। अपने हृदय में कठोर यन्त्रणा के होते हुए भी बालसूर्य की क्षीण किरणों की तरह उसके हृदय में एक आशा की झलक दिखलाई पड़ी—भूखे रहे, भूख-प्यास से छटपटाते, रोगी पति को एक प्याला चाय देकर क्षण भर के लिए भी उसके हृदय में शान्ति स्थापित कर सकूँगी। चाहे जिस तरह हो, एक प्याला चाय ज़रूर लाऊँगी।

जेम के रोग के बढ़ने के साथ ही मेग की मामूली वेषभूषा की चीज़ें तथा गृहस्थी का सामान आदि सब बिक गये थे। अब और कोई ऐसी चीज़ नहीं रह गई थी जिसे बेचकर एक पैसा भी प्राप्त हो सके। तो भी मेग ने प्रतिज्ञा की कि चाहे जिस उपाय से हो, स्वामी को एक प्याला चाय अवश्य लाकर दूँगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके एक दिन पहले मकान-मालिक ने मकान के किराये के लिए उसे बहुत तंग किया था। बिना किराया दिये वे मकान से निकाल दिये जायँगे, इस डर से जो कुछ घर में रह गया था उसे मकानवाले के हवाले कर उससे उसने किसी तरह अपना पिंड छुड़ाया था। इस समय घर में कानी कौड़ी तक नहीं थी।

कल से मेग ने कुछ नहीं खाया था। उसकी प्राणों से प्यारी लड़की ने भूख की ज्वाला से रोते रोते माता की गोद में आँखें मूँद ली थीं। अभागिनी माता उसके मुँह में कुछ नहीं दे सकी थी। वह कुछ देर तक माता के दुबले हाथों पर शान्तभाव से सोई रही। जब प्रातःकाल के क्षीण प्रकाश की रेखा वारा के प्रगाढ़ अन्धकार को भेद कर बालिका के कुम्हलाये हुए चेहरे पर पड़ी तब मेग को मालूम हुआ कि उसके स्नेह का चिराग़ सदा के लिए बुझ गया है।

जेम बिछौने पर पड़ा छटपटा रहा था। कभी कभी घोर निद्रा में अंट शंट बोलने लगता था। फिर कभी पूर्व-स्मृति उसके हृदय में जागृत हो उठती थी। वह कहता--क्या उसके सुख के दिन चले गये? जिस समय उसकी एक छोटी दूकान थी, खरीदनेवाले आकर कितनी इज्ज़त के साथ मेग को पुकारा करते थे। प्राणप्यारी मेग मेरे हृदय में अपनी अपूर्व सुन्दरता से आनन्द-सुधा ढालती थी। एक दिन रविवार को हम लोग 'ग्रीन लेन' से होकर जा रहे थे, सबकी चञ्चल दृष्टि मेग के चेहरे पर पड़ी थी, उससे मेरी छाती गर्व से फूल उठी थी। हाय! इन बातों को हुए बहुत दिन हो गये!

जेम ने पहले पचास पौंड ऋण लेकर रोज़गार शुरू किया था। उसका खूब विज्ञापन भी किया। लेकिन दुर्भाग्य से अस्वस्थ हो जाने से व्यवसाय पर अच्छी तरह से निगाह न रख सका। महाजन की क़िस्त बाक़ी पड़ गई! उस अर्थ-पिशाच ने मौक़ा देखकर बाक़ी बीस पौंड के लिए जेम की सारी जायदाद हथिया ली।

अब जीवन का घोर सङ्ग्राम आरम्भ हुआ बेचारा जेम क्या करे? दिन दिन उसका शरीर क्षीण होने लगा। उसकी दशा बड़ी शोचनीय हो गई। यहाँ तक कि वह तीन शिलिंग प्रतिसप्ताह के किराये पर ऐसी गंदी जगह में मकान लेकर मृत्यु यन्त्रणा का अनुभव करने लगा।

पहले जेम ने थियेटरवालों का विज्ञापन ढोकर थोड़ा-बहुत कमाया। थियेटर का मालिक दिन में उसे पहनने के लिए कपड़े दिया करता, शाम होने पर जब कड़ाके का जाड़ा पड़ने लगता तब उस अभागे को अपनी उस पोशाक को उतार कर स्वामी के हाथ में दे देना पड़ता और अपने फटे पुराने कोट को पहन कर घर की ओर लौटना पड़ता था। इस प्रकार रहने से वह बीमार हो गया और अन्त में उठने-बैठने से लाचार होकर मौत का इन्तिज़ार करने लगा। गले से कफ की अधिकता से घर्घर शब्द सुन पड़ता, मैले-कुचैले बिस्तरे पर पड़े रहने से उसका हृदय दुर्बल और शरीर निस्तेज हो गया। अन्त में मेग को कमाने के लिए घर से बाहर निकलना पड़ा। जेम दुर्बल हाथों से लड़की की सेवा किया करता।

मेग बहुत प्रयत्न करने पर थोड़ा-बहुत कमा लेती। इससे भला किस तरह काम चलता! जेम को उपयुक्त पथ्य जुटाने के लिए वह अपने शरीर के गहने एक एक करके बंधक रखने लगी। अच्छी पोशाक न पहनने के कारण उसकी नौकरी जाती रही, क्योंकि ऐसी दशा में कोई भला आदमी उसे घर में किस तरह घुसने देता!

तब वे भूख-प्यास से छटपटाने लगे। दुर्भाग्य मानो हाथ धोकर उनके पीछे पड़ गया था।

इस बार कन्या ने बुख़ार से पीड़ित हो कर चारपाई की शरण ली। दुर्गन्ध-पूर्ण सीलवाले मकान के कोने में भग्नहृदय पति का जीवन-प्रदीप क्षीण होता जा रहा था। इसी से उस साध्वी ने विपत्ति की आशङ्का से लड़की के बीमार होने की बात जेम से न कही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूख से व्याकुल होने पर जेम भोजन नहीं चाहता था। वह कहता, मुझे खाने की इच्छा नहीं, खाने से ही तो मेरा रोग बढ़ता जाता है। वह भूख के कठोर आक्रमण को चुपचाप सहने लगा, लेकिन प्यास की प्रबलता उसे व्याकुल कर देती।

जेम के पानी माँगने पर मेग उदास मुँह होकर बग़ल में रक्खे हुए बर्तन में से जल लाकर देती। क्या करे, इसके लिए उसके पास कोई उपाय न था। असंख्य कीटाणुओं से भरे दूषित जल को मरणोन्मुख स्वामी के होठों पर धरते समय मेग की छाती फटने लगती। वह सोचती, भगवान् अपनी असीम करुणाराशि को स्वच्छ निर्मल जल के रूप में मुक्त-रूप से ढाल देते हैं, किन्तु निष्ठुर मनुष्य उसे अभिशाप की तरह भयङ्कर कर देता है। जेम दुर्गन्धि-पूर्ण जल के पात्र से अपना मुँह फिरा लेता। तब मेग कह उठती, चाय पिओगे? वह कन्या के शरीर से कपड़े उतार और उन्हें बंधक रखकर पास की चाय की दूकान से चाय ले आती। मरता हुआ पिता प्यास से छटपटा रहा है, यह समझ कर वह बच्ची प्रसन्न मन हो अपने कपड़े दे देती। मेग उस विष-तुल्य चाय का एक बूँद भी खुद स्पर्श करना न चाहती।

घर में न तो कोयला रहता, न आग और न जल, जिससे मेग अपनी प्यास बुझा सकती। चाय पी लेने पर जेम को कुछ देर के लिए ताक़त आ जाती। पीने से बची हुई चाय को जबर्दस्ती मेग को पिला कर उसके सूखे हुए गाल का वह बार बार चुम्बन करता।

× × ×

आज भी मेग ने देखा कि स्वामी प्यास से छटपटा रहे हैं। आज भी उन्हें एक प्याला चाय देने के लिए उसने वादा किया।

स्वामी की और अपनी भूख मिटाने के लिए वह अपने शरीर का सारा गहना बेच चुकी थी, अब उसके पास कुछ नहीं रह गया था। जाड़े के आक्रमण से बचने के लिए एक-मात्र पुराने फलालैन का जैकेट भर रह गया था, इसे मेग ने अपने स्वामी से पुरस्कार-स्वरूप पाया था।

मेग ने आँखों में आँसू भर कर मरी हुई लड़की को एक फटे वस्त्र से ढँक दिया और स्वामी के निष्प्रभ गालों को चूम कर बाहर की बर्फ़ीले समुद्र से ठंडी सड़क की ओर चल पड़ी।

दरवाज़े के सामने खड़ी होकर मेग ने कहा—प्यारे, मैं अभी लौटती हूँ। यह कहकर वह फुर्ती से घर के बाहर होगई। बाग़ के एक अन्धकार से भरे स्थान में जाकर जैकेट को शरीर से निकाला और एक फटे काग़ज़ में लपेट कर ग़रीबों के अन्तिम आश्रय-स्थल उस महाजन की दूकान को चली। शङ्का से काँपते हुए हृदय से मेग ने दूकान में प्रवेश किया—अगर दूकानदार इस पुरानी चीज़ को बन्धक रखने के लिए राज़ी न हो तब।

दूकानदार मेग को पहचानता था, क्योंकि वह कई बार इस दूकान पर अपनी चीज़ें बन्धक रख चुकी थी। उस दूकानदार को इस बात का अच्छा अनुभव हो चुका था कि कौन आदमी अपव्यय के कारण चीज़ें बन्धक रखता है और कौन दरिद्रता के प्रकोप से पीड़ित होकर रखता है। मेग को देख कर उसका हृदय भर आया। उसने काग़ज़ को फाड़कर उस चीज़ को देखा और मीठे स्वर में पूछा—आप कितना चाहती हैं?

मेग ने उत्साहित होकर कहा—आप जितना ज़्यादा दे सकें। यह कहकर उत्कण्ठित होकर उसके उत्तर की प्रतीक्षा में खड़ी रही।

दूकानदार ने अभागिनी के वेदना-कातर चेहरे पर एक करुण दृष्टि डाल कर जँगले पर जमे हुए बर्फ़ की ओर निगाह डाली। दूसरे ही क्षण चटपट एक टिकट लिखकर उसे मेग के हाथ में दिया और जैकेट को और चीज़ों में रख दिया।

वह मेग के रुपये के लिए ख़ज़ांची के पास न गया। अपने कोट के पाकेट से एक अर्द्धक्राउन निकाल कर सामने की मेज़ पर रखकर बोला—यह अपनी रक़म लीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेग के पीछे नशे में चूर एक आइरिश स्त्री अपने हाथ में कपड़ों की एक पोटली लिये खड़ी थी। दूकानदार ने उसकी ओर मुड़ कर पूछा—आपको क्या चाहिए?

मेग को पहले इसका स्वप्न में भी ख़याल न था कि एक पुराने और मैले जैकेट के लिए दूकानदार आधा क्राउन देगा। गोलमोल शब्दों में दो-एक बातें कहकर वह दूकान से बाहर हुई। उसका क्षुद्र हृदय सुखोच्छ्वास से भर गया और उसके श्रीहीन दोनों गाल आनन्द के आँसुओं की अविरल धारा से भीग गये।

इस आनन्द का यथेष्ट कारण था। मेग ने कभी कल्पना तक न की थी कि ऐसे जैकेट के बदले में दूकानदार उसे इतनी क़ीमत देगा। उसने समझा कि करुणा-समुद्र परमेश्वर ने उसके दुःख से सहानुभूति प्रकट करने के लिए दूकानदार के हृदय को इतना कोमल कर दिया है। मेग रास्ते में ऊपर आँखें करके हाथ जोड़ कर उदारमना दूकानदार की शुभ कामना कर क्षीण और कोमल स्वर में भगवान् के चरणों में आशीर्वाद की भीख माँग कर फिर चलने लगी। एक पतले गाउन और पेवन्दों से भरी हुई पोशाक को छोड़कर उसके शरीर में उस समय और कुछ न था।

कितनी भयानक सर्दी थी! मेग के शरीर के रोंगटे खड़े हो गये। कई रात से उसे जागते ही बीता था। दूसरे कई दिन से कुछ खाया भी न था। इस पर जाड़े की हवा। वह बिलकुल संज्ञाहीन हो रही थी। उसने एक बार सोचा, अब न सहा जायगा, रास्ते की बर्फ़ की ढेरी और कठोर हिमवायु के साथ वह और अधिक युद्ध न कर सकेगी। दूसरे ही क्षण निर्जन घर के कोने में रोगी और व्याकुल पति के उदास चेहरे की छबि बिजली की तरह उसके हृदय में कौंध गई, फिर वह कष्ट से प्राप्त रुपये को ज़ोरों से मुट्ठी में बाँध कर कमज़ोर पैरों से दुगुने साहस के साथ जल्दी जल्दी चलने लगी।

मेग ने सोचा, अब केवल थोड़ा ही और चलने है। उसका खुला हुआ ललाट तीक्ष्ण हिमवायु के निष्ठुर स्पर्श से सुन्न पड़ गया था। घर और रास्ते के लोग मानो उसे बड़े ग़ौर से घूर रहे थे। चारों तरफ़ की बर्फ़ की ढेरी उसकी आँखों में एक सफ़ेद वृत्त-खण्ड की तरह जान पड़ने लगी और रास्ते के लोग स्याही की छोटी छोटी बूँदों की तरह मालूम पड़ने लगे।

मेग अवसन्नदेह होकर एक पुराने रेलिंग को पकड़े बहुत मुश्किल से खड़ी रही। उसे पृथ्वी अन्धकार-मय दिखाई पड़ रही थी। इतने में उसे फिर जेम की सूरत याद पड़ गई। वह और खड़ी न रह सकी। उस समय उसके पैरों के नीचे की धरती समुद्र की तरह हिल-डुल रही थी। वह मानो आकाश से बढ़कर हलकी हो क्रमशः आकाश की ओर उड़ती चली जा रही थी! प्रकृति का प्रत्येक अङ्ग मानो आनन्द से नाच उठता था!

मेग ने अस्फुट स्वर में पुकारा—जेम जे—।

स्वामी का आधा कहा हुआ नाम उसके होठों में मिल गया। उसका छोटा मस्तक छाती पर लुढ़क गया। बर्फ़ से ढँकी सड़क पर फटे पुराने वस्त्रों की ढेरी पर वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ी, प्राणों से भी प्यारी मुद्रा उसकी मुट्ठी से छूट कर मोरी में जा गिरी।

पुलिस का कर्मचारी दौड़ा हुआ आकर उसे बुलाने लगा, लेकिन उसे कोई उत्तर न मिला। केवल वस्त्रों की ढेरी में से श्वास लेने की धीमी आवाज़ सुनाई पड़ती थी। उसके चारों तरफ़ लोग घेर कर खड़े हो गये। एक भला आदमी जनता की भीड़ को चीर कर आगे बढ़ा और उसने पूछा—क्या बात है?

पुलिस-कर्मचारी ने कहा—एक स्त्री है।

"मतवाली है?"

"मेरा भी विश्वास है।"

पुलिस-कर्मचारी ने उसे उठाने की कोशिश की, किन्तु उसके नेत्र फिर न खुले। उसके हाथ को धरकर ऊपर उठाते ही जैकेट के बन्धक का टिकट ज़मीन पर गिर पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस का कर्मचारी उसे पढ़ कर बोल उठा—ओह समझ गया, चार पेंस पर अपना जैकट बन्धक रखकर इसने ज़रूर शराब पी है।

वृद्ध भद्रपुरुष कुछ दुःखभरी आवाज़ में बोला—सर्वनाश। भयानक घटना है। ग़रीब लोग आगा-पीछा बिलकुल नहीं सोचते।

एक रिक्सागाड़ी लाई गई और मेग शराब के नशे में बेहोश समझी जाकर अस्पताल की बन्द छोटी कोठरी में रखने को भेज दी गई।

पुलिस के डाक्टर ने आकर इन्स्पेक्टर के साथ आग की अँगीठी के पास बैठ कर गप लड़ाना शुरू किया। हठात् इन्स्पेक्टर को उस स्त्री की याद आ गई। वह व्यग्र होकर बोला—डाक्टर आज एक मतवाली स्त्री बेहोशी की हालत में यहाँ लाई गई है। कृपा करके आप उसे एक बार परीक्षा करके देखिए तो सही!

डाक्टर मेग को देखने के लिए गया। देखते ही समझ गया कि अभागिनी का जीवन-प्रदीप बुझ गया है। अनशन-क्लेश और बर्फ़ के हाथों में दुःखिनी ने अपने को चिर काल के लिए आत्म-समर्पण कर दिया है।

उस दिन सन्ध्या-समय भोजन के समय वह वृद्ध दूकानदार अपनी स्त्री से मेग के जैकेट की बात कर रहा था और उसकी अदूरदर्शिता की आलोचना कर रहा था। इधर थोड़ी ही दूर पर अस्पताल के अँधेरे घर में मेग बर्फ़ की तरह ठंडी होकर नेत्र खोले पड़ी हुई थी।

× × ×

जेम देर तक मेग का रास्ता देखता रहा। सूर्य की क्षीण किरणें सन्ध्या के अंधकार में मिल गईं तब तक मेग नहीं लौटी। उसने क्षीण कंठ से दो-एक बार उसे पुकारा भी, किन्तु उसे कोई उत्तर न मिला। बीच बीच में उसे झपकी-सी लग आती, लेकिन फिर मानो मेग के निःश्वास-शब्द से चौंक कर वह बार बार दरवाज़े की ओर आँखें फाड़ फाड़ कर देखने लगता।

जेम ने धीरे से अपने शरीर पर पड़े हुए ओढ़ने को हटाकर बहुत मुश्किल से रेंगता हुआ अन्धकार-पूर्ण धूल से भरे फ़र्श के प्रायः सभी स्थल को ढूँढ़ा, लेकिन कहीं पर मेग का पता न चला। हठात् कन्या के मृत शरीर पर जो बर्फ़ की तरह ठंडा हो रहा था, उसका हाथ पड़ा। हृदय की दुर्बलता के साथ भयानक आशंका भी मिल गई, उसकी देह के रोयें डर के मारे खड़े हो गये। वह अकेला मृत्यु के साथ है! उसने पुकारा—मेग, मेग, तुम कहाँ हो?

जेम को डर मालूम होने लगा कि कोई बड़ी दुर्घटना घटित हुई है। सम्भव है, इस जीवन में प्राण-प्यारी से भेंट न हो सके। उसने सोचा—हे भगवन, अगर मेग मर गई है तो क्या मैं संसार में अकेला रहूँगा। क्षण क्षण में इस तरह आसन्न मृत्यु की कठोर यन्त्रणा सहते हुए क्या वह अकेला ही रहेगा? उसे अन्तिम बिदा देने के लिए क्या कोई नहीं रह गया?

जेम अस्थिर हो गया। पास ही अपनी सन्तान की मृत देह की कल्पना कर डर के मारे वह काँप उठता। अन्त में उसने निश्चय किया कि बाहर जाकर मेग को ढूँढ़ूँ। उसका हिताहित ज्ञान उस समय लुप्त हो गया था—दुःख, निराशा और भय से वह पागल हो रहा था।

सामयिक उत्तेजना के प्रबल वेग से जेम की लुप्त शक्ति उसके प्रत्येक अङ्ग में जागृत हो उठी। उसके शरीर में कई एक फटे वस्त्र थे। उसने घर के कोने में से दो-चार फटी गुदड़ियाँ लेकर शरीर पर डाल लीं और तंग गली से आगे बढ़ा। बाग़ के दो-चार आदमियों ने उसे बाहर जाते देखा। उनमें से एक बोला—उस आदमी को बुख़ार ने अच्छी तरह पकड़ लिया है। उसे कोई जानता है? उसे कोई पहचानता नहीं था, इसलिए किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

उस बाग़ में प्रायः इस प्रकार के रोगी दिखलाई पड़ते थे—कोई शराब के नशे में चिल्लाता तो कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तव में रोग के प्रभाव से। इसलिए बाग़ में जेम के पुकारने अथवा उसकी उन्मत्तावस्था को देखकर कोई टस से मस न हुआ। बाग़ को पारकर वह रास्ते पर आया। 'मेग' 'मेग' कहता हुआ वह आगे बढ़ा। एक पुलिस-कर्मचारी ने उसका चिल्लाना सुनकर पीछा किया।

जेम पागल की तरह फटे-पुराने कपड़े पहने शरीर को आधा खुले रक्खे बे-तहाशा चला जा रहा था। कभी सामने को बढ़ता तो कभी पीछे को लौट जाता। रास्ते के लोग उसके लिए रास्ता छोड़ देते। पुलिस-कर्मचारी इस अद्भुत दृश्य को देखकर स्तम्भित हो गया। उसने जेम के पास जाकर उसका हाथ पकड़ लिया। इतने में करुणस्वर में एक विकट चीत्कार कर छिन्नमूल पेड़ की तरह वह रास्ते की मोड़ पर गिर पड़ा।

ठीक उसी समय एक गाड़ी भारी बोझ लिये मोड़ पर फिर रही थी। पुलिस-कर्मचारी चिल्ला उठा, सर्वनाश हो गया, बेचारा पिस गया! आज दो भयानक घटनायें घटित हुईं। यह भी मतवाला ही जान पड़ता है। अस्पताल में मरी पड़ी हुई स्त्री के बग़ल में रखने के लिए इस मतवाले का भी उसने चालान किया।

× × ×

अस्पताल के शव-गृह के एकान्त कमरे में स्वामी-स्त्री आस-पास सो रहे थे। घटना-वैचित्र्य से दोनों मृत्यु की गोद में फिर मिल गये थे।

कोई उनका परिचय न जान सका। भला कौन ऐसा था जो नीचकुल में उत्पन्न घृणित लोगों की खोज करने में अपना समय नष्ट करता!

कुछ दिनों के बाद स्थानीय समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ कि 'बंडर गार्डेन' के एक सुनसान और दुर्गन्धभरे कमरे में स्वजन लोगों से छोड़ दी गई एक बालिका की लाश पाई गई है। वे अभागे कितने पापी हैं।*

—गणेश पाण्डेय

*एक अँगरेज़ी कहानी का रूपान्तर।

प्राचीन आर्यवीरता

के विषय में देखिए प्रसिद्ध पत्र "प्रताप" की क्या सम्मति है:—

"पुस्तक नागरी-प्रचारिणी सभा की मनोरञ्जन-पुस्तकमाला की ४९ वीं पुस्तक है। इसमें राजपूताने के महाराना प्रतापसिंह, पृथ्वीराज चौहान, भीमसिंह, हम्मीरसिंह, चूड़ा, राजसिंह, दुर्गादास आदि १४ वीरों के चरित्र दिये गये हैं। वीरों का चरित्र-चित्रण अच्छे ढंग से किया गया है और उनकी वीरता एवं साहसपूर्ण कार्यों को पढ़कर हृदय में वीर-रस का संचार हो उठता है। लड़कों के अभिभावकों तथा माता-पिताओं को चाहिए कि वे उन्हें ऐसी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया करें।

२१० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजपुरी

[भोजपुरी बिहार के एक प्रसिद्ध भूखण्ड की बोली है। इस लेख के विद्वान् लेखक ने उसी का विस्तार से विवेचन किया है और यह सिद्ध किया है कि 'भोजपुरी' का सम्बन्ध 'बिहारी' की अपेक्षा 'अवधी' से अधिक है।]

भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास के गवेषणा-पूर्ण अध्ययन से यह पता चलता है कि हिन्दुओं की सभ्यता और आर्यों की धार्मिक तथा सामाजिक संस्कृति का विकास क्रमशः पश्चिम से पूर्व की ओर हुआ है। आर्य लोग काबुल और सिन्ध की तराइयों से आकर पंजाब में बसे थे। इसके अतिरिक्त स्वयं वेद के मन्त्रों से भी यह सिद्ध होता है कि इन आर्यों पर कई नये आगन्तुकों के अनेक आक्रमण हुए थे और दोनों दलों में कई बार भयंकर युद्ध भी हुए थे। दूसरे दल के लोग किस मार्ग से आये थे, इसका निश्चय करना कठिन है, किन्तु अनुमान किया जाता है कि ये लोग लद्दाख या गिलगित्त और चितराल की ओर से आये होंगे। पंजाब से लोग आर्यावर्त—मध्यदेश, साकेत, काशी, मिथिला, अंग, वंग, कलिङ्ग तथा मगध में फैल गये। उनके इस प्रकार देश में फैल कर बसने के साथ साथ उनमें तरह तरह के परिवर्तन होते गये। उदाहरण-स्वरूप भाषा को लीजिए। पहले वैदिक प्राकृत बोली जाती थी, फिर प्राचीन प्राकृत, फिर अपभ्रंश और आधुनिक हिन्दी, बंगला, महाराष्ट्री, गुजराती प्रभृति भाषाओं की मूल देशी बोलियाँ बोली जाती रहीं। किन्तु आदि-भाषा का स्वरूप बोलचाल के आकार में आकर आजकल की प्रान्तीय बोलियों के ढाँचे में वर्तमान है। प्राचीन बोली की आदि-प्राकृत-भाषा का सिलसिला अभी ज्यों का त्यों जारी है। चार प्राकृतों और नागर, उपनागर तथा त्राचड़ बोलियों की बढ़ती इसी क्रम से हुई और वे भी समय पाकर शब्द-शास्त्र के कड़े नियमों से जकड़ दी गईं। इतिहास यह भी बतलाता है कि मालवा तथा उज्जैन से परमार-वंशी राजपूत लोग मुसलमानी सलतनत के आरम्भ-काल में ही बिहार में आये थे। उन लोगों ने उज्जैन की चाल को क़ायम रखने की पूरी चेष्टा की थी। भोजपुर ग्राम को आबाद कर प्रमरवंशावतंस उज्जैन-भूषण भोजराज की स्मृति को उन लोगों ने बनाये रक्खा। उनकी बोलियों में भी परिवर्तन हुआ होगा। आधुनिक प्रचलित भाषाओं का संकेत ईसा की चौदहवीं सदी में मिलता है। कबीरदास ने पूर्वी बोली का भी नाम लिया है। इससे अनुमान किया जाता है कि चौदहवीं सदी के पूर्व ही प्रान्तीय बोलियों का प्रचार हो गया था। स्थान के नामों से बोलियाँ प्रसिद्ध हुईं।

ब्रज की बोली ब्रजभाषा, अवध की बोली अवधी, महाराष्ट्र की मराठी, गुजरात की गुजराती, मगध की मगही, मिथिला की मैथिली, बंगाल की बँगला, उड़ीसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उड़िया, नेपाल की नेपाली (कूड़ा) आदि बोलियाँ स्थानों के नाम से ही विख्यात हुईं। बोलियों का विकास और वृद्धि भी क्रमशः मनुष्यों की सभ्यता, वृद्धि और देश-परिवर्तन के साथ ही साथ पश्चिम से पूर्व की ओर हुई है। व्रजभाषा न लाहौर में बोली जाती है, न बम्बई या काश्मीर में। अवधी बोली का प्रचार न पंजाब में है, न मथुरा में। किन्तु भोजपुरी पूर्व में कम बोली जाती है 'भोजपुर' के पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में विशेषरूप से बोली जाती है। शाहाबाद और छपरा ज़िले के बाद मगही और मैथिली बोलियाँ आरम्भ हो जाती हैं। 'भोजपुरी' पश्चिम में बहराइच से लेकर गोरखपुर तक और बनारस से लेकर राँची तक बोली जाती है। इसका कारण क्या है?

यह बात तो हो नहीं सकती कि लोग इधर से ही पश्चिम की ओर गये हों। अनार्यों का पूर्व से पश्चिम को जाना कहीं कहीं मिलता है, किन्तु यह बात बहुत पुरानी है। फिर भी यह सिद्धान्त अभी तक प्रमाणित नहीं हुआ है। यदि अनार्यों के पूर्व से पश्चिम को जाने की बात मान भी लें तो उस समय 'भोजपुर' की स्थिति का पता लगाना आवश्यक है। 'भोजपुर'-परगना या मण्डल को निश्चित हुए कोई नौ सौ वर्ष से अधिक न हुए होंगे। जो जातियाँ छपरा, आरा और बलिया में फैली हुई हैं वे सब अपने को प्रयाग या बनारस ज़िले से आई हुई बतलाती हैं। इतिहास से यह भी पता चलता है कि बलिया, बक्सर, भोजपुर, भभुआ, सहसराम प्रभृति स्थान काशीराज्य के अन्तर्गत रहते आये हैं। शेरशाह के समय भोजपुर-मण्डल के विद्यमान रहने के प्रमाण भी उपलब्ध हुए हैं। भोजपुर के राजा जगतदेव जिनकी राजधानी बक्सर थी और जो भोजपुर के राजा कहलाते थे, हुमायूँ से लड़ने में शेरशाह को बड़ी सहायता पहुँचाई थी। मलिकमुहम्मद जायसी उनके यहाँ बराबर आया-जाया करते थे। आज-कल भोजपुर के राजा महाराज डुमराँव हैं, जिनकी राजधानी डुमराँव है। काशी के राजा चेतसिंह के ज़माने में बक्सर का क़िला काशी-राज्य के अन्तर्गत था। काशी-राज्य वास्तव में लखनऊ के नवाबों की अधीनता में था और मनसाराम पाँड़े के समय में काशी-राज्य की नींव पड़ी। अब इस ऐतिहासिक आधार पर भोजपुरी बोली का क्षेत्र स्थिर किया जा सकता है। प्रयाग से लेकर सोन-नदी तक और नैपाल की तराई से लेकर दक्षिण-भारत तक 'भोजपुरी' बोली जाती थी और आज भी बोली जाती है। मेरा अनुमान है कि अर्द्धमागधी अपभ्रंश का यही स्थान है और यहीं की भाषा और बोलियाँ अवधी तथा भोजपुरी हैं। इस भाषा की वैज्ञानिक तुलनात्मक मीमांसा मैंने अवधी और भोजपुरी की क्रियाओं, संज्ञाओं, अव्ययों और सर्वनामों के अनेक प्रमाण और उदाहरण देकर सन् १९२८ की फ़रवरी की 'सुधा' में कर दी है। वहाँ यह सिद्ध करने की चेष्टा भी की है कि 'भोजपुरी' अवधी की एक बोली है। इस ऐतिहासिक विवेचन में भी यही बात प्रदर्शित की गई है। इसको मागधी अपभ्रंश के अन्तर्गत रखकर जार्ज ग्रियर्सन ने बड़ी भूल की है। उन्होंने लिखा भी है कि भोजपुरी पश्चिम की बोली मालूम होती है। यही नहीं, 'अन्धेन नीयमानः अन्धः' के अनुसार कितने ही अन्य विद्वान् भी इसे हिन्दी न मान कर, मगही की एक बोली लिखते आये हैं। अस्तु, यहाँ जो मेरा कहना है वह यदि यौक्तिक और प्रामाणिक सिद्धान्तों की नींव पर अवलम्बित है तो ग्राह्य हो, अन्यथा नहीं। मेरा विचार हार्नली के सिद्धान्त से भी मिलता है। वे भी 'भोजपुरी' को 'पूर्वी' हिन्दी के अन्तर्गत मानते हैं। यदि हार्नली का सिद्धान्त माना जाय तो भोजपुरी 'अर्द्ध-मागधी' अपभ्रंश की एक बोली सिद्ध होती है। अस्तु, इसके भौगोलिक विस्तार का महत्त्व और सच्चा स्वरूप क्या है, यह यहाँ बतलाया गया है।

शुद्ध भोजपुरी बलिया, आरा और गाज़ीपुर में बोली जाती है। भोजपुरी का यह एक प्रधान गुण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि यह व्याकरण के क्लिष्ट नियमों से नहीं जकड़ी हुई है और सुविधा से आवश्यकतानुसार इसमें परिवर्तन किये जा सकते हैं। अवधी और भोजपुरी के सुबन्त और तिङन्त पदों में तो नाम-मात्र का भी भेद नहीं है। भोजपुर का एक गँवार भी गोस्वामी-जी के उन काव्यों का चटपट अर्थ कर लेता है जिसमें व्रज के विद्वान् तक चकरा जाते हैं। मागधी प्राकृत और मागधी अपभ्रंश का प्रभाव 'भोजपुरी' पर छू तक नहीं गया है। क्या जाइन छी, जाइचे, जाऊ छन्ति और जात हई में कुछ भी भेद नहीं मालूम होता है?

भोजपुरी बोली वीरों की भाषा है। इसके बोलने-वाले मैथिली और मगही बोलनेवालों के समान अनुदार नहीं होते। ये साहसी, दिलेर और क्रिया-शील होते हैं। कहीं भी इन्हें छोड़ दीजिए, ये अपने को अवस्था के अनुकूल बना लेंगे। बँगला और भोजपुरी बोलनेवालों ने हिन्दुस्तान को सभ्य बनाया है। लेखनी के बल से बंगालियों ने और डंडे के बल से भोजपुरियों ने। भोजपुरी व्यावहारिक भाषा है और बोल-चाल तथा व्यापारिक कार्य के लिए अत्यन्त उपयुक्त है। अपने, आप, रउरा, रौरा, रौआँ का प्रयोग 'अपने' के अर्थ में होता है। भोजपुर के रहने-वाले मैथिलों तथा मगहियों से बिलकुल भिन्न हैं। ये लम्बे, हाड़-काठ के मजबूत, लम्बी नाकवाले और रक्त वर्ण के होते हैं। इनमें आर्यों के शारीरिक चिह्न स्पष्ट लक्षित होते हैं। ये युद्धप्रिय और लड़ाकू होते हैं। भोजपुरी के बोलनेवाले समग्र भारत में विशेषकर बङ्गाल, आसाम, ब्रह्मा, फ़ीजी मारीशस, ट्रीनीडाड और दक्षिणी अफ़्रीका में फैले हुए हैं।*

भोजपुरी उत्तर में नैपाल की तराई, बस्ती, चम्पारन और जनकपुर तक, दक्षिण में राँची, मान-भूम और सिंधभूम की सरहद तक, पश्चिम में मिर्ज़ा-पुर, फ़ैज़ाबाद, गोंडा, बहराइच तक और पूर्व में पटना तथा मुज़फ़्फ़रपुर के ज़िलों तक बोली जाती है। भोज-पुरी के मुख्य पाँच भेद हैं—(क) शुद्ध भोजपुरी, (ख) पश्चिमी भोजपुरी, (ग) नागपुरिया, (घ) थारू, (ङ) मधेशी।

शुद्ध भोजपुरी आरा, बलिया, छपरा, गाज़ीपुर और घाघरा तथा गण्डक की भूमि में बोली जाती है। पश्चिमी भोजपुरी गाज़ीपुर (आधा), बनारस, गोरखपुर, आज़मगढ़, बस्ती, मिर्ज़ापुर, जौनपुर आदि ज़िलों में बोली जाती है। नागपुरिया राँची, पलामऊ, छोटा नागपुर के ज़िलों में कुछ हेर-फेर के साथ बोली जाती है। मधेशी चम्पारन में और थारू भोजपुरी बहराइच में बोली जाती है। बस्ती की बोली को 'सरवरिया' बोली भी कहते हैं। क्योंकि बस्ती सरयू के पार स्थित है। इसलिए वहाँ की बोली 'सरवरिया' कहलाती है। मुख्य भोजपुरी में भी दो भेद हैं। उत्तरी मुख्य और दक्षिणी मुख्य। गंगा के उत्तर में बलिया और छपरे की बोली उत्तरी मुख्य कहलाती है। इस पार दक्षिण में अर्थात् शाहाबाद की बोली दक्षिणी मुख्य कहलाती है। किन्तु बक्सर, डुमराँव और बलिया में जो बोली प्रचलित है वह शुद्ध परिमार्जित और सिद्ध (standard) भोज-पुरी है। छपरा के लोग 'बारे बारे', गाज़ीपुर के लोग 'बाटे', बलिया और शाहाबाद के लोग 'बाड़े' बोलते हैं। बलिया तथा भोजपुर की शुद्ध भोज-पुरी में प्रायः 'नूँ' लगाया जाता है। यह 'नूँ' भोज-पुरी का एक ख़ास गुण है। यह 'नूँ'* भोजपुरी बोली का ही चिह्न है।

शुद्ध भोजपुरी बड़ी मधुर है। व्रजभाषा के अतिरिक्त कोई भी बोली इतनी मधुर नहीं है। जार्ज ग्रियर्सन के भेद मुझे ठीक नहीं मालूम पड़ते हैं। ये भेद भाषा-विज्ञान तथा ऐतिहासिक दृष्टि-कोण से नहीं किये गये हैं, किन्तु परम्परागत बातों के अनुसार किये गये हैं। उनके भेद अग्र-लिखित रीति से किये हुए जान पड़ते हैं। मागधी अपभ्रंश की तीन भाषायें हैं—

* Ling Survey: G. Grierson Vol. V Part II.

* 'नूँ' आदि प्राकृत 'नू' का स्वरूप है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

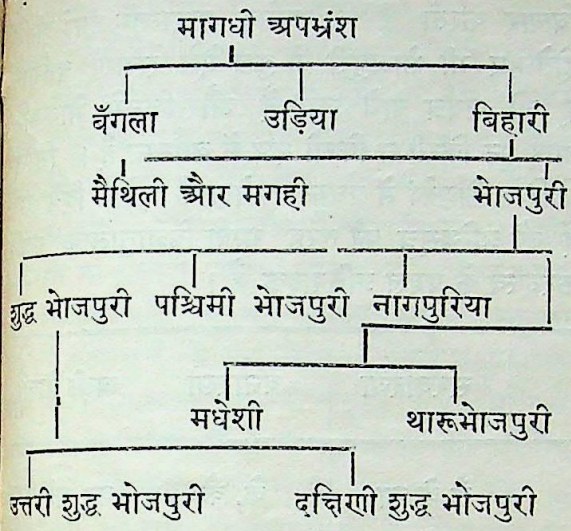

उन्होंने विहारी भाषाओं के मुख्य दो भेद किये हैं, जिनमें भोजपुरी एक है। मैथिली और मगही को भी उन्होंने दो बोलियाँ बतलाया है। किन्तु इन दोनों की समता दिखलाकर इन्हें भोजपुरी से एक-दम पृथक् और भिन्न लिखा है। मैंने एक दूसरा क्रम निश्चित किया है। मेरे विचार में वह ठीक भी जँचता है। वह भेद निम्न-लिखित है—

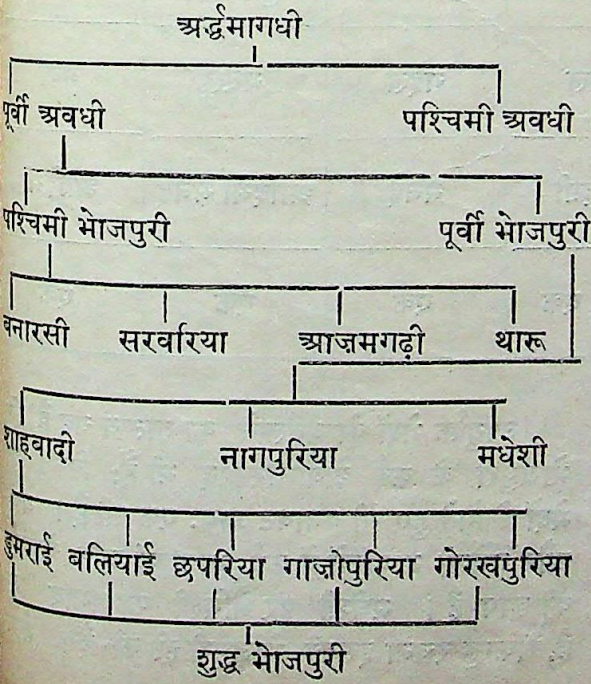

यदि इस प्रकार भेद किया जाय तो भोजपुरी के वैज्ञानिक अध्ययन में सुविधा होगी। यथार्थ में शुद्ध भोजपुरी डुमराँव, बक्सर, बलिया, छपरा, गाज़ीपुर और गोरखपुर की ही कही जा सकती है। इनमें भी भेद है, किन्तु बहुत सूक्ष्म और थोड़ा। डुमराई बोली लगभग सम्पूर्ण शाहाबाद में बोली जाती है। इसमें और बलिया की बोली में नाम-मात्र का भेद है। छपरा, गाज़ीपुर और गोरखपुर की बोलियाँ अवश्य कुछ भिन्न हैं, किन्तु इनकी भिन्नता दो बोलियाँ बनाने में समर्थ नहीं है। मैं कुछ उदाहरणों के द्वारा यह दिखलाने का विचार करता हूँ कि भोजपुरी मागधी बोलियों से एक-दम नहीं मिलती है और अवधी से विशेष रूप से मिलती है। इस कारण इसको अर्द्ध मागधी अपभ्रंश की एक बोली मानना उचित है।

*(क) भोजपुरी—एगो आदिमी के दुइ बेटा रहे। ओहमेसे छोटका बेटा अपना बापसे कहलसि कि ये बाबूजी! अन्नधन में जवन हमार बखरा होखे तवन बाँटि दीं।

(ख) अवधी—एक आदिमी के दो बेटा रहे। ओ मे से छोटा बेटा बापसे कहिसि कि दउआ चीज बतुस में जवन मोर बखरा होय तवन बाट दे। दूसरा उदाहरण—एक कोई आदमी का दूइ लरिका रहे। ओह मेसे लहुरका बेटा बाप से कहिसि कि ओ बावा, दौलत सम्पत्ति में जो हमार हिस्सा होय से हमको देद।

(ग) मैथिली—कोनो मनुख्य के दुई बेटा रहैन्हि। ओहसा छोटका बाप स कहल कैन्हि जी औ बाबू धन सम्पत्त स हमर हिस्सा होय से हमरा दीअ। तखन ओहुनका अपन सम्पत्ति बाँइट देल थिन्ह। दूसरा उदाहरण—कोए आदमी के दुइ बेटा छलै। छोटका अपना बापसे कहल कै कि हम्मर हिस्साधन बाएट देअ। ओकर बाप दूनो भाइ के धन बाएट देल कै।

* Linguistic Survey of G. Grierson Vol. V P. II.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप स्वयं विचार कर सकते हैं कि मैथिली या मगही से भोजपुरी मिलती है कि अवधी से। कहिसि, कहलसि; ओहमेसे, ओमेसे; एगो एक; रहे, रहे; हमार, हमार इत्यादि में समता है कि रहैन्हि, छलै, रहे; कौनो, एगो; आदिमी, मानुख्य; तब, तखन; बाँठि दी, बाएट दीअ में? इन्हीं कारणों से मैं भोजपुरी को अवधी के अन्तर्गत मानता हूँ। विचार करता हूँ कि अनेक अवान्तर उपभेदों के होते हुए भी भोजपुरी में कुछ ऐसे लक्षण वर्तमान हैं जो सर्वत्र पाये जाते हैं और जिनमें भोजपुरि-आई पुट किसी न किसी रूप में वर्तमान है। निम्न-लिखित कोष्ठकों में प्रधान उपभेदों के प्रयोग दिये गये हैं जो ग्रन्थिसूत्र की तरह भाषा विज्ञानात्मक एकीकरणत्व के प्रबल प्रतिपादक हैं।

शुद्ध भोजपुरी	नागपुरिया	मधेशी	थारू	सरवरिया	बनारसी	खड़ी बोली
का, के	के	के	के	कै के का	के, कै	का, की के
बेटा	बेटा	बेटा	बेटा	बेवटा	बेटवा	बेटा
खातिर	खातिर	लियला	लिये	वदे लिये	बदे	लिये के लिये
रहलस रहले रहे	रहैं	रहलइ	रहल	रहैं, रहलै	रहल रहलयँ रहुएँ रहलैं	रहा
गइल	गइल	गइलकइ	गयल	गइल	गएल	गया
आदिमी	अदमी	आदमी	आदमी	मनई	आदिमी मनई	आदिमी
एक, कवनो एगो	एगो	एक	एगो, एक	एक	एक	एक

उपभेदों के विषय में यही कहना अलम् होगा कि मेरे उपभेद भाषा की सूक्ष्म बातों के पता लगाने में सहायक होंगे, ये अधिक उपयुक्त हैं और ऐतिहासिक तथा भौगोलिक नींव पर अवलम्बित हैं।

अब मैं भोजपुरी के अवान्तर भेदों के कुछ साधारण प्रयोगों को उद्धृत कर यह दिखलाने का

उपर्युक्त भेदों को बतलाने का तात्पर्य यह है कि भोजपुरी के कई अवान्तर भेद भी हैं; किन्तु इन भेदों के होते हुए भी बनावट प्रायः एक सी है। थारू और मधेशी भाषाओं में कई भाषाओं और बोलियों की छाप है। मधेशी पर मैथिली का प्रभाव पड़ा है, किन्तु रचना इसकी भोजपुरी ही की है। थारू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर भी कई बोलियों का प्रभाव पड़ा है। पहाड़ी, भोजपुरी और अवधी के प्रभाव स्पष्टरूप से लक्षित हैं। किन्तु थारू की बनावट भोजपुरी की ही है। थारू के समान एक खिचड़ी बोली मैंने दरभंगा-ज़िले के सहैसा परगने में सुनी है। मालूम होता है कि वहाँ के लोग (मैथिल ब्राह्मणों के अतिरिक्त) थारू भोजपुरी या बिगड़ी अवधी बोलते हैं। सरैसा-परगना के ज़मींदारों का मूल-निवास संयुक्त-प्रान्त ही है। हो सकता है कि उन लोगों की बोली थारू भोजपुरी या बिगड़ी अवधी हो जो 'छिक्का छिक्की' बोली के संसर्ग से कुछ परिवर्तित हो गई है। जार्ज ग्रियर्सन ने भी लिखा है कि दरभंगा और मुज़फ्फ़रपुर के मुसलमानों की बोली 'जुलाहा बोली' है, जो अवधी या पश्चिमी भोजपुरी से विशेष मिलती है। जार्ज ग्रियर्सन ने 'जोलाहा बोली' को अवधी के अन्तर्गत रक्खा है, किन्तु यह विशेषरूप से पश्चिमी भोजपुरी से ही मिलती है। भोजपुरी संयुक्त-प्रान्त, छोटा नागपुर और बिहार के अतिरिक्त बाहर भी जहाँ जहाँ यहाँ के लोग गये हैं, बोली जाती है। इसकी तालिका नीचे दी जाती है। यह तालिका बहुत पुरानी है। मुझे नई तालिका नहीं मिली, इसलिए इसी को ग्रहण करना पड़ा।

† ज़िला	संख्या	ज़िला	संख्या
बर्दवान	१२८००	बाकरगंज	९०००
बाँकुरा	१६००	मैमनसिंह	२४८००
बीरभूम	९२००	चटगाँव	१२००
मिदनापुर	४०६००	नोआखाली	१६२०
हुगली	४९००	त्रिपुरा	२२००
हावड़ा	१९३००	भागलपुर	७४०४
चौबीसपरगना	२३०००	कटक	३५०
कलकत्ता	७१६००	पुरी	३४०
नदिया	३६०००	बालासोर	९२०
जैसोर	१५००	जाशपुर	२००
		कुल	३४६८७८

* Ling. Survey of G. Grierson Vol. IV.
† Ling. Survey of G. Grierson Vol. V.

ऊपर की संख्या मुझे कम मालूम होती है। यह संख्या सन् १८९८ ईसवी के पहले की है। मेरा अनुभव है कि कलकत्ते में भोजपुरियों की संख्या इस समय बहुत बढ़ गई है। कटक में तो उनका एक महल्ला ही बस गया है। कटक के बक्सी बाज़ार में आधे से अधिक भोजपुरी बोलनेवालों की संख्या है। विचित्रता तो वहाँ यह है कि वहाँ के हिन्दू-मुसलमान दोनों जो शाहाबाद और छपरा से गये हैं, अपनी ही बोली (भोजपुरी) बोलते हैं। व्यापारियों से ये लोग हिन्दुस्तानी बोलते हैं। 'हिन्दी' के लिए कोई प्रबन्ध नहीं है, यहाँ तक कि रावेन्सा कालेज और रावेन्सा कालेजियेट स्कूल में (सरकारी संस्थायें होने पर भी) हिन्दी के पढ़ाने का कोई प्रबन्ध नहीं है। कटक एक प्रकार से हिन्दी के लिए मरुस्थल है। ताता-कम्पनी में भोजपुरी बोलनेवालों की भरमार है। वहाँ एक डुमराँइ महल्ला बस गया है, जहाँ लोग 'खरी भोजपुरी' बोलते हैं। तीस वर्ष में इसका प्रचार बढ़ गया है। आसाम में इसके बोलनेवालों की पुरानी तालिका इस प्रकार है—

*ज़िला	संख्या	ज़िला	संख्या
कचरप्लेन	१८४००	सिवसागर	१०३००
सिलहट	१८५००	लक्ष्मीपुर	९०००
गोयलपारा	३१००	नागपहाड़ी	१३०
कामरूप	९००	खाशी और जयन्तिया	३५०
दारङ्ग	३२००	लुशाई पहाड़ी	५०
नवगंग	१८००		
		सम्पूर्ण	६५७३०

इसके अतिरिक्त लगभग तीन करोड़ मनुष्य भोजपुरी बोलते हैं, जो बिहार, संयुक्त-प्रान्त, छोटा नागपुर तथा नेपाल की तराई के स्थानों में बसे हुए हैं।

* Ling. Survey of G. Grierson Vol. V.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त-प्रान्त तथा बिहार के पंक्तिबद्ध सरयूपारीण ब्राह्मणों, उज्जैन क्षत्रियों, विद्वान् कायस्थों तथा लड़ाके भूमिहार ब्राह्मणों की यही बोली है। और जातियाँ भी बहुत हैं, किन्तु इन्हीं की बोली शुद्ध और सिद्ध है, क्योंकि यही लोग वहाँ के शासक और नेता हैं।

अब मैं अवधी और भोजपुरी के कुछ सदृश शब्दों को उद्धृत करता हूँ, जिससे यह और स्पष्ट हो जायगा कि अवधी और भोजपुरी अनेक अंशों में एक ही है।

❀ (१) संख्या शब्द—एक, दू, तीन, चार, पाँच, छ, सात, आठ, नौ, दश, बीस, पचास, सौ हजार, लाख इत्यादि। (२) सर्वनाम—हम, मैं, मोर, हमार, तू, तोहार, ओकर, उनकर, केकर जेकर, ❀ राउर इत्यादि। ❀(३) अन्य शब्द—हाथ, गोड़, नाक, आँखि, मुँह, दाँत, कान, बार, मूड़, जीभि, पेट, पीठि, चाँनी, बाप, मतारी, बहिनि, भलमानुस, मेहरारू, दुलहिनि, लरिका, गड़ेरि, परेत, गाई, कुकुर, मुरुगा, चिरई, बलुक, जानुक, अगाड़ी, लूगा, सतुआ, पिसान, बिलाइ इत्यादि।

उपर्युक्त शब्द ऐसे हैं जिन्हें गोस्वामीजी तक ने अपने 'मानस' में लिखा है, फिर जायसी प्रभृति का क्या कहना। शुद्ध भोजपुरी में संज्ञा-शब्दों के आगे 'आ' लगा देते हैं। जैसे ललटेनिया, धोतिया, छतवा, जटोरवा, कितबवा इत्यादि। 'न्' का प्रयोग दो आबा, बलिया और आरा में होता है। जैसे, यदि पूछना होगा कि आप अच्छी तरह से हैं न तो भोजपुरी में कहेंगे कि अपने अच्छी तरे बानी 'नू'? क्रियायें प्रायः अवधी के समान ही होती हैं। पाठकों के लिए कुछ भोजपुरी के उदाहरण यहाँ दिये देते हैं जिससे इस भाषा का कुछ अन्दाज़ लोगों को लग जाय।

(१)

लरिका[१] मालिक बूढ देवान।
ममिला बिगरे[२] साँझि[३] बिहान[४]॥

(२)

मोटी दतुवन जो करे, निति उठि हरे खाय।
दूध चबेनी[५] जो करे, ता घर बैद[६] न जाय॥

(३)

माघ मास में पछिमा पावों ता पर करों बदरिया[७]।
कहे जाड़ धरि तूरों[८] हाड़ जो आग न हो धरहरिया[९]॥

(४)

माघ के उखम[१०] जेठ के जाड़,
पहिला बर्खा[११] भरि गइल ताल।
कहे घाघ हम होइबि जोगी
कुँआ का पानी से धोई धोबी॥

(५)

नसकट खटिया बतकट[१२] जोय,
जो पहिलवठी बिटिया[१३] होय।
पातर कृषी बउरहा भाय,
घाघ कहे दुख कहाँ समाय॥

(६)

२ जब हम रहलूँ सासु लरिका अबोधवा,
कि तबले सहलूँ तोहर बतिया रे ना।
अब हम भइलूँ सासु तरुनी जुवनिया
कि अब ना सहब तोहार बतिया रे ना।
एक बेरी सहबों सासु दुइ बेरी सहबों,
तीसर धरब तोरे चोटिया रे ना॥

---

* Ling. Survey of G. Grierson Vol. IV. V.

---

१ लड़का। २ ख़राब हो जाना। ३ सन्ध्या। ४ प्रातःकाल। ५ जलपान। ६ वैद्य। ७ बादल। ८ तोड़ों। ९ झगड़ा सुलझानेवाला, सहायक और मददगार। १० गर्मी। ११ वर्षा। १२ व्यर्थ बात करनेवाली। १३ लड़की।

२—इसको जॉर्ज ग्रियर्सन ने मगही के प्रकरण में लिखा है। किन्तु यह भोजपुरी का देहाती गाना है और इसे नीच जाति की स्त्रियाँ बराबर गाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७)

श्वान वो सियार कहूँ हरिन वो हुड़ार[१] बहू,
पापिन के धइ धइ चटपट[२] पटके।
उदर विदार मार फारि के मुआइ देत
जोगिनी जमात लहु घट घट घटके[३]।
मरही वो मसान धनुबान ते कृपान काढ़ि,
रुण्डन से मुण्ड तोड़ि गट गट गटके[४]।
पाप के पयोध नहीं रहे कहूँ व्याध जहाँ
साधु के समाज 'अली' सन्त है बेखटके[५]।

१ भेड़िया। २ फ़ौरन। ३ पी जाना। ४ निगल-जाना। ५ निस्सन्देह।

३—सुधा १९२९ देखिए। 'अलीराज' का जीवन-चरित।

(८)

राउर[१] वचन मोहि एकहू ना निको[२] लागे,
चोरवन[३] की नाई रउवाँ बेरी[४] बेरी झाँकीले[५]।
जहवाँ जुवान मेहरारू[६] सब अकसर[७]
तहवाँ गोसाई रउवाँ कौना हेतु ताकीले[८]।
जवना[९] वतुसिया[१०] के दाम रौवाँ जानी नाही,
तवना[११] वतुसिया के दाम कइसे आँकीले[१२]।
कहे राँवाँ गत[१३] लागी नाही राँवाँ बुरा मानी
हइँ त गोसाईं[१४] राँवाँ भाँग त नाही फाकीले[१५]

(अम्बिकादत्त व्यास)

—रासविहारी राय शर्मा

१ आपका। २ अच्छा नहीं लगता है। ३ बार बार। ४ देखते हैं। ५ चोरों। ६ स्त्री। ७ अकेले। ८ देखते हैं। ९ जिस। १० वस्तु। ११ तिस। १२ बतलाते हैं। १३ बुरा। १४ साधु। १५ खाते हैं।

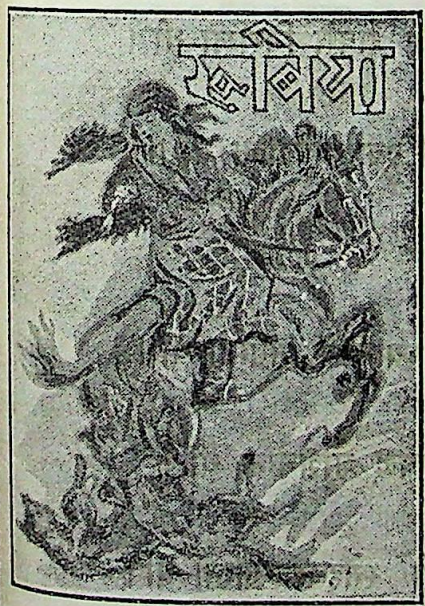

रूबिया

रूस की मशहूर ज़ारशाही का करुण दृश्य व विचित्र प्रेम देखने के लिए रूबिया उपन्यास पढ़िए। पुस्तक इतनी मज़ेदार और रोचक है कि बिना पूरी पढ़े छोड़ने को जी नहीं चाहता। चित्रों ने तो दुगुनी शोभा कर दी है।

मूल्य केवल १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरहिणी राधा

(१)

सत्य ही अकेली थी न हेली थी सहेलियों की,
नवल अनूठी एक तेजपुञ्ज-ज्वाला थी।
चन्द्र भी मलीन मुखज्योति को विलोक हुआ,
चारुता में उसकी न रति कान्ति माला थी॥
वीरता में धीरता में सुन्दर गम्भीरता में,
और भी प्रवीणता में सबसे निराला थी।
यमुना के तट बैठी शुभ्र स्वच्छ आसन पै,
कोई सुकुमार ऐसी एक गोपबाला थी॥

(२)

व्यक्त मुख पै न था पै व्यक्ति मन में था एक,
संतत उसी के वह ध्यान में निमग्ना थी।
कुन्तल कलित राजते थे वायु-आसन से,
वन्दना के लिए पाणिबद्ध शीशनग्ना थी॥
लोचन-पटल खोलती थी नहीं भूल कर,
सरल सुभाववाली स्नेह-लव-लग्ना थी।
विषम वियोग के हुताशन के शासन से,
ध्यान-भंग होता था हो रही हृदयभग्ना थी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३)

पास था न कोई बतलाता तब कौन भेद,
किस हेतु वह हाय बन बैठी पाधा थी।
देखि दुर्भाग्यवाली अनाथिनी सी कोई बाला,
हो रही हृदय में व्यथा जिसके अगाधा थी॥
भ्रान्ति के प्रभाव से अवाक सी खड़ी थी अड़ी,
दैवी या अदैवी सो ही पड़ी नई बाधा थी।
सोचते ही सोचते विचार जा पड़ा था फिर,
सुहृद हमारी वही एक सखी राधा थी॥

(४)

पाके कुछ अन्त खोज उसका उसी निमेष,
व्रज की बधूटियों के वृन्द ने पधारा था।
चुन चुन नाम रखती थीं बदनामी-हेतु,
ली छबिमान कोई छैल हुआ प्यारा था॥
सहती अपार अपमान घोर शान्ति से ही,
इसके सिवा रहा न और अन्य चारा था।
ताली दे रही थी दे रही थी कोई गाली पर,
आली उसे खाली वनमाली का सहारा था॥

(५)

जानि सत्य प्रेम मूक प्रेम की उपासिका का,
पन्नगारिगामी से न रंचक रहा गया।
गायें छोड़ भागा और त्यागा लोकलाज क्योंकि,
दासी की उदासी का न ध्यान ही सहा गया॥
पहुँचा जा मिला गले राधिका वियोगिनी के,
उन हँसोड़िनियों का मद भी ढहा गया।
खींच गया चित्र सच्चे प्रेम का विचित्र एक,
वंशीधर मित्र वंशी-ध्वनि में बहा गया॥

—चन्द्रकला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय पण्डित मोतीलालजी नेहरू

गत ६ फ़रवरी को भारत के राष्ट्रीय गगन-मण्डल का एक महान् नक्षत्र टूट गया। इस नक्षत्र के टूटने से राष्ट्र पर जो वज्राघात हुआ उसकी चोट अभी तक दुःख पहुँचा रही है और बहुत दिनों तक पहुँचाती रहेगी। उस दिन त्याग-मूर्ति पण्डित मोतीलालजी नेहरू देशवासियों को रोता हुआ छोड़ कर स्वर्गवासी हो गये।

पण्डित मोतीलालजी नेहरू का जीवन आत्मोन्नति, आनन्द, देश-सेवा और पुरुषोचित त्याग का जीवन था। आपने अपने जीवन में बड़ी उन्नति की, ख़ूब अनुराग किया, साथ ही ख़ूब देशसेवा तथा त्याग किया। आपने जो कुछ किया बड़ी शान के साथ किया। वकालत की तो इस ऊँचे दर्जे की कि आपके समय में प्रयाग-हाईकोर्ट में आपकी सानी का कोई दूसरा वकील न था, आनन्द किया तो इस दर्जे का कि बहुत से बड़े बड़े राजाओं को भी मात कर दिया। और देश-सेवा तथा त्याग किया तो इस हद तक कि देश ने आपको 'त्याग-मूर्ति' की उपाधि से विभूषित किया।

स्वर्गीय पण्डित मोतीलालजी का जन्म दिल्ली में सन् १८६१ ईसवी के मई महीने में काश्मीरी ब्राह्मणों के प्रसिद्ध नेहरू-वंश में हुआ था। आपके पिता पण्डित गंगाधर नेहरू दिल्ली के कोतवाल थे। पिता की मृत्यु के चार महीने के बाद आपका जन्म हुआ था। इसलिए आपका लालन-पालन आपके बड़े भाई पण्डित नन्दलाल नेहरू ने किया।

आरम्भ में पण्डित मोतीलाल को अरबी और फ़ारसी की शिक्षा दी गई। बारह वर्ष की उम्र तक आप घर पर ही विद्याध्ययन करते रहे। फिर सन् १८७३ में अँगरेज़ी पढ़ने के लिए कानपुर जहाँ आपके बड़े भाई पण्डित नन्दलाल वकालत करते थे आ गये और वहाँ के गवर्नमेण्ट हाईस्कूल में दाख़िल हुए। वहीं से आपने सन् १८८० में मैट्रिक्यूलेशन की परीक्षा पास की। इस परीक्षा में आपका नम्बर बहुत ऊँचा रहा।

पण्डित मोतीलालजी बचपन में बहुत चपल, मुस्तैद और दृढ़ विचार के थे। बाल्यकाल से ही आपमें बुद्धि कौशल झलकने लगा था। नेतृत्व करना तो मानो आपका स्वाभाविक गुण था। आप खेल-कूद में भी भाग लेते थे और खेलों में आप 'कैप्टन' बनते थे।

मैट्रीक्यूलेशन की परीक्षा पास करके आप उच्च शिक्षा-प्राप्ति के लिए प्रयाग आ गये और यहाँ के सुप्रसिद्ध म्योर सेंट्रल कालेज (जो अब विश्वविद्यालय में सम्मिलित कर दिया गया है) में दाख़िल हुए। चार वर्ष तक आप यहाँ पढ़ते रहे और सन् १८८४ में बी० ए० की परीक्षा देने की तैयारी की किन्तु दैवयोग से आप बीमार पड़ गये और बी० ए० की परीक्षा में न बैठ सके, इसलिए आप डिग्री-प्राप्ति का विचार छोड़ कर वकालत के अध्ययन में लग गये और सन् १८८६ में आपने वकील हाईकोर्ट की परीक्षा पास कर ली। इस परीक्षा में आप सर्वप्रथम रहे और आपको एक स्वर्ण-पदक भी मिला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालेज में पढ़ते समय ही पण्डितजी की प्रतिभा विकसित हो गई थी। सभी अध्यापक आपकी योग्यता के कारण आपसे प्रसन्न रहते थे। कालेज के प्रिन्सिपल मिस्टर हरीसन के आप कृपा-पात्र छात्र थे। वे आपसे बहुत खुश रहते थे और आपकी प्रशंसा किया करते थे। कई बार उन्होंने आपको पारितोषिक भी दिया था। कालेज की 'लिटरेरी क्लब' में एक बार आपकी वक्तृता सुनकर प्रिन्सिपल साहब ने आपकी बहुत ही प्रशंसा की थी और कहा था कि मिस्टर नेहरू अवश्य ही एक दिन बहुत ऊँचे पद पर प्रतिष्ठित होंगे। मिस्टर हरीसन की भविष्य वाणी अक्षरशः सत्य निकली।

[स्वर्गीय पण्डित मोतीलालजी नेहरू]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकालत की परीक्षा पास करने के बाद पण्डित मोतीलालजी कानपुर में वकालत करने लगे। वहाँ तीन साल तक आपने वकालत की और अच्छा यश कमाया। इसके बाद आप प्रयाग आगये और यहाँ हाईकोर्ट में वकालत करने लगे। उस समय पण्डित नन्दलाल भी हाईकोर्ट में ही वकालत करते थे, इसलिए आपको कोई असुविधा न हुई और थोड़े दिनों में ही आपकी वकालत चमक उठी। सन् १८८९ में पण्डित नन्दलालजी का देहान्त हो गया और उनका भी सब काम आपको मिल गया। इससे आपकी वकालत ज़ोरों से चल निकली। आपने सैकड़ों प्रसिद्ध मुक़द्दमे अपने हाथ में लिये और उन्हें बड़ी योग्यता के साथ लड़ा। अधिकतर मुक़द्दमों में आपको सफलता मिली। एक नहीं, अनेक जजों ने मुक्तकण्ठ से आपकी तर्क-शैली और क़ानूनी-ज्ञान की प्रशंसा की। हाईकोर्ट में वकालत करने के थोड़े ही दिनों के बाद आप हाईकोर्ट के 'एडवोकेट' हो गये। आप हाईकोर्ट के रत्न समझे जाते थे और सर सुन्दरलालजी की मृत्यु के बाद तो आप हाईकोर्ट के सर्वश्रेष्ठ वकील माने जाने लगे। सन् १९२० तक आप बराबर वकालत करते रहे, किन्तु असहयोग-आन्दोलन के समय आपने वकालत छोड़ दी। इस समय कुछ समय तक आपने सिर्फ़ 'चेम्बर प्रेक्टिस' की और उन कुछ मामलों में ही अदालत में गये जो पहले से आपने अपने हाथ में ले रक्खे थे या जिन को मुरौव्वत में पड़ कर आपको लेना पड़ा।

वकालत का समय पण्डित मोतीलालजी के जीवन में आनन्द का समय था। आप 'आनन्द-भवन' में ही नहीं रहते थे, आनन्द का उपभोग भी करते थे। पैसे की आपको कमी न थी। वकालत से लाखों रुपये साल की आय थी। पुत्र-पुत्री-रत्न भी आपको प्राप्त हो चुके थे। किसी प्रकार की चिन्ता न थी। ख़ूब आनन्द से रहते थे और जो सांसारिक सुख किसी भाग्यवान् पुरुष को प्राप्त हो सकते हैं उन सबका उपभोग करते थे। आप सभी बातों में अप-टुडेट रहते थे। आपका 'आनन्द-भवन' राज-महल की तरह सजा रहता था। उच्च से उच्च अधिकारियों और बड़े बड़े रईसों से आपकी मित्रता थी। अनेक उच्च अधिकारी आपके यहाँ आते-जाते रहते और बहुत से मामलों में आपसे सलाह लिया करते थे।

परन्तु पण्डित मोतीलालजी वकालत करने में ही नहीं लगे रहे। बाद को आप देश की राजनीति से भी दिलचस्पी रखने लगे थे। कांग्रेस के अधिवेशनों में भी आप सम्मिलित होते थे। आप नरमदल के सदस्य थे। सन् १९०७ में आप प्रान्तिक कानफ़रेंस के सभापति बनाये गये थे। सन् १९०९ में आप प्रान्तीय कौंसिल के सदस्य चुने गये थे और असहयोग-आन्दोलन के पहले तक आप प्रान्तीय कौंसिल के बराबर सदस्य चुने जाते रहे। किन्तु जब होमरूल-आन्दोलन शुरू हुआ तब आपने देश के राजनैतिक आन्दोलन में क्रियात्मक भाग लेना प्रारम्भ किया। प्रारम्भ ही नहीं किया, किन्तु तन, मन और धन से उसमें लग गये। आपने प्रयाग में होमरूल लीग की शाखा स्थापित की, जिसके प्रेसीडेण्ट आप ही बनाये गये। १९१७ में लखनऊ की प्रान्तीय कानफ़रेंन्स के विशेषाधिवेशन के सभापति के आसन से जो महत्त्व-पूर्ण वक्तृता की थी उससे चिढ़ कर स्थानीय 'पायोनियर' ने आपको होमरूल लीग के ब्रीगेडियर जनरल कहकर आपका उपहास किया था।

होमरूल-आन्दोलन के बाद जब भारत-सचिव मिस्टर मांटेग्यू ने भारत को कुछ अधिकार देने का विश्वास दिलाया तब सर तेजबहादुर सप्रू, श्रीयुत सी० वाई० चिन्तामणि, बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, यहाँ तक कि श्रीमती ऐनी बेसेण्ट से सहमत न होकर पण्डित मोतीलालजी ने उसके विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द की और अपने विचारों के प्रचार के लिए 'इंडिपेंडेंट' नामक एक नया अँगरेज़ी दैनिक पत्र प्रयाग से निकाला। यह पत्र राष्ट्रीय दल का समर्थक था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हीं दिनों सरकार ने रौलेट ऐक्ट नामक क़ानून बनाया था। इस क़ानून के ख़िलाफ़ देश में ज़ोरों से आन्दोलन उठा। पञ्जाब में सरकार को फ़ौजी क़ानून जारी करना पड़ा। अमृतसर में जलियानवाला बाग़ में भयङ्कर हत्या-काण्ड हुआ। इन घटनाओं से पण्डितजी के हृदय को बड़ी चोट लगी और आप फ़ौरन पीड़ित पञ्जाबियों की सहायता के लिए पञ्जाब गये और वहाँ महामना मालवीयजी के साथ आपने अत्याचारों की जाँच की और अत्याचार-पीड़ितों को सहायता पहुँचाई। पञ्जाब के प्रति की गई आपकी इन्हीं सेवाओं के लिए देश ने आपको अमृतसर-कांग्रेस का सभापति बनाकर आपका सम्मान किया।

अमृतसर-कांग्रेस के सभापति की हैसियत से पण्डित मोतीलालजी ने जो वक्तृता की थी उसमें आपने सुधारों से यथायोग्य लाभ उठाने को कहा था। आप उन्हें अपर्याप्त और असन्तोषजनक समझते हुए भी उनसे लाभ उठाने के पक्षपाती थे, किन्तु जब सन् १९२० में महात्मा गान्धी ने पञ्जाब के अत्याचारों और ख़िलाफ़त के अन्याय के विरोध-स्वरूप असहयोग करने की ठानी तब आपने महात्माजी का पूर्णरूप से समर्थन किया। इस अवसर पर आपने अपनी वकालत भी छोड़ दी और देश के लिए जेल-यात्रा भी की। आपके सुपुत्र पण्डित जवाहरलालजी भी जेल गये।

चौरीचौरा-हत्या-काण्ड के बाद महात्माजी ने सत्याग्रह स्थगित कर दिया। इससे राष्ट्रीय आन्दोलन में शिथिलता आ गई। कांग्रेस में भी मत-भेद हो गया। कुछ लोग कौन्सिलों के बहिष्कार को व्यर्थ समझने लगे। स्वर्गीय देशबन्धु चितरञ्जन दास ने कौन्सिलों में जाकर उनको सुधारने या उनका अन्त करने की बात कही। पण्डित मोतीलालजी ने देशबन्धु दास के विचारों का समर्थन किया। आपने देशबन्धु दास के साथ मिलकर प्रसिद्ध 'स्वराज्यपार्टी' की स्थापना की और अपने विचार के अनुसार आप असेम्बली के लिए खड़े हुए और बिना किसी विरोध के चुन लिये गये। असेम्बली में आप स्वराज्यदल के नेता थे और वहाँ आपने राष्ट्र-हित के लिए जो कार्य किया उसके महत्त्व को कौन्सिल-प्रवेश-विरोधी स्वयं महात्मा गान्धी तक ने स्वीकार किया था। देशबन्धु दास के स्वर्गवास के बाद तो आप ही स्वराज्य-पार्टी के एक-मात्र कर्णधार थे। सन् १९२९ में आप दूसरी बार असेम्बली के लिए खड़े हुए। आप इस बार भी बिना किसी विरोध के चुने गये।

असेम्बली में रहकर पण्डितजी ने देश की बहुत कुछ सेवा की। आप विरोधी दल के नेता थे। आपकी वक्तृतायें बड़ी महत्त्वपूर्ण और प्रभावोत्पादक होती थीं। राष्ट्रीय माँग भी आपने पेश की थी, किन्तु आपको असेम्बली और कौंसिलों के कार्य से सन्तोष नहीं हुआ और अन्त में आपका विश्वास कौंसिल-कार्य-क्रम से उठ गया।

सन् १९२८ में पण्डित मोतीलालजी दूसरी बार कांग्रेस के सभापति चुने गये। कांग्रेस का यह अधिवेशन कलकत्ते में हुआ था। इस अवसर पर कलकत्तावासियों ने आपका शानदार स्वागत किया। आप छत्तीस घोड़ों की गाड़ी में निकाले गये। कांग्रेस के प्रेसीडेण्ट की हैसियत से उस समय आपने जो भाषण किया वह आपकी राजनैतिक दूरदर्शिता का द्योतक है। कलकत्ता-कांग्रेस ने यह निर्णय किया कि अगर एक वर्ष के अन्दर औपनिवेशिक स्वराज्य न मिले तो पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी जाय। सरकार ने कांग्रेस के इस निश्चय पर कोई ध्यान नहीं दिया। हाँ, वाइसराय लार्ड इर्विन ने पण्डित मोतीलालजी और कांग्रेस के दूसरे नेताओं को गोलमेज़ कान्फ़रेन्स में सम्मिलित होने के लिए ज़रूर प्रेरित किया, किन्तु समझौता न हो सका और पण्डित मोतीलालजी ने लाहौर-कांग्रेस में पूर्ण स्वतंत्रता के प्रस्ताव का समर्थन किया।

इसके बाद महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने गत वर्ष सत्याग्रह-संग्राम आरम्भ किया। इस संग्राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित मोतीलालजी ने बड़ा पुरुषार्थ प्रकट किया। स बार आपने जो बलिदान किया वह अनुपम था। ापके सुपुत्र पण्डित जवाहरलालजी दो बार जेल ये, आपकी पतोहू, पुत्री और दामाद भी जेल गये। ास्थ्य खराब होते हुए आपने भी जेल-यात्रा की। ल में आपका स्वास्थ्य और भी बिगड़ गया, जो कर न सँभल सका। स्वास्थ्य के अधिक बिगड़ जाने कारण ही आप अवधि से पहले जेल से छोड़ ये गये। अपना इलाज कराने आप कलकत्ता ये। वहाँ अनेक विशेषज्ञ और प्रसिद्ध डाक्टरों ौर वैद्यों से चिकित्सा कराई, किन्तु लाभ नहीं हुआ। लकत्ते से आप प्रयाग लौट आये। यहाँ भी देश के कई सुप्रसिद्ध डाक्टरों ने आपकी चिकित्सा की, रन्तु रोग बढ़ता ही गया। अन्त में "ऐक्स-रे की चिकित्सा" के लिए आप लखनऊ ले जाये गये और हीं कॉला काँकर के राजा साहब के भवन में, जहाँ आप ठहरे हुए थे, ६ फ़रवरी को साढ़े छः बजे सवेरे आपका स्वर्गवास हो गया।

यद्यपि पण्डित मोतीलालजी का नश्वर शरीर संसार में नहीं है, तथापि आपकी कीर्ति-कौमुदी युग-युगान्तरों तक इस देश में फैली रहेगी और भारत के राष्ट्रीय इतिहास के पन्नों में आपका नाम सदा अमिट रहेगा। आपमें अनेक ऐसे गुण विद्यमान थे जिनके कारण आप मर कर भी जीवित हैं और जीवित रहेंगे। आप कट्टर राष्ट्रवादी थे। साम्प्रदायिकता तो आपको छू भी नहीं गई थी। आप प्रत्येक बात पर राष्ट्रीय दृष्टि-कोण से विचार करते थे। हिन्दू-मुस्लिम-एकता की तो मानो आप सजीव मूर्ति थे। आप दोनों जातियों को समदृष्टि से देखते थे। आपके निधन से देश की अपार हानि हुई है, जिसकी जल्दी पूर्ति होना सम्भव नहीं है।

—सत्यव्रत

योरप का इतिहास

योरप के इतिहास का अध्ययन करने पर आप रोम, यूनान आदि के उत्थान-पतन, और इँग्लैंड, जर्म्मनी आदि देशों के उलट-फेर से चकित होंगे, साथ ही, क्रमशः योरप के सभी देशों में राजा की निरङ्कुशता का अन्त होते और प्रजा के सम्मिलित और सामूहिक स्वर की प्रभावशालिता देखकर आनन्दित भी होंगे। अतएव आज ही एक पत्र लिखकर प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता और हिन्दी के सुलेखक भाई परमानन्द एम० ए० द्वारा लिखित 'योरप का इतिहास' की एक प्रति मँगा लीजिए। पचासों चित्रों से युक्त एक प्रति का मूल्य केवल ४) चार रुपये हैं। विशेष विवरण विज्ञापन में देखिए।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ल्हासा कैसे पहुँचा ?

पञ्चम परिच्छेद ।

प्रयाग में कोई काम नहीं था। यदि कोई मित्र होता तो दाल-रोटी मिल गई होती, लेकिन अब होटलों के युग में इसके लिए तरसने का काम नहीं। उसी दिन छोटी लाइन से बनारस में उतरे बिना ही सारनाथ पहुँच गया। भिक्षु श्रीनिवास सो गये थे। खैर जागे, और सोने को जगह मिली।

बनारस में अपनी टीका-सहित पूर्ण किये हुए 'अभिधर्म कोश' को छपाने तथा यदि हो सके तो उससे तिब्बत के लिए सहायता का प्रबंध करना था। पुस्तक साथ न रहने से उस समय कुछ नहीं हो सकता था। केवल तथागत के धर्मचक्र-प्रवर्तन के इस पुनीत ऋषिपतन का दर्शन कर पाया। ऋषिपतन का भी अब पहले का क्या रहा? तो भी उतना शून्य नहीं है और उसका भविष्य उज्ज्वल है।

शिवरात्रि १३ मार्च को पड़नेवाली थी। अभी दो महीने और हाथ में थे। इसमें ४ से ७ तक छपरा में बिता कर पटना पहुँचा, ९ को ही पटना से बख्तियारपुर में गाड़ी बदल कर राजगिर पहुँच गया। कौंडिन्य बाबा की धर्मशाला घर सी ही थी। दो बजे के क़रीब वेणुवन, सातपर्णि-गुहा, पिप्पली-गुहा, वैभार, तपोदा को देखने चले। जिस वेणुवन को तथागत ने संघ के लिए पहला आराम पाया था, जिसमें कितने ही बार महीनों तक रहकर अनेक धर्म-उपदेश किये थे, आज उसका पता लगाना भी मुश्किल है। वेणुवन की भूमि से होकर नदी के पार हो महंत बाबा की कुटी में गया। मालूम हुआ, आठ-नौ वर्ष पहले के बाबा अब इस संसार में नहीं हैं। वहाँ से वैभार के किनारे तक बहुत दूर तक सप्तपर्णी की खोज में गया। फिर वैभार पर चढ़, उतरते हुए पत्थर से बिना गारे की जोड़ी पिप्पलि-गुहा को देखा। महाकाश्यप की यही कितने दिनों तक प्रिय स्थान रही। थोड़ा और उतर तपोदा, सप्तऋषियों के गर्म कुंड पर पहुँच गया। लौट कर दूसरे दिन गृध्रकूट जाने का निश्चय हुआ।

स्वामी प्रेमानंदजी साथी मिल गये। उन्होंने पराठे और तरकारी का पाथेय तैयार किया और श्रीकौंडिन्य स्थविर का नौकर मार्ग-प्रदर्शक बना। गृध्रकूट ४ मील से कम न होगा। पुराने नगर में से होते हुए आगे जंगल में सुमागधा के सूखे पेट से हम आगे बढ़े। यही भूमि किसी समय लाखों आदमियों से पूर्ण थी और आज जंगल! यही सुमागधा कभी राजगृह और आस-पास के अनेक ग्रामों के तृप्त करने की महान् जलराशि थी, और वर्षा में भी जल-रिक्त! तथागत की सेवा से गृध्रकूट पर जाने के लिए जिस राजमार्ग को मगध-साम्राज्य के शिला-स्थापक बिम्बसार ने बनवाया था वह अब भी काम लायक़ है। चलते चलते गृध्रकूट पहुँचे। मनुष्यों के चिह्न सब लुप्त-प्राय थे, किन्तु जिन चट्टानों पर पीले कपड़े पहने तथागत को देखकर पुत्र के बन्दी बिम्बसार का हृदय आशा और सन्तोष से भर जाता था उनके लिए हज़ार वर्ष कुछ घण्टे ही हैं। दर्शन के बाद वहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पराठे खाये गये, और फिर दोपहर तक हम कौंडिन्य बाबा की धर्मशाला में रहे।

उसी दिन १० जनवरी को सिलाव चला आया। जिनसे कुछ काम लेना था वे तो न मिले, किन्तु मौखरियों का गंधशाली का भात-चूरा और खाजा तो छोड़ना नहीं होता। सिलाव ब्रह्मजाल-सुत के उपदेश का स्थान अम्बलट्ठिका तथा महाकाश्यप के प्रव्रज्या स्थान बहुपुत्रक चैत्य में से कोई एक है। बाबू भगवानदास मौखरी के हाते में एक ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी का नया शिलालेख भी देखने को मिला। दूसरे दिन उसकी कापी लेने और खाने में ही दोपहर हो गया। फिर वहाँ से अपनी स्वप्न की भूमि नालन्दा के लिए रवाना हुआ।

दो वर्ष के बाद फिर भव्य नालंद की चिता देखने आया—उसी नालंद की जिसके पण्डितों के रौंदे हुए मार्ग को पार करने के लिए मैंने अपने को तैयार किया है। इच्छा थी, नालंद में थोड़ी सी, भविष्य में कुटिया बनाने के लिए भूमि ले लें। लेकिन इतनी जल्दी में वह काम कहाँ हो सकता था। भीतर-बाहर परिक्रमा करके निकली हुई मूर्तियाँ, मुद्रायें, बर्तन, कोठरियाँ, द्वार, कुयें, पनाले, स्तूप देखे, एक ठंडी आह भरी और चल दिये।

उसी दिन ११ जनवरी को पटना पहुँच गये। अभिधर्मकोश का पार्सल पहुँच गया था, इसलिए उसके प्रबन्ध में १३ जनवरी को फिर बनारस पहुँचा। डेरा हिन्दूविश्वविद्यालय में डाला। प्रकाशक महोदय ने स्वयं पुस्तक देखी, फिर दूसरे विद्वान् के पास दिखाने को ले गये। उन्होंने मूल फ्रेंच से कारिकाओं को मिलाकर कुछ राय देने के लिए कहा। अठारह को सारनाथ जाने पर चीनी भिक्षु बोधिधर्म की चिट्ठी मिली। दो वर्ष पूर्व मेरी उनसे राजगृह के जंगल में मुलाक़ात हुई थी। पीछे सिंहल में विद्यालंकार विहार में ही जहाँ मैं रहता था, वे भी महीनों रहे। हद से अधिक शान्त थे, इसलिए अपरिचित मनुष्य उन्हें पागल कहने से भी न चूकते थे। देखने से भी उस गर्दन झुके, मलिन अकृत्रिम शरीर को देखकर किसी को अनुमान भी नहीं हो सकता था कि वह अन्दर से सुसंस्कृत होगा। सिंहल से लौटकर उन्होंने मेरे लिखने पर अपनी नैपाल-यात्रा के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक लिखा था। चीनी-भाषा में बौद्धदर्शन के वे पण्डित ही न थे, बल्कि उसके अनुसार चलने की भरपूर कोशिश भी करते थे। उन्होंने हम लोगों के भविष्य के कार्य पर ही उस पत्र में लिखा था। मुझे यह न मालूम था कि वही उनका अन्तिम पत्र होगा।

२० जनवरी को पण्डित महोदय की अनुकूल सम्मति मिली। दूसरे दिन प्रकाशक महोदय से बातचीत होने पर मालूम हुआ कि दस-पाँच प्रतियाँ देने के अतिरिक्त और कुछ पारितोषिक देने में वे असमर्थ हैं। मुझे अपनी यात्रा के लिए कुछ धन की अत्यन्त आवश्यकता थी, इसलिए उनकी बात स्वीकार करने में असमर्थ था। इस प्रकार इस बार का नौ दिन का काशी-वास निष्फल ही होता, यदि आचार्य नरेन्द्रदेव ने पुस्तक के कुछ अंशों को देखा न होता। उन्होंने उसको काशी-विद्यापीठ की ओर से प्रकाशित कराने की बात कही। २२ को प्रकाशक-समिति की स्वीकृति भी आगई और सबसे बड़ी बात उस समय के काम की सौ रुपये के देने की स्वीकृति।

षष्ठ परिच्छेद

मैं अन्य झंझटों से मुक्त था ही। पटना होकर पहले बुद्धगया गया। वहीं मुझे मंगोलिया के भिक्षु लोब्-सङ्-शे-रब मिले। मने भोटिया की एक-आध पुस्तक देख ली थी, इसलिए एक-आध शब्द बोल लेता था। उन्होंने बड़े आग्रह से चाय बनाकर पिलाई। मुझे उनसे उनके ल्हासा की डेयुङ् में रहने की बात भी मालूम हुई। उन्हें अभी एक-दो मास और यहीं रहना था। वे महाबोधि के लिए एक लाख दंडवत् प्रणाम पूरा करना चाहते थे। उस समय मुझे कभी न भान हुआ था कि उनकी यह मुलाक़ात आगे मेरे बड़े काम की सिद्ध होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धगया से लिच्छवियों की वैशाली को देखना था। मुज़फ़्फ़रपुर उतरने से मालूम हुआ कि वैशाली के पास बखरा तक बस जाती है। जनक बाबू ने बौद्धधर्म पर एक व्याख्यान देने के लिए भी दिन नियत करवा लिया। मैं रास्ते में बखरा के अशोक-स्तम्भ को पहले देखने गया, जहाँ किसी समय महा-वन में कूटागारशाला थी, जिसमें तथागत ने कितनी ही बार वास किया था। जिस स्थान में अनेक विख्यात सूत्र आज भी वर्तमान हैं, जहाँ तथागत के परि-निर्वाण के १०० वर्ष बाद आनन्द के शिष्य स्थविर सर्वकामी की प्रधानता में भिक्षु-सङ्घ ने दूसरी बार एकत्र हो शङ्काओं का समाधान करते हुए भगवान की सूक्तियों का गान किया था, उसकी आज यह अवस्था कि आदमी असन्देह हो स्थान को भी नहीं बता सकते।

वहाँ से बनिया पहुँचे। वैशाली आज-कल बनिया-बसाढ़ के नाम से ही बोली जाती है। बसाढ़ तो असल वैशाली है, जो वज्जियों की राजधानी थी। बनिया उसी का व्यापारिक मुहल्ला था। यही जैन-सूत्रों का 'वाणिय गांम नयर' है। भगवान् महावीर का एक प्रधान गृहस्थ शिष्य आनन्द यहीं रहता था। भगवान् बुद्ध के ग्यारह प्रधान गृहस्थ शिष्यों में उग्र गृहपति यहीं रहता था। वज्जियों के महा-शक्ति-शाली प्रजातन्त्र की राजधानी यह व्यापारिक केन्द्र महा समृद्धिशाली था, यह बौद्ध-जैन-ग्रन्थों से स्पष्ट है। अब यह एक गाँव रह गया है। वहाँ पहुँचते पहुँचते भोजन का समय हो गया था, इसलिए एक गृहस्थ के भोजन कर लेने के आग्रह को हम अस्वीकार न कर सके।

बनिया-बसाढ़ के आस-पास मिट्टी की छोटी छोटी कई मेखलाओं से बँधी हुई कुइँयाँ कहीं भी निकल आ सकती हैं। वहाँ से चलकर बसाढ़ आये। तालाब पर का मन्दिर जिसमें अब भी बौद्ध-जैन-मूर्तियाँ हिन्दुओं की देवी-देवताओं के नाम पर पूजी जा रही हैं, रौज़ा, गढ़ और गाँव सभी घूम-फिर देखा। यहीं किसी समय वज्जियों का संस्थागार (प्रजातंत्र-भवन) था, जिस (वैशाली) में ९९९ राजोपाधिधारी लिच्छवी किसी समय वैठकर मगध और कोशल के राजाओं के हृदय कम्पित करनेवाले, सात* अपरिहाणीय धर्मों से युक्त, वज्जी-देश (छपरा का पश्चिमी भाग छोड़, सारो ही तिर्हुत कमिश्नरी) के विशाल प्रजा-तंत्र का सञ्चालन किया करते थे। बसाढ़ और उसके आस-पास अधिक प्रभावशाली जाति के लोग जथरिया (भूमिहार) हैं। आज-कल तो ये लोग सोलहों आने पक्के ब्राह्मण-जाति के बने हुए हैं, जिस जाति को भिख-मँगों की जाति तथा तीर्थङ्करों के न उत्पन्न होने योग्य जाति जथरियों के पुत्र (ज्ञात्रि-पुत्र) वर्द्धमान महावीर ने कहा था। मैं जिस वक्त बसाढ के एक वृद्ध जथरिया से कह रहा था कि आप लोग ब्राह्मण नहीं हैं, क्षत्रिय हैं, तब उन्होंने झट नीमसार से आकर जेथरडीह (छपरा-ज़िला) में बसनेवाले अपने पूर्वज ब्राह्मणों की कथा कह सुनाई। बेचारों को समृद्ध, प्रतिभाशाली, वीर, स्वतन्त्र ज्ञात्रि-जाति के ख़ून की उतनी परवा न थी, जो अब भी उनके शरीर में दौड़ रहा था और जिसके लिए आज भी पड़ोसियों की कहावत है 'सब जात में बुर्वक जथरिया। मारै लाठी छीनै चदरिया'। जितना कि एक अधिकांश धनहीन, बलहीन, विद्या-जड़, कूप-मण्डूक, मिथ्याभिमानी जाति में गणना कराने में। वही क्यों, क्या सुशिक्षित देश-भक्त मौलाना शफ़ी दाऊदी भी 'शफ़ी जथरिया' के महत्त्व को समझ सकते हैं ?

वैशाली से लौटकर मुज़फ़्फ़रपुर आये। एक ज्ञात्रि-पुत्र के ही सभापतित्व में बुद्ध-धर्म पर कुछ कहा। फिर एक-दो दिन के बाद वहाँ से देवरिया

---

* १ बारबार जमा होना, २ साथ उठना साथ बैठना, ३ अविधेय का न विधान करना, ४ वृद्ध-सम्मान, ५ कुलस्त्री, कुलकुमारियों की सुरक्षा, ६ चैत्यों (=पूज्य स्थानों) का सम्मान, ७ अर्हतों (=पूज्य आचार्यों, उपदेशकों) की रक्षा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का टिकट कटा। आज (१४ फ़रवरी) फिर दो-तीन वर्षों के बाद कुशीनारा (कसया) पहुँचे। दश वर्ष पहले इसी रास्ते पैदल गये थे। उस वक्त एक भोले-भाले गृहस्थ ने कहा था, क्या बर्मावालों के देवता के पास जाते हो? सौभाग्य है, आज लोगों ने अपने को पहचान लिया है। माथा कुँअर में अब की महा-परिनिर्वाण-स्तूप को तैयार पाया। प्रतापी कुँअर-सिंह के वंशज स्थविर महावीर के धूनी रमाने का ही यह फल है जो अब आसपास के हज़ारों नरनारी तथागत के अन्तिम-लीला-संवरण-स्थान पर फूल-माला ले बड़ी श्रद्धा से आते हैं।

मूर्ति के सामने बैठे ख़याल आया कि २,४१२ वर्ष पूर्व इसी स्थान पर युगलशालों (शाखुओं) के बीच में वैशाख की पूर्णिमा के सवेरे, इसी तरह उत्तर को सिर दक्षिण की ओर पैर, पश्चिम की ओर मुँह किये, अश्रु-मुख हज़ारों प्राणियों से घिरी वह लोक-ज्योति "सभी बने बिगड़नेवाले हैं" कहती हुई हमेशा के लिए बुझ गई।

कुशीनारा में दो-चार दिन विश्राम किया। फिर वहाँ से बस में गोरखपुर गये। शाम की गाड़ी से नौतनवा गये। लुम्बिनी यहाँ से पाँच कोस है। जिसको दुर्गम, दुरारोह हिमालय की सैकड़ों कोस लम्बी घाटियाँ पार करनी हैं उसको यहाँ से टट्टू की क्या ज़रूरत? सवेरा होते ही दूकान से कुछ मिठाई—पाथेय बाँधा, और रास्ता पूछते हुए चल दिये। रास्ते में शाक्यों और कोलियों की सीमा पर बहनेवाली रोहिणी के साथ अनेक नदी-नालों को पार करते, 'यहाँ भगवान् पैदा हुए, शाक्य मुनि' उस स्थान पर १७ को पहुँच गये। अब की यह पूरे दस वर्ष पर आना हुआ था। अब एक छोटी सी धर्मशाला भी बन गई है। कुएँ और मन्दिर की भी मरम्मत हो गई है। उदार नैपाल-नरेश चन्द्रशम्शेर के सङ्कल्प-स्वरूप कँकरटवा तक के लिए सड़क भी बहुत कुछ तैयार हो गई है। महाराज रुम्मिन देई को फिर लुम्बिनी-वन बना देना चाहते थे, किन्तु यह इच्छा मन की मन ही में लेकर चल बसे। अब न जाने किसे उस पुनीत इच्छा के पूर्ण करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

२,४९१ वर्ष पूर्व यहीं वैशाख की पूर्णिमा को सिद्धार्थ कुमार पैदा हुए थे। २,१८२ वर्ष पूर्व धर्म-विजयी सम्राट् अशोक ने स्वयं आकर लुम्बिनी गाँव में इसे पूजा था। इसी स्थान को देखना मनुष्य-जाति के तृतीयांश की मधुर कामना है। कुशीनारा के पूज्य चन्द्रमणि महास्थविर की दी हुई मोमबत्तियों और धूपबत्तियों को उस छोटी नीची कोठरी में मैंने जलाया, जिसमें लोक-गुरु की जननी महामाया की विनष्ट-प्राय मूर्ति अब भी शाल-शाखा को दाहने हाथ से पकड़े खड़ी है। रात को वहीं विश्राम करने की इच्छा हुई, किन्तु दयालु पुजारी ने कहा—इस झाड़ी में रात को चोर रहते हैं, इसलिए यहाँ रहना निरापद नहीं है। मैं अब भी जाने का पूरा निश्चय न कर चुका था कि इतने में ही खुनगाई के चौधरीजी के लड़के आ गये। उन्होंने भी अपने यहाँ रात को विश्राम करने को कहा। उनके साथ चल दिया। लुम्बिनी के यात्रियों के लिए चौधरीजी का घर खुली विश्रामशाला है। उन्होंने अ-हिन्दू अतिथियों के लिए चीनी मिट्टी के प्याले-तश्तरी भी रख छोड़े हैं। मुझे रात को भोजन करने की आवश्यकता न होने से मैं उनके उद्योग से बच गया।

सारे दिन चौधरी साहब ने अपनी गाड़ी पर नौगढ़ रोड स्टेशन तक भेजने का प्रबन्ध कर दिया। खुनगाई से कँकरटवा डेढ़-दो कोस से अधिक न होगा। यह नैपाल-सीमा से थोड़ी ही दूर पर है। नौगढ़ से यहाँ तक मोटर और बैलगाड़ी के आने-जाने की सड़क है। जब लुम्बिनी तक सड़क तैयार हो जायगी तब यात्री बड़े सुख-पूर्वक मोटर पर नौगढ़-रोड से लुम्बिनी जा सकेंगे। उसी दिन रात को स्टेशन पर पहुँच गये। अब हमें जेतवन जाना था। गाड़ी उस समय न थी, भूख लगी थी, इसलिए हलवाई के पास गये। वह पूड़ी बनाने लगा। उसकी अपनी पान की भी दूकान है। रोज़ों के दिन थे। उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम-वासी मुसलमान गृहस्थ आकर बैठ गया। हलवाई ने पान मँगवाया। कहा—

"बहुत तकलीफ़ है, ख़ाँ साहब ?"

"नहीं भाई ! इस साल तो जाड़े का दिन है, रात को पेटभर कर खाने को मिल जाता है। जब कभी गर्मी में रमज़ान पड़ता है तब तकलीफ़ होती है।"

उनकी बातें चुपचाप सुनते समय ख़याल हुआ कि इनको कौन एक दूसरे का जानी दुश्मन बनाता है ? क्या इस प्रकार अलग अलग विचार-व्यवहार रखते हुए भी इन दोनों को पैर पसारने के लिए इस भूमि पर काफ़ी जगह नहीं है ? यदि यह काम धर्म का है तो धिक्कार है, ऐसे धर्म को।

[क्रमशः

—राहुल सांकृत्यायन

[क्षेपक-रहित असली रामायण]

रामचरितमानस

टीकाकार बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए०

आज तक भारतवर्ष में जितनी रामायण छपीं और आज-कल छप कर बिक रही हैं वे सब नक़ली हैं क्योंकि उनमें कितने ही दोहे-चौपाइयाँ लोगों ने पीछे से लिख कर मिला दिये हैं। हमारे यहाँ की रामायण असली है क्योंकि इस रामायण का पाठ गुसाईंजी के हाथ की लिखी पोथी से मिला कर और काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा के पाँच सभासदों द्वारा मिलकर शोधा गया है। इसके सिवा और भी कितनी ही पुरानी हस्तलिखित प्रामाणिक पुस्तकों से पाठ मिला-मिला कर इसमें गुसाईंजी की रचना रक्खी गई है और क्षेपक आदि कूड़ा करकट अलग कर दिया गया है। मूल चौपाइयों के अक्षर बड़े और सुस्पष्ट हैं। अर्थ बहुत सरल और सुन्दर भाषा में किया गया है। यदि आप तुलसीदासजी की वास्तविक रामायण का रसास्वादन करना चाहते हैं तो इसे अवश्य ख़रीदिए। मोटा चिकना काग़ज़, सुन्दर जिल्द मूल्य केवल ६) रुपये।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वन्द्व

[फ़रवरी की सरस्वती में 'द्वन्द्व' का जो अंक प्रकाशित हुआ है, उसका सारांश इस प्रकार है—लीला मिसेज़ राय के पास से लौट कर अपने कमरे में गई और वहाँ से नहा धोकर और कपड़े बदल कर फिर माता के पास आगई। तब मिसेज़ राय ने उसे अरुण के अन्धे होने का समाचार सूचित किया और वीणा के पास जाकर उसे सान्त्वना देने का आदेश किया। साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया कि अब अरुण के साथ वीणा का विवाह नहीं हो सकेगा, अतएव वीणा को सावधान कर देना कि स्नेह के आवेग में आकर वह कोई ऐसी बात न लिख दे कि अरुण की आशा ज्यों की त्यों बनी रहे। माता का यह अभिप्राय जान कर लीला मन ही मन दुखी हुई और कहने लगी कि ऐसी दुरवस्था में अरुण को त्याग देना तो वास्तविक प्रेम का परिचायक नहीं है। यदि वीणा को सचमुच अरुण से अनुराग था, तो उसे अपना अनुराग अब भी पूर्ववत् स्थायी रखना चाहिए। अरुण अब अन्धे होगये हैं अतएव अपनी प्रतिज्ञा भंग करके उनके साथ वीणा का विवाह न करना उचित नहीं। परन्तु लीला की इन बातों से मिसेज़ राय जब अप्रसन्न होने लगीं और उन पर कोई प्रभाव पड़ने की आशा न रही तब वह चुपचाप वीणा के पास चली गई।]

(४)

मिस्टर राय की दोनों ही कन्यायें एक दूसरे से विपरीत रूप, गुण और प्रकृति लेकर पैदा हुई थीं। वीणा माता के ही समान बड़ी रूपवती थी और उसका स्वभाव भी वैसा ही ओछा और चञ्चल था। लीला के चेहरे में कोई वैसा आकर्षण नहीं था, साधारण रूप से वह सुन्दर थी। वह पिता के समान उच्च विचार, हृदय और ज्ञान की अधिकारिणी थी।

किशोरावस्था से ही वीणा समाज का एक विशेष प्रकार का उज्ज्वल रत्न थी। समाज के सारे शिष्टाचार ख़ूब अच्छी तरह से उसे अभ्यस्त थे। वह जानती थी कि कहाँ और किसके साथ कितनी और कैसी बातचीत करनी चाहिए, और किससे कब कैसा बर्ताव करना चाहिए। उसकी अनुपम सुन्दरता, संयमशीलता तथा शालीन शिष्टाचार, कण्ठस्वर की अतुलित मधुरिमा तथा कृत्रिम हाव-भाव से मुग्ध होकर युवकों का दल अन्धभक्त होकर उसका स्तव गान किया करता, और अनुचर के समान उसके पीछे पीछे लगा रहता। वह भी उन लोगों पर अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहिनी शक्ति का प्रभाव विस्तृत रूप से डाल कर उन्हें सदा पतंग के समान अपने चारों ओर खींचती रहती। वह किसी से प्रेम नहीं करती थी, इस विजय के गर्व से वह फूली नहीं समाती थी।

वीणा की उज्ज्वल और तेजोमय आभा से सभी की आँखें चकाचौंध हो जातीं। ऐसी दशा में बड़ी बहन की रूप-माधुरी के सामने लीला स्वभावतः बिलकुल प्रभाहीन तथा मलिन हो उठी थी। उसकी ओर आसानी से किसी की दृष्टि नहीं पड़ा करती थी। वह भी यह सब व्यर्थ के साथ-संग और निर्लज्जतापूर्ण चाटुकारिता से भरसक बच कर ही चला करती। वीणा का बनावटी हाव-भाव तथा पुरुषों के मनोरञ्जन के लिए उसका सदा सचेष्ट रहना लीला के लिए बहुत ही विरक्तिकर था अतएव उसका हृदय वीणा की ओर से विमुख हो गया था। वीणा जैसी कन्या पाकर मिसेज़ राय तो गर्व के मारे अपने आप को भूल-सी गई थीं। उन्होंने लीला को भी ठोंक-पीट कर अपनी रुचि के अनुसार बना लेने के लिए बड़ा प्रयत्न किया, परन्तु इस दिशा में उनका सारा प्रयत्न निष्फल ही रहा। जैसे ही जैसे दिन बीतते जाते, लीला की ज्ञानस्पृहा भी उतनी ही बढ़ती जाती। कालेज के कोर्स की सीमा तक में भी वह अपने को बाँध कर न रख पाती! संसार में जितनी भी ज्ञातव्य बातें हैं, उन सबको वह जानना चाहती थी। उसके पास जितना भी समय था, उसने वह सब भिन्न-भिन्न विषयों के पढ़ने और सीखने के ही लिए बाँध दिया था। उसकी जैसी नवयुवती की इतनी अदम्य ज्ञान-स्पृहा तथा विद्यानुराग देखकर कालेज के ज्ञानवृद्ध अध्यापक अपने आप ही उसे यथेष्ट सहायता दिया करते।

आठ वर्ष की दीर्घकालीन साधना के फलस्वरूप सुशिक्षित और परिमार्जित हृदय लेकर लीला जब लंदन से लौटी तब उसने देखा कि घर में मा और वीणा से उसकी कहीं ज़रा भी समानता नहीं है। मा के कथनानुसार वह किसी तरह भी नहीं चल सकती। जिन तत्त्वहीन बातों की चर्चा में लोग अपना दिन काटा करतीं और जिस तुच्छ आमोद-प्रमोद से वे अपना मनोविनोद किया करतीं उनके सम्पर्क में लीला किसी तरह भी नहीं आ सकती थी। इधर उन सबके विरोध में कुछ कहने पर मा के रुष्ट होने का भी भय था। कभी कभी तो अनिच्छा होने पर भी मा के साथ उसका विवाद छिड़ जाता। लीला को क्षोभ हुआ, मन ही मन वेदना हुई, किन्तु प्रतीकार का कोई भी उपाय न दिखाई पड़ा।

मिसेज़ राय भी इतने दिनों के बाद लीला को पाकर सन्तुष्ट न हो सकी। उसने मानो सदा के लिए मा की रुचि के विरुद्ध आचरण करने का प्रण-सा कर लिया था। उसके स्वतन्त्र विचार, सूक्ष्म विवेचना-शक्ति तथा संस्कारशून्य एवं उच्च हृदय का परिचय तो मिसेज़ राय को मिला नहीं, साथ ही उसका गुण ग्रहण करने की शक्ति भी उनमें नहीं थी। उन्होंने यही समझा कि यह बड़ी उद्दण्ड, स्वेच्छाचारिणी और हठीली है। इस कारण पद पद और बात बात में लीला के साथ उनका मतभेद आरम्भ हो गया। परिणाम यह हुआ कि थोड़े ही दिनों में वह उनसे बहुत दूर होगई।

मिस्टर राय को यह मालूम था कि मेरी इस तेजस्वी तथा गूढ़ प्रकृति की कन्या को कोई भी समझ न पावेगा। उन्होंने अपने हृदय के अगाध स्नेह और आदर से उस अनादृत बालिका को खींच कर छाती से लगा लिया। पिता के स्नेह का आश्रय पाकर लीला अपने क्षुब्ध हृदय की वेदना भुलाने का प्रयत्न करने लगी।

घर लौटने पर वीणा केवल एक ही समाचार से प्रसन्न हो सकी थी। वह था अरुण के साथ वीणा के विवाह का निश्चय। समाचार-पत्रों में उसने इस वीर युवक के साहस और वीरता की प्रशंसा कितनी ही बार पढ़ी थी। उसके साथ परिचय होने से पहले ही लीला उसे अपने एक घनिष्ठ मित्र के रूप में चाहने लगी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन ही मन अरुण के सम्बन्ध में वह प्रायः सोचा करती थी। उसके हृदय में बार बार यह प्रश्न उपस्थित होता कि क्या वीणा अरुण को पूर्णरूप से सुखी कर सकेगी? वह जैसी चञ्चल और ओछी प्रकृति की है, वह अरुण जैसे उदार एवं उन्नत हृदय के युवक की रुचि और इच्छा का क्या कभी अनुसरण कर सकेगी? आज उसकी रूपमाधुरी पर मुग्ध होकर अरुण उससे प्रेम करने लगा है, परन्तु केवल रूप का मोह कब तक स्थायी रह सकेगा, यदि उसके साथ हृदय का योग न हो।

इसी तरह दिन बीत रहे थे। लीला को घर लौटे तीन ही मास हुए थे कि एकाएक अरुण के दुर्भाग्य का यह समाचार इस परिवार के लोगों पर वज्र के समान आकर टूट पड़ा, सब लोग शोकाकुल हो उठे।

फ्रांस की समर-भूमि में लेफ़्टिनेंट घोषाल अपनी सेना लेकर बड़ी वीरता के साथ युद्ध कर रहे थे। उनके समीप ही एकाएक एक तोप फट गई, इससे वे मूर्छित होगये। अस्पताल में जब चिकित्सा हो रही थी तब भी अरुण के आत्मबल में किसी तरह की कमी नहीं हुई। उस समय भी उन्हें विश्वास था कि मैं शीघ्र ही नीरोग हो जाऊँगा। परन्तु लगातार महीना भर चिकित्सा करने पर डाक्टर लोग जिस निर्णय पर पहुँचे उसके अनुसार यह निश्चय हो गया कि उनके मस्तक के 'ओप्टिक नर्व' पर गहरी चोट आ गई है, इससे इस जीवन में लेफ़्टिनेंट की दृष्टि-शक्ति फिर न लौट सकेगी।

(५)

वीणा अपने कमरे में एक सोफ़ा पर अकेली लेटी हुई उदास नेत्रों से खिड़की के बाहर ताक रही थी। लगातार रोते रोते उसकी आँखें फूल फूल कर लाल हो आई थीं। फूल-पत्ती का काम किये हुए एक रेशमी रूमाल लेकर वह क्षण क्षण पर अपने आँसू पोंछती जाती थी।

स्वभाव से ही वीणा अपूर्व सुन्दरी थी। उसका जैसा साफ़ और दगदगाता हुआ चेहरा तो शायद ही कभी देखने में आता हो। अपनी वेश-भूषा तथा ठाट-बाट बनाने की ओर वह सदा ही सचेष्ट रहती थी। अतएव बनाव-शृङ्गार के कारण अपनी द्विगुणित आभा से वह दर्शकों के मन और हृदय दोनों पर जादू डाल देती थी। सदा और सभी अवस्था में वीणा की मुखाकृति अनुपम और नयनाभिराम रहा करती थी। आज भी वह अपने आँसुओं से भीगे हुए, मलिन एवं करुण मुखाकृति में सुदक्ष शिल्पी की बनाई हुई सुन्दर प्रतिमा-सी जान पड़ती थी।

वीणा बहुत ही कोमल और ओछी प्रकृति की थी। आवश्यकता से कहीं अधिक आदर और लाड़-चाव से उसका पालन होने के कारण उसकी प्रकृति का गठन नहीं हो सका। तितली के समान ही वह मनोहर थी, और वैसा ही उसका स्वभाव भी सुखी और आमोदप्रिय था। संसार में किसी वस्तु के अभाव या दुःख-क्लेश की कल्पना तक वह नहीं सह सकती थी। जीवन के इस प्रथम आघात से पहले-पहल सचमुच उसका हृदय टुकड़े टुकड़े हो गया।

लीला धीरे धीरे दबे पाँव से आकर उसके पास खड़ी हो गई। कुछ क्षण तक वह मुग्ध और स्नेहमय दृष्टि से बहन की ओर ताकती रही और फिर धीरे से उसके पास बैठ गई। अन्त में वीणा के मस्तक पर हाथ रख कर लीला ने पुकारा—'दीदी'। उमड़े हुए आँसुओं के भार से लीला का गला रुँध गया था। वीणा ने जैसे ही मुँह फेर कर देखा, लीला के सजल नेत्रों से उसकी दृष्टि मिल गई।

"लीला, मेरा हृदय तो मानो टुकड़े टुकड़े हो गया है भाई!" वीणा तकिया में मुँह छिपा कर फफक फफक कर रोने लगी। लीला उसके मस्तक पर अपना हाथ सुहलाती रही, उसके नेत्रों के जल से वीणा के मस्तक के बाल तर होने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेबिल पर नेत्ररञ्जक फ्रेम के भीतर से अरुण का निश्चल फ़ोटो इन रोती हुई दोनों बहनों की ओर चुपचाप मुस्करा कर ताक रहा था।

शोक का वेग जब ज़रा कुछ शान्त हुआ तब लीला ने कहा—किसे मालूम था कि अरुण के भाग्य में ऐसी भी दुर्घटना बदी है! आजन्म दृष्टिहीन होकर रहना कितना भयङ्कर है, इस बात की कल्पना तक नहीं की जा सकती। खैर जितनी बुरी बातें हैं उनमें कुछ अच्छाई भी है। इस समय यही बात हमारे लिए सबसे बढ़कर सान्त्वना है। तुम उन्हें एक-दम नहीं खो सकी हो, यह क्या सबसे बढ़कर सन्तोष की बात नहीं है?

तकिया पर से मुँह उठा कर नेत्रों का जल पोंछते पोंछते वीणा ने कहा—अब इन सब बातों से मुझे कुछ भी सान्त्वना नहीं है।

"क्यों भाई? यदि सोच कर देखा जाय तो इस दुर्घटना में अब भी बहुत सी अच्छाइयाँ हैं। युद्ध में अरुण एक-दम से मर भी तो सकते थे। उस दशा में उन्हें फिर से पाने की कोई आशा न रह जाती। अभी तो वे जीवित हैं। अब भी वे तुम्हें पहले के ही समान या उससे भी अधिक प्यार करते हैं। वे फिर तुम्हारे ही पास लौटे आ रहे हैं। इस अवसर पर यही सब बातें तो सान्त्वना के लिए सबसे बढ़कर हैं, दीदी!"

"तुम तो सबसे पहली ही बात नहीं समझ सकी हो लीला। इस दुर्घटना के बाद उनके साथ मेरा कोई सम्बन्ध ही नहीं रह सकेगा। उनकी वह दृष्टिहीन आँखें और मुँह मुझसे किसी तरह देखा ही न जायगा। यह बात जब मन में आती है तब मैं पागल-सी हो जाती हूँ। मेरे हृदय का अन्तस्तल रह रह कर न जाने कैसा हो जाता है, यह तुम समझ न सकोगी। मन में यही बात आती है कि किसी ओर भाग जाऊँ कि चित्त को ज़रा सी शान्ति मिल जाय।"

लीला बड़े स्नेह से वीणा के बिखरे हुए बालों की लटें सुलझा रही थी। उसने कहा—जीवन के पहले ही आघात से एक-दम से जी न तोड़ दो भाई। संसार-यात्रा में मनुष्य को न जाने कितनी ठोकरें खाकर और न जाने कितने आँधी-बवंडरों से होकर चलना पड़ता है। इतने ही ज़रा से क्लेश में विकल हो जाने में कैसे निर्वाह होगा? तुमने जीवन में कभी कोई क्लेश तो पाया नहीं, दुख सहने का बिलकुल अभ्यास भी नहीं है, इसी लिए पहले-पहल इतना अधिक क्लेश मालूम पड़ रहा है। धीरभाव से यदि सहती जाओगी तो धीरे-धीरे इसमें तुम्हें बिलकुल क्लेश ही न मालूम पड़ेगा। साथ ही तुम्हें इस बात का भी अनुभव होगा कि जिसे तुम प्यार करती हो वह इतनी आसानी से दूर भी नहीं किया जाता। इस समय तो तुम समझती हो कि उन्हें देखकर ही मैं डर जाऊँगी, किन्तु पीछे से तुम्हें मालूम होगा कि उन्हें सुख देने के अतिरिक्त संसार में तुम्हें और किसी बात की अभिलाषा ही नहीं है। इसके अतिरिक्त इस समय तो उन्हें सुखी करना तुम्हारा ही काम है दीदी। तुम्हारे प्रेम का आश्रय छोड़ कर उन्हें और कहाँ शान्ति मिलेगी? मुझे यह मालूम है कि संसार में कहीं भी मेरी आवश्यकता नहीं है। परन्तु मान लो कि यदि किसी को मेरी इतनी आवश्यकता होती तो क्या मैं कभी पीछे पैर हटा सकती थी?

टेबिल पर एक ख़ूबसूरत गुलदस्ते में फूल सजा कर रक्खे गये थे। वीणा ने उनमें से गुलाब का एक फूल उठा लिया और कहने लगी—ओह, मस्तक में इतनी पीड़ा है!

फूल को नाक के पास लगा कर लीला की बात के उत्तर में वीणा ने कहा—तुम पैर पीछे नहीं हटा सकती थीं लीला, यह मैं जानती हूँ। तुम सदा की ही ऐसी उजड्ड हो। चार आदमी जो काम करने में डरते हैं उसमें तुम बिना ही सोचे-समझे कूद पड़ती हो, यह तुम्हारा स्वभाव है। परन्तु तुम तो जानती हो कि मेरी प्रकृति बिलकुल इसके विपरीत है। मैं बहुत ज़रा-सी बात में घबरा जाती हूँ। दुःख-क्लेश मैं बिलकुल ही नहीं सहन कर सकती। अरुण के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ विवाह करना तो दूर रहा, मैं अब कभी उससे मुलाक़ात तक न कर सकूँगी। मा कहती थीं कि यह विवाह होने से मेरा सारा जीवन ही नष्ट हो जायगा।

"मा की बात भाड़ में जाय! इतनी बड़ी हो गई हो, अपनी बात ज़रा सा अपने आप सोचना नहीं सीखा दीदी!"

क्रोध के आवेग में आकर लीला ने यह बात कह तो डाली, परन्तु तुरन्त ही उसने फिर अपने आपको सँभाल लिया और शान्तभाव से उसने कहा—यदि तुम सचमुच उन्हें चाहती हो तो दूसरे को यह सिखाने की ज़रूरत न पड़ेगी कि तुम्हें अब क्या करना उचित है या अनुचित है। इस प्रश्न का उत्तर तो स्वयं तुम्हारा हृदय ही दे देगा। इसी लिए मैं कहती हूँ कि अब व्यर्थ का रोना-धोना छोड़कर ज़रा ध्यान से सोचो कि ऐसी परिस्थिति में तुम क्या कर सकती हो। मेरे विचार से तो तुम्हारा यह सबसे पहला कर्तव्य है कि उन्हें लिख दो—"तुम्हें चाहे जो हो जाय या जैसे भी रहो, मेरे साथ तुम्हारा जो सम्बन्ध है वह अनिवार्य है। उसे कोई रोक नहीं सकता।" तुम्हारी इस बात से उन्हें कितनी शान्ति मिलेगी, इस बात का तुम अभी नहीं अनुभव कर रही हो।

"उन्हें यह बात मैं कभी नहीं लिख सकती। तुम पागल हुई हो लीला। मैं ऐसी बेवकूफ़ी करूँगी?" उत्तेजना की अधिकता से वीणा बिस्तरे पर उठ कर बैठ गई और फिर कहना आरम्भ किया—यह मैं निश्चित रूप से जानती हूँ कि उनके साथ मेरा विवाह अब नहीं हो सकेगा। ऐसी दशा में व्यर्थ की आशा देकर उन्हें पत्र लिखने में लाभ ही क्या होगा? यद्यपि इस घटना से मेरा वक्षःस्थल बिलकुल विदीर्ण हो गया है, तो भी उन्हें सच बात बतला देने का साहस मुझमें यथेष्ट है।

लीला टकटकी लगाये वीणा के मुँह की ओर ताक रही थी। उसने कहा—यदि तुमने सोच-समझ कर दृढ़ रूप से इस बात का निश्चय कर लिया है तो फिर इसमें कुछ कहने-सुनने की बात ही क्या है? मुझे अब जाकर मा से कह देना चाहिए कि वे निश्चिन्त हो जायँ। उन्होंने ही व्यस्त होकर मुझे तुम्हारे पास भेजा था। सोचा था कि तुम प्रेम के फेर में आकर उन्हें कोई आशाजनक पत्र न लिख दो। उन्हें तो पहले से ही समझ लेना चाहिए था कि और चाहे कोई कुछ भी करे, किन्तु मेरी वीणा ऐसा काम कभी न करेगी।

अन्त में ज़रा सा हँस कर लीला ने फिर कहा—तुम लोगों को तो मालूम ही है कि मैं बहुत रूखी और निर्मोह हूँ। खाती-पीती हूँ, घोड़ा दौड़ाती इधर-उधर घूमती रहती हूँ, बहुत किया तो ज़रा सा पढ़ती लिखती हूँ। परन्तु प्रेम-सम्बन्धी बातों में न तो कभी किसी प्रकार की चिन्ता करती हूँ और न उस विषय को अच्छी तरह से समझती ही हूँ। तुमने प्रेम का जो नमूना आज दिखलाया है भाई, वही यदि प्रेम है तो उस चीज़ को मैं दूर से ही नमस्कार करती हूँ। मेरा यह रूखा ही स्वभाव अच्छा है भैया। उस चीज़ को किसी दिन भी समझने की मुझे आवश्यकता नहीं है।

वीणा का मुँह लाल हो गया। उसने गम्भीर भाव से कहा—मा जो कहती हैं कि तुम्हें किसी तरह की माया-ममता नहीं है, तुम बिलकुल हृदयहीन हो, यह बात सच है। यदि ऐसा न होता तो ऐसे शोक के समय तुम इस तरह मेरी हँसी न उड़ातीं।

लीला ने हँस कर कहा—तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ दीदी। व्यर्थ में नाराज़ न होओ। जिसे तुम शोक समझ रही हो वह शोक नहीं है, वह शोक का अभिनय भर है। यह तुम्हारे समाज का नियम और फ़ैशन है कि इस तरह की घटना होने पर नायिका का हृदय-द्रावक पतन, मूर्छा, शोक आदि होना उचित है। उस नियम के विपरीत तुम भी नहीं चल सकती हो। ऐसी दशा में जो जो करना आवश्यक है वह सब कर चुकी हो, दो-एक घंटे में बिलकुल चंगी हो जाओगी। अब कोई चिन्ता या भय की बात नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जिसके हृदय पर सचमुच आघात पहुँचता है, क्या वह कभी उस समय बैठ कर अपने हित-अहित पर बारीकी के साथ विचार कर सकता है? अस्तु, अब मैं जाती हूँ, तुम्हें सान्त्वना देने की कोई विशेष आवश्यकता तो दिखाई नहीं पड़ती। अच्छा, तो अरुण की चिट्ठी का जवाब क्या दोगी?

"उसका जवाब लिख कर मैंने टेबिल पर रख लिया है। किन्तु लीला, तुम सदा ही मेरे साथ ऐसा हृदयहीन व्यवहार करती हो, जो मुझे बिलकुल असह्य हो जाता है।"

रूमाल उठाकर वीणा ने अपनी आँखें ढँक लीं।

उस ओर दृष्टि तक न डाल कर लीला ने कहा—इतनी ही देर में लिख डाला? कहाँ है, ज़रा देखूँ तो?

टेबिल पर से खुला हुआ पत्र उठाकर लीला पढ़ने लगी—

"प्रिय अरुण,

तुम्हारे दुर्भाग्य के समाचार ने मेरे हृदय को चूर-चूर कर दिया। कितनी यन्त्रणा से मैं आज का दिन बिता रही हूँ, यह लिख कर नहीं सूचित कर सकती। तुमने हमारे विवाह का प्रस्ताव रद्द कर देने की इच्छा प्रकट की है। बहुत कुछ सोचने-समझने पर मैं भी अब यही उचित समझ रही हूँ। कारण, अब तुम्हें जैसी स्त्री की आवश्यकता है, उससे मैं बिलकुल विपरीत हूँ। मैं ज़रा सी ही बात में बिलकुल व्याकुल हो जाती हूँ, धैर्य और सहिष्णुता मुझमें बिलकुल नहीं है। तुम्हें आजन्म सेवा और यत्न की ही आवश्यकता है, परन्तु उसके लिए मैं बिल असमर्थ हूँ। अतएव आपकी स्त्री होने के उपयु नहीं हूँ। मा की भी यही सम्मति है कि इस वि के न होने में ही लाभ है। तुमसे मुलाक़ात होने हम दोनों को ही क्लेश होगा, अतएव मैं समझत कि यह क्लेश स्वीकार करना भी हम लोगों के निरर्थक है। मैं तुम्हें जीवन में कभी नहीं भूलूँ ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम्हारा शेष जीवन जहाँ हो सके, सुख से बीते। अब मैं तुमसे विदा होती

वीणा

पत्र पढ़ कर लीला कुछ देर तक भौचक्का-सी ख रही—यह क्या? कैसा निष्ठुर उत्तर है? पत्र कहीं भी स्नेह, प्रेम या समवेदना का लेश तक न है। मनुष्य जिससे प्रेम करता है, क्या दुरवस्था समय उसे एक ही शब्द में झाड़ दे सकता है?

वीणा ज़रा देर तक लीला की ओर ताकती रही बाद को उसने कहा—लीला, इसे तू डाक में डाल देगी? अरुण ने लिखा है कि कुछ दिन मैं किरण के पास रहूँगा। अतएव यह पत्र वसन्तपुर के पत से ही भेजना ठीक होगा।

और कोई बात कहने की इच्छा लीला को नहीं थी। पत्र हाथ में लेकर वह कमरे से निकल गई।

[क्रमशः

—ठाकुरदत्त मिश्र

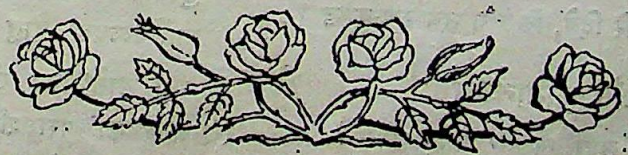

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार-विमर्श

(१) वीर-सतसई के कुछ बढ़िया दोहे

(२)

वीर वैश्य !

धन्य वैश्यवर वीर जे, मेलि रुण्ड रण-कुण्ड ।
खड्ग-तुला पै मत्त ह्वै, रखि तोले खल-मुण्ड ॥

उत्तरार्द्ध में 'रखि' पद व्यर्थ है। वीर में वैश्य का रूपण किया गया है, अतएव 'मत्त' पद अनिष्टकर है! वैश्य जन कोई वस्तु 'मत्त' या 'उन्मत्त' होकर नहीं, बड़ी सावधानी से तोलते हैं। 'मत्त' के स्थान पर 'सजग' हो, तो ठीक हो जाय।

दूसरी बात यह कि वीर जन दुष्टों के रुण्डों को पहले रण-कुण्ड में गिरा कर तब बाद में उनके सिर तलवार से काटा करते हैं, यह इस दोहे का भाव है, जो न जाने 'मत्त' होकर लिख दिया गया है या क्या! दोहा यों होना चाहिए—

खड्ग-तुला पै तौलि वे, अरिसिर भीषण रुण्ड ।
वीर वनिक लौं भरि दियो, वह दीरघ रण-कुण्ड ॥

उपमा और रूपक का संकर न करना हो तो उत्तरार्द्ध यों कर देना चाहिए—

वीर वनिक झुकि भरि दिये, किते न तब रण-कुण्ड ?

वीरता और कामान्धता

जा तनु-वारिधि में सदा, खेलति अतनु तरंग ।
उमगैगी क्यों करि कहौ, ता मधि युद्ध उमंग ?

दोहे में रूपक अधूरा रह गया है और हेतु तथा हेतुमान् की व्यवस्था भी नहीं जमी। दोहा इस प्रकार होना चाहिए—

जा तनु-वारिधि मैं सदा, खेलति अतनु-तरङ्ग ।
लावै किमि ता मधि कहौ, रण-दावानल रंग ?

वीर-नेत्र

सुभट-नयन अंगारु पै, अचरजु एकु लखातु ।
ज्यौं ज्यौं परतु उमाह-जलु, त्यौं त्यौं धधकत जातु!

उमाह में जल का आरोप किया गया है; परन्तु उमाह (उमंग, उत्साह) और जल में कोई भी समान गुण नहीं है; अतएव यह रूपक भ्रष्ट है। उमाह (उमंग) में तो तेज़ी होती है, जो अग्नि से समता रखती है। चुस्ती और गरमी एक ही समझिए। उमाह से ही तो वीरों का ख़ून खौलता है—उनमें गरमी आती है। उमाह के बिना मनुष्य ठंडा पड़ जाता है—निर्जीव! तब फिर उमाह को जल बनाना कहाँ तक ठीक है! उमाह और जल में कोई सादृश्य तो नहीं, वैपरीत्य प्रत्यक्ष है। इसलिए दोहा यों होना चाहिए—

सुभट-नयन अंगारु तब, रण भीषण सरसात ।
ज्यों ज्यों अरि-हवि परत झुकि, त्यों त्यों धधकत जात ।

दूसरा—

सुरत-रंग कहँ दृगनि में, कहँ रण-ओज-उदोतु ।
यातें उज्ज्वल होतु मुखु, वातें कज्जल होतु !

यहाँ 'यातें' पद से 'सुरत-रंग' का और 'वातें' से 'रण-ओज' का परामर्श होगा—प्रथम उच्चरित से प्रथम का और द्वितीय से द्वितीय का परामर्श होना ही सुविधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। और ऐसा होने पर कवि के भाव की क्या दशा होगी? "लिखत सुधाकर लिखिगा राहू!" कवि-बुद्धि में भी ऐसी छोटी छोटी बातें न आवें तो हद है! उत्तरार्द्ध में यों शब्द-परिवर्तन करके पढ़िए—

याते कज्जल होत मुख, वाते उज्ज्वल होत।

हाँ, यदि 'रण-ओज' को ही वक्तृ-बुद्धि-सन्निहित मानें तो कथञ्चित् समर्थन हो जाता है, पर ऐसा ही कुछ! परन्तु यह बात भी नहीं है, क्योंकि नीचे के दोहे में इसके विपरीत है—

युद्ध-रत्त दृग रत्त की, कहा रक्त सँग लाग?
लागतु यातें दाग वह, मेटतु हिय कौ दागु।

धनुष-बाण

बिसिख-भुजँग तुव फुंकरत, उड़ि नभ लगि मँड़रात।
अरि-अपजसु तेरो सुजसु सँग लपेटि लै जात॥

पहले तो ऐसा कहीं देखा, न सुना कि साँप किसी का यश या अपयश उड़ा ले जाते हों, किन्तु यदि मान भी लें तो विषम समस्या उपस्थित होती है—प्रकृत वीर का यश और उसके शत्रुओं का अपयश बिलकुल उड़ा ही जाता है! उलटी बात हुई जाती है! इस दोष से बचने के लिए दोहा यों करना चाहिए—

विसिख भुजँग तुव फुंकरत, उड़ि नभ लगि मँड़रात।
सब अरि-जस-पय पान किय, तऊ न नेकु अघात।

शुक्लत्व गुण के कारण यश का दुग्ध उपमान प्रसिद्ध ही है। 'शुक्लता वर्णते हासकीर्त्योः' के अनुसार यश में शुक्लता का वर्णन कवि-समय है।

और भी—

छूटत ही परचण्ड सर, मारतण्ड लौं धाय।
भौननि प्रतिपच्छीनु के, तिमिर देत चहुँ छाय।

कहने का तात्पर्य्य यह कि वीर के बाण इस तरह छूट कर आकाश में भर गये, जिससे सूर्य्यमण्डल को ढाँप लिया! इसी लिए प्रतिपक्षियों के घरों में चारों ओर से अन्धकार छाया हुआ है। शोकजन्म किं[illegible] मूढ़ता का अध्यवसाय अन्धकार से है।

दोहे के चतुर्थ चरण ने रंग बिगाड़ दिया! वस्तु रविमण्डल तक दौड़ कर ही नहीं, किन्तु उ[illegible] कर अन्धकार कर सकती है। उसकी जगह [illegible] मण्डल महँछाय' कर देने से ठीक हो जाता है।

शूर-साधन

होत सूर सरनाम करि, चूर चूर निज अंग।
पिसत पिसत ज्यों सिला पै, लावति मेंहदी रंग।

शूर-वीर अपना ही अंग चूर चूर करके प्रसिद्ध होते, दूसरे का—शत्रुओं का—नाश करके भी वे [illegible] प्रथित होते हैं। अतएव ऐसी बात नियमतः क[illegible] ठीक नहीं है। फिर मेंहदी का और उनका सादृश्य कैसा? वे अपना अंग चूर चूर करके स्वयं प्रसिद्ध होते सुन्दर बनते हैं और मेंहदी पिस कर दूसरों को अ[illegible] बनाती है। दोहा यों हो जाय तो कुछ ठीक हो जाता है

सूर बढ़ावत देस-छवि करि चूरन निज अंग।
कटि-पिसि ज्यों सिला पै, लावति मेंहदी रंग।

स्वदेश-परिचय

रमा, भारती, कालिका, करति कलोल असेस।
विलसति, बोधति, संहरति, जहँ सोई मम देस।

रमा और भारती के विलास और बोधन का [illegible] कुछ कहना ही नहीं है, पर कालिका का संहार बड़ा विक[illegible] है! संहार किसका? देशवासियों का ही? कुछ पत[illegible] नहीं! वस्तुतः यहाँ विशेष रूप से संहार-क्रिया का क[illegible] 'शत्रु' अपेक्षित है, जो नहीं है। इस एक भीषण दोष ने दोहे को रसातल को पहुँचा दिया है!

चित्तौड़गढ़

दहलति ही दिल्ली दलित, सुनि चितौर! तुव धाक।
क्यों न कहैं हम तोहि फिरि, आज हिन्द की नाक।

दोहे में 'सुनि' शब्द चिन्त्य है। 'धाक' नहीं 'हाँक' सुनी जाती है। 'धाक' का तो अनुभव किया जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आज' भी गाज के समान दोहे को पीस रहा चित्तौड़ आज ही हिन्द की नाक नहीं, बहुत पहले का है। प्रत्युत आज तो वह कुछ और ही है! यों कर दीजिए—

लति ही दिल्ली दलित, इक चितौर! तुव धाक।
न अजहुँ हम कहहिँ तुहि, सकल हिन्द की नाक।

झाँसी की रानी

झाँसी दुर्गम दुर्ग धनि, महिमा अमित अनूप।
जहाँ चंचला अवतरी, प्रगट चण्डिकारूप।

प्रातःस्मरणीय महारानी लक्ष्मीबाई को 'चंचला' ना अच्छा नहीं जँचता। एक तो व्यक्तिवाचक ों के पर्य्यायशब्द देना यों ही उचित नहीं है; फिर मीजी का 'चंचला' नाम उनके एक प्रसिद्ध दोष के ण पड़ा है। अतिगम्भीर महारानी लक्ष्मीबाई को ञ्चला' कहना बुरा है। इससे हृदय पर धक्का लगता । फिर लक्ष्मी क्यों चण्डी के रूप से अवतरीं, इसका ई हेतु नहीं दिया गया है! दोहा यों बनाना चाहिए—

झाँसी दुर्गम दुर्ग धनि, महिमा अमित अनूप।
जहाँ लक्ष्मी समय लखि, प्रगटी चण्डीरूप।

गठेवरा

बुँदेल-खण्ड में छत्रपुर के समीप 'गठेवरा' नामक ान है। इसकी प्रशंसा में श्री वियोगी हरिजी लिखते हैं—

धनि रण-मत्त गठेवरा! गौरव-गरब-निकेत।

फिर इसके आगे आप कहते हैं—

है यह वही गठेवरा, जहाँ जूझि मजबूत।
रहे खेत गृह-युद्ध में सवा लाख रजपूत॥

और—

है यह वही गठेवरा, जहँ अखण्ड बल चण्ड।
खण्ड खण्ड गृह-युद्ध ते, भयो बुँदेलाखण्ड॥

जिस गठेवरा में गृह-युद्ध से बुँदेलखण्ड का नाश हो गया उसी को आप 'धन्य धन्य' और 'गौरव-गरब-निकेत' कह रहे हैं! क्यों? यह आप ही जानें! पाठक भी सोचें।

पराधीनता

पराधीनता दुखभरी, कटति न काटें रात।
हा! स्वतन्त्रता कौ कबै, ह्वै है पुण्य प्रभात।

पूर्वार्द्ध में पराधीनता को आपने दुःखपूर्ण बतलाया है। दुःख से ही चित्त ऊब उठा है, जिसके निवारण के लिए स्वतन्त्रता की कामना है। परन्तु स्वतन्त्रता का 'सुखद' विशेषण न देकर 'पुण्य' दिया है! इस दोष को मिटाने के लिए पूर्वार्द्ध में 'दुख' के स्थान पर 'अघ' किंवा उत्तरार्द्ध में 'पुण्य' के बदले 'सुखद' शब्द देना चाहिए।

चाणक्य

राजमुकुट नव नन्द के, चन्द्रगुप्त सुखदैन।
लखि लुंठित तव पगनु पै, कबै सिरैहैं नैन।

अप्राप्त की कामना की जाती है। चाणक्य के चरणों पर नव नन्दों के मुकुट लोट चुके, बहुत दिन बीत गये। ऐसी दशा में उसके देखने की कामना करना कैसी बात है? चतुर्थ चरण इस प्रकार कर देने से यह दोष दूर हो जाता है—'सब जग विसमित नैन!' कहने को तो ये ज़रा ज़रा सी बाते हैं। पर इनसे समस्त वाक्य में और कवि की शक्ति में बट्टा लग जाता है। कैसे? "गन्धेनाग्रेण लशुन इव।"

पद्मिनी-जौहर

चञ्चरीक! चित्तौर में, नहिं पैहै रसजाल।
ह्वै है चम्पकमाल लौं, तोहि पद्मिनी बाल!

पहली बात तो यह है कि 'रस का जाल' यहीं देखा। दूसरी यह कि पद्मिनी को चम्पा बनाकर यवन को भ्रमर बनाना भी कुछ जँचा नहीं। हाँ, यदि उत्तरार्द्ध में भी अभेदाध्यवसायमूलक अतिशयोक्ति ही होती, पद्मिनी का साफ़ ग्रहण न होता, तो कुछ ठीक भी होता। परन्तु ऐसा नहीं हुआ है। 'पद्मिनी' और 'चञ्चरीक' शब्द एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ आ जाने से कुछ और ही बात हो जाती है ! बिलकुल विपरीत मामला ! पद्मिनी (कमलिनी) का और चन्चरीक का तो सम्बन्ध जगत्प्रसिद्ध है। कितना अनर्थ हुआ है ! शब्द ही तो ठहरे ! इसी लिए कवि को बहुत सावधान रहने की ज़रूरत है; अन्यथा रस को विष बनते देर नहीं लगती। भाई ! पद्मिनी चम्पा कैसे हो सकती है ! यदि ऐसा कुछ कहा जाता कि 'तू जिसे पद्मिनी समझता है, वह तेरे लिए चम्पा है' तो भी ठीक होता।

लक्ष्मीबाई

हौं देख्यौ अचरजु अबै, झाँसी दुरग दुवार।
दृग-कमलनि अंगार त्यौं, कर-कमलनि तरवार।

महिलाओं के स्वाभाविक नेत्रों के उपमान कुवलय हैं। परन्तु इस समय लक्ष्मीबाई के नेत्र क्रोध से लाल हैं, अतएव कमल हैं। कमल कहने से ही रक्तिमा प्रकट हो जाती है फिर 'अंगार' की ज़रूरत नहीं। हाँ, कुवलयों में अंगार कहना अवश्य ठीक होता। और कर-कमलों में तलवार पकड़ना किंवा दिखाई देना कोई आश्चर्य की बात नहीं। 'तलवार' के कारण यह रूपक नहीं, उपमा ही हो सकती है। अर्थ होगा—कमल के समान सुन्दर और कोमल हाथों में तलवार देखी। सो, यह कौन सी आश्चर्य की बात हुई ? वस्तुतः यहाँ अभेदाध्यवसाय-मूलक अतिशयोक्ति ही करनी चाहिए थी। तब चमत्कार भी रहता और कोई दोष भी न रहता। इस हिसाब से दोहा इस प्रकार होगा—

हौं देख्यो अचरजु अबै, झाँसी दुरग-दुवार।
कुवलय भये अंगार त्यों, कमल गहे तरवार !

वीरता और विलासिता

नयन बान ही बान अब, भ्रु व ही बंक कमान।
समर केलि विपरीत ही, मानत आजु प्रमान !

यहाँ नयन को बाण बनाया है, तब 'नयन-बान' इस रूपक की क्या ज़रूरत ? 'भ्रु व' को कमान बनाया, तब 'बंक' विशेषण किसलिए ? क्या कोई कमान सीधी भी होती है ?

कवि-पतन

नीति-बिहूनो राज ज्यों, सिसु ऊनो बिनु प्यार।
त्यों अब कुच-कटि-कवित बिनु, सूनो कवि-दरबार।

पूर्वार्द्ध की दोनों उपमायें प्रकृत विषय को भ्रष्ट करनेवाली हैं। कवि का पतन इसलिए हुआ कि उसके दरबार में कुच-कटि के सिवा और कुछ है ही नहीं ! परन्तु नीति-युक्त राज्य का या प्यार से पाले-पोसे बालक का वैसा पतन न तो कहीं प्रसिद्ध है और न अनुभव ही है। इससे तो यह मतलब निकलता है कि राज्य सुदृढ़ करने के लिए जैसे नीति की आवश्यकता है और बच्चे का भली भाँति पालन करने के लिए प्रेम (वात्सल्य) की ज़रूरत है, उसी प्रकार कवि के लिए कुच-कटि-वर्णन अत्यावश्यक है ! सो, यह श्री वियोगी हरिजी को अभीष्ट नहीं है। उलटा ही हो गया है।

ऋतु

लेखें ही ऋतु लेखियतु, नित प्रति ग्रीषम साथ।
जठर-ज्वाल तें जरि रहे, हम अनाथ व्रजनाथ।

पूर्वार्द्ध में 'ऋतु' की जगह 'वसन्त' या 'पावस' आदि किसी सुखद ऋतु का नाम लेना चाहिए था। सामान्य 'ऋतु' कह देने से कुछ मतलब हल नहीं होता।

अभिलाष

'है स्वदेश मख-वेदिका, अरु आहुति मम प्रान।'
कोटि जन्म हूँ नाथ ! जनि जावै यह अभिमान।

पूर्वार्द्ध में कोई अभिमान की बात नहीं है। वह तो अभिलाष, व्रत या प्रतिज्ञा है। 'अभिमान' के स्थान पर 'अरमान' कर देने से ठीक हो जाता है। या फिर इस प्रकार चौथा चरण करना चाहिए—"जावे टेक महान"।

कटिकृशता

तिय-कटि-कृसता कौ कविनु, नित बखानु नव कीन।
वह तौ छीन भई नहीं, पै इनकी मति छीन।

पूर्वार्द्ध में कृशता और उत्तरार्द्ध में उसी अर्थ में 'छीन' शब्द नितान्त चिन्त्य हैं।

—किशोरीदास बाजपेयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—सूर्यसिद्धान्त के विज्ञानभाष्य की समालोचना का उत्तर

गत वर्ष की जून मास की सरस्वती में ज्योतिषाचार्य पण्डित पद्माकरजी द्विवेदी ने हमारे 'सूर्यसिद्धान्त' के 'विज्ञानभाष्य' पर अपने विचार समालोचना के रूप में प्रकट करने की कृपा की है। आपने इस 'कृति' की परख के लिए दो कसौटियाँ तैयार की हैं।

पहली कसौटी यह है—'अँगरेज़ीगणित जाननेवाले यदि हिन्दूगणित पर कुछ लिखना चाहते हैं तो...वे लोग प्रथम संस्कृत-भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लें'।

आपकी दूसरी कसौटी यह है—'फिर (पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद) संस्कृत में लिखे गणित के ग्रन्थों तथा उन पर लिखी टीकाओं को भली भाँति देख जायँ'। इस कसौटी से आपका अभिप्राय यह ज्ञात होता है कि लेखक जब तक उस विषय के समस्त ग्रन्थ और उन पर लिखी समस्त टीकाओं को 'भली भाँति' न देख जाय अर्थात् जब तक लेखक की कृति में प्रत्येक पाठक के देखे ग्रन्थ या टीका के मनचाहे उद्धरण न मिल जायँ तब तक यह मान लिया जायगा कि लेखक ने उस विषय के ग्रन्थों तथा उन पर लिखी टीकाओं को 'भली भाँति' देखे बिना ही 'अनुचित ढिठाई' प्रकट कर दी है और इसी लिए उसकी कृति में 'मौलिकता नहीं रह गई'। मौलिकता से कदाचित् विद्वान् समालोचक का मतलब मूलग्रन्थ तथा मूल-टीकाओं के उद्धरणों की बाहुल्यता से है। किन्तु मेरी तुच्छ बुद्धि में मौलिकता ग्रन्थों तथा टीकाओं के उपयोग करने में नहीं, बरन इस बात में है कि उनका उपयोग कैसे किया गया है।

आचार्य महोदय की समालोचना को पढ़कर पाठकों के चित्त में केवल यह विचार उत्पन्न हो सकता है कि विज्ञानभाष्य का लिखनेवाला मूर्ख है और उसका यह प्रयत्न धृष्टता-पूर्ण है।

सूर्यसिद्धान्त के मूलश्लोकों की संख्या ५०० है, जिसके केवल ३०१ या ३०२ श्लोकों का विज्ञानभाष्य ४ खंडों में अभी प्रकाशित हुआ है, जो समालोचक महोदय के पास समालोचना के लिए भेजे गये थे। ये चार खंड ६३१ पृष्ठों में समाप्त हुए हैं, जिनमें विषय-सूची, शुद्धिपत्र और अनुक्रमणिका की गिनती नहीं की गई है। ये ३०० श्लोक यदि अलग छपाये जायँ तो विज्ञान-भाष्य के ३० पृष्ठों में आ सकते हैं। इनका केवल अनुवाद १०० पृष्ठों से अधिक में नहीं आवेगा। इसलिए शेष ८०० पृष्ठों में विज्ञानभाष्य आया है, जो दोनों के योग का ६ गुना है। समालोचना से जान पड़ता है कि इतनी बड़ी पुस्तक के ११६ पृष्ठवाले केवल प्रथम खंड के अवलोकन का कष्ट उठाकर आपने सारी पुस्तक की उपयोगिता का अंदाज़ा कर लिया है। इस प्रथम खंड के भी केवल संस्कृतश्लोकों की छपाई की अशुद्धियाँ बतलाने में आपने समालोचना का चतुर्थांश भर दिया है। दूसरे चतुर्थांश में यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि अमुक शब्द का अनुवाद क्यों छोड़ दिया गया या अशुद्ध किया गया। शेष आधे अंश में आपने विज्ञानभाष्य के दोष दिखलाये हैं। यह सब कोई सवा सौ पंक्तियों में। और लिखने का कष्ट आपने नहीं उठाया और कारण बतलाया कि 'स्थानाभाव'। इस पर यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि ८-१० वर्ष के परिश्रम से लिखी हुई पुस्तक को समालोचक महोदय अपनी कल्पना के बल पर व्यर्थ मान बैठें और इसकी दलील भी न दें, यह बड़ा अन्याय है।

छपाई की अशुद्धियों के बारे में मैं केवल इतना ही निवेदन करना उचित समझता हूँ कि हिन्दी के अच्छे से अच्छे प्रेसों से निकलनेवाली साहित्य की पुस्तकों में भी अशुद्धियों की कमी नहीं रहती, फिर एक साधारण प्रेस में छपी हुई वैज्ञानिक पुस्तक के बारे में क्या कहा जाय?

अनुवाद के बारे में मुझे केवल यह कहना है कि एक एक शब्द की व्युत्पत्ति बतलाते हुए अनुवाद की आवश्यकता नहीं समझी गई। इसलिए यदि एक-आध साधारण शब्द छूट गया तो इससे क्या हानि हुई? भाव में तो कोई अन्तर नहीं पड़ा। यदि अनुवाद करने में ज्योतिष की कोई भूल रह गई हो जिससे श्लोकों का अर्थ यथार्थ से भिन्न हो गया हो तो और बात है। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचक महोदय ने यह दिखलाने का कष्ट नहीं उठाया।

एक जगह आप लिखते हैं—'संस्कृत-ज्योतिषसिद्धान्त जाननेवाले आचार्यों की लिखी हुई अनेक उपयोगी संस्कृत-टीकाओं को न देखने से बहुत से मार्मिक गूढ़ विषयों के विचार से आपका भाष्य वञ्चित है।' समालोचक महोदय यदि यह भी लिख देते कि वे टीकायें कौन हैं, कैसे प्राप्त हो सकती हैं और उनकी कौन कौन सी बातों के न होने से इस भाष्य में कमी रह गई है तो बड़ा उपकार होता। परन्तु इसका कष्ट आपने नहीं उठाया। जिन टीकाओं की चर्चा विज्ञानभाष्य में हुई है उनके नाम पाठक महोदय स्वयम् जान सकते हैं। लेखक को जितनी टीकायें मिल सकी हैं उनका प्रयोग उसने अवश्य किया है, पर जो न मिल सकीं उनके लिए क्या करे। फिर भी क्या यह आवश्यक है कि जब तक सब टीकायें न देखी जायँ तब तक कोई नवीन टीका तैयार करने का आरम्भ ही न किया जाय। यह ठीक है कि इससे भाष्य में पूर्णता नहीं आ सकती। परन्तु क्या कोई भाष्य पूर्ण कहा जा सकता है?

अब आपकी ज्योतिष-सम्बन्धी दलीलों का उत्तर सुनिए—

१२वें पृष्ठ की २१वीं पंक्ति में 'कोई २ घड़ी' अवश्य अशुद्ध है। इसकी जगह 'कोई दो दो घड़ी' होना चाहिए। इसकी सूचना के लिए मैं समालोचक महोदय का बड़ा कृतज्ञ हूँ। परन्तु कोई भी पढ़कर समझ सकता है कि यह छापे की भूल है, एक 'दो' रह गया है और प्रूफ़ देखते समय इस पर ध्यान नहीं गया।

प्रथम अधिकार के १३वें श्लोक में आये हुए 'दिव्य दिन' के सम्बन्ध में मैंने एक टिप्पणी दी है, जिस पर समालोचक महोदय ने लिखा है कि 'यह भ्रम है, ३० दिन का एक मास और १२ मासों का एक वर्ष सभी प्रकार के दिनों और मासों पर लागू है'। जान पड़ता है कि समालोचक महोदय ने इस सम्बन्ध में १३वें पृष्ठ पर 'वर्ष' की परिभाषा में जो कुछ लिखा गया है उसे नहीं देखा। नहीं तो इसे 'भ्रम' न कहते। इसी के आगे आप लिखते हैं—'इसी भ्रम के वश तथा ज्योतिष-शास्त्र के संस्कृत-ग्रन्थों के न देखने के कारण ही ६७*वें पृष्ठ में आप लिखते हैं—'सावन वर्ष तथा सावन मास का व्यवहार आज-कल कहीं नहीं है, इसलिए वर्षाधिप और मासाधिप निकालने का जो नियम सूर्यसिद्धान्त में दिया गया है वह किस काम आता है, यह मैं नहीं जानता। यदि कोई सज्जन जानते हों तो सूचित करें।' इस पर खेद प्रकट किया गया कि किसी समालोचक ने इसकी उपयोगिता नहीं बतलाई। इसके आगे आपने इसकी उपयोगिता के दो प्रमाण दिये हैं। एक तो आपके पूज्य पिता आचार्य सुधाकर द्विवेदीजी का यह वाक्य 'षष्ट्यधिकशतत्रयसावनदिनैरेकं वर्षं परिकल्प्य तत्र यो वारः स एवाब्दप इति प्राचीनैः फलार्थं कल्पितं' और दूसरा अद्भुतसागर का यह वाक्य है 'अत्राशुभफलवर्षे वर्षाधिपग्रहपूजाजपहोमादिका शान्तिः कर्तव्या'। परन्तु अन्त में आप लिखते हैं—'बात पुरानी पड़ जाने से लोग इसका व्यवहार धीरे धीरे छोड़ते गये।'

अब पाठक महोदय स्वयम् विचार करें कि समालोचक महोदय के उपदेश का सार क्या है। भाष्यकार को तो संस्कृत-ग्रन्थों के न देखने का दोषी ठहराते हैं, जो निर्मूल है पर आप जो अनावश्यक प्रमाण देते हैं, उस पर विचार नहीं करते। आपने संस्कृत ग्रन्थों का मन्थन करके दो प्रमाणरत्न निकाले, जिनमें से एक के आविष्कारक आपके पूज्यपाद पिताजी हैं और दूसरा 'अद्भुतसागर' में है। परन्तु जो शंका भाष्यकार ने की है उसका समाधान नहीं करते। भाष्यकार तो कहता है कि इनका उपयोग आज-कल क्या होता है? समालोचक महोदय भी अंत में कहते हैं, 'इसका व्यवहार धीरे-धीरे छोड़ते गये'। क्या आपकी बात से भी यह नहीं सिद्ध होता कि वर्तमान काल में इसका कोई उपयोग नहीं है? अब प्रश्न यह होता है कि इसका उपयोग पहले कभी हुआ भी था या नहीं और पुरानी पड़ जाने से इसको धीरे धीरे छोड़ने का क्या कारण है?

* यहाँ ६९ होना चाहिए ६७ नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात पर आपने कुछ भी प्रकाश नहीं डाला। रही अन्य प्रकार के मासपतियों और वर्षपतियों की बात, सो तो मैंने भी लिखा है कि फल के लिए आज-कल किस प्रकार विचार किया जाता है, (देखिए पृष्ठ ६६), इसलिए इसमें आपने कौन सी नई बात बतलाई।

फिर आप संध्या और संध्यांश की उपपत्ति, अहर्गण की गणना में 'सैक' और 'निरेक' करने का कारण आदि पूछते हैं।

संध्या-संध्यांश के बारे में मैंने पृष्ठ १६ में लिखा है—'जैसे एक अहोरात्र में प्रातः और सायं दो संध्यायें होती हैं, वैसे ही चतुर्युग के प्रत्येक युग में दो संध्यायें होती हैं—एक आरंभ में और एक अंत में। इसके सिवा इसकी और क्या उपपत्ति हो सकती है ?

अहर्गण की गणना करने की प्राचीन रीति मैंने उदाहरण देकर समझा दी है और यह भी बतला दिया है कि इसमें गुणा-भाग बहुत करना पड़ता है, इसलिए दूसरी रीति से यह आसानी से जाना जा सकता है, जिसका उदाहरण भी दे दिया है। फिर इस पर अधिक लिखने की क्या आवश्यकता थी ?

अभी तो विज्ञानभाष्य पूरा नहीं हुआ और न उसकी भूमिका ही लिखी गई है, इसलिए जिन अन्य बातों की कमी विज्ञानभाष्य में बतलाई गई है वे उचित स्थान पर लिखी जायँगी।

मुझे यह आशा नहीं थी कि ज्योतिषाचार्य पण्डित पद्माकरजी द्विवेदी के हाथ से लिखी हुई समालोचना ऐसी निस्सार होगी कि उससे 'सरस्वती' के पाठकों को 'विज्ञानभाष्य' के विषय में सिवा इसके और कुछ भी ज्ञान न हो सके कि यह एक अनधिकारी के हाथ का लिखा हुआ है और अशुद्धियों से भरा हुआ है। यह तो मैं जानता था कि इस भाष्य में बहुत से स्थानों में ऐसे विचार उपस्थित किये गये हैं जिनसे पुरानी लकीर पर चलनेवाले विद्वानों को अवश्य असन्तोष होगा, परन्तु इसके लिए उनको चाहिए कि वे ठंडे दिल से उनके खण्डन में अपने पुष्ट प्रमाण पेश करें। केवल यह कह देने से कि इस पुस्तक में कुछ नहीं है, पुस्तक की उपयोगिता नष्ट नहीं हो सकती।

—महावीरप्रसाद श्रीवास्तव

साहित्य-सदन चिरगाँव, झाँसी की उत्तमोत्तम पुस्तकें।

(१) मेघनादवध	३॥)	(६) वीरांगना	१)
(२) गीतारहस्य	२॥)	(७) त्रिपथगा	१॥)
(३) गुरुकुल	२)	(८) पलासी का युद्ध	१॥)
(४) भारतभारती (सजिल्द)	१॥)	(९) आर्द्रा	१)
,, सादा संस्करण	१)	(१०) सुमन	१)
(५) जयद्रथवध सजिल्द	१)		
,, सादा संस्करण	॥)		

इनके अतिरिक्त कविवर मैथिलीशरण गुप्त तथा सियारामशरण गुप्त की सभी पुस्तकें हमारे यहाँ मिलती हैं।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—वाह दीनबन्धु !

द्रौपदी के चीर को बढ़ाया दौड़ कर तो क्या,
इससे बचाई लाज अपने ही घर की !
केवल सुदामा को ही दिया था अटूट द्रव्य,
दीनता दिखी थी तुम्हें सिर्फ़ मित्र नर की !!
देखते नहीं हो आज अगणित नारियाँ हैं,
रोतीं बिलबिलातीं पर कौन सी नज़र की ?
दीनबन्धु दीनबन्धु कोरे दीनबन्धु आप,
लाखों दीनबन्धु रोते तोभी न ख़बर की !!

—प्रेमनारायण त्रिपाठी 'प्रेम'

२—रज़ाई ने क्या कहा

(१)

एक सौदागर खुले हुए दरवाज़े के सामने ज्यों ही पहुँचा, त्योंही एक ठिगने जापानी सरायवाले ने चिल्ला कर कहा—आइए महाशय, आइए अन्दर ! आपका सहर्ष स्वागत !

सौदागर अयाचित स्वागत को अस्वीकार न कर सका। एक बार अपनी आराम और सुविधा को देखने के लिए सराय में चला गया।

अब तक एक भी मुसाफ़िर इस सराय में कभी नहीं ठहरा था। उसी दिन पहले-पहल वह सराय खुली थी। कुछ बहुत ठाठबाट भी न था। औवल दर्जे की उसमें कोई सजावट भी न थी। होती भी किस तरह ? सरायवाला बेचारा तो ग़रीब था। फ़र्श की चटाइयाँ, दीवार के लैम्प, मेज़ें और बर्तन सभी कबाड़ख़ाने से ख़रीद कर लाये गये थे। उस सजावट में हाथ की तंगी अच्छी तरह झलक रही थी, तो भी हर एक चीज़ क़रीने से रक्खी थी। सफ़ाई की तरफ़ मालिक का, मालूम पड़ता है, विशेष ध्यान था। बस, इसी से जगह सौदागर को पसन्द आ गई। उस दिन उसने ख़ूब आनन्द से खाया पिया और पड़कर सो गया।

जापान में लोग चारपाइयों पर नहीं सोते। वे चटाइयों पर बिछे हुए गद्दों पर पड़ रहते हैं और ऊपर से रज़ाइयाँ ओढ़ लेते हैं। रज़ाइयों और गद्दों में रुई भरी रहती है। अमीर आदमी सरदी से बचने के लिए अधिक तादाद में रज़ाइयाँ काम में लाते हैं। ग़रीब थोड़ी में गुज़र करते हैं। अगर कोई बहुत अमीर हुआ तो उसकी रज़ाई आठ फ़ुट लम्बी और सात फ़ुट चौड़ी होगी। दिन में ये रज़ाइयाँ परदों से ढँकी अलमारियों में बन्द कर दी जाती हैं। इन्हीं अलमारियों में लकड़ी के तकिये भी जमा रहते हैं। सोते समय लोग उन पर इस तरह से अपना सिर रख लेते हैं कि उनके अच्छी तरह सँवारे हुए केश अस्तव्यस्त न हो जायँ। अगर कोई तकिया ज़मीन पर गिर पड़े तो जापानी स्त्री-पुरुष कोई भी उसे पैर से न स्पर्श करेगा। अगर पैर लग ही जाय तो वह उसे उठाकर मस्तक से लगाएगा और भूल के लिए पश्चात्ताप करेगा।

हाँ तो, वह सौदागर सोया ही था कि वह कमरे में एक आवाज़ सुनकर जाग पड़ा। दो लड़के बोल रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दादा, तुम्हें शीत लगता है ?"

"और भैया तुम्हें भी लगता है ?"

सौदागर ने सोचा सरायवाले के दो लड़के भूल से कमरे में आगये हैं। हो भी सकता है, क्योंकि जापान की सराय के कमरों में दरवाज़े नहीं रहते कि बन्द किये जा सकें। सिर्फ़ काग़ज़ के परदे पड़े रहते हैं जो निकलने के लिए इधर-उधर सरका दिये जाते हैं।

सौदागर ने कहा—भागो, भागो बच्चो। यह तुम्हारा कमरा नहीं है।

कुछ देर तक निस्तब्धता रही। उसके बाद फिर वही आवाज़ें सुन पड़ीं।

"दादा, तुम्हें शीत लगता है ?"

"और भैया तुम्हें भी लगता है ?"

सौदागर उठ बैठा। दीवार में काग़ज़ की लालटैन लगी थी। उसके अन्दर की मोमबत्ती को जलाया। बच्चे कहीं न दिखाई दिये। अलमारियों में झाँका। वहाँ भी नहीं। मोमबत्ती बलती हुई छोड़कर वह लेट गया। फिर वही—

"दादा, तुम्हें शीत लगता है ?"

"और भैया तुम्हें भी लगता है ?"

आवाज़ें एक रज़ाई से आरही थीं। उसे निश्चय हो गया। झटपट उसने अपनी चीज़ों को लपेटा, नीचे आगया और सरायवाले से सब हाल कहा।

सरायवाले ने नाक-भौंह सिकोड़ कर जवाब दिया—ज़्यादा पी गये होगे। उसी से बुरे सपने हुए। मेरी रज़ाइयाँ बातें नहीं करतीं!

सौदागर ने कहा—एक तो अवश्य करती है और तुम इस तरह आँखें दिखाते हो। बस, मैं तुम्हारे यहाँ नहीं ठहरूँगा। मैं तुम्हारे पैसे देकर रवाना होता हूँ।

वह चल दिया।

दूसरे दिन दूसरा मुसाफ़िर रात को ठहरने के लिए आया। उसने खाने के साथ शराब भी नहीं पी। लेकिन उसे कमरे में गये ज़रा ही देर हुई थी कि वह नीचे आगया और सरायवाले को बतलाया। आपकी रज़ाइयों में से एक से आवाज़ निकलती है—

"दादा, तुम्हें शीत लगता है ?"

"और भैया, तुम्हें भी लगता है ?"

सरायवाले ने आगबबूला होकर कहा—वाह जनाब, आपको मैंने कितने आराम का तो कमरा दे दिया है, तिस पर आप मुझे मूर्खतापूर्ण बातें सुनाकर परेशान करते हैं।

"मूर्खतापूर्ण ? जी नहीं—मैं बिलकुल सच कहता हूँ। एक रज़ाई में से निश्चय ही मैंने दो लड़कों की आवाज़ अच्छी तरह सुनी है। मैं इस जगह नहीं ठहरूँगा।"

(२)

जब दूसरा मुसाफ़िर भी चला गया तब सरायवाला ऊपर गया और एक एक करके रज़ाइयों को उठाया। उसी समय एक में से सुन पड़ा—

"दादा, तुम्हें शीत लगता है ?"

"और भैया तुम्हें भी लगता है ?"

वह रज़ाई को अपने कमरे में लेगया और उसे ऊपर डाल कर लेट रहा। सारी रात दो बच्चों की वही बातचीत सुनाई देती रही।

सुबह होते ही सरायवाला कबाड़ी की दूकान पर गया और उससे पूछा—तुम्हें याद है, तुमने मेरे हाथ एक रज़ाई बेची थी ?

"ज़रूर।"

"उसे तुम कहाँ से लाये थे ?"

"इसी शहर में उस तरफ़ एक छोटी सी दूकान है, उसी पर से लाया था।"

सरायवाला तुरन्त उस दूकानवाले के पास दौड़ा हुआ गया। उसके बाद जहाँ से उसने ख़रीदी थी वहाँ पहुँचा। इस तरह अन्त में उसे मालूम हुआ कि एक मकान मालिक ने उसे बेचा था।

उस छोटे से मकान में एक ग़रीब परिवार रहता था—एक पिता, एक माँ, दो बच्चे। पिता बहुत थोड़ा पैदा कर पाता था। मा बीमार रहती थी। वह मदद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं दे सकती थी। एक लड़का आठ साल का था और छोटा छः साल का। शीत-काल में पिता भी बीमार पड़ गया। एक हफ़्ते की कठिन यातना के बाद वह मर गया। मा भी मर गई। दोनों बच्चे मकान में अकेले रह गये। उनका कोई सहायक न था। वे बिलकुल निरवलम्ब और निराश्रय थे। पहले एक, फिर दूसरी, फिर तीसरी—इस तरह सब चीज़ें वे बेच कर खा गये। कुछ नहीं सिर्फ़ एक रज़ाई बच रही थी।

(३)

बाहर ख़ूब बर्फ़ पड़ रही थी। शीत था कि मृत्यु! एक रज़ाई के भीतर दो भाई ख़ूब लिपटे हुए पड़े थे। छोटे भाई ने कहा—दादा, तुम्हें शीत लगता है?

"और भैया, तुम्हें भी लगता है?"

वे ही दोनों आवाज़ें रज़ाई के अन्दर रुई की तह में प्रवेश कर गई थीं और तब से बराबर उसी में गूँज रही थीं।

मकान मालिक ग़ुस्से से लाल हुआ चेहरा लिये पहुँचा और बच्चों को सोते से जगा दिया।

"मकान का किराया दो।"

"हमारे पास तो कुछ है नहीं, बाबा।"

"अच्छा, तो जाओ। मैं यह रज़ाई बदले में रक्खे लेता हूँ।"

"बड़ी सरदी है। मर जायँगे, बाबा।"

"मर जाओ।"

रज़ाई भी छिन गई। वे दोनों पतली हलकी एक-एक कमीज़ पहने थे—बस। और सब कपड़े तो पहले ही बिक चुके थे। वे मकान से भी निकाल दिये गये। पड़ती हुई बर्फ़ में, मकान के पिछवाड़े, वे दोनों एक-दूसरे के बहुत पास पास ज़मीन पर पड़ रहे। थोड़ी देर में स्वच्छ-निर्मल और चमकीली बर्फ़ की तहों ने उन्हें आच्छादित कर लिया। उनके अवयव अवसन्न हो गये। शीत अब उनके लिए शीत न था! वे चिरनिद्रा में सो गये।

कोई उधर से निकला। वह उन्हें उठाकर ममतामयी करुणादेवी के मन्दिर में ले गया। जापानी मन्दिर में करुणादेवी की प्रतिमा ममता के भाव से ओतप्रोत सहस्र भुजावाली होती है। कहा जाता है कि इस देवी के लिए स्वर्ग के समस्त द्वार खुले हुए थे, लेकिन वह गई नहीं। उसने कहा, मृत्यु-लोक में जो असंख्य परितप्त आत्मायें दुःख और यातनाओं में छटपटा रही हैं, उन्हीं के साथ रहकर वह उन्हें अपने असंख्य हाथों से सहायता करेगी।

वे दोनों बच्चे उन्हीं करुणादेवी के मन्दिर की छाया में समाधिस्थ किये गये। एक दिन सरायवाला मन्दिर में पहुँचा, रज़ाई पुजारी को देकर उन आवाज़ों की सारी बातें कह सुनाईं। इस कहानी से पुजारी, सरायवाले और जिसने भी उसे सुना सबका हृदय मर्माहत होगया। उस नगर के लोगों के सिर लज्जा और ग्लानि से झुक गये। लेकिन क्या अब वहाँ किसी को कभी सुनाई नहीं पड़ता—

"दादा, तुम्हें शीत लगता है?"
"और भैया, तुम्हें भी लगता है?"

सचमुच यह सभ्य और विवेकशील मनुष्य हिंस्रक पशुओं से भी अधिक ख़ूँख़ार है। उसी नगर में क्यों, विश्व के कोने कोने से तो शीत से ठिठुरते हुए असहाय और निरवलम्ब अधखिले असंख्य कुसुम-कोमल बालकों की यही कण्ठध्वनि निरन्तर सुन पड़ती है। आज उन सबकी अवशेष वस्तुएँ इसी तरह प्रतिध्वनि कर सकतीं तो विश्व एक विराट् करुणालय हो जाता। लेकिन मनुष्य की हिंस्रक-प्रवृत्ति में सुधार की सम्भावना हो तो मैं जगन्नियन्ता से प्रार्थना करूँगा कि वह अवश्य ही उन्हें सहस्रमुखी होकर विश्व को गुँजा देने की शक्ति से परिपूर्ण कर दे।*

—शम्भुदयाल सक्सेना

* एक जापानी कहानी—अँगरेज़ी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—सौन्दर्य्य

संसार में प्रत्येक मनुष्य सौन्दर्य्य की खोज में लगा रहता है। न जाने परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय को वह कौन सी शक्ति दी है जिसके द्वारा वह बहुत-सी वस्तुओं को देखकर मुग्ध हो जाता है और अपनी काया को भूल कर उनको प्राप्ति करने की यथाशक्ति चेष्टा करता है। सूर्य्यास्त के समय के रंग-बिरंगे बादल, सुन्दर कोमल पुष्प, सघन मनभावने कुञ्ज और प्रकृति के भिन्न-भिन्न चित्ताकर्षक दृश्य देखकर जो आनन्द प्राप्त होता है उसका वर्णन करना प्रायः असम्भव है। सौन्दर्य्य के अकथनीय प्रभाव का केवल अनुभव ही किया जा सकता है।

यदि हम आँख उठाकर चारों ओर देखें तो हम जानेंगे कि संसार की बहुत-सी प्राकृतिक वस्तुओं में सौन्दर्य्य का आभास है। इससे प्रतीत होता है कि ईश्वर भी सुन्दरता से प्रेम करता है। वह इसी बात का यथाशक्ति प्रयत्न करता है कि जहाँ तक हो सके, संसार सुन्दर बने। किन्तु मनुष्य बहुधा सुन्दरता के ठीक अर्थ न समझकर ईश्वर के कार्य्य में बाधा डाल देते हैं।

हम अपने आपको सुन्दर किस प्रकार बनावें? क्या केवल सुन्दर, हृष्टपुष्ट शरीर के द्वारा ही हम सच्चे सौन्दर्य्य को प्राप्त कर सकते हैं? पाश्चात्य देशों में, और पूर्वीय देशों में भी, कुछ लोग अपने शरीर को सुन्दर बनाने में ही लीन रहते हैं और सोचते हैं कि यदि वह भिन्न-भिन्न प्रकार के क्रीम और सुगन्धित तेल लगा कर शरीर को अच्छा बना लें तो सौन्दर्य्य की खोज में सफल होंगे। किन्तु उनको ध्यान रखना चाहिए कि केवल शारीरिक सुन्दरता किसी मनुष्य को यथार्थ में सुन्दर नहीं बनाती है। यदि गोरे चमड़े का नाम ही सुन्दरता है तब तो बहुत से भारतवासियों का सुन्दर बनना असम्भव है। क्या काले रङ्गवाली जातियाँ कभी सुन्दरता प्राप्त नहीं कर सकतीं और क्या सुन्दर बनने का अधिकार केवल गौराङ्ग जातियों को ही है? कदापि नहीं। क्या भगवान् कृष्ण जिनको देखकर ब्रजमण्डल की गोपिकायें तन की सुध बिसार देती थीं और जिनको सब ब्रजवासी मनमोहन के नाम से पुकारते थे, श्याम वर्ण के ही न थे?

यथार्थ में सौन्दर्य्य दो प्रकार का होता है, शारीरिक और आत्मिक। शारीरिक सुन्दरता तो थोड़े ही समय तक रहती है, किन्तु जो मनुष्य अपनी आत्मा को सुन्दर बनाने का भी प्रयत्न करता है उसको सनातन एवं देवी सौन्दर्य्य की प्राप्ति होती है। लेकिन वे मनुष्य जो अपना जीवन शरीर को मन भावना बनाने में ही बिता देते हैं, अन्त में अशान्ति और दुःख के सागर में गिर कर पश्चात्ताप करते हैं।

आत्मा को सुन्दर बनाने के लिए हमको अपने विचार तथा भाव पवित्र बनाना अति आवश्यक है। यथार्थ में पवित्रता के बिना सुन्दरता जीवित नहीं रह सकती। जिस प्रकार शरीर को स्वच्छ रखने से उसकी सुन्दरता की वृद्धि होती है उसी प्रकार यदि हमारे भाव एवं विचार शुद्ध हों तो हमारी आत्मा सुन्दर कहलाने योग्य होगी। जिस प्रकार बहुत से फलों के अन्दर कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं और उनका गूदा नाश करके उसको खोखला कर देते हैं, उसी भाँति वे मनुष्य जो अपने विचारों और भावों को पवित्र नहीं बनाते, दुःख एवं अशान्ति को प्राप्त होते हैं। प्राचीन काल के यहूदी अत्यन्त सुन्दर समझे जाते थे, क्योंकि वे अपने शरीर को अच्छा बनाने की यथाशक्ति चेष्टा किया करते थे। किन्तु केवल शरीर की ही सुन्दरता पर्य्याप्त नहीं है। हमारा अन्तःकरण भी पवित्र और सुन्दर होना चाहिए।

आत्मा की शुद्धि किस प्रकार हो? आत्मा को शुद्ध और सुन्दर बनाने का केवल एक ही मन्त्र है। उसी मन्त्र के द्वारा मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को अति सुखद बनाने में सफल हो सकता है। वह अमूल्य मन्त्र है—'प्रेम'। प्रेम ही जीवन है और जीवन ही सौन्दर्य है। जहाँ प्रेम नहीं है वहाँ सौन्दर्य का रहना उतना ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असम्भव है जितना कि सूर्य का अन्धकार में रहना।

जिस भाँति जल के बिना एक सरिता और पत्तियों के बिना एक वृक्ष होता है उसी भाँति इस संसार में वह मनुष्य है जिसके हृदय में प्रेम का स्रोत नहीं। जैसे पानी के बिना सुन्दर पुष्प मुरझा जाते हैं, वैसे ही वह हृदय जो प्रेम-रूपी जल से सींचे नहीं जाते, मुरझा कर मृत्यु को प्राप्त होते हैं? इसी लिए यदि हम सुन्दर बनना चाहते हैं तो यह अति आवश्यक है कि हम प्रेम करना सीखें।

प्रेम करना किस प्रकार सीखें? स्वार्थ-रहित बनने से। निःस्वार्थ के बिना प्रेम का अङ्कुर कदापि नहीं निकल सकता है। प्रेम और स्वार्थ का निर्वाह एक ही घर में होना बिलकुल ही असम्भव है। जहाँ निःस्वार्थ है, वहाँ प्रेम है, और जहाँ प्रेम है, वहीं सौन्दर्य है।

एक बार महात्मा गौतम बुद्ध ने लोगों को उपदेश दिया। किस प्रकार? उनके हाथ में एक सुन्दर पुष्प था। उन्होंने उस फूल को लोगों की ओर उठाया और चुपचाप बैठे रहे। जब किसी की समझ में इसका अर्थ न आया और सब कहने लगे—"महाराज समझाइए! समझाए" तब भगवान् बुद्ध बोले, "यदि आप इस पुष्प के समान अपना जीवन बनायें तो आपको सदा आनन्द मिलेगा।"

सच्चे सौन्दर्य्य को प्राप्त करने का भी केवल एक यही मार्ग है। जिस प्रकार एक गुलाब की कली विकसित होने पर जीवों को स्वार्थ-रहित, मन-भावनी सुगन्ध देती है, और आस-पास के स्थान को सुन्दर और पवित्र बना देती है उसी प्रकार वह मनुष्य जो अपने हृदय-रूपी कली को निःस्वार्थ-रूपी सूर्य की किरणों के द्वारा खिला देता है, चिरस्थायी आनन्द को पाकर सच्चे सौन्दर्य्य को प्राप्त होता है, और संसार को भी अधिक सुन्दर बनाने में सफल होता है।

इसका आशय यह नहीं कि हम शारीरिक सुन्दरता की ओर बिलकुल ध्यान न दें। शरीर को भी पवित्र और सुन्दर बनाना हमारा धर्म है, क्योंकि पवित्र शरीर के बिना हमारे भाव और विचार भी बिलकुल पवित्र नहीं हो सकते हैं। किन्तु यह ध्यान रहे कि एक सुन्दर शरीर जिसमें सुन्दर भाव एवं विचारों का स्थान नहीं है, केवल एक मिट्टी के खिलौने के सदृश है।

—श्रीमन्नारायण अग्रवाल

४—स्वर्गीय श्रीयुत वृन्दावनजी

गुणिगणगणनारम्भे न पतति कठिनी सुसम्भ्रमाद्यस्य।
तेनाम्बा यदि सुतिनी वद वन्ध्या कीदृशी भवति।

इस संसार में जन्म-मरण नित्य ही होता रहता है, किन्तु जो अपने जीवन से दूसरों का उपकार करता है वही वास्तव में मनुष्य है। काशीपुर (नैनीताल ज़िला) निवासी स्वनामधन्य श्रीयुत वृन्दावनजी माहेश्वरी का जीवन भी आदर्श जीवन रहा है। आपके पूर्वज जोधपुर-राज्यान्तर्गत डीडवाणा के निवासी थे। व्यापारवश मारवाड़ छोड़ काशीपुर में आकर बस गये। लक्ष्मी ने अपनी कृपा की, व्यापार चल पड़ा। संयुक्त प्रान्त के प्रसिद्ध धनाढ्यों में उनकी गणना होने लगी। कई कूप, मंदिर, धर्मशालायें निर्माण कराईं, जो आज पर्यन्त उनकी अचल कीर्ति के द्योतक हैं। श्रीवृन्दावनजी का घराना सनातनधर्मानुयायी शिवोपासक था। अपनी अवस्था के २५ वर्ष तक आप भी नियम से शिवोपासना अपने निजी मंदिर में करते रहे। उसके बाद आपने यह सुना कि मुरादाबाद में स्वामी दयानन्द सरस्वती नामक एक बड़े धुरन्धर विद्वान् आये हैं और वे मूर्ति-पूजा का खंडन करते हैं। अतएव उनसे मिलने के लिए आप ४० मील घोड़े की सवारी पर गये और मुरादाबाद में राजा जयकृष्णदास के बगीचे में स्वामीजी के दर्शन किये। स्वामीजी के समीप बहुत दिनों तक रह कर अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्त शंकाओं का समाधान कर आपने वैदिक-धर्म में मेरा निश्चय और घर आकर शिवोपासना त्याग दो। आपके पिताजी ने जब इसका कारण पूछा तब आपने श्रीस्वामीजी महाराज की बताई सब दलीलें सुनाकर उन्हें भी 'आर्य' बनाना चाहा, किन्तु

[स्वर्गीय श्रीयुत वृन्दावनजी]

आपके पिताजी ने कहा कि बेटा, जो तुम्हें उचित जान पड़े करो, किन्तु मूर्ति-पूजा की हमारे सामने कभी निन्दा नहीं करना। फलतः इस तरह आप अपने निश्चय पर दृढ़ रहे। यही नहीं, जब आर्यसमाज के लिए आपको स्थान नहीं मिला तब आपने अपनी कोठी में 'आर्य-समाज' की स्थापना की। इस संस्था की धीरे धीरे उन्नति हुई और अब इसके पास ५० हज़ार रुपये के मूल्य की सम्पत्ति है। वृन्दावनजी ने अँगरेज़ी में मैट्रिक तथा फ़ारसी में एम० ए० तक अध्ययन किया। फ़ारसी-भाषा में आपकी विशेष गति थी। फ़ारसी-साहित्य के उच्च ग्रन्थों के मार्मिक स्थलों का आशय समझाने में आप कमाल करते थे। एक बार आपसे शिमला में श्रीस्वामी नित्यानन्दजी महाराज ने फ़ारसी के एक पद्य का तात्पर्य पूछा। उसका जो अर्थ और गूढ़ रहस्य आपने बताया उसे सुनकर स्वामीजी महाराज दंग रह गये और कहने लगे कि बरसों की मेहनत आज सफल हुई। उसका अर्थ वर्षों से जानने के प्रयत्न में थे। युवावस्था अर्थात् ३० वर्ष की आयु में ही आपकी धर्म-पत्नी का स्वर्गवास हो गया। उस समय आपके दो सन्तानें थीं एक १॥ वर्ष का पुत्र तथा एक वर्ष की कन्या। इन छोटे बच्चों के लालन-पालन का भार आपने अपने ऊपर लिया। आपके पिता तथा सम्बन्धियों ने बड़ी चेष्टा की कि आप दूसरा विवाह कर लें, परन्तु आपने दूसरा विवाह नहीं किया और अन्तिम अवस्था पर्यन्त पूर्ण जितेन्द्रिय रहे।

आप ४० वर्ष तक एक स्कूल में हेडमास्टर के पद पर बड़ी प्रतिष्ठापूर्वक कार्य करते रहे हैं। आपके अफ़सर आपकी बड़ी क़द्र करते थे। आपके समय में फ़ारसी और उर्दू को ही विशेष महत्त्व प्राप्त था; संस्कृत और हिन्दी की वैसी पूछ नहीं थी। हिन्दी में तो अच्छी पुस्तकों का भी अभाव था। इस अभाव का अनुभव कर आपने हिन्दी में कई पुस्तकें लिखीं, जो पंजाब-सरकार के शिक्षा-विभाग ने स्वीकृत करके स्कूलों में जारी भी की थीं। कई उर्दू-भाषा की पुस्तकों का आपने हिन्दी में अनुवाद भी किये। अस्सी वर्ष की अवस्था तक आप भली प्रकार स्वस्थ रहे। नित्य ४-५ मील घूमते थे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशिक्षित स्त्रियाँ आमोद-प्रमोद में पढ़ी-लिखी स्त्रियों से ज़रा भी पीछे नहीं हैं, बल्कि दो हाथ आगे ही बढ़ी हैं। दूसरों की सेवा करना तो बहुत बड़ी बात है, स्वयं अपने हाथ से लेकर पानी तक पीना वे नहीं पसन्द करतीं। सुगृहिणी तो वे बिलकुल हैं ही नहीं, आलस्य की वे साक्षात् अवतार हैं। कोई भी काम-काज न करके घर में बैठे बैठे और लेटे लेटे बहुतों का शरीर वात तथा अन्यान्य रोगों के कारण बेकाम हो जाता है। समाज की दृष्टि में वे यदि क्षमा के पात्र हो सकती हैं तो पढ़ी-लिखी स्त्रियों की घर-गृहस्थी के कामों में ज़रा-सी असावधानी क्षन्तव्य क्यों नहीं मानी जा सकती? साथ ही यह बात भी है कि पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ आलस्य को इतना प्रश्रय नहीं दे सकतीं, क्योंकि उनके अन्तःकरण में शिक्षा एक ऐसी प्रबल प्रेरणा और पिपासा जागृत कर देती है कि वे बिस्तरे पर लेटे-लेटे कभी अपना समय काट

[बेगम एम० फ़ारुकी]

(आप भारत की प्रथम महिला बैरिस्टर हैं जो प्रिवी कौंसिल में जुडीशल कमेटी के समक्ष वकालत करने के लिए प्रविष्ट हुई हैं।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही नहीं सकती। सम्भव है कि घर-गृहस्थी के कामों में वे इतना ध्यान न दे सकें, परन्तु समाज-सेवा, स्त्री-शिक्षा या राजनैतिक विषय की कोई न कोई बात

[श्रीमती लीला राघवेंद्र राव]

(आपको टेनिस में प्रथम पुरस्कार मिला है। आप भारतवर्ष की प्रथम महिला हैं जिनको यह पुरस्कार मिला है। विलायत के खिलाड़ियों ने आपकी बड़ी प्रशंसा की है।)

लेकर तो काम में लगी रहना वे पसन्द करेंगी ही चाहे माता-पिता के घर में हो या पति के घर में हो, हमारी स्त्रियों को बात बात में दूसरों का मुँह ताक कर चलना पड़ता है। परिणाम यह होता है कि वे जीवन-पर्यन्त दूसरों के सिर का भार बन कर ही रहती हैं, स्वतन्त्र रूप से कुछ कर नहीं सकतीं। परन्तु योरप में चौदह-पन्द्रह वर्ष का कोई भी लड़का या लड़की दूसरे का सहारा नहीं लेती, अपने हाथ-पैर के बल पर ही वह जीती है। वहाँ के स्त्री-पुरुष सभी समान भाव से पढ़ते-लिखते हैं, समान भाव से बाह्य जगत् से परिचय प्राप्त करते हैं और समान भाव से ही सारा काम-काज करते हैं, वहाँ किसी तरह का श्रम-विभाग नहीं होता। विशेषतः मध्यवित्त परिवारों में तो इसकी चर्चा ही नहीं है। क्या आफ़िस, क्या दूकान और क्या स्कूल-कालेज हर जगह सभी स्त्री-पुरुष साथ-साथ सब काम करते हैं, इसलिए वहाँ हम लोगों की तरह निर्धन कोई है ही नहीं।

[श्रीमती कुँवरानी महाराजसिंह]

(आप इलाहाबाद डिवीज़न के कमिश्नर श्रीयुत कुँवर महाराजसिंहजी की धर्मपत्नी हैं। आप प्रयाग विश्व-विद्यालय की कार्यकारिणी समिति की सदस्य निर्वाचित की गई हैं। शिक्षा-प्रचार से आपका बड़ा अनुराग है।)

आजन्म दूसरों के सिर का भार बन कर रहने में स्त्रियों में आत्मसम्मान का तो नाम ही नहीं रह जाता, साथ ही परिवार में निर्धनता की भी सृष्टि होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेला पुरुष नौकरी या अन्य व्यवसाय करके धन का उपार्जन करता है और स्त्री उसकी सहधर्मिणी बन कर चुपचाप बैठी रहती है। वह उसकी सहकर्मिणी नहीं बनती। शिक्षा के द्वारा स्त्रियों के हृदय से यदि यह हीन आकांक्षा दूर कर दी जाती तो आज हमारे समाज में न तो दरिद्रता के कारण इतनी अशान्ति फैलती और न असमय में आत्महत्या के ही अधिक उदाहरण देखने में आते।

बालक-बालिकाओं को एक दूसरे से सर्वथा पृथक् रखकर शिक्षा देना जैसे वैज्ञानिक नियमों के विरुद्ध है, वैसे ही इस प्रथा के द्वारा हम लोगों में नैतिक ज्ञान का भी अभाव प्रकट होता है। परन्तु इस ओर हम ध्यान तक नहीं देते। स्त्रियों तथा पुरुषों में एक दूसरे के भेद-भाव का ज्ञान कैसे बढ़ता है, इस सम्बन्ध में यथोचित रूप से गवेषणा करके योरप के बड़े बड़े प्रतिभाशाली विद्वानों ने बालक-बालिकाओं को सम्मिलित रूप से शिक्षा देने के लिए बड़ा आन्दोलन किया है। मैंने स्वयं भी कई स्थानों पर स्कूल में लड़कों और लड़कियों को साथ साथ पढ़ते देखा है और ऐसे स्कूल में पढ़ा भी है। छुटपन से ही यदि लड़कों और लड़कियों को साथ साथ पढ़ने और खेलने-कूदने का अवसर मिले तो स्त्री-पुरुष के ऐसे भेदभाव का विचार उनमें बहुत कम हो जाय, साथ ही उनमें उच्छृङ्खलता भी न आने पावे। कहना न होगा कि उस समय कैसे स्वास्थ्यकर और पवित्रतामय वायुमण्डल में विचरण करने का उन्हें अवसर मिलेगा। मनोविज्ञान भी इसी बात को प्रमाणित करता है। योरप में तो इस प्रथा का सुफल प्रत्यक्ष ही है।

स्त्री-जाति को पुरुषों के साथ पढ़ने-लिखने, खेलने-कूदने और काम-काज करने की सुविधा देना तो बहुत बड़ी बात है, भारतवासी उन्हें घर की चहारदीवारी के बाहर पैर तक नहीं रखने देना चाहते और अपने इस कृत्य के समर्थन के लिए धर्म और नीति की दोहाई दिया करते हैं। इधर इन्हें समुचित रूप से शिक्षा देने में पर्दे का तोड़ना अनिवार्य है, इस भय से स्त्रियों की शिक्षा का भी कोई उपयुक्त प्रबन्ध नहीं करते। परन्तु हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि स्त्रियों के शरीर और मन के विकास का मार्ग इस प्रकार बन्द करके हम समाज में तरह तरह के पापों और अनाचारों का मार्ग साफ़ किये दे रहे हैं।

समाज-सेवा से जिन्हें अनुराग है उन्हें मनोविज्ञान की सहायता से हर एक बात पर विचार करना चाहिए। नारी-जाति की मानसिक वृत्तियों के विकास का मार्ग यदि वे न खोल सकें तो उनकी समाज-सेवा अपूर्ण रह जायगी। नारी-जाति की मनोवृत्तियाँ सदा दबा कर रक्खी भी न जा सकेंगी, किसी न किसी दिन उनमें उभाड़ आवेगा ही और उस उभाड़ के कारण पुरुष-समाज की इस चेष्टा का ऐसा प्रतीकार उत्पन्न होगा कि उसे सँभालना असम्भव हो जायगा, क्योंकि यह एक प्राकृतिक बात है। विचार कितने सामयिक हैं?

—गङ्गाप्रसाद वर्मा

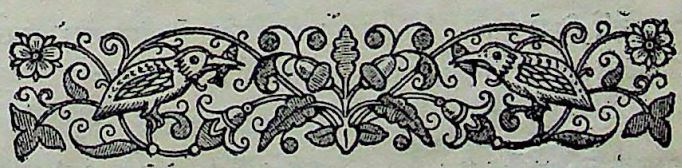

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

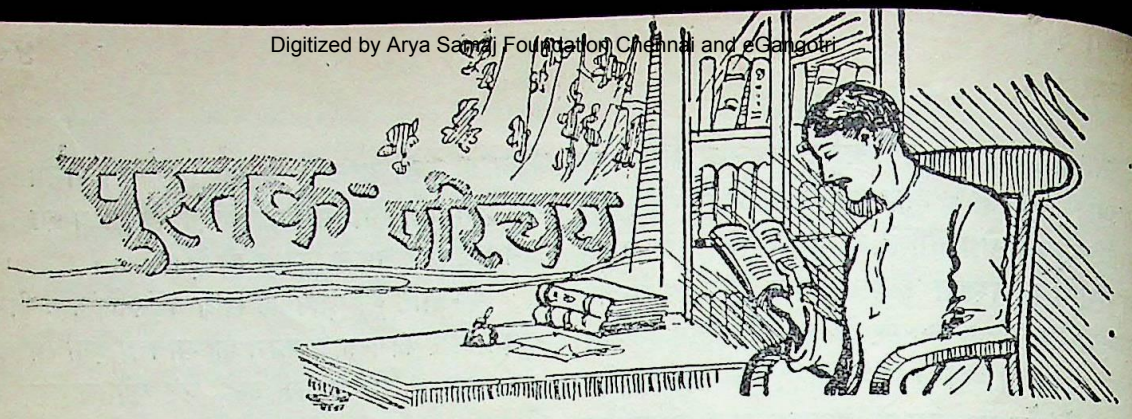

१—**काननकुसुम**—लेखक, श्रीयुत जयशंकरप्रसाद, प्रकाशक, हिन्दी-पुस्तक-भण्डार, लहेरियासराय, हैं। आकार रायल सोलहपेजी, पृष्ठ-संख्या ९४ और मूल्य ।।।=) है। काग़ज़ और छपाई अच्छी है।

इस पुस्तक के प्रकाशक महोदय ने अपने वक्तव्य में, इसके रचयिता श्रीयुत जयशंकरप्रसाद जी की प्रशंसा करते हुए लिखा है—'साहित्यिक जीवन-समुद्र में 'प्रसाद' जी एक विशाल प्रकाश-स्तम्भ के समान हैं। आपकी प्रतिभा की दिव्य ज्योति ने हिन्दी-संसार के नवयुवकों को एक नवीन पथ प्रदर्शित किया है...कविता के क्षेत्र में आप नवयुग के प्रवर्तक माने जाते हैं। परन्तु लिखते हुए सङ्कोच होता है कि जिस रचना के साथ उनका यह 'वक्तव्य' छपा है उसके पढ़ने से ऐसी किसी बात का अनुभव नहीं होता। हमारे सङ्कोच का कारण यह है कि श्रीयुत जयशङ्करप्रसादजी को हाल में प्रकाशित 'हिन्दी भाषा और साहित्य' में बाबू श्यामसुन्दरदास ने भी ऐसा ही महत्त्व प्रदान किया है। यहाँ इस रचना के कुछ पद्य उद्धृत करते हैं। उससे, आशा है, पाठकों को भी श्रीयुत जयशङ्करप्रसादजी की 'प्रतिभा की दिव्य ज्योति' की कुछ झलक दिखाई दे जायगी! वे पद्य ये हैं—

हर एक पत्थरों में वह मूर्त्ती छिपी है।
शिल्पी ने स्वच्छ करके दिखला दिया वही है ।।—पृष्ठ ६

संसार के इस सिन्धु में उठती तरंगें घोर हैं।
तैसी कुहू की है निशा कुछ सूझता नहिं छोर है ।।—पृष्ठ ७

व्याकुल होकर चलते हो क्यों मार्ग में।
छाया क्या है क्या नहीं कहीं इस मार्ग में ।।—पृष्ठ ११

क्यारियों ने कुसुम-कलियों को कभी खिझला दिया।
सहज झोंके से कभी दो डाल को हि मिला दिया ।।
पृष्ठ १२

शंक रहे न मन में नाथ (१५ मात्रायें)
रहो हर दम तुम मेरे साथ ।।—(१६ मात्रायें)
पृष्ठ ४२

सबको या दे चुका बचे थे उलाहने से तुम मेरे।
वह भी अवसर मिला कहूँगा हृदय खोलकर गुण तेरे ।।—पृष्ठ ६१

'कविता के क्षेत्र में इन नवयुग-प्रवर्तक' कवि की ऐसी ही रचना इस पुस्तक में सङ्गृहीत है। रेखाङ्कित स्थल चिन्त्य हैं। इस पुस्तक की 'खंजन' नामक कविता में 'भारत-भारती' का और 'गंगा-सागर' में 'प्रियप्रवास' का अनुकरण लक्षित होता है। परन्तु उन रचनाओं के मामूली गुण इन कविताओं में नहीं हैं। यदि ऐसी कवितायें लिखकर कोई व्यक्ति नव-युग-प्रवर्तक माना जा सकता है तो फिर हमें कुछ नहीं कहना है और हम अपना आक्षेप वापस लेने को तैयार हैं।

इस पुस्तक में कुल ४९ कवितायें हैं और उनमें एक भी 'नवयुग-प्रवर्तक' कवि के अनुरूप नहीं है। किसी कविता में कोई ऐसी बात नहीं मिलती जो कवि की नई सूझ समझी जाय। राह चलते लोगों के मुँह से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसी बातें निकलती रहती हैं, बस वैसी ही सुनी-सुनाई बातें इस पुस्तक में स्थान स्थान पर पढ़ने को मिलती हैं। 'चित्रकूट', 'भरत' और 'वीर बालक' नामक ऐतिहासिक कवितायें इस बात के उदाहरण हैं। 'चित्रकूट' में राम और भरत के मिलन, 'भरत' में बाल-भरत के शेरनी के दांत गिनने की कथा और 'वीर बालक' में ज़ोरावरसिंह और फ़तहसिंह के दीवार में चिन दिये जाने पर भी इस्लाम-धर्म न स्वीकार करने का वर्णन निर्जीव-सा है। रचयिता महोदय ने यदि इन कथाओं का वर्णन साधारण गद्य में किया होता तो कदाचित् वह अधिक सुन्दर होता। जब आप ग्रीष्म का वर्णन करते हैं तब कहते हैं कि 'पृथ्वी वसन्त के विरह-ताप से जलती है' (पृष्ठ १७) और जब वर्षा का आवाहन करते हैं तब कहते हैं कि 'वह उसी के वियोग में मलिन है।' (पृष्ठ १८) कवि की अनुभूति के ये कैसे सुन्दर नमूने हैं! मज़ा तो यह है कि 'मोरे राजा किंवरिया खोल रस की बूँदें पड़ें' और 'मियाँ बीबी राज़ी तो क्या करेंगे क़ाज़ी' जैसे बाज़ारू गीतों और महावरों को भी आप सफलता के साथ अपनी कविता में नहीं ला सके हैं। नीचे का पद्य देखिए—

रूखे ही तुम रहो, बूँद रस के झरें।
हम तुम जब हैं एक, लोग बकते फिरें॥

हमें खेद के साथ लिखना पड़ता है कि बाबू जयशंकर प्रसादजी की 'प्रतिभा की दिव्य ज्योति' जैसे रस, भाव, अनुभाव और अलङ्कार की कोठरी में मलिन हो जाती है, वैसे ही जहां भाषा का प्रश्न आता है, वहां 'साहित्यिक जीवन-समुद्र' में 'प्रकाश-स्तम्भ' कहे जाने वाले' बाबू साहब बिलकुल अन्धकार-स्तम्भ बन जाते हैं। आप 'नहीं' को 'नहिं', 'सुरभित' को 'सौरभित', 'पवन' को 'पौन', उषा को 'ऊषा', 'अलि' को 'अली', 'तुम्हारा' को 'तव', 'ही' को 'हि' और ज़रूरत पड़ने पर 'चाहते हैं' को 'चहते हैं' लिखकर भाषा में कवि-सुलभ स्वाधीनता का बड़ा सुन्दर उपयोग करते हैं।

इसी प्रकार व्याकरण के नियमों की भी स्वेच्छापूर्वक अवहेलना की गई है। ऊपर उद्धृत पद्यों में 'हर एक पत्थरों' और 'दो डाल' पर ध्यान देने से 'वचन'-सम्बन्धी असङ्गति का पता लग जायगा। 'पत्थरों का 'पत्थर' और 'डाल' का 'डालों' होना चाहिए। यह बात स्कूल में पढ़नेवाला एक मामूली लड़का भी जानता होगा। कारक आदि की भी त्रुटियां हैं। जैसे—'जिस भूमि पर हज़ारों हैं सीस को नवाते' (पृष्ठ ५) में 'को' से भाषा का सौन्दर्य्य बिगड़ता है। 'बालू के मैदान सिवा कुछ हैं नहीं'—इसमें मैदान और सिवा के बीच में 'के' के बिना दोष आजाता है। मालूम होता है इन सब बातों की बाबू जयशङ्करप्रसाद परवा नहीं करते हैं। उन्हें सिर्फ़ इस बात से सन्तोष है कि उनके मित्र उन्हें हिन्दी का 'प्रकाश-स्तम्भ' कहते हैं। परन्तु 'प्रकाश-स्तम्भ' का समुद्र में जो अर्थ होता है वही यदि साहित्य में भी है तो बेशक प्रकाशक ने अपने वक्तव्य में सही लिखा है। अच्छा हो यह रचना भी हिन्दी के नौसिखिये कवियों को 'प्रकाश-स्तम्भ' का ही काम दे और वे इसमें दिखाये गये आदर्श से दूर ही रहें। तभी हिन्दी का हित होगा। इस पुस्तक के सम्बन्ध में हम अपने विचार इस रूप में प्रकट करने का साहस कदापि न करते यदि यह 'पुनः संशोधित, संवर्धित एवं परिवर्तित' न होती क्योंकि तब हम इसे उनकी पहले की रचना मान लेते।

—श्रीनाथसिंह

२—स्फुट कलियाँ—लेखक, श्रीयुत बैजनाथ केडिया, प्रकाशक हिन्दी-पुस्तक एजेन्सी, २०३ हरिसन रोड, कलकत्ता हैं। पृष्ठ-संख्या १४६ और मूल्य १) है। छपाई और काग़ज़ सुन्दर है।

यह केडियाजी की लिखी हुई दस कहानियों का संग्रह है। मालूम होता है, केडियाजी का कहानी लिखने का यह प्रथम प्रयास है। इसमें एक कहानी का नाम 'मजूरी का महत्त्व' है। यह बहुत सुन्दर कहानी है। ये कहानियां सत्य घटनाओं के आधार पर लिखी गई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतएव ये केवल कल्पना की दौड़ तथा दिमाग़ी कसरत-मात्र ही नहीं हैं। इन सब कहानियों में कोई न कोई उपदेश निकालने का भी प्रयत्न किया गया है। 'सेवा का रूप' नामक कहानी भी अच्छी है। इसमें ग्राम-संगठन के उपाय बताये गये हैं। इन सब कहानियों में एक बड़ा भारी अभाव है। इनमें कला की बड़ी कमी है। लेखक सच्ची घटनाओं को उसी रूप में लिखते चले गये हैं जिस रूप में वे वास्तव में हुई हैं। परन्तु ये कल्पना तथा कला की कूँची से अधिक सुन्दर बनाई जा सकती थीं।

—अवध उपाध्याय

३—**अत्याचार**—लेखक, श्रीयुत नरोत्तम व्यास, प्रकाशक सन्तोषकुमार एण्ड ब्रदर्स, प्रोप्राइटर हिन्दी-साहित्य मंदिर, ८ चित्पुर रोड, मछुआ बाज़ार थाने के पास कलकत्ता, हैं। इसकी पृष्ठ-संख्या १४३ और मूल्य १) है।

यह भी एक कहानियों का संग्रह है। ये कहानियाँ समाज-सुधार की दृष्टि से लिखी गई हैं। लेखक का विचार है कि महापुरुषों को उत्पन्न करनेवाली जननियाँ आज पशु समझी जारही हैं और जन-संख्या का आधा भाग घृणित तथा पददलित समझा जा रहा है और अज्ञानमय तथा विकृत रूढ़ियाँ समाज पर पैशाचिक शासन कर रही हैं और यह घोर अत्याचार है। इन सब अत्याचारों को दूर करने के विचार से ही ये कहानियाँ लिखी गई हैं। नूरुन्निसा पहले एक हिन्दू स्त्री थी, परन्तु सामाजिक अत्याचारों के कारण वह वेश्या बन गई। उसी ने स्वयं अपनी कहानी अपने ही शब्दों में लिखी है। कहीं कहीं पर इसका वर्णन अश्लील होते होते बचा है। कहानियों का उद्देश अच्छा है, परन्तु उनमें कहानी-लेखन-कला का सर्वथा अभाव है।

—अवध उपाध्याय

४—**मुस्लिम महात्माओं (गुजराती)**—पृष्ठ-संख्या ३२+५५६; प्रकाशक सस्तु साहित्य-वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद; मूल्य कपड़े की जिल्द १॥); सादी जिल्द १॥) है।

मुसलमानों में उनके सत्पुरुषों की जीवन-घटनाओं को लिख रखने की चाल बहुत पुरानी है। हज़रत मुहम्मद साहब के जीवन की एक साधारण से साधारण बात भी अरबी में लिख रक्खी गई है। सत्पुरुषों के जीवन की छोटी घटनायें भी कभी कभी उनके भक्तों या जानकारों में उर्वर स्थान पाकर महान् आकार धारण कर लेती हैं, कभी कभी बड़ी घटना का उतना प्रभाव नहीं पड़ता, जितना एक साधारण घटना का पड़ जाता है।

हिन्दुओं में भी महात्माओं की जीवन-घटनाओं की रक्षा का कुछ प्रयत्न कभी रहा होगा, जिसका कुछ आभास पुराणों में मिलता है, पर इस समय तो हम उपनिषदों, दर्शनों, संस्कृत के व्याकरणों और काव्यों के रचयिताओं के जीवन-चरितों के लिए तरसते हैं। यहाँ तक कि तीन सौ वर्ष पहले के सूर और तुलसी को भी ठीक ठीक हम नहीं जान पाये कि वे कौन थे और कहाँ के थे?

अरबी में मुस्लिम महात्माओं के जीवन-चरितों की बहुत-सी पुस्तकें हैं। उनमें 'शरहुल्कल्ब', 'कशफ़ुल असरार' और 'मारफ़तुन्नफ़्स अरब' मुख्य हैं। फ़ारसी में भी इस विषय की कई पुस्तकें हैं। इन्हीं पुस्तकों के आधार पर फ़ारसी में 'तज़करतुल् औलिया' नाम की एक पुस्तक तैयार हुई है। बँगला में उसका अनुवाद 'तापसमाला' के नाम से हुआ। प्रस्तुत गुजराती पुस्तक उसी 'तापसमाला' का अनुवाद है। अनुवादक हैं श्रीयुत पाठक जगजीवन कालिदास। आप ब्राह्मसमाजी हैं। मुसलमान महात्माओं के उत्तम चरितों और वचनों को प्रेम-पूर्वक अपने देश-बन्धुओं के समक्ष उपस्थित करने की सद्भावना से प्रेरित होकर आपने इस पुस्तक का अनुवाद किया है। हम आपकी सद्भावना का हृदय से स्वागत करते हैं और चाहते हैं कि इस पुस्तक का हिन्दी में ही नहीं, भारत की समस्त भाषाओं में अनुवाद हो और उनसे हिन्दू और मुसलमान दोनों लाभ उठायें।

इस पुस्तक में ९२ महात्माओं के चरितों का संग्रह है।

इस पुस्तक की भाषा सरल, महावरेदार और सरस है। अनुवादक महोदय स्वयं साधुचरित होंगे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे उनकी भाषा में उनके हृदय का सुन्दर प्रतिबिम्ब झलक रहा है। महात्माओं के जीवन-चरित लिखने या अनुवाद करने की रुचि अनुवादक की महत्ता का प्रमाण है।

—रामनरेश त्रिपाठी

५—**विवाहादर्श**—यह विवाह-कर्म की एक बड़ी उपयोगी पुस्तक है। इसकी रचना श्रीमती तुलसीदेवी ने की है। आपके ससुर पण्डित विष्णुदत्त पन्त संस्कृत के विद्वान् और कर्मकाण्ड के पूर्ण ज्ञाता थे। उन्हीं के विवाह-सम्बन्धी लिखे नोटों की सहायता से पुरानी प्रामाणिक पद्धतियों के आधार पर इसकी रचना की गई है। इसमें विवाह-कर्म की अथ से लेकर इति तक पूरी पद्धति तो दी ही गई है, साथ ही तत्सम्बन्धी अन्यान्य बातों का भी थोड़े में यथास्थान वर्णन कर दिया है। इसकी रचना में लेखिका को अपने विद्वान् पति तथा ज्येष्ठ भ्राता से भी काफ़ी सहायता मिली है। इसका रचना-क्रम विषय-विभाग के अनुसार है, जो पाठक के लिए बोधगम्य तथा कर्मकर्ता के लिए सुविधा-जनक है। इसके द्वारा साधारण पढ़े-लिखे पुरोहित भी विवाह-कर्म को सविधि करा सकेंगे। इतर जन भी इस पुस्तक को पढ़ कर विवाह-संस्कार की सभी छोटी-बड़ी बातें अनायास ही जान सकेंगे। संस्कृति-विधि तथा उसके भीतर आये हुए मन्त्रों का भी हिन्दी में सरल भाषान्तर कर देने से केवल हिन्दी के पढ़े-लिखे लोग भी इस पुस्तक से लाभान्वित हो सकते हैं। यदि सभी मुख्य मुख्य धार्मिक कृत्यों की इस तरह की प्रामाणिक पद्धतियाँ तैयार हो जायँ तो आस्तिक हिन्दुओं का बड़ा उपकार हो। खेद है कि यह महत्त्व-पूर्ण पुस्तक बहुत ही साधारण रूप में छापी गई है। ऐसी पुस्तकें तो अच्छे रूप में छपनी चाहिए और उनका ख़ूब प्रचार होना चाहिए। इस पुस्तक का मूल्य १) है, मिलने का पता—तुलसीदेवी, धर्मपत्नी गोपालदत्त पन्त साहित्याचार्य, मुहल्ला बल्लभ, मुरादाबाद।

६-७—**प्रोफ़ेसर रामकृष्ण शुक्ल, एम० ए० की दो पुस्तकें**—

(१) **प्रसाद की नाट्य-कला**—इस पुस्तक में बाबू जयशङ्करप्रसादजी के नाटकों की विशद आलोचना की गई है। प्रसादजी के कई नाटक स्कूल-कालेजों में पाठ्य-पुस्तक के रूप में पढ़ाये जाते हैं। इसी से प्रसादजी के सभी नाटकों पर एक महत्त्वपूर्ण आलोचना लिखी गई है। इससे निस्सन्देह विद्यार्थियों को अपने अध्ययन में पूरी सहायता मिलेगी। लेखक महोदय ने मूल आलोचना के आरंभ में नाटक का शास्त्रीय विवेचन किया है। संस्कृत और पाश्चात्य नाटकों का विवरण देने के बाद आपने हिन्दी के नाटकों का भी थोड़े में इतिहास दिया है। वर्तमान समय के दूसरे नाटककारों के सम्बन्ध में जो उपेक्षा-द्योतक सम्मति आपने प्रकट की है वह प्रमाण-रहित होने से संयम का उल्लंघन करती है। इसके आगे मूल आलोचना शुरू होती है, जिसमें शास्त्रीय आधार पर प्रसादजी के नाटकों की विशद विद्वत्तापूर्ण आलोचना की गई है। इस नये ढङ्ग की पुस्तक का प्रणयन यद्यपि विद्यार्थियों के लिए किया गया है, तथापि इससे इतर जन भी लाभान्वित हो सकते हैं।

(२) **आधुनिक हिन्दी कहानियाँ**—इसमें भिन्न-भिन्न प्रसिद्ध कहानी-लेखकों की कहानियाँ सङ्ग्रह की गई हैं और ६५ पृष्ठ की एक लम्बी भूमिका में कहानी-साहित्य की उत्पत्ति की कहानी पण्डिताऊ ढङ्ग से कही गई है। इसके पिछले अंश में इसमें सङ्ग्रह की गई कहानियों की जो आलोचना की गई है वही इस सङ्ग्रह का महत्त्वपूर्ण अंश है और उसे प्रोफ़ेसर साहब ने अच्छे ढङ्ग से लिखा है।

'कहानी-लेखन को बाँयें हाथ का खेल समझनेवाले असंख्य लेखकता-लोलुपों की अविचारशीलता' से घबरा कर आपने 'कतिपय' कहानी-लेखकों के साथ अन्याय किया है। आधुनिक हिन्दी कहानियों की चर्चा में सभी की चर्चा होनी चाहिए। आपकी यह पुस्तक भी आधुनिक ढङ्ग की है। हिन्दी-प्रेमियों को इसका सङ्ग्रह करना चाहिए।

उपर्युक्त दोनों पुस्तकों पर उनका मूल्य नहीं लिखा है। पता—सत्यदेव शुक्ल, मानस-मुक्ता-कार्यालय, किसरौल, मुरादाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

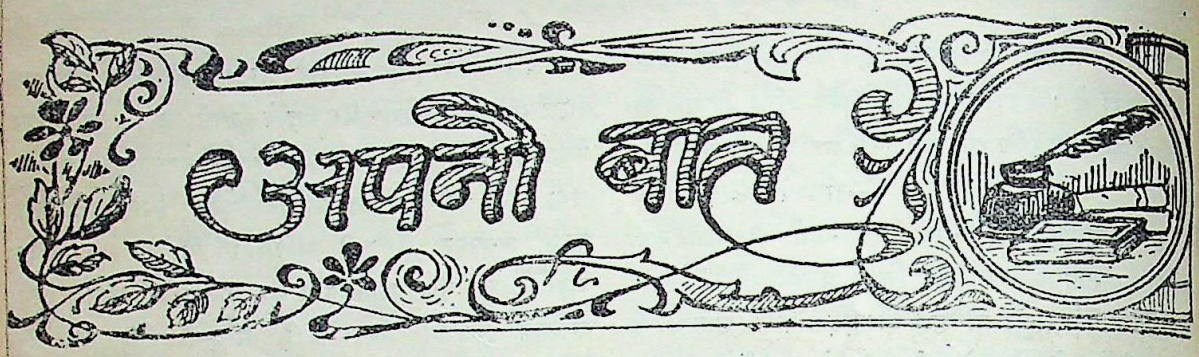

१—संसार की आर्थिक दुरवस्था का एक कारण

इस समय संसार के प्रायः सभी देशों की आर्थिक अवस्था डावाँडोल हो रही है। व्यापार मन्दा हो गया है, जिससे बड़े बड़े कारबार बन्द हो गये हैं और बेकारों की संख्या में वृद्धि हो गई है। इस भयङ्कर दशा के उपस्थित हो जाने से संसार की ऐसी बातों का ज्ञान रखनेवाले लोग चिन्तित हुए हैं और इस विषमावस्था को दूर कर पहले जैसी साम्यावस्था लाने के लिए यत्नवान् हुए हैं। इसी अवस्था की ओर ध्यान देते हुए हाल में 'कमर्स रिपोर्ट' में एक लेख प्रकाशित हुआ है। उसका सारांश प्रयाग के 'लीडर' में प्रकाशित हुआ है। उसमें लिखा गया है कि सन् १९३० की पहली छमाही में सन् १९२९ की पहली छमाही की अपेक्षा संसार के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में बेहद कमी हो गई है और संसार के व्यापार के गिर जाने तथा बेकारों की संख्या के बढ़ जाने का कारण यही कमी है। फ़ैशनों के परिवर्तन ने भी कुछ देशों के व्यापार को भारी धक्का पहुँचाया है। उदाहरण के लिए दक्षिण-अफ़्रीका का शुतुर्मुर्ग़ के परों का व्यापार फ़ैशन में परिवर्तित हो जाने से बिलकुल नष्ट हो गया। यही हाल आस्ट्रेलिया के ख़रगोश के चमड़े के व्यापार का भी होनेवाला है। सन् १९२९ की पहली छमाही में आस्ट्रेलिया ने ४२,७०,००० डालर का ख़रगोश का चमड़ा बाहर भेजा था। वही १९३० की पहली छमाही में कुल १०,०३,००० डालर का ही जा सका। योरप में अब नङ्गे सिर रहने का रवाज बढ़ता जा रहा है। इससे हैट टोपी के रोज़गार को भी धक्का पहुँचेगा। इटली में इसके व्यवसाय में १९२९ की अपेक्षा १९३० में ४३ फ़ी सदी की कमी हो गई है। रूस की क्रान्ति ने हब्श-देश के मोम के व्यवसाय को चौपट कर दिया है, क्योंकि रूस के गिरजाघरों में अब मोम की बत्तियाँ नहीं जलाई जाती हैं। निर्यात के व्यापार में चिली, अर्जेंटाइना, आस्ट्रेलिया, मिस्र और कनाडा को अधिक धक्का पहुँचा है। सन् १९२९ की पहली छमाही में इन पाँचों देशों ने अपने यहाँ का माल अन्य देशों को ३४ फ़ी सदी कम भेजा। आठ ऐसे देश हैं जिनके निर्यात में १८·६ से १३·६ फ़ी सदी की कमी हो गई। इन आठ में एक भारत भी है। और निर्यात के व्यवसाय को धक्का पहुँच जाने से कारबारी देशों के आयात-व्यापार को धक्का पहुँच जाना सर्वथा स्वाभाविक है। गेहूँ, क़हवा और रबर के मूल्य में कमी हो जाने का कारण उनकी अधिक उपज है। धातुओं का भी मूल्य बहुत गिर गया है। रबर और चाँदी का मूल्य तो इतना गिर गया है कि पहले इतना कभी न गिरा होगा। इसी प्रकार ताँबे का मूल्य भी गत ३४ वर्ष में इतना न गिरा होगा। इस दुरवस्था के समय में केवल रूस के व्यापार में वृद्धि हुई है। वैसे ही स्पेन के भी आयात के व्यापार में वृद्धि हुई है।

इस संक्षिप्त विवरण से प्रकट होता है कि संसार की आर्थिक अवस्था कैसी डावाँडोल हो रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—त्यागमूर्ति पण्डित मोतीलाल नेहरू का देहावसान

जिस बात की लोगों को आशङ्का होने लगी थी, अन्त में वह होकर ही रही। राष्ट्रीय भारत के वयोवृद्ध नेता त्यागमूर्ति पण्डित मोतीलाल नेहरू का ६ फ़रवरी

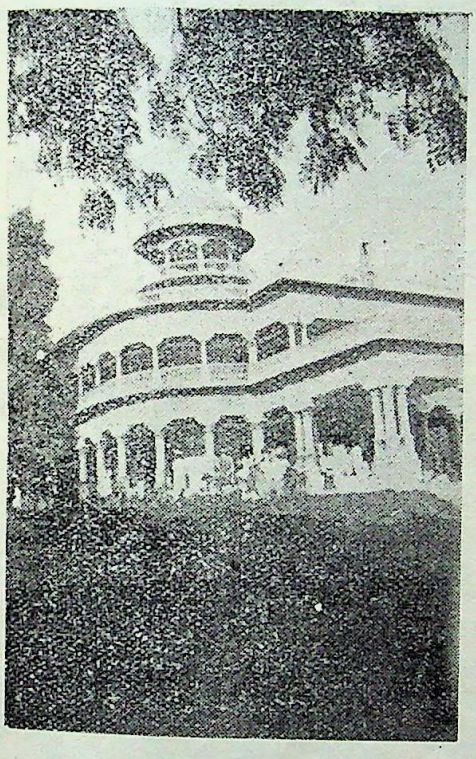

[आनन्द-भवन में शव की प्रतीक्षा में स्वजन तथा इष्ट-मित्र]

को सवेरे लखनऊ में देहावसान हो गया। इधर जब से आप कलकत्ता से इलाहाबाद लौट आये थे तब से आपकी तबीयत बराबर गिरती ही गई और इसी लिए विशेष चिकित्सा की सुविधा के विचार से आप लखनऊ ले जाये गये थे। परन्तु कुटिल काल के आगे कुछ न चला और दरिद्र भारत का असली मोती आख़िर में लुट ही गया।

बीसवीं सदी के इन प्रारम्भ के तीस वर्षों में जिन महापुरुषों ने भारतीय राजनीति के क्षेत्र में अग्र स्थान ग्रहण किया उनमें स्वर्गीय पण्डितजी का अपना ख़ास स्थान रहा। देश की स्वत्व-रक्षा के कार्य में आपने जिस आत्मत्याग का परिचय दिया उसकी बदौलत आप राष्ट्रीय भारत के प्रधान स्तम्भ बन गये। देशबन्धु और लालाजी के दिवंगत हो जाने पर देश में जो निराशा

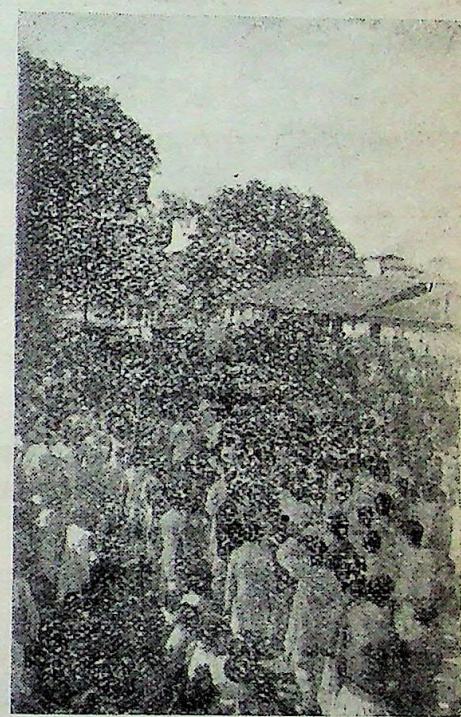

[आनन्द-भवन के सामने शव की प्रतीक्षा में लोक-समूह]

का अन्धकार छा गया था उसे दूर करने में महात्मा गांधी के कन्धे से कन्धा भिड़ा कर काम करने में स्वर्गीय पण्डितजी जिस शौर्य का परिचय बराबर देते रहे हैं उसी से हम आपकी गुरुता का अन्दाज़ कर सकते हैं। पिछले दिनों के राजनैतिक आन्दोलन का संचालन करने में अकेले रहकर आपने अपना महान् पुरुषार्थ प्रकट किया था। इसी से आपके स्वर्गवासी हो जाने से आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

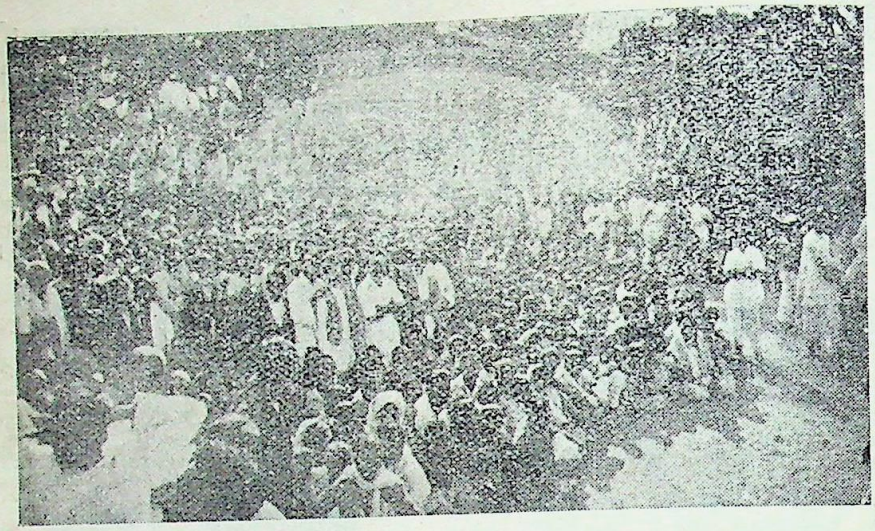

[आनन्द-भवन के सामने शव-प्रतीक्षा]

卐 卐 卐

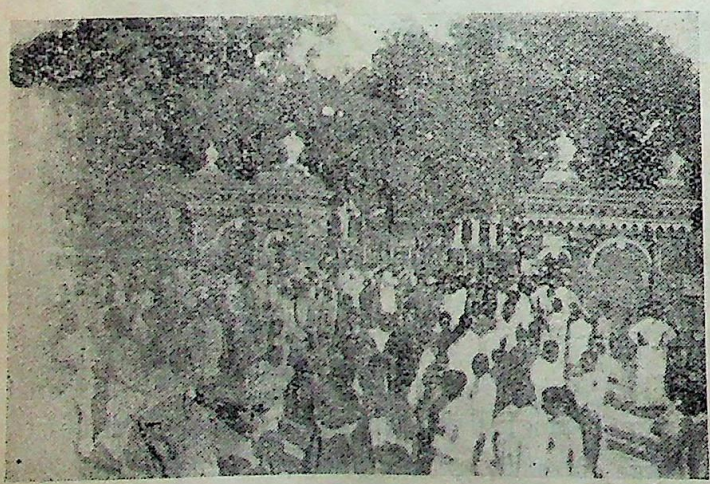

[स्वराज्य-भवन के आगे शव की प्रतीक्षा में लोक-समूह]

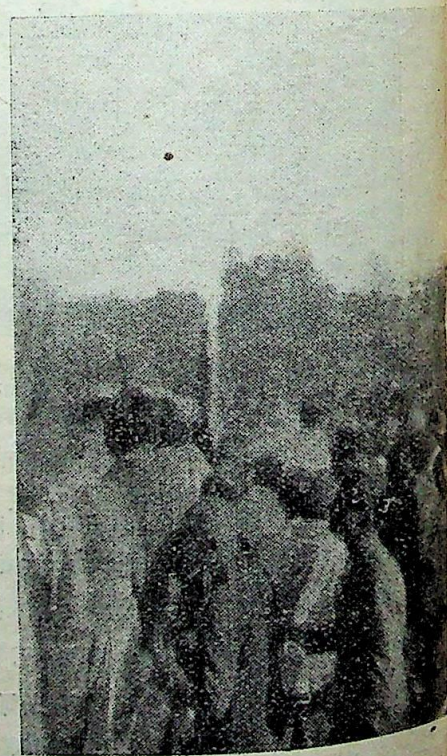

[लखनऊ से शव का आगमन]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[शव के आजाने पर आनन्द-भवन के भीतर लोक-समूह]

[आनन्द-भवन में शव का प्रथम संस्कार]

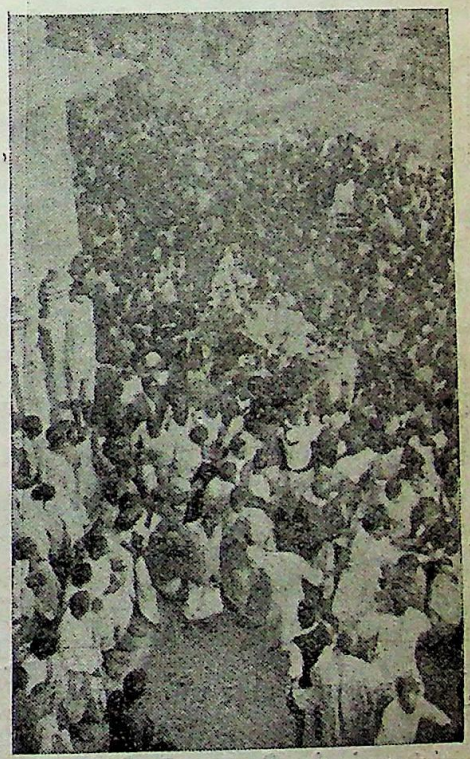

[आनन्द-भवन के भीतर अर्थी का उठना]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

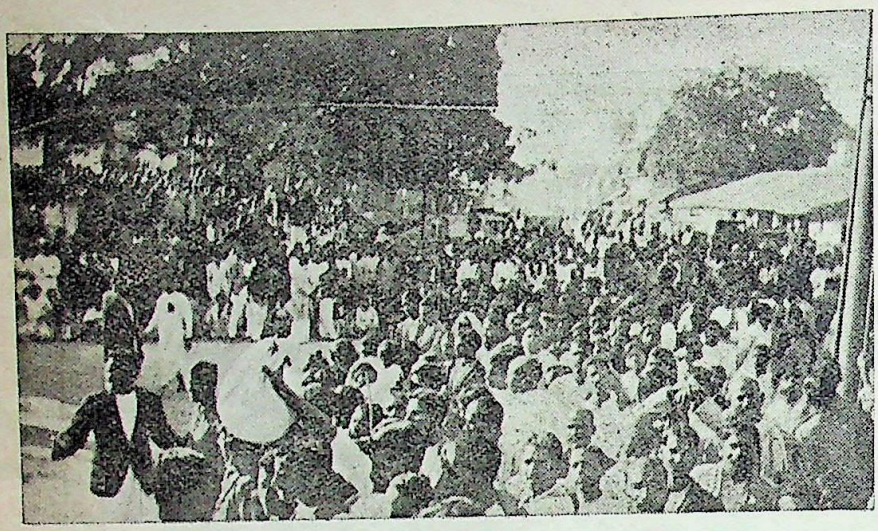

[आनन्द-भवन के सामने अर्थी के स्वागत में लोक-समूह]

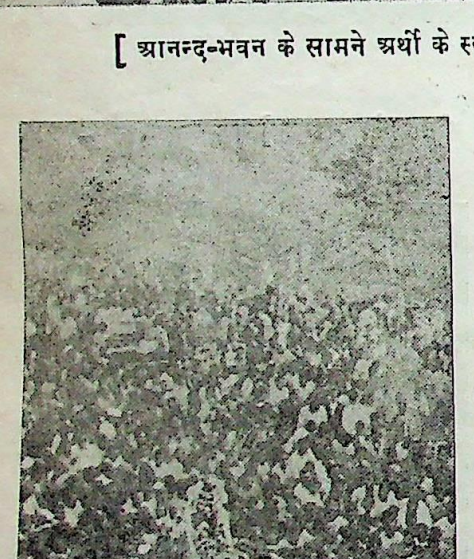

[आनन्द-भवन के बाहर अर्थी का दृश्य]

महात्मा गांधी अपने को विधवा स्त्री के समान समझ रहे हैं और देश अपने को अनाथ-सा बोध कर रहा है।

क्योंकि स्वर्गीय पण्डितजी की जब देश को अत्यधिक ज़रूरत थी तभी आपका निधन हुआ है। इससे अधिक दुर्भाग्य की और क्या बात हो सकती है?

पण्डित मोतीलालजी ने देश पर अपना सर्वस्व निछावर कर दिया था। तदनुसार देश भी आपके नाम के लिए बराबर मरता रहा। आपमें लोकनेता के सभी गुण थे। और उन गुणों का पिछले १५ वर्षों के भीतर अपने सार्थक जीवन में भले प्रकार प्रदर्शन किया।

भले ही कोई स्वर्गीय त्यागमूर्ति की राजनीति से सहमत न हो, परन्तु आपमें जो पुरुषोचित गुण थे उनके लिए तो आपके आगे सभी मस्तक झुकायेंगे। और यही कारण है कि वे लोग तक जो एक समय आपको एक आँख से भी नहीं देख सके, आज आपका गुणगान करने में अपना गौरव मानते हैं और यह कहते हैं कि उनका शील-स्वभाव एक उच्चमना अँगरेज़ का-सा था। परन्तु वस्तुतः पण्डित मोतीलालजी तो एक आदर्श ब्राह्मण थे। जीवन के अन्त-काल में जो व्यक्ति सब कुछ देश पर निछावर कर ब्रह्मगायत्री का स्मरण करता हुआ अपना नश्वर शरीर त्याग करता है वही तो आर्य-संस्कृति के शब्दों में सच्चा ब्राह्मण है। भारत को आज ऐसे ही नेता का अभाव हुआ है, जिसकी पूर्ति होना निकट भविष्य में असम्भव सा है।*

---

*इस नोट के चित्रों में से ७ चित्र म्योर-होस्टल के श्रीयुत श्यामविहारीलाल अग्रवाल तथा ३ चित्र श्रीयुत एम० एम० पटेल की कृपा से प्राप्त हुए हैं। इसके लिए हम आपके कृतज्ञ हैं। —सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—गो-प्रचार-योजना

भारत कृषिप्रधान देश है। और यहाँ की खेती का प्रधान साधन गोवंश उसके लिए अनिवार्यरूप से आवश्यक है। खेद के साथ कहना पड़ता है, उसके उसी महत्त्वपूर्ण साधन की दिन दिन दयनीय दशा होती जा रही है। सबल गो-वंश के अभाव में खेती का कारबार जैसा चाहिए, वैसा नहीं हो रहा है। इसकी ओर यद्यपि सरकार का तथा अन्य लोगों का बराबर ध्यान रहता है और गोवंश को अच्छी दशा में रखने के लिए बराबर यत्न होते रहते हैं, तो भी इस विशाल देश के लिए वे सारे के सारे यत्न-प्रयत्न नहीं के बराबर हैं। आवश्यकता तो यह है कि खेती की व्यावहारिक शिक्षा के साथ, गो-वंश की व्यावहारिक रक्षा की भी व्यवस्था सारे देश में व्यापकरूप से की जाय। तभी कुछ होने की आशा है। इस सम्बन्ध में २५ जनवरी के 'प्रताप' में 'गो-प्रचार-योजना' शीर्षक एक उपयोगी लेख निकला है। लेखक महोदय ने अपनी योजना इस प्रकार बतलाई है—

'जब तक सहृदय पढ़े-लिखे व्यक्ति गाँवों में रह कर स्वयं अशिक्षित किसानों का सा जीवन बिता कर उनका संघटन न करेंगे और गो-प्रचार-योजना में अपनी शक्ति न लगावेंगे तब तक किसान, कम से कम युक्त प्रान्त के किसान स्वयं कुछ नहीं कर सकते। दरिद्रता राक्षसी ने उनकी मानव-शक्ति चूस ली है। किसान तो केवल मानवीय कङ्काल ही रह गये हैं। वे राष्ट्रीय झण्डे का गीत गाते हैं, महात्मा गान्धी की जय बोलते हैं और स्वराज्य का मतलब यही समझते हैं कि ऋण का एक पैसा न देना पड़ेगा और लगान तो सर्वदा के लिए ही छूट जायगा। यह उनकी पूर्व-स्थिति-जन्य प्रतिक्रिया है।

'यदि पचास अथवा सौ किसान मिलकर एक सहयोग-समिति बनावें और उनमें से प्रत्येक किसान पचास-पचास रुपया एकत्र करे तो किसी अच्छे फ़ार्म से सौ कलोर गायें मोल ली जा सकती हैं। उनके साथ एक साँड़ भी मोल लेना चाहिए, जो समिति की संयुक्त सम्पत्ति होगा। अच्छा तो यह है कि किसान अपने पास से पचास-पचास रुपया इकट्ठा करें और सहयोग-समिति से, चाहे वह सरकारी ही समिति क्यों न हो, कम ब्याज पर सौ सौ रुपया ऋण ले लें और डेढ़ डेढ़ सौ रुपयेवाली गायें एकदम सौ मोल ली जायँ। एक अच्छा हरियाने का साँड़ भी साथ में मोल लिया जाय। साँड़ के नाथ होनी चाहिए, जिससे वह क़ाबू में रक्खा जा सके। किसान लोग गाय के आधे दूध को कम से कम पहले चार महीने तक उसके बच्चे को पिलावें, बाद में उसको थोड़ा ही दूध दें शेष आधे दूध को घी में परिवर्तित करें या जैसा बने उचित प्रयोग करें।

'जब किसी किसान को गाय के लिए साँड़ की ज़रूरत हो तो एक रुपया फ़ीस और पाँच सेर दाना देना चाहिए। इस तरह से जो रुपये आवेंगे वे समिति की सम्पत्ति होंगे और साँड़ के पालन-पोषण में काम आवेंगे। रही विस्तार की बातें, उनको यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं है। किसानों को इससे बड़ा लाभ यह होगा कि वे कुछ ही समय में दो गायें रख सकेंगे। एक गाय से तो उनके घर का ख़र्च चलेगा और खेती के लिए बढ़िया बैल मिलेंगे। और दूसरी गाय से वे अपने ऋण का भुगतान भी कर सकेंगे।'

विचार उपयोगी हैं, इनकी उपयोगिता इन्हें कार्य में परिणत करके देखी जा सकती है।

४—इंडोनेशिया की दुःखगाथा

एशिया और आस्ट्रेलिया के बीच में भूमध्य-रेखा के आसपास द्वीपों का एक बड़ा भारी द्वीपपुञ्ज है। भौगोलिक भाषा में अब यह 'इंडोनेशिया' कहलाता है। सुमात्रा, जावा, बोर्नियो आदि बड़े बड़े द्वीपों तथा अन्य अनेक छोटे-बड़े टापुओं का यह समूह इसी नाम से प्रसिद्ध है। इन सब द्वीपों में कोई ६ करोड़ मनुष्य निवास करते हैं और ये बड़े उपजाऊ तथा खनिज द्रव्यों से परिपूर्ण हैं। परन्तु जब से ये योरपीय शक्तियों के अधिकार में आगये हैं और इनकी स्वाधीनता विनष्ट हो गई है तब से अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से इनका महत्त्व और भी अधिक बढ़ गया है। अधिकांश द्वीपों पर हालैंड के डचों का अधिकार है। परन्तु द्वीपवासी डच-शासन से सन्तुष्ट नहीं हैं। और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तक वहाँ कम से कम दो-बार सशस्त्र विद्रोह तक हो चुके हैं। इन द्वीपों से एक समय भारत का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। सम्बन्ध ही क्यों, इनमें जाकर भारतीय आबाद हुए थे और सदियों तक इन पर उनका प्रभुत्व रहा है। उनकी सभ्यता के आज भी वहाँ अशेष चिह्न विद्यमान हैं। परन्तु खेद की बात है, आज हमें उनके अस्तित्व का भी ज्ञान नहीं है। अस्तु, ऐसे ही 'इंडोनेशिया' के एक जावा-निवासी विद्वान् ने लाहौर में हाल में एक व्याख्यान किया है। लाहौर में एक सभा में एशिया के भिन्न-भिन्न देशों से आये हुए यात्रियों के व्याख्यानों का आयोजन किया गया था। उसी सभा में जावा-द्वीप के श्रीयुत सागुदल ने इंडोनेशिया की वर्तमान दयनीय दशा के सम्बन्ध में भाषण किया था। उससे वहाँ की वास्तविक दशा का दिग्दर्शन होता है। उस भाषण का उक्त अंश इस प्रकार है—

'इन सब द्वीपों में कुल मिलाकर ६ करोड़ से अधिक आदमी बसते हैं और कितनी ही भाषायें बोलते हैं, पर सौभाग्यवश हमारी एक राष्ट्रभाषा भी है। वह है मलय-भाषा। अब उसका नाम इंडोनेशियन भाषा हो गया है।

'आप दुनिया के नक़्शे पर दृष्टि दौड़ायें तो आप इंडोनेशिया को बड़े महत्त्व के स्थान पर स्थित पायेंगे। योरप से अतिपूर्व, एशिया से आस्ट्रेलिया, अमरीका से अफ़्रीका जाते हुए यह द्वीपपुंज बीच में पड़ता है, अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा का जंकशन है। इसके सिवा इसकी धरती सब प्रकार के खनिज पदार्थों से, ख़ासकर पेट्रोलियम से, जो इस शताब्दी का सबसे आवश्यक खनिज द्रव्य है, भरी है। ईख, क़हवा, तम्बाकू, कुनैन और रबर की फ़सल भी ख़ूब उपजती है, जो व्यापार की दृष्टि से सबसे महत्त्व की पैदावार है।

'हज़ारों कारख़ाने हैं, पर उनमें एक भी इंडोनेशिया के निवासियों की मिलकियत नहीं। लाखों एकड़ ज़मीन पर ईख, क़हवा, चाय आदि की खेती लहराती रहती है, पर उसके बीच कहीं एक पौधा भी नहीं होता जिसे हम अपना कह सकें। अब भी विदेशों को, ख़ास कर हालैंड को, अरबों की पूँजी बही चली जा रही है और नफ़े के रुपये की अपार धनराशि हर साल वहाँ से विदेशों को उठी जा रही है। ६० करोड़ गिल्डर (डच रुपया) तो अकेले हालैंडवालों की जेबों में पहुँच रहा है। और इसके बदले में हमें कुल ६०३ नियमित प्रारम्भिक पाठशालायें जो 'डच प्राइमरी स्कूल' कही जाती हैं और इसके आधे अस्पताल दिये गये हैं। अर्थात् एक लाख आदमी पीछे एक पाठशाला और दो लाख पीछे एक अस्पताल हमें मिला है। पाठशालायें और भी हैं, पर उनमें केवल अक्षर पहचानना और लिख लेना ही सिखाया जाता है।

'इंडोनेशिया-वासियों की ख़ास ख़ूराक चावल है। कुछ वहीं पैदा होता है, कुछ रंगून और सैगोन से जाता है। आबादी का सबसे बड़ा भाग किसान हैं। अधिकांश किसानों के पास बस केवल एक एकड़ (लगभग डेढ़ बीघे) ज़मीन है। फलतः जावा के अनेक प्रदेशों में कितने ही कृषक कुटुम्बों को आदमी पीछे ⅛) रोज़ की आमदनी पर गुज़र करना पड़ता है। मैं आप लोगों को अपने देशवासियों की दुर्दशा अधिक सुनाना नहीं चाहता। एक वाक्य में कहूँ तो औपनिवेशिक लूट कैसी होती है, इंडोनेशिया इसका दुःखद दृष्टान्त है।'

(आज, सौर २२)

५—हिन्दुस्तानी अकेडमी का सत्कार्य

इलाहाबाद की 'हिन्दुस्तानी अकेडमी' सरकारी साहित्यिक संस्था है। हाल में इसने 'हिन्दी' और 'उर्दू' में हिन्दुस्तानी नाम की दो पत्रिकायें प्रकाशित की हैं। इसकी स्थापना के सम्बन्ध में इन प्रान्तों के तत्कालीन विद्वान् गवर्नर सर विलियम-मेरिस ने अपने भाषण में जो महत्त्वपूर्ण बात कही थी उसका एक अवतरण उर्दू के 'हिन्दुस्तानी' में उसके एक सम्पादक महोदय ने अपने सम्पादकीय नोट में उद्धृत किया है। उसका एक अंश यह है—

'हर हिन्दी लिखनेवाले के पेश-नज़र यह मक़सद होना चाहिए कि वह मुसलमानों के पढ़ने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किताब लिख रहा है और इसी तरह मुसलमानों को ख़याल रखना चाहिए कि उनकी लिखी हुई किताब को हिन्दू पढ़ेंगे। मुमकिन है, यह उम्मीद पूरी न हो, लेकिन मैं यह उम्मीद करता हूँ कि अकेडमी के अराकीन इस पर बिलकुल तैयार होंगे कि वह किसी ज़बान में फ़िरक़ावाराना शान पैदा न होने देंगे और ज़बानों को मख़सूस जमात की ज़बान न होने देंगे।

लाट साहब के इस स्पष्ट कथन से हिन्दी और उर्दू दोनों के विद्वानों को आशङ्का हुई थी कि इस संस्था के द्वारा हिन्दी और उर्दू का नहीं, विशुद्ध 'हिन्दुस्तानी' का ही प्रचार होगा। परन्तु इधर इसने हिन्दी और उर्दू में जो पुस्तकें प्रकाशित की हैं उनको देखने से लोगों की आशङ्का अपने आपही दूर हो गई। और जो कहीं थोड़ी-बहुत रह भी गई होगी उसका उन्मूलन हाल में इस संस्था-द्वारा उर्दू में प्रकाशित होने-वाले 'हिन्दुस्तानी' त्रैमासिक ने कर दिया है। इसके एक सम्पादक मौलाना असग़र हुसैन साहब ने अपने उक्त सम्पादकीय नोट में इस सम्बन्ध में लिखा है--

'लेकिन हक़ीक़त यह है कि हिन्दी और उर्दू में शायद इतना एख़्तिलाफ़ नहीं है जितना हिन्दी और उर्दू के परस्तारों में है। इसलिए इस मसले का हल उर्दू और हिन्दी की कतर-ब्यौंत से इतना मुमकिन नहीं जितना उर्दू और हिन्दी के अलंबरदारो की ज़ेहनियत की इस्लाह से।...मुमकिन है, उर्दू और हिन्दी के कुल्ली मसले का इससे हल न हो सकता हो, लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि मुक़ामी हैसियत से अमलन इसका हल इसी तरह अस्तर और अबरे को बराबर करने से मुमकिन है। इस बिना पर बेमहल न होगा कि हमारे रिसाले की पालिसी और इसका प्रोग्राम इन्हीं लाइन्स पर हो।

इस नोट की इस भाषा तथा भाव दोनों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि लोगों की उपर्युक्त आशङ्का निराधार है। मौलाना साहब ने हिन्दी और उर्दू के सम्बन्ध में जो राय दी है वह बहुत ठीक है। परन्तु यहाँ हमारा मौलाना साहब से एक निवेदन है। वह यह कि आपने अपने इसी सम्पादकीय नोट में ऐसे कई एक शब्दों का यहाँ तक कि अँगरेज़ी के शब्दों का भी जिन्हें साधारण पढ़ा-लिखा मुसलमान भी मुश्किल से समझ सकेगा, प्रसन्नता से प्रयोग किया है परन्तु पड़ोस की बेचारी हिन्दी के आमफ़हम शब्दों तक से परहेज़ किया है। आपके इस सम्पादकीय नोट की उच्च उर्दू में हिन्दी का एक भी शब्द नहीं आया है। बहुत सम्भव है, इसका कारण जस्टिस डाक्टर सर मुहम्मद सुलैमान साहब का सिद्धान्त ही हो, जिसका उल्लेख आपने अपने इस नोट में किया है। जस्टिस साहब की राय है कि

'मामूलन जो ज़बान बोली जाती है वह बमुक़ाबला बलन्द हिन्दी के, बलन्द उर्दू है, इसकी वजह तलाश करने के लिए बहुत दूर जाने की ज़रूरत नहीं, अरबी और फ़ारसी ज़िन्दा ज़बानें हैं जो अरब, एराक-अरब, ईरान और अफ़ग़ानिस्तान के कुछ हिस्सों में बोली जाती हैं, ख़ालिस संस्कृत ज़बान कहीं नहीं बोली जाती। यह सिर्फ़ पण्डितों के हल्कों में महदूद है। उर्दू को यह फ़ायदा हासिल है कि वह हिन्दुस्तान के हम हमसाया मालिक से रिश्तये इत्तिहाद रखती है।'

हिन्दी के सम्बन्ध में इलाहाबाद के एक मुसलमान न्यायाधीश का यह कैसा महत्त्वपूर्ण फ़ैसला है। इसे हिन्दीवालों को विशेष मनोनियोग-पूर्वक पढ़ना चाहिए। अस्तु, अकेडेमी की कार्यवाही बड़े अच्छे ढङ्ग से हो रही है। उसके हिन्दी और उर्दू जो त्रय मासिक पत्र निकले हैं, भाषा और विषय दोनों दृष्टियों से अच्छे निकले हैं। इनका वार्षिक मूल्य ८) है। आशा है, इस अर्द्ध सरकारी साहित्यिक संस्था से इन दोनों भाषाओं का समुचित हित होगा।

६—लाहौर में महिलाओं के दो महत्त्वपूर्ण सम्मेलन

अभी हाल में लाहौर में समस्त एशिया की महिलाओं का एक सम्मेलन हुआ था। उसमें चीन, जापान, जावा, फ़ारस, लङ्का, ब्रह्मदेश तथा अफ़ग़ानिस्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि देशों की महिलाओं ने प्रतिनिधि रूप से भाग लिया था। उसके साथ ही अखिलभारतीय महिला-सम्मेलन का भी वार्षिक अधिवेशन हुआ था। इन सम्मेलनों में भारतीय तथा अन्यान्य देशों से आई हुई महिलाओं ने जिस उत्साह से भाग लिया था वह महिला-समाज के उत्थान का शुभ सूचक है। प्रतिनिधियों तथा दर्शकों की संख्या आशा से कहीं अधिक थी, अतएव स्थान की कमी के कारण एशिया महिला-सम्मेलन का अधिवेशन टाउनहाल में न करके पृथक् पण्डाल में करना पड़ा श्रीमती सरोजिनी नाइडू इस सम्मेलन की अध्यक्ष निर्वाचित की गईं, परन्तु उनके जेल में बन्द होने से लगातार आठ दिन के अधिवेशनों में भिन्न-भिन्न देशों से आई हुई महिलाओं में से प्रतिदिन कोई सुयोग्य महिला अध्यक्ष पद के लिए निर्वाचित हुआ करती थी। सम्मेलन में एशिया के भिन्न-भिन्न देशों के अतिरिक्त अन्य कई सुदूर देशों की सुप्रतिष्ठित घरानों की महिलाओं के सहानुभूतिसूचक पत्र आये थे।

इस सम्मेलन में बहुत से उपयोगी तथा लोकहितकर प्रस्ताव स्वीकृत हुए हैं जिनमें से बालक-बालिकाओं के लिए अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था, सम्पत्ति तथा सन्तान की संरक्षा के लिए स्त्रियों का समान अधिकार और स्कूलों में संसार भर के बड़े बड़े धार्मिक नेताओं के जीवन-चरित और उनके उपदेशों की शिक्षा का प्रबन्ध आदि के प्रस्ताव विशेष उल्लेखनीय हैं। अन्तिम प्रस्ताव का उद्देश यह है कि भिन्न-भिन्न धर्मों के प्रचारकों तथा उनके सिद्धान्तों से यथेष्ट परिचय हो जाने पर भिन्न-भिन्न धर्म के अनुयायियों में पारस्परिक सहानुभूति तथा प्रीति और श्रद्धा की वृद्धि होगी। सम्मेलन में जापान के अतिरिक्त एशिया के अन्य देशों से स्वास्थ्य-सुधार और देशी चिकित्सा-सम्बन्धी गवेषणा के लिए गवेषणागार स्थापित करने में मुक्तहस्त होकर धन व्यय करने की अपील थी। इसके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न देशों की महिलाओं ने वैवाहिक प्रथा के सुधार और महिलाओं के अधिकारों के सम्बन्ध में वक्तृतायें की थीं, जिसका सदस्याओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की सभानेत्री थीं मदरास की व्यवस्थापक सभा की भूतपूर्व उपाध्यक्षा श्रीमती मुथुलक्ष्मी रेड्डी। इस सम्मेलन में बहुविवाह और पर्दा प्रथा के विरुद्ध लोकमत तैयार करने, हर एक प्रान्त में पतिता स्त्रियों के उद्धार के लिए आश्रम स्थापित करने, और वेश्या-वृत्ति को रोकने के लिए प्रस्ताव पास हुए। साथ ही स्त्रियों के सुधार के लिए उपयोगी क़ानूनों का समुचित उपयोग करने के लिए भिन्न-भिन्न विभागों में स्त्री-कर्मचारी नियुक्त करने के लिए सरकार से अनुरोध किया गया। सम्मेलन की यह दृढ़ धारणा है कि व्यवस्थापक सभा प्रान्तीय कौंसिलों, म्युनिसिपल्टियों और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों तथा अन्यान्य समितियों और संस्थाओं में जिनसे स्त्रियों और बच्चों के हित-अहित से सम्बन्ध हो, यथेष्ट संख्या में स्त्री-प्रतिनिधियों का होना आवश्यक है। सम्मेलन में स्त्रियों के समानाधिकार के सम्बन्ध में भी एक प्रस्ताव पास हुआ और सरकार, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड आदि स्थानीय संस्थाओं तथा महिला-समितियों से प्राप्तवयस्क महिलाओं में शिक्षा-प्रचार के लिए उपयुक्त पाठशालायें, सिनेमा, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जानेवाले पुस्तकालय आदि स्थापित करने का अनुरोध किया गया।

७—हिन्दी-पत्रों में व्यङ्ग्य-चित्र

हिन्दी के सामयिक पत्रों में व्यङ्ग्य-चित्रों का यथासाध्य प्रकाशन होता रहता। परन्तु कला की दृष्टि से उनका कितना मूल्य रहता है, इसकी ओर लोगों का उतना ध्यान नहीं रहता। इस सम्बन्ध में श्रीयुत लक्ष्मीकान्त झा ने 'आज' में एक उपयोगी लेख प्रकाशित किया है। आप विदेशों में प्रकाशित होनेवाले व्यङ्ग्य-चित्रों का महत्त्व बतलाते हुए अपने उक्त लेख में लिखते हैं—

"वहाँ (पाश्चात्य देशों में) कार्टून चीनी से ढँकी कुनैन की गोलियों की तरह समाज पर असर करता है। हास्य की ओट से तीखे सत्य का प्रहार किया जाता है, जिससे समाज के दोष व्याकुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर तिलमिला उठते हैं। वहाँ कार्टून एक अमोघ शक्ति है। वहाँ के कार्टूनिस्ट सुयोग्य तो होते ही हैं, साथ ही उनको राजनीति, समाज-शास्त्र तथा और विषयों का भी अच्छा ज्ञान होता है। यही नहीं, कवियों की तरह उनमें "इमैजिनेशन" और "सिम्पैथेटिक एप्रिसिएशन" भी होती है। वे विद्वान् होते हैं। स्थिति को समझने की उनमें शक्ति होती है। स्थिति को समझ कर वे सर्वसाधारण के सामने उसे कार्टून के रूप में रखते हैं—ऐसे कार्टून के रूप में कि सर्वसाधारण उसे समझ लें; जो समझ चुके हैं वे उसे देखकर आनन्द उठावें और जिनको लक्ष्य कर वह कार्टून बनाया गया है वे सँभल जायँ, चेत जायँ और सुधर जायँ।'

हिन्दी के सामयिक पत्रों में प्रकाशित होनेवाले व्यङ्ग्य-चित्रों के सम्बन्ध में आपकी सम्मति इस प्रकार है—

'.....मैंने हिन्दी में प्रकाशित जितने मौलिक कार्टून देखे हैं उनमें नवीनता नहीं दीखती। मैंने मौलिक शब्द का उपयोग जान-बूझ कर किया है। कुछ दिनों से मैं कुछ कार्टून ऐसे देखता हूँ जो विलायती पत्रों में प्रकाशित कार्टूनों की नक़ल रहते हैं। विशेषता यही रहती है कि नक़ल करनेवाले चित्रकार चित्रित मनुष्यों का मुँह ज़रा बिगाड़ देते हैं। एक और बात, विलायती पत्रों का उल्लेख नहीं किया जाता है। हाँ, मैं कह रहा था कि मौलिक कार्टूनों में नवीनता नहीं देखी।

'इन विषयों पर अनेक कार्टून निकले हैं—

(१) बे-मेल विवाह और कन्या-विक्रय, (२) बेकार ग्रेजुएट, (३) बदमाश साधु, (४) ढोंगी पंडित, (५) पर्दा, (६) पद-दलित स्त्री-समाज और (७) अछूत।

'चित्रकार कोई भी हो पत्रिका कहीं से भी प्रकाशित होती हो, पर उपर्युक्त विषयों को छोड़कर शायद ही किसी विषय पर मौलिक कार्टून निकलते हों। केवल विषय का ही नहीं, भाव का अभाव भी सभी चित्रों में एक ही सा रहता है। नवीनता छू तक नहीं जाती।

× × ×

'मैं यह नहीं कहता कि हिन्दी में अच्छे कार्टून प्रकाशित हुए ही नहीं। होते अवश्य हैं, पर रद्दी और बेढंगे कार्टूनों की भरमार के कारण अच्छों का पता ही नहीं लगता। यह लेख कार्टून बनानेवालों को सार्टिफ़िकेट देने के ख़याल से नहीं वरंच हिन्दी-संसार का ध्यान पत्रिकाओं में प्रकाशित होनेवाले कार्टूनों के दोषों की ओर आकृष्ट करने के ख़याल से लिखा गया है।'

झा महोदय के विचार उपयोगी हैं। आशा है, हिन्दी के सम्पादकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट होगा।

८—चित्र-परिचय

१-२ इस अङ्क में स्वर्गीय त्यागमूर्ति पंडित मोतीलाल नेहरू के दो रङ्गीन चित्र दिये गये हैं। इनमें एक में उनके चार चित्र संग्रह किये गये हैं। ये चारों चित्र उनकी भिन्न-भिन्न अवस्थाओं के सूचक हैं जिनका उल्लेख उन चित्रों के साथ यथास्थान कर दिया गया है।

३-४ स्वर्ग की सुखमा और उत्कण्ठा नामक चित्रों के नीचे उनके भाव-सूचक पद्य दे दिये गये हैं, जिनसे पाठकों को उनका भाव हृदयङ्गम करने में आसानी होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नव प्रकाशित पुस्तकें

अँगरेज़ी भाषा की शिक्षा

(श्रीयुत ई० एस० ओकली, एम० ए०)

यह अँगरेज़ी भाषा का एक प्रकार का व्याकरण है। अँगरेज़ी व्याकरण की प्रायः सभी बातें इसमें विस्तार-पूर्वक समझाई गई हैं, साथ ही अँगरेज़ी शब्दों और मुहाविरों का संग्रह तथा उनका प्रयोग भी दिया गया है। इस पुस्तक की सहायता से अँगरेज़ी लिखने का अभ्यास अच्छी तरह से किया जा सकता है। मूल्य २) दो रुपये।

प्रबन्धप्रकाशः

(डाक्टर मंगलदेव शास्त्री, एम० ए०, डी० फ़िल०)

इस पुस्तक में संस्कृत में निबन्ध लिखने की विधि बतलाई गई है। साथ ही कई उत्तमोत्तम निबन्धों का संग्रह भी किया गया है। संस्कृत के सुप्रसिद्ध विद्वानों तथा अध्यापकों ने इसकी उत्तमता की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है। संस्कृत-कालेज बनारस की मध्यमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। मूल्य १) एक रुपया।

पञ्चतन्त्रम् (पञ्चमं तन्त्रम्)

(श्रीयुत हरिहर शास्त्री)

यह श्री विष्णुशर्मा-द्वारा सङ्कलित पञ्चतन्त्र का पाँचवाँ तन्त्र है। शास्त्रीजी ने पुस्तक के आदि में मूलग्रन्थ प्रकाशित किया है और बाद को छब्बीस पृष्ठों में संस्कृत में टिप्पणियाँ प्रकाशित की हैं, जिनमें आवश्यकतानुसार बड़े बड़े शब्दों के समास, प्रतिशब्द, श्लोकों तथा कथाओं के सारांश आदि दिये गये हैं। अन्त में ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। पुस्तक संस्कृत-कालेज काशी की प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। मूल्य ॥) आठ आने।

प्राणायाम-विज्ञान और कला

(श्रीयुत पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, एम० ए०, एल-एल० बी०)

यह पुस्तक डाक्टर शोजा-बुरो ओटेब के 'दि साइंस एंड आर्ट आफ़ डीप ब्रीदिंग' का हिन्दी अनुवाद है। इसके मूललेखक एक सुप्रसिद्ध चिकित्सक थे। प्राणायाम के विषय में लगातार बहुत दिनों तक प्रयोग एवं मनन करके उन्होंने जो कुछ अनुभव किया है, उसी का इसमें संग्रह है। योरप की कई भाषाओं में इसका अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। मूल्य ।॥) बारह आने।

नीरोग कन्या

(श्रीयुत सन्तराम, बी० ए०)

स्वास्थ्य-रक्षा के लिए जिन जिन बातों का जानना आवश्यक है, उन सब पर इस पुस्तक में विशद रूप से विवेचन किया गया है। पुस्तक स्त्रियों—विशेषतः छात्राओं के लिए बहुत उपयोगी है। मूल्य १) रु०।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

Printed and Published by K. Mittra at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्दी (Winter) में शरीर को पुष्ट बनाइए

कविवनोद वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य आविष्कारक अमृतधारा, ५ दर्जन वैद्यक पुस्तकों के रचयिता, सम्पादक "देशोपकारक" तथा पुरुषों के गुप्त रोगों के विशेषज्ञ ने मनुष्य के शरीर को सोना बनानेवाली लगभग ६ दर्जन अकसीरें तैयार की हैं, जिनमें से किञ्चित् का वर्णन नीचे दिया जाता है। जो सविस्तर चाहें, वे "नपुंसकत्व" नामी पुस्तक आध आने का टिकट भेजकर बिना मूल्य मँगवा सकते हैं। मगर विद्यार्थी इसके वास्ते पत्र न भेजें। जो सज्जन औषधि मँगवाना चाहें, वे अपनी अवस्था के अनुसार जो अकसीर अपने लिए उचित समझें, मँगवा लें। यदि स्वयं न चुन सकें, तो वृत्तान्त लिखकर १) फ़ीस के साथ जो कि आरम्भ में केवल १ बार ली जाती है, भेज दें। श्रीपण्डितजी से औषधि तजबीज़ कराके सूचना दे दी जायगी या भेज दी जायगी। जैसा आप लिखेंगे। इन अकसीरों के प्रभावशाली होने के भरोसे पर इनका नमूना भी दिया जाता है:—

अक्सीर नं० १—यह पुरुषों के विशेष रोगों की उत्तम औषधि है। शुक्रमेह, शीघ्रपतन को हितकर है, और निर्बलता को दूर करने के लिए अद्वितीय है। मूल्य ६४ गोली ४) ३२ गोली २) नमूना ८ गोली ॥)

अशूगरी—उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त मूत्र में शक्कर आने के लिए एक ही औषधि है, हर प्रकार के प्रमेह के लिए अद्वितीय है। मूल्य ३२ गोली ४), नमूना १)

अक्सीर नं० ५०—उपरोक्त गुणों में अद्वितीय है। जगत् में कोई पौष्टिक औषधि इसकी तुलना नहीं कर सकती है। पहली गोली ही अपना स्वास्थ्यदायक प्रभाव दिखाती है। अमीरों के वास्ते है। मूल्य १५ गोली ७), ८ गोली ४)।

अक्सीर नं० ११—शीघ्रपतन, शुक्रमेह, अनिद्रा को दूर करने के अतिरिक्त हृदय, मस्तिष्क, यकृत, आमाशय, मूत्राशय को भी बल देती है। मूल्य ६४ गोली १०), १६ गोली २॥) रु० नमूना ४ गोली ॥=)

अक्सीर नं० १६—शुक्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, प्रमेह, जीर्णज्वर, ज्वर के बाद ही निर्बलता को दूर करनेवाली, आनन्ददायक, पौष्टिक, उत्तेजक और हृदय, मस्तिष्क को बल देनेवाली है। मूल्य ३२ गोली ४), नमूना १)।

अक्सीर नं० २०—वृद्ध को युवा और युवा को मल्ल बनाने के वास्ते यह योग शिवजी महाराज का निर्मित है। जो खाँसी, नज़ला, जुकाम, श्वास, पाण्डु आदि को भी हितकर है। मूल्य ६४ गोली ४), नमूना ॥)

अक्सीर नं० ३०—इससे वीर्य्य बहुत बढ़ता है। उसके पश्चात् पुंस्त्व बढ़ना आरम्भ होता है। शुक्रमेह, स्वप्नदोषादि को हितकर है। मूल्य एक पाव २), नमूना ॥)

अक्सीर नं० ३१—२० प्रकार का प्रमेह, या मूत्ररोग, अर्श, श्वास, अपाचन आदि को लाभकारी है और शुक्रमेह को भी हितकर है। मूल्य ३२ गोली १), नमूना ।)

अक्सीर नं० ३४—(क) शुक्रमेह के वास्ते अद्वितीय औषधि है, मूल्य ३२ गोली २), नमूना ॥)

अक्सीर नं० ३४—(ख) जो इसके अतिरिक्त हृदय, मस्तिष्क, मूत्राशय, यकृत, आमाशय आदि को बल देती है। मूल्य ३२ गोली ५), नमूना १।)

अक्सीर नं० ३९—वीर्य्य को गाढ़ा करती और बढ़ाती है, मस्तिष्क को ताज़ा करती है, दृष्टि को बढ़ाती है। शीघ्रपतन दूर होता है। दूध में मिलाकर खाते हैं। मूल्य एक पाव २), नमूना ॥)।

अक्सीर नं० ४०—स्वप्नदोष की अद्वितीय औषधि विद्यार्थियों के लिए विशेषकर लाभकारी है। मूल्य ३२ गोली १), नमूना ।)

दत्त तिला—जब चाहो मलो, न पानी का परहेज़ न ज़ख़म। मूल्य २)।

पत्र तथा तार का पता—अमृतधारा ११, लाहौर।

विज्ञापक—मैनेजर अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा भवन, अमृतधारा रोड, अमृतधारा डाकख़ाना, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़के क्या चाहते हैं ?

यह वह पुस्तक है जिसकी एक प्रति हर एक होनहार बालक के पास होनी चाहिए।

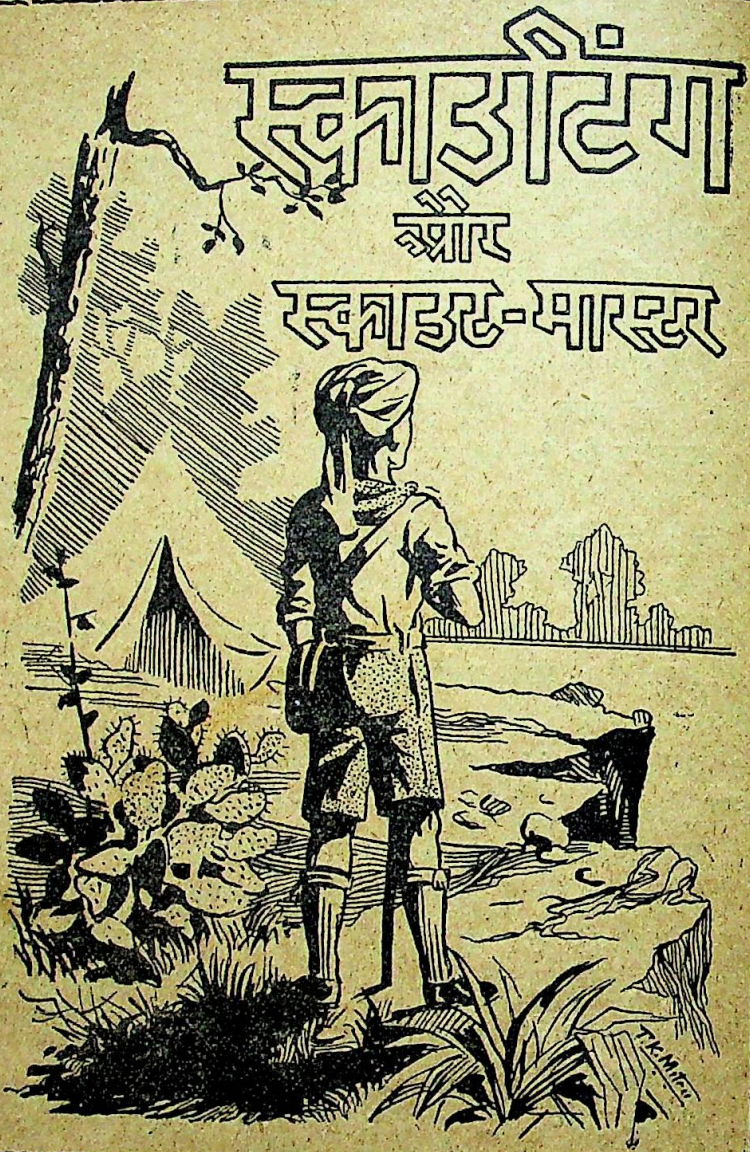

इस पुस्तक में अखिल भारतीय सेवासमिति बालचर-मण्डल प्रयाग के प्रधान केन्द्र-कमिश्नर बाबू जानकीशरण वर्मा, बी० ए० ने स्काउटिङ्ग के विषय में सभी जानने योग्य बातें बड़े रोचक ढङ्ग से लिख दी हैं। ज़रूरत के हिसाब से पुस्तक में आर्ट पेपर पर बहुत से हाफ़ टोन के चित्र भी हैं। मूल्य केवल ॥=) है।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

Publ... Gur... Co... Haridw...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें ! नई पुस्तकें !!

अकबरी दरबार

दूसरा भाग

यह 'सूर्यकुमारी-पुस्तकमाला' का १० वाँ पुष्प है। जिन्होंने इस 'दरबार' का पहला भाग देखा है उनको विशेष रूप से इसका परिचय देने की ज़रूरत नहीं है। इसमें मुग़ल बादशाह अकबर के प्रसिद्ध दरबारियों की ख़ास ख़ास घटनाओं का वर्णन, स्वर्गीय शम्सुल् उल्मा मौलाना मुहम्मद हुसेन साहब 'आज़ाद' का किया हुआ, है। वर्णित घटनाओं से उस समय की राजनैतिक परिस्थिति का ज्ञान तो होता ही है, साथ ही तत्कालीन भारत की दशा का बहुत कुछ हाल मालूम हो जाता है। पृष्ठ-संख्या सवा पाँच सौ से ऊपर। मूल्य सिर्फ़ ३॥) तीन रुपये आठ आने।

कर्मवाद और जन्मान्तर

यह उक्त पुस्तकमाला का ११ वाँ पुष्प है। इसके मूल-लेखक प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् बाबू हीरेन्द्रनाथ दत्त, एम० ए०, बी-एल्० वेदान्तरत्न हैं। आपकी पुस्तक का वङ्ग-भाषा-भाषियों में ख़ासा आदर हुआ है। इसमें लेखक ने, भारतीय और पाश्चात्य सभी, प्रामाणिक ग्रन्थों से प्रमाण देकर हिन्दू-सिद्धान्तों का प्रतिपादन 'थियासफ़ी' के ढँग पर किया है। पुस्तक में २३ अध्याय हैं जिनमें कर्मवाद की युक्ति, कर्म और कर्मफल, कर्म और धर्मनीति, व्यक्तिगत और जातिगत कर्म, दैव और पुरुषकार, कर्म की निवृत्ति, जन्मान्तर का प्रमाण, विवर्तनवाद और जन्मान्तर, सन्तति या उन्नति, आधिभौतिक या आध्यात्मिक, जन्मान्तर और जातिस्मर तथा जीव की उत्क्रान्ति और गतागति प्रभृति शीर्षकों में वर्ण्य विषय का प्रतिपादन किया गया है। इसके पढ़ने से कर्म के संबंध की बहुत-सी बातें मालूम होंगी और जन्मान्तर होने के विलक्षण उदाहरण देखने को मिलेंगे। पुस्तक अपने ढँग की बिलकुल नई है। पृष्ठ-संख्या पौने चार सौ से ऊपर। मूल्य केवल २॥) दो रुपये आठ आने।

मिलने का पता—मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप रहा है।

छप रहा है।

पूर्व मध्य-कालीन भारत

अन्धकार में पड़ी हुई कुछ ऐतिहासिक सत्यताओं का वैज्ञानिक दिग्दर्शन, यत्र-तत्र बिखरी हुई सामग्री की निरुक्ति, इतिवृत्तात्मक समस्याओं पर गवेषणापूर्ण विचार, हिन्दू-मुसलिम-सभ्यताओं का संमिश्रण, पूर्व मुसलिम-काल की राजनैतिक समीक्षा, धर्म का राजनीति पर प्रभाव, मुसलिम-जड़ जमानेवाले सुल्तानों के नैतिक चित्र, उनके आचार-विचार, रीति-नीति, आकांक्षाओं, सफलताओं तथा असफलताओं का विश्लेषण, आदि-आदि विषयों की विशद व्याख्या इस ग्रन्थ-रत्न की विशेषतायें हैं। श्रीमान् महाराजकुमार साहब श्रीरघुवीरसिंहजी बी० ए० एल्-एल्० बी० द्वारा लिखित यह ग्रन्थ धुरन्धर इतिहास-वेत्ताओं की कृतियों की समकक्षता रखता है। आज-कल मातृ-भाषा में ऐसे ग्रन्थ-रत्न दुर्लभ थे।

यह ग्रन्थ इंडियन प्रेस-द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित होगा। इसका मूल्य लेखक के आज्ञानुसार लागत-मात्र २॥) ढाई रुपया होगा।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-मंदिर, प्रयाग की पुस्तकें

हमारे यहाँ से मँगाइए

कविता-कौमुदी, पहला भाग—हिन्दी		३)
कविता-कौमुदी, दूसरा भाग—हिन्दी		३)
कविता-कौमुदी, तीसरा भाग—संस्कृत		३)
कविता-कौमुदी, चौथा भाग—उर्दू		३)
कविता-कौमुदी, पाँचवाँ भाग—ग्राम-गीत		३)
काश्मीर सचित्र	...	५)
भूषण-ग्रन्थावली सटीक	...	१)
पथिक-खंडकाव्य, सादा ।।) सचित्र सजिल्द		१)
मिलन—खण्डकाव्य	...	।।)
मानसी—कविताओं का संग्रह	...	।।)
स्वप्न—खण्डकाव्य	...	।।)
कुललक्ष्मी	सजिल्द	१।)
दम्पति-सुहृद्	...	१।)
सद्गुरु-रहस्य	...	२।।)
अयोध्याकांड सटीक	...	१)
बाल-कथा-कहानी—छः भाग, प्रत्येक का		।=)
दूज का चाँद	...	।।।)
हिन्दी-पद्य-रचना	...	।)
सुभद्रा	...	।।)
रहीम (संशोधित संस्करण)	...	।।)
नीति-शिक्षावली	...	।।)
प्रेम	...	।=)
रानी जयमती	...	।।।≡)
बालकों के लिए रीडरें चार भाग		=),≡),।–),।।)
कन्या-शिक्षावली चार भाग		–), =), ≡), ।)
हिन्दी-प्राइमर सचित्र	...	–)
इतना तो जानो	...	।।)
कौन जागता है ?	...	।।)
देश का दुःखी अंग	...	।)

सूचीपत्र मुफ़्त मँगा लीजिए

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-रसगङ्गाधर

सूर्यकुमारी-पुस्तकमाला का यह १३ वाँ पुष्प है। यह संस्कृत के उद्भट विद्वान् पण्डितराज जगन्नाथ के ग्रन्थ का हिन्दी-रूपान्तर है। इस ग्रन्थ को पढ़कर अब हिन्दी के पाठक भी पण्डितराज के पाण्डित्य का परिचय पा सकेंगे। इसमें उदाहरण के मूल श्लोक तो हैं ही, उनका रूपान्तर भी छन्दोबद्ध ही है। आरम्भ में, कोई १०६ पृष्ठों में, 'निवेदन', 'पण्डितराज का परिचय' और 'विषय-विवेचन' आदि हैं जिससे ग्रन्थ के समझने में ख़ासी सहायता मिलती है। पृष्ठ-संख्या सवा चार सौ। मूल्य सिर्फ़ ३॥) तीन रुपये आठ आने।

पुस्तक मँगाने का पता—

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें !

नई पुस्तकें !!

हिन्दी वैज्ञानिक शब्दावली

कोई ३० वर्ष हुए, काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने विद्वानों की एक समिति-द्वारा हिन्दी में भूगोल, खगोल, गणित, अर्थ-शास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायनशास्त्र और वेदान्त-विषयक पारिभाषिक शब्दों का संग्रह कराके 'हिन्दी वैज्ञानिक कोष' प्रकाशित किया था। तब से उल्लिखित विषयों में आशातीत उन्नति हुई और नये नये शब्दों की आवश्यकता होने लगी। इधर उक्त कोष भी अप्राप्य हो गया। इस दशा में 'सभा' ने काशी-हिन्दू-विश्व-विद्यालय के लब्धप्रतिष्ठ अध्यापकों की एक समिति-द्वारा इस हिन्दी वैज्ञानिक शब्दावली का सङ्कलन और सम्पादन कराया है। कहने की आवश्यकता नहीं कि वैज्ञानिक शब्दों का ऐसा उत्तम संग्रह भारतीय भाषाओं में उपलब्ध नहीं है। इसके दो खण्ड प्रकाशित हो गये हैं।

प्रथम खण्ड

भौतिक विज्ञान

का सङ्कलन काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय के, इसी विषय के, अध्यापक डाक्टर निहालकरण सेठी एम० ए०, डी० एस-सी० ने किया है। मूल्य ।।।) बारह आने।

द्वितीय खण्ड

रसायनशास्त्र

के सङ्कलनकर्ता भी उक्त विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान के अध्यापक श्रीयुक्त फूलदेव-सहाय वर्म्मा, एम० ए० हैं। इसका मूल्य ॥=) दस आने है।

तृतीय खण्ड प्रेस में है। शीघ्र प्रकाशित होगा।

पुस्तकें मिलने का पता—

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल नई चीज़ बिलकुल नई चीज़

बालक-बालिकाओं को उपहार में देने के लिए निराले ढङ्ग की पुस्तक।

सुन्दर और रङ्गीन छपाई तथा बहुत से उत्तमोत्तम चित्रों से सुशोभित।

शतदल कमल

(नाट्य गीत)

प्रणेता—पण्डित श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम० ए०, एल-टी० "श्रीवर"

हिन्दी में बालक-बालिकाओं के मनोरञ्जन के लिए आज तक जितनी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, उन सबसे यह उत्तम और बिलकुल नये और निराले ढंग की है। इसमें उनकी रुचि का ध्यान रख कर रंग-बिरंगे, फूलों, भिन्न भिन्न रंगों और 'मार्च' पर कवितायें लिखी गई हैं, जिन्हें बच्चे सामूहिक रूप से गा गाकर ख़ूब प्रसन्न होंगे। हर एक वस्तु के वर्णन के साथ ही साथ 'बैक ग्राउंड' पर उसका चित्र भी अङ्कित किया गया है, इससे पुस्तक की सुन्दरता और भी अधिक बढ़ गई है। सच बात तो यह है कि ऐसी सुन्दर, आकर्षक और मनोरञ्जक पुस्तक हिन्दी में आज तक एक भी नहीं प्रकाशित हुई है। जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में अपने पुत्रों तथा पुत्रियों को उपहार देने के लिए प्रत्येक माता-पिता को इसकी एक एक प्रति अवश्य ख़रीदनी चाहिए। मूल्य केवल २) दो रुपये।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तक ! नई पुस्तक !!

अँगरेज़ी स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए स्वर्ण संयोग

अँगरेज़ी भाषा की शिक्षा

(हिन्दी में अँगरेज़ी-व्याकरण अर्थात् प्रबन्ध-रचना-सम्बन्धी अनुपम पुस्तक)

(लेखक ई० एस० ओकली, एम० ए०)

अधिकांश अँगरेज़ी व्याकरण और निबन्ध रचना की पुस्तकें, जो स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं, अँगरेज़ी भाषा में लिखी गई हैं। इससे शिक्षार्थी पर दूना बोझ पड़ जाता है, और यह यूरोपीय देशों के साधारण व्यवहार के प्रतिकूल है जहाँ विदेशी भाषाओं का अध्ययन ऐसी पाठ्य-पुस्तकों द्वारा किया जाता है जो शिक्षार्थी की ही मातृभाषा में लिखी गई हों। इसी विचार से यह सारी पुस्तक हिन्दी में लिखी गई है। स्कूलों के विद्यार्थियों और घर पर अँगरेज़ी सीखनेवालों के लिए यह पुस्तक बड़ी उपयोगी है। सुन्दर कपड़े की जिल्द बँधी ३३८ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल २)

संस्कृत में निबन्ध-रचना का अपूर्व ग्रन्थ

प्रबन्ध-प्रकाशः

(लेखक डाक्टर मङ्गलदेव शास्त्री, एम० ए०, डी० फ़िल)

इस पुस्तक के प्रारम्भ में, एक बड़े प्रकरण में सरल संस्कृत भाषा में प्रबन्ध-रचना-सम्बन्धी सब नियमों आदि का विशेष वर्णन किया गया है। उसके पश्चात् उदाहरणरूप से सुप्रसिद्ध प्राचीन तथा आधुनिक विद्वानों के, तथा स्वयं ग्रन्थकार के भी लिखे हुए धर्म, धैर्य, उद्योग, मितव्ययता आदि कई परीक्षोपयोगी विषयों पर निबन्ध दिये गये हैं। पुस्तक के अन्त में चार प्रकरणों में गद्य-पद्यमय सुभाषित तथा लोकन्याय भी दिये गये हैं, जो निबन्ध-रचना के लिए बहुत उपयोगी हैं।

गवर्नमेंट-संस्कृत-कालेज बनारस के प्रिंसिपल तथा संस्कृत-परीक्षाओं के रजिस्ट्रार पण्डित गोपीनाथ कविराज एम० ए० ने इस पुस्तक की प्रशंसा में लिखा है—"..... सोऽयं वस्तुवैचित्र्येण गुम्फनसौष्ठवेन च श्लाघनीयां लेखसरणिं प्रदर्शयन् सचेतसां मनसि मोदमादधानो देवभाषायां रचना-पाटवमधिजिगमिषूणां विद्यार्थिनां भृशमुपकरिष्यतीति सम्भावयन्तो ग्रन्थस्यास्योपादेयत्वे श्रद्दधाना वयं शतशो धन्यवादैर्ग्रन्थकर्तृन् सम्मानयाम।

संस्कृत के परीक्षार्थियों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। मूल्य १)

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलनात्मक भाषा-शास्त्र

डाक्टर मङ्गलदेव शास्त्री, एम० ए०, डी० फ़िल-लिखित ।

हिन्दी में यही ऐसी पुस्तक है जिसमें वैज्ञानिक ढंग से संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी, अरबी, अँगरेज़ी, जर्मन, चीनी और तुर्की आदि भाषाओं के स्वरूप और सम्बन्ध का वर्णन है। जर्मन, अँगरेज़ी आदि भाषाओं में लिखी गई पुस्तकों के आधार पर, भारतीय विद्यार्थियों की आवश्यकता की दृष्टि से, इसकी रचना की गई है।

इसमें आधुनिक भाषाविज्ञान के साथ-साथ प्राचीन शिक्षा, व्याकरण और निरुक्त के अनेक दुरूह सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण है। हिन्दी और संस्कृत के, उच्च कक्षाओं के, विद्यार्थियों के लिए बड़े काम की पुस्तक है। प्रख्यात विद्वानों और प्रतिष्ठित पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने चार सौ के लगभग। मूल्य २॥=) दो रुपये दस आने।

वैद्यकौस्तुभ

भिषक्चूडामणि कविवर श्रीमेवाराम मिश्र प्रणीत

वैद्यकशास्त्र का लगभग ३०० वर्षों से अधिक प्राचीन यह अपूर्व ग्रन्थ अभी प्रथम वार प्रकाशित हुआ है। इसमें सब रोगों का निदान और चिकित्सा, रसादि का मारणादि और रस-चिकित्सा का विस्तृत वर्णन है। पुस्तक १६ सर्गों में है। इसको पढ़कर काव्य के आनन्द के साथ-साथ वैद्यकशास्त्र के अनुभूत योगों से लाभ उठाइए। प्रत्येक वैद्य, वैद्यक के छात्र और साहित्यरसिक विद्वानों को यह ग्रन्थरत्न अवश्य ही उपादेय है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तक ! नई पुस्तक !!

नीरोग कन्या

(लेखक—श्रीयुत सन्तराम बी० ए०)

राष्ट्रीय उत्थान का मूलमन्त्र है स्वस्थ, सदाचारी और सुशिक्षित नागरिकों की अधिकता और ऐसे सुयोग्य नागरिकों की अभिवृद्धि का दारोमदार है देश की कुलकमलाओं के स्वास्थ्य और सुशिक्षा पर। इसी लिए आप से अनुरोध है कि अपनी कन्याओं को छुटपन से ही स्वास्थ्य तथा सदाचार की शिक्षा देकर राष्ट्रीय उत्थान के सहायक बनिए। इस पुस्तक में जो जो बातें लिखी हैं, उनका अनुसरण करके लड़कियाँ तो अपना स्वास्थ्य सुधार ही सकती हैं, साथ ही परिपक्व अवस्था की स्त्रियाँ तथा पुरुष भी स्वास्थ्य-सम्बन्धी बहुत सी नवीन और उपयोगी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। पुस्तक कन्या-पाठशालाओं में पाठ्य-पुस्तक के रूप में पढ़ाई जाने के योग्य है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य १)

नई पुस्तक ! नई पुस्तक !!

गवर्नमेंट संस्कृत कालेज बनारस की प्रथम परीक्षा के लिए स्वीकृत

पञ्चतन्त्रम्

(पञ्चम तन्त्रम्)

इस पुस्तक के सम्पादक श्रीयुत हरिहर शास्त्री काशी-विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्यापक हैं। उन्होंने यह संस्करण विशेष रूप से परीक्षार्थियों के उपयोग के लिए तैयार किया है। पुस्तक के आदि में मूल-ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है और बाद को २६ पृष्ठों में संस्कृत में टिप्पणियाँ प्रकाशित की हैं, जिनमें आवश्यकतानुसार बड़े बड़े शब्दों के समास, प्रतिशब्द, श्लोकों तथा कथाओं के सारांश आदि दिये गये हैं। अन्त में हिन्दी-अनुवाद भी प्रकाशित किया गया है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य ।।) आठ आने।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता-कहानी, नाटक और उपन्यास

संक्षिप्त सूरसागर—इसमें महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है। इसका एक एक पद भक्ति तथा प्रेम के रस से ओतप्रोत है। मूल्य २॥)

संक्षिप्त बिहारी—महाकवि बिहारी के दोहों का यह बहुत अच्छा संस्करण है। बिहारी की सतसई में जितने अधिक अश्लील दोहे थे, वे छाँट कर इसमें से निकाल दिये गये हैं। मूल्य १॥)

गङ्गावतरण—हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्रीयुत जगन्नाथदास रत्नाकर का लिखा हुआ यह एक खण्ड-काव्य है। संयुक्त प्रान्त की हिन्दुस्तानी एकाडमी ने इसकी उत्तमता पर मुग्ध होकर रत्नाकरजी को ५००) का पुरस्कार दिया है। मूल्य १)

माधवी—यह ठाकुर गोपालशरणसिंह के चुने हुए कवित्तों का संग्रह है। ठाकुर साहब ने खड़ी बोली की कविता करने में कितनी सफलता प्राप्त की है, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। शुद्ध खड़ी बोली में कवित्तों का प्रवर्तन ठाकुर साहब ने ही किया है। मूल्य १॥)

भारतेन्दु नाटकावली—वर्तमान हिन्दी के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों का यह संग्रह है। पुस्तक के आदि में एक विस्तृत भूमिका है, जिसमें भारतेन्दुजी की जीवनी और उनकी रचनाओं की विशेषता पर प्रकाश डाला गया है। मूल्य ३॥)

गौरमोहन—यह रवीन्द्र बाबू के सुप्रसिद्ध उपन्यास गोरा का हिन्दी अनुवाद है। रवीन्द्र बाबू के उपन्यासों में यह सर्वश्रेष्ठ समझा जाता है। पुस्तक दो भागों में है। मूल्य ४)

राजर्षि—यह भी रवीन्द्र बाबू के इसी नाम के बँगला उपन्यास का अनुवाद है। इसका कथानक ऐसा रोचक और शिक्षाप्रद है कि इसे पढ़ते पढ़ते हृदय की सारी दुर्भावनायें दूर हो जाती हैं, हिंसा-द्वेष की बातों पर घृणा होने लगती है और एक निश्चल प्रेम का भाव उमड़ आता है। मूल्य १।)

गल्पगुच्छ—इसमें रवीन्द्र बाबू की छोटी छोटी कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ कितनी सुन्दर और भावपूर्ण हैं, इसके सम्बन्ध में लेखक का नाम ही यथेष्ट है। पुस्तक चार भागों में विभक्त है। प्रथम भाग का मूल्य ।॥) बारह आने हैं और शेष तीन भागों में से हर एक का १) एक रुपया है।

तीर्थयात्रा—यह सुदर्शनजी की चुनी हुई कहानियों का संग्रह है। जिन लोगों ने सुदर्शनजी की कहानियाँ पढ़ी हैं, वे उनकी रचना-शैली पर मुग्ध हैं। मूल्य २)

लेनदेन—शरद् बाबू के बँगला उपन्यास का अनुवाद है। उपन्यास की प्रशंसा के सम्बन्ध में शरद् बाबू का नाम ही यथेष्ट है। मूल्य २)

पण्डितजी—यह शरद् बाबू के मास्टर साहब का अनुवाद है। इसमें कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी तरक्की, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद और रोचक विवेचना की गई है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

देहाती समाज—शरद् बाबू के इस उपन्यास में ग्राम्य जीवन का जैसा सुन्दर और रोचक वर्णन है वैसा शायद और कहीं भी न मिल सके। यह उपन्यास लेखक की अमर कीर्ति है। मूल्य २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहू-बेटियों के उपहार में देने लायक पुस्तकें

आदर्श महिला—इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव वर्णन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

सीता-वनवास—श्रीसीताजी के पावन चरित के सम्बन्ध में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने बँगला में एक बहुत ही सुन्दर पुस्तक लिखी थी, उसी का यह अनुवाद है। इस पुस्तक की एक एक पंक्ति करुण-रस से ओतप्रोत है। मूल्य ॥=)

बड़ी दीदी—यह पुस्तक शरद् बाबू के बँगला उपन्यास का अनुवाद है। इसमें एक हिन्दू-विधवा की करुण-कथा का वर्णन है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १)

शिशु-पालन—यह पुस्तक स्त्रियों के बड़े काम की है। इसमें प्रसूति-चर्या से लेकर बच्चों के पालन-पोषण के सम्बन्ध की सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है। मूल्य १॥)

नीरोग कन्या—यह पुस्तक स्वास्थ्य-सुधार के सम्बन्ध में है। इसे पढ़ कर कन्याओं को तो अपना स्वास्थ्य सुधारने में सहायता मिलती ही है, साथ ही बड़ी और परिपक्व अवस्था की स्त्रियों के लिए भी यह लाभदायक है। मूल्य १)

परिणीता, नवविधान, अरक्षणीया तथा मझली दीदी आदि भी—शरद् बाबू के सुन्दर उपन्यासों में हैं। ये उपन्यास क्या हैं, हिन्दू समाज के जीते जागते चित्र हैं। इन्हें पढ़ते ही समाज की सारी कुरीतियाँ आँखों के सामने नाचने लगती हैं और उनका सुधार करने के लिए हृदय व्यग्र हो जाता है। प्रत्येक उपन्यास-प्रेमी को ॥) प्रवेश-शुल्क भेज कर शरद्-ग्रन्थावली का स्थायी ग्राहक बनना चाहिए। इस प्रकार इस ग्रन्थावली के सभी उपन्यास पौने मूल्य में मिल सकेंगे।

मैनेजर (बुकडिपो),

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग की कुछ उत्तमोत्तम पुस्तकें

यों तो हमारे यहाँ की सभी पुस्तकें उत्तम और उपयोगी हैं, परन्तु उनमें से कुछ ऐसी हैं, जो हर एक हिन्दी भाषा-भाषी के लिए उपयोगी हैं, और जिनका प्रचार घर घर में होना आवश्यक है। पाठकों की सुविधा के लिए यहाँ हम कुछ ऐसी ही पुस्तकों की नामावली दे रहे हैं।

धार्मिक पुस्तकें

सचित्र हिन्दी-महाभारत—महाभारत हिन्दूसंस्कृति का सच्चा स्वरूप है। हिन्दूधर्म से सम्बन्ध रखनेवाली सभी बातों का इसमें वर्णन है। रंग-बिरंगे और भावपूर्ण चित्रों की भरमार है। अब तक इसके २८ अङ्क प्रकाशित हो चुके हैं। प्रति अङ्क का मूल्य १।) और स्थाई ग्राहकों से १)

हिन्दी-महाभारत—महाभारत के अठारह पर्वों की कथा इसमें संक्षेप में लिखी गई है। भाषा बहुत सरल, सरस और हृदयग्राही है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४)

महाभारत-मीमांसा—महाभारत पढ़ते समय पाठकों के हृदय में जो जो शङ्कायें उत्पन्न होती हैं, इस पुस्तक में उन्हीं का समाधान किया गया है। महाभारत पढ़ने से पहले यह पुस्तक अवश्य पढ़ लेनी चाहिए। मूल्य ४) महाभारत के ग्राहकों से केवल २॥)

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण—यह आदिकवि वाल्मीकि के रामायण का हिन्दी अनुवाद है। मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी के चरित के सम्बन्ध में यही सबसे प्रामाणिक ग्रन्थ है। मूल्य १०)

रामचरितमानस (सटीक)—रामचरित मानस का यह संस्करण काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा के प्रतिष्ठित सदस्यों द्वारा शुद्ध कराकर प्रकाशित किया गया है। रामचरित-मानस के जितने संस्करण आजकल मिलते हैं, यह उनमें सबसे अधिक प्रामाणिक है। टीका भी सरल है। मूल्य ६)

विनयपत्रिका (सटीक)—गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं में विनय-पत्रिका का स्थान बहुत उच्च है। इसमें गोस्वामीजी के विनय-सम्बन्धी पदों का संग्रह है। इसके टीकाकार हैं पण्डित रामेश्वर भट्ट। मूल्य ३)

ज्ञानयोग—इस पुस्तक में स्वामी विवेकानन्दजी के ज्ञानयोग-सम्बन्धी उन व्याख्यानों का संग्रह किया गया है जो उन्होंने योरप तथा अमेरिका में दिये थे। पुस्तक क्या है, सारे उपनिषदों तथा वेदान्त का सार है। पुस्तक दो खण्डों में विभक्त है और प्रत्येक खण्ड का मूल्य २॥) है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें ! नई पुस्तकें !!

बालक-बालिकाओं के लिए

वाल्मीकि

हिन्दुओं का विश्वास है कि रामनाम का जप करने और राम का गुणगान करने से मनुष्य अनेक जन्म के पापों से छुटकारा पा जाता है। वाल्मीकि इस बात के सबसे बड़े उदाहरण हैं। जीवन के प्रारम्भिक काल में डाका डालना तथा निरपराध प्राणियों की हत्या करना ही इनका मुख्य काम था, परन्तु आगे चल कर ये ही राम-नाम के प्रभाव से एक बड़े भारी ऋषि हो गये और जन-साधारण में राम-नाम का प्रचार करने के लिए रामायण नामक महा-काव्य की रचना की, जो संसार के साहित्य में अक्षय एवं अमूल्यरत्न है। इन्हीं महात्मा की जीवनी का घर घर प्रचार करने के लिए यह पुस्तक बड़ी ही सरल और रोचक भाषा में प्रकाशित की गई है। मूल्य ।) आना।

बाल-कविता-माला

श्री पं० देवीदत्त शुक्ल बच्चों की रुचि को खूब पहचानते हैं क्योंकि वर्षों आप बाल-सखा के सम्पादक रह चुके हैं। इस पुस्तक में आपने ऐसी बढ़िया बढ़िया कवितायें लिखी हैं जिन्हें पढ़ते ही हँसी रोके नहीं रुकती। पुस्तक सचित्र और बच्चों के लिए लाजवाब है। मूल्य केवल ।=) आने।

पकौड़ीवाली

इस पुस्तक में छोटे बच्चों के लायक बड़ी ही मनोरञ्जक कहानियों का संग्रह किया गया है। इसके रचयिता हैं सरस्वती-सम्पादक पण्डित देवीदत्त शुक्ल। लगातार कई वर्ष तक बाल-सखा का सम्पादन करने से शुक्लजी को बालक-बालिकाओं की रुचि का अच्छा अनुभव हुआ है और उनके लिए उपयोगी साहित्य की रचना करने में आप सिद्धहस्त हैं। यही कारण है कि 'बाल-कविता-माला' की भाँति उनकी यह पुस्तक भी बहुत ही सरल, सरस तथा उप-योगी है। मूल्य केवल ।=) आने।

राजकहानी

इस पुस्तक में राजपूतों के समय की कुछ रोचक और वीरता-पूर्ण कहानियों का संग्रह है। जिन जिन वीरों तथा वीराङ्ग-नाओं के जीवन के आधार पर इन कहा-नियों की रचना हुई है उनके अद्भुत परा-क्रम की याद आते ही भारतवासियों का हृदय देशभक्ति के भाव से ओत-प्रोत हो जाता है। भाषा बहुत ही सरल और मधुर है। मूल्य केवल ।=)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहेली

१–जब आप घर के बाहर—
चले जाते हैं तो अकेली स्त्री के बिना किसी मनोरंजन के दिन नहीं कटते। ऐसे समय में 'सहेली' सच्ची सहेली का काम देती है।

२–सहेली स्त्रियों की पत्रिका है—
स्त्री जाति ही नहीं, स्त्री-शिक्षा प्रेमियों तक के हृदय में इसने एक विशेष स्थान बना लिया है। भारत के प्रत्येक प्रान्त से, सुदूरवर्ती विलायत तक से एक-स्वर से स्त्रियों के लिए यह सबसे बढ़िया पत्रिका स्वीकार की जा चुकी है।

३–सहेली देखने में सुंदर—
इतनी है कि आश्चर्य होता है। सुन्दर गेट-अप, नियमित प्रकाशन, बढ़िया छपाई-सफ़ाई-काग़ज़, मनमोहक चित्र, कोई भी चीज़ देखिए, सभी में सहेली बेजोड़ मिलेगी।

४–अन्य पत्रिकाओं से कुछ फ़र्क—
मालूम होता है। स्त्री-समाज की इस पहली पत्रिका—सहेली के टक्कर की कोई भी पत्रिका वर्तमान समय में नहीं निकल रही है, न आज तक निकली थी और न निकट भविष्य में निकलने की आशा है, जिसका स्त्री उद्धार की ओर ध्यान हो और जो हमारे घरों में बहनों, बेटियों तथा बहुओं के हाथों में निःसङ्कोच रूप से दी जा सके।

५–सभी अच्छी चीज़ चाहते हैं—
सहेली देखने से आप को पता चलेगा कि यह स्त्री-समाज में नये रंग, नये रूप से निकलनेवाली अप-टू-डेट सबसे बढ़िया पत्रिका है। स्त्रियोपयोगी मनमोहक गाथाएँ व लेख एवं उन्नतिकारी सामाजिक और रुचिकर राष्ट्रीय विचार, सब में सहेली सानी नहीं रखती।

क्या कोई पत्रिका मँगाना चाहते हैं ?

अदि आप अपने परिवार के लिए कोई पत्रिका नहीं मँगाते तो तुरंत मँगाना शुरू कर दीजिए, परन्तु सोच समझ कर मँगाइए। कहीं ऐसा न हो वह आपके आदर्श परिवार के लिए अहितकर सिद्ध हो क्योंकि अनुचित साहित्य से सुधार के स्थान में बिगाड़ हो जाता है। पत्रिका ऐसी होनी चाहिए जो आप को, आप की बहू-बेटियों को, आप के बच्चों को कलुषित विचारों से दूर रक्खे, पवित्र भावों को भरे तथा आपके परिवार का मनोरंजन करते हुए सब गुणों को विकसित करे—सभी की इच्छाएँ पूरी करे।

कहना व्यर्थ है कि सहेली ऐसी ही पत्रिकाओं में है जिसकी धाक भारतीय परिवार मानता है क्योंकि एक मात्र 'सहेली' से आप के परिवार में पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों सभी की इच्छाएँ पूरी होती हैं। इसका उपयोग घर भर कर सकता है। एक मात्र यही एक पत्रिका है जिसके द्वारा सभी शिक्षित स्त्रियाँ उपयोगी लेखों द्वारा अपने विचारों को घर के भीतर पर्दे में बन्द स्त्रियों तक पहुँचाती हैं।

सहेली मँगाइए क्योंकि आप के परिवार में इसकी बड़ी ज़रूरत है।

भारतीय परिवार के लिए कोई भी पत्रिका इतनी अच्छी नहीं है, जितनी कि 'सहेली'। सहेली की उपयोगिता और ऊपर से डेढ़ रुपये मूल्य का मुफ़्ती उपहार देखकर वार्षिक चंदा ५) आप को कुछ भी नहीं मालूम होगा। आज ही ग्राहक बनने के लिए पत्र लिख दीजिए

पता—सरस्वती-सदन ५, प्रयाग स्ट्रीट, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुग का प्रवाह किधर है ?

इसका सभी एक ही उत्तर देंगे—

कि नये काव्य, नई कला और नई कल्पना-शक्ति के अद्भुत चमत्कार में।

क्या कोई भी यह मानने से इनकार कर सकता है कि हिन्दी-संसार में श्रीयुत सुदर्शनजी ने नवयुग के प्रवाह को नहीं बढ़ाया है। कौन यह मानने को तैयार है कि उनकी कहानियों ने मानव-भावों के चित्रण करने में जादू का-सा काम नहीं किया। हाँ ज़रूरत है एक बार उनकी ललित कृतियों के पढ़ने की।

सुदर्शनसुधा

इस पुस्तक की मनोरंजक, भावपूर्ण कहानियाँ पढ़कर आँखें खुल जाती हैं। एक एक कहानी की अद्भुत प्रतिभा, मोहिनी शक्ति, उच्च भाव, उज्ज्वल विचार देख कर दङ्ग रह जाना पड़ता है। मूल्य केवल २) दो रुपये।

तीर्थयात्रा

दुनिया को दिखलानेवाली बहुत-सी कहानियाँ हैं। पर यदि दिल को और घर को देखना है तो इस पुस्तक की कहानियाँ पढ़िए। मनोरंजन के साथ साथ मानव-जीवन का पाठ सीखिए। मूल्य २) दो रुपये।

रुस्तम-सोहराब

यह एक संसार-प्रसिद्ध पिता-पुत्र की अद्भुत वीरता की सच्ची घटना है जो बालकों के लायक़ बड़ी सरल और रोचक भाषा में लिखी गई है। पुस्तक पढ़ने लायक़ है। मूल्य ॥=) आने।

फूलवती

एक भाव-पूर्ण कहानी है। बालकों के लिए तो शायद ही कोई ऐसी रोचक, शिक्षाप्रद एवं सरस कहानी अब तक लिखी गई हो। सचित्र पुस्तक का मूल्य ॥=) दस आने।

आनरेरी मजिस्ट्रेट

बहुत ही विनोदपूर्ण रङ्गमञ्च पर खेलने लायक़ लाजवाब नया प्रहसन है। एक प्रति का मूल्य केवल ॥=) दस आने।

परिवर्त्तन

में है योरप की विलास-प्रिय युवतियों का माया-जाल और भारतीय पवित्र दाम्पत्य-जीवन का सुमधुर, त्यागमय, अद्भुत प्रभाव। मूल्य ॥) आठ आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने देश को समृद्ध तथा वैभवशाली बनाने के लिए संसार के भिन्न-भिन्न देशों की सामाजिक, राजनैतिक तथा व्यापारिक स्थिति तथा उनकी प्राकृतिक दशा का अध्ययन करने की बड़ी आवश्यकता है।

भू-प्रदक्षिणा

के द्वारा आप इन सब बातों की जानकारी घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं। इसके मूल-लेखक श्रीयुत चन्द्रशेखर सेन बैरिस्टर ने कई वर्ष के कठिन परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की है। उन्होंने जो कुछ लिखा है, स्वयं उसका अनुभव किया है, और जिस स्थान या वस्तु का वर्णन किया है, उसे अपनी आँखों से देखकर किया है, यही कारण है कि पुस्तक इतनी उपयोगी और महत्त्वपूर्ण बन सकी है।

यदि देश-विदेश की बातें पढ़कर व्यवहार-कुशलता और चतुरता प्राप्त करनी हो तो इस अमूल्य पुस्तक को मँगाकर अवश्य पढ़िए और थोड़े व्यय में अपूर्व मनोरञ्जन तथा साथ ही साथ ज्ञान-सञ्चय भी कीजिए।

पृष्ठ-संख्या ७८०, चित्र-संख्या ३७, मनोरम जिल्द, मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

मैनेजर—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्रुपद-स्वर-लिपि

अपने ढङ्ग का एक अनुपम और अनूठा ग्रन्थ है।
हिन्दी में सङ्गीत-सम्बन्धी एक भी
ऐसा ग्रन्थ नहीं है जो इससे
टक्कर ले सके।

इसके प्रणेता—

काशी-निवासी श्रीयुत हरिनारायण मुकुर्जी
(रसूलबख़्श घराने के अन्तिम प्रतिनिधि)

सङ्गीत के एक प्रसिद्ध तथा धुरन्धर विद्वान् हैं।
विशेषतः ध्रुपद में तो आप अपना
सानी नहीं रखते।

ध्रुपद-स्वर-लिपि—साधारण नौसिखियों के लिए तो उपयोगी है ही, साथ ही इसके द्वारा व्यवसायी गवैयों तथा संगीत-सम्बन्धी पुस्तकों के प्रणेताओं को भी यथेष्ट सहायता मिलती है।

मूल्य साधारण संस्करण का ६) रुपये
और राजसंस्करण का १२) रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरप के इतिहास का अध्ययन करना विशेष आवश्यक इसलिए है कि—

भारत के प्रायः अधिकांश नेता यहाँ प्रजासत्तात्मक शासन-प्रणाली स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं, किन्तु भारतीय समाज की वर्त्तमान प्रकृति का पालन-पोषण ऐसे वातावरण में हुआ है जो एकाधिपत्य-प्रधान शासन-पद्धति के अधिक अनुकूल है। ऐसी अवस्था में हमें उन उपायों का अवलम्बन बड़ी तत्परता के साथ अङ्गीकार करना पड़ेगा, जो इस देश के जन-समूह में नूतन जागृति का सञ्चार कर सकें। हमें ऐसा यत्न करना चाहिए कि भारतवर्ष का प्रत्येक व्यक्ति इस बात को अच्छी तरह समझ जाय कि शासक-गण ईश्वर-द्वारा निर्दिष्ट नहीं किये जाते, बल्कि अनेक व्यक्तियों की सामूहिक सम्मति शासकों को अधिकार प्रदान करती है, और वही उनसे अधिकार छीन भी सकती है। इस प्रकार का मनोभाव उत्पन्न करने का एक प्रधान साधन है ऐसे देशों के इतिहास का प्रचार जिनमें प्रजा-सत्तात्मक शासन-प्रणाली का क्रमशः विकास हुआ है। कहने की आवश्यकता नहीं कि योरप के अधिकांश देशों के इतिहास में हमें एकाधिपत्य के पतन और जनसत्ता के उत्थान की कथा अङ्कित मिलती है। ऐसी दशा में योरप के इतिहास के पठन-पाठन से भारतीय जन-समूह के विचारों में वाञ्छनीय क्रान्ति होने की आशा है।

प्रसिद्ध इतिहास-वेत्ता और हिन्दी के सुलेखक भाई परमानन्द
एम० ए० द्वारा लिखित—

योरप का इतिहास

हिन्दी-भाषी जनता के लिए बहुत ही उपयोगी है। सारी पुस्तक बहुत ही प्राञ्जल तथा ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है। भारत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा सामयिक पत्रों ने इस ग्रन्थ की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। ऐसा उपयोगी ग्रन्थ मँगा कर अपना तथा मित्रों एवं कुटुम्बियों के विचार परिमार्जित कर मातृभूमि की सेवा के योग्य बनिए। **लगभग ७०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ४) चार रुपये।**

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौर्य-साम्राज्य का इतिहास

भारतवर्ष के इतिहास में **मौर्य-साम्राज्य का** विशेष महत्त्व है। इसके संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के सम्बन्ध में स्मिथ साहब ने लिखा है कि भारत के प्रथम सम्राट् (चन्द्रगुप्त मौर्य) ने उस वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त किया था जिसके लिए ब्रिटिश उत्तराधिकारी व्यर्थ में आहें भरते हैं और जिसको सोलहवीं और सत्तरहवीं सदी के मुग़ल-सम्राटों ने भी कभी पूर्णता के साथ नहीं प्राप्त किया।

ऐसे महत्त्वपूर्ण युग का क्रमबद्ध तथा प्रामाणिक इतिहास हिन्दी में क्या अँगरेज़ी में भी अभी तक प्राप्य नहीं था। हर्ष का विषय है कि गुरुकुल काँगड़ी के स्नातक तथा इतिहास के प्रोफ़ेसर **श्रीयुत सत्यकेतु विद्यालङ्कार** ने इस कमी को पूरा कर दिया है।

यह पुस्तक संस्कृत, पाली, प्राकृत, अँगरेज़ी आदि भाषाओं के कितने ही प्रामाणिक तथा महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थों का मन्थन करके लिखी गई है। भारतीय पुरातत्त्व-विभाग से छाँट कर इसमें कई प्रामाणिक तथा नयनाभिराम चित्र भी प्रकाशित किये गये हैं।

इसकी मौलिकता तथा प्रामाणिकता पर मुग्ध होकर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने लेखक को अपने गोरखपुर के अधिवेशन में १२,०००) रुपये का मंगलाप्रसाद-पारितोषिक प्रदान किया है।

सचित्र पुस्तक का मूल्य ५)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तक ! नई पुस्तक !!

राधाकृष्ण-ग्रन्थावली

पहला खण्ड

इसमें भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के फुफेरे भाई स्वर्गवासी बाबू राधाकृष्णदास की कविताओं, लेखों, जीवनचरितों और नाटकों का संग्रह है। यह सब सामग्री अब तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकादि में बिखरी हुई थी। इसमें बहुत सा ऐसा भी मसाला है जो अब अप्राप्य हो रहा था किन्तु जिसकी आवश्यकता थी। इसे एकत्र करके उक्त बाबू साहब के सुहृद् राय साहब बाबू श्यामसुन्दर-दासजी बी० ए० ने यह रूप प्रदान किया है। हिन्दी के अभ्युदय-काल के इन प्रमुख लेखक की रचनाओं को अपनाकर सर्वसाधारण को इनका समादर करना चाहिए। पुस्तक डिमाई साईज़ के सवा आठ सौ पृष्ठों में बहुत अच्छे काग़ज़ पर छापी गई है। अच्छी जिल्द बँधी हुई है। फिर भी मूल्य सिर्फ़ ३) तीन रुपये।

संक्षिप्त बिहारी

लेखक श्रीयुत रमाशङ्करप्रसाद एम० ए०, एल-एल० बी०

इस बिहारी-टीका में एक यही बहुत बड़ी विशेषता है कि विवाहित, अविवाहित विद्यार्थी, स्त्री, पुरुष सभी इसे बिना किसी हिचकिचाहट के पढ़ सकते हैं। अर्थ भी इतना सरल, स्पष्ट और मधुर भाषा में लिखा गया है कि किसी से पूछना नहीं पड़ता और बड़ा आनन्द आता है। जो पाठक अश्लीलता के संकोच से अब तक बिहारी के दोहों को नहीं पढ़ते थे उन्हें यह पुस्तक मँगाकर अवश्य प्रसिद्ध कवि की कृति का रसास्वादन करना चाहिए। पुस्तक बड़े अच्छे ढङ्ग से अर्थ-विस्तार के साथ लिखी गई है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीति की गम्भीर एवं गूढ़ातिगूढ़ समस्याओं को सुलझाने तथा राज्य के स्वरूप एवं उसकी सुव्यवस्था का ज्ञान प्राप्त करने का सबसे अच्छा साधन है इस विषय के उत्तमोत्तम और प्रामाणिक ग्रन्थों का अध्ययन करना।

राज्य-विज्ञान

इस पुस्तक में राज्य-सम्बन्धी विषयों की विवेचना बहुत ही उपयोगी, सरल और सामयिक ढङ्ग से की गई है। राज्य की भिन्न भिन्न समस्यायें, उसके प्रति नागरिकों के कर्तव्य तथा उसकी सुव्यवस्था और शासन-प्रणाली आदि की इसमें विद्वत्तापूर्ण विवेचना की गई है। यह पुस्तक प्रत्येक भारतीय के पढ़ने के योग्य है। ४१३ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २)

कौटिलीय अर्थशास्त्र-मीमांसा

अर्थशास्त्र के विश्वविख्यात पण्डित तथा कुशल राजनैतिक चाणक्य के द्वारा रचित "अर्थशास्त्र" के एक अंश—राज्यशासन-व्यवस्था—की इसमें सरल रूप से आलोचनात्मक विवेचना की गई है। इस विषय के कई उपयोगी लेख भी परिशिष्ट रूप से इस ग्रन्थ के साथ जोड़ दिये गये हैं। आधुनिक कूटनीति, राजनीति तथा शासन-व्यवस्था की प्रत्येक महत्त्वपूर्ण बातें इसमें दी गई हैं। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

मौलिकता

लेखक गोपाल दामोदर तामसकर, एम० ए० एल० टी०।

लोगों में मौलिकता के विषय में बहुत काल से वादविवाद चला आ रहा है और इस विषय में अब तक बड़ा मतभेद बना है। इस पुस्तक में लेखक ने तीन बहुत उपयोगी लेख लिखे हैं जो सभी के विशेषकर जो मौलिक मौलिक चिल्लाते हैं उनके पढ़ने लायक हैं। १—मौलिकता का अर्थ, २—मौलिकता का अभाव और उसे दूर करने के उपाय, ३—मौलिकता का महत्त्व। हर-एक को पुस्तक पढ़नी चाहिए। मूल्य केवल ।) चार आने।

राजा दिलीप-नाटक

यह एक पौराणिक नाटक है। इसमें रघुवंश में वर्णित राजा दिलीप की सन्तति-सम्बन्धी कथा, उनकी भावनाओं और कार्यों को नाटक-रूप में बड़े सुन्दर ढङ्ग से लिखा गया है। गो-माता-सम्बन्धी भावनायें देखते ही बनती हैं। ऐसे नाटकों से जिनसे कि हिन्दी-साहित्य की वृद्धि के साथ-साथ धार्मिक भावों को उत्तेजना मिले, कुरुचि-पूर्ण वासनायें सुरुचि में बदल जावें, हैं ही नहीं। प्रत्येक नाटक-मंडली को एक बार इसे अपनी स्टेज पर खेलना चाहिए। मूल्य सचित्र पुस्तक का केवल १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस और भावपूर्ण कविताय

वीणा

यह श्रीयुत सुमित्रानन्दन पन्त की उत्तमोत्तम कविताओं का संग्रह है। पन्तजी की रचनायें हिन्दी में अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं; अतएव इनका परिचय देना व्यर्थ है। यदि आप अनूठी और भावपूर्ण कविताओं का रसास्वादन करना चाहते हैं, तो आज ही एक पत्र लिख कर मँगा लीजिए। मूल्य १)

माधवी

इसमें श्रीयुत ठाकुर गोपालशरण-सिंह की बोल-चाल की भाषा में लिखी हुई लगभग साढ़े तीन सौ कविताओं का संग्रह है। प्रत्येक छन्द में कवित्व है और वह अपने निरालेपन की छाप रखता है। पुस्तक की उत्तमता के लिए ठाकुर साहब का नाम ही यथेष्ट है। मूल्य १॥)

गङ्गावतरण

[सचित्र काव्य]

इस काव्य में १३ सर्ग हैं। व्रजभाषा के लब्धप्रतिष्ठ सुकवि बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर", बी० ए० ने बड़े विचित्र हृदयग्राही ५६६ छन्दों में, धराधाम पर पतितपावनी श्रीगङ्गाजी के लाये जाने के कथानक का मनोहर वर्णन बड़े अच्छे ढङ्ग से किया है। "पावनि-सरजू-तीर अवध-पुरि" के राजा सगर से कथानक का आरम्भ करके उनके साठ हज़ार पुत्र उत्पन्न होने और फिर राजा के अश्वमेध की दीक्षा लेकर यज्ञ के घोड़े को छोड़ने का वर्णन है। सारी पुस्तक काव्य के उत्तमोत्तम गुणों से अलंकृत है। सचित्र, सजिल्द ।॥) आने। राज-संस्करण १)।

बुद्ध-चरित्र

यह अँगरेज़ी के प्रसिद्ध कवि सर एडविन आर्नल्ड के "लाइट आफ़ एशिया" के आधार पर स्वतन्त्र ललित काव्य है। प्रायः शब्द भी वही रखे गये हैं जो बौद्ध-शास्त्रों में व्यवहृत होते हैं। कविता बहुत ही मनोहर, मधुर और सरस है जिसे पढ़ते ही चित्त प्रसन्न हो जाता है। भूमिका में व्रज और अवधी भाषा पर बड़ी मार्मिकता से विचार किया गया है, जिसकी बड़े बड़े विद्वानों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। दो रङ्गीन और चार सादे चित्र भी दिये गये हैं जिनमें दो सहस्र वर्ष पहले के दृश्य दिखलाये गये हैं। मूल्य केवल २॥) ढाई रुपया।

ग्रन्थि

श्रीयुत सुमित्रानन्दन पन्त

जिन सज्जनों को पन्तजी की सरस तथा भावपूर्ण रचनाओं का रसास्वादन करने का अवसर मिला है, वे उनकी अद्भुत कल्पना-शक्ति तथा अलौकिक प्रतिभा पर मुग्ध हैं। उनकी उत्तम कृतियों में ग्रन्थि का अपना स्थान है। मूल्य ।॥) बारह आने है।

सरस-सुमन

श्रीयुत ठाकुर गुरुभक्तसिंह

बी० ए०, एल-एल० बी०

पवन, भानु, चपला, जुगनू आदि पर यदि अनूठी मनोहारिणी कवितायें पढ़नी हैं तो सरस-सुमन मँगाकर पढ़िए। तबीयत ख़ुश हो जायगी। मूल्य ।।)

मैनेजर (बिक्रीपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग ३२, खण्ड १] अप्रैल १९३१ [सं० ४, पूर्ण-संख्या

वार्षिक मूल्य ६॥)] सम्पादक—देवीदत्त शुक्ल [प्रति संख्या ॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामिनिया ऑईल (रजिस्टर्ड)

[illegible] बालों का जीवन

इसमें श्रीयुत ठाकुर [illegible] बाल दिये हैं, सिंह की बोल-चाल की भाषा [illegible] देख-भाल करने हुई लगभग साढ़े तीन सौ कवित [illegible] देख-भाल करने संग्रह है। प्रत्येक छन्द में [illegible] करते हैं! और वह अपने [illegible] परन्तु उनका ख्याल नहीं रहता कि कौन सा तेल फ़ायदा पहुँचाने की ताक़त रखता है। अन्य क़िस्म के तेल बजाय फ़ायदा के नुक़सान पहुँचा देते हैं जिससे बाल गिरने लगते हैं। इसके लिए

कामिनिया ऑईल (रजिस्टर्ड)

बालों की जड़ को पोषण देकर बाल उगाने में मदद देनेवाला अमूल्य वनस्पतियुक्त तत्त्व से तैयार किया गया अत्यन्त उमदा व दिलखुश तेल है! बाल और दिमाग़ के लिए इससे मुफ़ीद दूसरा कोई तेल तलाश करने पर भी आपको न मिलेगा। लाखों आदमी हमेशा इस्तेमाल करते हैं। आप भी आज ही इस्तेमाल कर आज़माइश कर लेवें।

मूल्य प्रति शीशी १) रु० डाकख़र्च ।=) अलग
तीन शीशी २॥=) डाकख़र्च ।॥) अलग

वीणा

यह श्रीयुत सुमित्रानन्दन पन्त की उत्तमोत्तम कविताओं का संग्रह है। पन्तजी की रचनायें हिन्दी में अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं; अतएव इनका परिचय देना व्यर्थ है। यदि आप अनूठी

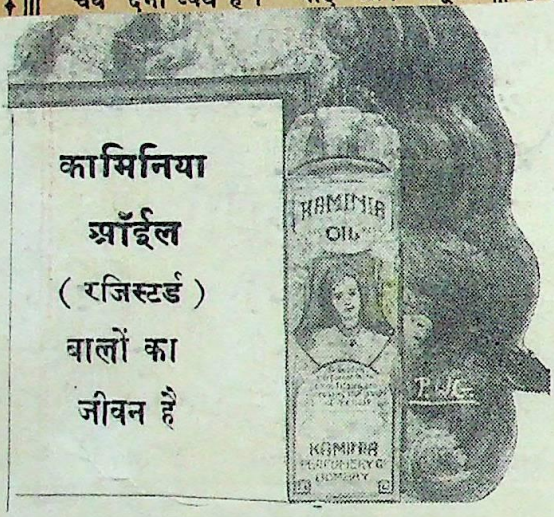

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

पूर्वीय देशों का एक सुप्रसिद्ध सुगन्धित तोहफ़ा

जिन सज्जनों ने इसका व्यवहार किया है, उन्होंने मुक्तकंठ से इसकी प्रशंसा की है कि यदि बाज़ार में कोई अच्छा इत्र है तो यही है। इसमें स्पिरिट नहीं रहता। चन्द बूँद अपने रूमाल पर छिड़क लीजिये, फिर इसकी आकर्षक सुगन्ध आपका पीछा न छोड़ेगी। इसमें ताजे फूलों की मीठी ख़ुशबू वहक वहक रहती है।

इस सुन्दर मनोमोहक सुगन्ध की एक बार एक शीशी मँगवा कर आप परीक्षा करें और फिर तो आप इसे हमेशा अपने पास रक्खेंगे।

मूल्य ½ औंस प्रति शी० २) रु०, ¼ औंस प्रति शी० १।) रु०, १ ड्राम प्रति शीशी ।॥) आ०, ½ ड्राम प्रति शी० ॥) आ०

ओटो दिलबहार कार्ड ।।=) आने दर्जन, डाकव्यय अलग।

चेहरे को सुन्दर और मुलायम बनाने के लिए

कामिनिया स्नो (रजिस्टर्ड)

एक अफ़लातून उमदा चीज़ है, चेहरे पर थोड़ा थोड़ा लगाने से निर्जीव जैसे चमड़े का रङ्ग-रूप अत्यन्त चमकदार होता है और इसकी गुलाब की मनोहर ख़ुशबू आह्लादकारक है। मूल्य प्रति पॉट ।॥) आना। डाकव्यय अलग।

दी एंग्लो इन्डियन ड्रग एन्ड केमिकल कम्पनी २८५ जुमा मसजिद

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* मध्यप्रान्त तथा बरार की एक-मात्र सचित्र मासिक पत्रिका *

'प्रेमा'

का आगामी अप्रैल का अंक

हिन्दी-साहित्य में अद्भुत, अनूठी, विचित्र वस्तु होगी

यह अंक

'हास्य-रस' विशेषांक होगा

विशेषाङ्क की विशेषतायें

१. हिन्दी-साहित्य में यह एकदम अनूठा तथा निराला आयोजन है !

२. इसमें साधारण पृष्ठ-संख्या दुगुनी, पचासों व्यङ्ग चित्र—रङ्गीन चित्र तथा साधारण चित्र रहेंगे।

३. इसके सभी लेख हँसाते हँसाते पेट फुला देनेवाले तथा चित्त की सारी चिन्ताओं को भगानेवाले होंगे।

४. हिन्दी के सभी हास्य-रसावतारों की रचनायें प्रकाशित होंगी।

इस अङ्क के सम्पादक—

"मगन रहु चोला" तथा 'मेरी हजामत' सरीखे अमर हास्य-ग्रन्थों के यशस्वी लेखक

श्रीअन्नपूर्णानन्दजी हैं

विशेषांक के कुछ लेखक

१. श्रीयुत पद्मसिंहजी शर्मा, २. श्रीयुत सम्पूर्णानन्दजी, बी. एस-सी. एल. टी., ३. अध्यापक विनयकुमार सरकार, एम. ए.; ४ श्रीयुत जी. पी. श्रीवास्तव, बी. ए., एल-एल. बी., ५. श्रीयुत जयशङ्कर 'प्रसाद' जी, ६. श्रीयुत अवध उपाध्याय, ७. श्रीयुत भास्कर रामचन्द्रजी भालेराव, ८. श्रीयुत रायबहादुर जगन्नाथप्रसादजी "भानु", ९. श्रीयुत मौलवी महेशप्रसाद "आलिम फ़ाज़िल"।

अभी से वार्षिक मूल्य ४॥) भेजकर ग्राहक बननेवालों को विशेषांक साधारण मूल्य ही पर मिलेगा। अन्यथा एक अंक का मूल्य—॥।) होगा।

मैनेजर 'प्रेमा', इंडियन प्रेस, जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

(१) प्राण (कविता)—[श्रीयुत उमेश ... ४४१
(२) दाठावंश की ऐतिहासिकता—[श्रीयुत शुकदेव ठाकुर, बी० ए० (आनर्स) ... ४४२
(३) प्रेम का पात्र—[श्रीयुत शिवकुमार लोढ़िया ४४८
(४) स्वराज्य में आर्थिक स्वत्व—[श्रीयुत जी० एस० पथिक ४५५
(५) वसन्त-विडम्बना—(कविता) [श्रीयुत रामचरित उपाध्याय ४६३
(६) उदयशङ्कर और उनकी नृत्य-कला—[श्रीयुत ऋद्धिकरण लखोटिया ४६५
(७) यक्ष्मा—[श्रीयुत सुरेन्द्रनाथ दे ... ४७३
(८) सुधार की खोज—[श्रीयुत ऋषभचरण जैन ४७८
(९) तारे ! (कविता)—[श्रीयुत महन्त धनराजपुरी ४८४
(१०) पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय—[श्रीयुत गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश', बी० ए० ... ४८६
(११) परलोक-पाखण्ड—[श्रीयुत अवध उपाध्याय ... ०
(१२) मैं ल्हासा कैसे पहुँचा ?—[श्रीयुत राहुल सांकृत्यायन ४९६
(१३) मन ! (कविता)—[श्रीयुत शम्भूदयाल सक्सेना, 'साहित्यरत्न' ४९९
(१४) द्वन्द्व—[श्रीयुत ठाकुरदत्त मिश्र ... ५००
(१५) विचार-विमर्श ५०५
(१) शास्त्र-शुद्ध पञ्चाङ्ग-विचार—[श्रीयुत गोविन्द सदाशिव आपटे ५०५
(२) (श्री) सूरदास और (श्री) हितहरिवंश—[श्रीयुत कृष्णगोपाल राधावल्लभीय ५०८
(१६) चारु चयन ५१५
(१) उस पार (कविता)—[श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी, बी० ए० ... ... ५१५
(२) दूकानवाली लड़की—[श्रीयुत श्रीनाथसिंह ५१५

नई पुस्तक ! नई पुस्तक !!

स्वप्न-वासवदत्ता

(महाकवि भासरचित संस्कृत-नाटक का अनुवाद)

अनुवादक, श्रीयुत सत्यजीवन वर्मा, एम० ए०

भास संस्कृत के बहुत प्राचीन तथा नामी कवियों में हैं। उनकी रचनाओं की छाप कालिदास जैसे सर्वश्रेष्ठ कवि तक की रचनाओं में पाई जाती है। फिर भला ऐसे महाकवि की रचना की उत्तमता में सन्देह का स्थान ही कहाँ है। अनुवाद भी बहुत ही रोचक, सरल और प्रामाणिक है। मूल्य केवल ॥=) दस आने।

मैनेजर (बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल इमली के शुद्ध ऊनी कपड़ों की

सच्ची विशेषताएं

LALIMLI PURE WOOL

नं० १

कानपुर में बनाए जाते हैं

लाल इमली के शुद्ध ऊनी कपड़े अथवा बुनी हुई पोशाके कानपुर की साफ सुथरी लाल-इमली मिल्स में बनाई जाती हैं। इनको आदि से अन्त तक भारतवर्ष के चतुर कारीगर बनाते हैं।

यह इनके स्वदेशी होने का निश्चित प्रमाण है।

हम पब्लिक को निमन्त्रण देते हैं कि वह किसी बुधवार के दिन लालइमली मिल्स में आकर इसकी स्वयं जांच करले।

दि कानपुर ऊलेन मिल्स

कानपुर।

लालइमली के कारीगरों के लिये एक गांव है जो ख़ास कर इन्हीं के रहने के लिये बनाया गया है।

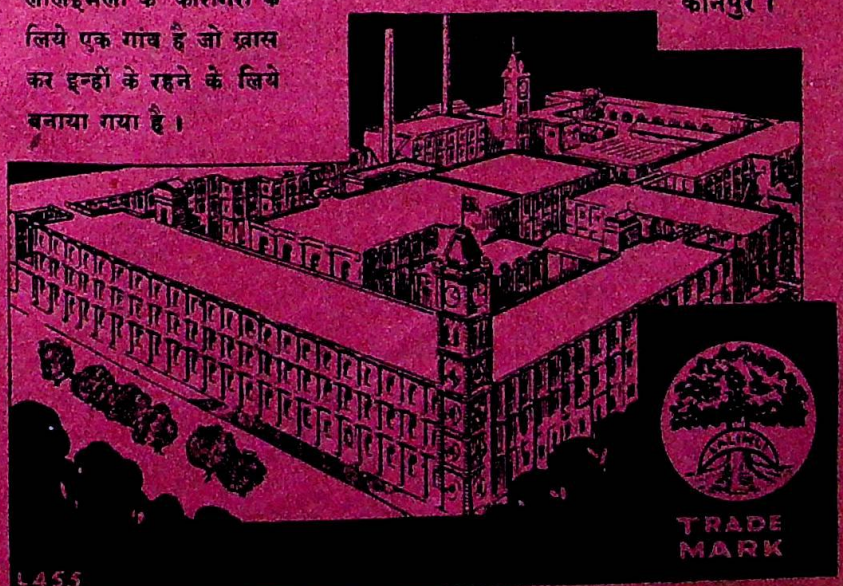

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'भेड़ियाधसान' के घर भाई पैदा हुआ
तो
नाम रख दिया

'लम्बकर्ण'

बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ,
छोटे मियाँ सुभान अल्लाह !

पैदा होने की देर न हुई चल दिये बिकने को !
ज़ल्दबाज़ी का नतीजा यह हुआ कि 'भेड़ियाधसान' से चार आना क़ीमत कम मिली—यानी १।) ।
सुन्दर जिल्द । चित्र २५

'लम्बकर्ण' के बड़े भाई-साहब
साहित्य-जगत् में विचरण कर रहे हैं

'भेड़ियाधसान'

कुल-जमा १॥) रु० में किताब की दूकानों पर बिकने पर तुल पड़े हैं !
तबीयत चाहे तो बजरिये वी० पी० ठेठ जन्मभूमि से भी मँगा सकते हैं । पता नीचे है ।
सुन्दर जिल्द ! चित्र ३५

सचित्र मासिक पत्र

'विशाल-भारत'

का

कला-अंक मुफ़्त !

अगर अभी तक ग्राहक न बने हों तो अब बन जाइये !
कला-अंक मुफ़्त मिल जायगा !

—:०:—

वार्षिक मूल्य ६)] [कला-अंक २)

* * * *

रवीन्द्रनाथ ठाकुर
की
हृदय को रुलाने हँसाने और हिला देनेवाली कहानियों का अपूर्व संग्रह

'गल्पगुच्छ'

पृष्ठ २२५] सजिल्द [मूल्य १॥)

* * * *

रवीन्द्रनाथ ठाकुर
का
सबसे सुन्दर
और
सबसे नया उपन्यास

'कुमुदिनी'

सुन्दर और मज़बूत जिल्द । पृष्ठ ४००, मूल्य ३)

पताः—मैनेजर, 'विशाल-भारत' पुस्तकालय, १२०।२,
अपर सरकुलर रोड, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौहरी और सुनीसाज़
बी० के० मुकर्जी
(जो पहले बचलर सन्स एंड कं० में मुलाज़िम थे)

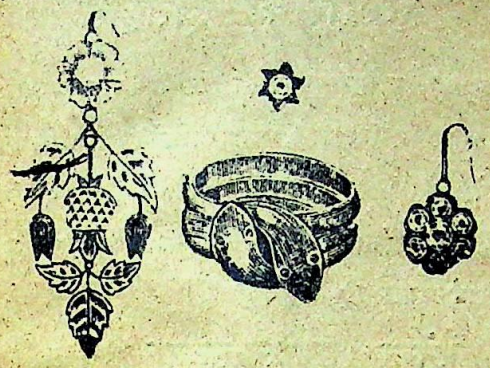

हमारे कारख़ाने में अँगरेज़ी, हिन्दुस्तानी, काश्मीरी, बंगाली, मुसलमानी हर तरह के ज़ेवर हमेशा बिक्री के लिए तयार रहते हैं। तथा आर्डर देने पर निहायत क़िफ़ायत के साथ बनाये भी जाते हैं। असली सोना और गिन्नी सोना होने की हम गारंटी करते हैं।

रईसों, अमीर उमरावों से लेकर सभी तरह के पुरुष और स्त्रियों की कलाई पर बाँधने योग्य रिस्टवाच, जेबघड़ी, सोने-चाँदी व निकल केस की घड़ियाँ, कलकत्ता व बम्बई की क़ीमत पर इस कारख़ाने से मिल सकती हैं। एक बार परीक्षा कीजिए। पता—
बी० के० मुकर्जी, ९२ जानसेनगंज, प्रयाग।

शास्त्रीय हिन्दी हार्मोनियम गाइड

बाजे की पेटी बजाने को सिखलानेवाली पुस्तक, ४० रागों के आरोह अवरोह, लक्षण, स्वरूप, विस्तार, १०४ प्रसिद्ध गायनों का स्वरतालयुक्त नोटेशन, सुरावर्त, तिल्लाने इत्यादि पूरी जानकारी-सहित, द्वितीय आवृत्ति, पृष्ठ-संख्या २००, क़ीमत १॥) रुपया, डाक-ख़र्च ।=) विषयों का और गायनों का सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए।

गोपाल सखाराम एण्ड कम्पनी
कालबादेवी रोड, बंबई नं० २

नेशनल इंस्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड

(स्थापित सन् १९०६)

हेड आफ़िस, ९ ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता।

आर्थिक दशा का यथार्थ विवरण।

कुल रक़म जो चालू बीमा में लगी हुई है—	५ करोड़ से ऊपर
कुल रक़म जिसका १९२८ में नया जीवन-बीमा हुआ—	१ करोड़ से ऊपर
प्रीमियम से १९२८ ई० में आय—	२५ लाख ,, ,,
कुल "क्लेम" जो दिये जा चुके—	६२ ,, ,, ,,
कुल रक़म (व्यापार में लगी हुई)—	१ करोड़ ३५ लाख से ऊपर

कम्पनी की विशेषतायें

(१) प्रीमियम का रेट कम है।
(२) रुपया आसानी से उधार मिल जाता है।
(३) 'क्लेम' फ़ौरन तय किये जाते हैं। अगर तय होने में ६ महीने से अधिक विलम्ब हो जाय तो ४) रु० सैकड़ा ब्याज दिया जाता है।
(४) बोनस माकूल मिलता है।

फ़ार्म और एजेन्सी के लिए हमारे चीफ़ एजेंट से पत्र-व्यवहार कीजिए—

श्रीयुत एस० ए० दास गुप्त, एम० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति का ख़ज़ाना यानी पृथ्वी पर का अमृत

मदन मंजरी

ये दिव्य गोलियाँ दस्त साफ़ लाती हैं, वीर्य-विकार-संबंधी तमाम शिकायतें नष्ट करती हैं और मानसिक व शारीरिक प्रत्येक प्रकार की कमज़ोरी को दूर करके नया जीवन देती हैं। क़ी० गोली ४० की डिब्बी १ का १)

बंबई ब्रांचः— ३९३ कालवा देवी रोड } राजवैद्य नारायणजी केशवजी। हेड आफ़िस जामनगर (काठियावाड़)

इलाहाबाद के एजेन्टः—युनाइटेड स्टोर्स, चौक

मायाक्षेत्र का माहात्म्य और

हरिद्वार का इतिहास

इसमें हरिद्वार-सम्बन्धी अनेक गूढ़ विषयों पर विचार किया गया है। यह यात्रियों और इतिहास-प्रेमियों के लिए अतिशय उपयोगी है। ५ रंगीन चित्र और तिरंगा कवर है, फिर भी सजिल्द का मूल्य प्रचारार्थ केवल १)।

मैनेजर "साहित्य-सदन" हिसार

❋ ऐसा कौन है जिसे फ़ायदा नहीं हुआ ❋

तत्काल गुण दिखानेवाली ४० वर्ष की परीक्षित दवाइयाँ सब दुकानदारों के पास मिलती हैं

सुधासिंधु

कफ़, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेटदर्द, क़ै, दस्त, जाड़े का बुख़ार (इन्फ्लूएंज़ा) बालकों के हरे पीले दस्त और ऐसे ही पाकाशय के गड़बड़ से उत्पन्न होनेवाले रोगों की एकमात्र दवा। इसके सेवन में किसी अनुपान की ज़रूरत न होने से मुसाफ़िरी में लोग इसे ही साथ रखते हैं। क़ीमत ॥) आने। १ से २ सुधासिंधु का डा० ख़र्च ।=)

बालसुधा

बच्चों को बलवान्, सुन्दर और सुखी बनाने के लिए सुखसंचारक कम्पनी मथुरा का मीठा "बालसुधा" पिलाइये। क़ीमत ।॥) आने। १ से २ बालसुधा का डा० ख़र्च ॥)

दद्रुगजकेशरी

यदि संसार में बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को जड़ से खोनेवाली कोई दवा है तो वह यह है। दाद चाहे पुराना हो या नया, मामूली हो या पकनेवाला इसके लगाने से अच्छा होता है। क़ीमत ।) आने। १ से २ का डा० ख़र्च ।=)

द्राक्षासव

शरीर में तत्काल बल बढ़ानेवाली कब्ज़, बद-हज़मी, कमज़ोरी, खाँसी और नींद न आना दूर करता है। बुढ़ापे के कारण होनेवाले सभी कष्टों से बचाता है। पीने में मीठा स्वादिष्ट है। क़ीमत तीन पाव की बोतल २), छोटी १) रु० डाकख़र्च। बड़ी बोतल का १॥=) रु० छोटी बोतल का ।॥=) है।

मिलने का पता—सुखसंचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्व सुविधा ! अनुपम लाभ !!

आपको जब कभी किसी भी विषय की

बालोपयोगी, स्त्रियोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, नैतिक, जीवनचरित्र, अध्यात्म, दर्शन, वेदान्त, विज्ञान, आरोग्यचिकित्सा, उपन्यास, क़िस्से-कहानी, नाटक, उपाख्यान, काव्य, साहित्य-समालोचना, इतिहास, अर्थशास्त्र, गणित, अलंकार, कोष, निबन्ध, व्याकरण, भ्रमण, धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक आदि उत्तमोत्तम इंडियन प्रेस, लिमि०, प्रयाग की तथा काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित पुस्तकों की आवश्यकता हो तो आप हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग-हाउस, चौक, बनारस को लिखिए। स्कूलों की टेक्स्टबुक भी आपको मिलेंगी। साथ ही ग्राहकों ख़रीदारों के साथ ख़ास रियायत की जायगी। प्रत्येक ख़रीदार ग्राहक को कमीशन दिया जायगा। एक बार आज़माइए।

निवेदक—देवेन्द्रचन्द्र विद्याभास्कर, प्रोप्राइटर,
हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग-हाउस, चौक, बनारस।

महाकवि अकबर और उनका उर्दू-काव्य

[तीसरा परिवर्द्धित संस्करण]

इस पुस्तक में स्वर्गीय महाकवि अकबर इलाहाबादी के चुने हुए और अत्यन्त मनोरञ्जक पद्यों का संग्रह है। तुलनात्मक समालोचना तथा महाकवि की जीवनी और चित्र भी शामिल हैं। तीसरा परिवर्द्धित संस्करण है। बढ़िया काग़ज़, सुन्दर छपाई, पृष्ठ २५०, मूल्य केवल १।=)

(१) टालसटाय की आत्मकहानी ॥=)
(२) पुष्पलता ।॥)
(३) उर्दू कवियों की नीति-कवितायें ।=)
(४) उपयोगितावाद १)
(५) मनोरञ्जक कहानियाँ ॥)
(६) अनारकली ≡)॥

ज्ञान-प्रकाश-मन्दिर, पो० माछरा, ज़ि० मेरठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाइरेक्स

सब ज्वरों के लिए

यह दवा बड़ी मशहूर है और सब बुख़ारों पर अच्छी तरह आज़माई हुई है। पाइरेक्स का नियमित रूप से सेवन करने से हज़ारों रोगियों के मलेरिया बुख़ार और दूसरे क़िस्म के बुख़ार जड़ से दूर हो गये हैं।

बासक का अर्क़

मरोड़ और बलग़म की प्रसिद्ध दवा। खाँसी, ज़ुकाम और छाती तथा गले की दूसरी तकलीफ़ों में अत्यन्त लाभ-दायक है।

सब अँगरेज़ी दवा बेचनेवालों के यहाँ मिलती है।

बङ्गाल केमिकल एण्ड
फ़ार्मेसिटिकल वर्क्स, लिमिटेड,
कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्ची शक्ति का संग्रह क्यों नहीं करते ?

आँतों को ख़राब होने से रोकती है—

पाचन-शक्ति ख़ूब बढ़ाती है

भारी से भारी भोजन पचाती है

ज्ञानतन्तु की कमज़ोरी—

साधारण कमज़ोरी

हर प्रकार की कमज़ोरी दूर करती है—

तन्दुरुस्ती-ताक़त को बढ़ाती है

—०—

प्रत्येक ऋतु में उपयोगी है

क्या ?

भंडु की

सुवर्ण-मिश्रित

मकरध्वज गुटी

स्वल्प चन्द्रोदय मकरध्वज-भैषज्य-रत्नावली ध्व०

पूर्ण चन्द्रोदय तथा सुवर्ण और चन्द्रोदय का अनुपान मिलाकर बनाई हुई सुनहरे खोलवाली

सुन्दर मनोहर गोलियों से

सच्ची शक्ति का सङ्ग्रह करो

क़ीमत १ तोला की ८) आठ रुपये

विशेष जानने के लिए मकरध्वज का विवरण-पत्र मँगाइए

भंडु फार्मास्युटिकल वर्क्स लि०—बम्बई नं० १४

प्रयाग के एजेन्ट—लक्ष्मीदास एण्ड ब्रादर्स, ४६ जान्स्टनगंज।
लखनऊ के एजेन्ट—ज्ञानेन्द्रनाथ दे, कमलाभण्डार, ८ श्रीराम रोड
बिलासपुर के एजेन्ट कविराज रवीन्द्रनाथ वैद्यशास्त्री
दिल्ली के एजेन्ट—बालबहार फ़ार्मेसी, चाँदनी चौक।
कानपुर के एजेन्ट—पी० डी० गुप्त एण्ड को०, जनरलगञ्ज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडियन परफ़्यूमरी के बढ़िया तोहफे

ओटा

दिलप्यारा

क्या कभी आपने इसे लगाया है ? इसकी मीठी ख़ुशबू सचमुच दिल को प्यारी है। स्मृति-रक्षा के लिए 'दिलप्यारा' सचमुच दिल को प्यारा है। बहुत बढ़िया शीशी में दिलप्यारा की म्योछावर सिर्फ़ १), तीन शीशी २॥), एक दरजन १०) रु०।

बढ़िया

सुगन्धित तेल

तेल मसाला—एक बार इसे लगाने पर ही गुण मालूम हो जावेगा। क़ीमत ३) ४) तथा ८) सेर तक।

तिल्ली का सुगन्धित तेल—ख़ालिस तिल्ली के तेल के गुण सभी को मालूम हैं। इस तेल की सुगन्धा बहुत ही मनोहर है। एक बार व्यवहार कर देखिए। दाम १२ औंस की एक बोतल १।), तीन बोतलों का ३॥)।

तेल—बेला (मोगरा) ३), ४), ५), ७), १०) सेर।

चमेली ३), ४), ५), ८), १२) सेर।

मेंहदी, आँवला, गुलाब ४), ८) सेर तक

सुरती

तम्बाकू

क्या आप पान के साथ सुरती खाते हैं ? तो लीजिए एक बार हमारे कारख़ाने में बड़ी पवित्रता के साथ तैयार की गई सुरती का इस्तेमाल कीजिए कैसी ख़ुशबू है और कैसा स्वाद है। आपने तरह तरह की बाज़ारू सुरती खाई होगी, पर इसके खाने से चित्त प्रसन्न होता है और पान का स्वाद सुधरता है। यह असली देशी चीज़ों से तैयार की गई है। कृपा कर एक बार इसे ज़रूर आज़माइए।

पत्ती ४) सेर से ३२) रु० सेर तक, ज़र्दा ४) सेर से ३२) रु० सेर तक।

पता—दी इंडियन परफ्यूमरी, १५ नं० पार्क रोड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने में सभी सुमन अच्छे लगते हैं

परन्तु

जिनमें सुगन्ध होती है वे सबको मोह लेते हैं।

ठाकुर गुरुभक्तसिंह 'भक्त' बी० ए०, एल-एल० बी० रचित

स र स सु म न

में आपको ऐसे ही सुमन मिलेंगे। इसमें पवन, भानु, चपला, जुगनू और बसन्ती पर पाँच सुन्दर कवितायें हैं। प्रत्येक कविता से यह सिद्ध होता है कि कवि प्रकृति-निरीक्षण में कितना कुशल है। पुस्तक बहुत साफ़ और सुन्दर छपी है और उसमें आर्ट पेपर पर दो अत्यन्त सुन्दर तिरङ्गे चित्र भी हैं। एक बार मँगाकर देखिए। तबीयत ख़ुश हो जायगी। मूल्य सिर्फ़ ॥) आठ आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

TWO GEMS

Outcome of 45 years' experience of this renowned Doctor

THE SEVEN BITTERS

An Infallible Specific for Malarious Fevers, acute and chronic, remittent or intermittent with enlargement of Liver and Spleen, Dropsy, etc.

Price—Re. One per bottle.

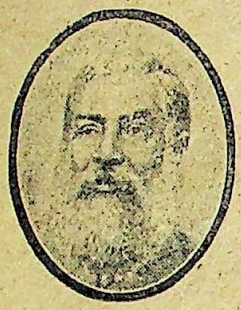

Late Dr. A. C. BANERJI.
Allahabad

INSANITY POWDER

(Specific for Insanity)

Infallible Remedy for Insanity, Mania, Melancholia, Hysteria, Insomnia, etc. Dose one powder a day with Syrup:

Price—Annas Twelve per dose.

सप्तितक्त

ज्वर, मलेरिया, जूड़ी, तिजारी, चौथिया, नया और पुराना ज्वर, अतरा, ताप, तिल्ली और यकृत इनकी यह अव्यर्थ औषधि है। विस्तृत हाल साथ के व्यवस्थापत्र में देखिए।

मूल्य—१ बोतल का १) एक रुपया।

इनसेनीटी पाउडर

अर्थात् पागल की दवा

इस दवा के सेवन से किसी भी प्रकार से उत्पन्न हुआ पागलपन निस्सन्देह आरोग्य हो जाता है। रात में नींद न आना, सिर में गरमी मालूम होना तथा हिस्टीरिया आदि सब कष्ट दूर हो जाते हैं। दिन में सिर्फ़ एक खूराक खाई जाती है। विधान-पत्र दवा के साथ भेजा जाता है। दाम ।।।) फ़ी खूराक।

SEVEN BITTERS OFFICE, ALLAHABAD

स्त्रियों को शक्ति देनेवाली शरीर पुष्ट बनानेवाली दवाई

सुंदरीसाथी (रजिस्टर्ड)

घर घर लाखों स्त्रियाँ सेवन करती हैं, सैकड़ों प्रमाणपत्र मिले हैं, हर एक डाक्टर और वैद्य अपने मरीज़ों में शर्त्त से उसका इस्तेमाल करते हैं।

सुन्दरीसाथी—स्त्रियों के रोग—प्रदर, रक्तवात, सोमरोग, धातु वा पानी का जाना, शरीर दुर्बल होकर लोहू का फीका पड़ना, गर्भाशय पर सूजन, जीर्णज्वर, विसर्प, दम, कमर और पीठ में दर्द होना, पेडू और सिर का दर्द, शरीर टूटना, सुआरोग, दस्त, खाँसी, बार बार गर्भ का गिरना, बच्चे पैदा होकर मर जाना, इन रोगों को बिला शक मिटाता है, उसका अनुभव लाखों स्त्रियों ने किया है। प्रसूति-काल में यह दवा पिलाने से सुआरोग होता ही नहीं और शरीर में कूवत आती है।

सुन्दरीसाथी—स्त्रियों को पिलाने से ऊपर लिखित तमाम रोग दफ़ा हो जाते हैं, शरीर पुष्ट बनता है, लोहू सुधरता है, शरीर में ताक़त आती है, लोहू और बल बढ़ता है, गर्भाशय नीरोग होता है, गर्भाशय के विकार से यदि प्रजा न होती हो तो वह अवश्य होता है, वन्ध्या स्त्रियों के गर्भाशय-सम्बन्धी दर्द दूर होकर संतति होती है, बल बढ़ता है, फीकापन दूर होकर शरीर पर लाली आ जाती है।

आप सुन्दरीसाथी की एक बोतल सेवन करें, इससे स्त्रियों के तमाम रोग दफ़ा हो जायँगे। तीन बोतल पीनी पड़ती है। एक बोतल की क़ी० १) रुपया। तीन बोतल की क़ी० २॥=)

हर एक गाँव में पंसारी और विलायती दवा बेचनेवाले के यहाँ बिकती है।

दवे केमीकल एन्ड फार्मास्युटीकल वर्कस,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—— भर्तस्ना —— [श्रीयुत पी० रेड्डीकी कृपासे प्राप्त]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्णसंयोग

हिन्दी में बिलकुल नई चीज़

फ़ोटोग्राफ़ी

सिद्धान्त और प्रयोग

४७८ सादे और २ रङ्गीन चित्रों-सहित

लेखक

डाक्टर गोरखप्रसाद

डी० एस-सी० (एडिन०), एफ़० आर० ए० एस०,

रीडर, प्रयाग-विश्वविद्यालय

फ़ोटोग्राफ़ी का शौक़ दिन दिन बढ़ता जा रहा है। जिसे देखो, वही फ़ोटोग्राफ़र बनने की चिन्ता में परेशान है। परन्तु हिन्दी में अभी तक कोई ऐसी पुस्तक नहीं थी, जिसे पढ़ कर लोग आसानी से अच्छे फ़ोटोग्राफ़र बन सकें। इस पुस्तक से यह कमी पूरी होगई। अब आप केवल सात रुपये के व्यय से घर बैठे फ़ोटो खींचना सीख सकते हैं।

मिलने का पता—

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भूमिका

*** इस प्रकार पुस्तकों ही से पहले पहल फ़ोटोग्राफ़ी सीखने के कारण मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि नौसिखियों को कहाँ कहाँ अड़चनें पड़ती हैं। इसके अतिरिक्त, आठ दस व्यक्तियों को फ़ोटोग्राफ़ी सिखलाने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ है, और इस अनुभव से मुझे पूरा विश्वास है कि प्रस्तुत ग्रन्थ स्पष्ट और सरल पाया जायगा। जो फ़ोटोग्राफ़ी कुछ भी नहीं जानते वे भी इसकी सहायता से सिद्ध-हस्त हो जा सकते हैं।

***फ़ोटोग्राफ़ी में न तो बहुत ख़र्च पड़ता है और न विशेष कठिनाई पड़ती है; इससे बहुतेरों का मनोरंजन होता है और यह अनेकों की जीविका है; परन्तु अभी तक हिन्दी में कोई भी सरल, सचित्र, सम्पूर्ण और आधुनिक पुस्तक नहीं थी। इस कमी को दूर करने के लिए ही यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें सिद्धान्त केवल उतना ही बतलाया गया है जितने से प्रत्येक कार्य का कारण समझ में आ जाय, और क्रियात्मक बातों पर ही विशेष ध्यान दिया गया है। भाषा को सरल रख कर और अनेक चित्र देकर प्रत्येक क्रिया को इस प्रकार समझाने का प्रयत्न किया गया है कि इनके सम्पादन में कोई भी कठिनाई न रहे। उदाहरणार्थ, प्लेट डेवेलप करने की क्रिया १८ चित्रों से पूर्णतया प्रत्यक्ष कर दी गई है; फिर चार चित्र देकर कम और अधिक डेवेलप करने का परिणाम दिखला दिया गया है, और तीन चित्रों में हल्के, शुद्ध और गाढ़े नेगेटिव भी दिखला दिये गये हैं। अधिकांश चित्रों और फ़ोटोग्राफ़ों को विशेष रूप से इसी पुस्तक के लिए मैंने बनाया है। मेरी चेष्टा सदा यही रही कि यह पुस्तक ऐसी हो कि जिसके टक्कर की हिन्दी में क्या, यूरोपीय भाषाओं में भी कोई

दूसरी न मिले और इसके लिए मैंने कुछ भी उठा नहीं रक्खा। १९३० तक फ़ोटोग्राफ़ी-सम्बन्धी जिन नई बातों का पता चला है और जिनको मैंने उपयोगी समझा है, वे भी इस पुस्तक में दे दी गई हैं। बुकनी के रंगों से स्लाइड को और ब्रोमाइड छापों को लाल, गुलाबी, गुलेनार, पीला, पिस्तई, धानी, आस्मानी, नीला, बैगनी, इत्यादि अनेक रङ्गों में बनाने की रीति—रङ्गीन छाया-चित्रण—प्लेटों को अपरिवर्तनशील करना, जिसमें वे श्वेत प्रकाश में डेवेलप किये जा सकें, इत्यादि—सब आधुनिक विषयों का पूरा विवरण इसमें मिलेगा।

*** यहाँ यूरोप की अपेक्षा बहुत अधिक गरमी पड़ती है। फिर, यहाँ का रहन-सहन, यहाँ के मकानों की बनावट, इत्यादि, वहाँ से भिन्न हैं; इन सब बातों पर, और कम ख़र्च में बढ़िया काम पर, इस पुस्तक में विशेष ध्यान रक्खा गया है। ८४ चित्रों और पूरे पैमाने के साथ स्टैन्ड कैमेरा बनाने की रीति भी बतलाई गई है। पुस्तक विशेष करके फ़ोटोग्राफ़ी-प्रेमियों के लिए लिखी गई है परन्तु प्रत्येक रोज़गारी फ़ोटोग्राफ़र इसको उपयोगी पायेगा, क्योंकि इसमें कई एक बातें दी गई हैं, जो उनके लिए बड़ी लाभदायक होंगी।***

बेलीरोड, इलाहाबाद
मार्च, १९३१

गोरखप्रसाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है कि जिसके टक्कर की हिन्दी में क्या, यूरोपीय भाषाओं में भी कोई

'फ़ोटोग्राफ़ी' की विषय-सूची

संक्षिप्त विषय-सूची

अध्याय १—नौसिखियों से दो बातें—फ़ोटोग्राफ़ी की सरलता—सस्ता है—फ़ोटोग्राफ़ी क्या है ?—पृष्ठ १-९

अध्याय २—प्रारम्भिक बातें—कैमेरे का चुनाव—प्लेट या फ़िल्म और कैमेरे की नाप—फ़िल्म कैमेरा—स्टैंड या फ़ील्ड कैमेरा—कैमेरे की हिफ़ाज़त—शटर और लेन्ज़ की हिफ़ाज़त—१०-४१

अध्याय ३—फ़ोटो खींचने के लिए तैयारी—फ़ोकस करना—लेन्ज़ छेद का काम—फ़ोकस करने के नियम—फ़ोकस करने के कुछ चुटकिले—फ़ोकस की गहराई—लेन्ज़-छेद नम्बर—फ़ोकस की गहराई पर लेन्ज़-छेद का प्रभाव—फ़ोकस रहित कैमेरा—फ़िल्म कैमेरे से फ़ोकस करना; फ़ोकस-मापक—प्लेट कैमेरे में फ़ोकस-मापक—४२-६६

अध्याय ४—अँधेरी कोठरी—असली किफ़ायतशारी—अँधेरी कोठरी की नाप—कोठरी का चुनाव—अँधेरी कोठरी की परीक्षा—खिड़कियों और दरवाज़ों को बन्द करना—६७-८२

अध्याय ५—अँधेरी कोठरी के लिए सामान—अँधेरी कोठरी में प्रकाश—लालरोशनी की परीक्षा—अन्य सामान—फ़ोटोग्राफ़ी आरम्भ करने के लिए कितनी चीज़ों की आवश्यकता है ?—बिना अँधेरी कोठरी के—८३-११०

अध्याय ६—प्रकाश-दर्शन (पूर्वार्ध)—सहनशीलता—शुद्ध प्रकाश-दर्शन क्या है और किन बातों पर निर्भर है—प्रकाश-दर्शन-मापक—प्रकाश-दर्शन-सारिणी—उदाहरण—१११-१४०

अध्याय ७—प्रकाश-दर्शन (उत्तरार्ध)—चलते हुए विषयों के लिए शटर-गति सारिणी—घर पर बना प्रकाश-मापक—कम और अधिक प्रकाश-दर्शन की पहचान—१४१-१६०

अध्याय ८—प्रकाश-दर्शन सिद्धान्त—कम और अधिक प्रकाश-दर्शन का प्रभाव—डेवेलप करने के समय का प्रभाव—सारांश; हम क्या सीखते हैं—१६१-१७२

अध्याय ९—प्रकाश-दर्शन देना—प्लेट घर भरना—अँधेरे में प्लेट घर भरना—फ़ोटो खींचना—१७३-१८१

को सुखाना—गरमी के दिनों में—स्थायी और कड़ा करने के घोल—१८२-२०६

अध्याय ११—भिन्न भिन्न डेवेलपर और डेवेलप करने की दूसरी रीतियाँ—डेवेलपर का चुनाव; पायरो सोडा के गुण-दोष—मेटल हाइड्रोक्विनोन—अन्य डेवेलपर—डेवेलपर के नुसख़े—अच्छे नेगेटिव की पहचान—अधिक और कम समय तक डेवेलप किये हुए नेगेटिव—डेवेलप करने की गुणनरीति—डेवेलप करने की पुरानी रीति—हाइपो मारक—दोष और उनका औषध—काले मनुष्यों को गोरा बनाना—२०७-२४२

अध्याय १२—छाया-चित्र छापना; सेल्फ़-टोनिङ्ग पी० ओ० पी०—छापने की विधि—हाइपो के घोल में कब तक रक्खें—धोना—सुखाना—२४३-२६२

अध्याय १३—माउन्ट पर चिपकाना और छापने के विषय में अन्य बातें—ऐंठ निकालना—छापों को बहुत चमकीला बनाना—छाप काटना—माउंट पर चिपकाना—लेई—स्टार्च की लेई—गोंद और डेक्ट्रीन की लेई—जेलेटिन की लेई—अधिक चमकीली छापों को माउंट पर चिपकाना—शीशे में मढ़ना + छोररहित छाप—किनारीदार छाप—दोष और उपाय—२६३-२९१

अध्याय १४—ब्रोमाइड पर छापना—प्रकाश-दर्शन—डेवेलप करना—स्थायी करना—डेवेलपर—छापने की मशीन—रेड्यूस करना—खैरा रंग सल्फ़ाइड से—हाइपो फिटकरी घोल से खरा रंग—दोष, उनके उपाय और अन्य बातें—गीले नेगेटिव से ब्रोमाइड छाप—२९२-३३०

अध्याय १५—गैसलाइट काग़ज़ पर छापना—गैसलाइट से लाभ—प्रकाश-दर्शन—डेवेलप करना—स्थायी करना—असफलता के कारण—३३१-३४३

अध्याय १६—पी० ओ० पी० पर छापना—सम्मिलित घोल—पृथक् पृथक् घोल—३४४-३५३

अध्याय १७—कैमेरे का चुनाव—फ़िल्म पैक और कटे फ़िल्म कैमेरों की जातियाँ—३५४-३७७

अध्याय १८—लेन्ज—[illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

और आधे लेन्ज़ का प्रयोग—लेन्ज़ों की जातियाँ—पोर्ट्रेट अटैचमेन्ट इत्यादि—टेलिफ़ोटो लेन्ज़—लेन्ज़ों की जाँच—लेन्ज़ों की रक्षा—३७८-४१२

अध्याय १९—नेगेटिवों के दोष, उनकी उत्पत्ति, लक्षण, चिकित्सा और उनसे बचने के उपाय—धब्बे—बुलबुले—काले बिन्दु—डेवेलपर का बराबर न पड़ना—अँगुलियों के धब्बे—नख इत्यादि के घाव—फ़ालर फफोले और गड्ढे—जिलेटिन की झिल्ली का जालीदार हो जाना—चितकबरापन और सूखने के दाग़—नेगेटिव का रंग जाना—धुन्ध—नेगेटिव पर छाप—दाहिने बायें की ग़लती और फ़ोकस इत्यादि में त्रुटि—४१२-४३७

अध्याय २०—नेगेटिवों को गाढ़ा और फीका करना—दुबारा डेवेलप करने से इन्टेन्सिफ़ाई करना—अन्य इंटेन्सिफ़ायर—मरक्यूरिक आयोडाइड—नेगेटिवों के घनत्व को घटाना; हाइपो और फ़ेरीसायनाइड—परसल्फ़ेट रेड्यूसर—दुबारा डेवेलप करके नेगेटिव को रेड्यूस करना—अन्य रीति—स्थानीय परिवर्तन—४३८-४६२

अध्याय २१—छल-कपट और रि-टचिङ्ग—आड़ करना—नेगेटिव की पीठ पर काम—चोट खाये नेगेटिव—नेगेटिव पर टाइटिल लगाना—४६३-४८९

अध्याय २२—एनलार्जमेंट बनाना—दिन के प्रकाश और कैमेरे से एनलार्जमेंट बनाना—प्रकाश-दर्शन—डेवेलप करना—एनलार्जमेंट के लिए अच्छे नेगेटिव का लक्षण—गैसलाइट पर एनलार्जमेंट बनाना—एनलार्जमेन्ट बनाने की लालटेन—हाथ का काम; खड़िया—रंगना—एअरोग्राफ़—कै गुना बड़ा एनलार्जमेन्ट बनाया जा सकता है—४९०-५३८

अध्याय २३—मनुष्य-चित्रण—स्टूडियो—पीछे का परदा—अन्य सामान—बैठने का ढंग—भाव—स्केच पोर्ट्रेट—बिना स्टूडियो के मनुष्य-चित्रण—आधुनिक फ़ैशन—५३९-५६२

अध्याय २४—नक़ल करना; लैन्टर्न स्लाइड—सामान; लेन्ज़ और कैमेरा—फ़ोकस, प्रकाश-दर्शन इत्यादि—लैन्टर्न स्लाइड—नक़ल करके स्लाइड बनाना—बुकनी के रंगों से स्लाइड को टोन करना—ब्रोमाइड और गैसलाइट काग़ज़ की छापों को बुकनी के रंग से टोन करना—५६३-५८८

अध्याय २५—मैगनीशियम प्रकाश और बिजली की रोशनी—प्रकाश को कहाँ रखना चाहिए—उदाहरण—बिजली की रोशनी—५८९-६०३

अध्याय २६—पैनक्रोमैटिक प्लेट और रंगीन छाया-चित्रण—आरथोक्रोमैटिक और पैनक्रोमैटिक प्लेट—रंगीन और रँगे फ़ोटोग्राफ़ में क्या अन्तर है—रंगीन छाया-चित्र कैसे खींचा जाता है—ऑटोक्रोम प्लेट—डुपले रीति—ऐगफ़ा—६०४-६२४

अध्याय २७—विविध विषय (पूर्वार्द्ध)—प्रकाश-प्रसरण (Halation हैलेशन)—चटखे हुए नेगेटिव—कड़ा करनेवाला डेवेलपर—मनुष्य-चित्रण के लिए पीछे का परदा रँगना—सुई-छिद्र फ़ोटोग्राफ़ी—नीली छाप और नक़्शे—कनवस पर चित्र छापना—रेशम पर छापना—पी० ओ० पी० काग़ज़ बनाना—रेखा-चित्र—ज्योतिष और छाया-चित्रण—एक्सरश्मि फ़ोटोग्राफ़—व्यंगचित्र—प्रेत-छाया-चित्रण, अर्थात् मृत व्यक्तियों की फ़ोटोग्राफ़ी—पत्र और पत्रिकाओं के लिए फ़ोटोग्राफ़ी—६२५-६५३

अध्याय २८—विविध विषय (उत्तरार्द्ध)—पशु-पक्षियों का चित्र—बिजली चमकने का फ़ोटोग्राफ़—बुकनीवाली रीति—एनामेल—ब्लाक बनाना—लाइन ब्लाक बनाना—फ़ोटोग्राफ़ी का इतिहास—सिनेमा-चित्र खींचना—फ़ोटोग्राफ़ी का प्रयोग—पुलिस और फ़ोटोग्राफ़ी—फ़ेरोटाइप कैमेरा—मेले-तमाशे में पोस्ट-कार्ड चित्र—फ़ोटोग्राफ़ी पर पुस्तकें—६५४-६८२

अध्याय २९—नुसख़े इत्यादि—रासायनिक पदार्थों के गुण—बाँट—डेवेलप करने के पहले प्लेट को अपरिवर्तनशील (desensitise) करना—डेवेलपर के नुसख़े—स्थायी और कड़ा करना इत्यादि—इन्टेन्सिफ़ाई करने के घोल—रेड्यूस करने के घोल—नेगेटिव वार्निश इत्यादि—पी० ओ० पी०—ब्रोमाइड और गैसलाइट—कापीराइट-सम्बन्धी क़ानून—६८३-७०८

अध्याय ३०—कैमेरा बनाना—७०९-७३८

शब्द-कोष—७३९-७५५

अकारादि विषय-सूची—७५६-७८४

अकारादि चित्र-सूची—७८५-७८९

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

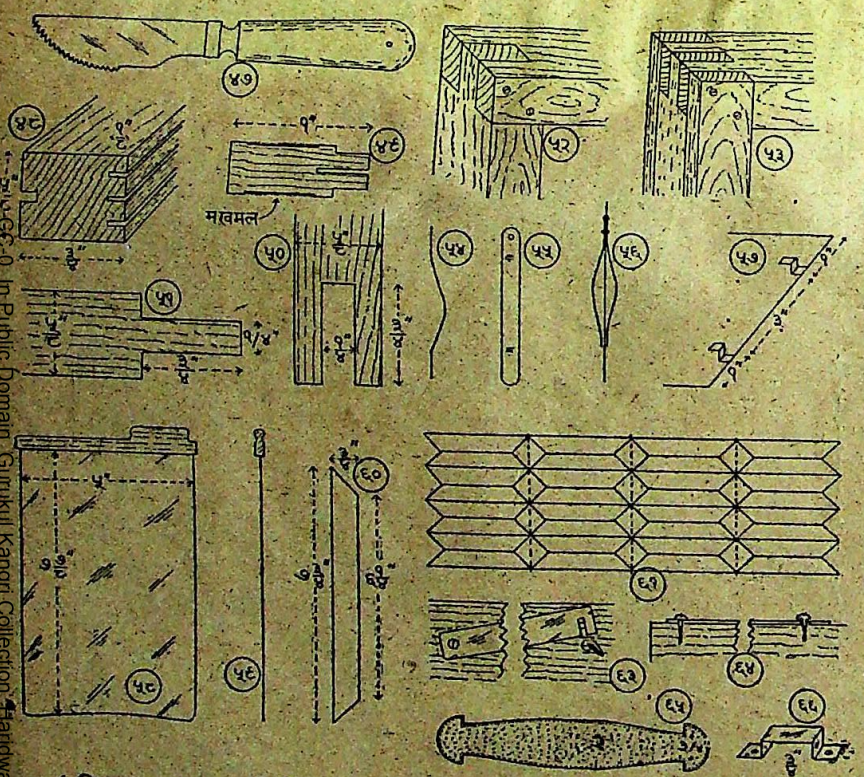

(चित्र ४३९-४५८) चित्र ४७—झरी काटने का यंत्र; चित्र ४८—प्लेट-घर बनाने के लिए तीन ओर लगनेवाली लकड़ी; चित्र ४९—प्लेट-घर के माथे पर लगनेवाली लकड़ी; चित्र ५०— डब काटने की रीति; चित्र ५१—चूल; चित्र ५२—डब में चूल बैठाने की रीति; चित्र ५३—प्लेट-घर के माथेवाले दो कोनों के बनाने की रीति; चित्र ५४—कमानी, बगल का दृश्य; चित्र ५५—कमानी, सामने का दृश्य; चित्र ५६—कमानियों को जड़ने की रीति; चित्र ५७—प्लेट-घर का बीचवाला टीन और प्लेट को टिकाने के लिए अड़कन; चित्र ५८—प्लेट-घर का ढकना, सामने का दृश्य; चित्र ५९—वही, बगल का दृश्य; चित्र ६०—भाथी बनाने के लिए दफ़्ती; चित्र ६१—भाथी बनाने के लिए दफ़्तियों को कपड़े पर जोड़ने की रीति; चित्र ६२—भाथी (पृष्ठ ७३१ देखिए;) चित्र ६३—कैमेरे को बन्द करनेवाली सिटकिनी, सामने से, चित्र ६४— वही, बगल से; चित्र ६५—हैन्डल;

...की चालों पर ध्यान दीजिए। यहाँ दिये हुए चित्र (चित्र ७) में भाग नम्बर २३ ही लेन्ज़ है। यह एक या अधिक शीशे के टुकड़ों से बना रहता है (कभी कभी इनकी गिनती दस तक पहुँच जाती है)। एक के पीछे एक ये टुकड़े अपने घर (mount माउन्ट), नम्बर

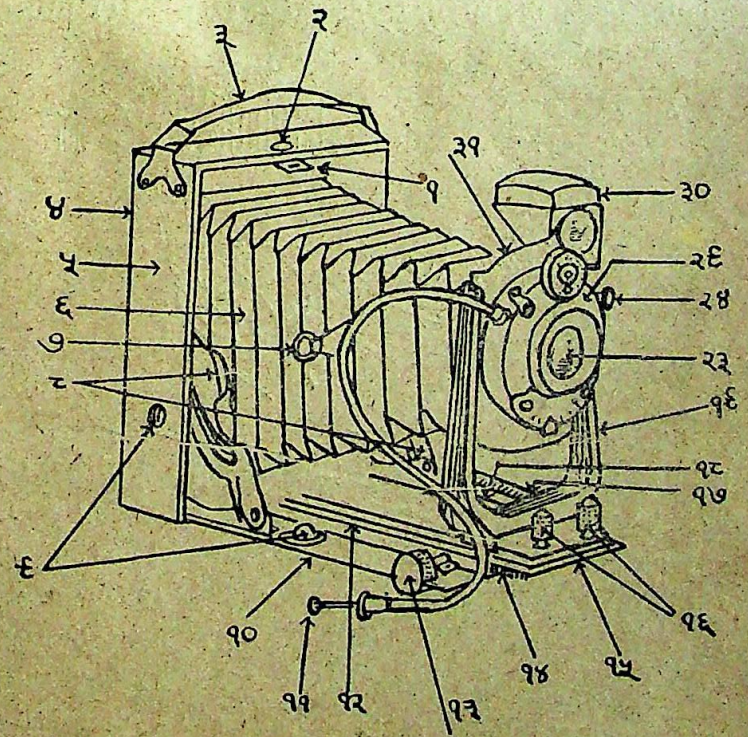

चित्र ७—हैंड कैमेरा के मुख्य भाग

२५ (चित्र ८), में उचित क्रम से बैठाये रहते हैं। जैसा हम पहले देख चुके हैं (पृ० ५) लेन्ज़ अपने सामने की वस्तुओं की मूर्ति (image) अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…यदि लेन्ज़-टोपी का प्रयोग करना है तो चाहिए कि टोपी को घुमाकर धीरे से इसको लेन्ज़ से छुड़ा लें और इसको लेन्ज़ के सामने ही क्षण भर रक्खें। कैमेरे में जो थोड़ी सी थरथराहट टोपी के उतारने से पैदा होगई होगी वह इतने समय में मिट जायगी। अब टोपी को तेज़ी से लेन्ज़ के सामने से हटा दीजिए; और जब गिनने से, या घड़ी से, मालूम हो जाय कि प्रकाश-दर्शन पूरा हो गया, तो टोपी को फिर लेन्ज़ के सामने

चित्र ८५—कम-प्रकाश-दर्शन पाये नेगेटिव का स्वरूप

तेज़ी से लाकर, धीरे से लेन्ज़ पर चढ़ा दीजिए। बाज़ लोग टोपी को नोच कर अलग कर देते हैं और वे इसका फल भी भोगते हैं। कैमेरे की थरथराहट के कारण फ़ोटो की तीक्ष्णता जाती रहती है और वे चकराते हैं कि फ़ोकस इतनी सावधानी से करने पर, और लेन्ज़-छेद काफ़ी…

…सबसे बढ़ कर है। एक भाग फ़ारमैलिन और ५० भाग पानी मिला कर यदि किसी प्लेट के ऊपर १० मिनट के लिए छोड़ दें तो उसका जेलेटिन इतना कड़ा हो जायगा कि खौलते हुए पानी में भी न पिघलेगा। गरमी के दिनों में दो आउन्स ठण्डे पानी में ८ या १० बूँद फ़ारमैलिन मिला कर अँधेरी कोठरी में रख लेते हैं और डेवेलप करने के पहले ही इस फ़ारमैलिन को प्लेट पर छोड़, तश्तरी ढक, तीन या चार मिनट तक तश्तरी हिलाते जाते हैं। इसके बाद प्लेट को एक मिनट तक ठंडे पानी से धो सब लगे हुए फ़ारमैलिन को बहा देते हैं। फिर ऊपर लिखी हुई रीति से डेवेलप करते हैं।

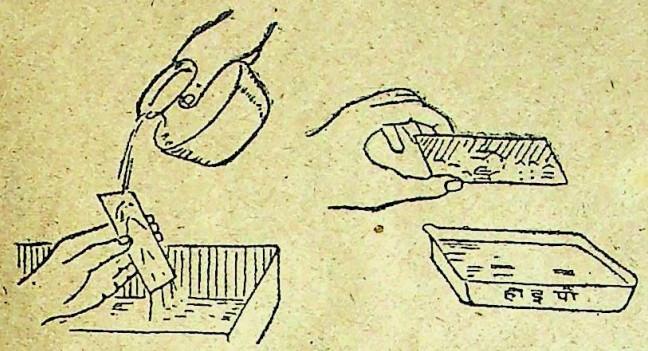

चित्र ११३ और ११४—डेवेलपर से निकालते ही प्लेट को पानी से ज़रा सा धोकर उसे हाइपो में रख देना चाहिए

यदि फ़ारमैलिन का अधिक अंश डेवेलपर में आ जायगा तो प्लेट धुँधला हो जायगा, इसलिए फ़ारमैलिन को धोकर बहा देना अति आवश्यक है। डेवेलपर को भी ठंढा ही रखना चाहिए, क्योंकि यद्यपि जिलेटिन के पिघलने का कोई भय नहीं है तो भी गरम डेवेलपर से प्लेट धुँधली हो जायगा। यदि डेवेलप करते करते डेवेलपर के ताप-क्रम के बढ़ जाने का भय है तो डेवेलपरवाली तश्तरी को एक ठंढे पानी से भरी बड़ा…

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तक ! नई पुस्तक !!

हिन्दी भाषा और साहित्य

लेखक—राय साहब श्यामसुन्दरदास, बी० ए०

इस ग्रन्थ को लेखक ने अपने अनेक वर्षों के अनुभव, और परिश्रमपूर्वक एकत्र की हुई सामग्री, की सहायता से बड़ी छान-बीन करके लिखा है। इसके पूर्वार्द्ध में हिन्दी भाषा का और उत्तरार्द्ध में साहित्य का विशद रूप से विवेचन किया गया है। लेखक ने इसका उद्देश्य प्रत्येक युग की मुख्य मुख्य विशेषताओं का उल्लेख करना और यह बतलाना रक्खा है कि साहित्य की प्रगति किस समय में किस ढङ्ग की थी। इस दृष्टि से यह ग्रन्थ अन्य इतिहास-ग्रन्थों से पृथक् है। मूल्य ६) छः रुपये।

कुछ सम्मतियाँ देखिए:—

पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी—

सम्प्राप्य सुन्दरतरं नवपुस्तकं ते
हे श्यामसुन्दर मया मुमुदे नितान्तम्।
आनन्दनिर्भरहृदा विनिवेद्यतेऽद्य
त्वं शारदेन्दुविमलं सुयशो त्वमेव॥

बाबू मैथिलीशरण गुप्त—

ग्रन्थ सर्वथा आपके अनुरूप हुआ है।

डाक्टर सर जार्ज ए० ग्रियर्सन—

I heartily congratulate the author on the completion of this very valuable work. It has long been wanted, and could not have come from a higher authority on the subject.

रायबहादुर बाबू हीरालाल—

यह एक-दम नवीन सूझ है जिस पर हिन्दी-साहित्य के इतिहास के इतिहास-लेखकों का ध्यान अभी तक आकृष्ट नहीं हुआ था।...पुस्तक बड़े मार्के की है और समीक्षा की एक प्रकार की नवीन विधि स्थापित करती है।

"भारत" प्रयाग—

हिन्दी-साहित्य से सम्बन्ध रखनेवाले पठित समाज में बाबू श्यामसुन्दरदास की यह नवीन पुस्तक चिर काल तक आदर और प्रेम की दृष्टि से देखी जायगी।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल्ली बनाइए !

क्या आप इन बिल्लियों का
चित्र खींच सकते हैं ?

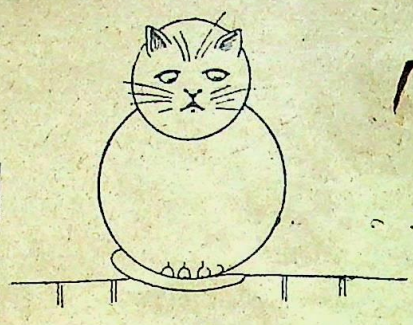

नं० २

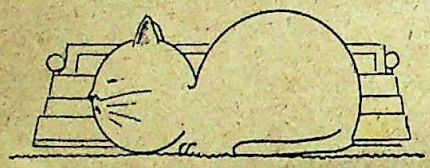

नं० १

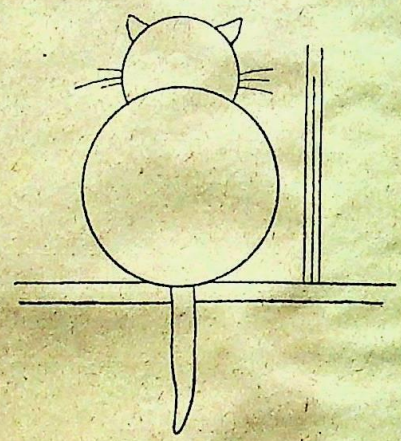

नं० ३

शायद आप न खींच सकें। परन्तु यदि आपके घर में

बाल-सखा

जाता है तो आपके लड़के ऐसे बहुत से चित्र खींच कर आपको दिखा देंगे। बालक बालिकाओं के लिए बाल-सखा हिन्दी में सब से अच्छा पत्र है। इसको पढ़ते-पढ़ते लड़के बहुत सी बातें अपने आप सीख जाते हैं। खेल का खेल पढ़ाई की पढ़ाई। वार्षिक मूल्य २॥) नमूने के लिए ।-) का टिकट भेजिए।

मैनेजर 'बाल-सखा', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Cataloged
1559-2030

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar